# گلدستۂ تفاسیر

جلد-٦

## سورۃ سبا
## تا
## سورۃ القمر

# فہرست عنوانات

## سورۃ سبا تا سورۃ القمر


| عنوان | صفحہ |
|---|---|
| سورۃ سبا | ۵۱۹ |
| تمام تعریف اللہ تعالیٰ ہی کی ہے | ۵۱۹ |
| اللہ کا علم ہر چیز کو محیط ہے | ۵۱۹ |
| [illegible] اللہ کی رحمت [illegible] | ۵۱۹ |
| انکارِ قیامت | ۵۱۹ |
| قیامت ضرور آئے گی | ۵۱۹ |
| نیک [illegible] جزا [illegible] | ۵۲۰ |
| [illegible] | ۵۲۰ |
| [illegible] عذاب | ۵۲۰ |
| حضرت [illegible] | ۵۲۱ |
| [illegible] | ۵۲۱ |
| [illegible] | ۵۲۲ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] حکومت [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| حضرت داؤد [illegible] علیہ السلام | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| تسبیح کرنے میں [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| [illegible] | ۵۲۳ |
| داؤد نے [illegible] کام [illegible] | ۵۲۳ |
| ہاتھ کی [illegible] | ۵۲۳ |

| عنوان | صفحہ |
|---|---|
| ہدایت | ۵۲۵ |
| [illegible] | ۵۲۵ |
| [illegible] | ۵۲۵ |
| [illegible] | ۵۲۵ |
| [illegible] | ۵۲۵ |
| [illegible] | ۵۲۵ |
| [illegible] | ۵۲۶ |
| [illegible] | ۵۲۶ |
| [illegible] | ۵۲۶ |
| [illegible] | ۵۲۶ |
| جنات کا [illegible] | ۵۲۶ |
| [illegible] جنات کا [illegible] | ۵۲۷ |
| [illegible] | ۵۲۷ |
| جنات کا [illegible] | ۵۲۸ |
| [illegible] | ۵۲۸ |
| [illegible] | ۵۲۸ |
| [illegible] | ۵۲۹ |
| سلیمان [illegible] | ۵۲۹ |
| [illegible] | ۵۲۹ |
| [illegible] | ۵۳۰ |
| [illegible] | ۵۳۰ |
| [illegible] | ۵۳۰ |
| [illegible] | ۵۳۰ |
| [illegible] | ۵۳۱ |
| [illegible] | ۵۳۱ |
| [illegible] | ۵۳۱ |

| عنوان | صفحہ |
|---|---|
| [illegible] | ۵۳۱ |
| [illegible] | ۵۳۱ |
| حضرت سلیمان کی [illegible] | ۵۳۲ |
| [illegible] کی عبادت | ۵۳۳ |
| [illegible] | ۵۳۳ |
| جنات کی [illegible] | ۵۳۳ |
| سلیمان کی [illegible] | ۵۳۳ |
| [illegible] | ۵۳۳ |
| سلیمان کی [illegible] | ۵۳۳ |
| [illegible] سلیمان [illegible] | ۵۳۳ |
| جنات [illegible] | ۵۳۴ |
| [illegible] | ۵۳۴ |
| [illegible] | ۵۳۴ |
| [illegible] | ۵۳۴ |
| [illegible] | ۵۳۵ |
| [illegible] | ۵۳۵ |
| [illegible] | ۵۳۵ |
| [illegible] | ۵۳۶ |
| [illegible] | ۵۳۶ |
| [illegible] کا [illegible] | ۵۳۷ |
| [illegible] | ۵۳۷ |
| [illegible] | ۵۳۸ |
| [illegible] | ۵۳۸ |
| [illegible] | ۵۳۸ |
| [illegible] | ۵۳۹ |
| [illegible] | ۵۳۸ |

| | |
|---|---|
| [illegible] | ۵۸۸ |
| قرآن [illegible] | ۵۸۹ |
| مومنوں [illegible] | ۵۸۹ |
| [illegible] | ۵۹۰ |
| [illegible] | ۵۹۰ |
| [illegible] | ۵۹۰ |
| [illegible] | ۵۹۱ |
| مومنوں کی نشانی | ۵۹۱ |
| [illegible] | ۵۹۱ |
| [illegible] شیطان کا [illegible] | ۵۹۱ |
| انسان [illegible] | ۵۹۲ |
| [illegible] | ۵۹۲ |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| فرشتوں کی [illegible] | [illegible] |
| فرشتوں کی [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| حضور ﷺ [illegible] | [illegible] |
| حضور ﷺ [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |

| | |
|---|---|
| روزی کا مالک اللہ تعالیٰ ہے | ۵۸۸ |
| قرب الٰہی کا ذریعہ | ۵۸۹ |
| [illegible] | ۵۸۹ |
| [illegible] | ۵۹۰ |
| [illegible] عذاب [illegible] | ۵۹۰ |
| [illegible] | ۵۹۰ |
| [illegible] | ۵۹۱ |
| [illegible] | ۵۹۱ |
| [illegible] | ۵۹۱ |
| [illegible] سے نجات | ۵۹۱ |
| فرشتوں [illegible] | ۵۹۲ |
| [illegible] | ۵۹۲ |
| کافروں کی بدگمانی | ۵۹۳ |
| [illegible] | ۵۹۳ |
| [illegible] | ۵۹۳ |
| [illegible] | ۵۹۳ |
| حضور ﷺ [illegible] | ۵۹۳ |
| حضور ﷺ [illegible] | ۵۹۳ |
| [illegible] | ۵۹۳ |
| [illegible] | ۵۹۳ |
| [illegible] | ۵۹۳ |
| [illegible] | ۵۹۵ |
| [illegible] | ۵۹۵ |
| [illegible] | ۵۹۵ |
| [illegible] | ۵۹۶ |
| [illegible] | ۵۹۶ |
| [illegible] | ۵۹۶ |
| [illegible] | ۵۹۷ |
| [illegible] | ۵۹۷ |
| [illegible] | ۵۹۷ |
| [illegible] | ۵۹۷ |
| [illegible] | ۵۹۸ |

| | |
|---|---|
| [illegible] | ۶۰۲ |
| سورۃ فاطر | ۶۰۳ |
| [illegible] | ۶۰۵ |
| فاطر کا معنی | ۶۰۵ |
| فرشتوں کی [illegible] | ۶۰۵ |
| فرشتوں [illegible] | ۶۰۵ |
| اللہ تعالیٰ [illegible] | ۶۰۵ |
| [illegible] | ۶۰۶ |
| [illegible] | ۶۰۶ |
| [illegible] | ۶۰۷ |
| [illegible] | ۶۰۷ |
| [illegible] | ۶۰۷ |
| [illegible] | ۶۰۷ |
| [illegible] | ۶۰۸ |
| [illegible] | ۶۰۸ |
| [illegible] | ۶۰۸ |
| [illegible] | ۶۰۸ |
| [illegible] | ۶۰۸ |
| [illegible] | ۶۰۸ |
| [illegible] | ۶۰۹ |
| [illegible] | ۶۰۹ |
| [illegible] | ۶۰۹ |
| [illegible] | ۶۰۹ |
| [illegible] | ۶۰۹ |
| [illegible] | ۶۱۰ |
| [illegible] | ۶۱۰ |
| [illegible] | ۶۱۰ |
| [illegible] | ۶۱۰ |
| [illegible] | ۶۱۱ |
| [illegible] | ۶۱۱ |
| [illegible] | ۶۱۱ |
| [illegible] | ۶۱۱ |
| [illegible] | ۶۱۲ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| انبیاء اور فرشتے مشرکین سے بری ہوں گے | ٦١٢ | خلافت کا حق ادا کرو | ٦٢١ | فرزند کا زندہ ہونا | ٦٣١ |
| سب اللہ کے محتاج ہیں | ٦١٢ | تمہارے شرکاء | ٦٢٢ | شہزادی کا زندہ ہونا | ٦٣١ |
| انسان سب سے زیادہ محتاج ہے | ٦١٢ | عقل سے کام لو | ٦٢٢ | بادشاہ کی بے بسی | ٦٣١ |
| اللہ تمہاری جگہ دوسری مخلوق لا سکتا ہے | ٦١٢ | کوئی دلیل لاؤ | ٦٢٢ | بستی کی اکثریت کو کوئی ضرورت نہیں | ٦٣١ |
| کوئی کسی کا بوجھ نہیں اٹھائے گا | ٦١٣ | شیطان کے دھوکہ میں مبتلا ہو | ٦٢٢ | بستی والوں کا قاصدوں سے تکبر | ٦٣١ |
| قرابت داری کا واسطہ نہیں چلے گا | ٦١٣ | حرکت آسمان و زمین | ٦٢٢ | قاصدوں کی دعوت | ٦٣١ |
| ڈرنے والے | ٦١٣ | اللہ تعالیٰ کی بردباری اور بخشش | ٦٢٣ | بستی کا قاصدوں سے کلام | ٦٣٢ |
| ہر کسی کا چناؤ ہوتا ہے | ٦١٣ | مشرکین کی فریب کاری | ٦٢٣ | بستی والوں کا جواب | ٦٣٢ |
| مومن اور کافر برابر نہیں | ٦١٤ | [illegible] | ٦٢٣ | بستی والوں کی بے عقلی | ٦٣٢ |
| تفسیر کی ذوق العربی | ٦١٤ | اللہ کی گرفت سے کوئی باہر نہیں | ٦٢٣ | قاصدوں کی نصیحت | ٦٣٢ |
| عجیب قدرت کا مظاہرہ | ٦١٤ | حکمت الٰہی | ٦٢٤ | تفسیر سے فوت و اصلاح | ٦٣٣ |
| قدرت کی نیرنگیاں | ٦١٤ | وقت آنے پر سب کو پتہ لگ جائے گا | ٦٢٤ | حبیب کے ساتھ بستی والوں کا سلوک | ٦٣٣ |
| اہل علم کی شان | ٦١٥ | سورۃ یٰس | ٦٢٤ | خلافت خاصہ | ٦٣٣ |
| آنحضرت ﷺ کو سب سے زیادہ خدا کا ڈر تھا | ٦١٥ | سورۃ یٰسین کے فضائل | ٦٢٤ | حضرت حبیب کی مثال ایک سچائی | ٦٣٤ |
| عالم کی فضیلت | ٦١٥ | [illegible] | ٦٢٥ | قوم سے ہمدردی | ٦٣٤ |
| علماء کی تین قسمیں | ٦١٥ | اعجاز قرآن کی گواہی | ٦٢٦ | قتل کی سزا | ٦٣٤ |
| عالموں سے علم لینا ہے | ٦١٥ | اللہ تعالیٰ نے بہت بڑی مہربانی کی | ٦٢٦ | جبرئیل کی پکار | ٦٣٥ |
| طلب علم کی فضیلت | ٦١٦ | آنحضرت ﷺ کی ذمہ داری بہت مشکل کام | ٦٢٦ | مکہ والوں کیلئے عبرت | ٦٣٥ |
| ایسی تجارت جس میں نفع ہی نفع ہے | ٦١٦ | سرمایہ پرستی و جہالت کے طوق | ٦٢٧ | مجرمین کا اجتماع | ٦٣٥ |
| قرب خداوندی کا ذریعہ | ٦١٧ | عداوت و جہالت کی دیوار | ٦٢٨ | بعث بعد الموت کی دلیل | ٦٣٥ |
| اللہ تعالیٰ قدر دان ہے | ٦١٧ | نصیحت کے لائق نہیں | ٦٢٨ | عجیبہ | ٦٣٦ |
| [illegible] | ٦١٧ | [illegible] | ٦٢٨ | رزق کا شکر واجب ہے | ٦٣٦ |
| حدیث ابی الدرداء | ٦١٩ | [illegible] | ٦٢٩ | غافلین کیلئے تنبیہ | ٦٣٦ |
| داخل جنت کے گروہ | ٦١٩ | ہم مردوں کو زندہ کرتے ہیں | ٦٢٩ | قدرت الٰہی کا عجیب کرشمہ | ٦٣٦ |
| صابرین کی فضیلت | ٦٢٠ | سب کچھ محفوظ ہیں | ٦٢٩ | اختلاف سے بچنا | ٦٣٦ |
| کلمہ طیبہ کی فضیلت | ٦٢٠ | قدموں کے نشان بھی لکھے جاتے ہیں | ٦٢٩ | سورج کا طلوع و غروب | ٦٣٦ |
| دنیا غموں کا گھر ہے | ٦٢٠ | لوح محفوظ | ٦٢٩ | حضرت ابو ذرؓ کی تفسیر | ٦٣٧ |
| جنت راحت کا گھر ہے | ٦٢٠ | انطاکیہ والوں کا قصہ | ٦٣٠ | طلوع و غروب کا نظام | ٦٣٧ |
| حسرت کی ساعت | ٦٢٠ | حضرت عیسیٰ کا دو قاصدوں کو روانہ کرنا | ٦٣٠ | چاند کی منزلیں | ٦٣٧ |
| ناکام حسرت | ٦٢١ | انطاکیہ کا بادشاہ | ٦٣٠ | چاند اور سورج حکم الٰہی سے بغاوت | ٦٣٨ |
| کوئی مددگار نہ ہوگا | ٦٢١ | قاصدوں کا قید ہونا اور قوم کی سزا | ٦٣٠ | کشتی کی نعمت | ٦٣٨ |
| ساٹھ سال کی عمر اور سفید بال | ٦٢١ | شمعون کو مدد کیلئے بھیجنا | ٦٣٠ | آباؤ اجداد کی حفاظت | ٦٣٨ |
| گناہ چھوڑنے کی ترکیب | ٦٢١ | بادشاہ کے سامنے قیدیوں کے معجزات | ٦٣٠ | دوسرا نقل و حمل | ٦٣٨ |
| اللہ تعالیٰ غیب دان ہیں | ٦٢١ | اندھے کا بینا ہونا | ٦٣٠ | سب کچھ قدرت الٰہی سے ہے | ٦٣٩ |

| | |
|---|---|
| مشرکین کی بے ہودگی | ۶۳۶ |
| مشرکین کی حماقت | ۶۳۷ |
| مال خرچ کرنے کا حکم | ۶۴۰ |
| مطلب یہ کہ کلام عربی ہے؟ | ۶۴۰ |
| مشرکین کی دعاوی؟ | ۶۴۰ |
| قیامت آ کر رہے گی | ۶۴۰ |
| [illegible] کا واقعہ | ۶۳۹ |
| کافروں کی جہنم میں حاضری | ۶۴۱ |
| جہنم و جنت کے عذاب کا تذکرہ | ۶۴۱ |
| جہنم کی ایک وادی | ۶۴۱ |
| مجاہدہ | ۶۴۱ |
| انصاف کا بیان | ۶۴۱ |
| جنتی [illegible] | ۶۴۲ |
| موقف کا مقام | ۶۴۲ |
| اللہ تعالیٰ کی طرف سے سلام | ۶۴۳ |
| [illegible] | ۶۴۳ |
| خیانت کا ثبوت؟ | ۶۴۳ |
| جہنم کی منظر کشی | ۶۴۴ |
| انسانوں کی [illegible] | ۶۴۴ |
| [illegible] | ۶۴۳ |
| طاقت کی دعا | ۶۴۴ |
| [illegible] | ۶۴۴ |
| [illegible] | ۶۴۴ |
| [illegible] | ۶۴۴ |
| [illegible] | ۶۴۶ |
| [illegible] | ۶۴۶ |
| آیات کریمہ | ۶۴۶ |
| اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کی ناشکری | ۶۴۶ |
| حضرت [illegible] کا بیان | ۶۴۷ |
| [illegible] کی جرأت | ۶۴۷ |
| [illegible] | ۶۴۸ |
| آپ کی وراثت | ۶۴۸ |
| [illegible] | ۶۴۸ |
| [illegible] | ۶۴۹ |

| | |
|---|---|
| حکومت بھی اللہ ہی کی ہے | ۶۴۹ |
| **سورۃ الصافات** | ۶۴۹ |
| سورت کے مضامین | ۶۴۹ |
| صف باندھنے والے | ۶۴۹ |
| نماز میں صفوں کی درستی | ۶۵۰ |
| [illegible] | ۶۵۰ |
| تسبیح کی قسم | ۶۵۰ |
| فرشتوں اور نیک لوگوں کی گواہی | ۶۵۰ |
| مشارق اور مغارب کا رب | ۶۵۱ |
| آسمان کی زینت | ۶۵۱ |
| [illegible] | ۶۵۱ |
| شیاطین کی روک تھام | ۶۵۱ |
| کاہنوں کے کاروبار کا خاتمہ؟ | ۶۵۲ |
| شیاطین جلنے والی عذاب | ۶۵۲ |
| [illegible] | ۶۵۲ |
| قصہ اصلی | ۶۵۳ |
| انسان کا دوبارہ زندہ ہونا | ۶۵۳ |
| [illegible] | ۶۵۳ |
| کافروں کی [illegible] | ۶۵۳ |
| [illegible] | ۶۵۳ |
| [illegible] کا جواب | ۶۵۳ |
| [illegible] | ۶۵۳ |
| جہنم کے سات [illegible] | ۶۵۴ |
| کافروں کی ذلت | ۶۵۵ |
| [illegible] | ۶۵۵ |
| بے حیائی کی دنیا | ۶۵۶ |
| [illegible] | ۶۵۶ |
| اہل جنت [illegible] | ۶۵۶ |
| [illegible] | ۶۵۶ |
| حوروں کا حسن | ۶۵۷ |
| اہل جنت کی باہمی گفتگو | ۶۵۷ |
| [illegible] کا حصول | ۶۵۸ |
| جنتی اور جہنمی کی گفتگو | ۶۵۸ |
| [illegible] | ۶۵۹ |

| | |
|---|---|
| [illegible] کا مقام | ۶۵۹ |
| اندھی تقلید | ۶۵۹ |
| [illegible] ڈرانے والے آتے ہیں | ۶۶۰ |
| حضرت نوح علیہ السلام اور ان کی قوم | ۶۶۰ |
| [illegible] | ۶۶۰ |
| سب انبیاء ایک [illegible] | ۶۶۰ |
| اپنے والد اور قوم کو نصیحت | ۶۶۰ |
| حضرت ابراہیم علیہ السلام [illegible] | ۶۶۱ |
| علم نجوم کی شرعی حیثیت | ۶۶۲ |
| [illegible] کا شرعی حکم | ۶۶۳ |
| لوگوں کی میلے سے واپسی | ۶۶۴ |
| [illegible] | ۶۶۴ |
| حضرت ابراہیم [illegible] کا منصوبہ | ۶۶۵ |
| خواب اور قربانی | ۶۶۸ |
| شام اور مکہ [illegible] | ۶۶۸ |
| بیٹے کی رائے | ۶۶۸ |
| [illegible] کا ثبوت | ۶۶۹ |
| قربانی سے پہلے بیٹے کی باتیں | ۶۶۹ |
| شیطان کی [illegible] اور رسوائی | ۶۶۹ |
| [illegible] | ۶۶۹ |
| صداقت ابراہیمی | ۶۷۰ |
| علامہ انور شاہ کشمیری کی عجیب توجیہ | ۶۷۰ |
| نیکی کا بدلہ | ۶۷۱ |
| مینڈھا | ۶۷۱ |
| اولاد ابراہیم میں برکت | ۶۷۲ |
| حضرت الیاس علیہ السلام | ۶۷۲ |
| بنی اسرائیل کی گمراہی | ۶۷۲ |
| بادشاہ | ۶۷۳ |
| [illegible] | ۶۷۳ |
| بادشاہ کا [illegible] | ۶۷۳ |
| حضرت الیاس علیہ السلام کی بعثت | ۶۷۳ |
| بادشاہ کا انکار [illegible] | ۶۷۳ |
| [illegible] | ۶۷۳ |
| حضرت الیاس علیہ السلام [illegible] | ۶۷۳ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بادشاہ کا فریب | ۹۷۴ | تکبیر پر حملہ | ۹۸۷ | عادل حکمران | ۹۹۹ |
| دھوکے بازوں پر ترک کا برسنا | ۹۷۵ | تمام مضامین کا خلاصہ | ۹۸۷ | خلیفۂ وقت سے حساب | ۹۹۹ |
| دوسرا دھوکہ اور ہلاکت | ۹۷۵ | **سورۂ صٓ** | ۹۸۸ | آخرت کو سامنے رکھو | ۱۰۰۰ |
| حضرت الیاس علیہ السلام کی واپسی | ۹۷۶ | قرآن کی شہادت | ۹۸۸ | قیام قیامت کی حکمت | ۱۰۰۰ |
| شہزادے کی موت | ۹۷۶ | ماضی کے منکرین کا انجام | ۹۸۸ | کتاب اللہ کے نزول کی حکمت | ۱۰۰۰ |
| یونس علیہ السلام کا زندہ ہونا | ۹۷۷ | کافروں کا اجتماعی خلفشار | ۹۸۸ | حضرت سلیمانؑ اور ان کی آزمائش | ۱۰۰۱ |
| حضرت الیاس علیہ السلام کی دعا | ۹۷۷ | انوکھی بات | ۹۸۹ | سلیمانؑ کے گھوڑے | ۱۰۰۲ |
| ایک بیمار لڑکے کا صحیح ہونا | ۹۷۷ | کافروں کی تردید | ۹۹۰ | حضرت سلیمانؑ کا استغفار | ۱۰۰۲ |
| الیاس علیہ السلام کی دعا سے بارش کا برسنا | ۹۷۸ | یہ مشرکین بے طاقت گروہ ہے | ۹۹۰ | آزمائش کی ایک اور صورت | ۱۰۰۲ |
| بادشاہ اور ملکہ کی ہلاکت | ۹۷۸ | مشرک بچو نہیں | ۹۹۰ | بے مثال حکومت | ۱۰۰۳ |
| حضرت خضر و حضرت الیاس کی رفاقت | ۹۷۸ | ذوالاوتاد کا مطلب | ۹۹۱ | انبیاء کی درخواست کا طریقہ | ۱۰۰۳ |
| حضرت الیاس علیہ السلام | ۹۷۹ | کافروں کا حصہ | ۹۹۱ | حضور ﷺ کی شان | ۱۰۰۳ |
| بعل بت | ۹۷۹ | حضرت داؤد کا واقعہ یاد کرو | ۹۹۱ | حکومت اور اقتدار کی دعا | ۱۰۰۳ |
| حضرت الیاس علیہ السلام پر سلامتی | ۹۸۰ | عبادت کا پسندیدہ طریقہ | ۹۹۲ | حضرت سلیمانؑ کی جنوں پر حکومت | ۱۰۰۴ |
| مکہ والوں کیلئے عبرت | ۹۸۰ | نماز چاشت کا حکم | ۹۹۲ | جنات کی زنجیریں | ۱۰۰۴ |
| حضرت یونس علیہ السلام کی آزمائش | ۹۸۰ | نماز چاشت کی فضیلت | ۹۹۲ | بے مثال حکومت | ۱۰۰۴ |
| قرعہ اندازی کا حکم | ۹۸۱ | حضرت داؤد کی حکومت | ۹۹۳ | حضرت ایوبؑ کی بیماری | ۱۰۰۴ |
| انبیاء کا مقام | ۹۸۱ | حضرت داؤد کے اوصاف | ۹۹۳ | صبر کا پھل | ۱۰۰۵ |
| مچھلی کے پیٹ میں رہنے کی مدت | ۹۸۱ | فصل الخطاب | ۹۹۳ | صبر کے بدلے میں رحمت | ۱۰۰۵ |
| افضلیت انبیاء کا مسئلہ | ۹۸۲ | حضرت داؤد کی آزمائش | ۹۹۴ | قسم پوری کرنے کی مخصوص ترکیب | ۱۰۰۶ |
| قوم یونس کی تعداد | ۹۸۲ | آزمائش کی تشریح | ۹۹۴ | مقام صبر سے ترقی | ۱۰۰۶ |
| جوابی کی قسموں کا جواب | ۹۸۲ | حاکم کے آداب | ۹۹۵ | حضرت الیسع علیہ السلام | ۱۰۰۶ |
| سب اللہ کی مخلوق اور محتاج ہیں | ۹۸۳ | جھگڑا | ۹۹۵ | نیک بندے | ۱۰۰۶ |
| بے تکا عقیدہ | ۹۸۳ | شراکت | ۹۹۶ | جنت میں کھانے کا مقصد | ۱۰۰۷ |
| جن اللہ سے ڈرتے ہیں | ۹۸۳ | آزمائش کا سبب | ۹۹۶ | زوجین کے درمیان عمر کا تناسب | ۱۰۰۷ |
| جن کا معنی | ۹۸۳ | حضرت داؤد کی توبہ | ۹۹۷ | ازواج کی خوبیاں | ۱۰۰۷ |
| اخلاص و بندگی کام آنے کی | ۹۸۳ | حضرت داؤد کی شان | ۹۹۷ | دوزخیوں کی گفتگو | ۱۰۰۸ |
| سب اللہ کے اختیار میں ہے | ۹۸۴ | خلافت کے تقاضے | ۹۹۸ | آیت کی لطیف تفسیر | ۱۰۰۸ |
| انسان اور ملائکہ کا فرق | ۹۸۵ | خلیفہ اور بادشاہ کا فرق | ۹۹۸ | ایک حسرت | ۱۰۰۸ |
| نماز میں صف بندی | ۹۸۵ | اسلامی ریاست کا بنیادی کام اقامت دین ہے | ۹۹۸ | غریب مومنین کی تحقیر | ۱۰۰۸ |
| بے حقیقت تمنائیں | ۹۸۵ | خدا کی یاد میں غفلت | ۹۹۹ | دوزخیوں کا جھگڑا حق ہے | ۱۰۰۹ |
| آخرکار فتح حق والوں کی ہوتی ہے | ۹۸۶ | امیر کو بذات خود ریاست کے کاموں | ۹۹۹ | ابلیس کا کام | ۱۰۰۹ |
| اہل باطل کی شکست قریب ہے | ۹۸۶ | کی نگرانی کرنی چاہئے | ۹۹۹ | قیامت کا حتمی علم کسی کو نہیں | ۱۰۰۹ |
| جب عذاب آئے گا تو آنکھیں کھلیں گی | ۹۸۶ | ایک عبادت کے وقت | ۹۹۹ | عالم بالا کی بحث | ۱۰۰۹ |

| | |
|---|---|
| ملاء اعلیٰ سے کنارہ کرنے کا مطلب | ۷۰۹ |
| اپنے آپ کو بڑا سمجھنے کا انجام | ۷۱۰ |
| مذمت | ۷۱۰ |
| تکبر کی تعریف | ۷۱۲ |
| تکلف اور تصنع کی مذمت | ۷۱۲ |
| **سورۃ الزمر** | ۷۱۳ |
| سورۃ زمر کی فضیلت | ۷۱۳ |
| قرآن کا متشابہ ہونے کی تین تعبیریں | ۷۱۳ |
| اللہ کی بندگی اور اطاعت میں لگے رہو | ۷۱۳ |
| عمل کی مقبولیت | ۷۱۳ |
| مشرکین کا فیصلہ ہو جائے گا | ۷۱۳ |
| مشرکین عرب کا حال | ۷۱۳ |
| سرکش و بد باطن تباہ ہو گئے | ۷۱۴ |
| اللہ تعالیٰ اولاد سے پاک ہے | ۷۱۴ |
| فرشتوں کو اللہ کی اولاد کہنا | ۷۱۵ |
| نظام کائنات | ۷۱۵ |
| اللہ تعالیٰ عزیز مغفرت کرنے والا ہے | ۷۱۵ |
| تخلیق انسانیت | ۷۱۵ |
| دوسری تخلیقات | ۷۱۵ |
| انسان کی بدبختی | ۷۱۶ |
| اللہ تعالیٰ کی بے نیازی | ۷۱۶ |
| خدا کی پسندیدہ بات | ۷۱۷ |
| اللہ عادل ہے | ۷۱۷ |
| رسول اللہ ﷺ کی ہدایت | ۷۱۷ |
| سب کے عمل سامنے آئیں گے | ۷۱۷ |
| انسان کی عجیب طبیعت | ۷۱۸ |
| مہلت کو نجات نہ سمجھو | ۷۱۸ |
| مومن کی شان | ۷۱۸ |
| علم تقویٰ کی بنیاد ہے | ۷۱۸ |
| رات کی عبادات | ۷۱۹ |
| کامیاب کرنے والی دو صفتیں | ۷۱۹ |
| قانت کا معنی | ۷۱۹ |
| عمل کا بدلہ ضرور ملے گا | ۷۱۹ |
| ہجرت کی فضیلت | ۷۱۹ |
| ہجرت اور جہاد | ۷۱۹ |
| گناہوں اور فتنوں سے فرار | ۷۲۰ |
| صابرین کی فضیلت | ۷۲۰ |
| ماسوا کی نفی | ۷۲۰ |
| حضور ﷺ کی اولیت | ۷۲۰ |
| نافرمانی موجب عذاب ہے | ۷۲۱ |
| توحید پر استقامت | ۷۲۱ |
| کافروں کو دھمکی | ۷۲۱ |
| مشرکین خسارے میں کیوں ہیں | ۷۲۱ |
| انجام بد سے ڈرو | ۷۲۲ |
| مومنین کیلئے خوشخبری | ۷۲۳ |
| اہل کردار والوں کیلئے بشارت | ۷۲۳ |
| کامیابی کا راستہ | ۷۲۳ |
| بد بخت آدمی | ۷۲۳ |
| جنت تیار ہے | ۷۲۳ |
| جنت کے محل اور مکانوں کے حقدار | ۷۲۳ |
| نظام آب پاشی | ۷۲۴ |
| پانی کا تکثیر و تبدیل، پانی سے بڑی نعمت ہے | ۷۲۴ |
| کھیتیوں میں نصیحت | ۷۲۵ |
| عقل والوں کیلئے نصیحت | ۷۲۵ |
| خوش بخت و بد بخت | ۷۲۵ |
| شرح صدر | ۷۲۵ |
| قساوت قلبی سب سے بڑی سزا ہے | ۷۲۶ |
| قرآن میں مشابہ مضامین | ۷۲۶ |
| اولیاء اللہ کا سماع کی حالت | ۷۲۷ |
| مومنوں کا خوف اور کیفیات | ۷۲۷ |
| صحابہؓ اور غیر صحابہ کا فرق | ۷۲۷ |
| فرشتوں کا خوف | ۷۲۷ |
| انسان کی ہمت | ۷۲۷ |
| ہدایت اللہ ہی سے مانگو | ۷۲۸ |
| قیامت میں کافر کی حالت | ۷۲۸ |
| ماضی سے سبق حاصل کرو | ۷۲۸ |
| قرآن کے سمجھانے میں کوئی کجی نہیں | ۷۲۹ |
| فہم قرآن کا مسئلہ | ۷۲۹ |
| مشرک و موحد کی مثال | ۷۲۹ |
| مشرک غلام کی طرح ہے | ۷۲۹ |
| مومن موحد کی مثال | ۷۲۹ |
| اکثر لوگ نہیں سمجھتے | ۷۳۰ |
| قیامت میں سب کا آمنا سامنا ہوگا | ۷۳۰ |
| مرد اور عورت کا جھگڑا | ۷۳۱ |
| ہمسایوں کا مقدمہ | ۷۳۱ |
| دنیا ہی میں حقوق ادا کرو | ۷۳۱ |
| مفلس کون ہے | ۷۳۱ |
| اہل سنت کا مسلک | ۷۳۱ |
| قیامت کے دن حقوق | ۷۳۱ |
| صحابہ کرام کا جواب | ۷۳۱ |
| مظلوم کا حق ظالم سے | ۷۳۲ |
| جسم اور روح کا جھگڑا | ۷۳۲ |
| سب سے بڑا ظالم | ۷۳۳ |
| سب سے بڑا بے انصاف | ۷۳۳ |
| حضور ﷺ کیلئے تسلی | ۷۳۴ |
| ڈرنے والوں کی شان | ۷۳۴ |
| غلطیوں کی معافی | ۷۳۴ |
| بڑے گناہ بھی معافی کے قابل ہیں | ۷۳۴ |
| اللہ کا بندہ غیر اللہ سے نہیں ڈرتا | ۷۳۴ |
| جو اللہ سے ڈرے اللہ اس کا کافی ہے | ۷۳۵ |
| جو خالق ہے وہی معبود ہے | ۷۳۵ |
| آدمی اور عمل ہونے کا طریقہ | ۷۳۶ |
| خدا پرست ہی کامیاب ہوگا | ۷۳۶ |
| ہر حال میں آنحضرت ﷺ کو غلبہ ہوگا | ۷۳۶ |
| آپ ﷺ اپنا فرض ادا کر چکے | ۷۳۶ |
| دلیل کی وضاحت | ۷۳۷ |
| نیند اور موت | ۷۳۷ |
| توفی کا معنی | ۷۳۷ |
| بعض اہل علم کا قول | ۷۳۷ |
| خواب کے سچا اور جھوٹا ہونے کی وجہ | ۷۳۸ |
| سونے اور جاگنے کا مسنون طریقہ | ۷۳۸ |
| دل کی فکر | ۷۳۸ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| شفاعت اور سفارش کی حقیقت | ۷۳۸ | آزمائش بھی نعمت ہے | ۷۴۸ | تکبر کا نتیجہ | ۷۵۶ |
| سب طاقت اللہ ہی کی ہے | ۷۳۹ | کافروں کی حسرت | ۷۴۸ | جنتی اور جہنمی آدمی | ۷۵۶ |
| غیر اللہ کی محبت والے | ۷۳۹ | بے وقت توبہ | ۷۴۸ | دوزخ والوں کا داخلہ | ۷۵۶ |
| اللہ ہی سے مانگیے | ۷۴۰ | اندھیر نگری | ۷۴۸ | اچھی طرح وضو کرنے والے | ۷۵۶ |
| آنحضرت ﷺ کی دعا | ۷۴۰ | ناکام کوشش | ۷۴۸ | آنحضرت ﷺ کی شان | ۷۵۶ |
| دعا جو آپ نے فرمائی | ۷۴۰ | قیامت کے اعمال اسباب موجود ہیں | ۷۴۹ | جنت میں نیکی کا معاوضہ | ۷۵۶ |
| آنحضرت ﷺ کی سکھائی ہوئی دعا | ۷۴۰ | نیک و بد کے کاموں کا انجام | ۷۴۹ | جنتیوں کا استقبال | ۷۵۷ |
| جنت میں پہنچانے والی دعا | ۷۴۰ | تکبر کرنے والوں کا حشر | ۷۴۹ | جنت کی خوشبو | ۷۵۷ |
| کافروں کی نجات نہیں ہوگی | ۷۴۱ | متقین کا انعام | ۷۴۹ | باغ و بہار | ۷۵۷ |
| کافروں کے لئے ناگہانی عذاب | ۷۴۱ | تمام اختیارات اللہ کے پاس ہیں | ۷۴۹ | جنتیوں کا بازار | ۷۵۸ |
| انسان کی جبلت | ۷۴۱ | شرک بیوقوفی ہے | ۷۵۰ | اہل جنت کی پاکیزگی | ۷۵۸ |
| توبہ حقانی ہے | ۷۴۲ | کافروں کے لئے خسارہ ہی ہے | ۷۵۰ | جنت میں اعلیٰ جنت | ۷۵۸ |
| کافروں کی ندامت اور ضد | ۷۴۲ | اہل ایمان کی فلاح | ۷۵۰ | عدالت الٰہی کا فیصلہ | ۷۵۹ |
| مشرک جانتے نہیں تھے | ۷۴۲ | تیسرے صور کی تفصیل | ۷۵۰ | مخلوق کی نجات | ۷۵۹ |
| روزی اللہ کی مرضی سے ملتی ہے | ۷۴۲ | الٰہی عدالت | ۷۵۱ | **سورۃ المؤمن** | ۷۵۹ |
| تمام حوادث اللہ کی طرف سے ہیں | ۷۴۲ | صرف اللہ کی عبادت کرو | ۷۵۱ | توبہ | ۷۵۹ |
| اللہ تعالیٰ کی شان کریمی | ۷۴۲ | شرک سے اعمال غارت | ۷۵۱ | سورہ غافر کی فضیلت | ۷۵۹ |
| گناہوں کو ایمان نے گرایا | ۷۴۳ | مرتد (۲) | ۷۵۱ | قرآنی اصطلاح | ۷۶۰ |
| بنی اسرائیل کے بزرگ | ۷۴۳ | مشرکین نے اللہ کی قدر نہیں کی | ۷۵۱ | دشمن سے حفاظت | ۷۶۰ |
| حضرت جبرئیل کی نصیحت | ۷۴۴ | عظمت شان الٰہی | ۷۵۲ | ایک عجیب واقعہ | ۷۶۰ |
| حسرت کا فائدہ نہیں ہے | ۷۴۵ | زمین و آسمان اس کے ہاتھ میں ہیں | ۷۵۲ | ناحق جھگڑا | ۷۶۱ |
| اپنے فوت شدہ آباء و اجداد | ۷۴۵ | لمبی حدیث کا بیان | ۷۵۲ | حاملین عرش کی تسبیح | ۷۶۱ |
| اللہ تعالیٰ کی عظمت | ۷۴۵ | تین نفخے | ۷۵۳ | مکذبین کا انجام | ۷۶۲ |
| اللہ تعالیٰ ہاتھ کے بغیر مہربان ہے | ۷۴۵ | صور اسرافیل | ۷۵۳ | حق کے منکر | ۷۶۲ |
| قیامت کو مومن جنت میں جائیں گے | ۷۴۶ | علامات قیامت | ۷۵۳ | ان منکروں پر بھی عذاب | ۷۶۲ |
| ثواب کے لئے ایمان شرط ہے | ۷۴۶ | آمد قیامت | ۷۵۳ | مومنین کا شرف | ۷۶۳ |
| موافقت کے دن | ۷۴۶ | جلوہ افروزی | ۷۵۳ | عرش کے حامل فرشتے | ۷۶۳ |
| تنازع مومن اور کافر کے درمیان | ۷۴۶ | اللہ تعالیٰ کا نور | ۷۵۴ | عرش کی عظمت | ۷۶۳ |
| سب سے بڑی عظمت والی آیت | ۷۴۶ | نبیوں کی شہادت | ۷۵۵ | فرشتوں کی فضیلت | ۷۶۳ |
| حضرت آدم کے انتقال کے وقت | ۷۴۶ | امت محمد ﷺ کی گواہی | ۷۵۵ | تائبانہ دعا | ۷۶۳ |
| حضرت آدم کی درخواست | ۷۴۷ | کسی کے ساتھ زیادتی نہ کی جائے گی | ۷۵۵ | امیہ بن ابی الصلت کے اشعار | ۷۶۳ |
| ترجمانی انجام | ۷۴۷ | کافروں کی ذلت | ۷۵۵ | رحمت الٰہی | ۷۶۴ |
| توبہ کی توفیق | ۷۴۷ | اقرار جرم | ۷۵۶ | عزیز و اقارب کی وجہ سے نجات | ۷۶۵ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بتائی سے ممانعت | ۷۶۵ | پکار کا دن | ۷۷۴ | اب وقت نکل چکا ہے | ۷۸۲ |
| کفر کی سزا | ۷۶۵ | خوف خدا اور رکنے کی دعوت | ۷۷۴ | دنیا میں مدد | ۷۸۳ |
| دو موتیں دو حیاتیں | ۷۶۶ | موت کے مر جانے کا اعلان | ۷۷۴ | اللہ تعالیٰ کی سنت | ۷۸۳ |
| اعتراف جرم | ۷۶۶ | منتشر ہونے کا دن | ۷۷۵ | اہل حق کا اعزاز | ۷۸۳ |
| منکرین کا اقرار | ۷۶۶ | خوش بختی اور بدبختی کا اعلان | ۷۷۵ | سوءُ الدار کی تفسیر | ۷۸۴ |
| کافروں کی حسرت | ۷۶۶ | فضول بھاگ دوڑ | ۷۷۶ | قابل عبرت | ۷۸۴ |
| عظمت وحدانیت کی نشانی | ۷۶۷ | عناد کی سزا | ۷۷۶ | آپ ﷺ کو ضرور فتح ہوگی | ۷۸۴ |
| کافروں کی پرواہ نہ کرو | ۷۶۷ | حضرت یوسفؑ سے استدلال | ۷۷۶ | تسبیح | ۷۸۴ |
| بضرورت کا قتل | ۷۶۷ | سب سے بڑی زیادتی | ۷۷۶ | موت کے بعد زندگی | ۷۸۵ |
| روح سے مراد | ۷۶۷ | غرور کی سزا | ۷۷۷ | مومن اور بدکار | ۷۸۵ |
| ملاقات کا دن | ۷۶۸ | عبادت کرنے والے مجرمین | ۷۷۷ | مخصوص تین چیزیں | ۷۸۵ |
| تلاقی کی پکار | ۷۶۸ | فرعون کی بے شرمی | ۷۷۷ | اللہ تعالیٰ کی شان | ۷۸۵ |
| آدھے دن میں سب کا حساب | ۷۶۹ | مسلسل دلائل کا نتیجہ | ۷۷۷ | چار باتیں | ۷۸۵ |
| قیامت کی دہشت | ۷۶۹ | آخرت کو نہ بھولو | ۷۷۷ | تکبر کرنے والوں کا حشر | ۷۸۶ |
| سفارش | ۷۶۹ | آخرت کی ایک جھلک | ۷۷۸ | قابل تعجب آدمی | ۷۸۶ |
| آنکھ کی خیانت | ۷۶۹ | عجیب معاملہ | ۷۷۸ | دعا کی حقیقت | ۷۸۶ |
| فیصلہ کا اختیار | ۷۷۰ | قوم کی دعوت | ۷۷۸ | فضائل دعاء | ۷۸۷ |
| اللہ کا حکم غالب ہوگا | ۷۷۰ | مرد مومن کی دعوت | ۷۷۸ | قبولیت دعاء کا وعدہ | ۷۸۷ |
| معجزات موسوی | ۷۷۰ | قوم کی بے عقلی | ۷۷۹ | قبولیت دعاء کی شرائط | ۷۸۷ |
| فرعون وقارون | ۷۷۰ | بے وقت پشیمانی | ۷۷۹ | رات اور دن کا نظام | ۷۸۷ |
| فرعون کی دہشت گردی | ۷۷۱ | اپنے فرض کے بعد خدا کے سپرد | ۷۷۹ | ناشکری | ۷۸۸ |
| منکرین کے منصوبے | ۷۷۱ | آخری نتیجہ | ۷۷۹ | معبودیت کی دلیل | ۷۸۸ |
| فرعون کی چالبازی | ۷۷۱ | آل فرعون | ۷۷۹ | بہتر صورت اور بہتر رزق | ۷۸۸ |
| خوف اقتدار | ۷۷۱ | عذاب قبر | ۷۸۰ | حضرات سلف کا قول | ۷۸۹ |
| حضرت موسیٰ کا عزم | ۷۷۲ | عالم برزخ پر ایمان | ۷۸۰ | حمیم کیا ہے | ۷۹۰ |
| فرعون کا دم نہ لینے کی حکمت | ۷۷۲ | برزخ قبر کیا ہے | ۷۸۰ | غلطی کا اعتراف | ۷۹۰ |
| مرد مومن | ۷۷۲ | قبر کی حیات | ۷۸۰ | وعدہ الٰہی | ۷۹۱ |
| صدیق اکبرؓ کا جذبہ ایمان | ۷۷۲ | قبر میں مومن وکافر کی حالت | ۷۸۰ | مختار کل اللہ تعالیٰ ہے | ۷۹۱ |
| آنحضرت ﷺ کو سخت ترین ایذاء | ۷۷۳ | ثواب وعذاب قبر کے دلائل | ۷۸۱ | عذاب الٰہی | ۷۹۲ |
| چند حقیقتیں | ۷۷۳ | صبح وشام آگ | ۷۸۱ | پیغمبروں پر استہزاء کا انجام | ۷۹۲ |
| طاقت سے روک کر دکھاؤ | ۷۷۳ | ایک طالب علمانہ اشکال اور اس کا حل | ۷۸۱ | اب پچھتانے کیا ہوت | ۷۹۳ |
| فرعون کی رائے | ۷۷۳ | جھوٹے لیڈروں کا انجام | ۷۸۲ | **سورۃ حٰم** | ۷۹۳ |
| مکذب انبیاء کی سزا | ۷۷۳ | داروغوں سے مدد کی درخواست | ۷۸۲ | عظمت کتاب | ۷۹۳ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| قرآن کی زبان | ۷۹۳ | قوم ثمود | ۸۰۳ | اذان و اقامت | ۸۱۲ |
| اکثریت کا اعراض | ۷۹۳ | اہل ایمان | ۸۰۳ | داعی کے اخلاق | ۸۱۳ |
| قرآن پاک کا قلب پر اثر | ۷۹۳ | قیامت میں مجرموں کے گروہ | ۸۰۳ | برائی کے بدلے اچھائی کرو | ۸۱۳ |
| اکثریت کا جواب | ۷۹۳ | اعضاء کی گواہی | ۸۰۳ | شیطان کا مقابلہ | ۸۱۳ |
| حجاب کا معنی | ۷۹۵ | کیا کیا چیزیں گواہی دیں گی | ۸۰۳ | شیطان کی کوشش | ۸۱۳ |
| پیغمبر کا خطاب | ۷۹۵ | دل کی گواہی | ۸۰۴ | عظمت الٰہی کے دلائل | ۸۱۳ |
| انما انا بشر کا مطلب | ۷۹۶ | اعضاء کو ملامت | ۸۰۳ | اللہ تعالیٰ کے سوا کسی کو سجدہ کرنا جائز نہیں | ۸۱۴ |
| مشرکوں کا انجام | ۷۹۶ | عجیب تجربات | ۸۰۴ | چاند، سورج اور پورا نظام کائنات | ۸۱۵ |
| زکوٰۃ کا مطلب | ۷۹۶ | تین کم سمجھ آدمی | ۸۰۴ | اللہ تعالیٰ بے نیاز ہے | ۸۱۵ |
| زکوٰۃ کی خصوصیت | ۷۹۶ | بدگمانی | ۸۰۵ | سجدہ کس مقام پر ہے | ۸۱۵ |
| زکوٰۃ دینے کا مطلب | ۷۹۶ | دل کا پردہ | ۸۰۵ | زمین کی خاصیات | ۸۱۵ |
| مومنین کا اجر | ۷۹۶ | عذاب کس طرح دیا جائے گا | ۸۰۵ | ملحد کا انجام | ۸۱۶ |
| مقام تعجب | ۷۹۷ | حسن گمان اور عمل | ۸۰۵ | الحاد کیا ہے | ۸۱۶ |
| آسمان و زمین کی تخلیق میں ترتیب | ۷۹۷ | اعراض کا نتیجہ | ۸۰۶ | کفر و الحاد کی گرم بازاری | ۸۱۶ |
| ہر خطۂ زمین کی خصوصیات | ۷۹۷ | آواز حق | ۸۰۶ | الحاد کی دو قسمیں | ۸۱۷ |
| ضروریات زندگی کا اہتمام | ۷۹۸ | کافروں کی بک بک | ۸۰۶ | اہل حق کی جماعت موجود رہے گی | ۸۱۷ |
| پیدائش زمین کی مدت | ۷۹۸ | تلاوت قرآن کے وقت | ۸۰۶ | اللہ تعالیٰ کی بخشش و سزا | ۸۱۷ |
| دخان کیا ہے | ۷۹۸ | برے کام کی سزا | ۸۰۷ | قرآن پاک کی تحریف | ۸۱۸ |
| احکام کونیات | ۷۹۸ | اہل ایمان و استقامت کا انعام | ۸۰۷ | آنحضرت ﷺ کو تسلی | ۸۱۸ |
| تعیین ایام کی احادیث | ۷۹۹ | استقامت کے معنی | ۸۰۸ | تم سے پہلے انبیاء | ۸۱۸ |
| تخلیق زمین و آسمان | ۷۹۹ | اللہ تعالیٰ کی دوستی اور رضاء | ۸۰۸ | کتاب مکمل | ۸۱۹ |
| زمین و آسمان کی تخلیق کے دن | ۷۹۹ | سب سے آسان آیت | ۸۰۹ | مسخ شدہ فطرت والے | ۸۱۹ |
| اللہ تعالیٰ نے آسمان کو کیا حکم دیا | ۸۰۰ | استقامت کی دعاء | ۸۰۹ | عمل کی اہمیت | ۸۱۹ |
| آسمان کی زینت | ۸۰۰ | اسلام کے بعد سب سے اہم بات | ۸۰۹ | ایام قیامت کا علم | ۸۱۹ |
| کفار مکہ کو تنبیہ | ۸۰۰ | دنیا و آخرت کی رفاقت | ۸۰۹ | علم الٰہی | ۸۲۰ |
| جاءتہم الرسل کا مطلب | ۸۰۰ | مومنوں کیلئے بشارتیں | ۸۰۹ | جھوٹے عابد و معبود | ۸۲۰ |
| قید والے واقعہ کی تفصیل | ۸۰۰ | دیدار الٰہی | ۸۱۰ | انسانی طبیعت کی نیرنگیاں | ۸۲۰ |
| قوم عاد | ۸۰۲ | جنت میں تمام سعد ہوگا | ۸۱۰ | کافر اور مومن کی حالت | ۸۲۱ |
| عذاب | ۸۰۲ | اللہ تعالیٰ کی مہمانی | ۸۱۱ | انسانی امراض کا علاج | ۸۲۱ |
| قوم عاد پر عذاب کس وقت ہوا | ۸۰۲ | اہل استقامت کا اعلیٰ مقام | ۸۱۱ | قدرت کے نمونے | ۸۲۲ |
| رضا اور ناراضی کی علامت | ۸۰۲ | داعی کے آداب | ۸۱۱ | آیات آفاقی | ۸۲۲ |
| کوئی وقت منحوس نہیں ہے | ۸۰۲ | اذان کی فضیلت | ۸۱۱ | قریب نفسی | ۸۲۲ |
| عذاب آخرت | ۸۰۳ | اذان کا جواب | ۸۱۲ | **سورۃ الشوریٰ** | ۸۲۳ |

| | |
|---|---|
| شانِ رحمت | ۸۲۳ |
| حسن عشق | ۸۲۳ |
| [illegible] | ۸۲۳ |
| فرشتوں کے وجود | ۸۲۳ |
| فرشتوں کی تسبیح | ۸۲۳ |
| شیطان کی مجبوری | ۸۲۳ |
| اللہ تعالیٰ جلیل ہیں | ۸۲۳ |
| آنحضرت ﷺ کو مخاطب | ۸۲۳ |
| علمائے محققین کی نظر میں | ۸۲۳ |
| [illegible] | ۸۲۴ |
| آنحضرت ﷺ کی خصوصیت | ۸۲۵ |
| قیامت بھی حق ہے | ۸۲۵ |
| ثباتِ تقدیر | ۸۲۵ |
| قدرت اور حکمت | ۸۲۶ |
| کافروں کا عذاب | ۸۲۶ |
| اللہ اور دو گروہ | ۸۲۶ |
| [illegible] | ۸۲۷ |
| [illegible] | ۸۲۷ |
| [illegible] | ۸۲۷ |
| [illegible] | ۸۲۸ |
| [illegible] | ۸۲۸ |
| آنحضرت ﷺ کی اہلیت | ۸۲۸ |
| دین سرمدی تمام انبیاء کا دین ہے | ۸۲۹ |
| [illegible] | ۸۲۹ |
| [illegible] | ۸۳۰ |
| ہدایت کے راستے | ۸۳۰ |
| قدرت کے کرشمے | ۸۳۱ |
| حضور ﷺ کو [illegible] | ۸۳۱ |
| اہل کتاب کے جھگڑے | ۸۳۲ |
| [illegible] | ۸۳۲ |
| [illegible] | ۸۳۲ |
| مؤمن اور مشرک | ۸۳۳ |
| خدا و رسول کی محبت | ۸۳۳ |
| اللہ خالق ہے [illegible] | ۸۳۳ |
| [illegible] | ۸۳۳ |
| [illegible] | ۸۳۴ |
| اعمال کا دارومدار نیتوں پر ہے | ۸۳۴ |
| [illegible] | ۸۳۴ |
| ہدایت اللہ کی طرف سے ہے | ۸۳۴ |
| [illegible] | ۸۳۵ |
| [illegible] | ۸۳۵ |
| مودّت فی القربیٰ [illegible] | ۸۳۵ |
| اہل بیت کی محبت | ۸۳۵ |
| فرقہ شیعہ کی غلط تفسیر | ۸۳۷ |
| ذوی القربیٰ کی بحث | ۸۳۷ |
| شیعوں کا غلط استدلال | ۸۳۸ |
| حضرت قاضی ثناء اللہ کی تحقیق | ۸۳۹ |
| [illegible] | ۸۳۹ |
| [illegible] | ۸۴۰ |
| [illegible] | ۸۴۰ |
| [illegible] | ۸۴۰ |
| [illegible] | ۸۴۰ |
| [illegible] | ۸۴۱ |
| [illegible] | ۸۴۱ |
| [illegible] | ۸۴۱ |
| اللہ تعالیٰ توبہ قبول کرتے ہیں | ۸۴۲ |
| [illegible] | ۸۴۲ |
| [illegible] | ۸۴۲ |
| [illegible] | ۸۴۲ |
| قسمت کا تقاضا | ۸۴۲ |
| [illegible] | ۸۴۳ |
| [illegible] | ۸۴۳ |
| حضرت آدم کی [illegible] | ۸۴۴ |
| [illegible] | ۸۴۴ |
| [illegible] تقسیم میں حکمت قدرت | ۸۴۴ |
| [illegible] | ۸۴۵ |
| تکلیف [illegible] کی حکمت | ۸۴۵ |
| [illegible] | ۸۴۶ |
| [illegible] | ۸۴۶ |
| [illegible] | ۸۴۷ |
| مشورہ | ۸۴۷ |
| مشورہ کا ادب | ۸۴۷ |
| اسلام حقیقی جمہوریت کا بانی ہے | ۸۴۸ |
| مؤمن کی شان | ۸۴۸ |
| [illegible] فیصلہ | ۸۴۸ |
| بدلہ | ۸۴۹ |
| [illegible] | ۸۴۹ |
| معاف کرنا | ۸۴۹ |
| [illegible] کی فضیلت | ۸۴۹ |
| [illegible] | ۸۵۰ |
| [illegible] | ۸۵۰ |
| کافروں کی [illegible] | ۸۵۰ |
| [illegible] | ۸۵۱ |
| [illegible] | ۸۵۱ |
| انسانی طبیعت | ۸۵۲ |
| [illegible] | ۸۵۲ |
| اللہ ہی مالک و مختار ہے | ۸۵۳ |
| اللہ تعالیٰ سے ہم کلامی | ۸۵۳ |
| وحی کا مفہوم | ۸۵۳ |
| [illegible] کی حیثیت | ۸۵۳ |
| وحی کی حقیقت | ۸۵۴ |
| [illegible] کی صورتیں | ۸۵۵ |
| الہام [illegible] | ۸۵۶ |
| روح سے مراد | ۸۵۷ |
| [illegible] کی بات | ۸۵۷ |
| [illegible] | ۸۵۷ |
| ایمان سے کیا مراد ہے | ۸۵۷ |
| نورِ ہدایت | ۸۵۷ |
| انجام کار [illegible] | ۸۵۸ |

| | |
|---|---|
| **سورۃ زخرف** | |
| قسم کھانے کا مطلب | ۸۵۸ |
| قرآن کو واضح کہنے کا مطلب | ۸۵۸ |
| بزرگ و محکم کتاب | ۸۵۹ |
| ام الکتاب ہونے کا مقام | ۸۵۹ |
| ذکر سے ہدایت بند نہیں ہو سکتی | ۸۵۹ |
| آنحضرت ﷺ کیلئے پیغام تسکین | ۸۶۰ |
| سامان عبرت | ۸۶۰ |
| زمین کی ساخت | ۸۶۰ |
| بعث بعد الموت | ۸۶۰ |
| دو قسموں کی مخلوق | ۸۶۱ |
| آیت سے متعلق بات | ۸۶۱ |
| سب کا خالق | ۸۶۱ |
| جانوروں اور سواریوں کی نعمت | ۸۶۱ |
| فضائی مسافت کی نعمت | ۸۶۱ |
| سوار ہونے کا ذکر | ۸۶۲ |
| سواری کے وقت دعا | ۸۶۲ |
| اللہ تعالیٰ کو بیٹیاں دینا | ۸۶۲ |
| صاحب عقل کا کام | ۸۶۳ |
| کافر اور مومن کا فرق | ۸۶۳ |
| سفر آخرت کی یاد | ۸۶۳ |
| مشرکین عرب کی عقل کی تردید | ۸۶۳ |
| مشرکین کی بے عقلی | ۸۶۳ |
| ضعیف الرائے | ۸۶۳ |
| عورتوں کیلئے زیور کی اجازت | ۸۶۳ |
| فرشتوں کی توہین | ۸۶۴ |
| مشرکین کے دعوے | ۸۶۴ |
| بے علم باتیں | ۸۶۴ |
| تقلید کی مذمت | ۸۶۵ |
| کافروں کی ہٹ دھرمی | ۸۶۵ |
| حضرت ابراہیم کی براءت | ۸۶۵ |
| تقلید کرنی ہے | ۸۶۶ |
| بد عقیدہ لوگوں سے براءت | ۸۶۶ |

| | |
|---|---|
| اولاد کی اصلاح کی فکر ضروری ہے | ۸۶۶ |
| اولاد کی اصلاح کا کارگر عمل | ۸۶۶ |
| مشرکین کی بدحواسی | ۸۶۶ |
| بعث رسول نعمت ہے | ۸۶۷ |
| کافروں کے نزدیک عظیم آدمی | ۸۶۷ |
| کافروں کا اعتراض | ۸۶۷ |
| مال و دولت کی بے وقعتی | ۸۶۷ |
| مالک اللہ ہے تم نہیں | ۸۶۸ |
| معاشی مساوات کی حقیقت | ۸۶۸ |
| فرائض و حقوق کا تعین | ۸۶۸ |
| تقسیم معیشت کا قدرتی نظام | ۸۶۸ |
| تقسیم معیشت کا کام | ۸۶۸ |
| تقسیم حقوق و فرائض | ۸۶۹ |
| معاشی مساوات کا مطلب | ۸۶۹ |
| اسلام کے معاشی نظام میں مساوات | ۸۶۹ |
| معیشت میں مرضی کو دخل نہیں | ۸۶۹ |
| اللہ کے نزدیک دنیا کی بے وقعتی | ۸۷۰ |
| مومنین کیلئے آخرت ہے | ۸۷۰ |
| دنیا کی قیمت | ۸۷۰ |
| دنیا کو بے عقل جمع کرتے ہیں | ۸۷۱ |
| اہل اللہ کا بلند مقام | ۸۷۱ |
| حضرت مجدد الف ثانی | ۸۷۱ |
| طلب معیشت | ۸۷۱ |
| دنیا کی محبت کا مطلب | ۸۷۲ |
| حق سے منہ موڑنے کا عذاب | ۸۷۲ |
| شیطان کے کام | ۸۷۲ |
| بے انتہا حسرت | ۸۷۳ |
| عذاب میں تخفیف نہ ہوگی | ۸۷۳ |
| آنحضرت ﷺ کو تسلی | ۸۷۳ |
| عزت اور ترقی کا سامان | ۸۷۳ |
| مستقبل کیلئے بشارت | ۸۷۳ |
| آنحضرت ﷺ کی قوم کا شرف | ۸۷۳ |
| قریش اور عرب کی خدمات | ۸۷۳ |

| | |
|---|---|
| قرآن کے سامنے کسی کی نہ چلی | ۸۷۴ |
| آنحضرت ﷺ کی بعثت دین انبیاء کی ہے | ۸۷۵ |
| تمام انبیاء کا مذہب | ۸۷۵ |
| انبیاء کے مشنوں میں توحید کی تعلیم | ۸۷۵ |
| قوم کی نافرمانی | ۸۷۶ |
| فرعونیوں کی دھوکہ بازی | ۸۷۶ |
| بنی اسرائیل کی بدعہدی | ۸۷۶ |
| حاکم مصر | ۸۷۷ |
| عمل کی تحریف | ۸۷۷ |
| فرعون کا تکبر | ۸۷۷ |
| اہل مصر کو دھوکہ | ۸۷۷ |
| فرعون کی مکاری | ۸۷۷ |
| انتقام کی صورتیں | ۸۷۸ |
| مشرکین کا واویلا | ۸۷۸ |
| مشرکین کی عادت بد | ۸۷۸ |
| فتنہ پروری کی صورت | ۸۷۹ |
| حضرت عیسیٰ علیہ السلام | ۸۷۹ |
| کوئی معبود نہیں بن جاتا | ۸۷۹ |
| حضرت عیسیٰ علیہ السلام قیامت کی علامت | ۸۷۹ |
| مسئلہ نزول عیسیٰ | ۸۷۹ |
| قیامت کی بڑی نشانیاں | ۸۸۰ |
| نزول عیسیٰ علیہ السلام کی احادیث | ۸۸۰ |
| امتوں کے فرقے | ۸۸۱ |
| عیسیٰ کی تعلیم | ۸۸۱ |
| فرقہ بندی | ۸۸۱ |
| منکرین کی ہلاکت کا اعلان | ۸۸۲ |
| ناجی فرقہ اہل سنت والجماعت ہے | ۸۸۲ |
| قیامت کی ہیبت | ۸۸۲ |
| وہ لوگ جو ایک دوسرے کے دوست | ۸۸۲ |
| دوستی درحقیقت وہی ہے | ۸۸۳ |
| مومنوں کیلئے اعلان | ۸۸۳ |
| ایمان و اسلام | ۸۸۳ |
| [illegible] | ۸۸۳ |

| | |
|---|---|
| جنت کی نعمتوں سے لطف اندوزی | ۸۸۴ |
| جنت کے قابل | ۸۸۴ |
| اہل جہنم کی ناامیدی | ۸۸۵ |
| [illegible] | ۸۸۵ |
| [illegible] | ۸۸۵ |
| [illegible] | ۸۸۶ |
| ہم سب جانتے ہیں | ۸۸۶ |
| [illegible] | ۸۸۶ |
| پاک ذات | ۸۸۷ |
| [illegible] | ۸۸۷ |
| [illegible] | ۸۸۷ |
| سفارش | ۸۸۷ |
| نبی کی التجا | ۸۸۷ |
| کافروں پر غضب | ۸۸۸ |
| [illegible] | ۸۸۸ |
| سلام کہنے کا مطلب | ۸۸۸ |
| **سورۃ الدخان** | ۸۸۸ |
| فضیلت سورت | ۸۸۸ |
| شب برات | ۸۸۸ |
| [illegible] | ۸۸۹ |
| دخان علامت قیامت ہے | ۸۸۹ |
| رات میں برکت کیوں ہے | ۸۸۹ |
| مبارک رات کونسی ہے | ۸۸۹ |
| دستور الٰہی | ۸۹۰ |
| شب قدر اور شب برات | ۸۹۰ |
| [illegible] | ۸۹۱ |
| رحمت و حکمت الٰہی | ۸۹۱ |
| ربوبیت الٰہی | ۸۹۱ |
| مشرکین کی بے یقینی | ۸۹۱ |
| واقعہ دخان | ۸۹۱ |
| قیامت کی علامات | ۸۹۲ |
| [illegible] | ۸۹۲ |
| [illegible] | ۸۹۳ |
| مشرکین کی بدحواسی | ۸۹۳ |
| بڑی پکڑ | ۸۹۳ |
| آل فرعون کی آزمائش | ۸۹۳ |
| [illegible] | ۸۹۳ |
| [illegible] | ۸۹۳ |
| [illegible] | ۸۹۳ |
| فرعونیوں کی ہلاکت کا سامان | ۸۹۴ |
| [illegible] | ۸۹۴ |
| [illegible] | ۸۹۴ |
| فرعونیوں سے نجات | ۸۹۴ |
| [illegible] | ۸۹۴ |
| کافروں پر آسمان و زمین نہیں روتے | ۸۹۴ |
| [illegible] | ۸۹۴ |
| [illegible] | ۸۹۴ |
| [illegible] | ۸۹۵ |
| انکار بعث | ۸۹۵ |
| [illegible] | ۸۹۵ |
| [illegible] | ۸۹۶ |
| [illegible] | ۸۹۶ |
| [illegible] | ۸۹۶ |
| [illegible] | ۸۹۶ |
| [illegible] | ۸۹۷ |
| کارخانہ قدرت | ۸۹۷ |
| آسمان و زمین میں غور | ۸۹۷ |
| رحمت الٰہی | ۸۹۷ |
| زقوم | ۸۹۷ |
| [illegible] | ۸۹۷ |
| [illegible] | ۸۹۸ |
| [illegible] | ۸۹۸ |
| [illegible] | ۸۹۸ |
| [illegible] | ۸۹۸ |
| [illegible] | ۸۹۸ |
| جنت کا لباس | ۸۹۹ |
| [illegible] | ۸۹۹ |
| [illegible] | ۸۹۹ |
| [illegible] | ۸۹۹ |
| [illegible] | ۸۹۹ |
| بڑی کامیابی | ۹۰۰ |
| [illegible] | ۹۰۰ |
| [illegible] | ۹۰۰ |
| **سورۃ الجاثیہ** | ۹۰۰ |
| [illegible] | ۹۰۰ |
| [illegible] | ۹۰۱ |
| [illegible] | ۹۰۱ |
| [illegible] | ۹۰۱ |
| [illegible] | ۹۰۱ |
| [illegible] | ۹۰۲ |
| [illegible] | ۹۰۳ |
| ایام اللہ | ۹۰۳ |
| [illegible] | ۹۰۳ |
| [illegible] | ۹۰۳ |
| [illegible] | ۹۰۴ |
| [illegible] | ۹۰۵ |
| [illegible] | ۹۰۵ |
| [illegible] | ۹۰۵ |
| [illegible] | ۹۰۶ |
| [illegible] | ۹۰۶ |
| [illegible] | ۹۰۶ |
| [illegible] | ۹۰۶ |
| [illegible] | ۹۰۶ |
| [illegible] | ۹۰۷ |
| [illegible] | ۹۰۷ |
| [illegible] | ۹۰۷ |
| [illegible] | ۹۰۷ |
| [illegible] | ۹۰۷ |
| [illegible] | ۹۰۸ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| سورۃ الاحقاف | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | کافروں کا اقرار | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

| | |
|---|---|
| جنوں کو اللہ کا ارشاد | ۹۳۸ |
| اولی العزم کا مقام | ۹۳۸ |
| آپ نبی کا صبر | ۹۳۸ |
| عذاب آنے کا تو پتہ چلے گا | ۹۳۹ |
| مدت پوری زندگی | ۹۳۹ |
| سورۃ محمد | ۹۳۹ |
| داخلی مسئلہ | ۹۳۹ |
| مومنین | ۹۳۹ |
| عمل بغیر ایمان کے مقبول نہیں | ۹۴۰ |
| جہاد | ۹۴۰ |
| ایک لطیف مفہوم | ۹۴۰ |
| داستان بیان | ۹۴۰ |
| باطل سے مقابلہ | ۹۴۲ |
| جنگی قیدیوں کا مسئلہ | ۹۴۲ |
| امام مسلمین کو بااختیار | ۹۴۲ |
| اسلام پر وضاحت اور اس کا جواب | ۹۴۳ |
| [illegible] کا نقطہ نظر | ۹۴۳ |
| اسلام نے غلامی کو کیا [illegible] کی حق ہے | ۹۴۳ |
| [illegible] | ۹۴۳ |
| جنگی قیدیوں کو قتل کرنا | ۹۴۳ |
| [illegible] کا منصب | ۹۴۳ |
| [illegible] | ۹۴۳ |
| کفر کے عواقب تباہ | ۹۴۳ |
| [illegible] | ۹۴۳ |
| جنت کی ایک صفت | ۹۴۴ |
| [illegible] | ۹۴۴ |
| شہید کا مقام | ۹۴۴ |
| [illegible] شہید | ۹۴۴ |
| اللہ کے عذاب کی صورتحال | ۹۴۴ |
| شہید کیلئے بشارتیں | ۹۴۵ |
| دین کی قدر نہ کرنے والے ہلاک ہو گئے | ۹۴۵ |
| [illegible] | ۹۴۵ |
| مومنوں کی محبت [illegible] | ۹۴۵ |
| کافروں کی بربادی | ۹۴۵ |
| ہلاکت کا سبب | ۹۴۶ |
| اہل کفر کیلئے حسرت | ۹۴۶ |
| اللہ مومنوں کا مددگار ہے | ۹۴۶ |
| [illegible] کا انجام | ۹۴۷ |
| حیوانوں جیسی زندگی | ۹۴۷ |
| [illegible] | ۹۴۷ |
| مومن اور کافر [illegible] | ۹۴۸ |
| اہل جنت کی غذا | ۹۴۸ |
| جنت کا پانی، دودھ، شہد اور شراب | ۹۴۸ |
| جنت کی دریا | ۹۴۹ |
| جنت کی نہریں | ۹۴۹ |
| جنت کا دودھ اور شہد | ۹۴۹ |
| جنت کا نہری نظام | ۹۴۹ |
| [illegible] لطیف | ۹۴۹ |
| [illegible] کی داستان | ۹۵۰ |
| منافقت کی وجہ | ۹۵۰ |
| ہدایت کی [illegible] | ۹۵۰ |
| قیامت آنے کو ہے | ۹۵۰ |
| [illegible] | ۹۵۱ |
| قیامت قریب ہے | ۹۵۱ |
| قیامت کی نشانیاں | ۹۵۱ |
| [illegible] | ۹۵۱ |
| [illegible] | ۹۵۱ |
| استغفار کا حکم [illegible] مطلب | ۹۵۲ |
| لا الہ الا اللہ [illegible] | ۹۵۲ |
| ایک حدیث [illegible] | ۹۵۲ |
| [illegible] | ۹۵۳ |
| [illegible] | ۹۵۳ |
| منافقوں پر حکم جہاد کا اثر | ۹۵۴ |
| جہاد کا حکم | ۹۵۴ |
| قطع رحمی [illegible] | ۹۵۴ |
| فساد پھیلانا | ۹۵۴ |
| [illegible] کا حکم | ۹۵۵ |
| [illegible] | ۹۵۵ |
| [illegible] | ۹۵۵ |
| [illegible] | ۹۵۶ |
| ایک نوجوان کا واقعہ | ۹۵۶ |
| شیطان کے مکر [illegible] | ۹۵۷ |
| شیطان کے وعدے | ۹۵۷ |
| منافقوں [illegible] | ۹۵۷ |
| [illegible] | ۹۵۸ |
| اعمال [illegible] | ۹۵۸ |
| منافقوں [illegible] | ۹۵۸ |
| [illegible] | ۹۵۸ |
| [illegible] | ۹۵۸ |
| [illegible] | ۹۵۹ |
| [illegible] | ۹۵۹ |
| [illegible] | ۹۵۹ |
| [illegible] | ۹۵۹ |
| [illegible] | ۹۵۹ |
| [illegible] | ۹۶۰ |
| [illegible] | ۹۶۰ |
| [illegible] | ۹۶۱ |
| [illegible] | ۹۶۱ |
| [illegible] | ۹۶۱ |
| [illegible] | ۹۶۲ |
| [illegible] | ۹۶۲ |
| [illegible] | ۹۶۲ |
| [illegible] | ۹۶۲ |
| [illegible] | ۹۶۳ |
| [illegible] | ۹۶۳ |
| [illegible] | ۹۶۳ |
| [illegible] | ۹۶۳ |
| [illegible] | ۹۶۴ |
| [illegible] | ۹۶۴ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | ۹۶۴ | حضرت عثمان [illegible] | ۹۷۶ | [illegible] | ۹۹۰ |
| [illegible] | ۹۶۴ | حضرت عثمان کی [illegible] | ۹۷۶ | [illegible] | ۹۹۰ |
| [illegible] | ۹۶۵ | قریش [illegible] | ۹۷۷ | [illegible] | ۹۹۱ |
| [illegible] | ۹۶۵ | قریش [illegible] | ۹۷۷ | [illegible] | ۹۹۱ |
| دشمنوں کی [illegible] | ۹۶۶ | [illegible] | ۹۷۸ | [illegible] | ۹۹۱ |
| سورۃ الفتح | ۹۶۶ | [illegible] | ۹۷۸ | [illegible] | ۹۹۱ |
| [illegible] | ۹۶۷ | حضرت عمر کی [illegible] | ۹۷۸ | [illegible] | ۹۹۱ |
| اگلے اور پچھلے گناہوں کا مطلب | ۹۶۸ | [illegible] | ۹۷۹ | [illegible] | ۹۹۱ |
| [illegible] | ۹۶۹ | حضرت [illegible] | ۹۷۹ | [illegible] | ۹۹۲ |
| [illegible] | ۹۶۹ | صحابہ کی [illegible] | ۹۸۰ | آنحضرت ﷺ کی تکلیف | ۹۹۳ |
| [illegible] | ۹۶۹ | حضرت [illegible] | ۹۸۰ | [illegible] | ۹۹۳ |
| [illegible] | ۹۶۹ | حضرت [illegible] | ۹۸۰ | حضرت علی کی [illegible] | ۹۹۳ |
| [illegible] | ۹۶۹ | [illegible] | ۹۸۱ | [illegible] حضرت علی کی شجاعت | ۹۹۳ |
| ایمان [illegible] | ۹۶۹ | آنحضرت ﷺ [illegible] | ۹۸۱ | [illegible] اور حضرت صفیہ | ۹۹۳ |
| قابل رشک [illegible] حضور ﷺ | ۹۷۰ | آنحضرت ﷺ [illegible] | ۹۸۲ | حضرت صفیہ [illegible] | ۹۹۳ |
| [illegible] | ۹۷۰ | حضور ﷺ [illegible] | ۹۸۲ | [illegible] | ۹۹۴ |
| [illegible] | ۹۷۰ | [illegible] | ۹۸۲ | [illegible] | ۹۹۴ |
| حضور ﷺ کے ہاتھ پر بیعت | ۹۷۰ | [illegible] | ۹۸۳ | [illegible] | ۹۹۴ |
| [illegible] | ۹۷۱ | [illegible] | ۹۸۴ | [illegible] | ۹۹۵ |
| [illegible] | ۹۷۲ | [illegible] | ۹۸۴ | [illegible] | ۹۹۵ |
| [illegible] | ۹۷۲ | [illegible] | ۹۸۴ | [illegible] | ۹۹۵ |
| آنحضرت [illegible] | ۹۷۳ | [illegible] | ۹۸۵ | [illegible] | ۹۹۵ |
| مسلمانوں [illegible] | ۹۷۳ | [illegible] | ۹۸۵ | [illegible] | ۹۹۶ |
| [illegible] | ۹۷۳ | حضرت علی [illegible] | ۹۸۶ | [illegible] | ۹۹۶ |
| ایک [illegible] | ۹۷۳ | [illegible] | ۹۸۷ | [illegible] | ۹۹۷ |
| [illegible] | ۹۷۳ | [illegible] | ۹۸۸ | [illegible] | ۹۹۷ |
| [illegible] | ۹۷۳ | [illegible] | ۹۸۸ | [illegible] | ۹۹۷ |
| [illegible] | ۹۷۴ | حضرت [illegible] | ۹۸۸ | [illegible] | ۹۹۸ |
| [illegible] | ۹۷۴ | [illegible] | ۹۸۸ | [illegible] | ۹۹۹ |
| [illegible] | ۹۷۵ | [illegible] | ۹۸۹ | [illegible] | ۹۹۹ |
| [illegible] | ۹۷۵ | [illegible] | ۹۸۹ | [illegible] | ۱۰۰۰ |
| [illegible] | ۹۷۵ | [illegible] | ۹۹۰ | | |

| عنوان | صفحہ |
|---|---|
| حضور ﷺ کا خواب | ۱۰۰۰ |
| تعبیر خواب میں تاخیر کی مصلحت | ۱۰۰۱ |
| قلب کا میلان اسلام ہی کا مقدر ہے | ۱۰۰۱ |
| معاہدہ ہی اسلام کیلئے [illegible] | ۱۰۰۲ |
| تسبیحوں کی ترغیب | ۱۰۰۲ |
| کافروں پر سخت ہونے کا مطلب | ۱۰۰۳ |
| آپس میں محبت کی وجہ | ۱۰۰۳ |
| خدا ترسی | ۱۰۰۳ |
| سجدوں کی نشانی | ۱۰۰۴ |
| تورات و انجیل میں صحابہ کی مثال | ۱۰۰۴ |
| [illegible] | ۱۰۰۴ |
| مرحلہ بمرحلہ ترقی | ۱۰۰۵ |
| صحابہ کرام کی فضیلت | ۱۰۰۵ |
| انجیل میں صحابہ کی مثال | ۱۰۰۵ |
| صحابہ [illegible] سے بغض | ۱۰۰۶ |
| صحابہ کرام کیلئے وعدہ | ۱۰۰۶ |
| تمام صحابہ عادل ہیں | ۱۰۰۷ |
| صحابہ کرام کی تنقیص کا نتیجہ [illegible] ہے | ۱۰۰۷ |
| **سورۃ الحجرات** | ۱۰۰۷ |
| حضور ﷺ کے آداب و حقوق | ۱۰۰۸ |
| آپ کو کس طرح خطاب کرنا چاہئے | ۱۰۰۸ |
| آنحضرت کی تعظیم اللہ تعالیٰ کی تعظیم ہے | ۱۰۰۸ |
| [illegible] | ۱۰۰۸ |
| [illegible] | ۱۰۰۸ |
| [illegible] | ۱۰۰۹ |
| امارت کی [illegible] | ۱۰۰۹ |
| روضۂ اقدس کے سامنے بھی پست آواز | ۱۰۰۹ |
| آواز سے سلام و کلام [illegible] ہے | ۱۰۰۹ |
| [illegible] | ۱۰۱۰ |
| ادب کی انتہا | ۱۰۱۰ |
| حضرت ثابت بن قیس کا حال | ۱۰۱۰ |
| واقعہ [illegible] | ۱۰۱۱ |
| حضرت ثابت کی شہادت | ۱۰۱۱ |
| [illegible] | ۱۰۱۲ |
| [illegible] سامنے | ۱۰۱۲ |
| [illegible] | ۱۰۱۳ |
| [illegible] کا انداز | ۱۰۱۳ |
| احکام و مسائل | ۱۰۱۳ |
| صحابہ کے متعلق اہل سنت کا عقیدہ | ۱۰۱۴ |
| حضرت ولید بن عقبہ کا معاملہ | ۱۰۱۵ |
| [illegible] | ۱۰۱۶ |
| ایمان کی محبت | ۱۰۱۶ |
| کفر فسوق اور عصیان کا فرق | ۱۰۱۷ |
| باغی اطاعت سے [illegible] | ۱۰۱۸ |
| اصلاح کی پوری کوشش کرو | ۱۰۱۹ |
| باغی گروہ ایمان سے خارج نہیں [illegible] | ۱۰۲۰ |
| باغی گروہ کے قتل و قتال کے مسائل | ۱۰۲۰ |
| آداب معاشرت | ۱۰۲۱ |
| مسلمان کی ہمدردی کا ثواب | ۱۰۲۲ |
| [illegible] | ۱۰۲۲ |
| [illegible] | ۱۰۲۲ |
| [illegible] | ۱۰۲۲ |
| [illegible] | ۱۰۲۳ |
| برے لقب سے پکارنا | ۱۰۲۳ |
| بعض القاب کا استثناء | ۱۰۲۳ |
| [illegible] | ۱۰۲۳ |
| [illegible] | ۱۰۲۴ |
| [illegible] | ۱۰۲۵ |
| [illegible] | ۱۰۲۵ |
| [illegible] | ۱۰۲۵ |
| ایک مشہور مقولہ کا مطلب | ۱۰۲۶ |
| غیبت کیا ہے؟ | ۱۰۲۶ |
| غیبت کی گندگی | ۱۰۲۶ |
| غیبت کی سزا | ۱۰۲۷ |
| غیبت کی تلافی | ۱۰۲۷ |
| [illegible] | ۱۰۲۷ |
| بڑائی اور برتری کا معیار | ۱۰۲۸ |
| آنحضرت ﷺ کا خطاب | ۱۰۲۸ |
| نسب پر اترانے والوں کا انجام | ۱۰۲۹ |
| ایمان کی کمزوری کی علامت | ۱۰۲۹ |
| مومن کی تین قسمیں | ۱۰۳۰ |
| [illegible] | ۱۰۳۰ |
| اسلام اور ایمان | ۱۰۳۰ |
| [illegible] | ۱۰۳۱ |
| **سورۃ ق** | ۱۰۳۲ |
| سورۃ ق کی خصوصیات | ۱۰۳۲ |
| قرآن کی عظمت کا اظہار | ۱۰۳۳ |
| [illegible] | ۱۰۳۳ |
| حق کی تکذیب | ۱۰۳۴ |
| آسمان کی ساخت | ۱۰۳۴ |
| [illegible] | ۱۰۳۴ |
| [illegible] کی فضیلت | ۱۰۳۴ |
| [illegible] | ۱۰۳۵ |
| [illegible] | ۱۰۳۵ |
| [illegible] | ۱۰۳۵ |
| اصحاب الرس کون لوگ ہیں | ۱۰۳۶ |
| قوم ثمود | ۱۰۳۶ |
| قوم عاد | ۱۰۳۶ |
| فرعون [illegible] | ۱۰۳۶ |
| [illegible] | ۱۰۳۷ |
| تکذیب انبیاء کا انجام | ۱۰۳۷ |
| [illegible] | ۱۰۳۸ |
| [illegible] | ۱۰۳۹ |
| [illegible] | ۱۰۳۹ |
| [illegible] | ۱۰۳۹ |
| [illegible] | ۱۰۴۰ |
| [illegible] | ۱۰۴۰ |
| [illegible] | ۱۰۴۱ |
| رسول اللہ ﷺ کی [illegible] | ۱۰۴۲ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | ۱۰۴۲ | [illegible] | ۱۰۵۲ | [illegible] | ۱۰۶۳ |
| [illegible] | ۱۰۴۲ | [illegible] | ۱۰۵۳ | [illegible] | ۱۰۶۴ |
| [illegible] | ۱۰۴۲ | [illegible] | ۱۰۵۳ | [illegible] | ۱۰۶۴ |
| [illegible] | ۱۰۴۳ | [illegible] | ۱۰۵۳ | [illegible] | ۱۰۶۴ |
| [illegible] | ۱۰۴۳ | [illegible] | ۱۰۵۳ | [illegible] | ۱۰۶۵ |
| [illegible] | ۱۰۴۳ | [illegible] | ۱۰۵۴ | **سورۃ الطور** | ۱۰۶۵ |
| [illegible] | ۱۰۴۳ | [illegible] | ۱۰۵۴ | [illegible] | ۱۰۶۵ |
| [illegible] | ۱۰۴۴ | [illegible] | ۱۰۵۵ | [illegible] | ۱۰۶۶ |
| [illegible] | ۱۰۴۴ | [illegible] | ۱۰۵۵ | [illegible] | ۱۰۶۶ |
| [illegible] | ۱۰۴۴ | [illegible] | ۱۰۵۵ | [illegible] | ۱۰۶۶ |
| [illegible] | ۱۰۴۵ | [illegible] | ۱۰۵۵ | [illegible] | ۱۰۶۷ |
| [illegible] | ۱۰۴۵ | [illegible] | ۱۰۵۶ | [illegible] | ۱۰۶۷ |
| [illegible] | ۱۰۴۵ | [illegible] | ۱۰۵۶ | [illegible] | ۱۰۶۸ |
| [illegible] | ۱۰۴۵ | [illegible] | ۱۰۵۷ | [illegible] | ۱۰۶۸ |
| [illegible] | ۱۰۴۶ | [illegible] | ۱۰۵۷ | [illegible] | ۱۰۶۹ |
| [illegible] | ۱۰۴۶ | [illegible] | ۱۰۵۸ | [illegible] | ۱۰۶۹ |
| [illegible] | ۱۰۴۷ | [illegible] | ۱۰۵۸ | [illegible] | ۱۰۶۹ |
| [illegible] | ۱۰۴۷ | [illegible] | ۱۰۵۸ | [illegible] | ۱۰۷۰ |
| [illegible] | ۱۰۴۷ | [illegible] | ۱۰۵۸ | [illegible] | ۱۰۷۰ |
| [illegible] | ۱۰۴۷ | [illegible] | ۱۰۵۹ | [illegible] | ۱۰۷۰ |
| [illegible] | ۱۰۴۸ | [illegible] | ۱۰۵۹ | [illegible] | ۱۰۷۱ |
| [illegible] | ۱۰۴۸ | [illegible] | ۱۰۵۹ | [illegible] | ۱۰۷۱ |
| [illegible] | ۱۰۴۸ | [illegible] | ۱۰۶۰ | [illegible] | ۱۰۷۲ |
| [illegible] | ۱۰۴۹ | [illegible] | ۱۰۶۰ | [illegible] | ۱۰۷۲ |
| [illegible] | ۱۰۵۰ | [illegible] | ۱۰۶۱ | [illegible] | ۱۰۷۳ |
| [illegible] | ۱۰۵۰ | [illegible] | ۱۰۶۱ | [illegible] | ۱۰۷۳ |
| [illegible] | ۱۰۵۰ | [illegible] | ۱۰۶۱ | [illegible] | ۱۰۷۳ |
| [illegible] | ۱۰۵۱ | [illegible] | ۱۰۶۱ | [illegible] | ۱۰۷۴ |
| **سورۃ ذاریات** | ۱۰۵۱ | [illegible] | ۱۰۶۲ | [illegible] | ۱۰۷۴ |
| [illegible] | ۱۰۵۱ | [illegible] | ۱۰۶۲ | [illegible] | ۱۰۷۴ |
| [illegible] | ۱۰۵۲ | [illegible] | ۱۰۶۳ | [illegible] | ۱۰۷۵ |
| [illegible] | ۱۰۵۲ | [illegible] | ۱۰۶۳ | | |

# سورۃ سبا

[illegible]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

[illegible]

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

[illegible]

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ

[illegible]

### دنیا و آخرت میں تعریف فقط اللہ ہی کی ہے

[illegible]

[illegible]

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا

[illegible]

وَمَا يَنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا

[illegible]

### اللہ کا علم ہر چیز کو محیط ہے

[illegible]

وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ

[illegible]

### یہ سب کچھ اللہ کی رحمت سے ہے

[illegible]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ

[illegible]

[illegible]

قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ

[illegible]

### قیامت ضرور آئے گی

[illegible]

ربط: [illegible]

[illegible]

عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ

[illegible]

فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ وَلَآ أَصْغَرُ مِن

[illegible]

إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ

[illegible]

وسلم نے فرمایا میرے سامنے دوزخ لائی گئی اس میں بنی اسرائیل کی ایک عورت مجھے دکھائی دی جس کو ایک بلی کی وجہ سے عذاب دیا جا رہا تھا، بلی کو اس نے باندھ رکھا تھا نہ اس کو کھلاتی تھی نہ چھوڑتی تھی کہ وہ زمین کے کیڑے مکوڑے کھا لیتی آخر وہ بھوک سے مر گئی اور میں نے عمرو بن عامر خزاعی کو دیکھا دوزخ میں اپنی انتڑیاں گھسیٹ رہا تھا یہی شخص تھا جس نے سب سے پہلے سانڈ چھوڑنے کی رسم نکالی۔ (...رواہ مسلم تفسیر مظہری)

## صفت علم غیب کی تخصیص:

عٰلِمِ الْغَیْبِ یہ صفت رب کی ہے جس کی اوپر قسم کھائی گئی ہے اللہ جل شانہ کی تمام صفات میں سے ایک بڑی صفت علم غیب علم محیط کو خاص طور اس لئے ذکر کیا گیا کہ کلام منکرین قیامت کے جواب میں ہے اور قیامت کے انکار کا بڑا سبب کفار کے لئے یہ تھا کہ جب انسان مر کر مٹی ہو جائے گا تو اس کے اجزاء مٹی کے ذرات میں مل کر منتشر ہو جائیں گے تو سارے جہان میں پھیلے ہوئے ذرات کو جمع کرنا پھر ہر ایک انسان کے ذرات کو دوسرے انسانوں کے ذرات سے الگ کر کے ہر ایک کے ذرات اسی کے وجود میں پیوست کرنا کیسے ممکن ہے ان کو اس بات کا اسی بناء پر شبہ تھا کہ انہوں نے اللہ تعالیٰ کے علم و قدرت کو اپنے علم و قدرت پر قیاس کر رکھا تھا حق تعالیٰ نے بتلا دیا کہ اللہ تعالیٰ کا علم سب پر حاوی اور محیط ہے کہ آسمانوں اور زمین میں جو چیز بھی ہے اس کو سب معلوم ہے اور یہ بھی معلوم ہے کہ وہ کہاں کہاں ہے کوئی ذرہ بھی کائنات کا اس کے علم سے باہر نہیں اور یہ علم محیط حق تعالیٰ کی خصوصیت ہے کسی مخلوق کو خواہ فرشتہ ہو یا پیغمبر ایسا علم محیط کہ کوئی ذرہ جہان کا اس سے باہر نہ ہو حاصل نہیں ہو سکتا اور جس ذات کو ایسا علم محیط حاصل ہو اس کے لئے ایک انسان کے ذرات کو الگ الگ سارے جہان میں سے جمع کر لینا اور اس سے ان کے اجسام کو دوبارہ مرتب کر دینا کیا مشکل ہے۔ (معارف القرآن مفتی اعظم)

| |
|---|
| لِّيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ |
| تاکہ بدلہ دے ان کو جو یقین لائے اور کئے بھلے کام وہ جو |
| لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْ |
| جو ہیں ان کے لئے ہے معافی اور روزی عزت کی اور جو لوگ دوڑے |
| فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ |
| ہماری آیتوں کے ہرانے کو ان کو ہے عذاب |
| مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ |
| درد کی بلا |

## قیامت کیوں ضروری ہے۔

یعنی قیامت کا آنا اس لئے ضروری ہے کہ تم لوگوں کو ان کی نیکی اور بدی کا بدلہ دیا جائے اور حق تعالیٰ کی جو صفات کاملہ ہیں ان کا ظہور ہو (حبیب)" چونکہ ہماری حکمت کے مطابق ہے کہ نیکی بدی کے بدلے اور لوگوں کو خدا کی طرف سے ان کے کئے کا بدلہ ملے تو یا (بدلہ) ظاہر ہونا ضروری ہے، جس کا انکار کرنے والے کہتے ہیں کہ قیامت نہیں آئے گی۔ (مظہری)

لِّيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ

**ترجمہ:** تاکہ اللہ ان لوگوں کو جزاء دے جو ایمان لائے اور نیک کام کیے ایسے لوگوں کے لئے مغفرت ہے اور عزت کا رزق ہے یعنی حقوق العباد کی ادائیگی میں جو کوتاہیاں ان سے ہو گئی ہوں (چھوٹی اور بڑی) سب کی بخشش اللہ ان کو کرے گا ان کو معاف کر دے گا اور جو نیک کام انہوں نے کیے ہیں ان کے بدلے میں اپنی مہربانی سے جنت دے گا اور عمدہ رزق عطا فرمائے گا جس کے حاصل کرنے میں نہ تکلیف ہو گی نہ ختم ہو گا۔ (مواہب الرحمٰن) احسان ہوگا۔

وَالَّذِينَ سَعَوْ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ

اور جن لوگوں نے ہماری آیت کے متعلق (ان کو باطل کرنے کے لئے) کوشش کی (ہم کو) ہرانے کے لئے ایسے لوگوں کے لئے سختی کا دردناک عذاب ہوگا۔ یعنی آیات خداوندی کو باطل کرنے اور ان کی طرف سے لوگوں کو بے رغبت اور متنفر کرنے کے لئے کوشش کرنے کا مقصد یہ تھا کہ ہم کو عاجز کر دیں گے یعنی ان کا گمان اس بات کا تھا کہ ہماری آیات کی طرف سے لوگوں کو نفرت دلا کر ہم پر غالب آنے کے لئے (یعنی ہم جو کچھ بتانے کے لئے ہماری قیامت ہوگی حشر ہوگا وہ انہوں نے فرض کر لیا ہے کہ خدا بے بس ہوگا ایسا کرنے کی قدرت نہیں رکھتا) جو ایسا کہتے ہیں ان پر عذاب ہوگا ایسے لوگوں کو بڑا دردناک عذاب ہے۔ قتادہ نے رجز کا ترجمہ سوء العذاب کیا ہے۔ رجز کا ترجمہ ہے عذاب اور مراد ہے دکھ دینے والا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ |
| اور دیکھ لیں جن کو ملی ہے سمجھ کہ جو تجھ پر اترا |
| إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ |
| تیرے رب سے وہی ٹھیک ہے اور سجھاتا ہے راہ |
| صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ |
| اس زبردست خوبیوں والے کی |

## ایمان والوں کو عین الیقین حاصل ہوگا۔

یعنی جب وقت قیامت آئے گی جن کو علم دیا گیا ہے وہ اپنی آنکھ سے دیکھ لیں گے۔

[illegible]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۞ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ

[illegible]

## کافروں نے عقیدہ آخرت کا استہزاء کیا:

[illegible]

بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۞

[illegible]

## بڑی کافر گمراہ ہیں:

[illegible]

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

[illegible]

مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ نَشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ

[illegible]

## زمین سے کائنات ... :

[illegible]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۞

[illegible]

## تمام کائنات میں نشانیاں ہیں:

[illegible]

[illegible]

## وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا

[illegible]

## يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ

[illegible]

[illegible]

وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ أَنِ اعْمَلْ

[illegible]

سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ

[illegible]

لوہے کو موم کر دیا

[illegible]

داؤد نے زرہوں کا کام سیکھ کر شروع کیا

[illegible]

[illegible]

ہاتھ کی کمائی

[illegible]

**حکایت:** [illegible]

[illegible]

**علماء، قاضی اور ... بیت المال سے لے سکتے ہیں:**

[illegible]

**فائدہ:** [illegible]

**بطور معجزہ لوہا نرم ہو جاتا تھا:**

وَاَنْ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِی السَّرْدِ [illegible]

**... وقت اسی میں صرف نہ ہو:**

[illegible]

**مسئلہ:** [illegible]

وَاعْمَلُوْا صَالِحًا اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ

[illegible]

**حلال رزق ... :**

[illegible]

**پاکیزہ چیزیں کھاؤ اور نیک عمل کرو:**

اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ [illegible]

وَلِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ

[illegible]

**وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ**

[illegible]

### ہوائی تخت

[illegible]

### تخت کے اترنے کی رفتار

**غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ** [illegible]

### یہ معجزہ کیسے ملا

[illegible]

### تانبے کا چشمہ

[illegible]

**وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ** [illegible]

[illegible]

**وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ**

[illegible]

**وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ**

[illegible]

**مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ**

[illegible]

### جنات کا مسخر ہونا

[illegible]

[illegible]

[illegible]

**وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ** [illegible]

[illegible]

## تسخیر جنات کا مسئلہ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ہیں۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا تم مسجدوں کو ضرور اس طرح آراستہ کرو گے جیسے یہود و نصاریٰ کرتے تھے حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ بھی فرمایا کہ مسجدوں کی آرائش علامات قیامت میں سے ہے۔

بعض اہل علم نے کہا مسجد کو آراستہ کرنا ثواب ہے اس میں مسجد کی عظمت کا اظہار ہے حضرت سلیمانؑ نے مسجد بیت المقدس کو آراستہ کیا تھا [illegible] تاہم سونے سے نقش و نگار مساجد کے لئے [illegible]۔

صاحب ہدایہ نے لکھا ہے کہ نقش و نگار مساجد کو [illegible] جب کوئی شخص اپنے مال سے کرے متولی کے لئے جائز نہیں [illegible] تعمیر کے وقف کا روپیہ نقش و نگار میں صرف کرے [illegible] ابن ہمام نے لکھا ہے کہ [illegible] مساجد کے مقابلہ میں غربا پر مال خرچ کرنا بہتر [illegible] ہے۔

اکثر علماء کے نزدیک [illegible] اور منقش مصلیٰ [illegible] کا استعمال مساجد کے لئے جائز ہے [illegible] کی طرف [illegible] کذا فی البدایہ۔

ابن ہمام نے لکھا ہے کہ مکروہ [illegible] (مکروہ تحریمی) [illegible]

بعض کا یہ خیال ہے کہ [illegible] وقت یہ حدیث [illegible] ہے کہ [illegible] کے دل ایمان سے خالی ہوں گے [illegible] کیا جائے [illegible]۔

یہی یہود نے سلیمانؑ کے قصہ کے مقابلہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی حدیث [illegible] ہے کیوں کہ [illegible] کے خلاف [illegible] حضرت سلیمانؑ کا [illegible] شیاطین کو لوگوں کو گمراہ کرنے کا موقع ملے (ترجمہ مسجد اقصیٰ [illegible])

## سلیمانؑ کی تعمیر کی بربادی

بغوی نے لکھا ہے [illegible] کا بیان ہے کہ [illegible] حضرت سلیمانؑ کی بنائی ہوئی مسجد [illegible] باقی رہی [illegible] بخت نصر نے [illegible] حملہ کیا تو [illegible] اور سونا چاندی [illegible] مسجد کی چھت اور دیواروں میں جو سونا چاندی [illegible] جو کچھ سب اٹھا کر لے گیا۔

جنات نے حضرت سلیمانؑ کے لئے کئی قسم کے برتن بھی تیار کئے تھے۔

## جن کیسی تصویریں بناتے تھے

تصویر بنانے کی دو قسمیں ہیں ایک ذی روح جاندار کی تصویر دوسرے غیر ذی روح [illegible] قسم میں [illegible] جیسے پتھر [illegible] دوسرے [illegible] جیسے درخت [illegible] جنات حضرت سلیمانؑ کے لئے ان سب قسموں کی تصویریں بناتے تھے [illegible] یہ بات ظاہر ہے کہ [illegible] تصویر [illegible] کے لئے جائز تھیں۔

## شریعت اسلامیہ میں تصویر کی حرمت

ظاہر ہے کہ پچھلی امتوں میں جو شرائع تھی [illegible] شریعت اسلام کے لئے جو تاقیامت ہے [illegible] اصل حرام [illegible] کیا گیا ہے [illegible] کی ممانعت [illegible] علیہ وسلم کی احادیث [illegible] کی حرمت ثابت ہے۔

[illegible] کی ممانعت [illegible]

## تصویر کی ممانعت کے اسباب

ایک سبب تصویر کی ممانعت کا [illegible] فرشتے [illegible] جس گھر میں [illegible] داخل نہیں ہوتے [illegible] روایت [illegible] باقی ہے [illegible]

ایک سبب [illegible] تصویریں [illegible]

ضرورت نہ تھی اور اس زمانے میں جس طرح تصاویر سے بہت سے فوائد حاصل کئے جاتے ہیں ہزاروں جرائم اور فسادات بھی انہی تصاویر سے جنم لیتے ہیں۔ غرض شریعت اسلام ختم ہونے کے بعد جن بہت سے اسباب پر نظر کر کے جاندار کی تصاویر بنانے اور ان کے استعمال کرنے کو حرام قرار دیا ہے اس کے علاوہ کوئی خاص فرائض فرض کر لیں کہ یہ اسباب اتفاق سے موجود نہ ہوں تو اس اتفاقی واقعہ سے قانون شرعی نہیں بدل سکتا۔

### تصویر بنانے والے:

صحیح بخاری و مسلم میں بروایت عبداللہ بن مسعودؓ یہ حدیث آئی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اشد الناس عذابا یوم القیمة المصورون۔ یعنی سب سے زیادہ سخت عذاب میں قیامت کے دن تصویر بنانے والے ہوں گے۔

اور بعض روایات حدیث میں تصویر بنانے والوں پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے لعنت فرمائی ہے اور صحیحین میں حضرت ابن عباسؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کل مصور فی النار۔ الحدیث یعنی ہر مصور جہنم میں جائے گا۔

اس مسئلے کے متعلق روایات حدیث اور فقہائے سلف کے اقوال تفصیل کے ساتھ احقر نے ایک رسالہ التصویر میں جمع کر دیئے ہیں اور لوگوں کے شبہات کے جوابات بھی اس میں مفصل ہیں۔ ضرورت ہو تو اس کو دیکھا جا سکتا ہے۔

### فوٹو کی تصویر بھی تصویر ہی ہے:

بعض لوگوں کا یہ کہنا غلط ہے کہ فوٹو تصویر سے خارج ہے کیونکہ وہ تو عکس ہے جیسے آئینہ اور پانی وغیرہ میں نظر آتا ہے تو جس طرح آئینہ میں اپنی صورت دیکھنا جائز ہے ایسے ہی فوٹو کی تصویر بھی جائز ہے۔ جواب واضح ہے کہ عکس اس وقت تک عکس ہے جب تک وہ کسی ذریعہ سے قائم اور پائیدار نہ بنا لیا جائے جیسے آئینہ یا پانی میں جو عکس اس وقت آتا ہے تو جب ہٹ جائیں گے ختم ہو جائے گا اگر آئینہ کے عکس کو کسی مسالہ وغیرہ کے ذریعہ اس صورت کے عکس کو پائیدار بنا لیا جائے تو یہی تصویر ہو جائے گی جس کی حرمت و ممانعت احادیث [illegible]

تماثیل جمع تمثال کی ہے وہ مجسمے اور مورتیں بنانا اور حرام ہیں کہا گیا ہے کہ وہ معبودوں اور بزرگوں کی تصویریں بناتے تھے یہ بھی کہا گیا ہے کہ ملائکہ، انبیاء اور نیک لوگوں کی تصویریں مساجد میں بناتے تھے تاکہ ان کو دیکھ کر لوگوں میں عبادت کا جذبہ پیدا ہو اور ان کی شریعت میں تصویر کشی جائز تھی۔

میں کہتا ہوں تماثیل سے مراد بے جان چیزوں کی تصویریں ہوں کیونکہ جاندار کی تصویر حضرت سلیمانؑ سے پہلے بھی حرام ہی تھی

حضرت ابراہیمؑ نے اپنے باپ اور قوم سے فرمایا تھا: مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ۔

صحیحین میں حضرت ابن عباسؓ سے روایت ہے کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو فرماتے سنا: جو شخص (دنیا میں) کوئی تصویر بنائے گا تو قیامت کے دن اس سے کہا جائے گا کہ اس میں روح ڈالو اور وہ اس میں روح نہیں ڈال سکے گا۔ پھر حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا اگر تم (کو تصویر بنانی ہی) ہے تو درختوں کی اور بے جان چیزوں کی تصویریں بناؤ (متفق علیہ) اس حدیث میں صرف آپ نے مصوروں کی حالت بیان کی گئی ہے بلکہ ہر مصور کی حالت کا اظہار کیا گیا ہے اور یہاں بے جان چیزوں کی تصویر بنانے کا بھی احتمال نکلتا ہے۔

حضرت ابن عباسؓ کی مرفوع حدیث ہے کہ جو مصور ہو گا اس کو عذاب دیا جائے گا اور اس کو حکم دیا جائے گا کہ اپنی بنائی ہوئی تصویروں میں جان بھی ڈال لیکن وہ کبھی ان کے اندر روح نہیں پھونک سکے گا۔ (رواہ البخاری)

حضرت ابوہریرہؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ قیامت کے دن ایک گردن (ایسی) آگ سے نکلے گی جس کی دو آنکھیں ہوں گی جو دیکھیں گی اور دو کان ہوں گے جو سنیں گے اور ایک زبان ہو گی جو بولے گی وہ کہے گی مجھے تین آدمیوں کے لئے مقرر کیا گیا ہے ہر ظالم سرکش کے لئے اور ہر اس شخص کے لئے جو اللہ کے ساتھ دوسرے معبود کو پکارتا تھا اور تصویر سازوں کے لئے [illegible]

بخاری میں حضرت ابوہریرہؓ کی روایت سے آیا ہے کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو فرماتے سنا اللہ فرماتا ہے اس سے بڑا ظالم کون ہو گا جو میری تخلیق کی طرح بنانے چلا ہے اگر ان میں تخلیق کی طاقت ہے تو ان کو چاہئے کہ ایک چھوٹی چیونٹی ہی بنا دیں۔ ایک دانہ، ایک جو ہی پیدا کر دیں۔ غرض یہ ہے کہ تمام احادیث بتا رہی ہیں کہ جاندار کی تصویر کی حرمت اور ہر کسی کے لئے ہی تصویر نہیں ہے۔

مطلب علیہ کی تمام تصاویر پہلے آ گئے ہیں۔

راسیات اپنی جگہ جمی ہوئی اور چولہوں پر رکھے ہوئے تھے اور اتنی بڑی تھیں کہ اپنی جگہ سے ہلائی نہیں جا سکتی تھیں۔ ان کو بنانے کے لئے پایہ تھا یا سیڑھیاں بنا کر خالی کیا جا سکتا تھا [illegible] یہ بھی کہا گیا ہے کہ وہ پہاڑوں سے تراشی گئی تھیں۔

### جن اور انسان:

حضرت حسنؓ فرماتے ہیں کہ جن ابلیس کی اولاد میں سے ہیں اور انسان حضرت آدمؑ کی اولاد میں سے ہیں۔ دونوں میں مومن بھی ہیں اور کافر بھی۔ ثواب و عذاب میں دونوں شریک ہیں دونوں کے ایمان دار ولی اللہ ہیں اور

دانتوں کے سیاہ بال شیطان ہیں۔

ابن ابی حاتم میں ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں جنات کی تین قسمیں ہیں ایک تو پردار، دوسری قسم سانپ اور کتے ہیں تیسری قسم وہ ہے جو مسافروں کی طرح حلول کرتے ہیں اور اترتے ہیں، غریب، یہ حدیث بہت غریب ہے۔

## مساجد میں محراب کیلئے مستقل مکان بنانے کا حکم:

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور خلفائے راشدین کے عہد تک امام کے کھڑے ہونے کی جگہ کو ایک علیحدہ مکان کی حیثیت سے بنانے کا رواج نہ تھا، قرون اولیٰ کے بعد سلاطین نے اس کا رواج اپنی حفاظت کے لئے دیا، اور عام مسلمانوں میں اس کا رواج اس مصلحت سے بھی ہوا کہ امام جس جگہ کھڑا ہوتا ہے وہ پوری صف خالی رہتی ہے، نمازیوں کی کثرت اور مساجد کی تنگی کے پیش نظر صرف امام کے کھڑے ہونے کی جگہ بطور قبلہ کی گہرائی کر کے بنا دی جاتی ہے، تاکہ اس کے پیچھے پوری صفوف کھڑی ہو سکیں، چونکہ یہ طریقہ قرون اولیٰ میں نہ تھا، اس لئے بعض علماء نے اس کو بدعت کہہ دیا ہے، شیخ جلال الدین سیوطی نے اس مسئلہ پر مستقل رسالہ اعلام الاریب فی بدعۃ المحاریب لکھا ہے، اور تحقیق اور صحیح بات یہ ہے کہ اگر اس طرح کی محرابیں نمازیوں کی سہولت اور مسجد کے مصالح کے پیش نظر بنائی جائیں اور ان کو سنت مقصودہ نہ سمجھا جائے تو ان کو بدعت کہنے کی کوئی وجہ نہیں، ہاں اس کو سنت مقصودہ سمجھا جانے لگے اس کے خلاف کرنے والے پر نکیر ہونے لگے تو اس غلو سے یہ عمل بدعت میں داخل ہو سکتا ہے۔

مسئلہ: جن مساجد میں محراب امام ایک مستقل مکان کی صورت میں بنائی جاتی ہے، وہاں امام پر لازم ہے کہ اس محراب سے کسی قدر باہر اس طرح کھڑا ہو کہ اس کے قدم محراب سے باہر نمازیوں کی طرف رہیں، تاکہ امام اور مقتدیوں کا مکان ایک ہو جائے، ورنہ یہ صورت مکروہ ہو جاتی ہے کہ امام الگ مکان میں تنہا کھڑا ہو اور سب مقتدی دوسرے مکان میں، بعض مساجد میں محراب اتنی وسیع اور عریض بنائی جاتی ہے کہ ایک مختصر سی صف مقتدیوں کی بھی اس میں آ جائے، ایسی محراب میں اگر ایک صف مقتدیوں کی محراب میں کھڑی ہو اور امام ان کے آگے خود محراب میں کھڑا ہو تو امام اور مقتدیوں کے مکان کا اشتراک ہو جانے کی وجہ سے کراہت ختم ہو جائے گی۔

| اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ وَقَلِيْلٌ |
| --- |
| ترجمہ: اے داؤد کے گھر والو احسان مانو اور تھوڑے ہیں |
| مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ |
| میرے بندوں میں احسان ماننے والے ☆ |

### عمل سے شکر ادا کرو:

یعنی اس عظیم الشان انعامات و احسانات کا شکر ادا کرتے رہو، محض زبان سے نہیں بلکہ عمل سے، اور عمل وہ جس سے حق تعالیٰ کی خوشنودی حاصل ہو، حقیقت یہ ہے کہ احسان تو تمام دنیا پر سب پر ہوتا ہے لیکن پورے شکرگزار بہت تھوڑے ہیں جب تھوڑے ہیں تو قدر زیادہ ہوگی لہٰذا تم شکرگزار بن کر اپنی قدر بڑھاؤ، حضرت داؤد علیہ السلام نے اس حکم کی تعمیل میں سب علاوہ مستقل اعمال کے زبان سے احسان ماننا ہی سب سے بڑا احسان ماننا ہے، چنانچہ داؤد نے تمام گھر والوں پر اوقات تقسیم کر رکھے تھے دن رات کے چوبیس گھنٹوں میں کوئی وقت ایسا نہ تھا جب ان کے گھر میں کوئی نہ کوئی شخص عبادت الٰہی میں مشغول نہ رہتا ہو۔ (تفسیر عثمانی)

اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا (ہم نے حکم دیا کہ اے داؤد کے گھر والو عمل کرو شکر کا) — داؤد کے خاندان والو! تم سب شکر بجا لاؤ (یہ کام آ گیا یعنی حضرت سلیمان سے کہا گیا) ابن کثیر نے بہت سے سلف سے نقل کیا ہے کہ حضرت داؤد نے اپنے گھر والوں کی عبادت کے لئے اوقات اس طرح مقرر کر رکھے تھے کہ رات دن میں کوئی ساعت ایسی نہ تھی کہ حضرت داؤد کے گھر والوں میں کوئی نہ کوئی عبادت میں مشغول نہ ہو۔

### دائمی شکر والے بہت کم ہیں:

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ اور میرے بندوں میں بڑے شکر گزار کم ہیں یعنی ایسے لوگ کم ہیں جو دل زبان اور اعضاء جسم سے اکثر اوقات ادا شکر کرتے ہوں اور ہمیشہ اللہ تعالیٰ کے شکر میں مشغول رہتے ہوں یہ مرتبہ حضور دائمی اور رنج و تعب کے بعد حاصل ہوتا ہے۔

### شکور کون ہے؟

اور یہ سوال شکر کے بعد بھی اللہ کی نعمتوں کا حق ادا نہیں ہوتا کیونکہ توفیق شکر بھی عطاء الٰہی ہے اور ایک نعمت ہے جس پر شکر ہو شکر کے شکر کا شکر ادا کرنا چاہے تو انسانی طاقت سے خارج ہے، اس لئے کہا گیا ہے کہ شکور وہ شخص ہے جو شکر سے اپنے آپ کو عاجز سمجھے، ابن ابی شیبہ کی روایت ہے کہ ایک شخص نے حضرت عمر کے سامنے کہا اے اللہ مجھے تھوڑوں میں سے کر دے حضرت عمر نے فرمایا یہ کیسی دعا ہے؟ اس شخص نے کہا میں نے سنا ہے کہ اللہ نے فرمایا ہے وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ اس لئے میں دعا کرتا ہوں کہ مجھے ان تھوڑوں میں سے کر دے، حضرت عمر نے فرمایا ہر شخص عمر سے زیادہ علم والا ہے۔ (تفسیر مظہری)

### نماز داؤدی:

بخاری و مسلم میں حدیث ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ نمازوں میں اللہ کے نزدیک سب سے پیاری نماز داؤدی ہے وہ آدھی رات

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ

مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ

فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ

حضرت سلیمان کی موت

جنات کو آپ کی وفات کا ذرا بھی علم نہ ہوا [illegible] وفات سے [illegible]
[illegible] اور جنات [illegible] دیمک نے [illegible]
[illegible] جنات کو آپ کی وفات کا علم ہوا۔

## دیمک کا شکریہ

حضرت ابن عباس نے فرمایا جنات نے دیمک کا شکریہ ادا کیا کہ اس کی بدولت ان کو مشقتوں سے آزادی ملی [illegible] کے لئے لاتے ہیں [illegible] حضرت [illegible] آپ [illegible] اللہ [illegible] آپ کی وفات [illegible] [illegible] آپ کی وفات کا علم ہوا۔

مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ [illegible] موت کا پتہ [illegible]

مَا دَلَّهُمْ [illegible] حضرت سلیمان [illegible] کی موت [illegible]

دَآبَّةُ الْاَرْضِ [illegible] دیمک [illegible] [illegible] الارض [illegible]

## جنات کی غیب دانی کا دعویٰ ختم ہو گیا

فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ جب سلیمان گر پڑے تب جنات کی [illegible] حضرت سلیمان کی [illegible] حضرت سلیمان کی موت کا جنات کو [illegible] مطلب یہ ہے کہ پہلے جنات اپنی غیب دانی کا دعویٰ کرتے [illegible] لیکن جب حضرت سلیمان کی وفات کا

[illegible] غیب [illegible] مطلب [illegible] ذات کے [illegible] [illegible] حضرت سلیمان کی [illegible] جنات [illegible] مطلب یہ [illegible] کہ جنات تو پہلے ہی سے [illegible] غیب دانی کا دعویٰ کرتے تھے۔

## سلیمان کی عمر

[illegible] سال [illegible] حکومت [illegible] بیت المقدس کی تعمیر [illegible]

## موت سے کسی کو چھٹکارا نہیں

[illegible] موت [illegible] تعالیٰ [illegible] موت کے [illegible] سلیمان [illegible] جنات [illegible] [illegible] وقت [illegible] غیب [illegible] معلوم ہوئی۔

## سلیمان کی دعائیں

[illegible] حضرت [illegible] بیت المقدس [illegible] اللہ تعالیٰ سے [illegible] دعائیں [illegible] مسجد میں [illegible] نماز کی نیت سے داخل [illegible] مسجد سے نکلے [illegible] بیت المقدس [illegible]

اور [illegible] بیت المقدس کی تعمیر سے فارغ

[illegible]

## جنات کے علم کی حقیقت

[illegible]

## ایک عجیب درخت:

[illegible]

## سلیمان کی موت کا علم کیسے ہوا

[illegible]

## تعمیر کی تکمیل سلیمان کی کوشش:

[illegible]

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ

[illegible]

## لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ

[illegible]

سبا کا تعارف [illegible]

### قوم سبا کے باغات

### جَنَّتَانِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ

[illegible]

### سبا سے تمام ملک کی آبادی

[illegible]

[illegible]

[illegible] پر ایمان لاتے اور [illegible] کی تلقین کی ہے۔

قرطبی نے [illegible] قوم [illegible] حضرت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت سے پہلے زمانہ فترت [illegible] لیا ہے [illegible] [illegible] سبا کے [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم ان کے پاس سے نکلے تو آپ نے فرمایا [illegible] [illegible] معلوم ہوتا ہے کہ سبا کا سلسلہ نسب [illegible] تک پہنچتا ہے [illegible] [illegible] [illegible] ایک جماعت یہاں آ کر [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] حضرت [illegible] [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] شام میں [illegible] [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] [illegible] آپ نے فرمایا [illegible] [illegible] [illegible] اسلام کی دعوت [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] سبا کس کا نام ہے؟ آپ کا جواب [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] آئے

مروی ہے کہ [illegible] ان کے پاس آئے تھے [illegible] [illegible] [illegible] اور بارش کے زمانہ میں [illegible] پانی [illegible] [illegible] کے چشموں کے بارش کے نالوں سے سب پانی آ گئے۔ ان کی [illegible] ان کے [illegible] ان کی کھیتیاں [illegible] [illegible] [illegible] (تفسیر ابن کثیر)

**كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ**

کھاؤ [illegible] اپنے رب کی [illegible] اور اس کا شکر کرو۔

## [illegible] کا [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] واللہ اعلم [illegible]

**كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ** [illegible]

[illegible]

**كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ**

[illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

**بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ**

[illegible]

## پانی کا انتظام اور باغات

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| [illegible] |
| [illegible] |
| [illegible] |
| [illegible] |
| [illegible] |
| [illegible] |

[illegible]

[illegible]

[illegible]

جو مسلط کئے ہوئے پاؤں کے چٹیل [illegible] سب سے [illegible]
[illegible] ایک [illegible] سے [illegible] کا تجربہ [illegible]
[illegible] ایک عظیم الشان سیلاب جس کو سیل العرم کہا جاتا ہے ان پر چھوڑ دیا۔

سیل عرم: [illegible] اور صاحب [illegible] سیل العرم [illegible]
ہو کر یا سیل العرم سے مراد [illegible]
جنگل [illegible] بلقیس [illegible] پانی کو [illegible] کر کے [illegible]
باندھا تو جنگل [illegible] کر دیا تھا صاحب قاموس نے لکھا
ہے کہ عرم [illegible] بند [illegible] پانی [illegible] لئے [illegible]

بغوی نے لکھا ہے کہ حضرت ابن عباس اور وہب وغیرہ نے بیان کیا کہ
قوم [illegible] ایک بند تھا جو بلقیس نے بنوایا تھا [illegible] وادی کے [illegible]
[illegible] بلقیس نے [illegible] کے لئے ایک [illegible] بند
[illegible] کا حکم دیا تھا [illegible] بند [illegible]
[illegible] ایک بند [illegible]
[illegible] ایک [illegible] بنا
دیا گیا اور پانی [illegible] حوض میں [illegible]
دریا کے [illegible] ضرورت کے وقت [illegible]
[illegible] اور جب [illegible] پوری [illegible]
[illegible] جمع ہو جاتا [illegible]
جاتا تھا [illegible] بلقیس [illegible] پانی [illegible]
[illegible] ضرورت ہوتی تو [illegible]
[illegible] ہوتی تو [illegible] بند کے [illegible]
ختم نہ ہونے پاتا [illegible] پانی آ کر جمع ہو جاتا تھا۔

یہ بند [illegible] مدت تک [illegible] جب اس قوم نے اللہ سے سرکشی اور
ناشکری کی تو اللہ نے ایک [illegible] جس کو [illegible] کہا جاتا ہے [illegible]
[illegible] بند کے نچلے حصے میں سوراخ کر دیا پانی بہت [illegible]
اور [illegible] سب [illegible] غرق ہو گئی۔

## تدبیر کی شکست:

وہب نے کہا ان لوگوں [illegible] کاہن نجومی نے بتایا کہ اس بند کو ایک
چوہا برباد کرے گا [illegible] (بلقیس) کے [illegible]
[illegible] جب [illegible] کا وقت [illegible] ایک بڑا
[illegible] بلی [illegible]
[illegible] بند [illegible] کو [illegible]
اور [illegible] بند [illegible] کا [illegible]
آخر [illegible] بند [illegible] پانی [illegible] کے

[illegible] ایک [illegible]
[illegible] ایک [illegible]

## [illegible] بچاؤ

[illegible] (بلقیس) [illegible] ہے۔

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] مقصود ہے۔

[illegible] ایک [illegible]
[illegible]

## چوہوں کے ذریعے تباہی:

[illegible] پانی [illegible]
[illegible]
[illegible] جب [illegible] پانی [illegible]
[illegible] پانی [illegible]
[illegible] تمام معاملات [illegible]
[illegible]

وہب [illegible] بات
[illegible]
لوگوں نے اس بند کے قریب چوہے [illegible]
[illegible] پانی [illegible]
[illegible] جب [illegible]
[illegible]

## ایک کاہنہ کی چالاکی:

[illegible] ایک کاہنہ [illegible]
ایک [illegible] کے پاس [illegible]
کاہنہ [illegible]
کے [illegible]
[illegible]
[illegible] آخر [illegible]

[illegible]

**ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ**

[illegible]

**نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ**

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

## مومن کی بھلائی

[illegible]

**وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ**

[illegible]

**بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا**

[illegible]

**السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ**

[illegible]

## تجارتی سفر کی آسانیاں

[illegible]

## قوم سبا کی ناشکری

[illegible]

**فَقَالُوا رَبَّنَا بَاعِدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا**

[illegible]

**وَظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ**

**وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ**

## پوری قوم منتشر ہوگئی

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ |
| [illegible] |

[illegible]

## مومن کی شان

[illegible]

| |
|---|
| وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ |
| [illegible] |
| فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ |
| [illegible] |

[illegible]

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ

[illegible] وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ

[illegible]

## مومن شیطان کی اتباع نہیں کرتا

[illegible]

| |
|---|
| وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ |
| [illegible] |
| مَن يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا |
| [illegible] |

| |
|---|
| فِي شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ |
| [illegible] شک میں ہیں۔ اور تیرا رب ہر چیز پر نگہبان ہے |

### انسان کیلئے امتحان:

یعنی شیطان کو جو قدرت دی گئی ہے کہ ان کو [illegible] سکے [illegible] وہ [illegible] جاتا ہے اور اتنی قدرت بھی [illegible] لئی گئی [illegible] کہ امتحان ہو [illegible] آخرت پر یقین [illegible] ہے اور کون دنیا میں [illegible] کر [illegible] اللہ کی حکمت کا تقاضا یہی تھا کہ دنیا میں انسان کے لئے دونوں طرف [illegible] کے [illegible] کھلا رکھا جائے۔ پہلے کی جگہ اس کی [illegible] سے بیان نہیں کیا [illegible] بے قابو میں شیطان [illegible] ہے اور تمام [illegible] انسان [illegible] ہے [illegible] آزادی سے [illegible] ہے۔ (تفسیر حقانی)

### شیطان کا ہتھیار:

یعنی ابلیس کو کوئی قدرت نہیں تھی کہ وہ ان کو بہکا سکتا [illegible] سے [illegible] اس [illegible] وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُم بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ [illegible] قدرت پیدا ہوگی۔

[illegible] ابلیس [illegible] نہیں [illegible] اللہ [illegible] ہے [illegible] ہیں [illegible] گئے۔

وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ اور آپ کا رب ہر چیز کا نگہبان ہے [illegible] کی طرف سے غافل نہیں ہے [illegible] ہر ایک [illegible] کے عمل کے موافق [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ |
| آپ کہہ دیجئے کہ جن کو تم خدا کے سوا سمجھ رہے ہو ان کو پکارو |

### مشرکین سے خطاب:

یہاں سے مشرکین [illegible] ہے [illegible] ان [illegible] کا [illegible] اللہ کے سوا [illegible] ہو [illegible] پکار [illegible] دیکھ لو [illegible]

کہ جن کو تم سوائے خدا کے پوجتے (معبود [illegible]) کہو، سب مل کر پکار دیکھو وہ [illegible] اختیار نہیں رکھتے [illegible] زمین میں [illegible] سے پیدا کرتے [illegible] قائم رکھتے [illegible] کو پکار دیکھو [illegible] کی [illegible] تمہاری [illegible] ہیں [illegible] تمہاری [illegible] ہوتی ہے [illegible] اختیار نہیں رکھتے [illegible] دعا قبول نہیں کر سکتے [illegible] حاصل یہ کہ تمہارا [illegible] کے معبود [illegible] شریک ہونے کا خیال [illegible] سے کیا [illegible] بھی [illegible] کا [illegible] ہے۔

| |
|---|
| لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي |
| وہ مالک نہیں [illegible] ذرہ بھر کے [illegible] آسمانوں [illegible] |
| الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم |
| [illegible] زمین میں اور ان کا ان [illegible] کچھ ساجھا [illegible] اور نہ ان میں کوئی اس کا |
| مِّن ظَهِيرٍ ۝ وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ |
| مددگار [illegible] اس کے آگے [illegible] سفارش [illegible] |

### بت ایک ذرے کے مالک نہیں ہے

یعنی [illegible] ایک ذرہ [illegible] مستقل اختیار ہے [illegible] مستقل [illegible] شرکت [illegible] [illegible] جہاں [illegible] حصہ [illegible] [illegible] صرف [illegible] (تفسیر عثمانی)

مِّن ظَهِيرٍ یعنی [illegible] ان [illegible] کے پیدا کرنے [illegible] انتظام [illegible] اللہ کا مددگار نہیں ہے۔

### کافروں کیلئے کوئی سفارش نہ چلے گی

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ [illegible] خدا کے سامنے [illegible] کی سفارش [illegible] ہے [illegible] کی [illegible] کام [illegible] کی [illegible] سفارش [illegible] اللہ [illegible] سے [illegible] کے لئے

[illegible]

حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ

[illegible]

قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ

[illegible]

### فرشتوں کی بیداری

[illegible]

### فرشتوں کی گھبراہٹ

[illegible]

[illegible]

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ

[illegible]

وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ

## اب بتلاؤ کون سچا ہے

[illegible]

قُلْ لَّا تُسْئَلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْئَلُ

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ

يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ

## اپنی عاقبت کی فکر کرو

[illegible]

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ

[illegible]

قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

[illegible]

## کوئی بھی اللہ کے برابر نہیں

[illegible]

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا

[illegible]

وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

[illegible]

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی عام رسالت

[illegible]

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خصوصیت

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ |
| [illegible] |

### کہتے ہیں قیامت کب آئے گی

[illegible]

| |
|---|
| قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ |
| [illegible] |
| عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ |
| [illegible] |

### ضرور آئے گی

[illegible]

| |
|---|
| وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ |
| [illegible] |
| وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ |
| [illegible] |

### [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ |
| [illegible] |
| يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ |
| [illegible] |

### [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا |
| [illegible] |
| لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ |
| [illegible] |

### [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا |
| [illegible] |
| أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ |
| [illegible] |
| إِذْ جَاءَكُم بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ |
| [illegible] |

[illegible]

| |
|---|
| وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا |
| [illegible] |
| بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا |
| [illegible] |
| أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا |
| [illegible] |

[illegible]

وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ

[illegible]

## پھر سب شرمائیں گے

[illegible]

وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا

اور ہم نے والے ہیں طوق ان کی گردنوں کے [illegible]

## طوق اور زنجیریں

[illegible]

هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

[illegible]

[illegible]

## آگ سارا گوشت جلا دے گی

[illegible]

هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ [illegible]

[illegible]

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا

[illegible]

قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ

[illegible]

## [illegible]

[illegible]

وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا

[illegible]

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ

[illegible]

## مال اولاد پر فخر

[illegible]

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ

[illegible]

وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

[illegible]

## روزی کا مالک اللہ تعالیٰ ہے:

[illegible]

ومن الدليل على القضاء وحكمه

بؤس اللبيب وطيب عيش الاحمق

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُم بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

[illegible]

## قرب الٰہی کا ذریعہ تو ایمان اور عمل صالح ہے:

[illegible]

## مال سے صدقہ:

[illegible]

[illegible]

فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا

[illegible]

## عمل کا بدلہ:

[illegible]

وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ

[illegible]

## منکر الٰہی عذاب میں

[illegible]

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

[illegible]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ

[illegible]

أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ

[illegible]

**ملائکہ سے خطاب**

[illegible]

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ

[illegible]

كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ

[illegible]

**فرشتوں کا جواب** [illegible]

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا

[illegible]

**خرچ کرنے سے نہ گھبراؤ**

[illegible]

**خَيْرُ الرَّازِقِينَ** کا مطلب یہ ہے [illegible]

**خرچ کرنے سے نعمت بڑھتی ہے**

[illegible]

**[illegible]**

[illegible]

[illegible]

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے بارے میں کفار کی بد زبانی

[illegible]

قَالُوا مَا هٰذَا اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ

[illegible]

وَقَالُوْا مَا هٰذَا اِلَّاۤ اِفْكٌ مُّفْتَرًى

[illegible]

## قرآن کریم کے بارے میں ان کا خیال

[illegible]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ

[illegible]

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ

[illegible]

## ان سے زیادہ ظالم کون ہو سکتا ہے

[illegible]

(شعلہ اب بھی باقی ہے جسے اب ایمان قبول نہ ہوگا سب صاحب کا ذوق)

| |
|---|
| قُلْ إِنَّمَآ أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا۟ لِلَّهِ مَثْنَىٰ |
| تو کہہ میں تو ایک ہی نصیحت کرتا ہوں تم کو کہ اٹھ کھڑے ہو اللہ کے نام پر دو دو |
| وَفُرَٰدَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا۟ ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ |
| اور ایک ایک پھر دھیان کرو کہ اس تمہارے رفیق کو کچھ سودا نہیں |
| إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَىْ عَذَابٍ شَدِيدٍ |
| وہ تو ایک ڈرانے والا ہے تم کو ایک بڑی آفت کے آنے سے پہلے |

## اللہ کیلئے کچھ غور و فکر کرو:

یعنی تعصب و عناد چھوڑ کر انصاف دل میں لے کر اللہ کے نام پر اٹھ کھڑے ہو، دو دو مل کر بحث و مشورہ کرو اور الگ الگ تنہائی میں غور کرو کہ سوچ کر یہ تمہارے رفیق (محمد صلی اللہ علیہ وسلم) کیا کچھ دیوانے ہیں۔ جو برابر تمہاری آنکھوں کے سامنے رہا جس کے بچپن سے لے کر جوانی تک کے ذرہ ذرہ حالات تم نے دیکھے جس کی امانت و دیانت، صدق و عفاف اور عقل و دانش کے تم برابر قائل رہے، کبھی کسی معاملہ میں نفسانیت و خود غرضی کا الزام تم نے اس پر نہیں لگایا، تم واقعی کہہ سکتے ہو کہ اب وہ دیوانہ ہو گیا ہے جو نہ ہوگا [illegible] سب کو دشمن بنا لیا گیا کبھی دیوانے ایسی حکمت کی باتیں کیا کرتے ہیں؟ کوئی مجنون ایسی ہی مدلل معقول و مربوط باتیں کر سکتا ہے۔ [illegible] ایسا ہے جس کی آمد سخت مہلک خطرات اور تباہی انگیز مستقبل سے تم کو آگاہ کر رہا ہے جب تم نہیں مانتے تو دلائل و شواہد سے سمجھا بجھا کر ہر طرح کام کی باتیں تمہیں سنا رہا ہے کیا ایسے ہیں جنہیں حقوق اور شریعت نے دیوانہ کہا جاتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

## غور کرو گے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی سچائی واضح ہو جائیگی:

مَثْنَىٰ وَفُرَٰدَىٰ یعنی زیادہ مجمع نہ ہو جس سے شور و غل پیدا ہو جائے بلکہ دو دو مل کر یا ایک ایک الگ الگ ہو کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے معاملہ پر سوچو پھر ہر شخص اپنے خیال کا دوسرے سے اظہار کرے اور انصاف و عدل کے ساتھ غور کرے یا تنہائی میں ہر ایک انصاف کے ساتھ سوچے کہ آپ پر جنون کا الزام سچا ہے یا جھوٹا۔ تمہارے ساتھی کو کسی طرح کا جنون نہیں ہے۔ مطلب یہ ہے کہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم اللہ کے رسول ہیں یہ کھلی ہوئی بات ہے کیونکہ ان کو کسی طرح کا جنون نہیں ہے ان کی عقل صحیح ہے، علم حلیم ہے فکر درست ہے۔ اس کے بعد اگر کوئی دعویٰ کرتا ہے جو غلط ہو یا عقل و دانش کا نظاہرہ کرتے ہو اور یہ کیسی حقیقت ہے کہ کوئی عقلمند صحیح الدماغ شخص ایسی باتیں کہے جس کی وجہ سے سارے لوگ دشمن ہو جائیں وہ ہر دعویٰ کیا تھا سب سے بڑا دعویٰ ہو جائے اس وقت تک کہ

جب تک اس دعویٰ کی صداقت کا یقین نہ ہو اور اس کی سچائی کا یقین نہ ہو جائے۔

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم ہر قسم کے دنیاوی مفاد سے بالاتر ہیں:

اور یہ بھی ضروری ہے کہ رسالت کا دعویٰ جب تک کسی کا مقصد کوئی دنیوی فائدہ ہو اور مقصد اور حصول نہیں ہوتا وہ اس کے پیش نظر یا حصول منفعت ہوتا ہے یا دفع مضرت اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پیش نظر ان دونوں دنیوی مقاصد میں سے کوئی بھی نہیں ہے حصول منفعت دنیوی کی تو ان کو کوئی خواہش ہی نہیں ہے وہ تو صاف کہتے ہیں مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ میں تم سے جو مزدوری مانگوں وہ تم ہی لے لو مجھے نہیں چاہئے اور دفع مضرت کا مقصد بھی ان کے پیش نظر نہیں ہے ان کے دنیاوی دشمن [illegible] ہو گئے ہیں اس سے معلوم ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پیش نظر آخرت کی مضرت کا دفع اور آخرت کے ثواب کا حصول ہے۔

## قریشی سرداروں کو دعوت اور اس کا رد عمل

حضرت ابن عباس کی روایت ہے کہ جب آیت وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ نازل ہوئی تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کوہ صفا پر چڑھ کر تمام قریش کو نام بنام پکارا۔ فریاد کی، وطر بابا ہے کہ تمہارا ساری حالت کو سب لوگ جمع ہو گئے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اگر میں تم کو اطلاع دوں کہ (پہاڑ کے پار) یکہ سوار موجود ہیں اور تم پر حملہ کرنا چاہتے ہیں تو بتاؤ کیا تم مجھے سچا سمجھو گے سب نے کہا ہاں ہم نے تو آپ کا کوئی جھوٹ نہیں پایا (اس لئے سچا سمجھیں گے) اس پر حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تو میں تم کو آنے والے سخت عذاب سے پہلے ہی آگاہ کرتا ہوں یہ سن کر ابولہب بولا تجھے ہمیشہ کے لئے موت آ جائے کیا اس لئے تو نے ہم کو جمع کیا تھا؟ اس پر سورۃ تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ نازل ہوئی۔ متفق علیہ۔ (تفسیر مظہری)

غور و فکر کی بات: آگے اس بات پر غور کی ایک واضح راہ بتلائی گئی ہے کہ ایک کیا آدمی جس کے ساتھ کوئی طاقتور جتھا اور جماعت نہیں تھی اور روایات کی مخالفت وہ اپنی پوری قوم بلکہ پوری دنیا کے خلاف کسی ایسے عقیدے کا اعلان کرے جو صدیوں سے ان میں رائج ہو چکا ہے خواہ وہ سارے اس پر متفق ہیں ایسا اعلان صرف دو صورتوں میں ہو سکتا ہے ایک یہ کہ [illegible] کوئی مجنون دیوانہ ہو جو اپنے نفع نقصان کو نہ سمجھے اور پوری قوم کو اپنا دشمن بنا کر مصائب کو دعوت دے یا پھر یہ کہ [illegible] اللہ کی طرف سے بھیجا ہوا رسول ہے اس کے حکم کی تعمیل میں کسی کی پرواہ نہیں کرتا۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ |
| تو کہہ جو میں نے تم سے مانگا ہو کچھ بدلہ سو وہ تم ہی رکھو |
| إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ ۖ |
| میرا بدلہ ہے اسی اللہ پر |

میں کوئی معاوضہ نہیں مانگتا، یعنی میں نے تم سے اپنی رسالت کا جو معاوضہ بھی چاہا ہو تمہارے خیال میں جو معاوضہ طلب کیا ہو وہ سب تم اپنے پاس رکھو، مجھے ضرورت نہیں، میرا معاوضہ تو خدا کے یہاں ہے۔ مقصد یہ ہے کہ جو چیز طلب کرتا ہوں یعنی ایمان یا اسلام وہ تمہارے ہی فائدے کی چیز ہے، اس سے میری کوئی غرض نہیں۔ (تفسیر جلالین)

اللہ کا حق اور بندوں کا حق: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا معاذ! کیا تم جانتے ہو کہ اللہ کا اپنے بندوں پر کیا حق ہے اور بندوں کا اللہ پر کیا حق ہے؟ حضرت معاذ نے عرض کیا اللہ اور اس کے رسول کو ہی بہتر علم ہے۔ فرمایا بندوں پر اللہ کا حق یہ ہے کہ اسی کی عبادت کریں، کسی کو اس کا شریک نہ قرار دیں اور بندوں کا اللہ پر یہ حق ہے کہ جو شرک نہ کرے اللہ اس کو عذاب نہ دے۔ (متفق علیہ، تفسیر مظہری)

صحیح بخاری شریف میں ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم ایک دن صفا پہاڑی پر چڑھ گئے اور عرب کے دستور کے مطابق یا صباحاہ کی آواز لگائی [illegible] اہم بات کے لئے جیسا کہ عادت تھی [illegible] سب لوگ جمع ہو گئے تو آپ نے فرمایا سنو اگر میں تمہیں خبر دوں کہ دشمن تمہاری طرف چڑھائی کرنے چلا آ رہا ہے اور عجب نہیں کہ صبح و شام ہی تم پر حملہ کر دے تو کیا تم مجھے سچا سمجھو گے؟ سب نے یک زبان جواب دیا کہ ہاں بے شک ہم آپ کو سچا جانیں گے۔ آپ نے فرمایا سنو میں تمہیں اس عذاب سے ڈرا رہا ہوں جو تمہارے آگے ہے۔ یہ سن کر ابولہب ملعون نے کہا تیرے ہاتھ ٹوٹیں کیا اسی لئے تو نے ہم سب کو جمع کیا تھا؟ اس پر سورۂ تبت یدا ابی لہب اتری۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۞ |
| اور اس کے سامنے ہے ہر چیز ۞ |

یعنی میری کارگزاری اور نیت اللہ کے سامنے ہے۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| قُلْ اِنَّ رَبِّیْ یَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ۞ |
| تو کہہ میرا رب پھینک رہا ہے سچا دین، وہ جانتا ہے چھپی چیزیں ۞ |

## حق آگیا اس سے فائدہ اٹھاؤ

یعنی اوپر سے وحی اتر رہی ہے اور دین حق کی بارش ہو رہی ہے، موقع کو ہاتھ سے نہ جانے دو، اس سے فائدہ اٹھاؤ۔ جس زور سے اللہ تعالیٰ نے حق کو باطل کے سر پر پھینک کر مارا ہے اس سے اندازہ کر لو کہ باطل کہاں ٹھہر سکے گا۔ ضرور ہے ملیا میٹ ہو کر رہے گا اور آفاق میں دین حق کا ڈنکا بجے گا۔ اس مضمون کو دوسری جگہ بیان فرمایا ہے [illegible] بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ (تفسیر عثمانی)

## ہر گھر تک اسلام پہنچ کر رہے گا

امام احمد کی روایت ہے کہ حضرت مقداد نے بیان کیا میں نے خود سنا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرما رہے تھے روئے زمین پر کوئی گھر مٹی کا ہو یا اون (کا خیمہ) ایسا نہ بچے گا جس کے اندر اللہ کلمۂ اسلام داخل نہ کر دے، عزت والے کو عزت کے ساتھ یا ذلیل کو ذلت کے ساتھ، عزت والوں کو تو اللہ [illegible] اسلام کی عزت دے گا [illegible] اور ذلیل ہو کر وہ اسلام کی اطاعت کریں گے۔

عَلَّامُ الْغُیُوْبِ یعنی چھپی ہوئی باتوں کو خوب جاننے والا ہے، اس کو علم ہے کہ کون اس رسالت کے لئے منتخب ہونے کا اہل ہے، وہی واقف ہے [illegible] کہ اطراف عالم میں کس طرح [illegible] اسلام کا غالب کرے گا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا یُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا یُعِیْدُ ۞ |
| تو کہہ آیا دین سچا اور جھوٹ تو کسی چیز کو نہ پیدا کرے نہ دوبارہ پھیر کر لائے ۞ |

## باطل حق کے مقابلہ میں نہیں ٹھہر سکتا

یعنی دین حق آ چکا، اب اس کا [illegible] سب [illegible] باطل [illegible] کر دے گا۔ [illegible] جھوٹ کے پاؤں کہاں جو حق کے سامنے کھڑے ہو [illegible] فتح مکہ کے دن [illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان پر تھی۔ (تفسیر عثمانی)

دوسری آیت میں آیا ہے بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ [illegible] ابلیس [illegible] بعض [illegible] کا قول ہے [illegible] باطل سے بت مراد ہیں۔

| |
|---|
| قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَاۤ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِیْ |
| تو کہہ اگر میں بہکا ہوا ہوں تو بہکوں گا اپنے برے کو |
| وَاِنِ اهْتَدَیْتُ فَبِمَا یُوْحِیْۤ اِلَیَّ رَبِّیْ |
| اور اگر میں سوجھ پر ہوں تو اس کی بدولت جو وحی بھیجتا ہے مجھ کو میرا رب |
| اِنَّهٗ سَمِیْعٌ قَرِیْبٌ ۞ |
| بیشک وہ سب کچھ سنتا ہے نزدیک ہے ۞ |

## اگر میں جھوٹا ہوں تو جھوٹ زیادہ دیر نہیں چل سکتا

یعنی کفار نے [illegible] (العیاذ باللہ) لیکن اگر میں [illegible] سب [illegible] [illegible]

یعنی جو دین میں نے اختیار کیا ہے اگر وہ گمراہی ہے تو گمراہی کا وبال بھی مجھ پر پڑے گا اور ظاہر ہے [illegible] مجھ کو [illegible] کا فائدہ حاصل [illegible] [illegible] (تفسیر [illegible])

ہدایت ملتی ہے تو اسی طرف سے نہیں کہ اس میں میری ساخت یا میری ذہنی صلاحیت ہے اور اس شعر میں میں نے کسی سے سیکھا ہے کیونکہ میرا امی ہونا ظاہر ہے، جب مجھ کو قرآن پڑھنا اور لکھنا نہیں آتا تو کسی سے کیسے سیکھتا، اس سے ثابت ہوتا ہے کہ یہ دین خدا کا بھیجا ہوا ہے اور خدا نے میرے پاس وحی بھیجی ہے اس لئے تم کو بھی میرے طریقہ پر چلنا چاہئے تاکہ جس طرح مجھ کو ہدایت ملی ہے تم کو بھی ہدایت یافتہ ہو جاؤ۔ (تفسیر علمی)

| |
|---|
| وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا |
| اور اگر تو دیکھے جب یہ گھبرائے ہوں پھر نہیں بچ کر نکل جانا اور پکڑے گئے |
| مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ |
| نزدیک جگہ سے |

ان کی پکڑ کا وقت قریب ہے:

یعنی یہ کفار بیہودہ باتیں کر رہے ہیں مگر وہ وقت عجیب قابل دید ہوگا جب یہ لوگ محشر کا ہولناک منظر دیکھ کر گھبرا رہے ہوں گے اور کہیں بھاگ نہ سکیں گے، اس وقت فرار کی کوئی راہ نہیں، وہ اسی کی ادھر ادھر تلاش کرتے ہوں گے مگر بہت آسانی سے فوراً یہیں کے یہیں گرفتار کر لئے جائیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ اکثر مفسرین کے نزدیک یہ حال روز محشر کا ہے کہ کفار وہاں گھبرا رہے ہوں گے کہ بھاگ نکلیں مگر کہیں بھاگ نہ سکیں گے جیسا کہ دنیا میں کوئی مجرم بھاگ جائے تو اس کی تلاش کرنا پڑتا ہے بلکہ سب کے سب اپنی اپنی جگہ میں گرفتار کر لئے جائیں گے کسی کو بھاگ نکلنے کا موقع نہ ملے گا بعض حضرات نے اس کو وقت نزع اور موت کا حال قرار دیا ہے کہ جب موت کا وقت آ جائے گا اس وقت یہ گھبرا رہے ہوں گے تو فرشتوں کے ہاتھ سے بچ نہیں سکیں گے اور اپنی جگہ سے روح قبض کر کے پکڑ لئے جائیں گے۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ |
| اور کہنے لگے ہم اس پر یقین لے آئے اور اب کہاں ان کا ہاتھ پہنچ سکتا ہے |
| مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ |
| دور جگہ سے |

اس وقت کا ایمان بھی کام نہ آئے گا:

یعنی اس وقت کہیں گے کہ ہم پیغمبر کی باتوں پر یقین لائے اب ہم ایمان لاتے ہیں حالانکہ ایمان کا اصل موقع دور جا چکا اب ایمان لانا ایسا ہے جیسے کوئی چاہے کہ آسمان کا چاند ہاتھ سے پکڑ لے وہ کہاں ہاتھ لگ سکتا ہے جو وہاں سے ہزاروں کوس دور ہے۔ مطلب یہ کہ ایمان مقبول ہونے کی جگہ دنیا تھی جو پیچھے رہ گئی اب آخرت میں آ کر ایمان لانا ایسا ہے جیسے کوئی کسی دور کی چیز کو پکڑنا چاہے کہ اس کا ہاتھ وہاں تک کہاں جاسکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ اور وہ کہیں گے ہم ایمان لائے یعنی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر ایمان لائے اور وہ کہیں گے کہ اس کے آنے سے پہلے ہمیں کیا خبر تھی بلکہ اب کہ جب

اس کی طرف ہوتا رہا اور تو وہ اس کی ماننے والی بات تھی کہ حضرت عباس بن عبد المطلب نے بیان کیا ہے کہ یہ آیت بیان فرمائی اللہ کا شکر ہے کہ اس نے ان کی مغفرت اور معافی کا وعدہ فرمایا اور دین و ایمان کی دعوت نے ہم کو یہ روشنی عطا کی جس سے اس طرح عمل کیا جس طرح کسی کو ایک فوجدار نے قتل کر دیا ہو اس کی روشنی ملتی ہے۔

حضرت ابن عباس نے فرمایا وہ دنیا کی طرف واپسی کی درخواست کریں گے جس وقت کہ مقام تنزیل آخرت سے دنیا میں ان کا لوٹنا ناممکن ہو چکا ہوگا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ |
| اور اس سے منکر ہو چکے ہیں پہلے سے اور پھینکتے رہے ہیں |
| بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ |
| بن دیکھے نشانے پر دور کی جگہ سے |

اب پچھتانے سے کچھ نہیں ہوتا:

یعنی پہلے جب ایمان لانے کا وقت تھا اس وقت تو انکار کرتے رہے اور اٹکل کے تیر چلاتے رہے، دنیا میں رہ کر بہت بے تحقیق باتوں کو اڑاتے رہے، اب پچھتانے سے کیا حاصل! (تفسیر عثمانی)

مجاہد نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات مبارک کو انہوں نے بلا تحقیق نشانہ بنا رکھا تھا شاعر کہتے تھے جادوگر کہتے تھے کاہن کہتے تھے، بہت دور کی بات کہتے تھے یعنی بغیر علم کے گمان سے کہتے تھے، قتادہ نے کہا وہ اپنے گمان سے تیر چلاتے تھے ان کا قول تھا کہ نہ قیامت ہوگی نہ جنت نہ دوزخ۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ |
| اور روک پڑ گئی ان میں اور ان کی آرزو میں |

اب دنیا میں واپسی نہیں ہوگی:

یعنی جس چیز کی آرزو رکھتے ہیں مثلاً ایمان مقبول یا نجات یا دنیا کی طرف واپس جانا، وہ نہیں ملتی، ابھی ان کے اور ان چیزوں کے درمیان آخرت و موت کا پردہ حائل ہو گیا جس سے آگے نہ جا سکے۔ (تفسیر عثمانی)

ایک بنی اسرائیل نوجوان کا عجیب واقعہ

ابن ابی حاتم نے یہاں پر عجیب و غریب اثر نقل کیا ہے جسے ہم پورا ہی نقل کرتے ہیں حضرت ابن عباس سے مروی ہے کہ بنی اسرائیل میں ایک دولت مند شخص تھا جس کے پاس مال بہت تھا، جب وہ مر گیا اور اس کا لڑکا اس کا وارث ہوا تو بری طرح نافرمانیوں میں مال برباد کرنے لگا اس کے چچاؤں نے سے ملامت کی اور سمجھایا اس نے غصے میں آ کر سب چیزیں بیچ کر روپے لے کر ایک چشمہ کے پاس آ کر ایک محل تعمیر کیا اور یہیں رہنے لگا، ایک دن زور کی آندھی آئی جس میں ایک بہت خوبصورت خوشبودار عورت اس کے پاس آ پہنچی اس نے اس سے پوچھا تم کون ہو اس نے کہا میں بنی اسرائیل میں سے ہوں، پوچھا کیا یہ محل تمہارا ہے؟ اس نے کہا ہاں، پوچھا تمہاری بیوی بھی ہے؟ کہا نہیں، کہا پھر تم اپنی زندگی کا لطف کیسے اٹھاتے ہو؟ اب اس نے

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| [illegible] |
| [illegible] |
| [illegible] |
| [illegible] |

[illegible]

# سورۃ فاطر

[illegible]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

[illegible]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

[illegible]

[illegible]

جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا

[illegible]

[illegible]

اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ

[illegible]

[illegible]

يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاۤءُ

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

[illegible]

[illegible]

تو ہمیں بازوؤں سے نہیں ... جیسا کہ چنانچہ ... حضرت جبرئیل علیہ السلام کے چھ سو بازو (پر) تھے ... جاعل الملئکۃ رسلا سے یہ بات سمجھ ... فرشتوں کے بازوؤں کا ... جو جیسا مناسب ... حکمت کی بنا ... کا مشاہدہ کیا ہے۔

## سر سید احمد خان کی غلط فہمی:

(اطلاع) ... قرآن اور حدیث سے صراحۃً ثابت ہے مگر خان بہادر سر سید علی گڑھی اپنی تفسیر میں ... وجود ملائکہ اور وجود شیاطین کا منکر ہے اور آیات قرآنیہ میں عجیب عجیب تاویلیں کرتا ہے سر سید نے ملائکہ اور شیاطین کے بارہ میں جو تحریفات کی ہیں ان کو مولانا ... حقانی صاحب دہلوی نے اپنی تفسیر حقانی کے مقدمہ میں نقل کر کے ان کا ... ہونا ثابت کیا ہے ناظرین کرام مقدمہ تفسیر حقانی جو تفسیر کے ساتھ چھپا ہوا ہے ... ملاحظہ کریں۔

[illegible]

| |
|---|
| مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ |
| [illegible] |
| رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا |
| رحمت میں سے تو کوئی نہیں اس کو روکنے والا |

## اللہ کی رحمت کو کوئی نہیں روک سکتا:

رحمت جسمانی ہو مثلاً بارش، روزی وغیرہ یا روحانی جیسے ... کتب ... غرض اللہ جب لوگوں پر اپنی رحمت کا دروازہ کھولے ... بند کر سکے (تفسیر حقانی)

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی دعائیں:

... نماز ... کے بعد ... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یہ کلمات پڑھتے لا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ لہ الملک ولہ الحمد وہو علی کل شیء قدیر اللہم لا مانع لما اعطیت ولا معطی لما منعت ولا ینفع ذا الجد منک الجد اور صحیح مسلم میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ... سمع اللہ لمن حمدہ کے بعد ... اللہم ربنا لک الحمد ملء السماء والارض وملء ما شئت من شیء بعد اللہم اہل الثناء والمجد احق ما قال العبد وکلنا لک عبد اللہم لا مانع لما اعطیت ولا معطی لما منعت ولا ینفع ذا الجد منک الجد

اس آیت کی ... اور ان یمسسک اللہ بضر ... کی آیتیں بہت سی ہیں (تفسیر ابن کثیر)

## بارش کے وقت حضرت ابوہریرہؓ کا عمل:

اور حضرت ابوہریرہؓ جب بارش ہوتے دیکھتے تو فرمایا کرتے تھے ... مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ پڑھتے تھے ... کے باطل خیالات کی تردید ہے جو بارش کو خاص ستاروں کی طرف منسوب کر کے کہا کرتے تھے کہ ہم پر بارش فلاں ستارے کی وجہ سے ہوئی ہے حضرت ابوہریرہؓ ... بارش ... فتح ... یہی ... آیت ... ایسے وقت تلاوت فرمایا کرتے (روح المعانی ...)

| |
|---|
| وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ |
| [illegible] |
| بَعْدِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ |
| [illegible] |

یعنی اپنی حکمت ... جو چیز ... زبردست ... (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ |
| [illegible] |
| مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ |
| [illegible] |
| وَالْأَرْضِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ |
| [illegible] |

## معبود حقیقی صرف اللہ ہی ہے:

یعنی ... پیدا کیا ... آسمان ... زمین ... اللہ ... اختیار ... معبودیت ... اللہ تعالیٰ ... خالق ... معبود حقیقی ... (تفسیر عثمانی)

## آسمان اور زمین:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ

[illegible]

مِنْ قَبْلِكَ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

[illegible]

[illegible]

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا

[illegible]

تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ

[illegible]

الْغَرُورُ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا

[illegible]

إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ

[illegible]

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ

[illegible]

كَبِيرٌ أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا

[illegible]

فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ

[illegible]

فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرَاتٍ

[illegible]

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

**سببِ نزول:** [illegible]

| |
|---|
| وَاللّٰهُ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا |
| [illegible] |
| فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَحْیَیْنَا بِهِ |
| [illegible] |
| الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ |
| [illegible] |

### اللہ تعالیٰ مُردوں کو زندہ کریں گے:

[illegible]

### مُردوں کے زندہ ہونے کی کیفیت:

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِیْعًا |
| [illegible] |

### عزت و ذلت کا مالک اللہ ہے:

[illegible] وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّیَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا [illegible] الَّذِیْنَ یَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَیَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًا [illegible]

| |
|---|
| اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّیِّبُ |
| [illegible] |

### عمدہ کلام:

[illegible]

### پاک کلمات اللہ تعالیٰ کی طرف کیسے چڑھتے ہیں

[illegible]

لا الٰہ الا اللہ واللہ اکبر وتبارک اللہ کہتا ہے تو ایک فرشتہ ان کو اپنے پروں کے نیچے چھپا کر اوپر چڑھ جاتا ہے اور ملائکہ کی جس جماعت کی طرف سے گذرتا ہے وہ ملائکہ ان کلمات کے قائل کے لیے دعاء مغفرت کرتے ہیں تاآنکہ رب العالمین کی بارگاہ میں ان کلمات کو وہ فرشتہ پیش کر دیتا ہے جس کی تصدیق اللہ کی کتاب (کی اس آیت) سے ہوتی ہے اللہ نے فرمایا ہے اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّیِّبُ۔

سعید بن منصور، حاکم وغیرہ، بیہقی اور ابن مردویہ نے حضرت ابو ہریرہؓ کی روایت سے اس حدیث کو مرفوعاً بیان کیا ہے۔ (تفسیر مظہری)

حضرت کعب احبار رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں سُبْحَانَ اللّٰهِ اور لا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اور اللّٰهُ اَكْبَرُ عرش کے ارد گرد آہستہ آہستہ آواز نکالتے ہیں جیسے شہد کی مکھیوں کی بھنبھناہٹ ہوتی ہے اپنے کہنے والے کا ذکر خدا کے سامنے کرتے رہتے ہیں اور نیک اعمال خزانوں میں محفوظ رہتے ہیں۔

مسند احمد میں ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں جو لوگ اللہ کا جلال اس کی تسبیح اس کی حمد اس کی بڑائی اس کی وحدانیت کا ذکر کرتے رہتے ہیں ان کے لئے ان کے یہ کلمات عرش کے آس پاس خدا کے سامنے ان کا ذکر کرتے رہتے ہیں کیا تم نہیں چاہتے کہ کوئی نہ کوئی تمہارا ذکر تمہارے رب کے سامنے کرتا رہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

| وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ |
|---|
| اور کام نیک اس کو اٹھا لیتا ہے ☆ |

## پاک کلمات اور عمل صالح دونوں ضروری ہیں:

مختصر یہ کہ کلام (ذکر اللہ وغیرہ) کا ذاتی تقاضا ہے اوپر چڑھنا۔ اس کے ساتھ دوسرے اعمال صالحہ ہوں تو وہ اس کو سہارا دے کر اور زیادہ ابھارتے اور بلند کرتے رہتے ہیں۔ اچھے کلام کو بدون اچھے کاموں کے پوری رفعت شان حاصل نہیں ہوتی۔ بعض مفسرین نے وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ کی ضمیروں کا مرجع بدل کر یہ معنی لئے ہیں کہ عمل صالح کو کلام طیب اوپر اٹھاتا اور بلند کرتا ہے۔ یہ بھی درست ہے اور بعض نے یرفعہ کی ضمیر اللہ کی طرف لوٹائی ہے یعنی اللہ عمل صالح کو بلند کرتا اور معراج قبول پر پہنچاتا ہے بہرحال غرض یہ ہے کہ بھلے کام اور اچھے کلام دونوں علو و رفعت کو چاہتے ہیں۔ لہٰذا جو شخص اللہ تعالیٰ سے عزت کا طالب ہو وہ انہی چیزوں کے ذریعہ سے حاصل کرے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یعنی عزت اللہ کے ہاتھ ہے تمہارے ذکر اور بھلے کام چڑھتے ہیں۔ جب ایسی صورت کرو گے تب ہی پر (پورا) غلبہ (حاصل) کریں گے۔ کفر دفع ہوگا، اسلام کو عزت ہوگی۔" مکاروں کے سب داؤ گھات باطل اور بیکار ہو کر رہ جائیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

## بغیر عمل کے ایمان بیکار نہیں:

میں کہتا ہوں آیت کا مطلب یہ نہیں ہے کہ بغیر عمل کے ایمان ناقابل اعتبار اور بیکار ہے کیونکہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد مبارک ہے کہ جس نے اس بات کی شہادت دی کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں وہی تنہا معبود ہے اس کا کوئی شریک نہیں اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم اس کے بندے اور رسول ہیں اور عیسیٰ اللہ کے بندے اور رسول اور اللہ کی بندی کے بیٹے اور کلمۃ اللہ تھے جو اللہ نے مریم کی طرف القاء کیا تھا اور وہ اللہ کی طرف سے روح تھے اور اس بات کی بھی شہادت دی کہ جنت حق ہے اور دوزخ حق ہے تو اللہ اس کو جنت میں داخل فرما دے گا اس کے عمل کیسے ہی ہوں رواہ الشیخان فی الصحیحین عن عبادۃ بن الصامتؓ۔

## قول بغیر ایمان اور خلوص کے خالی باتیں بے کار ہیں:

منافق کا زبانی قول جو عمل قلبی کے ساتھ نہ ہو، مقبول اعمال بھی قول کے خلاف ہوں تو وہ قابل اعتبار اور بیکار ہے اسی طرح جو عمل بغیر خلوص نیت کے کیا جائے یا غلط عقیدہ عمل کے مطابق ہو تو خلوص قلبی جس عمل کے ہمراہ نہ ہو وہ بھی قابل قبول نہیں ہوتا۔ (تفسیر مظہری)

## قبولیت کی شرط:

ایک حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ اللہ تعالیٰ کسی قول کو بغیر عمل کے اور کسی قول و عمل کو بغیر نیت کے اور کسی قول و عمل اور نیت کو بغیر مطابقت سنت کے قبول نہیں کرتا۔ (قرطبی)

اس سے معلوم ہوا کہ عمل قبولیت کی شرط سنت کے مطابق ہونا ہے، اگر قول بھی عمل بھی اور نیت بھی اور یہ سب درست بھی ہوں مگر طریقہ عمل سنت کے مطابق نہ ہو تو قبولیت حاصل نہیں ہوگی۔

حقیقت یہی ہے کہ جس طرح صرف کلمہ توحید و تسبیحات بغیر عمل صالح کے کافی نہیں اسی طرح عمل صالح اور امر و نواہی کی پابندی بھی بغیر کثرت ذکر اللہ کے بے رونق رہتی ہے۔ ذکر اللہ کی کثرت ہی اعمال صالحہ کو مزین کر کے قابل قبول بناتی ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

"صعود" اور "رفع" کا فرق:

کلمات طیبہ اور ذکر کا تعلق چونکہ ذات باری تعالیٰ سے ہے جو اللہ کی طرف ان کا چڑھنا ان کا ذاتی اور اصلی انتقال ہے اس لئے ان کے لئے صعود کا لفظ استعمال کیا گیا اور اعمال صالحہ کا تعلق بندوں سے ہے جو سفلی ہے اعمال صالحہ کا اوپر کو چڑھنا ذاتی اور اصلی نہیں بلکہ کسی کے سہارے ہے اس لئے اعمال صالحہ کے لئے لفظ رفع کا استعمال کیا گیا جس کے معنی اوپر اٹھانے کے ہیں جس کے لئے کوئی اٹھانے والا چاہئے۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ |
| اور جو لوگ داؤ میں ہیں برائیوں کے ان کے لئے سخت عذاب ہے |
| شَدِيْدٌ ۭ وَمَكْرُ اُولٰۗىِٕكَ هُوَ يَبُوْرُ |
| اور ان کا داؤ ہے ٹوٹنے کا |

حق کے مخالف ناکام ہوں گے:

یعنی جو لوگ بری بری تدبیریں سوچتے اور حق کے خلاف داؤ گھات میں رہتے ہیں آخر ناکام ہو کر نامراد ہوں گے۔ دیکھو قریش نے "دار الندوہ" میں بیٹھ کر حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو قید کرنے یا قتل کرنے یا وطن سے نکالنے کے مشورے کئے تھے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ جنگ بدر کے موقع پر وہی لوگ وطن سے نکلے مسلمانوں کے ہاتھوں سے قتل ہوئے اور قلیب بدر میں ہمیشہ کے لئے قید کر دیے گئے۔

| |
|---|
| وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ |
| اور اللہ نے تم کو بنایا مٹی سے پھر بوند پانی سے |
| ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ |
| پھر بنایا تم کو جوڑے جوڑے اور نہ پیٹ رہتا ہے |
| مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ |
| کسی مادہ کو اور نہ وہ جنتی ہے بن خبر اس کی |

انسان کا توالد و تناسل:

یعنی تم کو مٹی سے پھر تمہاری نسل کو پانی کی بوند سے پیدا کیا۔ پھر مرد و عورت کے جوڑے بنا دیئے جس سے نسل چلی۔ ابتدائے حمل سے لے کر بچہ پیدا ہونے تک جو ادوار و اطوار گزرتے ہیں سب کی خبر خدا ہی کو ہے۔ ماں باپ بھی نہیں جانتے کہ اندر کیا کیا صورتیں

پیش آئیں گی۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ |
| اور نہ عمر پاتا ہے کوئی بڑی عمر والا اور نہ گھٹتی ہے |
| عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرٌ |
| کسی کی عمر مگر لکھا ہے کتاب میں بیشک یہ اللہ پر آسان ہے |

ہر ایک کی عمر مقرر ہے، کفر آخر کار مغلوب ہوگا:

یعنی جس کی جتنی عمر ہے لوح محفوظ میں لکھی ہوئی ہے اور جو اسباب عمر کے گھٹنے بڑھنے کے ہیں یا یہ کہ کون عمر طبعی کو پہنچے گا کون نہیں سب اللہ کے علم میں ہے اور اللہ کو ان جزئیات پر احاطہ رکھنا بندوں کی طرح کچھ مشکل نہیں۔ اس کو تمام ماکان و ما یکون، جزئی کلی اور غیب و شہادت کا علم ازل سے حاصل ہے۔ اپنے اوپر قیاس نہ کرو۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ "ہر کام کی کچھ حد ہے جیسے آدمی کی عمر" اور اپنی مدت کو پہنچتا ہے اسی طرح کفر اور اسلام بڑھتے گھٹتے ہوئے آخر کار کفر مغلوب و مقہور ہو کر چھوڑے گا۔ (تفسیر عثمانی)

لوح محفوظ میں ہر ایک کی عمر کا مفصل اندراج ہوتا ہے:

سعید بن جبیر نے کہا ام الکتاب (یعنی لوح محفوظ) میں لکھا ہوتا ہے کہ فلاں شخص کی عمر اتنے سال کی ہوگی پھر اس کے نیچے لکھا ہوتا ہے ایک دن گزر گیا دو دن گزر گئے تین دن گزر گئے اسی طرح پوری عمر کے دن لکھے ہوئے ہوتے ہیں اور اس طرح عمر ختم ہو جاتی ہے۔

بعض علماء کے نزدیک آیت کا یہ مطلب ہے کہ کسی کی عمر بڑھائی جاتی یا کم نہیں کی جاتی مگر اس کا اندراج (پہلے سے) لوح محفوظ میں ہوتا ہے مثلاً لوح محفوظ میں لکھا ہوا ہے کہ فلاں شخص کی عمر اتنے سال کی ہوگی مگر بعض نیکیوں کی وجہ سے اس کی عمر زیادہ کر دی جائے گی یا بعض گناہوں کی وجہ سے اس کی عمر کم کر دی جائے گی یہ سب لوح محفوظ میں پہلے سے لکھا ہوتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

زیادتی عمر کے اسباب:

بخاری و مسلم وغیرہ میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ جو چاہے کہ اس کی روزی اور عمر بڑھے وہ صلہ رحمی کیا کرے۔ ابن ابی حاتم میں ہے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کسی کی اجل آ جانے کے بعد اسے مہلت نہیں ملتی، زیادتی عمر سے مراد نیک اولاد کا ہونا ہے جس کی دعائیں اسے مرنے کے بعد اس کی قبر میں پہنچتی رہتی ہیں یہی زیادتی عمر ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ

اور برابر نہیں دو دریا یہ میٹھا ہے پیاس بجھاتا ہے خوشگوار

شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ

اور یہ کھاری کڑوا اور دونوں میں سے کھاتے ہو

لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا

گوشت تازہ اور نکالتے ہو گہنا جس کو پہنتے ہو

### غلبہ اسلام کے لطیف اشارے:

اوپر سے دلائل توحید اور شواہد قدرت بیان ہوتے آرہے ہیں انہی کے ضمن میں لطیف اشارے اسلام کے غلبہ کی طرف بھی ہوتے جاتے ہیں۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یعنی کفر اور اسلام برابر نہیں خدا کفر کو مغلوب ہی کرے گا اگرچہ تم دونوں سے فائدہ لے گا۔ مسلمانوں سے قوت دین اور کافروں سے جزیہ خراج اور گوشت یعنی کھاری دونوں دریاؤں سے نکلتا ہے یعنی مچھلی۔ اور گہنا (زیور) یعنی موتی، مونگا اور جواہر اکثر کھاری سے نکلتے ہیں" (تفسیر عثمانی)

**مچھلی کا حکم:** اس آیت میں مچھلی کا گوشت کہلانا۔ یہ تعبیر کرنے میں اس طرف اشارہ پایا جاتا ہے کہ مچھلی خود بخود حلال گوشت ہے اس کو ذبح کرنے کی ضرورت نہیں بخلاف دوسرے بری جانوروں کے کہ جب تک ان کو اللہ کے نام پر ذبح نہ کرو حلال نہیں مچھلی میں یہ شرط نہیں اس لئے وہ طیبا گوشت ہے۔

### موتی کھاری اور میٹھے دونوں طرح کے پانی میں ہوتے ہیں:

جیسے کہ بعض زیادہ کے ہیں مراد اس سے موتی ہیں۔ آیت سے معلوم ہوا کہ موتی جس طرح کھارے شور میں پیدا ہوتے ہیں شیریں دریاؤں میں بھی ہوتے ہیں جو عام شہرت کے خلاف ہے کیونکہ معروف و مشہور یہی بات ہے کہ موتی دریائے شور (سمندر) میں پیدا ہوتے ہیں۔

### مردوں کیلئے موتیوں کا استعمال:

تلبسونها میں صیغہ مذکر استعمال کرنے سے اس طرف اشارہ ہو گیا کہ موتیوں کا استعمال مردوں کے لئے بھی جائز ہے بخلاف سونے چاندی کے کہ ان کا بطور زیور استعمال کرنا مردوں کے لئے جائز نہیں۔ (روح کا ملخص مختصراً)

وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا

اور تو دیکھے جہازوں کو اس میں کہ چلتے ہیں پانی کو پھاڑتے

مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾

تاکہ تلاش کرو اس کے فضل سے اور تاکہ تم حق مانو ☆

### اللہ کا شکر ادا کرو:

اکثر بڑی بڑی تجارتیں جہازوں کے ذریعے ہوتی ہیں، ان سے جو منافع حاصل ہوں یہی اللہ کا فضل ہے ان تمام انعامات پر انسان کو چاہئے مالک کا شکر ادا کرے۔ (تفسیر عثمانی)

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

رات گھسا دیتا ہے دن میں اور دن گھسا دیتا ہے

فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۫ۖ

رات میں اور کام میں لگا دیا سورج اور چاند کو

كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

ہر ایک چلتا ہے ایک ٹھہرے وعدہ تک ☆

### اپنے وقت پر غلبہ ہوگا:

یہ مضمون پہلے کئی جگہ گزر چکا ہے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں: "یعنی رات دن کی طرح کبھی کفر غالب ہے کبھی اسلام اور سورج چاند کی طرح ہر چیز کی مدت بندھی ہے اس سے کمی بیشی نہیں ہوتی۔ حق کا نمایاں غلبہ اپنے وقت پر ہوگا۔" (تفسیر عثمانی)

### مغرب کے فلاسفروں کا شوشہ:

اس آیت سے معلوم ہوا کہ آفتاب و ماہتاب حسب حکم خداوندی گردش کرتے رہتے ہیں۔ فلاسفہ مغرب نے ایک شوشہ چھوڑا ہے کہ آفتاب زمین کے گرد نہیں گھومتا بلکہ زمین آفتاب کے گرد گھومتی ہے۔

اگر فلاسفہ مغرب کا یہ خیال صحیح ہوتا کہ زمین آفتاب کے گرد گھومتی ہے تو لامحالہ زمین کے گھومنے سے قطب ستارہ ضرور متبدل ہوتا رہتا حالانکہ وہ ہمیشہ اپنے حال پر رہتا ہے اور ٹھیک اسی جگہ رہتا ہے جہاں پہلے تھا بلکہ جو لوگ زمین کے شمال اور جنوب میں رہتے ہیں ہر ایک کی سمت متبدل ہو جاتی حالانکہ ہزاروں سال سے ہم کسی وقت کسی کی سمت کو متبدل نہیں پاتے پس ثابت ہوا کہ زمین کی گردش کا خیال بالکل غلط ہے۔

نیز اگر زمین گردش کرتی تو لازم تھا کہ دریاؤں اور کنوؤں کے پانی منقلب ہو جاتے بلکہ گھڑوں اور کٹوروں کے پانی بھی پلٹ جاتے لہٰذا یہ کہنا

کہ کہنا کہ زمین آفتاب کے گرد بہت زور سے چکر لگاتی ہے بالکل غلط اور باطل ہے۔ (معارف و مظہری)

| |
|---|
| ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ |
| یہ اللہ ہے تمہارا رب اسی کیلئے بادشاہی ہے اور جن کو تم پکارتے ہو |
| مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ |
| اس کے سوائے وہ مالک نہیں کھجور کی گٹھلی کے چھلکے کے ﴿۱۳﴾ |

خود ساختہ خداؤں کی بے بسی:

یعنی جس کی صفت مذکورہ اوپر بیان ہوئی حقیقت میں وہ ہے تمہارا سچا پروردگار اور کل زمین و آسمان کا بادشاہ۔ باقی جنہیں تم خدا قرار دے کر پکارتے ہو وہ ایک تنکے کے بھی مالک نہیں کھجور کی گٹھلی پر جو باریک جھلی سی ہوتی ہے اس کے بھی مالک نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ |
| اگر تم ان کو پکارو نہیں سنتے تمہاری پکار اور اگر |
| سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۗ |
| سن بھی لیں نہیں پہنچیں تمہارے کام پر |
| وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ۗ |
| اور قیامت کے دن منکر ہوں گے تمہارے شریک ٹھہرانے سے ۔ |

خود ساختہ خدا بے کار ہیں:

یعنی ان معبودوں کو سنانا بے سود ہے وہ تمہاری پکار نہیں سنتے اور بفرض محال سن بھی لیں تو کچھ کام نہ آسکیں بلکہ قیامت کے دن تمہاری مشرکانہ حرکات سے علانیہ بیزاری کا اظہار کریں گے اور بجائے مددگار بننے کے دشمن ثابت ہوں گے۔ (تفسیر عثمانی)

انبیاء اور فرشتے مشرکین سے بیزار ہیں:

بتوں میں تو سننے کی صلاحیت ہی نہیں۔ انبیاء اور فرشتوں میں اگرچہ صلاحیت ہے مگر نہ وہ ہر جگہ موجود ہیں نہ ہر ایک کے کلام کو سنتے ہیں۔ آگے فرمایا کہ اگر بالفرض وہ سن بھی لیں جیسے فرشتے اور انبیاء تو پھر بھی وہ تمہاری درخواست پوری نہیں کر سکتے، کیونکہ ان کی خود قدرت نہیں۔ اور اللہ تعالیٰ کی اجازت کے بغیر اس سے کسی کی سفارش بھی نہیں کر سکتے۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ |
| اور کوئی نہ بتلائے گا تجھ کو جیسا بتلائے خبر رکھنے والا ﴿۱۴﴾ |

کی بھی خبر۔ یعنی اللہ سے زیادہ حال کون جانے وہی خبر دیتا ہے کہ یہ شریک غلط ہیں جو کچھ کام نہیں آتے اس کی ٹھیک ٹھیک باتیں یاد رکھو تم نے سنا دیا۔

| |
|---|
| يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى |
| اے لوگو تم ہو محتاج طرف اللہ کی |
| اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ |
| اور اللہ وہی ہے بے پروا سب تعریفوں والا ﴿۱۵﴾ |

سب اللہ کے محتاج ہیں:

یعنی سب لوگ اسی اللہ کے محتاج ہیں جسے کسی کی احتیاج نہیں کیونکہ تمام خوبیاں اور کمالات اسی کی ذات میں جمع ہیں پس وہی مستحق عبادت و ستائش کا ہوا۔ (تفسیر عثمانی)

انسان سب سے زیادہ محتاج ہے:

یعنی وجود و بقاء (کے ہر لمحہ و ہر آن) وجود و روزی سے نجات اور جنت کے ثواب میں تم ہمیشہ اللہ کے محتاج ہو۔ یوں تو ساری خلائق اللہ کی محتاج ہے لیکن انسان نے باوجود کمزور اور ظالم و جاہل ہونے کے بار امانت اپنے کندھوں پر اٹھا لیا اس لیے دوسری مخلوق کے مقابلہ میں یہ زیادہ محتاج ہے اس کی ضرورتوں کی بہ نسبت دوسری مخلوق کی احتیاجات اور ضرورتیں کم ہیں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ |
| اگر چاہے تم کو لے جائے اور لے آئے ایک نئی خلقت |
| وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ |
| اور یہ بات اللہ پر مشکل نہیں ﴿۱۷﴾ |

اللہ تمہاری جگہ دوسری مخلوق لا سکتا ہے:

یعنی تم نہ مانو تو وہ قادر ہے کہ تم کو ہٹا کر دوسری مخلوق آباد کر دے جو ہمہ وجوہ اس کی فرمانبردار اور اطاعت گزار ہو جیسے آسمانوں پر فرشتے۔ اور ایسا کرنا اللہ کو کچھ مشکل نہیں لیکن اس کی حکمت کا اقتضاء ہے کہ زمین پر یہ سب سلسلے چلتے رہیں اور آخر میں ہر ایک اپنے نیک و بد کا بدلہ پائے تاکہ ہر طرح اس کی تمام صفات کا ظہور ہو۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ وَاِنْ تَدْعُ |
| اور نہ اٹھائے گا کوئی اٹھانے والا بوجھ دوسرے کا اور اگر پکارے |
| مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ |
| کوئی بوجھل اپنا بوجھ بٹانے کو کوئی نہ اٹھائے اس میں سے |

| |
|---|
| وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرَىٰ |
| اور نہ اٹھائے گا کوئی اٹھانے والا بوجھ دوسرے کا |

## کوئی کسی کا بوجھ نہیں اٹھائے گا

کوئی بوجھ والا دوسرے کا بوجھ اپنے اوپر نہ اٹھائے گا اور اگر کوئی اپنے بوجھ کے لیے کسی دوسرے کو بلائے گا تو اس کا بوجھ اٹھانے کے لیے کوئی نہ آئے گا خواہ وہ اس کا قرابت دار ہی کیوں نہ ہو۔ (تفسیر مظہری)

## کچھ مسلمانوں کے گناہ یہود و نصاریٰ پر ڈالنے کا مطلب

مسلم نے حضرت ابو موسیٰ کی روایت سے مرفوعاً بیان کیا ہے کہ قیامت کے دن کچھ مسلمان پہاڑوں کے برابر گناہ لے کر آئیں گے اللہ ان کے گناہوں کو بخش دے گا اور ان کے گناہ یہود و نصاریٰ پر ڈال دے گا۔

ابن حبان اور بیہقی نے حضرت انس کی روایت سے بیان کیا ہے کہ قیامت کے دن ہر مسلمان کے سامنے ایک کافر کو لایا جائے گا اور اس سے کہا جائے گا یہ دوزخ سے (بچنے کے لیے) تیرا معاوضہ ہے۔

ان دونوں حدیثوں کا مطلب یہ ہے کہ جنت و دوزخ میں کافروں کے حصے کے مقامات بھی ہوں گے ... گناہوں کا عذاب ... اور ... ان کے گناہوں کی سزا کافروں کو دی جائے گی ... کی وجہ سے ... اللہ ... مغفرت فرمائے گا مسلمانوں پر ... کافروں ... گناہ کرنے کا اور گناہوں کا طریقہ جاری کرنے کا ... کا مطلب ... یہ ہوگا کہ ... پوری ... رہیں گے۔

## قرابت و رشتہ کام نہیں چلے گا

حضرت عکرمہ نے فرمایا ... باپ ... بیٹے ... اپنا حق ... کہے گا ... مجھ سے ... میں تیرا ... ہوں ... ماں ... بیٹے ... احسان ... آپ کے ...

... آپ کے ...

... (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم |
| بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ |

ڈرنے والے ... آپ کے ڈرانے سے ... فائدہ ... ہے ... اللہ سے ...

| |
|---|
| وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ |
| وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ |
| اور اللہ کی طرف ہے ... |

ہر کسی کا اپنا فائدہ ہے۔

... آپ کی نصیحت ... جو شخص ... اس سے ... آپ پر ... کا کام ... (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ |
| وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ |
| وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ |
| وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ |

### مومن اور کافر برابر نہیں:

[illegible] وحی الٰہی کی روشنی میں [illegible] ان کے ساتھ [illegible] کیا ان برابری [illegible] [illegible] کی طرف [illegible] [illegible] زیادہ [illegible] [illegible] (تفسیر ماجدی)

إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ

مَنْ فِي الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾ إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾

### پیغمبر کی ذمہ داری

[illegible] حضرت شاہ صاحب [illegible] [illegible] (تفسیر عثمانی)

إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ کا یہ مطلب ہے کہ آپ کا کام صرف [illegible] [illegible] (تفسیر ...)

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ

وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾

[illegible] اس کے متعلق سورۂ نحل کے [illegible] (تفسیر ...)

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ

مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾

[illegible]

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

[illegible]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً

فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ

### عجیب قدرت کا مظاہرہ:

[illegible]

وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ

مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾

### قدرت کی نیرنگیاں:

[illegible]

مسند بزار میں ہے کہ ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سوال کیا کہ کیا خدائے تعالیٰ رنگ ریزی بھی کرتا ہے؟ آپ نے فرمایا: ہاں، ایسا رنگ رنگتا ہے جو کبھی پھیکا نہ پڑے، سرخ، زرد اور سفید۔ یہ حدیث مرفوعاً اور موقوفاً بھی مروی ہے۔ [illegible]

| |
|---|
| وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ |
| اور آدمیوں میں اور کیڑوں میں اور چوپایوں میں |
| مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ |
| کئی رنگ کے ہیں اسی طرح |

یہ جو بیان ہے مقصد اس کی تمثیل ہے کہ جس طرح نباتات، جمادات اور حیوانات میں رنگ برنگ کی مخلوق ہے، انسانوں میں بھی [illegible] ایک ہی طرح جدا جدا مومن اور کافر ایک دوسرے سے بنا جائے اور سب انسان ایک ہی راہ اختیار کر لیں یہ کب ہو سکتا ہے۔ اس میں حضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو تسلی ہے [illegible] لوگوں کے اختلاف سے تنگ دل نہ ہوں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ |
| اللہ سے ڈرتے وہی ہیں اس کے بندوں میں جن کو سمجھ ہے |
| إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾ |
| تحقیق اللہ زبردست ہے بخشنے والا ۲۸ |

## اہل علم کی شان:

یعنی بندوں میں یوں تو سبھی ہیں اور اللہ سے ڈرنے والے بھی کم و بیش ہیں مگر اللہ کی عظمت و جلال کا ڈر [illegible] جو [illegible] اور اپنے پروردگار کے احکام و ہدایات کا علم حاصل کر کے [illegible] رکھتے ہیں۔ جس شخص میں جتنا علم جس درجہ کا ہوگا اسی درجہ کی وہ خدا سے [illegible] جس میں خوف خدا نہیں وہ فی الحقیقت عالم کہلانے کا مستحق نہیں۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یعنی سب آدمی ڈرنے والے نہیں۔ اللہ سے ڈرنا سمجھ والوں کی صفت ہے اور اللہ کا معاملہ بھی [illegible] زبردست ہے [illegible] وہ غفور بھی کہ گنہگار کو بخشے"۔ یہی دونوں حیثیت سے [illegible] چاہیے [illegible] کے [illegible] ہوئے۔ تو جب [illegible] (تفسیر عثمانی)

شیخ اجل شہاب الدین سہروردی نے لکھا ہے کہ آیت میں اس پر تنبیہ کی گئی ہے کہ جس کے دل میں خشیت نہیں وہ عالم نہیں، میں کہتا ہوں اس کی معرفت [illegible] جلالت اور صفات جمالیہ [illegible]

ذاتی عظمت کی پہچان رکھتی ہے۔

بغوی نے لکھا ہے کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا: مراد یہ ہے کہ مخلوق میں سے جس کو میری [illegible] اور عظمت کا علم ہو [illegible] صفات کو جانتا ہے وہ اللہ سے ڈرتا ہے۔

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو سب سے زیادہ اللہ کا ڈر تھا:

شیخین نے حضرت عائشہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کوئی کام کیا اور لوگوں کو اس کی اجازت دے دی لیکن بعض لوگوں نے اس کام سے [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو اس کی اطلاع ہوئی تو ایک خطبہ دیا جس میں اللہ کی حمد و ثنا کے بعد فرمایا [illegible] لوگوں کو کیا ہو گیا [illegible] اس کام سے پرہیز رکھتے ہیں جو میں کرتا ہوں، خدا کی قسم میں ان سب سے زیادہ اللہ کو جانتا ہوں اور ان سب سے زیادہ اس سے ڈرتا ہوں۔

## عالم کی فضیلت

دارمی نے مکحول کی مرسل حدیث بیان کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا عالم کی فضیلت عابد پر ایسی ہے جیسے میری فضیلت تم میں سے ادنیٰ آدمی پر۔ پھر حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ آیت تلاوت فرمائی:
إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ۔

بخاری نے صحیح میں حضرت ابو ہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے، جو کچھ میں جانتا ہوں اگر تم جانتے تو روتے زیادہ اور ہنستے کم۔

اس بیان سے ثابت ہوا کہ [illegible] جانے کے بعد [illegible] حقیقت [illegible] ہوتے ہیں ان کے [illegible] (تفسیر مظہری)

## علماء کی تین قسمیں

[illegible] علماء کی تین قسمیں ہیں: عالم باللہ و بامر اللہ، عالم باللہ [illegible] اور عالم بامر اللہ [illegible]

## [illegible] لوگوں سے مراد علم کیا ہے

حسن بصری نے اس آیت کی تفسیر میں فرمایا کہ عالم وہ شخص ہے جو [illegible] اللہ سے ڈرے اور جس چیز کی اللہ تعالیٰ نے ترغیب دی ہے اس [illegible] اور جو چیز اللہ کے غضب کی [illegible] ہے اس سے نفرت کرے۔

اور حضرت عبداللہ بن مسعود نے فرمایا: لَيْسَ الْعِلْمُ بِكَثْرَةِ الْحَدِيثِ

"ولکن العلم عن کثرة الخشیة" یعنی بہت سی احادیث یاد کر لینا، بہت باتیں کرنا کوئی علم نہیں بلکہ علم وہ ہے جس کے ساتھ اللہ کا خوف ہو۔"

حاصل یہ ہے کہ جس قدر کسی میں خدائے تعالیٰ کا خوف ہے وہ اسی قدر عالم ہے۔ اور احمد بن صالح مصری نے فرمایا: "خشیۃ اللہ کو کثرت روایت اور کثرت معلومات سے نہیں پہچانا جا سکتا بلکہ اس کو کتاب و سنت کے اتباع سے پہچانا جاتا ہے۔ (ابن کثیر)

شیخ شہاب الدین سہروردی نے فرمایا کہ اس آیت میں اشارہ پایا جاتا ہے کہ جس شخص میں خشیت نہ ہو وہ عالم نہیں (مظہری) اس کی تصریح ائمہ سلف کے اقوال سے بھی ہوتی ہے۔

حضرت ربیع بن انس نے فرمایا:

من لم یخش اللہ فلیس بعالم "یعنی جو خدا سے نہ ڈرے وہ عالم نہیں۔"

اور مجاہد نے فرمایا:

انما العالم من خشی اللہ "یعنی عالم صرف وہی ہے جو اللہ سے ڈرے۔"

سعد بن ابراہیم سے کسی نے پوچھا کہ مدینہ میں سب سے زیادہ فقیہ کون ہے؟ تو فرمایا اتقاھم لربہ "یعنی جو اپنے رب سے سب سے زیادہ ڈرنے والا ہو۔"

## ایک شبہ کا ازالہ:

مذکورہ تصریحات سے یہ شبہ کیا جا سکتا ہے کہ بہت سے علماء کو دیکھا جاتا ہے کہ ان میں خدا کا خوف و خشیت نہیں، کیونکہ تصریحات بالا سے معلوم ہوا کہ اللہ کے نزدیک صرف عربی جاننے کا نام علم اور جاننے والے کا نام عالم نہیں، جس میں خشیت نہ ہو وہ قرآن کی اصطلاح میں عالم ہی نہیں۔ البتہ خشیت کبھی صرف اعتقادی اور عقلی ہوتی ہے، جس کی وجہ سے آدمی اپنے اختیار سے شریعت کا پابند ہوتا ہے اور کبھی یہ خشیت حالی اور ملکہ راسخہ کے درجہ میں ہوتی ہے جس میں اتباع شریعت گویا مقتضائے طبیعت بن جاتا ہے۔ خشیت کا پہلا درجہ ماموربہ اور عالم کیلئے ضروری ہے، دوسرا درجہ افضل و اعلیٰ ہے ضروری نہیں۔ (از بیان القرآن) (حضرت تھانوی)

## علم کا مقصود:

کسی نے کیا اچھا کہا ہے

[illegible]

علم دین سے مقصود تزکیہ نفس اور اصلاح عمل ہے ورنہ کچھ نہیں۔ جیسے فن طب سے مقصود جسمانی صحت کی حفاظت ہے محض دواؤں کے نام اور ان کے خواص یاد کر لینا مقصود نہیں، یہ ممکن ہے کہ اس فن میں کوئی شراب ... چھا کو

خشیت ہو، اسی طرح یہ ممکن ہے کہ کوئی حقیقتاً علم دین کا ایک حرف بھی نہ جانتا ہو لیکن اس کا دل خشیت اور نیکی سے لبریز ہو۔ ظاہر ہے کہ خدا کے خوف کی حقیقت جس کے دل میں گھر کر گیا ہو وہ محض باتیں جانے اور ایسی تقریر کر سکنے سے اللہ کے نزدیک عالم نہیں ہو جاتا، اگر واقعی کسی کے دل میں خشیت اور خوف خدا داخل ہو تو معاصی پر جرأت نہ کرتا۔ حدیث شریف میں ہے: اللھم انی اسئلک من خشیتک ما تحول بہ بینی و بین معصیتک

معلوم ہوا کہ خشیت اس خوف کو کہتے ہیں جس سے بندہ اور معصیت کے درمیان حیلولت واقع ہو جائے۔ [illegible]

## طلب علم کی فضیلت:

جیسے کہ مسند احمد کی حدیث میں ہے کہ ایک شخص مدینہ سے دمشق میں حضرت ابو درداءؓ کے پاس گیا جبکہ آپ سے ملاقات کر رہے تو آپ نے دریافت فرمایا کہ پیارے بھائی کہاں سے آئے؟ جواب دیا کہ اس حدیث کو سننے کے لئے آیا ہوں جو آپ بیان کیا کرتے ہیں۔ آپ نے پوچھا کیا کسی تجارت کی غرض سے نہیں آئے؟ جواب دیا نہیں۔ پوچھا کوئی اور مطلب بھی ہو گا؟ فرمایا کوئی مقصد نہیں، پوچھا کیا حدیث کی طلب کیلئے ہی آیا ہے؟ جواب دیا کہ ہاں۔ فرمایا سنو! میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا ہے جو شخص علم کی تلاش میں کسی راستے کو طے کرے اللہ تعالیٰ اسے جنت کے راستے میں چلاتا ہے اور خدا کی رحمت کے فرشتے طالب علموں کیلئے اپنے پر بچھا دیتے ہیں کیونکہ وہ ان سے بہت ہی خوش ہیں اور ان کی خوشی کے خواہاں ہیں اور عالم کیلئے آسمان و زمین کی ہر چیز استغفار کرتی ہے یہاں تک کہ پانی کی مچھلیاں بھی۔ عابد پر عالم کی فضیلت ایسی ہے جیسی چاند کی فضیلت تاروں پر۔ علماء نبیوں کے وارث ہیں، انبیاء علیہم السلام نے اپنے ورثے میں درہم و دینار نہیں چھوڑے ان کا ورثہ علم ہے جس نے اسے لیا اس نے بڑی دولت حاصل کر لی۔ (ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ وغیرہ)

| |
|---|
| إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا |
| بے شک جو لوگ پڑھتے ہیں کتاب اللہ کی اور سیدھی کرتے ہیں |
| الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً |
| نماز اور خرچ کرتے ہیں کچھ ہمارا دیا ہوا چھپے اور کھلے |
| يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ |
| امید رکھتے ہیں ایک تجارت کی جس میں ٹوٹا نہ ہو |

## ایسی تجارت جس میں نفع ہی نفع ہے:

یعنی جو لوگ اللہ کی باتوں کو مانتے ہیں اس کی کتاب کی تلاوت سے

[illegible]

## قرب خداوندی کا ذریعہ

[illegible]

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ

[illegible]

إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ

[illegible]

## اللہ تعالیٰ قدردان ہے

[illegible]

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ

[illegible]

مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ

[illegible]

إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ

[illegible]

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا

[illegible]

مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ

[illegible]

مُقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ

[illegible]

ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ

[illegible]

[illegible] ہوں گے۔

[illegible] کا قول ہے کہ [illegible] قرآن [illegible] ہیں اور [illegible] بھی کرتے ہیں [illegible] رعایت بھی کرتے ہیں۔

[illegible] کی روایت سے بیان کیا [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا [illegible] ہو جائے گی [illegible] ان کی مغفرت کر دی جائے گی۔

[illegible] حضرت ابو سعید خدری [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] سب [illegible] کا قول [illegible] فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ [illegible] جنت [illegible]

[illegible] کی روایت سے بیان کیا [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] قیامت کے دن [illegible] اللہ [illegible] تم [illegible] بخش دیا [illegible]

[illegible] حضرت [illegible] کی روایت ہے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] تمہاری [illegible] مجھے [illegible]

[illegible] کے متعلق روایت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] جنت [illegible]

[illegible]

کثرت ہے یا یہ اشارہ ہے کہ ظلم گناہ اور معصیت کی وجہ سے اہل اصطفاء سے خارج نہیں ہوا بلکہ ایمان کی وجہ سے وہ قدر کا برگزیدہ ہے گو اس وجہ سے بے ادبی کا مستحق ہے جب تک ایمان ہے جنت کی دولت سے محروم نہیں۔ (معارف کاندھلوی)

حضرت شاہ ولی اللہ فرماتے ہیں کہ اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے امت مرحومہ کو تین گروہوں میں تقسیم فرمایا ہے جن میں پہلی گروہ سابقین اولین کا ہے اور وہ صدیقین اور شہداء اور صالحین کے ساتھ مخصوص تھا اور اس گروہ کو مقربین بھی کہا گیا ہے اور دوسرا گروہ اوسط اور میانہ رو ہے وہ اصحاب الیمین اور ۔۔۔ کے نام سے پکارا گیا ہے اور سب سے کم تیسرا گروہ ہے جو اپنی جان پر ظلم کرنے والا ہے وہ ایسا گروہ ہے جو یقین اور اعتقاد صحیح رکھتا ہے مگر اعمال میں اس سے کوتاہی واقع ہوتی ہے اور پا کر خرید ہی ۔۔۔ استغفار اور ندامت اس کا تدارک کرتا ہے اور مقتدر شد ہیلے ۔۔۔ ضروری ہے کہ وہ سابقین اور مقربین میں سے ہو۔ (ازالۃ الخفا)

## حدیث ابی الدرداءؓ

ابن جریر نے ابو ثابت سے نقل کی ہے کہ وہ ایک دن مسجد میں گئے تو وہاں ابو الدرداءؓ پہلے سے بیٹھے تھے ابو ثابت ان کے برابر جا کر بیٹھ گئے اور یہ دعا کرنے لگے اللّٰھم آنس وحشتی وارحم غربتی ویسّر لی جلیسا صالحا "یعنی یا اللہ میری تنہائی وحشت اور پریشانی کو دور فرما اور میری حالت مسافرت پر رحم فرما اور مجھے کوئی جلیس (ہمنشین) صالح نصیب فرما دے" (یہاں یہ بات یاد رکھنے کی ہے کہ سلف صالحین میں جلیس صالح کی طلب و تلاش کا کیا درجہ تھا کہ اس کو اہم مقصد اور سب پریشانیوں کا علاج سمجھ کر حق تعالیٰ سے اس کی دعائیں مانگتے تھے) ابو الدرداءؓ نے یہ دعا سن لی تو فرمایا کہ اگر آپ اپنی اس دعا میں مخلص ہیں۔ سچے ہیں تو میں اس معاملہ میں آپ سے زیادہ خوش نصیب ہوں (کہ مجھ سے آپ جیسا جلیس صالح بے مانگے مل گیا) اور فرمایا کہ میں آپ کو ایک حدیث سناتا ہوں جو میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سنی ہے مگر جب سے میں نے اس کو سنا اب تک کسی سے بیان کرنے کی نوبت نہیں آئی وہ یہ ہے کہ آپ نے اس آیت کا ذکر فرمایا ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ … فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ اور پھر فرمایا کہ ان تینوں قسموں میں سے جو سابق بالخیرات ہیں وہ تو بے حساب جنت میں چلے جائیں گے اور مقتصد یعنی درمیانہ رو ہیں ان سے ہلکا حساب لیا جائے گا اور ظالم لنفسہ کو اس مقام میں رنج و غم ہوگا۔ پھر ان کو بھی جنت میں داخلہ کا حکم دیا جائے گا اور سب رنج و غم دور ہو جائیں گے اسی کا ذکر اگلی آیت میں کیا ہے۔ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ یعنی وہ کہیں گے شکر ہے اللہ کا

جس سے ہمارا غم دور ہو گیا

| |
|---|
| جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ |
| باغ ہیں ہمیشہ رہنے کے جن میں وہ جائیں گے وہاں ان کو |
| فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ |
| گہنا پہنایا جائے گا کنگن سونے کے |
| وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ |
| اور موتی کے اور ان کی پوشاک وہاں ریشمی ہے |

## اہل جنت کے زیور

سونا اور ریشم مسلمان مردوں کیلئے دنیا میں حرام ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بہوئی (مرد) ریشم (یعنی) پہنے دنیا میں وہ آخرت میں نہ پہنے گا۔ (الحدیث)

حضرت ابو سعید خدریؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے آیت جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا کی تلاوت کی پھر فرمایا کہ ان کے سر پر تاج ہوں گے جن کا ایک ادنیٰ موتی مشرق سے مغرب تک (کی ہر چیز) کو روشن کر دینے کے لیے کافی ہو گا۔ اس حدیث کو حاکم اور بیہقی نے صحیح قرار دیا ہے۔

قرطبی نے تفسیر میں لکھا ہے کہ ہر جنتی ایسا ہو گا جس کے ہاتھ میں تین کنگن ہوں گے ایک سونے کا ایک چاندی کا اور ایک موتی کا۔

حضرت ابو ہریرہؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مومن کے (ہاتھوں میں) زیور وہاں تک پہنچے گا جہاں تک وضو کا پانی پہنچتا ہوگا۔ متفق علیہ۔

حضرت حذیفہؓ کا بیان ہے کہ میں نے خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا ہے ریشم اور دیباج نہ پہنو نہ سونے چاندی کے برتنوں میں پانی پیو اور نہ ان کی رکابیوں میں کھاؤ۔ یہ (کافروں) کیلئے دنیا میں ہیں اور تمہارے لیے آخرت میں۔ متفق علیہ۔

ابن ابی حاتم اور ابن ابی الدنیا نے حضرت کعبؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ اگر جنت کا کوئی زیور آج دنیا میں نکال دیا جائے تو سورج کی روشنی بھی ماند ہو جائے گی کسی کی نظر اس کو برداشت نہ کر سکے گی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ |
| اور کہیں گے شکر اللہ کا جس نے دور کیا ہم سے |
| عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُۨ |
| غم بیشک ہمارا رب معاف کرنے والا قدردان ہے |

یعنی دنیا کا اور محشر کا غم ہمارا گناہ بخشنے والا اور ہماری طاعت قبول کرنے والا ہے۔

## مہاجرین کی فضیلت:

حضرت صہیب رومی کہتے ہیں میں نے خود سنا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرما رہے تھے مہاجرین آگے بڑھ جانے والے شفاعت کرنے والے ہمارے اچھے سب سے بڑا کام کرنے والے ہوں گے قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں محمد کی جان ہے قیامت کے دن وہ اپنے کندھوں پر رکھے ہوئے آئیں گے اور جنت کا دروازہ کھٹکھٹائیں گے جنت کے دربان ان سے پوچھیں گے تم کون ہو وہ جواب دیں گے ہم مہاجر ہیں وہ پوچھیں گے کیا تمہارا حساب ہو چکا ہے مہاجر دو زانو بیٹھ کر ان کی طرف (زمین پر جھک کر) کہیں گے اور کس چیز کا ہم سے حساب ہوگا ہم تو عمر بھر مال اور عزیز چھوڑ کر (تیری) مرضی حاصل کرنے (کے لئے) خدا کی راہ میں پھرتے رہے یہاں تک کہ جس میں ہم مر گئے تو جنت کے دروازے کھول دیئے جائیں گے (اور جنت میں داخل ہو جائیں گے یہی مطلب ہے مہاجرین کے اس قول کا

**اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ**

**الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ** تک

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جنت کے اندر اپنے گھروں کو زیادہ جاننے والے ہوں گے بہ نسبت دنیوی گھروں کی شناخت کے۔

## کلمہ طیبہ کی فضیلت:

حضرت ابن عمر کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا لا الٰہ الا اللہ کہنے والوں کو نہ مرنے کے وقت وحشت ہوگی نہ قبروں کے اندر قبروں سے اٹھنے کے وقت گویا وہ منظر میرے سامنے ہے کہ وہ سروں سے مٹی جھاڑتے ہوئے کہہ رہے ہیں **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ** ۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا الحزن سے مراد ہے جہنم کا غم۔ (تفسیر مظہری)

## دنیا غموں کا گھر ہے:

در ایں دنیا کسے بے غم نباشد　　　وگر باشد بنی آدم نباشد

اس دنیا میں غموں اور فکروں سے کسی کو ایک لمحہ کو نجات نہیں، اسی لئے اہل اللہ اس دنیا کو دار الاحزان کہتے ہیں اس آیت میں جس غم کے دور کرنے کا ذکر ہے اس میں یہ دنیا کے غم بھی سب کے سب داخل ہیں، دوسرے غم آخرت قیامت اور حشر نشر، میزان حساب و کتاب کا، پھر آخر جہنم کے عذاب کا، اہل جنت سے اللہ تعالیٰ یہ سب غم دور فرما دیں گے۔ (معارف القرآن مفتی اعظم)

| |
|---|
| **الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ** |
| جس نے آ اتارا ہم کو آباد رہنے کے گھر میں اپنے فضل سے |
| **لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ** |
| نہ پہنچے ہم کو اس میں مشقت اور نہ پہنچے ہم کو اس میں تھکنا |

حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں، جب تک دنیا میں رہے کوئی پہلو پر تھا۔ جلی چلی جاتی تھی روزی کا غم اور دشمنوں کا ڈر، اور کبھی مشقت، وہاں پہنچ کر سب دور ہو گئے۔ (تفسیر عثمانی)

## جنت راحت کا گھر ہے:

بیہقی نے البعث میں اور ابن ابی حاتم نے بروایت نفیع بن حارث حضرت عبداللہ بن ابی اوفی کی روایت سے بیان کیا کہ ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (یعنی) نیند سے سکون ملتی ہے کیا جنت میں بھی نیند ہوگی فرمایا نیند تو موت کی بہن ہے اہل جنت کو موت کا ایک حصہ ہے اور جنت کے اندر موت نہیں ہوگی سائل نے عرض کیا پھر وہاں راحت کیسے ملے گی، حضور صلی اللہ علیہ وسلم یہ سن کر خوشی کی علامت ظاہر ہوئی فرمایا وہاں کسی طرح کی تھکان ہی نہیں ہوگی اہل جنت کی ہر چیز سراسر راحت ہی راحت ہوگی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| **وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى** |
| اور جو لوگ منکر ہیں ان کے لئے ہے آگ دوزخ کی نہ ان پر حکم پہنچے |
| **عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ** |
| کہ مر جائیں اور نہ ان پر ہلکی ہو وہاں |
| **عَذَابِهَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ** |
| اس کی مار بھی، یہ سزا دیتے ہیں ہم ہر ناشکر کو |

## کفار کو دائمی عذاب ہوگا:

نہ کفار کو جہنم میں موت آئے گی کہ اسی سے عذاب ختم ہو جائے اور نہ عذاب میں تخفیف کسی وقت بھی ہوگی ایسے ناشکروں کی ہمیشہ یہی سزا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

## موت کی موت:

شیخین نے صحیحین میں حضرت ابن عمر کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب جنتی جنت کو چلے جائیں گے اور دوزخی دوزخ کو تو پھر موت کو لا کر جنت اور دوزخ کے درمیان ذبح کر دیا جائے گا اور منادی ندا دے گا اے اہل جنت (ہمیشہ) موت نہیں اے دوزخ والو (ہمیشہ) موت نہیں یہ سن کر جنتیوں کی مسرت بڑھ جائے گی اور دوزخیوں کا غم بڑھ جائے گا۔

**وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ** یعنی پل بھر کے لئے بھی عذاب جہنم میں کمی نہیں کی جائے گی بلکہ جب دوزخیوں کی کھالیں پک جائیں گی تو دوسری کھالیں بدل دی جائیں گی اور جب آگ بجھنے لگے گی تو اور بھڑکا دی جائے گی۔ (تفسیر مظہری)

[illegible]

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا

[illegible]

نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ

[illegible]

أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ

[illegible]

النَّذِيرُ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ

[illegible]

## کوئی عذر کام نہ دے گا

[illegible]

[illegible]

## گناہ چھوڑنے کی ترغیب

[illegible]

إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

[illegible]

إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

[illegible]

## اللہ تعالیٰ غیب دان ہیں

[illegible]

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ

[illegible]

[illegible]

فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ

[illegible]

| |
|---|
| كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا |
| [illegible] |
| يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ |
| [illegible] |

### تمہاری ناشکری سے اللہ کو کوئی نقصان نہیں ہوتا

یعنی کفر و ناشکری اور اللہ کی آیات کے انکار سے اس کا کچھ نقصان نہیں [illegible] شکر سے مستغنی ہیں البتہ ناشکری کرنے والے پر اس کے عمل کا وبال پڑتا ہے [illegible] اللہ کی طرف سے [illegible] جاتے [illegible] (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ |
| تو کہہ بھلا دیکھو تو اپنے شریکوں کو جن کو پکارتے ہو |
| دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ |
| [illegible] |
| الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ |
| زمین میں یا کچھ ان کا ساجھا ہے آسمانوں میں |

### عقل سے کام لو

یعنی اپنے معبودوں کے حال میں غور کر کے مجھے [illegible] انہوں نے [illegible] اگر [illegible] (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِنْهُ |
| [illegible] |

کوئی دلیل لاؤ [illegible] (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ |
| کوئی نہیں پر جو وعدہ بتلاتے ہیں گنہگار ایک دوسرے کو |
| بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾ |
| سب فریب ہے |

### شیطان کے دھوکے [illegible]

یعنی [illegible]

[illegible] هٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ [illegible] (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ |
| [illegible] |
| أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا |
| [illegible] |
| مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ |
| [illegible] |

### کائنات کا بانی جب چاہے اسے توڑ بھی سکتا ہے۔

[illegible] (تفسیر حقانی)

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ [illegible]

روایت [illegible] (تفسیر عزیزی [illegible])

[illegible] روح المعانی [illegible]

[illegible]

آفتاب کو بھی [illegible]

[illegible]

إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

**اللہ تعالیٰ کی بردباری اور بخشش:**

[illegible]

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن

جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ

إِحْدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ

إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾ اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ

السَّيِّئِ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ

مشرکین کی فریب کاریاں: [illegible]

[illegible]

فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ

اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿٤٣﴾

**قریش پر دوسرا الٰہی قانون [illegible]**

[illegible]

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ

عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ

وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾

**اللہ کی گرفت سے کوئی نہیں بچ سکتا**

[illegible]

آیت میں مذکورہ اوصاف سے واضح ہو گیا کہ کافروں کی حرکات دھوکہ کا انجام مقررہ ضابطہ ہے اور یہ ضابطہ ناقابل تغیر ہے کہ ضابطے کے مطابق گذشتہ کافروں کا جو انجام ہوا وہی انجام ہو گا سے خوف زدہ تھے کافروں کی حالت اس کو فائدہ نہ پہنچا سکی۔ (تفسیر مظہری)

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا

اور اگر اللہ لوگوں کو ان کے اعمال کی وجہ سے پکڑنے لگتا

مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ

تو زمین کی سطح پر ایک جاندار کو بھی نہ چھوڑتا (۴۵)

حکمت الٰہی یعنی اللہ جو گناہوں کو دیکھتے ہیں اگر ان میں سے ہر جرم کی پاداش شروع کر دے تو دل جاندار زمین میں باقی نہ رہے۔ اللہ اپنی نافرمانی کی وجہ سے ہوا روک دیے جائیں۔ ہر کافر کو اس کی سزا دی جائے تو زمین پر بہت تھوڑے رہ جائیں قلت کی وجہ سے ہلاک ہو جائیں۔ کیونکہ تمام جانداروں کو انسانوں کے اعمال پر قائم کیا گیا ہے۔ انسانوں کی وجہ سے جانداروں کا جہاں بنتے رہنا خلاف حکمت ہے۔ پھر جب انسان ہی نہ رہے تو حیوانات کا ہے کے لئے رکھے جائیں گے۔ ان کا وجود تمام عالم کی بقا انسان ہی کی خاطر ہے۔ (تفسیر عثمانی)

(یعنی قیامت) تک ان کو مہلت دیئے ہوئے ہے جاندار جو زمین پر چلتے ہیں بغیر کسی گناہ کے تنقیص کو نہیں چھوڑتا۔ یہ مطلب ہے کہ کافروں کی برائیوں کی شامت سے بارش نہ ہوتی اور اللہ سب کو ہلاک کر دیتا اور کسی کے لئے رزق نہ ہوتا۔ (تفسیر مظہری)

وَلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ

لیکن اللہ ان کو ایک مقررہ مدت تک مہلت دیتا ہے پھر جب

اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا

ان کی وہ مدت آ پہنچے گی تو اللہ اپنے بندوں کو آپ دیکھ لے گا ☆

## وقت آنے پر سب کو پتہ لگ جائے گا:

یعنی ایک مقررہ میعاد تک جس کا علم اللہ ہی کو ہے ڈھیل دی گئی ہے کہ ہر ایک جرم کی فوراً گرفت نہیں کرتا۔ جب وقت مقرر آ جائے گا تو وہ سب بندے اس کی نگاہ میں ہیں۔ کسی کا کوئی ذرہ برابر عمل اس کے علم سے باہر نہیں۔ ہر ایک کو اپنے طریقے کے موافق ٹھیک ٹھیک فیصلہ فرما دے گا۔ نہ مجرم چھوٹ سکے گا نہ مطیع کا حق مارا جائے گا "اللهم اجعلنا ممن يعفيك واغفرلنا ذنوبنا انك انت الغفور الرحيم" تم سورة "فاطر" بفضل الله ورحمته۔ (تفسیر عثمانی)

# سورة يٰس

جس شخص نے اس کو ثواب کی نیت سے پڑھا اس کی مغفرت کی جائے گی
(رواہ البیہقی)

## سبب نزول:

شیخ ابونعیم نے دلائل میں روایت کیا ہے کہ حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مسجد (کعبہ) میں اونچی آواز سے قرأت کر رہے تھے قریش کے کچھ لوگوں کو اس سے تکلیف ہوئی (ایک روز) حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر حملہ کرنے کیلئے دوڑے اٹھے لیکن فوراً گردنوں سے ان کے ہاتھ بندھ گئے اور آنکھوں سے اندھے ہو گئے کچھ دکھائی نہیں دیتا تھا مجبور ہو کر خدمت گرامی میں حاضر ہوئے اور اللہ کا اور قرابت کا واسطہ دے کر دعا کرنے کی درخواست کی، قریش کی کوئی شاخ ایسی نہ تھی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی قرابتداری اس سے نہ ہو چنانچہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے دعا کی اور وہ مصیبت دور ہو گئی ان لوگوں کے متعلق سے ابتدائی آیات نازل ہوئیں۔

## سورۂ یٰسین کے فضائل:

حضرت ابوبکرؓ کی ایک روایت میں آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا سورۂ یٰسین کو توریت میں معمہ کہا گیا ہے کیونکہ یہ پڑھنے والے کو دنیا و آخرت کی بھلائی عطا کرتی اور دنیا و آخرت کے خوف و ہراس دور کرتی ہے اور اس کو دافعہ اور قاضیہ بھی کہا جاتا ہے کیونکہ یہ پڑھنے والے سے ہر برائی دور کرتی اور اس کی ہر ضرورت پوری کرتی ہے جو اس کو پڑھے گا اس کو بیس حج کے برابر ثواب ملے گا جو اس کو سنے گا اس کو اتنا ثواب ملے گا جتنا راہ خدا میں ہزار دینار صدقہ کرنے کا ثواب ملے گا جو اس کو لکھ کر پیئے گا اس کے سینے میں ہزار دوائیں ہزار نور، ہزار یقین، ہزار برکتیں اور ہزار رحمتیں داخل کر دی جائیں گی اور ہر کینہ اور مرض اس کے سینہ سے نکال دیئے جائیں گے۔ یہ بھی حضرت ابوبکرؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص جمعہ کے دن ماں باپ کی قبروں پر یا دونوں میں سے ایک کی قبر پر جا کر سورۂ یٰسین پڑھے گا تو اس سورت کے حروف کی تعداد کے برابر اس کے گناہ معاف کر دیئے جائیں گے۔

حدیث میں ہے جو شخص رات کو سورۂ یٰسین پڑھے صبح کو بخشا ہوا اٹھے گا اور جو سورۂ دخان پڑھے اس کی بھی بخشش ہو جائے گی۔ (رواہ ابن کثیر)

بعض علماء کرام رحمہم اللہ کا قول ہے کہ جس وقت مشکل کے وقت سورۂ یٰسین پڑھی جاتی ہے اللہ تعالیٰ آسانی فرما دیتے ہیں مراد حاصل ہوتی ہے

کہ جاں کنی کے وقت جب اس کی تلاوت ہوتی ہے تو رحمت و برکت نازل ہوتی ہے اور روح آسانی سے نکلتی ہے۔ واللہ اعلم۔ مشائخ نے بھی فرمایا ہے کہ ایسے وقت سورۂ یٰسٓ پڑھنے سے اللہ تعالیٰ تخفیف کرتا ہے اور آسانی ہوتی ہے۔ [illegible] رسول صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] ہے کہ میری چاہت ہے کہ میری [illegible]

[illegible]

حضرت معقل بن یسار سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یٰسٓ قلب القرآن، یعنی سورۂ یٰسٓ قرآن کا دل ہے۔ اور اس حدیث کے بعض الفاظ میں ہے کہ جو شخص سورۂ یٰسٓ [illegible] آخرت کیلئے پڑھتا ہے اس کی مغفرت ہو جاتی ہے، [illegible]

[illegible]

امام غزالی نے فرمایا کہ سورۂ یٰسٓ کو قلب قرآن [illegible] کہ اس سورت میں قیامت اور حشر کے مضامین خاص تفصیل اور بلاغت کے ساتھ آئے ہیں اور اصول ایمان میں سے عقیدۂ آخرت وہ چیز ہے جس پر انسان کے اعمال کی صحت موقوف ہے۔ خوف آخرت ہی انسان کو عمل صالح کیلئے مستعد کرتا ہے اور وہی اس کو ناجائز خواہشات اور حرام سے روکتا ہے۔ تو جس طرح بدن کی صحت قلب کی صحت پر موقوف ہے اسی طرح ایمان کی صحت فکر آخرت پر موقوف ہے (روح) اور اس سورۃ کا نام جیسے سورۂ یٰسٓ معروف ہے اسی طرح ایک حدیث میں اس کا نام عظیمہ بھی آیا ہے [illegible] اور ایک حدیث میں ہے کہ اس سورۃ کا نام [illegible] ہے، یعنی اپنے پڑھنے والے کیلئے دنیا و آخرت کی خیرات و برکات عام کرنے والی اور اس کے پڑھنے والے [illegible] ہے اور [illegible] قیامت [illegible] شفاعت قبول [illegible] لوگوں سے زیادہ [illegible]

[illegible]

اور حضرت [illegible] ہے کہ جس مرنے والے کے پاس سورۂ یٰسٓ پڑھی جائے [illegible]

اور حضرت عبداللہ بن زبیر نے فرمایا کہ جو شخص سورۂ یٰسٓ کو اپنی حاجت کے آگے پڑھے تو اس کی حاجت پوری ہو جاتی ہے۔

اور یحییٰ بن کثیر نے فرمایا کہ جو شخص صبح کے وقت سورۂ یٰسٓ پڑھ لے وہ شام تک خوشی اور آرام سے رہے گا اور جو شام کو پڑھ لے تو صبح تک خوشی میں رہے گا اور فرمایا کہ مجھے یہ بات ایسے شخص نے بتلائی ہے جس نے اس کا تجربہ کیا ہے [illegible]

حضرت ابن مسعود سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص رات کو سورۂ یٰسٓ پڑھے گا صبح ہو گی تو اس کی مغفرت ہو چکی ہو گی۔ [illegible]

حضرت ابوہریرہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible]

حضرت معقل بن یسار سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص اللہ کی رضامندی حاصل کرنے کیلئے یٰسٓ پڑھے گا اس کے گناہ معاف کر دیئے جائیں گے [illegible] اپنے مرنے والوں کے پاس اس کو پڑھا کرو [illegible]

طبرانی [illegible] حضرت انس کی روایت سے بیان کیا ہے کہ جو شخص ہر رات یٰسٓ پڑھنے کی پابندی کرے گا پھر مرے گا تو شہید مرے گا۔

دارمی [illegible] حضرت [illegible] روایت سے بیان کیا [illegible] جو شخص [illegible] یٰسٓ پڑھے گا [illegible]

[illegible] ابن حبان [illegible] بیان کیا ہے [illegible]

[illegible]

[illegible] حضرت [illegible] روایت سے بیان کیا ہے [illegible] یٰسٓ [illegible] حاجت [illegible] پوری کر دی جائے [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] یٰسٓ [illegible]

[illegible]

حضرت [illegible] اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

یٰسٓ کی [illegible]

[illegible]

[illegible]

قرآن کریم کی [illegible] سلام علیٰ آل یاسین [illegible]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

[illegible]

يٰسٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ اِنَّكَ لَمِنَ

[illegible]

الْمُرْسَلِيْنَ ۙ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ؕ

[illegible]

## انکار قرآن کی گواہی

[illegible]

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی خصوصیت

[illegible]

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ

[illegible]

## اللہ تعالیٰ زبردست بھی ہے مہربان بھی

[illegible]

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ

[illegible]

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ

[illegible]

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ذمہ بہت مشکل کام لگایا گیا ہے

[illegible]

[illegible] لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ [illegible]

[illegible] يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ [illegible]

[illegible] وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ [illegible]

[illegible] وَنُقَلِّبُ اَفْئِدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ

[illegible] وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْۤ اُمَمٍ [illegible]

[illegible] حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ [illegible]

فائدہ: [illegible] كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ [illegible] قول
فی تفسیر (الاعراف) [illegible] آیات سے معلوم ہوا کہ لفظ حتی معروف
ان لوگوں پر صادق آتا ہے جو موت کے بعد کی دوسری زندگی کا یقین ہی
نہیں رکھتے [illegible] کو ہی [illegible] سمجھتے ہیں، بلکہ خواہ [illegible] سے ملا ہو [illegible]
نیکی اور [illegible] کو بہت تصور کر لیتے ہیں [illegible]
کھلے کھلے نشان دکھلائے سب کو جھٹلاتے رہے اور فضول کج بحثی نکالتے رہتے
بہرحال ان پیغمبروں کی بات کی طرف کان بھی نہیں دھرا [illegible] ایک طرف کھڑے
کی کوشش نہ کرتے [illegible] نقل سے [illegible] لیکن نہ
آنکھوں سے [illegible] اعراض و انکار کے نتیجہ میں آخرکار رشد و ہدایت
[illegible] محروم [illegible] کی [illegible] گنجائش نہیں رہتی [illegible] کوئی
شخص اپنے [illegible] کے سبب [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] سے
[illegible] دشمنی [illegible]
[illegible] کے
[illegible] بتاتے فرماتے ہیں۔ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ

وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۚ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ (الاعراف)

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا
كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ
الْمُعْتَدِيْنَ (یونس) وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ۞ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ
الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ (الروم)
الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ
(المؤمن) وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ (محمد)
(النساء) بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا
(التوبۃ) وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ (المطففین) كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى
سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۭ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ
(الاعراف) وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ڮ لَهُمْ قُلُوْبٌ

لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ
بِهَا ۭ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ (الاعراف)

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ
وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ۭ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ
تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ
(المائدہ)

[illegible] حضرت اسماعیل کے بعد مکہ میں کوئی پیغمبر مبعوث
نہیں ہوا کہ ان کو پیغمبر کی ضرورت بہت زیادہ تھی اس لیے فرمایا کہ ان لوگوں
کے باپ دادا کے پاس کوئی پیغمبر نہیں بھیجا گیا (جس سے پیغمبر کی ضرورت
تھی اس لیے) آپ کو ان کے [illegible] پیغمبر بنا کر بھیجا گیا [illegible]:

| |
|---|
| اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ |
| ہم نے ڈال دیے ہیں ان کی گردنوں میں طوق [illegible] |
| اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۞ |
| ٹھوڑیوں تک، پھر ان کے سر اُلل رہے ہیں (۸) |

## سرمایہ پرستی و جہالت کے طوق

یعنی ان لوگوں کے حق میں [illegible] گزشتہ تالمین کی جاہلانہ عادات
رسم جب جاہلیہ اور تقلید آباء و اجداد کے تھے جنہوں نے ان سے گلے میں
[illegible] طوق [illegible] ان کے سر [illegible] (تفسیر حقانی)
سبب نزول: ابن جریر نے عکرمہ سے روایت کی ہے کہ ابوجہل نے کہا تھا کہ
میں نے محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو دیکھ پایا تو ایسا کروں گا اس پر یہ آیت
ابوجہل کے حق میں لا یبصرون تک نازل ہوئی۔ چنانچہ لوگ ابوجہل سے
کہتے تھے [illegible] (یہ تم جو کہتے تھے وہ کرو) تو ابوجہل کہتا تو
کہاں ہیں مجھے تو دکھائی نہیں دیتے۔

[illegible] نے لکھا ہے اس آیت کا نزول ابوجہل اور اس کے ایک قریشی
ساتھی کے حق میں ہوا [illegible] ابوجہل نے قسم کھائی تھی کہ میں نے جہاں بھی محمد صلی
اللہ علیہ وسلم کو دیکھ پایا تو پتھر سے ان کا سر [illegible] رسول اللہ صلی اللہ
علیہ وسلم کو نماز کی حالت میں اس نے دیکھ لیا اس کے ہاتھ میں پتھر بھی تھا
[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے سر پر مارنے کے لیے پتھر اٹھایا
[illegible] ہاتھ گردن سے چمٹ گیا اور پتھر [illegible] ابوجہل [illegible]
ساتھیوں کے پاس لوٹ کر آیا [illegible]
[illegible] اس پتھر سے محمد صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]
[illegible] پتھر [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف چلا آپ

[illegible]

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ

أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

[illegible]

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ

بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ

[illegible]

وَجَعَلْنَا مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ

فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

[illegible]

**إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتَىٰ**

[illegible]

### ہم مردوں کو زندہ کرتے ہیں

[illegible]

**وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ**

[illegible]

### سب عمل محفوظ ہیں

[illegible]

**وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ**

[illegible]

[illegible]

**وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ**

اور بیان کر دیجئے ان کے لئے ایک مثال اس گاؤں کے رہنے والوں کی

### انطاکیہ والوں کا قصہ:

[illegible]

### حضرت عیسیٰ کا دو قاصدوں کو روانہ کرنا:

[illegible]

### انطاکیہ کا بادشاہ:

[illegible]

[illegible]

### قاصدوں کا قید ہونا اور کوڑوں کی سزا پانا:

[illegible]

### شمعون کا مدد کیلئے جانا

[illegible]

### شمعون کی قیدیوں کے بارے میں بادشاہ سے گفتگو

[illegible]

### بادشاہ کے سامنے قیدیوں کے بیانات

[illegible]

### اندھے کا بینا ہونا:

[illegible]

دونوں سے کہا کہ یہ دیکھ کر بادشاہ کو (بڑا) تعجب ہوا۔

**حقیقت کا اعتراف:**

شمعون نے بادشاہ سے کہا اگر آپ اپنے معبود سے درخواست کریں اور وہ بھی ایسا ہی کر دے تو آپ کو برتری حاصل ہو جائے گی بادشاہ نے کہا تم سے کچھ چھپی بات نہیں حقیقت یہ ہے کہ ہمارا معبود جس کی ہم پوجا کرتے ہیں نہ سنتا ہے نہ دیکھتا ہے نہ نقصان پہنچا سکتا ہے نہ نفع دے سکتا ہے (وہ کچھ نہیں کر سکتا) شمعون کا قاعدہ یہ تھا کہ بادشاہ جب بتوں کی پوجا کرنے جاتا تو شمعون بھی جاتا تھا اور (اللہ کے سامنے) گڑگڑاتا تھا لوگ سمجھتے تھے کہ یہ انہی سے بت پرست ہے۔

**مردہ کا زندہ ہونا:**

اس کے بعد بادشاہ نے دونوں حواریوں سے کہا اگر تمہارا خدا جس کی تم پوجا کرتے ہو مردہ کو زندہ کر سکے تو ہم اس کو مان لیں گے دونوں حواریوں نے کہا ہمارا معبود ہر چیز کی قدرت رکھتا ہے بادشاہ نے کہا ایک زمیندار کا بچہ سات روز ہوئے مر گیا تھا اس کا باپ موجود تھا ہم نے اس کے باپ کے آنے تک اس کو دفن کرنے سے روک دیا تھا (اس کو تمہارا خدا زندہ کر دے تو مانیں) حسب الحکم لوگ میت کو لے آئے جو بہت بگڑ چکی اور شکل و صورت متغیر ہو گئی تھی دونوں حواری اللہ سے علانیہ دعا کرنے لگے اور شمعون چپکے چپکے خدا سے دعا مانگتا رہا غرض کچھ دیر کے بعد مردہ اٹھ بیٹھا۔

**مردہ کے بیانات:**

مردے نے کہا سات روز ہوئے شرک کی حالت میں مرا تھا مجھے آگ کی سات وادیوں میں لے جایا گیا میں تم کو اس شرک سے ڈراتا ہوں جس میں تم مبتلا ہو اللہ پر ایمان لے آؤ پھر اس نے کہا آسمان کے دروازے کھلے مجھے نظر آیا کہ ایک خوبصورت جوان کو دیکھا جو ان تینوں کی سفارش کر رہا تھا بادشاہ نے کہا تین کون ہیں مردے نے کہا شمعون اور یہ دونوں بادشاہ کو یہ سن کر اور دیکھ کر تعجب ہوا شمعون نے جب دیکھ لیا کہ اس کی بات بادشاہ پر اثر کر گئی ہے تو بادشاہ سے کہا آپ ان دونوں شخصوں سے سوال کریں کہ وہ آپ کی لڑکی کو زندہ کر دیں۔

**شہزادی کا زندہ ہونا:**

بادشاہ نے دونوں حواریوں سے اپنی لڑکی کو زندہ کر دینے کی درخواست کی فوراً دونوں نماز پڑھنے کھڑے ہو گئے اور اللہ سے دعا کی شمعون بھی دعا میں ان کے ساتھ شریک تھے مگر چپکے چپکے دعا کر رہے تھے تھوڑی دیر کے بعد اللہ نے اس عورت کو زندہ کر دیا قبر کھل گئی وہ عورت اس سے نکل آئی اور کہا خوب جان لو کہ یہ دونوں سچے ہیں اور میرا خیال ہے کہ تم ایمان نہیں لاؤ گے پھر اس نے دونوں حواریوں سے درخواست کی کہ وہ اس کو اس کی جگہ واپس کر دیں پھر اس نے اپنے سر پر کچھ مٹی ڈالی اور قبر میں واپس چلی گئی۔

**بادشاہ کی بدبختی:**

ابن اسحاق نے بحوالہ کعب و وہب بیان کیا ہے کہ بادشاہ ایمان نہیں لایا اور قوم کے اتفاق رائے سے اس نے قاصدوں کو قتل کرنے کا پختہ ارادہ کر لیا یہ خبر جب حبیب کو ملی جو اس وقت شہر کے آخری دروازہ پر تھا تو وہ دوڑ کر شہر والوں کے پاس پہنچا ان کو نصیحت کی اور قاصدوں کا کہنا ماننے کی دعوت دی اور یہی مطلب ہے اللہ کے اس قول کا۔ (تفسیر مظہری)

**بستی کی تعیین کوئی ضروری نہیں:**

سیدی حضرت حکیم الامت نے بیان القرآن میں لکھا ہے کہ آیات قرآن کا مضمون سمجھنے کیلئے اس بستی کی تعیین ضروری نہیں اور قرآن کریم نے اس کو مبہم رکھا ہے تو ضرورت کیا ہے کہ اس کی تعیین پر اتنا زور خرچ کیا جائے سلف صالحین کا یہ ارشاد کہ ابہموا ما ابہمہ اللہ یعنی جس چیز کو اللہ نے مبہم رکھا ہے تم بھی اسے مبہم رہنے دو اس کا مقتضی یہی ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

| إِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُونَ |
| --- |
| جب کہ آئے اس بستی میں بھیجے ہوئے |

ان کے رسولوں کی بھی تعیین نہیں کی ہو سکتی ہے کہ یہ براہ راست اللہ تعالیٰ کے بھیجے ہوئے پیغمبر تھے یا کسی پیغمبر کے واسطے حکم ہوا ہو کہ اس کے نائب ہو کر فلاں بستی کی طرف جاؤ دونوں احتمال ہیں گو متبادر یہی ہے کہ پیغمبر ہوں شاید حضرت مسیح علیہ السلام سے پہلے مبعوث ہوئے ہوں گے۔ (تفسیر عثمانی)

**یہ تینوں قاصد تھے پیغمبر نہیں تھے:**

حضرت قتادہ سے یہ منقول ہے کہ یہاں لفظ مرسلون اپنے اصطلاحی معنی میں نہیں بلکہ قاصد کے معنی میں ہے اور یہ تین بزرگ جو اس قریہ کی طرف بھیجے گئے خود پیغمبر نہیں تھے بلکہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے حواریوں میں سے تھے انہی کے حکم سے یہ اس قریہ کی ہدایت کے لئے بھیجے گئے تھے (ابن کثیر) اور چونکہ ان کے بھیجنے والے حضرت عیسیٰ علیہ السلام اللہ کے رسول تھے ان کا بھیجنا بھی بالواسطہ حق تعالیٰ ہی کا بھیجنا تھا۔ (معارف مفتی اعظم)

| إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا |
| --- |
| جب بھیجے ہم نے ان کی طرف دو تو ان کو جھٹلایا |
| فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا إِنَّآ إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ |
| پھر ہم نے قوت دی تیسرے سے تب کہا انہوں نے ہم تمہاری طرف بھیجے ہوئے آئے ہیں |

**قاصدوں کی دعوت:**

یعنی پہلے دو گئے پھر ان کی تائید کیلئے تیسرا بھیجا گیا تینوں نے مل کر کہا کہ

ہم تو نہیں آئے اللہ کے بھیجے ہوئے آئے ہیں جناب ہم کو ہم کبھی اس کا پیغام کہو۔ (تفسیر عثمانی)

**تینوں قاصدوں کے نام:**

عبدالرزاق، عبد بن حمید، ابن جریر، ابن منذر اور ابن ابی حاتم نے قتادہ کا بیان نقل کیا ہے۔ قتادہ نے کہا مجھے یہ روایت پہنچی ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے اہل قریہ کے پاس دو حواریوں کو بھیجا تو کعب نے کہا پہلے دو قاصد صادق اور صدوق تھے اور تیسرا قاصد شمعون تھا۔ (تفسیر مظہری)

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ

وہ کہنے لگے تم تو یہی آدمی ہو جیسے ہم اور رحمٰن نے

الرَّحْمَٰنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ

کچھ نہیں اتارا تم سب جھوٹ کہتے ہو

**بستی والوں کا جواب:**

یعنی ہم میں اور تم میں فرق ہی کیا ہے جو خدا تمہیں بھیجتا ہم کو نہ بھیجتا۔ بات یہ ہے کہ رحمٰن نے کوئی کلام وغیرہ نہیں اتارا، تم نے جھوٹ ایک بات بنا لی ہے اور خواہ مخواہ ایک بات بنا کر خدا کی طرف نسبت کر دیا۔ (تفسیر عثمانی)

قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ

بولے ہمارا رب جانتا ہے کہ ہم بیشک تمہاری طرف بھیجے گئے ہیں

**قاصدوں کے سچا ہونے کی دلیل:**

یعنی اگر ہم خدا پر جھوٹ لگاتے ہیں تو وہ خود بتا دے گا اور اپنے فعل سے ہمارے جھوٹوں کی تصدیق نہ کرتا رہے گا۔ ایسا نہیں ہو سکتا۔ اب تم سمجھو یا نہ سمجھو، اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے کہ ہم اپنے دعوے میں سچے ہیں اور کوئی بات اپنی طرف سے نہیں کہہ رہے۔ اسی لئے مسلسل ہماری تصدیق کر رہا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

مسئلہ: رسولوں نے اللہ کے علم سے استشہاد کیا جو قسم کے قائم مقام ہے (یعنی انہوں نے اللہ کی قسم کھا کر کہا اس لئے) اور قسم کا مسلک ہے۔ جس نے دانستہ جھوٹ بولا اور جانتے ہوئے کہا اللہ جانتا ہے کہ میں نے یہ کام کیا اور واقع میں وہ کاذب ہو تو اس پر یمین غموس کی جائے گی (اور گذشتہ واقعہ پر جھوٹی قسم کو یمین غموس کہتے ہیں)۔ (تفسیر مظہری)

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ

اور ہمارا ذمہ یہی ہے پیغام پہنچا دینا کھول کر

یعنی ہم اپنا فرض ادا کر چکے، خدا کا پیغام خوب کھول کر واضح، معقول اور دلنشیں طریقہ سے تم کو پہنچا دیا۔ اب تمام حجت کے بعد خود ماننا نہ ماننا تمہارا کام ہے۔

وہ دعوت کا انجام کیا ہوا دیکھئے۔ (تفسیر عثمانی)

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ

بولے ہم نے تو منحوس دیکھا تم کو اگر تم باز نہ آؤ گے تو ہم تم کو سنگسار کریں گے

وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ

اور تم کو پہنچے گی ہمارے ہاتھ سے تکلیف دردناک

**بستی والوں کی بے عقلی:**

شاید تکذیب رسل اور کفر و عناد کی شامت سے قحط وغیرہ پڑا ہو گا۔ وہ مجرمین یہ سمجھے کہ یہ آپس میں اختلاف ہوا تمہاری نامبارک آمد کا اثر ہے۔ یعنی تمہارے قدم آنے سے قحط اور نااتفاقی کی بلا ہم پر نازل ہوئی یہ سب تمہاری نحوست ہے (العیاذ باللہ)۔ پہلے ہم اچھے خاصے آرام چین کی زندگی بسر کر رہے تھے۔ بس اب اپنے وعظ و نصیحت سے باز رہو۔ اگر یہ سلسلہ نہ چھوڑا تو ہم وعظ و نصیحت سے باز نہ آئے تو ہم سخت تکلیف دہ عذاب دیں گے یعنی پتھر مار مار کر ہلاک کر ڈالیں گے۔

قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ

کہنے لگے تمہاری نامبارکی تمہارے ساتھ ہے کیا اتنی بات پر کہ تم کو سمجھایا

بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ

کوئی نہیں پر تم لوگ ہو کہ حد پر نہیں رہتے

**قاصدوں کی تعلیم:**

یعنی تمہارے کفر و تکذیب کی نحوست سے عذاب آیا، تاہم یہ صورت ہے کہ سب مل کر قبول کر لیجئے، نہ یہ کہ مخالف ہو کر … بلکہ نامبارکی اور نحوست کے اسباب جو تمہارے اندر موجود ہیں۔ پھر کیا اتنی بات پر کہ تمہیں نصیحت کی گئی اور بھلائی کی بات سمجھائی … نحوست ٹھہرائی … حد سے گزر جانے والے ہو۔ (تفسیر عثمانی)

**پیغمبرانہ دعوت و اصلاح کا طریقہ:**

اس بستی کی طرف جو تین رسول بھیجے گئے انہوں نے … جس طرح دعوت دی … اور منکرین کا جس طرح جواب دیا اسی طرح ان کی دعوت سے مسلمان ہونے والے حبیب نجار نے اپنی قوم سے جس طرح خطاب کیا ان سب میں … دین و اصلاح کی خدمت انجام دینے والوں کے لئے بڑے سبق ہیں۔ ان … کے باب میں … نے …

۱- تم تو ہمیں جیسے انسان ہو ہم تمہاری بات کیوں مانیں؟
۲- رحمٰن کو نے کسی پر کوئی پیغام اور کتاب نہیں اتاری۔
۳- تم تو بس جھوٹ بولتے ہو۔

آپ غور کیجئے کہ یہ غرض ناصحانہ کلام کے جواب میں یہ اشتعال انگیز گفتگو کیا جواب پا سکتی تھی مگر ان رسولوں نے کیا جواب دیا صرف یہ کہ رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ۔

آج کل کے مبلغین اور خدمت دعوت و اصلاح کے انجام دینے والے نے سو فیصد اس پیغمبرانہ اسوہ کو چھوڑ دیا اسی لئے ان کی دعوت و تبلیغ بے اثر ہو کر رہ گئی ہے۔ تقریر و خطاب میں غصہ کا اظہار، مخالف پر فقرے چست کرنا بڑا کمال سمجھا جاتا ہے جو مخالف کو اور زیادہ ضد و عناد کی طرف دھکیل دیتا ہے۔ اللہم احفظنا منہ (معارف القرآن مفتی اعظمؒ)

وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى

اور (اتنے میں) شہر کے پرلے سرے سے ایک مرد دوڑتا ہوا آیا ☆

ایک سچا آدمی: کہتے ہیں کہ اس مرد صالح کا نام حبیب تھا، شہر کے پرلے کنارے عبادت میں مشغول رہتا اور کسب حلال سے کھاتا تھا۔ فطری صلاحیت نے چپ نہ بیٹھنے دیا، فوراً سنتے ہی مرسلین کی تائید و حمایت اور مکذبین کی فہمائش و سرزنش کے لئے دوڑتا ہوا آیا۔ مبادا اشقیاء انبیاء و ناصحین کو ایذا پہنچانے لگیں۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ مرسلین کی آواز کا اثر شہر کے دور دراز حصوں تک پہنچ گیا تھا۔ (تفسیر عثمانی)

وہب نے کہا حبیب ریشم کا کپڑا بنتا تھا اور بیمار تھا اس کو جذام ہو گیا تھا، اس لئے شہر کے آخری دروازہ پر رہتا تھا، مومن صدقہ و خیرات بہت کرتا تھا، جو کچھ کماتا تھا شام کو دو حصے کر دیتا ایک حصہ خیرات کر دیتا تھا اور ایک حصہ اپنے متعلقین کے صرف میں لاتا تھا۔ جب اس کو اطلاع ملی کہ اس کی قوم والوں نے رسولوں کو قتل کرنے کا ارادہ کر لیا ہے تو دوڑتا ہوا آیا اور کہا۔ (تفسیر مظہری)

قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۙ اتَّبِعُوْا مَنْ

بولا اے قوم چلو راہ پر ان بھیجے ہوؤں کی، چلو راہ پر ایسے کی

لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

جو تم سے بدلہ نہیں چاہتے اور وہ ٹھیک راہ پر ہیں ☆

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ

اور مجھ کو کیا ہوا کہ میں بندگی نہ کروں اس کی جس نے مجھ کو بنایا

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

اور اسی کی طرف سب پھر جاؤ گے ☆

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ

بھلا میں پکڑوں اس کے سوا اوروں کو پوجنا کہ اگر مجھ پر چاہے رحمٰن

بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ۝

تکلیف تو کچھ کام نہ آئے مجھ کو ان کی سفارش اور نہ وہ مجھ کو چھڑائیں ☆

اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

تو تو میں بھٹکا صریح ہوا ☆

اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ۝

میں یقین لایا تمہارے رب پر مجھ سے سن لو ☆

**حبیب کی تقریر:**

یعنی اللہ کے بھیجے ہوئے ہیں۔ ان کا پیغام لے کر آئے ہیں جو نصیحت کرتے ہیں اس پر خود کاربند ہیں۔ اخلاق، اعمال اور عادات و اطوار سب ٹھیک ہیں۔ بے غرض خیر خواہی کرتے ہیں۔ کوئی معاوضہ تم سے نہیں چاہتے۔ پھر ایسے بے غرض بزرگوں کا اتباع کیوں نہ کیا جائے اور حق تعالیٰ ان کے ذریعہ سے جو پیغام بھیجے کیوں قبول نہ کیا جائے۔

یہ اپنے اوپر رکھ کر دوسروں کو سنایا۔ یعنی تم کو آخر کیا ہوا کہ جس نے پیدا کیا اس کی بندگی نہ کرو۔

یعنی یہ مت سمجھنا کہ یہاں کرکے آزاد چھوٹ جاؤ گے۔ سب کو مر کر اسی کی طرف لوٹنا ہے پھر سب کچھ معلوم ہو جائے گا۔ جیسا کیا ہے اس کی بابت پوچھ گچھ ہوگی۔

یعنی کس قدر صریح گمراہی ہے کہ اس مہربان، قادر مطلق پروردگار کو چھوڑ کر ایسی چیزوں کی پرستش کی جائے جو خدا کی بھیجی ہوئی کسی تکلیف سے نہ بذات خود بچا سکیں نہ سفارش کر کے نجات دلا سکیں۔

یعنی کچھ میں بے کھٹکے اعلان کرتا ہوں کہ میں اس خدائے واحد پر ایمان لا چکا۔ اسے سب سن رکھو۔ شاید مرسلین کو اس نے سنایا ہو کہ وہ خدا کے یہاں گواہ رہیں اور قوم کو اس لئے کہ سن کر کچھ متاثر ہوں، ورنہ کم از کم وہ ایک مومن کی قوت ایمانی کا مشاہدہ کرتے ہوئے جائیں۔ (تفسیر عثمانی)

**حبیب کے ساتھ بستی والوں کا سلوک اور اللہ تعالیٰ کا انعام:**

بغوی نے لکھا ہے جب اس شخص نے یہ بات کی تو قوم والوں نے اس پر یکدم حملہ کر کے قتل کر دیا۔ حضرت ابن مسعودؓ نے فرمایا: ان لوگوں نے اس کو اتنا روندا کہ اس کی آنتیں پیچھے سے نکل گئیں۔ سدی نے کہا لوگ اس کو پتھر مار رہے تھے اور وہ کہہ رہا تھا اے اللہ میری قوم کو ہدایت کر، آخر اس کو ٹکڑے ٹکڑے کر دیا اور ابن الحسن نے کہا اس کے گلے کو چھید کر شہر کی فصیل

... ان کی قبر بھی موجود ہے۔

[illegible]

[illegible]

خلافت خاصہ

[illegible]

(... ازالۃ الخفاء ...)

## حضرت حبیب کی نسل ایک مسجد

[illegible]

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ

[illegible]

[illegible]

قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ بِمَا غَفَرَ لِي

[illegible]

رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ

[illegible]

قوم سے ہمدردی:

[illegible]

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِن بَعْدِهِ مِن جُندٍ

[illegible]

مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ إِن كَانَتْ إِلَّا

[illegible]

صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ

[illegible]

کفر و ظلم کی سزا:

[illegible]

میں آ گیا اور قوم کی شامت [illegible] جبرئیل نے [illegible] ایک چیخ [illegible] جس سے سب مر گئے۔ (تفسیر مظہری)

روایات میں ہے کہ جبرئیل امین نے شہر کے دروازے کے دونوں [illegible] پکڑ کر ایک چیخ ماری [illegible] سب کے سب مر کر رہ گئے [illegible] لفظ [illegible] زندگی کی حیات [illegible] ختم ہو جا [illegible] کا کام ہوتا ہے۔ [illegible] (ملاحظہ ہو [illegible])

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ

کیا افسوس ہے بندوں پر کوئی رسول نہیں آیا ان کے پاس

إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۞ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا

مگر اس سے ٹھٹھا کرتے رہے کیا نہیں دیکھتے کتنی غارت کر چکے

قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۞

ہم ان سے پہلے جماعتیں کہ وہ ان کے پاس پھر کر نہیں آئیں گی

## تاریخ کی پکار:

[illegible] کیسی کیسی قومیں پہلے پیغمبروں سے مقابلہ کرکے [illegible] ہلاک ہو چکی ہیں [illegible] کوئی بھی عبرت نہیں ہوتی [illegible] رسول آتا ہے [illegible] تمسخر اور استہزاء شروع کر دیتے ہیں [illegible] خاتم الانبیاء صلی اللہ علیہ وسلم کے [illegible]

[illegible] حسرت کی حقیقت پر دلالت کر رہی ہے۔

[illegible] حسرت [illegible] ان کی خیر خواہی [illegible] حسرت سے [illegible] بیزاری [illegible] جاہل [illegible] حسرت کیا جائے [illegible] افسوس [illegible] یہ بھی ہو سکتا ہے کہ حسرت سے مراد ایمان والے بندوں کی طرف سے اظہارِ حسرت ہو [illegible] اللہ کی طرف سے حسرت کا اظہار ہو [illegible] صورت میں [illegible] کرنے والوں کے جرم کی عظمت کی طرف اشارہ ہوگا [illegible] ایسے لوگوں پر افسوس [illegible] حسرت کا [illegible] شدت حزن اور پشیمانی۔

## عقل والوں کیلئے عبرت:

[illegible] کیا دیکھتے نہیں جانتے کہ ہم نے ان سے پہلے کتنی قومیں

سے [illegible] قصے [illegible] ہلاک شدہ [illegible] لوٹ کر نہیں آئیں [illegible] اس کلام سے ایک شبہ ہوا [illegible] کبھی نہیں لوٹیں گے (اور یہ بھی [illegible] زندگی [illegible] کی [illegible]) [illegible] (تفسیر مظہری)

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۞

اور ان سب میں کوئی نہیں جو اکٹھے ہو کر ہمارے پاس پکڑے نہ آئیں

## مجرمین کا اجتماع

یعنی وہ تو دنیا کا عذاب تھا اور آخرت کی سزا الگ رہی [illegible] ہلاک ہو کر [illegible] قصہ ختم ہوا [illegible] سب کو پھر ایک دن خدا [illegible] بلا استثناء سب مجرم [illegible]

وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا

اور ایک نشانی ہے ان کے واسطے مردہ زمین اس کو ہم نے زندہ کر دیا

وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ۞ وَجَعَلْنَا

اور نکالا اس میں سے اناج سو اس میں سے کھاتے ہیں اور بنائے ہم نے

فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا

اس میں باغ کھجور کے اور انگور کے اور بہا دیے اس میں

فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۞ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ

[illegible] کھائیں اس کے میووں سے

## بعث بعد الموت کی دلیل:

[illegible] مرنے کے بعد پھر کس طرح زندہ ہو کر حاضر کیے جائیں گے [illegible] زندہ کرنا ہے کہ ایک دم سے [illegible] کیسے کیسے باغ و بہار [illegible] اس سے پیدا ہوتے ہیں [illegible] مردہ اجسام [illegible] حیات پھونک دی جائیگی [illegible] ایک مثال ہے [illegible] غور کرنے سے بعث بعد الموت اور حق تعالیٰ کی [illegible] وحدانیت و عظمت اور اس کے انعام و احسان کے مسائل کو خوب سمجھ سکتے ہیں۔

[illegible] ترغیب کا مضمون [illegible] خطاب [illegible] ترغیب کی صورت [illegible] اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کو پہچان کر [illegible] کی طرف متوجہ ہوں [illegible] زمین کو زندہ کرنا [illegible] ایک طرح [illegible]

ہے کوئی شک نہیں ہے۔ (تفسیر ...)

کھجور: کھجور کے درخت کو کہتے ہیں اور ثمر کھجور ... کہتے ہیں [illegible]

[illegible] (تفسیر ...)

**وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ**

اور ان کو ان کے ہاتھوں نے نہیں بنایا تو کیا یہ شکر نہیں کرتے۔

### ہر حیثیت سے اللہ کا شکر واجب ہے

یعنی یہ پھل اور کھیت قدرت کی ... پیدا ہوتے ہیں ان کے ہاتھوں میں یہ طاقت نہیں کہ ایک تخم یا کھجور کا دانہ پیدا کر سکیں۔ [illegible]

[illegible] (تفسیر ...)

### غافلوں کیلئے تنبیہ

غافل انسان کو اس پر متنبہ کیا ہے کہ ... [illegible]

[illegible]

**سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ**

پاک ہے وہ ذات جس نے ... سب چیزوں کے جوڑے بنائے

**الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ**

زمین ... اور خود ان میں سے اور ان چیزوں میں سے جن کو یہ نہیں جانتے۔

### قدرتِ الٰہی کا عجیب کرشمہ

[illegible]

**وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ**

[illegible]

**وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا**

[illegible]

### انقلاباتِ جہاں:

[illegible]

### سورج کا طلوع و غروب:

[illegible]

## ایک وقت آئے گا جب سورج کو طلوع کی اجازت نہ ہوگی۔

بخاری نے حضرت ابوذرؓ کی روایت سے لکھا ہے کہ جس وقت سورج غروب ہوا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیا تم جانتے ہو کہ یہ کہاں چلا جاتا ہے ابوذرؓ کہتے ہیں میں نے عرض کیا اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم ہی خوب واقف ہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یہ جا کر عرش کے نیچے سجدہ کرتا ہے اور (آگے چلنے کی) اجازت طلب کرتا ہے اس کو اجازت دے دی جاتی ہے لیکن عنقریب یہ وقت آنے والا ہے کہ یہ سجدہ کرے گا اور سجدہ قبول نہ ہوگا اور (آگے جانے کی) اجازت طلب کرے گا مگر اس کو اجازت نہیں ملے گی اور حکم دیا جائے گا کہ جہاں سے آیا ہے ادھر ہی لوٹ جا چنانچہ وہ (لوٹ کر) مغرب سے طلوع ہوگا (مطلب) یہ آیت وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا کا حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس کا مستقر عرش کے نیچے ہے۔ متفق علیہ (تفسیر مظہری)

## حضرت قتادہؒ کی تفسیر:

آفتاب اپنے دورے پر اپنے محکم اور مضبوط نظام کے ساتھ حرکت کر رہا ہے جس میں کبھی ایک منٹ ایک سیکنڈ کا فرق نہیں آتا ہزاروں سال اس دورہ پر گذر چکے ہیں مگر یہ سب دائمی نہیں اس کا ایک خاص مستقر ہے جہاں پہنچ کر یہ نظام شمسی اور اس کی حرکت بند اور ختم ہو جائے گی اور وہ قیامت کا دن ہے یہ تفسیر قتادہؒ سے منقول ہے۔ (ابن کثیر)

اور حضرت عبداللہ بن عمرؓ سے بھی اسی مضمون کی حدیث منقول ہے اس میں بطور دوام یا ملتا ہے۔ جس کا مفہوم یہ ہے کہ روزانہ آفتاب تحت العرش پہنچ کر سجدہ کرتا ہے اور نئے دورے کی اجازت طلب کرتا ہے اجازت پا کر نیا دورہ شروع کرتا ہے یہاں تک کہ ایک دن ایسا آئے گا جب اس کو نیا دورہ کرنے کی اجازت نہیں ملے گی بلکہ یہ حکم ہوگا کہ جس طرف سے آیا ہے اسی طرف لوٹ جا تجلی مغرب کی طرف سے زمین کے نیچے جا کر مغرب ہی کی طرف سے خلاف معمول مغرب سے طلوع ہو جائے گا یہ جب ایسا ہوگا تو یہ قیامت کے بالکل قریب ہونے کی علامت ہوگی۔ اور اس وقت توبہ کرنے اور ایمان لانے کا دروازہ بند کر دیا جائے گا اس وقت کسی گناہگار کی گناہوں سے توبہ اور مشرک و کافر کی کفر سے توبہ قبول نہ ہوگی۔ (ابن کثیر و معارف القرآن)

## حدیث کی تشریح:

چونکہ قرآن و حدیث کی تصریحات کے مطابق عرش خداوندی تمام آسمانوں اور زمینوں پر محیط ہے تو یہ ظاہر ہے کہ آفتاب ہر جگہ زیر عرش ہی ہے اور تجربہ شاہد ہے کہ آفتاب جس وقت ایک جگہ غروب ہو رہا ہوتا ہے تو دوسری جگہ طلوع بھی ہو رہا ہوتا ہے اس لیے اس کا ہر لحظہ طلوع و غروب سے خالی نہیں، تو آفتاب کا زیر عرش ہونا بھی دائمی اور ہر حال میں ہے اور غروب و طلوع ہونا بھی بہرحال جس سے اس کے حاصل مضمون حدیث کا یہ ہوا کہ آفتاب پورے دورے میں زیر عرش اللہ کے سامنے سجدہ ریز رہتا ہے یعنی اس کی اجازت اور فرمان کے تابع حرکت کرتا ہے اور یہ سلسلہ اسی طرح قرب قیامت تک جاری رہے گا، یہاں تک کہ قیامت کی بالکل قریبی علامت ظاہر ہونے کا وقت آ جائے گا تو آفتاب کو اگلا دورہ شروع کرنے کے بجائے پیچھے لوٹ جانے کا حکم ہو جائے گا اور وہ مغرب ہی کی طرف سے طلوع ہو جائے گا اس وقت دروازہ توبہ کا بند ہو جائے گا کسی کا ایمان و توبہ اس وقت مقبول نہیں ہوگا۔ (معارف القرآن مفتی اعظم)

ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿۳۸﴾

یہ سادھا ہے زبردست خبردار کا ۳۸

## طلوع و غروب کا نظام:

سورج کی چال اور رفتار مقرر ہے اسی پر چلا جاتا ہے۔ ایک انچ یا ایک سیکنڈ اس سے ادھر ادھر نہیں ہو سکتا۔ جس کام پر لگا دیا ہے ہر وقت اسی میں مشغول ہے۔ کسی دم قرار نہیں۔ روزمرہ دن کی گردش اور سال بھر کے چکر میں جس جس نقطہ پر اسے پہنچنا ہے پہنچتا ہے پھر وہاں سے باذن خداوندی نیا دورہ شروع کرتا ہے قرب قیامت تک اسی طرح کرتا رہے گا۔ تا آنکہ ایک وقت آئے گا جب اس کو حکم ہوگا کہ جدھر سے غروب ہوا ہے ادھر سے الٹا واپس نکل آئے یہی وقت ہے جب باب توبہ بند کر دیا جائے گا۔ غرض دل لگتی اور یقینی بات یہ ہے کہ اس کے طلوع و غروب کا یہ سب نظام ایک زبردست اور باخبر ہستی کا قائم کیا ہوا ہے جس کے انتظام کو کوئی دوسرا شکست نہیں کر سکتا۔ اور نہ اس کی حکمت و دانائی پر کوئی حرف گیری کر سکتا۔ بعد خود جب چاہے جس طرح چاہے الٹ پلٹ کرے کسی کی مجال انکار نہیں ہو سکتی۔ (تفسیر ـ)

اس آیت کی تفسیر میں ایک حدیث آئی ہے کہ جس میں شمس کے تحت العرش سجدہ کرنے کا ذکر ہے۔ یہاں اس کی تشریح کا موقع نہیں اس پر ہمارا مستقل مضمون "سجود الشمس" کے نام سے چھپا ہوا ہے ملاحظہ کیا جائے۔ (تفسیر عثمانی)

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ

اور چاند کو ہم نے بانٹ دی ہیں منزلیں یہاں تک کہ پھر آ رہا

كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿۳۹﴾

جیسے ٹہنی پرانی ۳۹

## چاند کی منزلیں:

سورج کی طرح چاند ہمیشہ ایک طرح نہیں رہتا بلکہ روز گھٹتا بڑھتا رہتا ہے۔ اس کی اٹھائیس منزلیں اللہ نے مقرر کر دی ہیں ان کو ایک معین نظام

کے۔ تو جب سورج کی ترتیب کے بیان میں رات دن کا بیان تھا پھر سورج کا ذکر کیا جس سے سالوں اور فصلوں کی تشکیل ہوتی ہے۔ اب چاند کا تذکرہ کرتے ہیں جس کی رفتار سے قمری مہینوں کا وجود وابستہ ہے۔ چاند مہینہ کے آخر میں چھپ جاتا ہے تو چاند چھپ جاتا ہے جب آگے بڑھتا ہے تو منزل بمنزل بڑھتا چلا جاتا ہے پھر چودھویں شب کو پورا ہو کر گھٹنا شروع ہو جاتا ہے۔ آخر مہینہ میں اسی پتلی حالت پر آپہنچتا اور کھجور کی پرانی ٹہنی کی طرح پتلا ٹیڑھا اور بے رونق سا ہو جاتا ہے۔

لَا الشَّمْسُ يَنبَغِي لَهَا أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا

نہ سورج سے ہو سکے کہ پکڑے چاند کو اور

اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ (۴۰)

نہ رات آگے بڑھے دن سے اور ہر کوئی ایک چکر میں پھرتے ہیں

## چاند اور سورج حکم الٰہی سے بغاوت نہیں کر سکتے۔

سورج کی سلطنت دن میں ہے اور چاند کی رات میں۔ یہ نہیں ہو سکتا کہ چاند کی نور افشانی کے وقت سورج آموجود ہو۔ یعنی دن آگے بڑھ کر رات کا کچھ حصہ دبا لے یا رات جست کر کے دن کے ختم ہونے سے پہلے آ جائے۔ جس زمانہ اور جس ملک میں جو مقدار رات دن کی رکھ دی ہے نہ رات کی مجال نہیں کہ ایک منٹ آگے پیچھے ہو سکیں۔ ہر ایک سیارہ اپنے اپنے مدار میں پڑا چکر کھا رہا ہے اس سے ایک قدم ادھر ادھر نہیں ہٹ سکتا۔ اور باوجود استمرار حرکت اور کھلی ہوئی فضا کے نہ ایک دوسرے سے ٹکراتا ہے نہ مقررہ انداز سے ادھر ادھر ہٹتا ہے پس اس کا واضح نشان تھا کہ یہ سب عظیم الشان مخلوق ایک ہی حاکم کے قدم پر پڑے ہوئے ہیں، معبود حقیقی کے قبضہ اقتدار میں اپنا اپنا کام کر رہے ہیں۔ پھر جو ہستی رات دن اور چاند سورج کا الٹ پھیر کرتی ہے وہ تمہارے فنا کرنے اور فنا کے بعد دوبارہ پیدا کرنے سے عاجز ہوگی؟ (العیاذ باللہ) (تفسیر عثمانی) حضرت شاہ صاحب "لَا الشَّمْسُ يَنبَغِي لَهَا أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ" کی تفسیر کا نکتہ بیان فرماتے ہیں کہ "سورج چاند اگر مہینہ میں ملتے ہیں تو چاند پکڑتا ہے سورج کو، سورج چاند کو نہیں پکڑتا" اسی لئے لَا الْقَمَرُ يَنبَغِي لَهُ أَن يُدْرِكَ الشَّمْسَ نہیں فرمایا۔ (انتہاء من تفسیر عثمانی)

آیت سے اشارہ ملتا ہے کہ چاند سورج وغیرہ ستارے آسمان میں قسری (تابع ملائکہ کے زور سے) نہیں بلکہ ارادی چل رہے ہیں کیلوں کی طرح جڑے ہوئے نہیں ہیں۔ اہل تحقیق کہتے ہیں کہ آسمان کی حرکت سے ان کی حرکت جوری ہے بلکہ ان کی حرکت ذاتی اور فلاسفہ یونان کی حرکت وضعی کے قائل ہیں۔

### آسمانوں کی تعداد اور فاصلے:

قرآن کی نصوص قطعیہ بتا دیتی ہیں کہ آسمان سات ہیں اور یہ ساتوں ٹھوس ہیں اس کا منکر کافر ہو جاتا ہے ہر آسمان کا پھٹنا اور ٹوٹنا اور چاند کے بجائے آسمان کے شق ہونے کا اس کا منکر کافر ہے۔ اللہ نے فرمایا ہے إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ، إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَتْ، وَانشَقَّ الْقَمَرُ وغیرہ۔

صحیح احادیث میں آیا ہے کہ آسمان باہم چپکے ہوئے نہیں ہیں۔ ہر ایک آسمان دوسرے آسمان سے جدا ہے جو شخص آسمانوں کو باہم چپکا ہوا کہتا ہے وہ فاسق ہے (اتباع آجماع کا منکر فاسق ہوتا ہے اور نصوص قطعیہ کا منکر کافر)

امام احمد اور ترمذی نے حضرت ابو ہریرہ کی مرفوع روایت بیان کی ہے حدیث طویل ہے جس میں یہ بھی فرمایا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے آسمانوں کی درمیانی مسافت کا ذکر کیا اور فرمایا ہر آسمان کی دوسرے آسمان سے دوری پانچ سو برس کی (راہ) ہے۔ ترمذی اور ابو داؤد نے حضرت ابن عباس کی روایت سے ایک طویل حدیث نقل کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا زمین سے آسمان تک کا فاصلہ اور ہر آسمان سے دوسرے آسمان کا فاصلہ اکہتر یا بہتر یا تہتر برس کی (راہ کے برابر) ہے۔ (تفسیر مظہری)

وَآيَةٌ لَّهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ

اور ایک نشانی ہے ان کے واسطے کہ ہم نے اٹھا لیا ان کی نسل کو

الْمَشْحُونِ (۴۱) وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ (۴۲)

اس بھری ہوئی کشتی میں اور بنا دیا ہم نے ان کے واسطے اس جیسی چیزیں جن پر سوار ہوتے ہیں

### وسائل نقل و حمل

یعنی حضرت نوح کے زمانہ میں جب طوفان آیا تو آدم کی نسل کو اس بھری ہوئی کشتی پر سوار کر لیا جو حضرت نوح نے بنائی تھی۔ دوسرے انسانوں کا تخم باقی رہا۔ پھر اسی کشتی کے نمونہ کی دوسری کشتیاں اور جہاز تمہارے لئے بنا دیے جن پر تم آج تک لدے پھرتے ہو۔ کشتیوں کی طرح دوسری سواریاں پیدا کر دیں جن پر سوار ہوتے ہو۔ اونٹ جس کو عرب "سفائن البر" (خشکی کی کشتیاں) کہا کرتے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

### ذریت کا معنی:

ظاہر ذریت سے مراد لڑکے ہیں جو تجارتی سفر کے ساتھ جاتے تھے۔ ... اور ... مرد ہیں جن کو لوگ اپنے ساتھ سفر میں لے جاتے ہیں۔ ذریت کا اطلاق عورتوں پر بھی ہوتا ہے حدیث میں آیا ہے کہ ایک عورت قتل ہو گئی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تو نے کسی اہل مذہب کو قتل کر دیا ہے جا کر ... ذریت کو ... مزدوروں کو قتل نہ کرے چونکہ عورت کو احتمال پا کر رسول اللہ

[illegible]

## مِنْ مِّثْلِهٖ کا مصداق:

[illegible]

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ

[illegible]

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ

[illegible]

## سب کچھ رحمت الٰہی سے ہے:

[illegible]

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ

[illegible]

وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

[illegible]

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ

[illegible]

اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ

[illegible]

## منکرین کی بے پروائی:

[illegible]

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

[illegible]

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ

[illegible]

## مشرکین کی حماقت:

[illegible]

معلوم ہوتا ہے کہ یہ آیت بعض یہود کے حق میں ہے اس صورت میں ان کے اس قول کو تمسخر پر محمول نہ کیا جائے گا بلکہ حقیقت پر محمول کریں گے۔ (تفسیر مظہری)

## مال خرچ کرنے کا حکم:

خدا نے جو امیروں کو فقیروں پر خرچ کرنے کا حکم دیا ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ گویا میرے بندو میں نے تم کو جو مال و دولت دی ہے اس کا اصل مالک میں ہوں میں تم کو حکم دیتا ہوں کہ تم میری اس دی ہوئی دولت کا کچھ حصہ میرے غریب بندوں کی مدد میں خرچ کرو۔

درویش را شناسد اگر سوال کرد — تا کار را بہانہ [illegible] کند بخل

زندے بخل کر [illegible] دولت بود — [illegible] قناعت واحد [illegible] مطلق

سبب نزول: روایت کیا گیا کہ صدیق اکبرؓ مسلمان مسکینوں کو کھانا کھلایا کرتے تھے اتفاق سے ابوجہل آپ کو مل گیا اور کہنے لگا کہ اے ابوبکر کیا تمہارا یہ زعم ہے کہ اللہ تعالیٰ ان کے کھلانے پر قادر ہے۔

حضرت ابوبکر نے کہا ہاں بلاشبہ اللہ تعالیٰ ان کے کھلانے پر قادر ہے ابوجہل نے کہا پھر کیا سبب ہے کہ اللہ نے ان کو بھوکا رکھا اور کھانے کو نہیں دیا ابوبکر صدیق نے کہا یہ اللہ کی طرف سے امتحان اور آزمائش ہے بعض کو تنگی اور فقر سے آزمایا اور کسی کو تونگری سے آزمایا اور فقیر کو صبر کا حکم دیا اور دولتمند کو شکر اور جود و کرم کا حکم دیا ابوجہل نے کہا اے ابوبکر خدا کی قسم تو خالص گمراہی میں ہے کیا تیرا یہ گمان ہے کہ اللہ تعالیٰ ان فقیروں کو کھلانے پر قادر ہے اور باوجود قدرت کے پھر ان کو کھانا نہیں دیتا اور پھر تو ان کو کھانا کھلاتا ہے اس پر یہ آیت نازل ہوئی۔ واذا قیل لھم انفقوا الی قولہ ان انتم الا فی ضلل مبین اور یہ آیت نازل ہوئی فاما من اعطی واتقی وصدق بالحسنی الی آخر الآیات تفسیر قرطبی۔ (سورۃ اللیل)

| |
|---|
| إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ |
| تم لوگ تو بالکل بہک رہے ہو صریح ۴۷ |

## مطلب یہ تو کھلی گمراہی ہے۔

اگر یہ جملہ کفار کے قول کا تتمہ ہے تو مطلب یہ ہوگا کہ اے گروہ مومنین تم صریح گمراہی میں پڑے ہو۔ ایسے لوگوں کا پیٹ بھرنا چاہتے ہو جن کا خدا پیٹ بھرنا نہیں چاہتا۔ اور اگر یہ حق تعالیٰ کی طرف سے ہے تو ان کفار کو خطاب ہے کہ کس قدر بہکی بہکی باتیں کرتے ہیں۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یہ گمراہی ہے کہ نیک کام میں تقدیر کے حوالے کرنا اور اپنے مزے میں لالچ دوڑانا" (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ |
| اور کہتے ہیں کب ہوگا یہ وعدہ اگر تم سچے ہو ۴۸ |

## منکرین کی ڈھٹائی:

یعنی یہ قیامت اور عذاب کی دھمکیاں کب پوری ہوں گی اگر سچے ہو تو جلدی کر کے دکھلاؤ۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ |
| یہ تو راہ دیکھتے ہیں ایک چنگھاڑ کی جو ان کو آ پکڑے گی |
| وَهُمْ يَخِصِّمُونَ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ |
| جب آپس میں جھگڑ رہے ہوں گے پھر نہ کر سکیں گے |
| تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ |
| کہ کچھ کہہ ہی مریں اور نہ اپنے گھر کو پھر کر جا سکیں گے ۵۰ |

## قیامت آنے کو ہے

یعنی قیامت اچانک آ پکڑے گی اور وہ اپنے معاملات میں طرح طرح کے جھگڑ رہے ہوں گے جس وقت پہلا صور پھونکا جائے گا سب ہوش اڑ جائیں گے بیٹھے اور کھڑے ڈھیر ہو جائیں گے۔ اتنی فرصت بھی نہ ملے گی کہ کوئی وصیت کر مرے یا مرنے سے پہلے کسی کو کچھ کہہ سن جائے یا جو گھر سے باہر ہیں وہ گھر جا کر اپنوں سے مل سکیں۔ (تفسیر عثمانی)

## اچانک قیامت آنے کا منظر:

شیخین نے صحیحین میں بیان کیا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت ایسی حالت میں آ جائے گی کہ دو آدمی (بائع و مشتری) کپڑا کھولے ہوئے خرید و فروخت میں مشغول ہوں گے نہ سودا ختم کر چکے ہوں گے نہ کپڑا لپیٹ چکے ہوں گے (کہ اچانک صور کی آواز سنائی دے گی) اور قیامت ایسی حالت میں آ جائے گی کہ آدمی اپنی اونٹنی کا دودھ لے کر آ رہا ہوگا [illegible] اور قیامت ایسی حالت میں آ جائے گی کہ آدمی نے لقمہ اٹھا کر منہ تک اٹھایا ہوگا اور کھانے نہ پائے گا کہ قیامت ہو جائے گی۔ (تفسیر مظہری)

بعض لوگ اپنے کسی معاملہ میں وصیت بھی نہ کر سکیں گے اور جو لوگ گھر سے باہر ہوں گے وہ اپنے گھر والوں کی حالت بھی نہ دیکھ سکیں گے [illegible] (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ |
| اور پھونکی جائے صور پھر تب ہی وہ قبروں سے |
| إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ |
| اپنے رب کی طرف پھیل پڑیں گے ۵۱ |

یعنی دوسری مرتبہ صور پھونکا جائے گا تو سب زندہ ہو کر اپنی قبروں سے اٹھ کھڑے ہوں گے اور فرشتے ان کو بہت جلد دھکیل کر میدان حشر میں لے جائیں گے۔ (تفسیر مظہری)

**دو نفخوں کا وقفہ:**

چونکہ صور کا پھونکا جانا یقینی ہے اس لیے ماضی کا صیغہ استعمال کیا یعنی لوگ مر جائیں گے پھر دوبارہ صور پھونکا جائے گا پہلی اور دوسری مرتبہ صور کے درمیان چالیس سال کا فصل ہوگا ابن ابی حاتم نے حضرت ابن عباسؓ کی طرف اس قول کی نسبت کی ہے۔ لیکن ابن ابی داؤد نے حضرت ابوہریرہؓ کی روایت سے مرفوعاً نقل کیا ہے اس میں چالیس سال کا لفظ ہے۔ (تفسیر مظہری)

**کافروں کی جبری حاضری:**

معلوم ہوتا ہے کہ ان کی حاضری کچھ خوشی سے نہ ہوگی۔ بلکہ جبری طور پر ہوگی اور فرشتوں کے پکارنے کی وجہ سے ان کے ... میں آ جائیں گے (... علم)

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ

کہیں گے اے خرابی ہماری کس نے اٹھا دیا ہم کو ہماری نیند کی جگہ سے ○

**جہنم اور قبر کے عذاب کا موازنہ:**

شاید پہلی اور دوسری پھونک کے درمیان ان پر نیند کی حالت طاری کر دی جائے یا قیامت کا ہولناک منظر دیکھ کر عذاب قبر کو ابھی سمجھیں گے ... مرقد ... نیند کی کیفیت سے تعبیر کیا جائے۔ واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ـ حضرت ابن عباسؓ اور قتادہ نے فرمایا کہ قبروں کے ... دونوں نفخوں کے درمیان لوگوں کی ... سے ان پر سے عذاب اٹھا لیا جائے گا اور وہ سو جائیں گے دوسری مرتبہ نفخ صور کے بعد جب اٹھیں گے تو یہ بات کہیں گے۔ ... عذاب قبر کے منکر ...

اہل حقیقت کہتے ہیں کہ کافر جب جہنم کے طرح طرح کے عذاب دیکھیں گے تو عذاب جہنم کے مقابلہ میں ان کو قبر کا عذاب خواب کی طرح محسوس ہوگا اس وقت کہیں گے کہ ہم کو خواب سے کس نے اٹھا دیا۔

**جہنم کی ایک وادی:**

امام احمد، ترمذی، ابن جریر، ابن ابی حاتم ... اور ... نے حضرت ابو سعید خدریؓ کی روایت سے بیان کیا ہے ... کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا صعود جہنم کے اندر ایک پہاڑ ہے جس میں کافر چالیس برس تک (چڑھتا) رہے گا پھر نیچے سے نیچے لڑھکتا چلا جائے گا (یعنی چالیس برس تک لڑھکتا ہوا نیچے پہنچے گا)

سعید بن منصور، ابن المنذر اور بیہقی نے حضرت ابن مسعودؓ کی روایت سے بیان کیا ہے ویل جہنم کے اندر ایک وادی ہے جس میں دوزخیوں کا پیپ بہہ کر آتا ہے یہ وادی (اللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی) تکذیب کرنے والوں کے رہنے کی جگہ ہے۔ ابن جریر نے حضرت عثمان بن عفانؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ویل دوزخ کا ایک پہاڑ ہے۔ (تفسیر مظہری)

هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ

یہ وہ ہے جو وعدہ دیا تھا رحمٰن نے اور سچ کہا تھا پیغمبروں نے ۵۲

**سچا وعدہ:** یہ جواب اللہ کی طرف سے اس وقت دیا گیا ... فرشتے جواب دے رہے ہیں۔ یعنی کیا پوچھتے ہو کس نے اٹھایا ... آنکھیں کھولو یہ وہی اٹھانا ہے جس کا وعدہ رحمٰن کی طرف سے کیا گیا تھا اور پیغمبر جس کی خبر دیتے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ

بس ایک ہی چنگھاڑ ہوگی پھر اسی دم وہ سب

جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ

ہمارے پاس پکڑے ہوئے آئیں گے ۵۳

یعنی کوئی شخص نہ بھاگ سکے گا نہ روپوش ہو سکے گا۔ (تفسیر عثمانی)

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ

پھر آج کے دن ظلم نہ ہوگا کسی جی پر ذرا بھی اور وہی بدلہ پاؤ گے

إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

جو تم کرتے تھے ۵۴

**انصاف کا دن:** یعنی کسی کی کچھ نیکی ضائع نہ ہوگی نہ بدی کی حیثیت سے زیادہ سزا ملے گی ٹھیک ٹھیک انصاف ہوگا اور ٹھیک ٹھیک تمہارے کیے کا نتیجہ عذاب و ثواب کی صورت میں سامنے آ جائے گا۔ (تفسیر عثمانی)

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ

تحقیق بہشت کے لوگ آج ایک مشغلہ میں ہیں باتیں کرتے ۵۵

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ

وہ اور ان کی عورتیں سایوں میں تختوں پر بیٹھے ہیں تکیہ لگائے ۵۶

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ

ان کے لیے ہے وہاں میوہ اور ان کے لیے ہے جو کچھ مانگیں ۵۷

[illegible]

[illegible]

سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ

[illegible]

[illegible]

| وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ |
| --- |
| [illegible] |

## مجرموں کا مقام

[illegible]

| أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا |
| --- |
| [illegible] |
| الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ |
| [illegible] |
| وَأَنِ اعْبُدُونِي هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ |
| [illegible] |

## انبیاء کی دعوت

[illegible]

[illegible]

| سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ |
| --- |
| [illegible] |

## اللہ تعالیٰ کی طرف سے سلام

[illegible]

[illegible]

## جہنم کی سرزنش

[illegible]

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا

اور وہ بہکا لے گیا تم میں سے بہت خلقت کو پھر کیا تم کو

تَعْقِلُونَ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ

سمجھ نہ تھی یہ دوزخ ہے جس کا تم سے وعدہ تھا

اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

جا پڑو اس میں آج کے دن بدلے اپنے کفر کا

## انسانوں کی دانائی

[illegible]

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ

آج ہم مہر لگا دیں گے ان کے منہ پر اور بولیں گے ہم سے ان کے ہاتھ

وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

اور بتلائیں گے ان کے پاؤں جو کچھ وہ کماتے تھے

## اپنی عدالت کے گواہ

[illegible] حَتّٰی اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ [illegible] قَالُوْا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِیْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَیْءٍ [illegible]

[illegible]

پھر تیسرے سے مدت بعد عداوت کرے گا اور اس سے بھی بچا رہا ۔ گا اور بھی لمبا ہے سے گا پھر تیسرے سے عداوت کرے گا اور اس سے بھی بچا رہے گا اور غرض کرے گا۔ میں تجھ پر ایمان لایا تیری کتاب پر اور تیرے رسول پر ایمان لایا [illegible] اس سے کہا جائے گا کیا ہم تیرے سامنے گواہ کھڑا کر دیں [illegible] اس کے منہ پر مہر لگا دی جائے گی اور اس کی ران سے کہا جائے گا کہ بات کر جب اس کی ران گوشت اور ہڈیاں اس کے عمل جو کچھ کئے ہوں گے بتا دے گی حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یہ منافق ہوگا اپنی طرف سے (کچھ نہ) [illegible] کرے گا اور اسی پر اللہ کا غضب ہوگا۔ (مسلم)

| |
|---|
| وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ |
| اور اگر ہم چاہیں مٹا دیں ان کی آنکھیں پھر دوڑیں رستے پر |
| فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ |
| پھر کہاں سے دیکھ پائیں اور اگر ہم چاہیں صورت مسخ کر دیں ان کی جہاں کے تہاں |
| فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝ |
| پھر نہ آگے چل سکیں اور نہ وہ الٹے پھر کر آئیں |

### اللہ کی طرف سے مہلت

یعنی جیسے انہوں نے ہدایت سے آنکھیں بند کر لی ہیں اگر ہم چاہیں تو دنیا ہی میں ان کی ظاہری آنکھیں بھی بے نور کر دیں کہ ادھر ادھر جانے کا راستہ بھی نہ سوجھے اور جس طرح یہ لوگ شیطانی راستوں سے ہٹ کر اللہ کی راہ چلنا نہیں چاہتے ہم کو قدرت ہے کہ ان کی صورتیں بگاڑ کر بالکل اپاہج بنا دیں کہ پھر کسی طرف حرکت کے لئے اپنی جگہ سے نہ ہٹ سکیں۔ [illegible] ہماری طرف سے مہلت ملی ہوئی ہے [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ۭ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ۝ |
| اور جس کو ہم بوڑھا کریں اوندھا کریں اس کی پیدائش میں پھر کیا ان کو سمجھ نہیں |

طاقت کی دلیل۔ یعنی آنکھیں بھی ہیں اور صورت بگاڑ کر [illegible] کچھ تندرست بھی تھے یعنی ایک تندرست اور ہٹا کٹا آدمی بوڑھا ہو کر کس طرح دیکھتے دیکھتے چلنے پھرنے سے معذور کر دیا جاتا ہے اس کی تمام قوتیں [illegible] حواس جواب دے جاتے ہیں [illegible] (تفسیر عثمانی)

یعنی جس طرح ہم انسان کو اپاہج کر دیتے ہیں اسی طرح اس کی دنیاوی زندگی میں [illegible] قدرت ہے [illegible] دنیا فانی ہے: دائم قائل۔

[illegible] وما له مکان الشیخ الاهرم

یعنی [illegible] اس کے سبب سے [illegible] اور دماغی ذہانتیں بھی اس سے چھنتے چلے جاتے ہیں۔

یعنی انسان کو دنیا میں سب سے زیادہ [illegible] اس سے کوئی چیز [illegible] قابل اعتبار نہیں۔ [illegible] جب بات ہو [illegible] ضعف [illegible] کسی شاعر نے اس مضمون کو کہا ہے

ومن یصحب الدنیا طویلا تقلبت [illegible]

یعنی جو دنیا میں زیادہ رہے گا دنیا اس کی آنکھوں کے سامنے [illegible] جاتی ہے یہاں تک کہ جس چیز کو پہلے [illegible] سمجھتا تھا اسے [illegible]

### زندگی کے مختلف مراحل کا پیغام

انسان کے وجود میں یہ انقلابات قدرت حق تعالیٰ [illegible] ایک عجیب [illegible] مظہر ہے [illegible] ایک عظیم امتحان بھی ہے کہ خالق کائنات نے جتنی طاقتیں انسان کے وجود میں ودیعت فرمائی ہیں وہ در حقیقت سرکاری مشینیں ہیں جو اس کو وظیفہ کے طور پر دی گئی ہیں [illegible] جب وقت مقررہ آ جاتا ہے سب طاقتیں [illegible] ایک ایک کر کے واپس لے لی جاتی ہیں [illegible]

| |
|---|
| وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ۭ |
| اور ہم نے نہیں سکھلایا اس کو شعر کہنا اور یہ اس کے لائق نہیں |
| اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝ |
| یہ تو نصیحت ہے اور قرآن ہے صاف |

### قرآنی تعلیمات حق ہیں

یعنی یہ جو کچھ بیان ہوا وہ حقائق واقعیہ ہیں کوئی شاعرانہ تخیلات نہیں۔ اس پیغمبر نے جو قرآن دیا وہ حقائق اور روحانی تعلیمات سے معمور ہے کوئی شعر و شاعری کا دیوان نہیں جس میں [illegible] خیالی باتیں ہوں۔ بلکہ [illegible] شاعری سے [illegible]

رکھا گیا کہ باوجود قریش کے اس اہل خاندان میں سے ہونے کے جس کی معمولی لونڈیاں بھی برجستہ شعر کہنے کا ملکہ رکھتی تھیں۔ آپ نے مدت العمر کوئی شعر نہیں بنایا۔ ہاں رجز وغیرہ کے موقع پر کبھی ایک آدھ مرتبہ زبان مبارک سے مقفٰی عبارت نکل گئی، بے ساختہ شعر کے سانچے میں ڈھل گئی ہو وہ الگ بات ہے اسے شاعری یا شعر گوئی نہیں کہتے۔ آپ خود تو شعر کیا کہتے کسی دوسرے شاعر کا شعر یا مصرع بھی بحر کی رعایت کے ساتھ موزوں نہیں پڑھ پاتے تھے، مگر اس میں ایسا تغیر کر دیا کہ شعر شعر نہ رہے۔ محض مطلب شاعر ادا ہو جائے۔ غرض آپ کی طبع شریف کو شاعری سے مناسبت نہیں دی گئی تھی کیونکہ یہ چیز آپ کے منصب جلیل کے لائق نہ تھی۔ آپ حقیقت کے ترجمان تھے اور آپ کی بعثت کا مقصد دنیا کو اعلیٰ حقائق سے بدون ادنیٰ تزئین کے بے خطر روشناس کرانا تھا۔ ظاہر ہے کہ یہ کام ایک شاعر کو نہیں ہو سکتا کیونکہ شاعریت کا حسن زبان، کذب و مبالغہ، خیالی بلند پروازی اور فرضی نکتہ آفرینی کے سوا کچھ نہیں۔ شعر میں اگر کوئی جز بھی ہے تو اس کی تعبیر اور تلاش ہو سکتی ہے۔ سو وہ چیز قرآن کی نثر میں اس حد تک پائی جاتی ہے کہ ساری دنیا کے شاعر مل کر اپنے کلام کے مجموعہ میں پیدا نہیں کر سکتے۔ قرآن کریم کے اسلوب بدیع کو دیکھتے ہوئے کہہ سکتے ہیں کہ گویا شعر کی اعلیٰ روح نکال کر نثر میں ڈال دی گئی ہے۔ شاید یہی وجہ ہے کہ بڑے بڑے فصیح و عاقل دنگ ہو کر قرآن کو شعر یا سحر کہنے لگتے تھے۔ حالانکہ شعر و سحر کو قرآن سے کیا نسبت؟ کیا شاعری اور جادوگری کی بنیاد پر دنیا میں کسی قومیت و روحانیت کی ایسی عظیم الشان اور لازوال عمارت کھڑی ہوئی ہے جو قرآنی تعلیم کی اساس پر آج تک قائم شدہ دیکھتے ہو۔ یہ کام شاعروں کا نہیں، پیغمبروں کا ہے کہ خدا کے حکم سے مردہ قلوب کو ابدی زندگی عطا کرتے ہیں۔ حق تعالیٰ نے عرب کو یہ کہنے کا موقع نہیں دیا کہ آپ پہلے سے شاعر تھے شاعری سے ترقی کر کے نبی بن بیٹھے۔ (تفسیر عثمانی)

**آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا مقام شاعری سے بہت ارفع ہے:**

حسن کی روایت سے بغوی نے لکھا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ شعر بطور مثل پڑھا۔

كفى بالإسلام والشيب للمرء ناهيا

(اسلام اور بڑھاپے کی حقیقی آدمی کو گناہوں سے روکنے کیلئے کافی ہے)

حضرت ابوبکر نے عرض کیا حضور کے نبی شاعر نے تو اس طرح کہا ہے

كفى الشيب والإسلام للمرء ناهيا

آپ نے دوبارہ پڑھا اس پر حضرت ابوبکر نے کہا میں شہادت دیتا ہوں کہ آپ اللہ کے رسول ہیں اللہ نے فرمایا وما علمناه الشعر وما ينبغي له۔

مقدام بن شریح کے والد کا بیان ہے کہ میں نے حضرت عائشہ سے عرض کیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بطور مثل کبھی کوئی شعر پڑھتے تھے؟ ام المومنین نے جواب دیا، ہاں ابن رواحہ کا شعر اس طرح بطور مثل پڑھتے تھے:

ويأتيك بالأخبار من لم تزود

معمر کا بیان ہے مجھ سے قتادہ نے کہا کہ حضرت عائشہ سے کسی شخص نے پوچھا کیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کوئی شعر بطور مثل بھی پڑھتے تھے؟ ام المومنین نے فرمایا شعر سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو ہر کلام سے زیادہ نفرت تھی۔ آپ کوئی شعر بطور مثل نہیں پڑھتے تھے مگر (طرفہ) قبیلہ بنی قیس کے شاعر کا یہ شعر بطور مثل پڑھتے تھے۔

ستبدي لك الأيام ما كنت جاهلا ويأتيك بالأخبار من لم تزود

لیکن اس شعر کو آپ نے اس طرح پڑھا تھا

ويأتيك من لم تزود بالأخبار

حضرت ابوبکر نے عرض کیا یہ شعر اس طرح نہیں ہے۔ فرمایا میں شاعر نہیں ہوں اور نہ (شاعری) میرے لیے سزاوار ہے۔

**اتفاقاً مقفٰی کلام کا زبان پر جاری ہونا:**

صحیح حدیث میں ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے خندق کھودتے ہوئے حضرت عبداللہ بن رواحہ کے اشعار پڑھے، سو یاد رہے کہ آپ کا یہ پڑھنا صحابہ کے ساتھ تھا وہ اشعار یہ تھے۔

لاهم لولا أنت ما اهتدينا ولا تصدقنا ولا صلينا
فأنزلن سكينة علينا وثبت الأقدام إن لاقينا
إن الأولى قد بغوا علينا إذا أرادوا فتنة أبينا

حضور صلی اللہ علیہ وسلم ابینا کو کھینچ کر پڑھتے تھے اور ساتھ ہی بلند آواز سے پڑھتے۔ ترجمہ ان اشعار کا یہ ہے: اے اللہ اگر تو نہ ہوتا تو ہم ہدایت یافتہ نہ ہوتے نہ صدقہ دیتے اور نہ نمازیں پڑھتے، اب تو ہم پر تسکین نازل فرما اور جب دشمنوں سے لڑائی ہو جائے تو ہمیں ثابت قدمی عطا فرما۔ ان لوگوں نے ہم پر سرکشی کی ہے جب کبھی فتنے کا ارادہ کرتے ہیں تو ہم انکار کرتے ہیں۔ اسی طرح ثابت ہے کہ حنین کے دن آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے خچر کو دشمنوں کی طرف بڑھاتے ہوئے فرمایا:

أنا النبي لا كذب أنا ابن عبد المطلب

اس کے بارے میں یہ یاد رہے کہ اتفاقیہ ایک کلام آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان سے نکل گیا جو وزن شعر پر ہو اتفاقیہ ہے نہ کہ قصداً آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے شعر کہا ہو۔ حضرت جندب بن عبداللہ فرماتے ہیں ہم حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ایک غار میں تھے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی انگلی زخمی ہو گئی تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا

هل أنت إلا إصبع دميت وفي سبيل الله ما لقيت

نہیں تو ایک انگلی ہی تو ہے اور تو راہ خدا میں خون آلود ہوئی ہے یہ بھی

[illegible] اچھی۔

آپ نے فرمایا:

ان تغفر اللّٰھم تغفر جمًّا وای عبد لک لا الما

[illegible]

[illegible]

**اشعار کی تحسین:** [illegible]

| |
|---|
| لِّيُنذِرَ مَن كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ |
| [illegible] |
| الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ |
| [illegible] |

**قرآن زندہ دلوں کی کتاب ہے۔**

[illegible]

| |
|---|
| أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا |
| [illegible] |
| أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ |
| [illegible] |
| فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ وَلَهُمْ فِيهَا |
| [illegible] |
| مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ |
| [illegible] |

**آیات تکوینیہ:** [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ |
| [illegible] |
| يُنصَرُونَ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ |
| [illegible] |
| وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ |
| [illegible] |

**اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کی ناشکری**

[illegible]

[illegible] (تفسیر عزیزی)

[illegible] حضرت ابو ذر [illegible] روایت [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] فرمایا [illegible] ایک عجیب معاملہ [illegible]

أَلَّا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ [illegible]

وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ [illegible]

[illegible]

فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا

آپ کو رنجیدہ نہ کریں ان کی باتیں ہم جانتے ہیں

يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ

جو وہ چھپاتے ہیں اور جو ظاہر کرتے ہیں

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو تسلی:

[illegible]

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ

کیا انسان نے نہیں دیکھا کہ ہم نے اس کو ایک نطفہ سے

فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ

[illegible]

[illegible] (تفسیر حقانی)

[illegible] حضرت ابن عباس [illegible] روایت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا [illegible]

[illegible] هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ [illegible]

[illegible]

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ

[illegible]

يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ

[illegible]

ناچیز قطرہ کی جرأت.

[illegible]

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ

[illegible]

وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿۷۹﴾

اور وہ سب طرح کا بنانا جانتا ہے ۞

### خالق کیلئے دوبارہ زندہ کرنا کوئی مشکل نہیں:

یعنی جس نے پہلی مرتبہ ان ہڈیوں میں جان ڈالی اسے دوسری بار جان ڈالنا کیا مشکل ہے۔ بلکہ پہلے سے زیادہ آسان ہونا چاہئے (وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ) اور اس کا علم محیط ہے تو سب ہی چیز آسان ہے پہلی مرتبہ ہو یا دوسری مرتبہ۔ وہ ہر طرح بنانا جانتا ہے۔ بدن کے اجزاء اور ذرے کہیں کے کہیں پڑے ہوں جہاں کہیں منتشر ہو گئے ہوں ان کا ایک ایک ذرہ اس کے علم میں ہے۔ (تفسیر عثمانی)

خلاصہ در حقیقت جسم انسانی کے مختلف اور متفرق اجزاء کا مجموعہ ہے اور انسان کے اجزاء متفرقہ کا خلاصہ وہ لب لباب ہے جس کو قطرۂ آب (نطفہ) میں مرادف کیا اور کان اور آنکھ بنا کر اور آنکھیں اور زبان کے تمام اجزاء لطیفہ جمع ہیں اور یہ تمام اجزاء لطیفہ اجزاء روحیہ سے متشکل ہوتے ہیں اس لئے کہ جس کے تمام اجزاء اور اصل قطرہ سے پیدا شدہ ہیں جس خدائے حکیم و قدیر نے پہلی بار جسم کے ان اجزاء متفرقہ سے انسان کو پیدا کر سکتا ہے وہ مرنے کے بعد بھی گلی اور سڑی ہڈیوں کے متفرق ریزوں کو جمع کر کے دوبارہ بھی زندہ کر سکتا ہے پہلی بار پیدا کرنا اور دوسری بار پیدا کرنا خدا کی قدرت کے اعتبار سے سب برابر ہے۔ (معارف کاندھلوی)

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ

جس نے بنا دی تم کو سبز درخت سے

نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ﴿۸۰﴾

آگ پھر اب تم اس سے سلگاتے ہو ۞

### دوبارہ پیدائش کی دلیل:

یعنی اول پانی سے سبز و شاداب درخت تیار کیا پھر اس کی تر و تازہ ٹہنیوں کو رگڑ کر ایندھن بنا دیا جس سے اب تم آگ نکالتے ہو۔ جو خدا ایسی متضاد صفات کو بدل سکتا ہے کیا وہ ایک چیز کی موت و حیات کے الٹ پھیر پر قادر نہیں۔ (تنبیہ) بعض سلف نے شجر اخضر (سبز درخت) سے خاص وہ درخت مراد لئے ہیں جن کی شاخوں کو آپس میں رگڑنے سے آگ نکلتی ہے جیسے بانس کا درخت ہے یا عرب میں مرخ اور عفار تھے۔ واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

### آگ کا درخت:

حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا دو قسم کے درخت ہیں ایک کو مرخ کہا جاتا ہے اور دوسرے کو عفار دونوں درختوں کی سبز شاخیں جن سے پانی ٹپکتا ہو کاٹ لی جائیں پھر مرخ کو عفار سے رگڑا جائے تو ان سے آگ نکلتی ہے عرب کہتے ہیں ہر درخت میں آگ ہے اور مرخ و عفار میں بہت زیادہ ہے۔ حکماء کہتے ہیں سوائے عناب کے ہر درخت میں آگ ہے۔

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ

کیا جس نے بنائے آسمان اور زمین

بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ

نہیں بنا سکتا ہے ان جیسے کیوں نہیں

وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿۸۱﴾

اور وہی ہے اصل بنانے والا سب کچھ جاننے والا ۞

یعنی جس نے آسمان و زمین جیسی بڑی بڑی چیزیں پیدا کیں اسے تمہارے جیسی چھوٹی چیزوں کا پیدا کرنا کیا مشکل ہے۔ (تفسیر عثمانی)

### بحر و بر میں بکھری ہوئی راکھ سے دوبارہ پیدا کرنا:

حذیفہ بن یمان رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ میں نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ کہتے سنا کہ گزشتہ امتوں میں سے ایک شخص پر موت آئی جو بدعمل تھا اس نے اپنے اہل و عیال کو جمع کر کے وصیت کی کہ جب میں مر جاؤں تو لکڑیوں کا ایک بڑا انبار جمع کر کے مجھے اس میں رکھ کر آگ لگا دینا جب آگ خوب تیز ہو جائے تو مجھے اس میں ڈال کر جلا دینا یہاں تک کہ جب میرا گوشت پوست سب جل جائے تو ان ہڈیوں کو پیس کر باریک کر لینا اور کسی تیز ہوا کے دن آدھا سمندر میں اڑا دینا اس کے گھر والوں نے حسب وصیت اس کے ساتھ ایسا ہی کیا۔ اللہ تعالیٰ نے خشکی و تری کو حکم دیا کہ اس کے ذرات جہاں جہاں ہوں جمع کر کے حاضر کریں جب سب ذرات جمع ہو گئے تو اللہ نے حکم دیا زندہ ہو جا۔ اسی طرح سے وہ شخص دوبارہ زندہ موجود ہو گیا اللہ عزوجل نے اس سے پوچھا کہ یہ حرکت تو نے کیوں کی؟ اس نے عرض کیا کہ اے پروردگار میں نے یہ حرکت تیرے خوف کی وجہ سے کی۔ اللہ تعالیٰ نے اس کو بخش دیا۔ (رواہ البخاری و مسلم مختصراً)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

غرض یہ کہ خدا تعالیٰ سے جس کو اصل تعلق ہوتی ہے وہ خوب جانتا ہے کہ خدا تعالیٰ نے ہزار بار پیدا کرے اور ہزار بار موت دے اور ہزار بار زندہ کرنے پر قادر ہے اور یہ امر خدا کی قدرت کاملہ کے اعتبار سے نہایت آسان ہے اور نہایت سہل ہے۔ (معارف کاندھلوی)

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ

[illegible]

لَهُ كُن فَيَكُونُ

[illegible]

[illegible]

مخلوق کی قدرت پر خالق کی قدرت و قوت کا تذکرہ

[illegible]

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ

[illegible]

وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

[illegible]

حکومت بس اللہ ہی کی ہے

[illegible]

تم سورۃ یٰسین ولله الحمد والمنة

# سورة الصافات

[illegible]

سورت کے مضامین

[illegible]

[illegible]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

[illegible]

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا

[illegible]

صف باندھنے والے

[illegible]

[illegible]

## نماز میں صفوں کی درستی اور اس کی اہمیت

چنانچہ نمازیوں کو بھی جماعت کے دوران اسی طرح صف بندی کا حکم دیا گیا ہے۔ حضرت جابر بن سمرہ سے روایت ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: تم نماز میں اس طرح صف بندی کیوں نہیں کرتے جس طرح فرشتے اپنے رب کے حضور کرتے ہیں؟ ہم نے پوچھا فرشتے اپنے رب کے حضور کس طرح صف بندی کرتے ہیں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے جواب دیا: وہ صفوں کو پورا کرتے ہیں اور صف میں جم کر کھڑے ہوتے ہیں (یعنی درمیان میں خالی جگہ نہیں چھوڑتے)۔ (تفسیر [illegible])

نماز میں صفوں کو پورا کرنے اور برابر رکھنے کی تاکید میں کئی احادیث وارد ہوئی ہیں، ان میں سے ایک حدیث یہ ہے، حضرت ابو مسعود رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نماز میں ہمارے کندھوں پر ہاتھ رکھ کر فرمایا کرتے تھے "سیدھے رہو، آگے پیچھے مت ہو ورنہ تمہارے دلوں میں اختلاف پیدا ہو جائے گا۔" [illegible]

| |
|---|
| فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا |
| پھر ڈانٹنے والوں کی [illegible] |

### برائی سے روکنے والی قوتیں

یعنی وہ فرشتے جو شیطانوں کو ڈانٹ کر بھگاتے ہیں [illegible] کے [illegible] بادلوں کو ڈانٹ کر [illegible] سے روکتے ہیں [illegible] جو لوگوں کو برائی سے روکتے اور [illegible] اللہ کا ذکر کرتے رہتے ہیں خصوصاً میدان جہاد میں کفار کے مقابلہ پر ان کی [illegible] بہت سخت ہوتی ہے۔ (تفسیر [illegible])

[illegible] (قسم) [illegible] میں قوت [illegible] ہے [illegible] الزاجرات سے مراد قرآن کی وہ آیات [illegible] باتوں [illegible] ہیں۔ (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا |
| پھر ذکر پڑھنے والوں کی [illegible] |

یعنی وہ فرشتے یا آدمی جو اللہ کا کلام سننے کے بعد پڑھتے اور یاد کرتے ہیں [illegible] (تفسیر [illegible])

[illegible] ہیں کہ [illegible] الزاجرات [illegible] سے [illegible] مراد ہیں جو [illegible] صف بستہ [illegible] ہیں [illegible] سے روکتے ہیں اور [illegible] کی تلاوت کرتے ہیں۔

حضرت عبداللہ بن مسعود [illegible] فرشتے ہیں [illegible] [illegible] کو [illegible] ہے [illegible] فرشتے ہیں [illegible] باتوں میں [illegible] [illegible] صفوں [illegible] کی [illegible] [illegible] [illegible] کا مطالعہ کیا گیا ہے۔ [illegible]

نکتہ: [illegible] صف [illegible] ہیں [illegible] صف بندی کی جائے [illegible] بار [illegible] صفت [illegible] [illegible] [illegible] (تفسیر [illegible])

### مخلوق کی قسم

[illegible] مخلوقات کی قسم [illegible] ہے [illegible] عظمت و [illegible] قسم [illegible] علیہ وسلم [illegible] قرآن [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] ہے۔

حضرت [illegible] فرماتے ہیں

"اللہ تعالیٰ [illegible] [illegible] [illegible]

| |
|---|
| اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ |
| بے شک تمہارا معبود ایک ہے |

### فرشتوں اور نیک لوگوں کی گواہی

[illegible] فرشتے [illegible] [illegible] شہادت دیتے رہے ہیں کہ سب کا معبود ایک ہے [illegible] [illegible] ہیں۔ [illegible]

کافروں کی تردید [illegible] اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ [illegible] ایک معبود بنا دیا یہ عجیب بات ہے [illegible] کافروں کے اس قول کی تردید [illegible] (تفسیر [illegible])

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا
رب آسمانوں کا اور زمین کا اور جو کچھ ان کے بیچ میں ہے
وَرَبُّ الْمَشَارِقِ
اور رب مشرقوں کا ☆

**مشارق اور مغارب کا رب:**

شمال سے جنوب تک ایک طرف مشرقیں ہیں۔ سورج کی ہر روز جدا اور ہر ستارے کی جدا الگ وہ نقطے جن سے اس کا طلوع ہوتا ہے اور دوسری طرف اتنی ہی مغربیں ہیں۔ شاید مغارب کا ذکر یہاں اس لئے نہیں کیا کہ مشارق سے بطور مقابلہ کے خود ہی سمجھ میں آجائیں گی۔ اور ایک حیثیت سے طلوع شمس و کواکب کو حق تعالیٰ کی شان حکمت و عظمت کے ثابت کرنے میں بہ نسبت غروب کے زیادہ دخل ہے۔ واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

مشارق سے مراد ہیں تمام ستاروں کے طلوع کے مقامات یا سورج کے روزانہ طلوع ہونے کے مقامات سال کے تین سو ساٹھ دن ہوتے ہیں اور ہر دن طلوع کا مقام بدلتا رہتا ہے اور مقامات طلوع کے اختلاف کے مطابق غروب کے مقامات بھی مختلف ہوتے ہیں اس لئے صرف مشارق کا ذکر کیا مغارب کے ذکر کی صراحت نہیں کی اس کے علاوہ آفتاب کے طلوع سے اللہ کی نعمت اور قدرت کی عظمت کا زیادہ ظہور ہوتا ہے اس لئے مشارق کا ذکر کیا۔ (تفسیر مظہری)

اِنَّا زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِزِیْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ
ہم نے رونق دی ورلے آسمان کو ایک رونق جو تارے ہیں ☆

**آسمان کی زینت:**

یعنی اندھیری رات میں یہ آسمان بے شمار ستاروں کی جگمگاہٹ سے دیکھنے والوں کو کیا خوبصورت اور پر رونق معلوم ہوتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

زینت سے مراد ہے ستاروں کی روشنی اور ان کے اوضاع حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے بزینة الکواکب کا ترجمہ کیا ہے بضوء الکواکب۔

[illegible] کا مطلب یہ ہے کہ ہم نے ستاروں کو کواکب کی زینت کیلئے اور شیطان سرکش سے حفاظت کیلئے پیدا کیا کواکب سے شہاب کے ذریعہ شیطان پر مارے جاتے ہیں۔

بہت سے ستارے ایسے ہیں کہ [illegible] آسمان دنیا کی ہیں۔ (تفسیر مظہری)

**فلاسفہ کا قول:**

فلاسفہ متاخرین کہتے ہیں کہ کواکب فضاء میں قوت جاذبہ کے ذریعے قائم ہیں کرۂ آسمان میں جڑے ہوئے نہیں ہیں یہ مسئلہ اسلام کے نزدیک عقلاً جائز ہے اور قدرت خداوندی کے تصرف میں داخل ہے۔ (معارف القرآن)

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَیْطٰنٍ مَّارِدٍ
اور بچاؤ بنایا ہر شیطان سرکش سے ☆

**ستاروں کا مقصد:**

یعنی تاروں سے آسمان کی زینت و رونق ہے اور بعض تاروں کے ذریعہ سے جو ٹوٹتے ہیں شیاطین کو روکنے اور دفع کرنے کا کام لیا جاتا ہے۔ یہ ٹوٹنے والے ستارے کیا ہیں؟ آیا کواکب نوریہ کے علاوہ کوئی مستقل نوع کواکب کی ہے یا کواکب نوریہ کی شعاعوں ہی سے [illegible] ایک طرح کی آتش سوزاں پیدا ہو جاتی ہے یا خود کواکب کے ذرات ٹوٹ کر گرتے ہیں اس میں علماء و حکماء کے مختلف اقوال ہیں، بہر حال ان کی حقیقت کچھ ہی کیوں نہ ہو، ہم شیاطین کو مارنے کا کام بھی ان سے لیا جاتا ہے۔ اس کی کچھ تفصیل سورۂ "حجر" کے فوائد میں گزر چکی ملاحظہ کر لی جائے۔ (تفسیر عثمانی)

مطلب یہ ہے کہ کواکب سے شعلے جو کر شیاطین کو سنگسار کرتے ہیں اور یہی شعلے نام شہاب ثاقب یا ٹوٹنے والے ستارے کہتے ہیں جیسا کہ امام رازی نے اپنی تفسیر میں لکھا ہے۔ [illegible]

خلاصہ کلام یہ کہ اللہ تعالیٰ نے ستاروں کو آسمان دنیا کی زینت کیلئے بنایا ہے اور شیاطین کی سنگساری کیلئے بنایا ہے۔ بڑے بڑے ستارے آسمان کی زینت ہیں اور چھوٹے چھوٹے ستارے شیاطین کی سنگساری کیلئے ہیں۔ (معارف کاندھلوی)

بخاری نے قتادہ کی روایت سے بیان کیا ہے اللہ نے ستاروں کو تین امور کیلئے پیدا کیا آسمان کی زینت بنایا، شیاطین پر مارنے کیلئے (بنایا) راستہ بتانے کی علامت (بنایا) اس لئے اگر کوئی ان کی کوئی دوسری غرض بیان کرتا ہے تو غلطی کرتا ہے۔

**شیاطین کی روک تھام:**

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ کا بیان ہے کہ شیاطین پہلے جا کر آسمانوں میں بیٹھتے تھے وحی سن لیتے تھے اس وقت ان پر تارے نہیں ٹوٹتے تھے یہ وہاں کی وحی سن کر زمین پر آکر ایک ایک کی دس دس کر کے کاہنوں کے کانوں میں ڈال دیتے تھے۔ (تفسیر ابن کثیر)

لَا یَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَیُقْذَفُوْنَ
سن نہیں سکتے اوپر کی مجلس تک اور پھینکے جاتے ہیں ان پر
مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۙ دُحُوْرًا
ہر طرف سے بھگانے کو ☆

اوپر کی مجلس سے مراد فرشتوں کی مجلس ہے یعنی شیاطین کی یہ طاقت نہیں رہی کہ فرشتوں کی مجلس میں پہنچ کر کوئی بات وحی الٰہی کی سن آئیں جب ادھر کا ارادہ کر

کے علاوہ [illegible] کہ [illegible] کی طرف سے ہوتے ہیں [illegible] (تفسیر [illegible])

### کاہنوں کے کاروبار کا پس منظر

بخاری نے حضرت ابوہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا جب اللہ آسمان میں کسی امر کا حکم دیتا ہے تو فرشتے عاجزی سے اپنے پر مارتے ہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پتھر پر زنجیر کی آواز [illegible] جب ان کے دلوں سے گھبراہٹ دور ہو جاتی ہے تو پوچھتے ہیں تمہارے رب نے کیا فرمایا [illegible] حق فرمایا اور وہ بلند و برتر ہے [illegible] چوری سے سننے والے (یعنی شیطان) اس کو سن پاتے ہیں اور (یہ چوری سے سننے والے) ایک کے اوپر ایک (تہ بہ تہ) ہوتے ہیں [illegible] اسی طرح [illegible] سفیان راوی نے اپنے ہاتھ [illegible] اسی طرح شیطان [illegible] اوپر والا شیطان [illegible] نیچے والے شیطان [illegible] یہاں تک کہ [illegible] کاہن کی زبان تک پہنچا دیتا ہے [illegible] شیطان کے پہنچانے سے پہلے [illegible] شیطان کو [illegible] شہاب [illegible] ایک بات میں (جو صحیح ہوتی ہے) [illegible] سو جھوٹ ملا کر [illegible] بیان کرتا ہے [illegible] کیا فلاں دن اس نے ہم سے ایسا ایسا نہیں کہا تھا؟

بغوی نے لکھا ہے کہ جس شیطان پر انگارا مارا جاتا ہے کیا وہ فوراً مر جاتا ہے [illegible] جل جاتا ہے [illegible] جیسے [illegible] کشتی میں بیٹھنے والوں کے [illegible] (تفسیر مظہری)

### وَلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ

[illegible]

### شیاطین کیلئے دائمی عذاب

یعنی دنیا میں [illegible] اور آخرت [illegible] دائمی عذاب الگ رہا۔ (تفسیر [illegible])

### إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ

مگر جو کوئی [illegible]

یعنی شیاطین میں سے [illegible] اچک لے [illegible] تو [illegible] شہاب ثاقب تعاقب کرتے ہیں [illegible] (تفسیر [illegible])

الخطفۃ [illegible] شہاب [illegible] (تفسیر مظہری)

### موجودہ سائنسدانوں کا خیال

موجودہ سائنسدانوں کا خیال ہے کہ [illegible] شہاب ثاقب [illegible] ۳۳ [illegible]

جدید [illegible] قرآنی مطلب بیان [illegible] شہاب ثاقب [illegible]

(تفہیم القرآن [illegible])

مفسر [illegible]

انکارات کئے ہوئے ہیں، وہی بات ان کی عادت بھی ہے۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا |
| سو ان سے پوچھ یہ لوگ زیادہ مشکل ہیں بنانے میں یا جتنی خلقت کہ ہم نے بنائی |

### انسان کا دوبارہ زندہ کرنا کوئی مشکل نہیں:

یعنی منکرین بعث سے دریافت کیجئے کہ آسمان، زمین، ستارے، فرشتے، شیاطین وغیرہ مخلوقات کا پیدا کرنا ان کے خیال میں زیادہ مشکل کام ہے یا خود ان کا پیدا کرنا، ان کو بھی ایک مرتبہ پیدا کر چکے کے بعد ظاہر ہے جو خدا ایسی عظیم الشان مخلوقات کا بنانے والا ہے اس کو ان کا دوبارہ بنانا کیا مشکل ہوگا۔ (تفسیر عثمانی)

نکتہ: مَنْ (ذوی العقول کیلئے) استعمال ہوتا ہے لیکن اس جگہ ذوی العقل کو بے عقل مخلوق پر تغلیب دے کر سب اشیاء اور بے عقل مخلوق کیلئے استعمال کیا ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ |
| ہم نے ہی ان کو بنایا ہے ایک چپکتے گارے سے |

### مادہ تخلیق:

یعنی ان کی اصل حقیقت ہمیں سب معلوم ہے ایک طرح کے چپکتے گارے سے جس کا پتلا ہم نے تیار کیا۔ تو کیا اس کے پیدا کرنے والے آسمان، زمین کا بنانے والا اس کے دوبارہ پیدا کرنے پر قادر نہیں۔ جس طرح پہلے تم کو مٹی سے بنایا دوبارہ بھی مٹی سے نکال کر کھڑا کردیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

لازب چپکنے والی جو ہاتھ سے چپک جائے۔ مجاہد و ضحاک نے لازب کا ترجمہ کیا "سڑی ہوئی"۔ انسانوں کی (جسمانی) تخلیق اور آسمان و زمین کی تخلیق میں یہی بڑا فرق ہے کہ انسانوں کی تخلیق کا مادہ تو چپکدار کیچڑ ہے۔

### کافروں کے اشکال کا شافی جواب:

کافروں نے کہا تھا ءَاِذَا مِتْنَا ... لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ان کے قول کے خلاف اللہ نے بطور استدلال فرمایا کہ ان کی تخلیق اول سڑی ہوئی چپکدار کیچڑ سے ہوئی ہے جو تراب (خاک) سے ہی بنی ہے۔ تخلیق کا یہ کیسے انکار کرسکتے ہیں۔ طین لازب میں اجزاء آبی اور اجزاء خاکی مخلوط ہوتے ہیں۔ مرنے کے بعد بھی یہ اجزاء تحلیل ہو کر اپنی اپنی جگہ باقی رہتے ہیں پھر دوبارہ اجتماع اور خلط سے کون روک سکتا ہے۔ مادہ کی قابلیت میں فرق نہیں ہوا اور فاعل کی قدرت میں کمزوری نہیں آئی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ |
| بلکہ تو کرتا ہے تعجب اور وہ کرتے ہیں ٹھٹھے |

### کافروں کی بے وقوفی:

یعنی تعجب ہے کہ ایسی صاف باتیں کیوں نہیں سمجھتے اور مخالفت کرتے ہیں کیسے بے عقل ہیں، تعجب کی بات ہے۔ (تفسیر عثمانی)

### آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا تعجب:

قتادہ نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو تعجب تھا کہ نزول قرآن کے بعد بھی بنی آدم گمراہ کس طرح رہ سکتے ہیں۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو یقین تھا کہ جو شخص بھی اس قرآن کو سنے گا وہ ضرور اس پر ایمان لے آئے گا اور ایمان لے آئے گا لیکن مشرکین اس کو سن کر بھی ایمان نہیں لائے بلکہ مذاق اڑانے لگے اس لیے عجبت کے بصورت خطاب فرمایا یعنی آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے تعجب کا مذاق اڑاتے ہیں یعنی آپ جو ان کی گمراہی کی فکر کرتے ہیں یہ اس کی ہنسی اڑاتے ہیں۔

تعجب کا معنی: تعجب اس حالت کو کہتے ہیں جو کسی غیر معمولی بات کو دیکھنے سے انسان کے اندر پیدا ہو جاتی ہے۔ تعجب سے یہی حالت مراد ہے۔ ایک حدیث میں عجب ربك من قوم يقادون الى الجنة في السلاسل اسی طرح سبحانه ما اعظم شانه میں صیغۂ تعجب اسی معنی کیلئے مستعمل کیا گیا ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً |
| اور جب ان کو سمجھائیے نہیں سوچتے اور جب دیکھیں کچھ نشانی |
| يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ |
| ہنسی میں ڈال دیتے ہیں اور کہتے ہیں اور کچھ نہیں |
| هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ |
| یہ تو کھلا جادو ہے |

یعنی نصیحت سن کر غور و فکر نہیں کرتے اور جو معجزات و نشانات دیکھتے ہیں انہیں جادو کہہ کر ہنسی میں اڑا دیتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ |
| کیا جب ہم مر گئے اور ہو گئے مٹی اور ہڈیاں تو کیا ہم کو پھر اٹھانا ہے |
| اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ |
| کیا ہمارے اگلے باپ دادوں کو بھی |

### کافروں کی ہٹ دھرمی:

وہ اس مرحلے کی ایک ایک منزل کا نام لے جاتے ہیں کہ صاحب جب ہمارا بدن خاک میں رل کر مٹی ہو گیا صرف ہڈیاں باقی رہ گئیں بلکہ ان سے بھی گزر کر جب ہمارے باپ دادا جن کو مرے ہوئے قرن گذر گئے شاید ہڈیاں بھی باقی نہ رہی ہوں، ہم

تمہاری اس حالت میں کہ تم سب عاجز و ذلیل ہو کر حاضر ہو گے۔

قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ۚ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ

تو کہہ دو کہ ہاں اور تم ذلیل بھی ہو گے وہ تو ایک ڈانٹ ہی ہے

وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ

ایک جھڑکی ہوگی پھر اس وقت یہ دیکھنے لگیں گے

اتمام حجت: یعنی اب ضرور اٹھائے جاؤ گے اور اس وقت ذلیل و خوار کر کے حاضر کئے جاؤ گے۔ (تفسیر عثمانی)

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ

اور کہیں گے ہائے شامت یہ جزا کا دن ہے

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ یعنی ایک ڈانٹ میں سب اٹھ کھڑے ہوں گے اور حیرت و دہشت سے ادھر ادھر دیکھنے لگیں گے اور اپنے آپ پر افسوس کریں گے۔ (تفسیر عثمانی)

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ

یہی فیصلے کا دن ہے جس کو تم جھٹلاتے تھے

یعنی یہ وہی فیصلہ کا دن آ پہنچا جس کی انبیاء خبر دیتے اور تم ہنسی اڑایا کرتے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا

جو لوگ ظلم کرتے تھے ان کو اور ان کے ہم جنسوں کو اور

كَانُوا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ

جن کو یہ پوجتے تھے خدا کے سوا

فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ

پھر ان کو دوزخ کی راہ پر لے چلو

یہ حق تعالیٰ کی طرف سے خطاب ہوگا

یہ حکم ہوگا فرشتوں کو کہ ان سب کو اکٹھا کر کے دوزخ کا راستہ بتاؤ۔ (یعنی) "ازواج" (جوڑے) سے مراد ہیں ایک قسم کے مجرم یا ان کی عورتیں اور "وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ" سے اصنام و شیاطین وغیرہ مراد ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

ہم مشربوں کا اجتماع:

بیہقی نے بعض تابعین کا قول بیان کیا ہے۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے فرمایا

احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ یعنی ان کے ہم مشرب لوگوں کو جمع کرو

مراد ہیں یعنی ہم مذہب، شراب خوار شراب خواروں کے ساتھ، زنا کار زنا کاروں کے ساتھ، سود خوار سود خواروں کے ساتھ اٹھائے جائیں گے سب ہم مشرب جنت میں ساتھ ہوں گے اور ہم مشرب دوزخ میں بھی ساتھی ہوں گے۔ (تفسیر مظہری)

اللہ نے فرمایا ہے يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ (یعنی اس دن سب مومن مخلوق جس کی پرستش مشرک کیا کرتے تھے جیسے حضرت عیسیٰ علیہ السلام، حضرت عزیر علیہ السلام، ملائکہ وغیرہ وہ سب ... روشنی میں ہوں گے اور جو ان کے علاوہ شیاطین، بت، پتھر وغیرہ ان کے ساتھ جہنم میں جائیں گے)

فَاهْدُوهُمْ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے فرمایا دوزخ کا راستہ بتاؤ۔ بعض کہتے ہیں کہ ان کو دوزخ کی طرف ہانکو اور پیچھے سے ہنکانے والے کو بھی عرب ہادی کہتے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

وَقِفُوهُمْ ۖ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ

اور ان کو ٹھہرائے رکھو کہ ان سے کچھ پوچھنا ہے

یعنی دوزخ میں بھیجنے کے حکم کے بعد کچھ دیر ٹھہرائے جائیں گے کہ ان سے ایک سوال کرنا ہے جو آگے "مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ" میں مذکور ہے۔ (تفسیر عثمانی)

مسلم نے حضرت ابو برزہ اسلمی رضی اللہ عنہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کسی بندے کے قدم اپنی جگہ سے نہیں ہٹیں گے جب تک اس سے چار باتوں کی پوچھ گچھ نہیں کر لی جائے گی۔

(۱) عمر کس کام میں گزاری (۲) جسم کس کام میں لگا کر کھو دیا

(۳) علم کے بعد کیا عمل کیا (۴) مال کہاں سے کمایا اور کس راستے میں صرف کیا۔ ترمذی اور دارمی نے حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ کی روایت سے بھی اسی طرح کی حدیث نقل کی ہے۔

حضرت ابو الدرداء رضی اللہ عنہ کا خوف:

حضرت ابو الدرداء رضی اللہ عنہ نے فرمایا مجھے سب سے زیادہ خوف اس بات کا ہے کہ جب حساب ہوگا تو مجھ سے کہا جائے گا تو جانتا تھا پھر تو نے عمل کیا کیا؟

جہنم کے سات پل:

ابن ابی حاتم نے ابن عباس رضی اللہ عنہ کا قول نقل کیا ہے کہ جہنم کے سات پل ہیں۔ صراط سب پلوں سے آگے ہے، پہلے پل پر بندہ کو روک لیا جائے گا اور (ملائکہ) کہیں گے ان کو روک لو ان سے پوچھ گچھ کی جائے گی۔ چنانچہ نماز کے متعلق باز پرس کی جائے گی جس میں جو ہلاک ہونے والے ہیں ہلاک ہو جائیں گے (دوزخ میں گرا دیے جائیں گے) اور جو نجات پانے والے ہیں وہ نجات پا جائیں گے دوسرے پل پر پہنچ کر امانت کے متعلق باز پرس کی جائے گی کہ امانت کس طرح ادا کی یا پوری پوری ادا کی یا ...

کے نتیجے میں جو لوگ ہلاک ہونے والے ہیں ہلاک ہو جائیں گے اور جو نجات پانے والے ہیں نجات پا جائیں گے۔ پھر تیسرے لوگ پر مشتمل ہے تو قرب و دوری کے متعلق سوال کیا جائے گا کہ جو قرب و رحمت کے نتیجے میں ہلاک ہونے والے ہلاک ہو جائیں گے اور نجات پانے والے نجات پا جائیں گے۔ دوسری یہ کہ اس روز رحم (رشتہ قرابت) ہوا سے معلق ہوگا اور کہے گا جس نے مجھے جوڑا اس کو اللہ بھی جوڑے گا اور جس نے مجھے توڑا اس سے اللہ بھی تعلق منقطع کر لے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ |
| کیا ہوا تم کو ایک دوسرے کی مدد نہیں کرتے |
| بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ |
| کوئی نہیں وہ آج آپ کو پکڑاتے ہیں |

## کافروں کی ذلت۔

یعنی دنیا میں تو "نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ" کہا کرتے تھے (کہ ہم سب مل کر بدلہ لے لیں گے) آج کیا ہوا کہ کوئی اپنے ساتھی کی مدد نہیں کرتا بلکہ ہر ایک ... گردن ڈالے ہوئے کھڑا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ |
| اور منہ کیا بعضوں نے بعضوں کی طرف لگے پوچھنے |
| قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ |
| بولے تم ہی تھے کہ آتے تھے ہم پر داہنی طرف سے |

یعنی (داہنے ہاتھ) یمین سے مراد قوت اور زور ہے۔ تم ہی تھے جو ہم پر چڑھے آتے تھے، بہکانے کو اور بکا کر اور مرعوب کر کے یا یمین سے مراد خیر و برکت کی جانب ہے یعنی تم ہی تھے کہ ہم پر چھائے رہتے تھے، بھلائی اور نیکی سے روکنے کے لئے۔ یہ گفتگو تابعین اور متبوعین (کمزوروں اور زبردستوں) کے درمیان ہوگی۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا |
| وہ بولے کوئی نہیں پر تم ہی نہ تھے یقین لانے والے اور ہمارا تم پر |
| عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ |
| کچھ زور نہ تھا پر تم ہی تھے لوگ حد سے چلنے والے |
| فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ |
| سو ثابت ہوگئی ہم پر بات ہمارے رب کی ہم کو مزہ چکھنا ہے |

| |
|---|
| فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ |
| سو ہم نے تم کو بہکایا جیسے ہم تھے بہکے ہوئے |

## جھوٹے معبودوں کی بیزاری۔

یعنی تم کو ایمان لانے سے ہم نے روکا اور کہتے ہیں ہمارا قصور نہیں۔ ہم تو خود جاہل تھے ایمان نہ لائے تم لوگ خود ہی عقل انصاف کی حد سے نکل گئے اور ایمان کا نام نہ لیا اور ہمارے بہکانے میں آ گئے۔ اگر عقل سلیم اور واقعیت سے کام لیتے تو ہماری باتوں پر کیوں دھیان دھرتے۔ ہم جیسا ہے خود گمراہ تھے ایسا گمراہ سے ہی تم کو اپنی طرف بلاتے تھے اور کیا توقع ہو سکتی ہے ہم نے وہی کیا جو ہمارے حال کے مناسب تھا لیکن تم کو کیا مصیبت نے گھیرا کہ ہمارے بہکانے میں آ گئے۔ بہرحال جو ہونا تھا ہو چکا۔ خدا کی حجت ہم پر قائم ہوئی اور اس کی وہ بات لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ثابت ہو کر رہی آج ہم سب کو اپنی غلط کاریوں اور بدمعاشیوں کا مزہ چکھنا ہے۔

| |
|---|
| فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ |
| سو وہ اس دن عذاب میں شریک ہیں |
| إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ |
| ہم ایسا ہی کرتے ہیں گنہگاروں کے حق میں |

یعنی سب مجرم، تابع ہوں یا متبوع عذاب میں شریک ہوں گے جیسے جرم میں شریک تھے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ |
| وہ تھے کہ جب کوئی ان سے کہتا کسی کی بندگی نہیں سوائے |
| إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ |
| اللہ کے تو غرور کرتے تھے |

تکبر کا نقصان۔ یعنی ان کا غرور اور دماغ ہے کہ نبی کے ارشاد سے یہ کلمہ (لا الہ الا اللہ) زبان پر لائیں جس سے ان کے معبودوں کی نفی ہوتی ہے خود اپنی ... سے کچھ نہیں سمجھتے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ |
| اور کہتے کیا ہم چھوڑ دینے والے ہیں اپنے ٹھاکروں کو کہنے سے ایک شاعر دیوانے کے |
| بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ |
| کوئی نہیں وہ لایا ہے سچا دین اور سچا کیا سب رسولوں کو |

### بے وقوفی کی انتہاء:

یعنی شاعروں کا جھوٹ تو مشہور ہے مگر [illegible] شاعر کیسے کہتے ہو جو ہمیشہ حامل سچائی کے کر آیا ہے [illegible] پیغمبروں کی تصدیق کرتا ہے یہ مجنون اور دیوانے ایسے سچے [illegible] کرتے ہو؟ (تفسیر عثمانی)

صَدَّقَ الْمُرْسَلِیْنَ کا مطلب یہ ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا [illegible] سابق پیغمبروں کا [illegible] ان کی تصدیق کرتے [illegible] کے موافق ہوا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِیْمِ ﴿۳۸﴾ |
| بے شک تم کو چکھنا ہے عذاب درد ناک |
| وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۹﴾ |
| اور وہی بدلہ پاؤ گے جو تم کرتے تھے |

### اپنا کیا سامنے آئے گا:

یعنی انکار و تکذیب اور [illegible] جو کچھ [illegible] حالت میں [illegible] جو کچھ کرتے تھے [illegible] سامنے آ جائے گا۔ (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿۴۰﴾ |
| مگر جو بندے اللہ کے چنے ہوئے ہیں |
| اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿۴۱﴾ |
| وہ لوگ جو ہیں ان کے واسطے روزی ہے مقرر |
| فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۴۲﴾ |
| میوے اور ان کی عزت ہے |

### مخلص بندے:

یعنی ان کا کیا ہوا [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] کر بڑھایا جائے گا۔

یعنی [illegible] میوے کھانے کو ملیں گے جنت کی [illegible] لَا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ "نہ ختم ہوں نہ روک ٹوک" (تفسیر عثمانی)

### اہلِ جنت کا رزق:

رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ [illegible] رزق جس کی خصوصیات [illegible] لازوال ہوگا [illegible] لذت [illegible] ہے جس کا مقصد [illegible] لذت اندوزی [illegible]

([illegible] لذت اندوزی [illegible] جنت کے [illegible] طرح کے [illegible]) [illegible] لذت اندوزی ہوگی۔ (تفسیر مظہری)

نکتہ: امام رازیؒ نے [illegible] جنت میں [illegible] غذائیں [illegible] لذت [illegible] حاجت [illegible] خواہش [illegible] (تفسیر کبیر [illegible])

[illegible] اکرام ہوگے۔

| |
|---|
| فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ﴿۴۳﴾ عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ ﴿۴۴﴾ |
| نعمت کے باغوں میں تختوں پر بیٹھے آمنے سامنے |
| یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ ﴿۴۵﴾ |
| [illegible] |
| بَیْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِیْنَ ﴿۴۶﴾ لَا فِیْهَا غَوْلٌ |
| [illegible] |
| وَّلَا هُمْ عَنْهَا یُنْزَفُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِیْنٌ ﴿۴۸﴾ |
| [illegible] |

### کامل لطف اندوزی:

[illegible] شراب [illegible]

[illegible] (تفسیر [illegible])

### نگاہیں نیچی رکھنے والی:

علامہ ابن جوزیؒ نے نقل کیا ہے کہ یہ عورتیں اپنے شوہروں کے سوا کسی

کہ "میرے پروردگار کی عزت کی قسم! جنت میں مجھے تم سے بہتر کوئی نظر نہیں آیا، اس اللہ کا شکر ہے جس نے تجھے میری بیوی اور مجھے تیرا شوہر بنایا۔"

"قاصرات الطرف" کا ایک اور مطلب علامہ ابن جوزیؒ نے یہ بھی لکھا ہے کہ وہ اپنے شوہروں کی نگاہیں نیچی رکھیں گی، یعنی وہ خود اتنی خوب صورت اور وفا شعار ہوں گی کہ ان کے شوہروں کو کسی اور کی طرف نظر اٹھانے کی خواہش ہی نہ ہوگی۔ (تفسیر ...)

**كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ۝**

گویا وہ انڈے ہیں چھپے ہوئے ۝

**حوروں کا حسن:** یعنی صاف و شفاف رنگ ہوگا جیسے انڈا جس کو پرند اپنے پروں کے نیچے چھپا کر رکھے کہ اس پر گرد و غبار نہ پہنچے، یا انڈے کے اندر کی سفیدی جو چھلکے کے نیچے پوشیدہ رہتی ہے، اور بعض نے کہا شتر مرغ کے انڈے مراد ہیں جو بہت خوش رنگ ہوتے ہیں۔ بہر حال تشبیہ صفائی و خوش رنگی میں ہے، جیسا کہ دوسری جگہ فرمایا كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ (الرحمن) (تفسیر عثمانی)

عرب کے نزدیک عورتوں کا یہ رنگ حسین ترین رنگ ہے اس لئے عورتوں کو شتر مرغ کے انڈوں سے تشبیہ دی جاتی ہے۔

ابن جریر نے حضرت ام سلمہؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: عِین سے مراد آنکھوں والیاں جن کی پلکیں (آنکھوں کو چھپا لیتی ہیں اس طرح) جیسے گدھ کے پر (یعنی حوروں کی تفسیر ...) (تفسیر مظہری)

**فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝**

[illegible]

**قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝**

[illegible]

**يَقُولُ أَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَإِذَا**

[illegible]

**مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ۝**

[illegible]

**اہل جنت کی باہمی گفتگو:**

یعنی یاران جلسہ جمع ہوں گے، شراب طہور کا جام چل رہا ہوگا، اس وقت اپنے بعض گزشتہ حالات کا ذکر کریں گے۔ ایک جنتی کہے گا میاں! دنیا میں میرا ایک ملنے والا تھا جو مجھ کو آخرت پر یقین رکھنے کی وجہ سے ملامت کیا کرتا اور احمق بناتا تھا۔ اس کے نزدیک یہ بالکل محال بات تھی کہ ایک شخص مٹی میں مل جائے اور گوشت پوست کچھ باقی نہ رہے محض بوسیدہ ہڈیاں رہ جائیں، پھر ... زندہ ہو ... (تفسیر عثمانی)

دوسرا آیت دار:

بعض علماء کا قول ہے وہ دونوں دنیا میں شریک تھے، ایک کافر تھا جس کا نام مطروس تھا، دوسرا مومن تھا جس کا نام یہودا تھا۔ ان دونوں کا واقعہ سورۂ کہف کی آیات وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ میں بیان فرمایا ہے (تفسیر مظہری)

**قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ۝**

[illegible]

**فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝**

[illegible]

**قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ۝**

[illegible]

**وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝**

[illegible]

**کافر ساتھی کا انجام اور عبرت:**

یعنی وہ ساتھی تو یقیناً دوزخ میں پہنچا ہوگا، آؤ ذرا جھانک کر دیکھیں کس حال میں ہے ... اللہ تعالیٰ فرمائیں گے کیا تم جھانک کر دیکھنا چاہتے ہو؟ ... اس جنتی کو اپنے ساتھی کا حال دکھلا دیا ... بیچوں بیچ دوزخ کی آگ میں جل رہا ہے۔ یہ حال دیکھ کر عبرت ... اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کرنے لگا ... تو نے مجھے بھی اپنے ساتھ برباد کرنا چاہا تھا، محض اللہ کے احسان نے دستگیری فرمائی اور اس مصیبت سے بچا لیا ... آج میں بھی تیری طرح پکڑا ہوا آتا اور ... عذاب میں گرفتار ہوتا۔

**أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا**

[illegible]

**نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ**

[illegible]

عَظِيْمٌ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ

[illegible]

## اصلی مقصد کا حصول

[illegible]

بعض اہل تفسیر کا قول ہے [illegible]

[illegible]

أَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ

[illegible]

إِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ

[illegible]

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْ أَصْلِ الْجَحِيْمِ

[illegible]

## دو دعوتوں کی [illegible]

[illegible]

## دنیا میں آزمائش

[illegible]

[illegible]

## جنت اور جہنم میں [illegible]

[illegible]

## زقوم کی بدمزگی

[illegible]

## زقوم کی حقیقت

[illegible]

[illegible]

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں کہ زقوم ایک خاص درخت ہے [illegible]

[illegible]

طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيٰطِيْنِ ۞

[illegible]

[illegible]

فَإِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۞

[illegible]

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۞

[illegible]

## کھولتا پانی:

[illegible]

[illegible]

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيْمِ ۞

[illegible]

## دوزخیوں کا [illegible]

[illegible]

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا اٰبَاءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۞

[illegible]

فَهُمْ عَلٰى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ۞

[illegible]

[illegible]

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِيْنَ ۞

[illegible]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۞

[illegible]

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٧٣﴾

[illegible]

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٧٤﴾

[illegible]

جو دنیا میں ڈرانے والے آئے ہیں:

[illegible]

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ﴿٧٥﴾

[illegible]

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

[illegible]

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ

[illegible]

فِي الْآخِرِينَ ﴿٧٨﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ﴿٧٩﴾

[illegible]

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٠﴾ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا

[illegible]

الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٨٢﴾

[illegible]

حضرت نوح علیہ السلام اور ان کی قوم:

[illegible]

[illegible]

کرب عظیم سے مراد [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

نوح علیہ السلام ایک مخصوص قوم کے نبی تھے:

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ |
| [illegible] |

## سب انبیاء ایک جماعت ہیں

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ |
| [illegible] |

## حضرت ابراہیم کی خدا پرستی

[illegible]

| |
|---|
| إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ |
| [illegible] |
| أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ |
| [illegible] |
| فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ |
| [illegible] |

## اپنے والد اور قوم کو نصیحت

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ |
| [illegible] |
| فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ |
| [illegible] |
| فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ |
| [illegible] |

## حضرت ابراہیم علیہ السلام کا تحمل

[illegible]

تو انہیں چھوڑ کر چلے گئے۔ [illegible] کی غرض یہ تھی کہ [illegible]
تعلق کاٹ کر ان بتوں کی خبر لیں۔

**حضرت ابراہیمؑ بتوں سے مخاطب ہوتے ہیں**

چنانچہ بت خانے میں جا کر ان سے خطاب کر کے کہا: "یہ کھانے جو تمہارے سامنے رکھے ہوئے ہیں انہیں کھاتے کیوں نہیں؟" [illegible] قصہ [illegible] گزر چکا ہے۔

(تفسیر [illegible]) [illegible] کہ حضرت ابراہیمؑ نے "اِنِّیْ سَقِیْمٌ" کہا مطلب [illegible] کے اعتبار سے [illegible] مخاطبین نے جو مطلب سمجھا اس کے اعتبار سے [illegible] کذب کا اطلاق کیا گیا ہے ورنہ حقیقت میں کذب نہیں بلکہ توریہ [illegible] "معاریض" [illegible] جیسے حدیث ہجرت میں "من الرجل" کے جواب میں [illegible] نے فرمایا "[illegible]" [illegible] ابوبکر صدیقؓ نے ایک شخص کے جواب میں کہا "رجل یهدینی السبیل" [illegible] حضرت ابراہیمؑ [illegible] کے خلاف [illegible] "حسنات الابرار سیئات المقربین" [illegible]

**ہرقل کو نجوم کے ذریعہ آنحضرت ﷺ کی بعثت کا اندازہ ہوا**

بخاری کی صحیح میں [illegible] روایت [illegible] ہے کہ [illegible] نے [illegible] کسی صاحب نے دریافت کیا کہ آپ کی حالت [illegible] ہے؟ [illegible] ہرقل اس وقت علم نجوم میں مشغول تھا [illegible] بادشاہ (اور ختنہ کرنے والی قوم) کا [illegible] دریافت کیا [illegible] کہا کہ [illegible] ہرقل نے [illegible] اسی طرح علم نجوم کا [illegible]

[illegible] جس میں [illegible] قدرت [illegible] یہ واقعہ [illegible] ہیں۔

اس روایت سے [illegible] ثابت ہوتا ہے کہ علم نجوم [illegible] تاثیرات و اثرات [illegible] کا علم ہو [illegible] [illegible] کا اثر [illegible] [illegible] ان [illegible] کہ تفصیل میں [illegible] [illegible] سمجھ [illegible] معلوم ہوتا ہے [illegible] [illegible] نہیں سمجھتے۔

**علم نجوم کی شرعی حیثیت**

اس بحث کے ضمن میں [illegible] علم نجوم کی شرعی حیثیت [illegible] یہاں مختصر [illegible] مسئلہ کا خلاصہ [illegible] جاتا ہے۔

یہ تو پہلے ہے کہ [illegible] حقیقت ہے کہ اللہ تعالیٰ نے چاند، سورج اور ستاروں میں [illegible] خاصیتیں رکھی ہیں جو انسانی زندگی پر اثر انداز ہوتی ہیں [illegible] خاصیات اتنی [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] بعض حصوں [illegible] خصوصیت [illegible] معلوم ہوتی ہیں [illegible] کا لباس [illegible] کی گرمی [illegible] تاثیر ہوتی ہیں [illegible] انسان کی زندگی پر [illegible] ایک انسان کے کسی ستارے [illegible] کی جانب [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] بعض لوگ [illegible] سمجھتے ہیں [illegible] حقیقی [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] کا سبب [illegible]

جہاں تک ان لوگوں کا تعلق ہے جو ستاروں [illegible] [illegible] [illegible] تمام [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] آنحضرت ﷺ [illegible] [illegible] ہے۔

رہے وہ لوگ جو دخول واقعیت میں مؤثر حقیقی تو اللہ تعالیٰ ہی کو مانتے ہیں لیکن ساتھ ہی اس بات کے بھی قائل ہیں کہ اللہ نے ستاروں کو کچھ خواص عطا فرمائے ہیں جو سبب بنتے ہیں [illegible] یعنی ستارے حقیقت میں مؤثر نہیں ہیں بلکہ اللہ تعالیٰ ہی مؤثر ہے، لیکن [illegible] جس طرح تمام اسباب [illegible] محض سبب ہیں اور مؤثر اللہ تعالیٰ کی مشیت ہی ہے، لیکن ستارے ان کامیابیوں اور ناکامیوں کا سبب بن جاتے ہیں، تو یہ خیال شرک نہیں ہے اور قرآن و حدیث سے اس خیال کی تصدیق ہوتی ہے نہ تردید، [illegible] اللہ تعالیٰ نے ستاروں کی گردش [illegible] اثرات رکھے ہوں لیکن ان اثرات کی جستجو کے لیے علم نجوم کی تحصیل اس کا مشغلہ بنانا اور ماضی مستقبل کے بارے میں پیشین گوئیاں کرنا [illegible] چنانچہ احادیث میں اس کی ممانعت آئی ہے، حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ آنحضرت ﷺ نے ارشاد فرمایا

اذا ذکر القدر فامسکوا واذا ذکرت النجوم فامسکوا واذا ذکر اصحابی فامسکوا (تخریج احادیث [illegible] للعراقی بحوالۂ طبرانی وھو حدیث حسن العراقی)

"جب تقدیر کا تذکرہ ہو تو رک جاؤ (یعنی اس میں بے جا غور و خوض نہ کرو) اور جب نجوم کا تذکرہ ہو تو رک جاؤ، اور جب میرے صحابہ کا (یعنی ان کے باہمی اختلافات وغیرہ کا) تذکرہ ہو تو رک جاؤ۔"

اور حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کا ارشاد ہے

تعلموا من النجوم ما تھتدون بہ فی البر و البحر ثم امسکوا (احیاء علوم الدین للغزالی)

"ستاروں کا علم اتنا حاصل کرو جس کے ذریعے تم خشکی اور سمندر میں راستے جان سکو، اس کے بعد رک جاؤ"

اس ممانعت سے ستاروں کے خواص اور اثرات کا انکار مقصود نہیں، بلکہ ان خواص و اثرات کی جستجو [illegible] کو منع کیا گیا ہے، امام غزالی نے احیاء العلوم میں اس پر مفصل بحث کرتے ہوئے اس ممانعت کی تین وجوہ بیان فرمائی ہیں۔

علم نجوم کے حصول سے منع کرنے کی پہلی حکمت تو یہ ہے کہ جب کوئی انسان [illegible] ستاروں کے [illegible] سمجھ بیٹھتا ہے [illegible] شرک و عقیدے کی خرابی کا [illegible]

دوسری حکمت [illegible] ستاروں میں [illegible]

[illegible] رہے گی جس طرح ان ستاروں کی علم کا اندازہ [illegible] پاس ہوتا ہے [illegible] یہ حضرت دانیال علیہ السلام کے بارے میں احادیث میں آیا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ان کو یہ علم بطور معجزہ عطا فرمایا تھا، لیکن اب وہ علم دنیا سے ناپید ہو چکا ہے، اب [illegible] محض قیاسات اور اندازے ہیں [illegible] اسی لیے [illegible] اسی شعر کا مصداق ہے

مفیدہ غیر معلومۃ و معلومۃ غیر مفیدۃ

"یعنی اس علم کا جو حصہ مفید ہے وہ کسی کو معلوم نہیں، اور جو لوگوں کو معلوم ہے وہ مفید نہیں ہے"

علامہ آلوسی نے روح المعانی میں [illegible] کے تحت [illegible] لکھا ہے کہ علم نجوم کے [illegible] ایک وقت کے طرح [illegible] حقیقت میں اس کے [illegible] چنانچہ [illegible] طریقۂ تحصیل میں [illegible] مشہور [illegible] نے علم نجوم پر اپنی کتاب [illegible] میں لکھا ہے

"علم نجوم ایک غیر یقینی علم ہے اور اس میں غلطی کے بہت سے امکانات [illegible] کی گنجائش ہے۔" (روح المعانی ج ۲۹، ص ۲۲)

علامہ آلوسی نے [illegible] نجوم [illegible] اقوال نقل فرمائے ہیں [illegible] کہ علم نجوم کوئی یقینی علم نہیں ہے، اور اس میں غلطیوں کے بے شمار امکانات [illegible] لوگ اس طرح تحصیل میں لگے ہوئے ہیں [illegible] یقینی علم [illegible] سمجھتے ہیں [illegible] مستقبل کے فیصلے کرتے ہیں [illegible] اس علم کو [illegible] علم غیب کے [illegible] بے شمار مفاسد پیدا کرنے والا ہے۔

علم نجوم کی ممانعت کی تیسری وجہ یہ ہے کہ [illegible] حاصل نہیں [illegible] خلاف ہے اس لیے اس کو ممنوع قرار دیا گیا ہے۔

## قرعہ کا شرعی حکم

[illegible]

[illegible]

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ

[illegible]

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ

[illegible]

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ

[illegible]

حضرت ابراہیمؑ [illegible] کا جواب:

[illegible]

[illegible]

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ

[illegible]

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ

[illegible]

[illegible]

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ

[illegible]

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ

[illegible]

حضرت ابراہیم کو جلانے کا منصوبہ

[illegible]

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ

[illegible]

بادشاہ مصر سے حضرت سارہ کی حفاظت

[illegible]

حضرت ہاجرہ

[illegible]

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصّٰلِحِينَ

اولاد کی دعا

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيمٍ

اُن سے حضرت اسمٰعیل پیدا ہوئے اور انہیں کی قربانی کا حکم ہوا

دکھایا ہے یعنی "حلیم" "صابر" "صادق الوعد" کے القاب کا مصداق ایک ہی معلوم ہوتا ہے یعنی حضرت اسمٰعیل علیہ السلام۔ "وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا"۔ سورۂ بقرہ میں تعمیر کعبہ کے وقت حضرت ابراہیم و اسمٰعیل علیہما السلام کی زبان سے جو دعا نقل فرمائی ہے اس میں یہ دعا بھی ہے "رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ" یعنی اسی مسلم کے تسلیم کو یہاں قرآن کے ذکر کیا "فَلَمَّا أَسْلَمَا" الخ کے لفظ سے ادا کر دیا۔ اور ان ہی دونوں کی نسبت کو خصوصیت سے "مسلم" کے لقب سے ممتاز کیا ہے شک اس سے بڑھ کر اسلام و تفویض اور صبر و تحمل کیا ہوگا کہ دونوں باپ بیٹے ذبح کرنے اور ذبح ہونے کے متعلق دکھایا یہاں "أَسْلَمَا" کا لفظ ... دونوں کی ... (تفسیر عثمانی)

بغوی نے محمد بن کعب قرظی کے حوالے سے لکھا ہے کہ حضرت عمر بن عبد العزیز نے ایک یہودی عالم سے جو بعد میں مسلمان ہو کر اچھے مسلمان ہو گئے تھے دریافت کیا ابراہیم علیہ السلام کے کس بیٹے کو ذبح کرنے کا حکم دیا گیا تھا یہودی عالم نے کہا اسمٰعیل علیہ السلام کو پھر کہا امیر المومنین یہودی اس بات کو جانتے ہیں لیکن وہ عرب کے لوگوں سے حسد کرتے ہیں کہ تمہارے باپ کو ذبح کا حکم ملا تھا اس لئے وہ کہتے ہیں کہ جس بیٹے کو ذبح کرنے کا حکم دیا گیا تھا وہ اسحٰق علیہ السلام تھے ... اسمٰعیل علیہ السلام کے ذبیح ہونے کی دلیل یہ ہے کہ وہ مینڈھا جس کی قربانی کی گئی تھی اس کے دونوں سینگ کعبہ کے اندر آویزاں تھے جو اسمٰعیل علیہ السلام کے قبضہ میں تھے جب حضرت عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ اور حجاج کی لڑائی میں کعبہ کو آگ لگی تو وہ سینگ بھی جل گئے۔ سعید بن منصور اور بیہقی نے شعب میں بنی سلیم کی ایک عورت کے حوالے سے عثمان بن طلحہ رضی اللہ عنہ کا بیان نقل کیا ہے کہ اس مینڈھے کے دونوں سینگ کعبہ میں لٹکے ہوئے تھے۔

شعبی کا بیان ہے میں نے ... سے پوچھا کہ ذبیح حضرت اسمٰعیل علیہ السلام تھے یا اسحٰق علیہ السلام تو ... نے کہا ... تمہاری عقل کہاں چلی گئی اسحٰق علیہ السلام کہاں کب تھے اسمٰعیل علیہ السلام نے ہی تو اپنے باپ کے ساتھ مل کر کعبہ بنایا تھا۔ (تفسیر مظہری)

حافظ ابن قیم زاد المعاد میں فرماتے ہیں کہ صحیح قول یہ ہے کہ ذبیح حضرت اسمٰعیل علیہ السلام ہیں جمہور صحابہ و تابعین کا یہی قول ہے اور یہ کہنا کہ ذبیح اسحاق علیہ السلام ہیں بالکل باطل ہے۔ واللہ اعلم۔ (معارف القرآن)

حافظ ابن کثیر نے حضرت عامر شعبی کا یہ قول بھی نقل کیا ہے کہ "میں نے اس مینڈھے کے سینگ کعبہ میں خود دیکھے ہیں۔" (ابن کثیر ص ... ج ۴) اور حضرت سفیان فرماتے ہیں کہ "اس مینڈھے کے سینگ مسلسل کعبہ میں لٹکے رہے یہاں تک کہ جب (حجاج بن یوسف کے زمانہ میں) کعبہ میں آتش زدگی ہوئی تو یہ سینگ بھی جل گئے" (ابن کثیر ...) اب ظاہر ہے کہ ... حضرت اسمٰعیل علیہ السلام ... صاف ظاہر ہے کہ ذبح کا حکم حضرت اسمٰعیل علیہ السلام سے متعلق تھا نہ کہ حضرت اسحٰق علیہ السلام سے۔

ملاحظہ فرمایئے "اور ابرام کی بیوی ساری سے کوئی اولاد نہ ہوئی۔ اس کی ایک مصری لونڈی تھی جس کا نام ہاجرہ تھا ... وہ ہاجرہ کے پاس گیا اور وہ حاملہ ہوئی ... اور خداوند کے فرشتہ نے اس سے کہا کہ تو حاملہ ہے اور تیرے بیٹا ہوگا اس کا نام اسمٰعیل رکھنا ... اور جب ابرام سے ہاجرہ کے اسمٰعیل پیدا ہوا تب ابرام چھیاسی برس کا تھا۔" (پیدائش باب ۱۶ ...)

پھر اگلے باب میں لکھا ہے

"اور خدا نے ابراہام سے کہا کہ ساری جو تیری بیوی ہے ... اس سے بھی تجھے ایک بیٹا بخشوں گا ... تب ابراہام سرنگوں ہوا اور ہنس کر دل میں کہنے لگا کہ کیا سو برس کے بڈھے ... اور کیا سارہ کے جو نوے برس کی ہے ... اور ابراہام نے خدا سے کہا کہ کاش اسمٰعیل ہی تیرے حضور میں جیتا رہے۔ تب خدا نے فرمایا کہ بیشک تیری بیوی سارہ کے تجھ سے بیٹا ہوگا تو اس کا نام اضحاق رکھنا" (پیدائش باب ۱۷ ...) اس کے بعد حضرت اسحٰق علیہ السلام کی پیدائش کا تذکرہ صراحۃً کیا گیا ہے

"اور جب اس کا بیٹا اضحاق اس سے پیدا ہوا تو ابراہام سو برس کا تھا ..."

ان حوالوں سے صاف واضح ہے کہ حضرت اسحٰق علیہ السلام حضرت اسمٰعیل علیہ السلام سے چودہ برس چھوٹے تھے اور اس چودہ سال کے عرصہ میں حضرت ابراہیم علیہ السلام کے اکلوتے بیٹے حضرت اسمٰعیل ہی تھے ... حضرت اسحٰق علیہ السلام پر ایسا کوئی وقت نہیں گزرا جس میں وہ ابراہیم علیہ السلام کے اکلوتے بیٹے ہوں۔ اب دوسری طرف جب کتاب پیدائش کے بائیسویں باب میں بیٹے کی قربانی کا ذکر آتا ہے تو اس میں "اکلوتے" کا لفظ صاف شہادت دے رہا ہے کہ اس سے مراد حضرت اسمٰعیل علیہ السلام ہیں ... "اکلوتا" کا لفظ ... فضیلت ... اسمٰعیل کے بجائے حضرت اسحٰق ...

خود ... سے مراد ہیں ... یہی قول ... ہے حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ کا یہی قول ہے سعید بن مسیب، شعبی، حسن بصری، مجاہد، ربیع بن انس، محمد بن کعب قرظی اور کلبی کے نزدیک بھی یہی قول تھا ... ابوالطفیل کی ایک روایت ہے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ کا قول ہے کہ جس کی جگہ (بدلے میں) مینڈھے کی قربانی دی گئی تھی وہ اسمٰعیل علیہ السلام ہی تھے۔ ... ابن ابی حاتم نے بطریق عامر بن سعد ... بیان کیا ہے کہ حضرت سعد ... کی ... مدت تک آپ ... حضرت ... کی ... حضرت ... کہ ... آپ ...

[illegible]

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي

[illegible]

الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ۭ قَالَ

[illegible]

يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۡ سَتَجِدُنِيْٓ

[illegible]

اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ

[illegible]

### خواب اور قربانی

[illegible]

### شام اور مکہ میں آمد و رفت

[illegible]

[illegible]

### بیٹے کی رائے

[illegible]

### [illegible] کا ثبوت

[illegible]

کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام نے بیٹے کی قربانی کا حکم [illegible] بیٹے [illegible] دیا اور حضرت اسمٰعیل علیہ السلام سے [illegible] [illegible] ہی تھا [illegible]

بہر حال [illegible] کا قول [illegible] ہے [illegible] بخاری [illegible] حضرت ابو سعید خدری کی روایت سے [illegible] حضرت ابن عمر اور حضرت ابو ہریرہ کی روایت سے [illegible] روایت سے [illegible] حضرت [illegible] کی [illegible] روایت سے یہاں [illegible]

**فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ**

[illegible]

## قربانی کا منظر

بیٹے کا [illegible] خوش [illegible] ہیں کہ [illegible] بیٹے نے [illegible]

یہ اللہ کی [illegible] کرنے [illegible] کی نسبت [illegible] مطابق [illegible] کی روایت سے کسی قریشی کے حوالے سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا [illegible] قربانی [illegible] بھی قربانی [illegible] ہے۔

## قربانی سے پہلے بیٹے کی وصیتیں:

بخاری نے لکھا ہے کہ [illegible] روایت [illegible] اسمٰعیل علیہ السلام نے اپنے [illegible] سے کہا ابا [illegible] طرف سے [illegible] رکھنا تاکہ [illegible] آپ کے کپڑوں [illegible] اور چھری کو تیز [illegible] حلق [illegible] سخت چیز ہے اور آپ [illegible] ماں کے پاس جائیں تو [illegible] جاتا [illegible]

## حضرت ابراہیم علیہ السلام کا جواب۔

حضرت ابراہیم علیہ السلام نے کہا میرے پیارے بیٹے خدا کے حکم کی تعمیل کیلئے تو میرا بہت اچھا مددگار ہے [illegible] نے جو کچھ کہا تھا آپ نے ویسا ہی کیا اور بیٹے کو پیار کیا [illegible] رونے لگے [illegible] حلق پر چھری رکھ دی لیکن چھری نے حلق پر نشان بھی نہ [illegible] ایک روایت میں آیا ہے کہ حلق پر چھری [illegible] چھری [illegible]

سے چھری کو [illegible] چھری [illegible]۔

## شیطان کی کارروائی اور مایوسی

حضرت ابو ہریرہ [illegible] کعب [illegible] کا قول [illegible] نے اپنے [illegible] کے حوالے سے بیان کیا ہے کہ جب حضرت ابراہیم علیہ السلام نے اپنے بیٹے کو ذبح کرنے کا ارادہ کیا تو شیطان نے کہا اگر میں اس وقت ابراہیم علیہ السلام کے گھر والوں کو بہکا نہ سکا تو پھر کبھی ان میں سے کسی کو نہ بہکا سکوں گا [illegible] کی شکل میں [illegible] کی ماں (حضرت ہاجرہ) کے پاس پہنچا اور کہنے لگا [illegible] ابراہیم علیہ السلام [illegible] لینے گئے ہیں شیطان نے کہا نہیں [illegible] ابراہیم علیہ السلام اسمٰعیل علیہ السلام کو ذبح کرنے لے گئے ہیں ماں نے کہا [illegible] نہیں ہو سکتا وہ بیٹے سے بہت پیار کرتے ہیں [illegible] شیطان نے کہا [illegible] اللہ نے ان [illegible] اگر ان کے رب نے [illegible] تو [illegible] اطاعت کرنی ہی چاہئے شیطان یہاں سے [illegible] بیٹے کے پاس پہنچا اس وقت آپ کے پیچھے پیچھے [illegible] شیطان نے [illegible] کہا [illegible] تمہارا باپ [illegible] کہاں سے جا رہے ہیں شیطان نے کہا [illegible] نہیں بلکہ [illegible] ذبح کرنا چاہتا ہے [illegible] کہا کیوں؟ شیطان نے [illegible] خیال ہے کہ ان کے رب نے ان کو [illegible] حکم دیا ہے [illegible] رب کے حکم کی [illegible]۔

[illegible] شیطان [illegible] تو شیطان نے ابراہیم علیہ السلام کی طرف [illegible] کا رخ کیا [illegible] حضرت ابراہیم علیہ السلام نے کہا [illegible] شیطان [illegible] خدا کی قسم [illegible] شیطان نے [illegible] آپ [illegible] بیٹے کے ذبح کرنے کا حکم دیا ہے حضرت ابراہیم علیہ السلام اس وقت سمجھ گئے کہ یہ شیطان ہے بولے او دشمن خدا میرے پاس سے دور ہو [illegible] رب کے حکم [illegible] شیطان [illegible] ہو کر لوٹ گیا اور ابراہیم علیہ السلام اور ان کے گھر والوں کے معاملہ میں [illegible] کامیاب نہ ہو سکا اللہ نے ان سب کو شیطان سے محفوظ رکھا۔

## کنکریاں کا مارنا

[illegible] نے حضرت ابن عباس [illegible] نقل کیا ہے کہ جب حضرت ابراہیم علیہ السلام [illegible] شیطان [illegible] آپ نے [illegible]

[illegible]

آنحضرت ﷺ ... [illegible]

[illegible]

## قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا

### صدقت الرؤیا

[illegible]

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا [illegible]

[illegible]

[illegible]

**إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ**

[illegible]

**الْبَلَاءُ الْمُبِينُ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ**

[illegible]

**وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ**

[illegible]

## نیکی کا بدلہ

[illegible]

**وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ** [illegible]

[illegible]

**وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ**

[illegible]

**سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ**

[illegible]

[illegible] علیہ الصلاۃ والسلام [illegible]

**كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ**

[illegible]

**إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ**

[illegible]

**وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ**

[illegible]

دوسری خوشخبری:

[illegible]

وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۭ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا

[illegible]

مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ

[illegible]

اولادِ ابراہیم میں برکت:

[illegible]

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰي مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ، وَنَجَّيْنٰهُمَا

[illegible]

وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ، وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا

[illegible]

هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ، وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ

[illegible]

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ، وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا

[illegible]

فِي الْاٰخِرِيْنَ ، سَلٰمٌ عَلٰي مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ، اِنَّا كَذٰلِكَ

[illegible]

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ، اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ

[illegible]

[illegible]

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ، اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ

[illegible]

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ

[illegible]

حضرت الیاس علیہ السلام:

[illegible]

بنی اسرائیل کی گمراہی:

[illegible]

[illegible] خاندان [illegible] کے اطراف میں [illegible] الیاس علیہ السلام [illegible] ہدایت کے لیے الیاس علیہ السلام نبی بنا کر بھیجے۔

بادشاہ: [illegible] ایک بادشاہ تھا [illegible] بادشاہ [illegible]

[illegible] بادشاہ کی ایک بیوی تھی [illegible] نام ازبیل تھا [illegible]

[illegible]

ایک ہمسایہ ملک کے ظلم کا شکار ہوا

بادشاہ کا ایک ہمسایہ [illegible] جس کا نام مزدکی تھا اس کا ایک چھوٹا سا باغیچہ تھا [illegible] بادشاہ [illegible]

[illegible]

بادشاہ کا افسوس

بادشاہ [illegible]

[illegible]

حضرت الیاس علیہ السلام کی بعثت

اللہ نے حضرت الیاس علیہ السلام کو [illegible]

[illegible] اللہ ان کو تباہ کر دے گا اور باغیچے کے [illegible]

بادشاہ کا انکار و عداوت

الیاس علیہ السلام نے [illegible]

[illegible] حضرت الیاس علیہ السلام [illegible]

حضرت الیاس علیہ السلام کی ہجرت

حضرت الیاس علیہ السلام [illegible]

[illegible]

## [illegible] کی صحت کے بارے میں [illegible]

[illegible]

## [illegible] کا [illegible]

[illegible]

## حضرت ابو بکر رضی اللہ عنہ کی وفات [illegible]

[illegible]

## گورنروں کی واپسی

[illegible]

## [illegible] کا فریب

[illegible]

[illegible]

سب آپ کی [illegible] کیا [illegible]

[illegible] ایمان لا چکے ہیں [illegible]

[illegible] کے لئے ہم سے [illegible] ہے [illegible] پاک [illegible] جائیے۔

## دھوکے بازوں پر آگ کا برسنا

ان لوگوں کی [illegible] ایک فریب تھا حضرت [illegible] کے [illegible] آپ [illegible] کے [illegible] ہونے کا [illegible]

[illegible] سب جل کر رہ گئے۔

## دوسرا دھوکہ اور ہلاکت

[illegible]

[illegible] ان پر آگ [illegible] سب [illegible] ہو گئے۔

## تیسری کارروائی

[illegible]

[illegible]

اعتراف کر لیا تھا اور کہہ دیا تھا کہ جن چیزوں کی ہم پہلے پوجا کرتے تھے ان کو ہم نے چھوڑ دیا ہے اور الیاس علیہ السلام کے آنے تک ہم نے اس معاملہ کو ملتوی کر رکھا ہے تاکہ وہ آ کر ان کو ہدایت دیں اور بہرحال ہم نے ان باتوں میں سے کسی بات میں تعلق نہ رکھا بلکہ یہ سب کچھ بادشاہ کا فریب تھا۔

غرض سکرپتی اور اس کے ساتھ ایک جماعت سب مومن ہو گئے اور حضرت الیاس علیہ السلام والے پہاڑ پر سکرپتی چڑھ گیا اور حضرت الیاس علیہ السلام کو پکارا آپ نے اس کی آواز پہچان لی دل میں اس سے ملنے کا شوق پہلے ہی تھا۔ گوارا نہ کر کے ملاقات کی ایک وحی بھی خداوندی کی طرف سے ہو گئی تھی کہ باہر نکل آؤ اپنے صالح بھائی سے ملو اور اس سے (دوستی کے) عہد کی تجدید کرو وحی آتے ہی حضرت الیاس علیہ السلام سکرپتی کے سامنے آ گئے سلام علیک اور مصافحہ کیا اور خیر دریافت کی مرد مومن نے کہا مجھے اس ظالم اور سرکش قوم نے آپ کے پاس بھیجا ہے اس کے بعد پوری سرگزشت بیان کر دی اور یہ بھی کہا کہ اگر آپ میرے ساتھ نہ ہوئے اور میں تنہا واپس جاؤں گا تو مجھے خوف ہے کہ بادشاہ مجھے قتل کر دے گا آپ جیسا چاہیں آپ مجھے حکم دیں میں اس کی تعمیل کروں گا اگر آپ چاہیں تو میں بادشاہ سے کٹ کر آپ کے پاس ہی رہنے لگوں اور اس کو بالکل چھوڑ دوں اور اگر آپ چاہیں تو آپ کے ہمراہ رہ کر ان سے مقابلہ کروں اور اگر آپ کا ارادہ یہ ہو کہ مجھے اس کے پاس بھیجیں تو میں آپ کا پیام بھی پہنچا دوں گا اور اگر آپ چاہیں تو اپنے رب سے دعا کریں کہ اللہ میرے لئے (جو مجھے درپیش ہے) معاملہ میں کشائش کا کوئی راستہ نکال دے۔

حضرت الیاس علیہ السلام کی واپسی:

اللہ نے الیاس علیہ السلام کے پاس وحی بھیجی کہ جتنی باتیں کہی ہیں یہ سب فریب اور جھوٹ ہیں وہ تمہارے اوپر قابو پانا چاہتے ہیں بادشاہ اجب اگر اس کے بھیجے ہوئے لوگ واپس جا کر خبر دیں گے کہ اس مرد (مومن) کی تم سے ملاقات ہو گئی ہے اور وہ تم کو اپنے ساتھ نہ لے جا سکا ہے تو وہ اس شخص پر (تم سے مل جانے کی) تہمت لگائے گا اور سمجھے گا کہ مرد مومن نے تمہارے معاملہ میں سستی سے کام لیا اس لئے اس کے قتل ہو جانے کا اندیشہ ہے تم اس کے ساتھ چلے جاؤ میں تم دونوں کی طرف سے اجب کو ایک روگ لگا دوں گا اس کے بیٹے کی مصیبت دوگنی کر دوں گا تاکہ بیٹے کے سوا کسی اور چیز کی اہمیت ہی اس کی نظر میں نہ رہے پھر اسی بری حالت میں میں اس کے بیٹے پر موت کو مسلط کر دوں گا جب وہ مر جائے تو اس وقت تم اس کے پاس سے لوٹ آنا۔

شہزادے کی موت:

حضرت الیاس علیہ السلام یہ حکم ملنے کے بعد ان لوگوں کے ساتھ روانہ ہو گئے اور سب لوگ اجب کے پاس پہنچ گئے جونہی یہ لوگ پہنچے اللہ نے اجب کے بیٹے کی بیماری شدید کر دی یہاں تک کہ موت اس کے گلو گیر ہو گئی اس طرح اللہ نے اجب اور اس کے ساتھیوں کو الیاس علیہ السلام کی طرف توجہ کرنے کا موقع ہی نہیں دیا اور الیاس علیہ السلام خیریت سے واپس آ گئے۔

سکرپتی کی نجات:

جب اجب کا بیٹا مر گیا اور لوگ اس کے صدمہ سے فارغ ہو گئے اور غم میں بھی کچھ کمی آ گئی تو اس وقت الیاس علیہ السلام کے سلسلہ میں ان کی آنکھیں کھلیں اور سکرپتی جو حضرت الیاس علیہ السلام کو لینے گیا تھا اس سے الیاس علیہ السلام کے متعلق دریافت کیا سکرپتی نے کہا مجھے الیاس علیہ السلام کا کوئی علم نہیں، مجھے شہزادہ کی موت اور اس کے غم نے فرصت ہی نہیں دی اور میرا خیال تھا کہ آپ نے الیاس علیہ السلام کے متعلق بھی اندازہ کر لیا ہوگا اس جواب پر سکرپتی کی طرف سے اجب نے بے اطمینانی کر لی کیونکہ (گفتگو سے معلوم ہوتا تھا کہ سکرپتی کو شہزادے کے مرنے کا سخت غم تھا۔

## حضرت الیاس کا حضرت یونس علیہ السلام کی ماں کے پاس جانا اور واپس ہونا:

جب حضرت الیاس علیہ السلام کو پہاڑوں میں رہتے ہوئے ایک طویل مدت گزر گئی اور ان کو دوسرے آدمیوں کے ساتھ رہنے کا شوق پیدا ہو گیا تو پہاڑ سے اتر کر چل دیئے اور ایک اسرائیلی عورت کے گھر جا کر ٹھہرے وہ عورت مچھلی والے حضرت یونس علیہ السلام بن متی کی ماں تھی اس عورت کے گھر آپ چھ ماہ چھپے رہے یونس علیہ السلام اس وقت شیر خوار بچے تھے یونس علیہ السلام کی ماں حضرت الیاس علیہ السلام کی خدمت خوب کیا کرتی تھی اور اپنے دل سے ان کی دلداری کرتی تھی حضرت الیاس علیہ السلام تو پہاڑوں کی سکونت کے عادی ہو چکے تھے وہاں کی زندگی میں رچ بس گئے تھے اور پہاڑ ہی کی جانب آپ نے پسند کیا آخر گھر سے نکل کر اپنی (کوہستانی) جگہ پر لوٹ آئے۔

یونس علیہ السلام کی موت اور حضرت الیاس علیہ السلام کی تلاش:

حضرت الیاس علیہ السلام کی جدائی سے یونس علیہ السلام کی ماں بے تاب ہو گئی اور آپ کے چلے جانے سے وہ شکستہ خاطر ہو گئی پھر تھوڑی مدت کے بعد جب اس نے بچے یونس علیہ السلام کا دودھ چھڑایا تو یونس علیہ السلام کا انتقال ہو گیا اب تو یونس علیہ السلام کی ماں پر مصیبت عظیم آ پڑی اور الیاس علیہ السلام کو تلاش کرنے نکلی جنگل جنگل اور پہاڑ پہاڑ پر ڈھونڈتی اور گھومتی پھرتی آخر آپ کو اس نے پا لیا اور عرض کیا آپ کے آ جانے کے بعد میرے بچہ کے مرنے کی مجھ پر چوٹ لگی جس کی وجہ سے میری مصیبت میں جو اضافہ ہو گیا اس کے دودھ چھٹنے سے میں بڑی دکھی ہو گئی پھر اس کے سوا اب میرا کوئی بھی نہیں ہے آپ مجھ پر رحم کیجئے اور دعا کیجئے کہ میرا بچہ زندہ ہو جائے میں نے اس کی لاش کو دفن نہیں کیا ہے بلکہ چھپا دی ہے

سے بڑھاپا کی دیا ہے اور اس کی موجودگی کو چھپا رکھا ہے۔ حضرت الیاس علیہ السلام نے فرمایا مجھے تو اس کا حکم نہیں دیا گیا ہے (کہ میں مردے کو زندہ کرنے کی دعا کروں) کا حکم نہیں دیا گیا ہے [illegible] مگر یہ ہوں جو کا مجھے حکم دیا گیا ہے۔ عورت یہ جواب سن کر بے قرار ہوگئی اور گڑگڑانے لگی۔

### یونس علیہ السلام کا زندہ ہونا:

اللہ نے حضرت الیاس علیہ السلام کے دل کو اس عورت کی درخواست کی جانب مائل کر دیا پوچھا تیرا بیٹا کب مرا ہے۔ عورت نے کہا سات روز ہوئے حضرت الیاس علیہ السلام اس کے ساتھ چل کھڑے ہوئے اور سات روز چلنے کے بعد اس کے گھر پہنچے اور اس کے بیٹے کو [illegible] پایا آپ نے وضو کیا نماز پڑھی اور دعا کی اللہ نے یونس علیہ السلام کو زندہ کر دیا یونس علیہ السلام زندہ ہو کر اٹھ بیٹھے جوں ہی اٹھ کر بیٹھے فوراً حضرت الیاس علیہ السلام چل دیے اور یونس علیہ السلام کو چھوڑ کر چل دیے اور اپنے مقام پر لوٹ گئے۔

### تین سال کیلئے قحط:

جب قوم کی نافرمانی بہت طویل ہوگئی تو حضرت الیاس علیہ السلام ان کی نافرمانی سے بڑے تنگ دل ہوگئے اللہ نے سات سال کے بعد ان کے پاس وحی بھیجی آپ [illegible] سے پہلے [illegible] خوف زدہ تھے اللہ نے [illegible] میرے پیارے الیاس علیہ السلام [illegible] کیا تو یہ [illegible] میری (ساری) مخلوق میں [illegible] انقلاب کرنے والا نہیں ہے (جو مجھ سے) مانگ تو میں تجھے عطا کروں گا میں وسیع رحمت اور بڑے فضل والا ہوں حضرت الیاس علیہ السلام نے عرض کیا تو مجھے موت دے دے اور میرے اسلاف کے ساتھ مجھے ملا دے میں بنی اسرائیل سے تنگ آ گیا ہوں اور بنی اسرائیل مجھ سے تنگ آ گئے ہیں اللہ نے الیاس علیہ السلام کے پاس وحی بھیجی اور فرمایا یہ وہ دن نہیں کہ میں زمین اور اہل زمین کو تجھ سے خالی کر دوں زمین کا قیام اور بہتری تو تیری اور تجھ جیسے دوسرے لوگوں کی (برکت کی) وجہ سے ہے اگرچہ تم لوگ تھوڑے ہو [illegible] تیرا سوال پورا کر دوں گا حضرت الیاس علیہ السلام نے عرض کیا اگر تو موت نہیں دیتا تو بنی اسرائیل سے مجھے انتقام لینے کی قدرت عطا فرما دے اللہ نے فرمایا تو کیا چاہتا ہے۔ الیاس علیہ السلام نے عرض کیا [illegible] سال تک بارش [illegible] میرے قبضہ میں دے دے کہ میری دعا کے [illegible] اور میری سفارش کے بغیر ایک قطرہ بارش کا ان پر نہ ہو [illegible] کے بغیر [illegible] اللہ نے فرمایا الیاس میں اپنی مخلوق پر [illegible] رحیم ہوں اگرچہ وہ ظلم کرتے ہیں (مگر میں ان پر مہربانی کرتا ہوں) الیاس علیہ السلام نے عرض کیا تو چھ سال (بارش روک دے) اللہ نے فرمایا میں

اپنی مخلوق پر اس سے زیادہ مہربان ہوں اللہ نے [illegible] پانچ سال [illegible] نے فرمایا [illegible] تین سال [illegible] (بارش روک لی) [illegible] میں تجھے [illegible] بارش کے [illegible] سے [illegible] دوں گا۔

### قحط کے دوران حضرت الیاس علیہ السلام کی غذا کا انتظام

حضرت الیاس علیہ السلام نے [illegible] ایک جماعت تیری خدمت پر [illegible] تجھے [illegible] زمین کے [illegible] مر گئے [illegible] سخت مصیبت میں مبتلا ہوگئے الیاس علیہ السلام [illegible] اپنی قوم سے چھپ [illegible] جہاں [illegible] حضرت الیاس علیہ السلام کو [illegible] الیاس علیہ السلام [illegible]۔

### حضرت الیاس علیہ السلام کی دعا سے بڑھیا کے گھر میں برکت

حضرت الیاس علیہ السلام نے فرمایا [illegible] بنی اسرائیل [illegible] مصیبت میں مبتلا [illegible] ایک روز کسی بڑھیا کی طرف سے آپ کا گزر ہوا آپ نے اس سے فرمایا [illegible] کچھ کھانا ہے بڑھیا نے کہا ہاں [illegible] روٹی [illegible] حضرت الیاس علیہ السلام نے [illegible] برکت کی [illegible] پر ہاتھ پھیر [illegible] لوگوں نے [illegible] کے پاس یہ چیزیں [illegible] حضرت الیاس علیہ السلام [illegible] ایک [illegible] گئے [illegible] پایا [illegible] عورت [illegible]

### ایک بیمار لڑکے کا صحیح ہونا اور ایمان لانا

اس عورت کا ایک لڑکا [illegible] حضرت الیاس علیہ السلام [illegible] آپ نے اس کے لئے دعا کی [illegible] حضرت الیاس علیہ السلام [illegible] آپ کے ساتھ چلنے لگا [illegible] الیاس علیہ السلام جاتے وہ لڑکا بھی ساتھ جاتا حضرت الیاس علیہ السلام [illegible] مجھے [illegible] تھا۔

[illegible] اللہ نے الیاس علیہ السلام کے پاس وحی بھیجی [illegible] بہت [illegible]

کو بارش نہ ہونے کی وجہ سے ہلاک کر دو، مویشی اور چرند پرند مر گئے، بھوک سے بے تحاشہ تھے، زمین خشک ہو جانے کی وجہ سے مر گئے (الخ۔ بائبل کی روایت) الیاس علیہ السلام نے عرض کیا اے میرے معبود! اب مجھے ان کو اجازت دے کہ میں ان کے لئے دعا کروں اور میں دکھ میں پڑ چکے ہوئے ہیں اس سے وہ اپنی معرفت کی دعا سے ان کو کھل جائے، کسی طرح شاید یہ باز آ جائیں اور بت پرستی اور شرک سے نکل آئیں تو بہت اچھا ہو۔

## حضرت الیاس علیہ السلام کی دعا سے بارش برسنا اور قوم کی عہد شکنی

یہ سب ہونے کے بعد حضرت الیاس علیہ السلام بنی اسرائیل کے پاس گئے اور فرمایا کہ شک نہیں کہ تم لوگ بھوک اور قحط سے ہلاک ہو گئے اور تمہارے گناہوں کی وجہ سے مویشی اور چوپائے اور پرندے اور کیڑے مکوڑے بھی مر گئے اور درخت بھی مردہ ہو گئے تم سب باطل پرست ہو اگر تم اس کا ثبوت دیکھنا چاہتے ہو تو اپنے بتوں کو میرے سامنے لے آؤ اگر وہ تمہاری دعائیں قبول کر لیں (اور بارش ہو جائے) تو بے شک تمہاری بات سچی ہوگی اور اگر وہ ایسا نہ کر سکے تو تم کو معلوم ہو جائے گا کہ تم باطل پرست ہو اس وقت تم اپنے بت پرستی اور شرک سے نکل آؤ پھر میں اللہ سے دعا کروں اور وہ تمہاری یہ مصیبت جس میں تم پھنسے ہوئے ہو دور کر دے گا قوم والوں نے کہا آپ نے انصاف کی بات کی چنانچہ وہ اپنے بتوں کو نکال کر لے آئے اور ان سے دعائیں کیں جس مصیبت میں گرفتار تھے وہ دور نہ ہوئی۔ پھر حضرت الیاس علیہ السلام نے دعا کی الیسع بھی آپ کے ساتھ شریک تھے تو ایک ڈھال کے برابر بدلی اٹھی اور وہ چھا گئی۔ دیکھتے ہی دیکھتے وہ چاروں طرف چھا گئی پھر خوب بارش ہوئی کہ مردہ بستیوں میں جان پڑ گئی اور قوم نے ان کی فرمانبرداری کی جب اللہ نے ان کا دکھ دور کر دیا تب بھی انہوں نے وعدہ پورا نہیں کیا۔ کفر کرنے لگے اور اپنی بری حالت پر قائم رہے۔

## حضرت الیاس کی قوم سے جدائی

الیاس علیہ السلام نے جب یہ حالت دیکھی تو (مایوس ہو کر) اللہ سے دعا کی کہ اب مجھے ان لوگوں سے نجات دے (بقول اہل روایت) جواب ارشاد ہوا کہ فلاں دن فلاں مقام پر چلے جاؤ اور جو سواری تمہارے پاس آ جائے بے خوف اس پر سوار ہو جانا۔

حسب الحکم الیاس علیہ السلام اور ان کے ساتھ الیسع بھی اس مقام پر پہنچے جہاں پہنچنے کا حکم دیا گیا تھا ایک آتشیں گھوڑا (اور بقول بعض) آگ کے رنگ کا گھوڑا پاس آ کر کھڑا ہو گیا الیاس علیہ السلام اس پر سوار ہو گئے اور گھوڑا آپ کو لے کر روانہ ہو گیا الیسع علیہ السلام نے پکار کر کہا حضرت میرے متعلق

آپ کا کیا حکم ہے۔ حضرت الیاس علیہ السلام نے قضا الٰہی کی جلدی سے اپنی ایک قیمتی چادر پھینک دی جو علامت تھی کہ الیسع کو بنی اسرائیل کی ہدایت کے لئے حضرت کا خلیفہ بنا دیا گیا۔ حضرت الیسع علیہ السلام کی حضرت الیاس علیہ السلام سے یہ آخری ملاقات تھی حضرت الیاس علیہ السلام کو اللہ تعالیٰ نے ... اللہ نے الیاس علیہ السلام کو کھانے پینے سے بے نیاز کر دیا اور (فرشتوں جیسے) پر اور نورانی حالت کر دی اور ان کو بھی انسان بھی تھے اور ملکی (فرشتہ) بھی۔

## بادشاہ اور ملکہ کی ہلاکت

شاہ اخیب اور اس کی قوم پر اللہ نے ایک دشمن کو مسلط کر دیا کہ وہ اس کی بے خبری میں اس پر حملہ کر دیا اور اخیب اور اس کی بیوی ایزبل کو اس باغ میں قتل کر دیا جہاں ان کی لاشیں پڑی رہیں کہ گوشت گل سڑ گیا اور ہڈیاں بوسیدہ ہو گئیں۔

## حضرت الیسع پر وحی اور قوم کا ایمان لانا

اللہ نے وحی کے ذریعے سے اس وقت الیسع علیہ السلام کو رسول بنا کر بنی اسرائیل کے پاس بھیجا بنی اسرائیل الیسع علیہ السلام پر ایمان لے آئے اور ان کی عزت کی اور وفات تک آپ کی حکومت بنی اسرائیل پر قائم رہی۔

## حضرت خضر و حضرت الیاس کی رفاقت

مروی ہے کہ حضرت الیاس علیہ السلام اور حضرت خضر علیہ السلام دونوں بیت المقدس میں ماہ رمضان المبارک کے روزے رکھتے ہیں اور ہر سال حج پر جاتے ہیں یہ بھی کہا جاتا ہے کہ الیاس علیہ السلام بیابانوں اور خضر سمندروں (کی نگرانی) پر مقرر ہیں الیاس علیہ السلام جنگلوں میں بھولے بھٹکوں کی راہنمائی کرتے ہیں اور خضر بحری مسافروں کی مدد کرتے ہیں) کذا ذکر المظہری فی تفسیر قولہ تعالیٰ وان الیاس لمن المرسلین (تفسیر مظہری)

## بعثت کا زمانہ اور مقام

قرآن و حدیث سے یہ پتہ نہیں چلتا کہ حضرت الیاس علیہ السلام کب اور کہاں مبعوث ہوئے تھے؟ لیکن تاریخی اور اسرائیلی روایات اس بات پر تقریباً متفق ہیں کہ آپ حضرت حزقیل علیہ السلام کے بعد اور حضرت الیسع علیہ السلام سے پہلے بنی اسرائیل کی طرف مبعوث ہوئے تھے۔ یہ وہ زمانہ تھا جب حضرت سلیمان علیہ السلام کے جانشینوں کی بد اعمالیوں کی وجہ سے بنی اسرائیل کی سلطنت دو حصوں میں بٹ گئی تھی، ایک حصہ یہودیہ یا یہودا کہلاتا تھا اور اس کا مرکز بیت المقدس تھا اور دوسرا حصہ اسرائیل کہلاتا تھا اور اس کا مرکز بیت المقدس تھا اور دوسرا حصہ اسرائیل کہلاتا تھا اس کا پایہ تخت سامرہ (موجودہ

نابلس) تو حضرت الیاس علیہ السلام اردن کے علاقہ جلعاد کی رہنے والے تھے۔ اس وقت اسرائیل کے ملک میں جو بادشاہ حکمران تھا اس کا نام بائبل میں اخی اب (Ahab) بتایا گیا ہے اس کی بیوی ایزبل بعل نامی ایک بت کی پرستار تھی، اور اسی نے اسرائیل میں بعل کے نام پر ایک بڑی قربان گاہ تعمیر کر کے تمام بنی اسرائیل کو بت پرستی کے راستے پر لگا دیا تھا۔ حضرت الیاس علیہ السلام کو اللہ تعالیٰ کی طرف سے حکم ہوا کہ وہ اس خطے میں جا کر توحید کی تعلیم دیں اور اسرائیلیوں کو بت پرستی سے روکیں (ملاحظہ ہو تفسیر ابن جریر ص ۵۳ ج ۲۳ ابن کثیر ص ۱۹ ج ۴ تفسیر مظہری ص ۱۳۰ ج ۸ اور بائبل کی کتاب سلاطین اول [illegible])

## حضرت الیاس علیہ السلام کے بارے میں تمام روایات کا خلاصہ

تمام روایات سے خلاصہ کے طور پر جو قدر مشترک نکلتی ہے وہ یہ ہے کہ حضرت الیاس علیہ السلام نے اسرائیل کے بادشاہ اخی اب اور اس کی رعایا کو بعل نامی بت کی پرستش سے روک کر توحید کی دعوت دی مگر ایک دو حق پرست افراد کے سوا کسی نے آپ کی بات نہ مانی، بلکہ آپ کو طرح طرح سے پریشان کرنے کی کوشش کی، یہاں تک کہ اخی اب اور اس کی بیوی ایزبل نے آپ کو شہید کرنے کے منصوبے بنائے، آپ نے ایک دور افتادہ غار میں پناہ لی اور عرصہ دراز تک وہیں مقیم رہے اس کے بعد آپ نے دعا فرمائی کہ اسرائیل کے لوگ قحط سالی کا شکار ہو جائیں، تاکہ اس قحط سالی کو دور کرنے کے لئے آپ ان کو معجزات دکھائیں تو شاید وہ ایمان لے آئیں، چنانچہ انہیں شدید قحط میں مبتلا کر دیا گیا۔

اس کے بعد حضرت الیاس علیہ السلام اللہ تعالیٰ کے حکم سے اخی اب سے ملے اور اس سے کہا کہ یہ عذاب اللہ کی نافرمانی کی وجہ سے ہے اور اگر تم اب بھی باز آ جاؤ تو یہ عذاب دور ہو سکتا ہے، میری سچائی کے امتحان کا بھی یہ بہترین موقع ہے، تم کہتے ہو کہ اسرائیل میں تمہارے معبود بعل کے ساڑھے چار سو نبی ہیں، تم ایک دن ان سب کو میرے سامنے جمع کر لو، وہ بعل کے نام پر قربانی پیش کریں اور میں اللہ کے نام پر قربانی کروں گا، جس کی قربانی کو آسمانی آگ آ کر بھسم کر دے گی اس کا دین سچا ہوگا، سب نے اس تجویز کو خوشی سے مان لیا۔

چنانچہ کوہ کرمل کے مقام پر یہ اجتماع ہوا، بعل کے جھوٹے نبیوں نے اپنی قربانی پیش کی اور صبح سے دوپہر تک بعل سے التجائیں کرتے رہے مگر کوئی جواب نہ آیا، اس کے بعد حضرت الیاس علیہ السلام نے اپنی قربانی پیش کی، تو آسمان سے آگ نازل ہوئی اور اس نے حضرت الیاس علیہ السلام کی قربانی کو بھسم کر دیا، یہ دیکھ کر بہت سے لوگ سجدے میں گر گئے اور ان پر حق واضح ہو گیا، لیکن بعل کے جھوٹے نبی اب بھی نہ مانے، اس لئے حضرت الیاس علیہ السلام نے ان نبیوں کو [illegible] قتل کر دیا۔

[illegible] قصے کے بعد [illegible] بارش بھی ہوئی اور [illegible] یہاں مو[illegible] سند ضعیف ہے [illegible] کہ [illegible] کی طرف سے یہ واقعات منسوب کئے گئے ہیں وہ مجہول ہیں۔ [illegible]

جب بعض [illegible] تو [illegible] یہ بعل [illegible] حضرت الیاس علیہ السلام [illegible] کا [illegible] کی [illegible] کے [illegible] حضرت الیاس علیہ السلام کے [illegible] بعل کی پرستش ہوتی تھی اور یہ بت [illegible] تھا۔ شام کا مشہور شہر بعلبک اسی کے نام سے منسوب ہے اور بعض لوگوں کا کہنا ہے کہ [illegible] کا مشہور بت تھا جس کا نام بعل تھا [illegible]

اَللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝

[illegible] جو تمہارا رب ہے اور تمہارے اگلے باپ دادوں کا بھی [illegible]

## حقیقی خالق کو کیوں چھوڑتے ہو؟

یعنی یہ بت تو نہ پیدا کرنے کی صلاحیت رکھتے ہیں نہ [illegible] حقیقت میں [illegible] بہتر بنانے والا وہ ہے کہ جو تمام اصول و فروع، ذوات اور صفات و موصوفات کا حقیقی خالق ہے۔ جس نے تم کو اور تمہارے باپ دادوں کو پیدا کیا۔ پھر یہ کیسے جائز ہو گا کہ ایسے احسن الخالقین کو چھوڑ کر ایسی بت کی پرستش کی جائے اور اس سے مدد لی جائے جو ایک ذرہ نظیر بھی پیدا نہیں کر سکتا۔ [illegible] جو بے جان پتھر تھا [illegible] بت انہوں نے جیسا چاہا بنا لیا [illegible] (تفسیر عثمانی)

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝

پس ان لوگوں نے ان کو جھٹلایا سو وہ لوگ پکڑے جائیں گے

یعنی جھٹلانے کی سزا بھگتیں گے (تفسیر عثمانی)

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝

مگر جو اللہ کے خاص بندے تھے

یعنی سب نے جھٹلایا مگر اللہ کے چنے ہوئے بندوں نے تصدیق کی تھی، لہٰذا وہی سزا سے بچے رہیں گے (تفسیر عثمانی)

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝

اور ہم نے ان کے لئے پیچھے آنے والوں میں [illegible]

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ۝

سلام ہو الیاس پر

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝

ہم ایسے ہی بدلہ دیا کرتے ہیں نیک کام کرنے والوں کو

**إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ**

[illegible]

حضرت الیاس علیہ السلام [illegible]

[illegible]

**وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ**

[illegible]

**إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ**

[illegible]

**إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ**

[illegible]

[illegible]

**ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ**

[illegible]

[illegible]

**وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ**

[illegible]

**وَبِاللَّيْلِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ**

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

**وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ**

[illegible]

**إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ**

[illegible]

**فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ**

[illegible]

[illegible]

حضرت یونس علیہ السلام کی آزمائش

[illegible]

جیسا کہ تمام بار لوگوں نے قرعہ ڈالا اور ہر مرتبہ یونس علیہ السلام کا نام نکلا۔ بغوی نے لکھا ہے یہ بھی مروایت ہے کہ جب آپ سمندر پر پہنچے تو آپ کے ساتھ اہل اور آپ کے ساتھ گئے تھے تو آپ نے پہلے سوار ہونے کے لئے بیوی کو آگے بڑھایا پھر سوار کرنے کے لئے ایک لہر آئی اور بیوی کو بہا کر لے گئی [illegible] اور ایک بڑا مچھ آیا اور بچے کو پکڑ کر لے گیا [illegible] پڑا رہ گیا اور [illegible] آپ ایک دوسری کشتی پر سوار ہوئے [illegible] لوگوں سے الگ ایک گوشہ میں بیٹھ گئے کشتی جب بیچ سمندر میں پہنچی تو ٹھہر گئی اور کشتی والوں نے قرعہ ڈالا اور قصہ سورۂ یونس میں بھی ہے۔ یہ قصہ وہیں گزر چکا ہے۔ (تفسیر مظہری)

### قرعہ اندازی کا حکم

یہاں یہ سوال ہوتا ہے کہ قرعہ اندازی کے ذریعہ کسی کا حق ثابت کیا جانا نہیں ہے۔ یعنی کسی کو مجرم قرار دیا جا سکتا ہے، نہ قرعہ کے ذریعہ کسی کو چور ثابت نہیں کیا جا سکتا۔ اسی طرح اگر دو آدمیوں میں اختلاف ہو کہ کس کا حق ہے تو قرعہ کے ذریعہ اس کا فیصلہ نہیں ہو سکتا۔ البتہ قرعہ اندازی اس موقع پر جائز بلکہ بہتر ہے جہاں ایک شخص کو شرعاً مکمل اختیار حاصل ہو کہ وہ چند جائز راستوں میں سے کسی بھی راستے کو اختیار کر لے، اب وہ اپنی مرضی سے کوئی راستہ متعین کرنے کے بجائے قرعہ ڈال کر فیصلہ کرے۔ مثلاً جس شخص کی ایک سے زائد بیویاں ہوں اسے سفر میں جاتے وقت یہ اختیار حاصل ہے کہ وہ جس بیوی کو چاہے ساتھ لے جائے اب وہ اپنی مرضی سے یہ کرنے کے بجائے قرعہ اندازی کر لے تو بہتر ہے تاکہ کسی کی دل شکنی نہ ہو۔ آنحضرت ﷺ کا یہی معمول تھا۔

حضرت یونس علیہ السلام کے واقعہ میں بھی قرعہ اندازی سے کسی کو مجرم ثابت کرنا مقصود نہیں تھا بلکہ پوری کشتی کو بچانے کے لئے کسی کو دریا میں ڈالا جا سکتا تھا قرعہ سے گویا معین [illegible] کی گئی۔ (معارف القرآن)

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ

پھر ان کو مچھلی نے نگل لیا اور وہ اپنے آپ کو ملامت کر رہے تھے۔

الملیم: الزام دینے والا اور کرنے کے اعتبار سے [illegible] کی ہے کہ بغیر حکم کے نکل پڑے اور عذاب کے [illegible]۔ (تفسیر مظہری)

انبیاء علیہم السلام کا مقام، حضرات انبیاء چونکہ سب سے افضل اور برتر ہیں اس لئے ان کی معمولی اجتہادی لغزشوں پر بھی مواخذہ اور عتاب ہوتا ہے۔ حسنات الابرار سیئات المقربین۔ نیکوں کی [illegible] مقربین کے لئے برائیاں ہیں۔

اور ایک روایت میں ہے کہ جب غیب سے مچھلی کو آواز آئی کہ اے مچھلی ہم نے یونس کو تیرا رزق نہیں بنایا بلکہ تیرے پیٹ کو ان کے لئے قید خانہ بنایا ہے۔ (تفسیر قرطبی)

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ

پھر اگر وہ تسبیح کرنے والوں میں سے نہ ہوتے۔

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

تو روز قیامت تک اس کے پیٹ میں رہتے۔

### تسبیح کی برکت:

یعنی چونکہ مچھلی کے پیٹ میں بھی اور پیٹ میں جانے سے پہلے بھی وہ بکثرت ذکر اللہ کرتے تھے اس لئے ہم نے ان کو اس مصیبت سے نکال دیا ورنہ قیامت تک ان کے پیٹ سے نکلنا نصیب نہ ہوتا بلکہ مچھلی کی غذا بن جاتا۔ (تفسیر عثمانی)

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ یعنی اس حالت کو قیامت تک نکلنے سے روکا جاتا۔ [illegible] علامہ محمود آلوسی بغدادی نے لکھا ہے [illegible] بہت بڑی بڑی مچھلیاں مشاہدہ کی ہیں تعجب ہے کیا معلوم ہے کہ بعض [illegible] [illegible] [illegible] لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ

پھر ہم نے ان کو ایک میدان میں ڈال دیا اور وہ اس وقت مضمحل تھے۔

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ

اور ہم نے ان پر ایک بیلدار درخت بھی اگا دیا تھا۔

### مچھلی کے پیٹ سے باہر آنا:

مچھلی کو حکم ہوا اس نے حضرت یونس کو اگل دیا۔ ساحل کے ایک کھلے میدان میں پڑے تھے، مچھلی کے پیٹ کی گرمی وغیرہ سے بدن نہایت کمزور ہو گئے تھے جیسے بچہ [illegible] شاید اس میں [illegible] وغیرہ کا ہونا بھی ہو۔ اللہ تعالیٰ کی قدرت سے ایک کدو کی بیل اگ آئی اس کے پتوں نے ان کے جسم پر سایہ کر لیا اور اسی طرح اللہ تعالیٰ کی [illegible] ان کا بدن بھی درست ہو گیا۔ (تفسیر عثمانی)

### مچھلی کے پیٹ میں رہنے کی مدت:

ابن جریر کا قول اور سعید بن جبیر وغیرہ [illegible] کی روایت میں طبرانی کا قول ہے کہ [illegible] حضرت یونس علیہ السلام مچھلی کے پیٹ میں [illegible] ابن ابی حاتم، حاکم اور سدی نے [illegible] کا قول نقل کیا ہے کہ چاشت کے وقت [illegible] مچھلی نے نگلا تھا اور [illegible] اگل دیا۔

### کیا انبیاء کی کسی لغزش کا بیان کرنا جائز ہے:

کسی نبی کی کسی لغزش کا تذکرہ جائز نہیں جو کہ [illegible]

لغزشیں (اللہ کی طرف مزید رجوع کرنے اور مراتب میں ترقی پانے کی موجب ہوتی ہیں جس نے کسی نبی پر اعتراض کیا وہ کافر ہو گیا اللہ نے (مؤمنوں کو چھپنے کا حکم دیا اور) فرمایا۔ بِمَا لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ حضرت ابوہریرہؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ کسی بندہ کیلئے یہ کہنا جائز نہیں کہ میں یونس علیہ السلام بن متی سے افضل ہوں (متفق علیہ) بخاری کی روایت میں آیا ہے کہ حضور ﷺ نے فرمایا جس نے یہ کہا کہ میں یونس علیہ السلام بن متی سے افضل ہوں اس نے غلط کہا۔

## تفضیلِ انبیاء کا مسئلہ:

حضرت ابوہریرہؓ کا بیان ہے کہ ایک مسلمان اور ایک یہودی میں باہم گالی گلوچ ہوئی مسلمان نے کہا قسم ہے اس کی جس نے محمد ﷺ کو سارے عالم والوں پر برتری عطا کی یہودی بولا قسم ہے اس کی جس نے موسیٰ علیہ السلام کو سارے جہان والوں پر فضیلت عنایت کی، یہ سنتے ہی مسلمان نے ہاتھ اٹھا کر یہودی کے منہ پر ایک طمانچہ مارا یہودی نے رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں حاضر ہو کر شکایت واقعہ عرض کی اور مسلمان کے درمیان جو ماجرا ہوا تھا بیان کر دیا۔ حضور ﷺ نے اس مسلمان کو طلب فرمایا اور واقعہ دریافت کیا مسلمان نے بتا دیا حضور ﷺ نے فرمایا مجھے موسیٰ علیہ السلام پر فضیلت مت دو کیونکہ قیامت کے دن جب (سب) لوگ بے ہوش ہو جائیں گے تو میں بھی ان کے ساتھ بے ہوش ہو جاؤں گا پھر سب سے پہلے میں ہی ہوش میں آؤں گا اور دیکھوں گا کہ موسیٰ عرش کا ایک کنارہ پکڑے (کھڑے) ہیں مجھے نہیں معلوم کہ وہ بے ہوش ہونے والوں میں شامل تھے اور مجھ سے پہلے ہوش میں آ گئے یا اس مخلوق میں شامل تھے جن کو اللہ نے بیہوش ہونے سے مستثنیٰ کر دیا ہوگا۔

ایک دوسری روایت میں آیا ہے کہ حضور ﷺ نے فرمایا مجھے نہیں معلوم کہ موسیٰ علیہ السلام کو طور کے دن والی بے ہوشی کی عوض میں یہ رعایت دی گئی (اور قیامت کے دن صور کی آواز سے وہ بے ہوش نہیں ہوئے) یا مجھ سے پہلے اٹھ کھڑے ہوئے اور میں نہیں کہتا کہ کوئی بھی یونس علیہ السلام بن متی سے افضل ہے۔

حضرت ابوسعیدؓ کی روایت میں آیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا نبیوں کو باہم ایک کو دوسرے پر فضیلت نہ دو۔ (متفق علیہ)

حضرت ابوہریرہؓ کی روایت ہے کہ حضور ﷺ نے فرمایا اللہ کے نبیوں کو باہم فضیلت نہ دو۔

حضرت جابر بن عبداللہؓ کا بیان ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا میں قائد المرسلین (پیغمبروں کا پیشوا) ہوں اور کوئی فخر نہیں میں ہی خاتم النبیین ہوں اور کوئی فخر نہیں میں ہی سب سے پہلے شفاعت کرنے والا ہوں گا اور سب سے پہلے شفاعت قبول ہوں گا اور کوئی فخر نہیں۔ (دارمی)

میں کہتا ہوں تفضیل بین الانبیاء کی ممانعت کا مطلب یہ ہے کہ جب تک کسی صاحب شرع (وحی) کے دریعے سے تحقیقی طور پر علم نہ ہو جائے اس وقت تک انبیاء کے درمیان ایک کو دوسرے پر فضیلت نہ دو کیونکہ ایسی صورت میں ایک کی دوسرے پر فضیلت ثابت ہو جائے تو بعض کو بعض سے افضل قرار دینے میں کوئی حرج نہیں۔ (تفسیر مظہری)

> وَأَرْسَلْنَٰهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ
>
> اور ہم نے ان کو ایک لاکھ یا اس سے زیادہ آدمیوں کی طرف پیغمبر بنا کر بھیجا تھا۔

## قومِ یونس کی تعداد:

یعنی اگر مرد عاقل بالغ گنے تو ایک لاکھ تھے اور اگر سب چھوٹوں بڑوں کو شامل کر لیں تو زیادہ تھے یا یوں کہو جیسے لوگ ہوتے ہیں ان کے دیکھنے میں بہت زیادہ تھے۔ بڑی کثرت تھی کہ کوئی ایک لاکھ کہہ اور کوئی گنتی کرنا چاہے تو لاکھ کے پار پہنچ جانا ممکن ہو گا۔ واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

حضرت تھانویؒ نے فرمایا کہ یہاں شک کا اظہار مقصود نہیں ہے بلکہ مطلب یہ ہے کہ ان کی تعداد ایک لاکھ بھی کہا جا سکتا ہے اور اس سے زیادہ بھی۔ اور وہ اس طرح کہ اگر کسر کا اعتبار نہ کیا جائے تو ان کی تعداد ایک لاکھ تھی اور اگر کسر کو بھی شمار کیا جائے تو ایک لاکھ سے زیادہ ہو جاتی ہے۔ (معارف القرآن از مفتی محمد شفیعؒ)

> فَـَٔامَنُوا۟ فَمَتَّعْنَٰهُمْ إِلَىٰ حِينٍ
>
> پھر وہ ایمان لائے تو ہم نے ان کو ایک وقت تک فائدہ پہنچایا۔

## ایمان کی وجہ سے نجات:

یعنی ایمان و یقین کی بدولت عذاب الٰہی سے بچ گئے اور اپنی عمر تک دنیا کا فائدہ اٹھاتے رہے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "وہ قوم جس سے بھاگے تھے ان پر ایمان قائم رکھا۔ (حقیقت میں کچھ ان کو بڑی خوشی ہوئی" یہ قصہ پہلے گزر چکا ہے۔ سورۂ "یونس" اور سورۂ "انبیاء" میں دیکھ لیا جائے۔ (تفسیر عثمانی)

## قادیانی کی تلبیس کا جواب:

حضرت یونس علیہ السلام کی قوم پر سے جو عذاب ٹال دیا گیا وہ اس لئے تھا کہ قوم یونس وقت ایمان لے آئی تھی۔ اس سے پنجاب کے جھوٹے نبی مرزا غلام احمد قادیانی کی اس تلبیس کا قلع قمع ہو جاتا ہے کہ جب اس نے اپنے مخالفوں کو چیلنج کر کے کہا دونوں طرف سے مقابلہ کرتے ہیں جو خدا کا فیصلہ ہو جائے۔ فلاں وقت تک عذاب الٰہی آ جائے گا لیکن مخالفین کی جدوجہد اور تیزی ہی کچھ

بھی عذاب دنیا و آخرت کا قائل ذات سے بچنے لیے قوم یونس نے کہنا شروع کر دیا چونکہ نشانیاں دل میں اتر گئے ہیں اس لئے اب یہ عذاب نہیں آیا جس طرح یونس علیہ السلام کی قوم پر نازل کیا تھا لیکن قرآن کریم کی یہ آیت اس کا دلیل ہے [illegible] اس لئے کہ قوم یونس ایمان لانے کی وجہ سے عذاب سے بچ گئی اس کے برعکس [illegible] کے مخالفین نہ صرف یہ کہ ایمان نہیں لائے بلکہ ان کی مخالفت بھی [illegible] ہوئی۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾ |
| ان سے پوچھو تو کہ کیا تمہارے پروردگار کے لئے تو بیٹیاں اور ان کے لئے بیٹے |
| أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾ |
| یا ہم نے فرشتوں کو عورتیں بنایا اور وہ دیکھ رہے تھے |
| أَلَا إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾ |
| خبردار یہ اپنی جھوٹ بنائی ہوئی بات کہتے ہیں کہ |
| وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾ |
| اللہ کے اولاد ہوئی اور بے شک یہ جھوٹے ہیں |

### سب اللہ کی مخلوق اور محتاج ہیں:

مشرکین کا یہ عقیدہ تھا کہ "حضرت عزیر، ابراہیم، اسماعیل، موسیٰ، ہارون، الیاس، اور یونس علیہم السلام" سب کی مشکلات اللہ کی مدد اور اعانت سے حل ہوئیں۔ کوئی بڑے سے بڑا مقرب اس کی دستگیری سے بے نیاز نہیں۔ اب آگے تھوڑا سا فرشتوں اور جنوں کا حال بیان ہوتا ہے کہ ان کی نسبت جانے کیا کیا دنیا جاہل عقیدے تراش رکھے ہیں۔ چنانچہ عرب کے بعض قبائل کہتے تھے کہ فرشتے خدا کی بیٹیاں ہیں۔ جب یہ پوچھا جاتا کہ ان کی مائیں کون ہیں تو کہتے کہ سردار جنوں کی لڑکیاں ان کی مائیں ہیں۔ اس طرح (العیاذ باللہ) خدا کا جنوں اور فرشتوں دونوں سے تعلق رکھا تھا۔ آگے دونوں کا حال ذکر کیا جاتا ہے مگر سب سے پہلے اس غلط اور جاہلانہ عقیدے کا، عرب کے اس عجیب و غریب عقیدے کا رد کیا گیا ہے۔ چنانچہ پہلے تو یہ فرمایا کہ اپنی عقلیت اور مسلمہ رسوم کے لحاظ سے غور کرو، اپنی ناراضگی اور تعصب کے حمایتی میں اپنی اس بات پر غور کرو جو تم بیان کرتے ہو کہ اب تمہاری حماقت ایسی ہے کیا اتنی بڑی حکمت و قدرت والا خدا (معاذ اللہ) اپنے لئے اولاد کی تجویز کرتا ہے تو بیٹیاں لیتا اور تم کو بیٹے دیتا۔ ایک تو یہ گستاخی کہ خدا کو اولاد کے لئے محتاج بنایا، تجویز کی اور پھر اولاد بھی کمزور اور گھٹیا۔ اس پر مستزاد یہ کہ فرشتوں کو جو تمہارے نزدیک (عورت) تجویز کیا، گویا جس وقت ہم نے فرشتوں کو پیدا کیا تھا یہ کھڑے دیکھ رہے تھے کہ انہیں عورت بنایا گیا ہے۔ لاحول ولا قوۃ الا باللہ، اس جہالت کا کیا ٹھکانا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

### فاسد خیالات:

مشرکین نے یہ عقیدہ بنا رکھا تھا کہ فرشتے اللہ کی بیٹیاں ہیں، حضرت ابوبکر نے کہا یہ کہ تم کو معلوم ہے کہ ان بیٹیوں کی مائیں کون ہیں؟ تو وہ کہتے کہ سرداران جن کی بیٹیاں ہیں۔ بعض قبائل کا یہ خیال تھا کہ اللہ تعالیٰ نے سرداران جن کی لڑکیوں سے شادی کی اور ان سے بیٹیاں پیدا ہوئیں جیسا کہ بت پرستوں کے اور عیسائیوں کے متعلق ایسے ہی خیالات فاسد ہیں۔

ابن عباس سے مروی ہے کہ مشرکین قریش کہتے تھے کہ جنات اور [illegible] بھی اللہ تعالیٰ اور ابلیس [illegible] بھائی بھائی ہیں۔ تعالیٰ اللہ عن ذلک علوا کبیرا۔ (تفسیر مظہری)

عرب کا یہ عقیدہ تھا کہ فرشتے اللہ تعالیٰ کی بیٹیاں ہیں اور جنوں کی سرداروں اور فرشتوں کی مائیں ہیں۔ بقول [illegible] عقیدہ [illegible] کے اہل [illegible] فرشتوں کے پہلو کی بات تھا۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾ |
| کیا اس نے بیٹوں کی نسبت بیٹیاں پسند کیں |
| مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾ |
| تم کو کیا ہوا ہے تم کیسے فیصلے کرتے ہو، کیا تم دھیان نہیں کرتے ہو |

سب سے بڑا عقیدہ یعنی اولاد کو منسوب کرنے کا ہی جرم ہے۔ ایک تو عقیدہ رکھا تو اولاد بھی ایسی کہ جو تمہارے نزدیک بھی عیب تھی۔ کتنا انصاف ہے کہ اپنے لئے تو بیٹے پسند کرو اور خدا کے لئے بیٹیاں پسند کرو۔

| |
|---|
| أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾ |
| کیا تمہارے پاس کوئی صریح دلیل ہے |
| فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾ |
| تو اپنی کتاب لاؤ اگر تم سچے ہو |

### مشرکین کے پاس دلیل بھی کوئی نہیں

یعنی اگر یہ بات عقلی طور پر ثابت نہیں، نقلی دلیل ہی بتاؤ، تمہارے پاس کوئی سند ہو کہ نقل کردہ کتاب، مگر کیا کوئی بھی سند اس عقیدہ کی پیش کر سکتے ہو۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ |
| اور ٹھہرایا ہے انہوں نے خدا میں اور جنوں میں رشتہ |
| وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾ |
| اور جنات جانتے ہیں کہ وہ (خدا کے سامنے) حاضر کئے جائیں گے |

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ

اللہ پاک ہے ان باتوں سے جو یہ بیان کرتے ہیں۔

## جن اللہ سے ڈرتے تھے:

بعض احمقوں نے جنوں کے ساتھ (معاذ اللہ) اللہ کی رشتہ داری کا رشتہ قائم کر دیا۔ [illegible]

[illegible]

سببِ نزول:

[illegible] کی روایت ہے کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے فرمایا یہ آیت [illegible] تین قبائل کے متعلق نازل ہوئی [illegible]۔

## جن کا معنی:

[illegible] (انسانی) نظروں سے پوشیدہ [illegible] (جن کا معنی ہے پوشیدہ ہونا) [illegible]

## مشرکین کے غلط خیالات:

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے فرمایا ملائکہ کا ہی ایک خاص گروہ ہے جس [illegible] کو لوگ خدا کی بیٹیاں کہتے تھے۔ [illegible] (نعوذ باللہ منہ)

[illegible] قریشیوں نے جب ملائکہ کو اللہ کی بیٹیاں کہا تو حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ نے [illegible] (تفسیر مظہری)

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ، حسن بصری اور [illegible] سے منقول ہے [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible]

[illegible]

[illegible]

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ

مگر اللہ کے جو بندے چنے ہوئے ہیں۔

## اخلاص و بندگی کام آئے گی:

[illegible]

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۙ

سو تم اور جن کو تم پوجتے ہو

مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۙ

کسی کو اس (اللہ) سے بہکا نہیں سکتے

اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ

مگر اسی کو جو پہنچنے والا ہے دوزخ میں

## سب اللہ کے اختیار میں ہے

[illegible]

وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۙ

اور ہم میں سے جو ہے اس کا ایک ٹھکانا ہے مقرر

## فرشتوں کا کام

[illegible]

جیسے بہت بڑا آدمی کسی بات سے دعا نہیں فرماتی ہیں۔ یعنی ہر فرشتہ کی ایک مقرر جگہ ہے، اس سے آگے نہیں بڑھ سکتا۔ یہاں یہ فرمایا کہ کافر کہتے ہیں کہ فرشتے اللہ کی بیٹیاں ہیں جنوں کی عورتوں سے پیدا ہوئی۔ مومنوں کا اپنا حال خوب معلوم ہے اور فرشتے یوں کہتے ہیں کہ ان کو بھی عمر بھی سے ذرا تجاوز کرنے کی گنجائش نہیں۔ (تفسیر حقانی)

## انسان اور ملائکہ کا فرق:

ابوبکر وراق نے فرمایا جیسے مرد ہے جیسے خوف، امید، محبت، رضا میں کوئی ملا۔ یہ بات تو صرف فرشتے کہتے ہیں کہ انسان مراتب قرب میں برابر ترقی کرتا رہتا ہے رسول اللہ ﷺ نے اللہ کا ارشاد نقل کیا میرا بندہ نوافل کے ذریعہ سے میرے قریب ہوتا جاتا ہے یہاں تک کہ مجھے اس سے محبت ہو جاتی ہے الخ۔ (رواہ البخاری من ابی ہریرۃ)

ملائکہ بے شک اپنے مقام سے آگے نہیں بڑھ سکتے۔ حضرت عبدالرحمٰن بن ابی اوفیٰ راوی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے حضرت جبرئیل علیہ السلام سے دریافت کیا کیا آپ نے اپنے رب کو دیکھا ہے جبرئیل علیہ السلام نے کہا (یعنی خوف کی وجہ سے ان پر لرزہ طاری ہو گیا) اور کہا محمد ﷺ میرے اور اس کے درمیان نور کے ستر ہزار پردے حائل ہیں ان پردوں میں سے اگر میں کسی کے قریب بھی پہنچ جاؤں تو جل جاؤں۔ بغوی نے لکھا ہے ابونعیم نے حلیہ میں حضرت انس رضی اللہ عنہ کی روایت سے یہ حدیث نقل کی ہے لیکن اس روایت میں حضرت جبرئیل علیہ السلام کے لرزہ طاری ہونے کا ذکر نہیں ہے۔

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ راوی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا اللہ نے جب سے اسرافیل علیہ السلام کو پیدا کیا ہے اسی وقت سے وہ برابر اپنے قدموں پر کھڑے ہیں نظر اوپر بھی نہیں اٹھاتے اور رب کے درمیان ستر نور (یعنی نوری پردے) حائل ہیں اگر ایک کے بھی قریب چلا جائے تو جل جائے۔ (رواہ الترمذی و صححہ، تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ |
| اور ہم ہی ہیں صف باندھنے والے |

## نماز میں صف بندی

یعنی نبی ﷺ کی حدیث پر عمل صف بندی کی اور اس کا حکم دینے کے لئے فرمایا ہے یہاں نہیں تو کے پیچھے صف بناتے ہیں۔ (تفسیر قرطبی)

ابن ابی حاتم نے ولید بن مالک کی روایت سے بیان کیا کہ لوگ متفرق طور پر نماز پڑھا کرتے تھے (کوئی قطار نہیں بناتے تھے) جب یہ آیت نازل ہوئی تو رسول اللہ ﷺ نے لوگوں کو صف بندی کا حکم دے دیا۔

مسلم نے حضرت جابر بن سمرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا تم ملائکہ کی صفوں کی طرح صف بندی کیوں نہیں کرتے، ہم نے عرض کیا یا رسول اللہ ﷺ ملائکہ کیسے صف بندی کرتے ہیں، فرمایا ملائکہ اپنے رب کے سامنے اس طرح صف بندی کرتے ہیں کہ اگلی صفوں کو پورا (پورا) بھرتے ہیں اور باہم مل کر کھڑے ہوتے ہیں۔

آیت کا مطلب یہ ہے کہ اداء طاعت کے وقت ہم اپنے قدموں کو صف بستہ رکھتے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ |
| اور ہم ہی ہیں پاکی بیان کرنے والے |

یہاں تک فرشتوں کا کلام ختم ہو گیا آگے اہل مکہ کا حال بیان فرماتے ہیں۔

| |
|---|
| وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ |
| اور یہ تو کہا کرتے تھے |
| لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ |
| اگر ہمارے پاس کچھ نصیحت ہوتی پہلے لوگوں کی |
| لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ |
| تو ہم ہوتے بندے اللہ کے چنے ہوئے |
| فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ |
| سو اس سے منکر ہو گئے اب آگے جان لیں گے |

یعنی حقیقت تو یہ ہے کہ ان کے بڑے بڑے شخص بے علم بے خبر رہے تھے تو یہ کہتے تھے اگر ہم کو پہلے لوگوں کے علوم حاصل ہوتے یعنی ہمارے پاس کوئی کتاب اور نصیحت کی بات اترتی تو ہم خوب کوشش کر کے کمالات اور معرفت و ولایت میں ترقی کرتے اور اللہ کے مخلص و منتخب بندوں میں شامل ہو جاتے۔ اب جو ان کے پاس نصیحت آئی تو کیسے کے منکر ہو گئے، تھوڑا صبر کرو عنقریب اس انکار و انحراف کا انجام اپنی آنکھوں سے دیکھ لیں گے۔

| |
|---|
| وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ |
| اور پہلے ہو چکا ہمارا حکم اپنے بندوں کے حق میں جو رسول ہیں |
| اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ |
| بے شک انہی کو مدد ملتی ہے |
| وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ |
| اور ہمارا لشکر جو ہے جیت انہی کی ہے |

## آخرکار فتح حق والوں کی ہوتی ہے

[illegible]

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۝ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ

[illegible]

## نفس اور شیطان سے جہاد

[illegible]

| |
|---|
| فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ |
| [illegible] |
| وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ |
| [illegible] |

## باطل والوں کی شکست قریب ہے

[illegible]

| |
|---|
| أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ |
| [illegible] |
| فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ |
| [illegible] |

## جب عذاب آئے گا تو آنکھیں کھلیں گی

فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ |
| اور ان سے ایک وقت تک [illegible] |
| وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ |
| اور [illegible] دیکھ لیں گے |

[illegible]

| |
|---|
| سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ |
| [illegible] |
| وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ |
| [illegible] |

## تمام مضامین کا خلاصہ

[illegible]

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

[illegible]

الحمد للہ سورۃ الصافات ختم ہوئی

[illegible]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

[illegible]

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِی الذِّكْرِ ۝ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ص قسم ہے اس قرآن کی ... بلکہ جو لوگ کافر ہیں

فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ

غرور میں ہیں اور مخالفت میں

**قرآن کی شہادت:** [illegible]

**شان نزول:** [illegible]

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ

[illegible]

حِيْنَ مَنَاصٍ

[illegible]

**ماضی کے منکرین کا انجام:** [illegible]

[illegible]

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ

[illegible]

وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ

[illegible]

**کافروں کا جھوٹا الزام:** [illegible]

[illegible]

أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ

[illegible]

وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا

[illegible]

عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ

[illegible]

[illegible]

عجیب اور عجاب کا فرق [illegible]

إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ

[illegible]

[illegible]

مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ

[illegible]

إِنْ هَٰذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

## أَءُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا

[illegible]

## بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّن ذِكْرِي ۚ بَل لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ

[illegible]

## أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ

[illegible]

## أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ

[illegible]

## جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ

[illegible]

[illegible]

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ

جھٹلا چکے ہیں ان سے پہلے نوح کی قوم اور عاد اور فرعون

ذُو الْأَوْتَادِ

میخوں والا

ذوالاوتاد کا مطلب [illegible]

[illegible]

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْئَيْكَةِ

اور ثمود اور لوط کی قوم اور بن کے لوگ

[illegible]

أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ

یہ ہیں بڑی بڑی جماعتیں ان میں کوئی نہیں جس نے نہ جھٹلایا ہو رسولوں کو

فَحَقَّ عِقَابِ

پھر ثابت ہوئی میری طرف سے سزا

[illegible]

وَمَا يَنْظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً

اور یہ لوگ انتظار نہیں کرتے مگر ایک چنگھاڑ کی

مَا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ

جو درمیان میں دم نہ لے گی

[illegible]

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ

اور کہتے ہیں اے رب ہمارے جلدی دے ہم کو ہمارا حصہ پہلے حساب کے دن سے

[illegible]

کافروں کا تمسخر [illegible]

[illegible]

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ

تو صبر کر ان کی باتوں پر اور یاد کر ہمارے بندے داؤد کو

ذَا الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ

قوت والا وہ تھا رجوع کرنے والا

### حضرت داؤد علیہ السلام کا واقعہ یاد کرو

[illegible]

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ

[illegible]

**نماز چاشت کا حکم**

[illegible]

**نماز چاشت کی فضیلت**

[illegible]

[illegible]

ہے۔ اور یہ معمول [illegible] زیادہ اچھا ہے [illegible] آپ کا یہ معمول پوری زندگی [illegible] تھا

وَاٰتَیْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ (اور ہم نے ان کو حکمت اور فیصلہ کرنے والی تقریر عطا فرمائی) حکمت سے مراد تو دانائی ہے یعنی ہم نے انہیں عقل و فہم کی دولت بخشی تھی اور بعض حضرات نے فرمایا کہ نبوت مراد ہے۔ اور "وَفَصْلَ الْخِطَابِ" کی مختلف تفسیریں کی گئی ہیں۔ بعض نے فرمایا کہ اس سے مراد واضح بیان اور قوت خطابت ہے۔ چنانچہ حضرت داؤد علیہ السلام [illegible] "اما بعد" سب سے پہلے انہوں نے ہی کہنا شروع کیا اور بعض حضرات نے فرمایا کہ اس سے مراد قوت فیصلہ ہے۔ (معارف القرآن)

## وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ

اور پرندے جمع ہو کر سب ان کے ساتھ مشغول ہو جاتے ☆

☆ وہ سب ان کے ساتھ مل کر ذکر کی طرف رجوع کرتے [illegible] (مظہری)

والطیر محشورۃ کا ترجمہ [illegible] کے مطابق ہے [illegible] ابن کثیر نے اپنی تفسیر میں لکھا ہے [illegible] حضرت داؤد [illegible] جاتے تھے اور ان کے [illegible] پہاڑ [illegible] ساتھ [illegible] علیہ السلام کے [illegible] تھے۔

[illegible] فرشتے [illegible] حضرت داؤد علیہ السلام کی خصوصیت اور شرف یہ تھا کہ ان کی [illegible] فرشتوں کے علاوہ پہاڑ اور پرندے بھی شامل ہوتے تھے۔

(معارف القرآن)

## وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ

اور قوت دی ہم نے ان کی سلطنت کو ☆

☆ یعنی [illegible] عظمت کی دھاک [illegible] حضرت [illegible] (مظہری)

**حضرت داؤد علیہ السلام کی حکومت:** بغوی نے [illegible] ابن عباس [illegible] بادشاہوں [illegible] ان کے [illegible] ہزار سپاہی [illegible] کرتے تھے۔

بغوی نے بروایت عکرمہ حضرت ابن عباس [illegible] نقل کیا ہے کہ بنی اسرائیل میں سے کسی آدمی نے کسی [illegible] پر حضرت داؤد کے سامنے [illegible]

[illegible] حضرت [illegible] آپ [illegible] حضرت داؤد [illegible] خواب [illegible] حضرت داؤد [illegible] خواب [illegible] تمہارے [illegible] خواب [illegible] فیصلہ [illegible] حضرت داؤد [illegible] اس [illegible] (تفسیر مظہری)

## وَاٰتَیْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ

اور دی تھی ہم نے ان کو حکمت اور فیصلہ کرنے والی بات ☆

### حضرت داؤد علیہ السلام کے اوصاف

☆ یعنی [illegible] بات [illegible] فیصلہ [illegible] نہایت فیصلہ کن تقریر [illegible] بہرحال حق تعالیٰ نے ان کو نبوت [illegible] فیصلہ [illegible] فرماتے تھے۔ [illegible] جس کا قصہ آگے بیان ہونے [illegible] (تفسیر عثمانی)

**دعائے داؤدی:** ترمذی [illegible] ایک شخص [illegible] خواب میں دیکھا [illegible] درخت کے پیچھے [illegible] میں نے [illegible] آیت تلاوت کی [illegible] اللّٰھم اکتب لی بھا

عندک اجرا واجعلہا لی عندک ذخرا وضع بہا عنی وزرا
وتقبلہا منی کما تقبلتہا من عبدک داؤد [illegible] سے [illegible]
[illegible] کہ تو میرے لئے اپنے پاس [illegible] کا سبب بنا دے [illegible]
بوجھ مجھ سے اتار دے جیسے تو نے [illegible]
حضرت ابن عباس نے فرمایا [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] سجدہ [illegible]
[illegible] وہی پڑھا جو اس شخص نے [illegible] نقل کیا تھا۔

بغوی کہتے ہیں کہ جناب داؤد نبی نے ایک مرتبہ آپ سے چند سوالات کئے [illegible] معقول جوابات پا کر فرمایا کہ آپ نبی اللہ ہیں۔ پوچھا کہ سب سے [illegible] چیز کیا ہے؟ جواب دیا کہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے [illegible] ایمان۔ پھر پوچھا کہ سب سے [illegible] چیز کیا ہے؟ [illegible] نے عرض کیا ایمان کے بعد [illegible]۔ پھر پوچھا کہ سب سے زیادہ میٹھی چیز کیا ہے؟ عرض کیا کہ خدا تعالیٰ کی رحمت۔ پھر پوچھا کہ سب سے زیادہ [illegible] چیز کیا ہے؟ جواب دیا [illegible] حالی کا [illegible] لوگوں [illegible] میں ایک دوسرے [illegible] ہو جاتا۔

الحکمۃ حکمت سے مراد نبوت کامل [illegible] کا علم۔

فصل الخطاب: بغوی نے حضرت علی کا قول نقل کیا ہے کہ فصل الخطاب البینۃ علی المدعی والیمین علی من انکر ہے (مدعی پر لازم ہے کہ گواہ پیش کرے اور گواہ نہ ہوں تو مدعا علیہ سے حلف لیا جائے) [illegible] جھگڑوں کا فیصلہ کرنا جس کے بعد یقین کی بات ختم ہو جاتی ہے۔ حضرت ابی بن کعب کا قول بھی یہی روایت میں آیا ہے۔ حضرت [illegible] نے فرمایا فصل الخطاب کا مطلب ہے [illegible] عطائے [illegible] کا بھی قول ہے۔

[illegible] کے بعد [illegible] مقصد بیان [illegible] بیان مقصد سے پہلے [illegible] فصل الخطاب ہے۔

**آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا جامع کلام** [illegible] تم نے
حضرت [illegible] ایک حدیث نقل کی ہے جس [illegible]
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے کلام کے متعلق [illegible] تاہم
[illegible] لمبا [illegible] کہ [illegible] کر کے بیان کرتا ہے [illegible]
[illegible] ہے۔ [illegible]

| |
|---|
| وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ |
| اور کیا آپ کو خبر پہنچی ہے ان دعوے داروں کی جب وہ دیوار پھاند کر عبادت خانہ میں آئے |
| إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ |
| جب وہ داؤد کے پاس آئے تو وہ ان سے گھبرا گئے |

## حضرت داؤد کی آزمائش

حضرت داؤد نے [illegible] کے [illegible] ایک [illegible] مخصوص اوقات کو اپنے اہل و عیال کے لئے رکھا تھا، [illegible] ایک دن خاص اپنی عبادت کے لئے [illegible] ایک دن عبادت میں مشغول تھے کہ [illegible] آ کر [illegible] حضرت داؤد علیہ السلام [illegible] قوت [illegible] کی زنجیر [illegible] نبی اور [illegible] قسم کی [illegible] مبتلا کیا [illegible] گئے [illegible]

[illegible] ان [illegible] طرف [illegible] اور [illegible] میں مشغول تھے [illegible]

بغوی نے [illegible] نقل کیا ہے کہ حضرت داؤد نے ایک [illegible] کو [illegible] میں [illegible] کر [illegible] ایک روز [illegible] ایک [illegible] کے [illegible]

[illegible] تفسیر بغوی۔

**آزمائش کی تشریح** علماء نے [illegible] حضرت داؤد کی آزمائش [illegible] کی تشریح میں [illegible] کہ [illegible] مقصد کے [illegible] ایک [illegible] اسرائیلیات میں [illegible] حضرت داؤد علیہ السلام کا [illegible] ظلم [illegible] پیش [illegible] اللہ تعالیٰ نے حضرت داؤد [illegible] امتحان فرمایا [illegible] جہاں [illegible] سے [illegible] بہت [illegible] ہیں۔

حضرت داؤد علیہ السلام [illegible] امتحان [illegible] [illegible] ثابت [illegible] اور [illegible] اللہ تعالیٰ نے [illegible] بیان [illegible]

[illegible] اور [illegible] [illegible] مقصد [illegible] کوئی تعلق نہیں [illegible]

[illegible] معلوم [illegible] کے [illegible]

کو کہا جاتا تھا قرآن کریم میں یہ لفظ عبادت گاہ کے معنی میں مستعمل ہوا ہے جیسا کہ ... کی آیات سے معلوم ہوتا ہے اور ... محراب معروف ہیں۔ یہ بعد کی اصطلاح ہے ... (معارف القرآن)

**طبعی خوف:** فَفَزِعَ مِنْهُمْ (تو حضرت داؤد ان سے گھبرا گئے) گھبرانے کی وجہ ظاہر تھی کہ وہ دیواریں کود کر بے وقت پہرہ دار ... اس طرح کسی آدمی کا کسی کے گھر میں ... ہے۔ طبعی خوف نبوت یا ولایت کے منافی نہیں ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

## حضرت داؤد علیہ السلام کے بارے میں بلا تحقیق قصے

سعید بن مسیب اور حارث اعور حضرت علی رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں۔

انہ قال من حدثکم بحدیث داؤد علی ما یرویہ القصاص جلدتہ مائۃ وستین جلدۃ وھو حد الفریۃ علی الانبیاء

انہوں نے فرمایا کہ جو شخص تم میں سے داؤد علیہ السلام کے بارے میں وہ قصہ بیان کرے گا جس کو عام طور پر واعظین بیان کرتے ہیں میں اس کو ایک سو ساٹھ کوڑے ماروں گا اور انبیاء علیہم السلام پر بہتان کی سزا یہی ہے۔

مولانا ... تفسیر حقانی میں فرماتے ہیں کہ اس قصہ کا ماخذ کتاب صموئیل ہے ... تاریخ تک ... کتاب ... نہ ... سکا کہ اس کا مصنف کون ہے وہ ایک حیثیت تاریخ کی کتاب ہے ... جس کو ... علماء نے ... کتب ... (حقانی)

**عصمت انبیاء:** عصمت انبیاء دین کی بنیاد ہے۔ ظاہر ہے کہ اللہ کا پیغام اس کے احکام انبیاء ہی کے ذریعے تو بندوں تک پہنچتے ہیں۔ حضرات انبیاء خود کے غیر معصوم ... اگر معصوم نہ ہوں تو ... ان کی ... سے تعلق ... کے واسطے ... احکام ... ہو جاتا اور ... ہو سکتا ہے۔ عصمت انبیاء کا مسئلہ تو ایسے اصول میں سے ہے کہ کسی ... ایک ... کے لئے بھی ... نہیں کیا جا سکتا۔ (...)

| |
|---|
| قَالُوا لَا تَخَفْ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ |
| وہ بولے مت گھبرا ہم دو جھگڑنے والے ہیں زیادتی کی ہے ایک نے |
| بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ |
| دوسرے پر سو فیصلہ کر دے ہم میں انصاف کا اور دور نہ ڈال بات کو |
| وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝ |
| اور چلا دے ہم کو سیدھی راہ پر ☆ |

... سے آپ کو ... آپ ... ہمیشہ ... فیصلہ ... کے لئے آپ کی خدمت میں حاضر ہوئے ہیں آپ ... فیصلہ کر دیجئے ... سے ... انصاف کی ... معلوم کرنے کے لئے آئے ہیں ... آپ ... (...)

**حاکم کے آداب:** فَلَا تُشْطِطْ (انہوں نے کہا نا انصافی نہ کیجئے) آنے والوں نے یہ ... بات ... حضرت داؤد علیہ السلام ... سے ... بات ... معلوم ہوا کہ ... کسی ... کا مرتکب ہو ... اور ... کرنی چاہئے۔ ... معلوم ہوتا ہے ... آنے والوں پر ... حضرت داؤد علیہ السلام نے ... انکشاف حقیقت کا ... فرمایا ... یہ لوگ معذور ہیں۔

... معلوم ہوا کہ ... ضرورت ... تحقیق ... ہو ... حالت ... اس ... کا تقاضا ہے ... کا ... چاہئے ...

| |
|---|
| إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ |
| یہ میرا بھائی ہے اس کے یہاں ہیں ننانوے دنبیاں اور میرے یہاں |
| نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي |
| ایک دنبی پھر کہتا ہے کہ وہ بھی میرے حوالہ کر دے اور زبردستی کرتا ہے |
| الْخِطَابِ ۝ |
| مجھ سے بات میں ☆ |

**تفسیر:** ... بھائی ... ہے ... کہ ... آپ ... جس طرح ... سے ... کر لے اور ... بات کرنے میں بھی مجھ سے ... جب ... ہے ... اور ... کی ... میری ... کے لئے ... کی باتیں کرتا ہے ... !

| |
|---|
| قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ |
| بولا وہ بے انصافی کرتا ہے تجھ پر کہ مانگتا ہے تیری دنبی ملانے کو اپنی دنبیوں میں |

[illegible]

وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ

[illegible]

وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ

[illegible]

[illegible]

وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ

[illegible]

بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

[illegible]

وَقَلِيلٌ مَا هُمْ

[illegible]

[illegible]

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ

[illegible]

## حضرت داؤد کی شان

[illegible]

[illegible] حضرت داؤد [illegible] تھی [illegible]
[illegible] اطاعت [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ |
| اے داؤد! ہم نے تجھ کو زمین میں خلیفہ بنایا ہے |
| فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى |
| پس تم لوگوں میں انصاف سے فیصلہ کرو اور خواہش کی پیروی نہ کرو |
| فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ |
| ورنہ وہ تمہیں اللہ کی راہ سے بھٹکا دے گی، بے شک جو لوگ |
| يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ |
| بھٹکتے ہیں اللہ کی راہ سے ان کے لئے سخت عذاب ہے |

### خلافت کے تقاضے

✿ [illegible] خدا نے [illegible] زمین میں [illegible] لہٰذا اس نے تم پر [illegible] حکومت کے فیصلے عدل و انصاف کے ساتھ شریعت حق کے موافق کرو [illegible] کسی معاملہ میں خواہش نفس کا ادنیٰ شائبہ بھی [illegible] پائے [illegible] چیز آدمی کو اللہ کی راہ سے بھٹکا دینے والی ہے، اور جب [illegible] اللہ کی راہ سے بھٹکا [illegible]

**خلیفہ اور بادشاہ کا فرق:** حضرت عمر بن خطاب نے حضرات طلحہ، زبیر، کعب اور سلمان [illegible] سے پوچھا خلیفہ اور بادشاہ میں کیا فرق ہے [illegible] حضرت طلحہ اور حضرت زبیر نے فرمایا ہم کو نہیں معلوم۔ حضرت سلمان نے کہا خلیفہ وہ ہے جو رعایا میں انصاف کرے سب کو برابر تقسیم کرے [illegible] اور رعایا پر ایسی شفقت کرے جیسے کوئی اپنے گھر والوں پر کرتا ہے، اور اللہ کی کتاب کے موافق فیصلہ کرے۔ حضرت کعب نے کہا میں یہ نہیں سمجھتا تھا کہ [illegible] کوئی شخص [illegible] ہو۔ حضرت سفیان [illegible] راوی بیان کرتے ہیں کہ حضرت عمر نے فرمایا میں بادشاہ ہوں یا خلیفہ؟ حضرت سلمان نے کہا اگر آپ مسلمانوں کی زمین سے ایک درہم یا اس سے کم یا زیادہ بھی وصول کریں اور پھر اس کو ناحق جگہ خرچ کریں تو آپ بادشاہ ہیں خلیفہ نہیں [illegible] حضرت عمر [illegible] آنکھوں سے آنسو [illegible]

[illegible] حضرت [illegible] معلوم [illegible] ایک [illegible] فرق ہے حضرت عمر نے فرمایا [illegible] ہوتا ہے [illegible] (ابن کثیر) [illegible] حضرت [illegible]

حضرت معاویہ [illegible] خلافت [illegible] حق [illegible] حکومت [illegible] (تفسیر مظہری)

### اسلامی ریاست کا بنیادی کام اقامت حق ہے

اسلامی حکومت کا [illegible] اس نے ریاست [illegible] کے لئے [illegible] مقرر نہیں کی [illegible] حکومت [illegible] قائم [illegible] حق کے مطابق [illegible] اللہ کی [illegible] حکومت [illegible] (تفسیر [illegible])

**عدلیہ اور انتظامیہ کا رشتہ:** [illegible] بادشاہ [illegible] کے ہاتھ میں [illegible] عدلیہ [illegible] حکومت [illegible] امانت [illegible] مقرر [illegible] کیا جاتا ہے [illegible] حکمرانوں [illegible] عدلیہ انتظامیہ سے [illegible]

حضرت داؤد علیہ السلام [illegible] روایات [illegible] حضرت [illegible] اعلیٰ [illegible] انتظامیہ کا [illegible]

**قومی لیڈروں کے لئے سبق:** [illegible] پہلی [illegible] خدا کا خوف اور آخرت کی فکر [illegible] اخلاق [illegible] خدا [illegible] قوم [illegible]

جس حاکم یا قاضی کے دل میں خدا کا خوف ہو یا آخرت کی فکر ہو وہی صحیح معنی میں حق و انصاف قائم کر سکتا ہے۔ ورنہ اگر یہ نہیں ہے تو آپ اچھے سے اچھا قانون بنا لیجئے، قانون سازی کے دسیوں کاریگر ہر جگہ اپنا راستہ خود نکال لیں گے اور ان کی موجودگی میں کوئی بہتر سے بہتر نظام قانون بھی حق و انصاف قائم نہیں کر سکتا۔ دنیا کی تاریخ اور موجودہ زمانے کے حالات اس پر گواہ ہیں۔

## خدا کی یاد میں غفلت ہو تو اپنے اوپر جرمانہ مقرر کرنا دینی غیرت کا تقاضا ہے

کسی نیک کام کی عادت ڈالنے کے لئے اپنے نفس پر کوئی جرمانہ مقرر کرنا اصلاح نفس کا ایک نسخہ ہے اور اس واقعہ سے اس کا جواز بلکہ استحباب معلوم ہوتا ہے، سرکار دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم سے بھی مروی ہے کہ ایک مرتبہ حضرت ابو جہم نے ایک شامی چادر مدینے پیش کی جس پر کچھ نقش و نگار بنے ہوئے تھے آپ نے اس چادر میں نماز پڑھی اور واپس تشریف لا کر حضرت عائشہ سے فرمایا کہ یہ چادر ابو جہم کو واپس کر دو کیونکہ نماز میں میری نگاہ اس کے نقش و نگار پر پڑ گئی تو قریب تھا کہ یہ مجھے فتنہ میں ڈال دیتا۔ (احکام القرآن)

اسی طرح حضرت ابو طلحہ ایک مرتبہ اپنے باغ میں نماز پڑھ رہے تھے کہ ایک پرندے کو دیکھنے میں مشغول ہو گئے جس سے نماز کی طرف دھیان نہ رہا تو بعد میں آپ نے وہ باغ صدقہ کر دیا۔

ایسے کوئی کام درست نہیں جس سے مال کا ضائع کرنا لازم آئے جیسے صوفیاء میں سے حضرت شبلی رحمۃ اللہ علیہ نے ایک مرتبہ اسی جذبے کے تحت اپنے کپڑے جلا دیئے تھے لیکن محقق صوفیہ مثلاً شیخ عبد الوہاب شعرانی رحمۃ اللہ علیہ نے ان کے اس عمل کو صحیح قرار نہیں دیا۔ (روح المعانی)

## امیر کو بذات خود ریاست کے کاموں کی نگرانی کرنی چاہئے

سلطنت کے ذمہ دار یا اونچے درجے کے افسر کو چاہئے کہ وہ اپنے ماتحت شعبوں پر بذات خود نگرانی رکھے، انہیں اپنے ماتحتوں پر چھوڑ کر فارغ نہ ہو بیٹھے۔ یہی وجہ ہے کہ حضرت سلیمان علیہ السلام نے ماتحتوں کی کثرت کے باوجود بنفس نفیس گھوڑوں کا معائنہ فرمایا۔ خلفائے راشدین اور خاص طور سے حضرت فاروق اعظم کے عمل سے بھی یہی ثابت ہوتا ہے۔

## ایک عبادت کے وقت دوسری عبادت میں مشغول ہونا غلطی ہے

ایک عبادت کے وقت کوئی دوسری عبادت نہیں کرنی چاہئے۔ ظاہر ہے کہ جہاد کے گھوڑوں کا معائنہ ایک عظیم عبادت تھی، لیکن چونکہ وہ وقت اس عبادت کے اوقات کا نہیں تھا اس لئے حضرت سلیمان علیہ السلام نے اسی کو بھی غلطی قرار دے کر اس کا تدارک فرمایا۔ اسی سے فقہاء نے مستنبط کیا ہے کہ جمعہ کی اذان کے بعد جس طرح خرید و فروخت ممنوع ہے اسی طرح جمعہ کی تیاری کے علاوہ کسی اور کام میں مشغول ہونا بھی درست نہیں، خواہ وہ عبادت قرآن پاک پڑھنے کی ہی کیوں نہ ہو۔ (معارف القرآن)

**بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ**

اس بات پر کہ بھلا دیا انہوں نے دن حساب کا ۞

**خواہشات کی پیروی کا سبب:** یعنی خواہشات نفسانی کی پیروی اسی لئے ہوتی ہے کہ آخرت کے حساب کا دن یاد نہیں رہتا، اگر یہ بات مستحضر رہے کہ ایک دن اللہ کے سامنے جانا اور ایک ایک عمل کا حساب دینا ہے تو آدمی کبھی اللہ کی مرضی پر اپنی خواہش کو مقدم نہ کرے۔ (تفسیر عثمانی) "یوم الحساب" کا تعلق "لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ" کے ساتھ ہو یا "نسوا" کے ساتھ ہو، یعنی اللہ کے احکام بھلا دینے کے سبب سے ان پر سخت عذاب ہوگا حساب کے دن۔ (تفسیر مظہری)

**عادل حکمران:** حدیث میں ہے کہ عادل لوگ نور کے منبروں پر رحمٰن کی داہنی جانب ہوں گے۔ رحمٰن کے دونوں ہاتھ داہنے ہی ہیں۔ یہ وہ ہیں جو اپنے اہل و عیال میں اور جن کے وہ مالک ہیں سب میں انصاف کرتے ہیں اور حدیث میں ہے کہ سب سے زیادہ محبوب اللہ تعالیٰ کو اور سب سے زیادہ اس کے مقرب وہ بادشاہ ہوں گے جو عادل ہوں اور سب سے زیادہ دشمن اور سب سے سخت عذاب میں وہ ہوں گے جو حکمران ظالم ہوں۔ (ابن کثیر)

**خلیفۂ وقت سے حساب:** حضرت ابو زرعہ سے بادشاہ وقت ولید بن عبد الملک نے ایک مرتبہ دریافت کیا کہ خلیفۂ وقت سے بھی خدا کے یہاں حساب لیا جائے گا؟ آپ نے فرمایا کہ سچ بتاؤں؟ خلیفہ نے کہا ہاں سچ فرمائیے آپ کو امن ہے۔ فرمایا اے امیر المومنین اللہ تعالیٰ کے نزدیک آپ زیادہ بزرگ ہیں یا حضرت داؤد؟ ان کو خلافت کے ساتھ نبوت بھی دی گئی تھی۔ پھر بھی ان کے لئے کتاب اللہ میں یہ ہے: یٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰکَ خَلِیْفَۃً ... مطلب یہ ہے کہ ان کے لئے یوم الحساب کا سخت عذاب ہے ان کے بھول جانے کے سبب سے، سدی کہتے ہیں ان کے لئے سخت عذاب ہے اس وجہ سے کہ انہوں نے یوم الحساب کے لئے اعمال نہیں کئے۔ آیت کے لفظوں سے یہی قول زیادہ مناسب ہے۔ (ابن کثیر)

**وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا**

اور ہم نے نہیں بنایا آسمان اور زمین کو اور جو ان کے بیچ میں ہے نکما

ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا

یہ خیال ہے ان کا جو منکر ہیں سو خرابی ہے منکروں کے لئے

مِنَ النَّارِ

آگ سے

**آخرت کو سامنے رکھو** [illegible]

**باطل کا معنی** [illegible]

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

کیا ہم کر دیں گے ایمان والوں کو جو کرتے ہیں نیک کام برابر

كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ

خرابی کرنے والوں کے ملک میں یا ہم کر دیں گے ڈرنے والوں کو

الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ

برابر ڈھیٹ لوگوں کے

**قیامت کی حکمت** [illegible]

[illegible]

**قیامت کی ایک عقلی دلیل** [illegible]

كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ

ایک کتاب ہے جو اتاری ہم نے تیری طرف برکت کی تاکہ دھیان کریں اس کی باتوں میں

وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ

اور تاکہ سمجھیں عقل والے

## کتاب کے نزول کی حکمت

[illegible]

**تدبر آیات** [illegible]

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ

نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ

الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ

عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ رُدُّوهَا

عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ

## حضرت سلیمان علیہ السلام اور ان کی آزمائش

## الصافنات الجیاد

جیسی کہ ضعیف ہے (کہ گھوڑا) حضرت ابن عباسؓ نے کہا: صفنت میں گھوڑوں کی دونوں باتیں صفتیں بیان کی گئی ہیں۔ صافن ہونا اور جیاد۔ جب گھوڑا کھڑا ہو تو اس کی صفت صافن ہوتا ہے کہ گھوڑے حضرت سلیمان کے سامنے تھے جو تین پاؤں پر کھڑا ہوا اور جب چلے تو تیز رفتار، تیز دوڑنے والے جودت کی نشانی ہے۔

**سلیمان علیہ السلام کے گھوڑے:** سعید بن عبد العزیز (ربیعہ) ابراہیم تیمی کے حوالہ سے بیان کیا کہ وہ بیس ہزار گھوڑے تھے اور (پرندوں کی طرح) پروں والے تھے، انہیں حضرت سلیمانؑ نے ذبح فرما دیا۔

حضرت عکرمہ سے ایک روایت یوں بیان کی گئی حسن نے کہا مجھے یہ خبر پہنچی ہے کہ جن گھوڑوں کو سلیمانؑ نے ذبح کیا تھا وہ (پرندوں کی طرح) پروں والے تھے اور حضرت سلیمان کے لئے سمندر سے برآمد کئے گئے تھے آپ سے پہلے اور نہ آپ کے بعد کسی کو وہ پروں والے گھوڑے ملے تھے۔ بعض نے حوالہ سے روایت نقل کی ہے کہ وہ بیس ہزار پروں والے گھوڑے تھے۔ (ابن جریر)

**حضرت عائشہؓ:** ابوداؤد میں ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم تبوک یا خیبر کے سفر سے واپس آئے تھے گھر میں تشریف فرما تھے۔ جو تیز ہوا کے جھونکے سے گھر میں ایک کونے کا پردہ ہٹ گیا۔ وہاں حضرت عائشہؓ کے کھیلنے کی گڑیاں رکھی ہوئی تھیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی نظر پڑ گئی۔ دریافت فرمایا یہ کیا ہے؟ حضرت عائشہ نے جواب دیا میری گڑیاں ہیں۔ آپ نے دیکھا کہ بیچ میں ایک گھوڑا سا بنا ہوا ہے جس کے دو پر بھی کپڑے کے لگے ہوئے ہیں۔ پوچھا یہ کیا ہے؟ کہا گھوڑا ہے۔ فرمایا اور یہ اس کے اوپر دونوں طرف جھنڈے سے کیا ہیں؟ کہا یہ دونوں اس کے پر ہیں۔ فرمایا گھوڑا بھی اچھا ہے اور اس کے پر بھی۔ صدیقہ نے فرمایا کیا آپ نے نہیں سنا کہ حضرت سلیمانؑ کے پروں والے گھوڑے تھے؟ یہ سن کر حضور صلی اللہ علیہ وسلم ہنس دیئے یہاں تک کہ آپ کے آخری دانت دکھائی دینے لگے۔ (ابوداؤد)

**حضرت سلیمان علیہ السلام کا استغفار:** ابن ابی حاتم نے بطریق ابن جریج بیان کیا کہ حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا سلیمانؑ نے تمام سامان کی پنڈلیاں کاٹ دیں طبرانی نے اوسط میں ابوالعالیہ کی سند سے مجھ میں اور ابن مردویہ نے اپنی سند کے ساتھ حضرت ابی بن کعب کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ گھوڑے سے علاقہ کی پنڈلیاں اور گردنیں کاٹ ڈالیں ممکن ہے اس عمل کا باعث نماز کا ضائع ہو جانے کے خیال سے قربت خداوندی کی طلب اور مرضی رب پالینے کا جذبہ ہو۔

حسن نے کہا جب سلیمانؑ نے گھوڑوں کو قتل کر دیا تو ان کے عوض اللہ نے آپ کو ایک سواری عنایت کی جو گھوڑوں سے بہتر اور ان سے زیادہ تیز رفتار

تھی یعنی ہوا کو آپ کا تابع حکم کر دیا۔

بعض اہل تفسیر نے لکھا ہے کہ حضرت سلیمانؑ نے گھوڑوں کو ذبح کر کے ان کا گوشت تقسیم کر دیا۔ گھوڑے کا گوشت ان کی شریعت میں حلال تھا۔ ہماری شریعت میں بھی قول جمہور حلال ہے صرف امام ابو حنیفہ نے مکروہ کہا ہے۔

بعض لوگوں کا کہنا ہے کہ حضرت سلیمانؑ نے وہ گھوڑے اللہ کے لئے وقف کر دیئے یعنی ان کی گردنوں اور پنڈلیوں پر وقف کی علامت کے طور پر ہاتھ پھیرا تھا۔

دمیری نے حضرت علی کا ایک قول نقل کیا ہے کہ سلیمان نے جو حَتّٰى تَوَارَتْ کہا تھا اور فرشتوں سے کہا تھا کہ جس آفتاب پردہ میں چھپ گیا ہے تم اس کو واپس لوٹا دو۔ کہا تھا کہ سورج کو واپس لاؤ تاکہ میں عصر کی نماز پڑھ لوں چنانچہ فرشتے سورج کو واپس لوٹا لائے اور آپ نے عصر کی نماز پڑھی وقت پر ادا فرمائی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَلَقَدۡ فَتَنَّا سُلَيۡمٰنَ وَاَلۡقَيۡنَا عَلٰى كُرۡسِيِّهٖ جَسَدًا |
| اور ہم نے جانچ لیا سلیمان کو اور ڈال دیا اس کے تخت پر ایک دھڑ |
| ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾ |
| پھر وہ رجوع ہوا |

## آزمائش کی ایک اور صورت

⊙ حدیث صحیح میں ہے کہ حضرت سلیمان علیہ السلام نے ایک روز قسم کھائی کہ آج رات میں اپنی تمام عورتوں کے پاس جاؤں گا (جو تعداد میں ستر یا اس کے قریب تھیں) اور ہر ایک عورت ایک بچے کو جنے گی جو اللہ کی راہ میں جہاد کرے گا۔ فرشتہ نے کہا کہ "ان شاء اللہ" کہہ لیجئے مگر (یاد ہونے کے باوجود) زبان سے نہ کہا۔ اللہ کی قدرت کہ ان عورتوں میں سے صرف ایک عورت کے ہاں بچہ ہوا۔ صرف ایک عورت سے ادھورا بچہ ہوا۔ بعض مفسرین کہتے ہیں کہ یہی وہ ادھورا بچہ ان کے تخت پر لا کر ڈال دیا گیا۔ گویا جہاد کی تمنا کو دیکھتے ہوئے اللہ تعالیٰ کے "جسد" (دھڑ) سے یہی مراد ہے۔ کیونکہ حضرت سلیمان علیہ السلام ندامت سے اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع ہوئے اور "ان شاء اللہ" نہ کہنے پر استغفار کیا۔ فوراً یہ آزمائش ہو گئی۔ حدیث میں ہے کہ اگر ان شاء اللہ کہہ لیتے تو سب کے سب مجاہد پیدا ہوتے جو ان کی تمنا تھی (تنبیہ) اکثر مفسرین نے یہاں بہت سی تفسیریں بیان کی ہیں اور ان سے متعلق بہت سے بے سروپا قصے سلیمانؑ کی انگوٹھی وغیرہ کے نقل کئے ہیں جو اسرائیلی روایات ہیں۔ تفسیر میں دیکھ لے۔ ابن کثیر لکھتے ہیں "وقد رويت هذه القصة مطولة عن جماعة من السلف رضي الله عنهم وكلها متلقاة من قصص أهل الكتاب" والله سبحانه وتعالى أعلم بالصواب۔ (تفسیر عثمانی)

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنۢبَغِي

[illegible]

لِأَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِيٓ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ

[illegible]

**بے مثال حکومت** [illegible]

**انبیاء علیہم السلام کی درخواست کا طریقہ**

[illegible]

[illegible]

**حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی شان** [illegible]

[illegible]

**حکومت اور اقتدار** [illegible]

[illegible]

[illegible] ہو جاتا [illegible] (روح المعانی وغیرہ) [illegible]

| |
|---|
| فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ |
| [illegible] |
| أَصَابَ ۙ وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ۙ |
| [illegible] |

یعنی جن ان کے حکم سے بڑی بڑی عمارتیں بناتے اور موتی وغیرہ نکالنے کے لئے دریاؤں میں غوطے لگاتے تھے۔ [illegible] کے متعلق پہلے سورۂ سبا [illegible] تفصیل گزر چکی ہے۔ [illegible]

## حضرت سلیمانؑ کی جنوں پر حکومت

[illegible] حضرت سلیمانؑ نے جنات [illegible] (۱) کچھ جنات تو عمارتی اشغال [illegible] (۲) [illegible] زنجیروں میں جکڑ دیا تھا [illegible] شرارت سے محفوظ رہیں۔

[illegible]

| |
|---|
| وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ |
| [illegible] |

[illegible]

## جنات کی زنجیریں

[illegible]

| |
|---|
| هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ |
| [illegible] |

**عطائے الٰہی** [illegible]

**بے مثال حکومت** [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ |
| [illegible] |

[illegible]

| |
|---|
| وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ |
| [illegible] |
| الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ |
| شیطان نے ایذا اور تکلیف [illegible] |

## حضرت ایوب علیہ السلام کی بیماری

[illegible]

میں شیطان کا ہے اس لیے کہ حضرت ایوب علیہ السلام نے اپنی بیماری یا تکلیف و آزار کی نسبت شیطان کی طرف کی تو یہ تو اضعاً و ادباً تھا۔ یا یہ کہ حضور بیعت سے پہلے تھا۔ کوئی غلطی آپ سے ہوئی موافق صادر ہوئی ہو جس کے نتیجہ میں یہ آزار پہنچا۔ یا حالت مرض و شدت میں شیطان اتنا وسوسہ اندازی کرتا ہوگا اور ہیاس کی وہ شدت میں جو تعب و تکلیف اٹھاتے تھے اس کا نصب و عذاب سے تعبیر فرمایا۔ واللہ اعلم

(تنبیہ) حضرت ایوب علیہ السلام کا قصہ سورہ "انبیاء" میں گزر چکا۔ وہاں ملاحظہ کر لیا جائے مگر واضح رہے کہ قصہ گو یوں نے حضرت ایوب علیہ السلام کی بیماری کے متعلق جو الفاظ بیان کئے ہیں ان کی اصل نہیں ہے۔ ایسا مرض جو عام طور پر لوگوں کے حق میں نفرت اور استقذار کا موجب ہو انبیاء علیہم السلام کی وجاہت کے منافی ہے۔ کما قال تعالیٰ "وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا" (احزاب رکوع ۹) تو ایسی قدر بیماری قبول کرنا چاہئے جو منصب نبوت کے منافی نہ ہو۔ (تفسیر عثمانی)

قتادہ نے کہا نصب سے مراد ہے جسمانی دکھ درد اور عذاب سے مراد ہے مالی۔ جیسی حضرت ایوب کے کھانے تکلیف کا مفصل ذکر اور ان کا پورا قصہ ہم نے سورۃ انبیاء میں بیان کر دیا ہے۔ (تفسیر مظہری)

یہ طرح کی بیماری کہ بدن سے کیڑے گرتے تھے اور لوگ ان کو گھر سے باہر کسی جگہ لے جا کر ڈال دیتے۔ انبیاء علیہم السلام کی اس عظمت و وجاہت کے منافی ہے جو ان کی طرف سے خدا نے ثابت ہے۔ عوارض جسمانیہ و امراض کا انبیاء پر وارد ہونا بے شک درست ہے لیکن ایسے امراض جو قابل نفرت ہوں مثلاً جذام و برص (کوڑھ پن) اور جنون وغیرہ جن سے لوگ دور کئے جاتے ہیں۔ (صاحب روح المعانی)

اور تعجب کی بات ہے کہ حضرت ایوب علیہ السلام کی طرف بیہودہ باتوں کی نسبت کی گئی ہے یا ان میں یہ کہا گیا ہے کہ آپ کو کوڑے پر ڈال دیا گیا تھا (یہ بالکل غلط اور انبیاء کی شان کے خلاف ہے۔ تفسیر ماجدی / ابن کثیر)

| |
|---|
| ارْكُضْ بِرِجْلِكَ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ |
| مار اپنے پاؤں سے، یہ چشمہ نکلا نہانے کو ٹھنڈا اور پینے کو۔ |
| وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا |
| اور بخشے ہم نے اس کو اس کے گھر والے اور ان کے برابر ان کے ساتھ اپنی طرف کی مہربانی سے |
| وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ |
| اور یاد رکھنے کو عقل والوں کے لئے |

**صبر کا پھل:** جب اللہ نے چاہا کہ ان کو چنگا کرے حکم دیا کہ زمین پر پاؤں مار۔ پاؤں مارتے ہی قدرت سے وہاں سے ٹھنڈے پانی کا چشمہ نکل پڑا۔ اس سے نہایا کرتے اور پانی پیتے وہی ان کی شفا کا سبب ہوا اور ان کے گھر والے کے لوگ جو چھٹ گئے تھے یا مر گئے تھے اللہ نے اپنی مہربانی سے ان سے دو گنے عطا کئے تاکہ عقلمند لوگ ان واقعات کو دیکھ کر سمجھیں کہ جو بندے مصیبت میں اللہ ہو کر صبر کرتے اور صاف دل سے اللہ کی طرف رجوع کرتے ہیں حق تعالیٰ ان کی کس طرح دستگیری اور حمایت فرماتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**صبر کے بدلہ میں رحمت:** صحیح بخاری میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا حضرت ایوب ننگے نہا رہے تھے کہ سونے کی ٹڈیاں برسنے لگیں آپ نے جلدی جلدی ان کو اپنے کپڑے میں سمیٹنا شروع کیا تو اللہ تعالیٰ نے آواز دی کہ اے ایوب! کیا میں نے تمہیں غنی اور بے پرواہ نہیں کر دیا۔ آپ نے جواب دیا ہاں خدایا عزت کی قسم بے شک تو نے کیا ہے۔ لیکن میں تیری رحمت اور برکت سے بے نیاز نہیں ہوں۔ بلکہ اس کا تو محتاج ہوں۔ بس اللہ تعالیٰ نے ان کے صابر شاکر نیک بندے کو بہترین عطا فرمائیں۔ اولاد بھی اور ان کی مثل اور بھی دی۔ بعض حضرات کہتے ہیں کہ وہ یہ منقول ہے کہ جو اولاد فوت ہو گئے وہ دوبارہ زندہ ہو گئی اور اتنی ہی مزید اولاد عطا کی۔ یہ تو اللہ تعالیٰ کا اجر ان کے صبر و استقلال کا تھا۔ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے کہا اللہ تعالیٰ نے ان کو عطا فرمایا اور حکمت ان کے لئے مصیبت و آزمائش تھی تاکہ لوگ سمجھیں کہ صبر کا انجام کشادگی ہے اور رحمت اور راحت ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِب بِّهِ وَلَا تَحْنَثْ |
| اور پکڑ اپنے ہاتھ میں سینکوں کا مٹھا پھر اس سے مار لے اور قسم میں جھوٹا نہ ہو |

## قسم پوری کرنے کی خصوصی ترکیب

حضرت ایوب علیہ السلام نے حالت مرض میں کسی بات پر خفا ہو کر قسم کھائی کہ تندرست ہو گئے تو اپنی عورت کو سو قمچیاں ماریں گے۔ وہ بی بی اس حالت میں خدمت گزار تھی اور چنداں قصوروار بھی نہ تھی۔ اللہ تعالیٰ نے اپنی مہربانی سے قسم پورا کرنے کا ایک حیلہ ان کو بتلا دیا جو ان ہی کے لئے مخصوص تھا۔ یعنی اگر کوئی استعمال کی قسم کا تنکا ہو کر سو تیلیاں ہوں تو پورا کرنے کے لئے اتنی بات کافی ہو گی۔ (تنبیہ) جس حیلے سے کسی حکم شرعی یا مقصود شرعی کا ابطال ہوتا ہو وہ جائز نہیں جیسا غلط قسم کے حیلے لوگوں نے نکالے ہیں۔ ہاں جو حیلہ حکم شرعی کو پورا کرنے کی غرض سے کیا جائے وہ جائز ہے۔ تفصیل کتب فقہ میں ہے۔

إِنَّا وَجَدْنَٰهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَٱذْكُرْ

ہم نے انکو صبر کرنے والا پایا بہت خوب بندہ تحقیق وہ بہت رجوع رکھنے والا تھا اور یاد کر

عِبَٰدَنَآ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ أُو۟لِى ٱلْأَيْدِى

ہمارے بندوں کو ابراہیم اور اسحٰق اور یعقوب ہاتھوں والے

وَٱلْأَبْصَٰرِ ﴿٤٥﴾

اور آنکھوں والے تھے

☆ یعنی عمل اور معرفت والے جو ہاتھ پاؤں سے بندگی کرتے اور آنکھوں سے خدا کی قدرت دیکھ کر یقین و معرفت پیدا کرتے ہیں۔

## مقام صبر سے ترقی

(حضرت مرزا مظہر جان جاناں کا ایک کلام)

اس مقام پر ہمارے شیخ شہید کا بہت عمدہ کلام ہے آپ نے فرمایا جب حضرت ایوب علیہ السلام نے کمال مصیبت پر کمال صبر کیا تو اللہ نے چاہا کہ ان سے شکوہ اور تکلیف کو دور کرے تو ان کے دل میں یہ بات ڈالی گئی کہ وہ اپنی خاص دعا اور زاری کا خواستگار ہے تو دعا کے ذریعہ اپنی عاجزی اور احتیاج کا اظہار کریں تاکہ اللہ اس مصیبت کو دور کرے چنانچہ آپ نے اپنے طبعی تقاضا کے خلاف جو صبر کا خواستگار تھا مرضی رب کو حاصل کرنے کے لئے دعا اور زاری کو ترجیح دی اور صبر سے ترقی کر کے مقام رضا میں پہنچ گئے اور اللہ نے بھی آپ کے صبر کی تعریف فرمائی۔ إِنَّا وَجَدْنَٰهُ صَابِرًا۔

أُو۟لِى ٱلْأَيْدِى یعنی اطاعت خداوندی میں اور دینی معرفت میں بصیرت مند تھے۔ حضرت ابن عباس، قتادہ اور مجاہد نے یہی تفسیر کی اطاعت اور بصیرت کی تفسیر فقہ یعنی (فہم) سے کی کیونکہ ہاتھوں سے اکثر اعمال کئے جاتے ہیں اور بصارت سے معرفت خداوندی کی تعبیر کی کیونکہ آنکھیں ہی خدا شناسی میں قوی ترین ذریعہ ہیں خلاصہ یہ کہ یہ حضرات عملی اور علمی قوتوں کے مالک تھے عملی قوت وہ اللہ کی اطاعت میں صرف کرتے تھے اور علمی قوت سے معرفت خداوندی اور دینی دانش حاصل کرتے تھے۔ (تفسیر مظہری)

إِنَّآ أَخْلَصْنَٰهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى ٱلدَّارِ ﴿٤٦﴾

ہم نے امتیاز دیا ان کو ایک چنی ہوئی بات کا وہ یاد اس گھر کی ☆☆

☆☆ امتیاز کا اعجاز یہ ہے کہ ان کے دل پر خدا کو اور آخرت کی یاد کے سوا کوئی بات نہیں اس کی خصوصیت کی وجہ سے اللہ کے ہاں ان کو سب سے ممتاز مرتبہ حاصل ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ ٱلْمُصْطَفَيْنَ ٱلْأَخْيَارِ ﴿٤٧﴾

اور وہ سب ہمارے نزدیک چنے ہوئے نیک لوگوں

وَٱذْكُرْ إِسْمَٰعِيلَ وَٱلْيَسَعَ وَذَا ٱلْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ

میں اور یاد کر اسمٰعیل کو اور الیسع کو اور ذوالکفل کو اور ہر ایک تھا

مِّنَ ٱلْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾

خوبیوں والا ☆

☆ حضرت اسمٰعیل اور ذوالکفل اور الیسع پہلے گزر چکا اور "الیسع" کہتے ہیں وہ حضرت الیاس کے خلیفہ تھے ان کو بھی اللہ نے نبوت عطا فرمائی۔ (تفسیر عثمانی)

**حضرت الیسع علیہ السلام:** تاریخی کتابوں میں منقول ہے کہ آپ حضرت الیاس علیہ السلام کے چچازاد بھائی ہیں اور حضرت الیاس علیہ السلام کے نائب اور خلیفہ تھے انہی کی رفاقت میں رہتے تھے ان کے بعد آپ کو نبوت عطا کی گئی۔ بائبل کی کتاب سلاطین اول باب نمبر ۱۹ اور سلاطین دوم باب نمبر ۲ وغیرہ میں آپ کے تفصیلی حالات بیان کئے گئے ہیں۔ وہاں آپ کا نام الیشع بن سافط مذکور ہے۔ (معارف القرآن)

هَٰذَا ذِكْرٌ ۚ

یہ ایک مذکور ہو چکا

یعنی یہاں تک انبیاء کا تذکرہ تھا آگے عام متقیوں کا انجام بتلاتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَـَٔابٍ ﴿٤٩﴾ جَنَّٰتِ عَدْنٍ

اور تحقیق ڈر والوں کیلئے ہے اچھا ٹھکانا باغ ہیں رہنے کے کھول

مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ ٱلْأَبْوَٰبُ ﴿٥٠﴾

رکھے ہیں ان کے واسطے ان کے دروازے ☆

☆ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں یعنی بہشت میں وہ محل ہوں گے جو کوئی ان میں جانے اپنے گھر میں چلا جاوے کہ آوازہ کرے اور وہ کھولے کی ضرورت نہ ہو۔ (تفسیر عثمانی)

**محل عدن:** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ جنت میں ایک محل عدن ہے جس کے گرد برج اور مرغزار ہیں۔ جس کے پانچ ہزار دروازے ہیں اور ہر دروازے پر پانچ ہزار چادریں ہیں۔ اس میں صرف نبی یا صدیق یا شہید یا عادل بادشاہ رہیں گے۔ (ابن ابی حاتم) (تفسیر ابن کثیر)

مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ

تکیہ لگائے ہوئے بیٹھے ان میں منگوا رہے ہوں گے ان میں میوے بہت

وَشَرَابٍ

اور شراب ☆

☆ یعنی ہر قسم کے میوے، پھل اور پینے کی چیزیں سب فرمائش پر حاضر کی جائیں گی۔ (تفسیر عثمانی)

**جنت میں کھانے کا مقصد:** اہل جنت کا یہ کھانا محض لذت اندوزی کیلئے ہوگا، حصول توانائی کے لئے نہیں ہوگا غذا کی ضرورت تو اس لئے ہوتی ہے کہ بدن اور جسم کا تحلیل شدہ حصے کا بدل مل جائے (اور جنت کے تمام قوت کے تحلیل ہونے اور کمزور پڑ جانے کا کوئی احتمال ہی نہیں ہے۔ (تفسیر مظہری)

وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ

اور ان کے پاس عورتیں ہیں نیچی نگاہ والیاں ایک عمر کی ☆

☆ یعنی سب عورتیں نوجوان ایک عمر ہوں گی یا آپس میں اپنے شوہروں کی ہم عمر معلوم ہوں گی (تفسیر عثمانی)

**قاصرات الطرف:** یعنی ایسی عورتیں جن کی نگاہیں شوہروں کے سوا دوسروں پر نہ پڑیں گی (یعنی ان کی نگاہ پاک ہوں گی)

اتراب: یعنی سب ہم عمر۔ سب کی عمر ۳۳ سال کی ہوگی۔ مجاہد نے کہا سب آپس میں بہنوں بہنوں کی طرح ہوں گی۔ یہاں کی سوکنوں کی طرح ان میں جلن نہ ہوگی نہ حسد ہوگا۔

**زوجین کے درمیان عمر کا تناسب**

اور دوسری صورت میں جبکہ "ہم عمر" کا مطلب یہ لیا جائے کہ وہ اپنے شوہروں کی ہم عمر ہوں گی اس کا فائدہ یہ ہے کہ ہم عمری کی وجہ سے باہمی تعلقات میں زیادہ مناسبت اور یگانگی ہوگی۔ اور ایک دوسرے کی راحت و دلجوئی کا خیال زیادہ رکھا جا سکے گا۔ اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ زوجین کے درمیان عمر میں تناسب کی رعایت رکھنی چاہئے کیونکہ اس سے باہمی الفت پیدا ہوتی ہے اور رشتہ نکاح زیادہ خوشگوار اور پائیدار ہو جاتا ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ إِنَّ هَٰذَا

یہ وہ ہے جو تم سے وعدہ کیا گیا حساب کے دن کے لئے یہ ہے

لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ

روزی ہماری دی ہوئی، اس کو نہیں نبڑنا ☆

**لازوال نعمتیں** ☆ یعنی یہ مستقل اور لازوال نعمتیں ہیں جن کا سلسلہ کبھی ختم نہ ہوگا۔ رزقنا اللہ منہا بمنہ وکرمہ فانہ اکرم الاکرمین وارحم الراحمین (تفسیر عثمانی)

هَٰذَا

یہ سن چکے ☆

☆ یعنی یہ حال تو ان کا ہوا، اب آگے شریروں کا انجام سنو۔ (تفسیر عثمانی)

وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا

اور تحقیق شریروں کے واسطے ہے برا ٹھکانا دوزخ جس میں گریں گے

فَبِئْسَ الْمِهَادُ هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ

سو کیا برا بچھونا ہے یہ ہے اب اس کو چکھیں ☆

☆ یعنی لو یہ حاضر ہے۔ اب اس کا مزہ چکھیں۔ (تفسیر عثمانی)

حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ

گرم پانی اور پیپ

**غساق کے معنی:** "غساق" سے مطلب ہے جہنمیوں کے بدن کی پیپ اور ان کی آلائشیں مراد ہیں جن میں سانپوں بچھوؤں کا زہر ملا ہوگا۔ اور بعض کے نزدیک "غساق" وہ سے زیادہ ٹھنڈے پانی کو کہتے ہیں جسے پینے سے ٹھنڈک سے ہوگیا "حمیم" کی الٹی ضد (تفسیر عثمانی)

حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا یعنی ٹھنڈک جو اس طرح دوزخیوں کو جلا دے گی جس طرح آگ اپنی گرمی سے جلاتی ہے۔ مجاہد اور مقاتل نے کہا جس چیز کی برودت انتہائی درجہ کی ہو وہ غساق ہے۔

**العیاذ بالعیاذ:** مسند احمد میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں اگر ایک ڈول غساق کا دنیا میں بہایا جائے تو تمام اہل دنیا بدبودار ہو جائے۔ حضرت کعب احبار فرماتے ہیں کہ غساق دوزخ کی ایک نہر ہے جس میں سانپ بچھو وغیرہ کا زہر جمع ہوتا ہے پھر وہ گرم ہو کر ابلتا ہے اس میں جہنمیوں کو غوطے دیئے جائیں گے جس سے ان کا سارا گوشت پوست جھڑ جائے گا اور ہڈیاں لٹک جائیں گی۔ جیسے دو ٹانگیں کھینچے جاتے ہیں پیچھے کوئی شخص (ابن ابی حاتم) (تفسیر ابن کثیر)

وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ

اور کچھ اسی شکل کی طرح طرح کی چیزیں یہ ایک فوج ہے دھنستی آرہی ہے

مَعَكُمْ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ قَالُوا

[illegible]

بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ

[illegible]

فَبِئْسَ الْقَرَارُ

[illegible]

دوزخیوں کی گفتگو: [illegible]

آیت کی لطیف تفسیر: [illegible]

[illegible]

قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا

[illegible]

ضِعْفًا فِي النَّارِ

[illegible]

[illegible]

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم

[illegible]

مِّنَ الْأَشْرَارِ أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ

[illegible]

الْأَبْصَارُ

[illegible]

[illegible]

فقراء مومنین کی آخرت قابل رشک

[illegible]

**اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿۶۴﴾**

یہ بات تحقیق سچی ہے جھگڑا کرنا آپس میں دوزخیوں کا ☆

### دوزخیوں کا جھگڑا حق ہے

یعنی پیغمبر یہ بات خلاف قیاس ہے کہ اس وقت دوزخ میں ایک دوسرے سے جھگڑیں۔ عذاب کا ہولناک منظر کیسے دوسری طرف متوجہ ہونے دے گا۔ لیکن یاد رکھو! ایسا ہو کر رہے گا۔ یہ بالکل یقینی چیز ہے جس میں شک و شبہ کی گنجائش نہیں۔ اور حقیقت میں یہ ان کے عذاب کی تکمیل ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ**

تو کہہ میں تو یہی ہوں ڈر سنانے والا اور معبود کوئی نہیں مگر اللہ اکیلا

**الْقَهَّارُ ﴿۶۵﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا**

دباؤ والا رب آسمانوں کا اور زمین کا اور جو ان کے بیچ میں ہے

**الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿۶۶﴾**

زبردست گناہ بخشنے والا ☆

**پیغمبر کا کام** ☆ میرا کام تو اتنا ہی ہے کہ تم کو اس آنے والی خوفناک گھڑی سے ہوشیار کر دوں جو مجھ کو مستقبل آنے والا ہے اس سے بے خبر نہ رہو۔ باقی ساعت جس وقت آنے والا ہے وہ تو وہی اکیلا خدا ہے جس کے سامنے کوئی چھوٹا بڑا دم نہیں مار سکتا ہر چیز اس کے آگے دبی ہوئی ہے۔ آسمان و زمین اور ان کے درمیان کی کوئی چیز نہیں جو اس کے زیر تصرف نہ ہو جب تک چاہے ان کو تھامے رکھے جب چاہے توڑ پھوڑ کر برابر کر دے۔ اس عزیز و غالب کا ہاتھ کون پکڑ سکتا ہے؟ ہاں بے شک زبردست ہونے کے ساتھ بڑا بخشنے والا بھی ہے۔ اپنی رحمت سے گنہگاروں کی بڑی بڑی غلطیاں معاف کر دیتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿۶۷﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿۶۸﴾**

تو کہہ یہ ایک بڑی خبر ہے کہ تم اس کو دھیان میں نہیں لاتے ☆

بہت بڑا حادثہ یعنی قیامت اور اس کے حوال کوئی معمولی چیز نہیں۔ بڑی بھاری اور یقینی خبر ہے جو میں تم کو دے رہا ہوں۔ عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ (نبا۔ رکوع ۱) مگر افسوس ہے کہ تم اس کی طرف سے بالکل بے فکر ہو۔ جو کچھ تمہاری خیر خواہی کو کہا جاتا ہے دھیان میں نہیں لاتے۔ بلکہ مذاق اڑاتے ہو کہ کب آئے گی۔ کیوں آنے میں دیر لگ رہی ہے اسے جلد کیوں نہیں بلا لیتے وغیرہ وغیرہ۔ (تفسیر عثمانی)

**مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۶۹﴾**

مجھ کو کچھ خبر نہ تھی اوپر کی مجلس کی جب وہ آپس میں تکرار کرتے ہیں ☆

**اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷۰﴾**

مجھ کو حکم آتا ہے کہ اور کچھ نہیں میں تو ڈر سنانے والا ہوں کھول کر ☆

**ملا اعلیٰ:** ☆ "ملا اعلیٰ" (اوپر کی مجلس) ملائکہ مقربین وغیرہم کی مجلس ہے جن کے توسط سے تدابیر الٰہیہ اور تصریفات تکوینیہ ظہور پذیر ہوتی ہیں۔

### قیامت کا حتمی علم کسی کو نہیں

یعنی ملا اعلیٰ میں نظام عالم کے بناؤ و بگاڑ کے متعلق جو تدبیریں یا بحثیں اور تکمیل و قال ہوتی ہے۔ مجھے اس کی کیا خبر تھی جو تم سے بیان کرتا۔ حق تعالیٰ نے جس قدر اجزاء پر مطلع فرما دیا وہ بیان کر دیے۔ جو کچھ کہتا ہوں تو وحی الٰہی سے کہتا ہوں مجھ کو یہی حکم ملا ہے کہ سب کو پیش آنے والے خطرات سے خوب کھول کر آگاہ کر دوں۔ رہا یہ کہ وقت کب آئے گا اور قیامت کب قائم ہو گی؟ سو نذیر کے لئے اس کی ضرورت نہیں۔ نہ اس کی اطلاع کسی کو دی گئی ہے۔ ایک حدیث میں ہے کہ چند انبیاء علیہم السلام کے ایک اجتماع میں قیامت کا ذکر چلا کہ کب آئے گی سب نے حضرت ابراہیم پر حوالہ کیا انہوں نے فرمایا کہ مجھے علم نہیں پھر سب نے حضرت موسیٰ علیہ السلام پر حوالہ کیا ان کی طرف سے بھی وہی جواب ملا آخر سب نے حضرت مسیح علیہ السلام کی طرف رجوع کیا فرمایا "اما وجبتها" (یعنی قیامت کے وقوع کی گھڑی) تو مجھے بھی معلوم نہیں البتہ حق تعالیٰ نے مجھ سے یہ وعدہ کیا ہے کہ ... اور ایک حدیث میں ہے کہ حضرت مسیح علیہ السلام نے حضرت جبرئیل علیہ السلام سے قیامت کے آنے کا وقت دریافت کیا۔ فرمایا "ما المسئول عنها باعلم من السائل" یعنی میں تم سے زیادہ نہیں جانتا۔ معلوم ہوا کہ ملا اعلیٰ میں قیامت کے متعلق اس قسم کی بحث و تکرار اور قیل و قال ہوتی ہے جیسے۔ ایک حدیث میں اللہ تعالیٰ کا آپ سے کئی مرتبہ سوال کرنا "فیم یختصم الملاء الاعلٰی" اور آپ کا جواب دینا مذکور ہے۔ مگر وہاں کے مباحثات کا علم بجز وحی الٰہی کے اور کس طرح ہو سکتا ہے۔ یہ خواب تھا جس سے اتنی بات کے تمام پر آپ کو اطلاع ہوئی کہ ملا اعلیٰ سے اختصار کی خبر بھی دی جو تمام البحث کا ذکر آگے ہے وہ بھی وحی سے معلوم ہوا۔ (تفسیر عثمانی)

**عالم بالا کی بحث:** حضرت عبدالرحمٰن بن عائش حضرمی کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں میں نے اپنے رب کو نہایت ہی حسین شکل میں دیکھا رب نے مجھ سے فرمایا کہ عالم اعلیٰ کے فرشتے عالم بالا کے کس

بات میں بحث کر رہے ہیں؟ میں نے عرض کیا اے میرے رب تو ہی خوب جانتا ہے یہ بات دو تین مرتبہ فرمائی میرے رب نے میرے دونوں شانوں کے درمیان اپنی ہتھیلی رکھ دی یہاں تک کہ مجھے سینہ کے اندر ٹھنڈک محسوس ہوئی اور آسمان و زمین میں جو کچھ (ہو رہا) تھا مجھے معلوم ہو گیا پھر حضور نے آیت وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ تلاوت کی اور فرمایا اس کے بعد میرے رب نے پوچھا محمد! عالم بالا والے کس بات میں بحث کر رہے ہیں۔ میں نے عرض کیا کفارات کے متعلق بحث کر رہے ہیں (یعنی کن کن چیزوں سے گناہوں کا کفارہ اور کھو دیا جاتا ہے) فرمایا کفارات کیا (کیا) ہیں میں نے عرض کیا پاؤں سے چل کر (نماز کی) جماعتوں کی طرف جانا، نماز کے بعد (دوسری نماز کے انتظار میں) مسجدوں میں بیٹھے رہنا اور کامل وضو کرنا (مشقت و تکلیف کے اوقات میں بھی) کے پورا پورا وضو کرنا، فرمایا جو ایسا کرے گا وہ خیر کے ساتھ زندہ رہے گا اور خیر کے ساتھ مرے گا اور اس کے گناہ (معاف کر دیئے جائیں گے اور) وہ ایسا ہو جائے گا جیسے اس روز تھا جب کہ ماں کے پیٹ سے پیدا ہوا تھا اور (کفارات کے بعد) درجات (کے حصول کے ذرائع) یہ ہیں (بھوکوں کو) کھانا کھلانا اور (مسلمانوں کو) سلام کرنا اور رات کو جب سب لوگ سوتے ہوں (نماز کے لئے) کھڑا ہونا۔ رب نے فرمایا (محمد) کہو اے اللہ میں تجھ سے پاک چیزیں مانگتا ہوں اور برائیاں چھوڑ دینے (کی توفیق) چاہتا ہوں اور مسکینوں کی محبت کا خواستگار ہوں اور اس بات کا طلبگار ہوں کہ تو مجھے بخش دے اور مجھ پر رحم فرمائے اور جب تو کسی قوم کو آزمائش میں ڈالنا چاہے تو مجھے آزمائش میں ڈالنے سے پہلے ہی وفات دیدے۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں محمد کی جان ہے یہ بالکل سب باتیں حق ہیں۔ رواہ البغوی فی شرح السنہ تفسیر مظہری

**ملاء اعلیٰ سے کفارات کا مطلب:** کفارات کے معاملہ میں ملاء اعلیٰ کی بحث سے شاید یہ مراد ہو کہ فرشتوں کی ایک جماعت ان نیکیوں کو لکھنے میں ایک دوسرے سے پیش دستی کرتے ہیں تاکہ اللہ کے سامنے سب سے پہلے وہی پیش کریں، جیسا کہ حضرت رفاعہ بن رافع کی روایت میں آیا ہے۔ حضرت رفاعہ نے بیان کیا ہم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پیچھے نماز پڑھ رہے تھے جب آپ نے رکوع سے سر اٹھا کر سمع اللہ لمن حمدہ کہا تو پیچھے (مقتدیوں میں) سے ایک شخص نے ربنا ولک الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ کہا۔ حضور نے نماز پوری کر لی تو فرمایا کس نے یہ بات کہی تھی۔ اس شخص نے کہا میں نے۔ آپ نے فرمایا میں نے تیس سے زیادہ فرشتوں کو دیکھا کہ وہ پیش دستی کر

رہے تھے کہ کون ان کلمات کو پہلے لکھے (رواہ البخاری، تفسیر مظہری)

اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا

جب کہا تیرے رب نے فرشتوں کو میں بناتا ہوں ایک انسان

مِّنْ طِيْنٍ ★

مٹی کا ★

حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں: "یہ ہی تکرار تھی فرشتوں کی جو بیان فرمایا" (تفسیر عثمانی)

اِذْ قَالَ: اذ یختصمون کا بدل ہے اور مختصراً سورہ بقرہ میں ملائکہ اور ابلیس کی تخلیق آدم اور ان کے استحقاق خلافت کے متعلق تکرار اور ان کا سجدہ ملائکہ کو تفصیل سے بیان کر دیا گیا۔

**اپنے آپ کو بڑا سمجھنے کا انجام:** حضرت آدم کے مقابلہ میں ابلیس نے غرور کیا اور راندۂ درگاہ ہو گیا مشرک بھی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے مقابلہ میں اپنے کو بڑا سمجھتے تھے ان کا بھی ابلیس کی طرح مردود و لعنتی ہونا ضروری ہے۔ (تفسیر مظہری)

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ

پھر جب ٹھیک بنا چکوں اور پھونکوں اس میں ایک اپنی جان ★

روح یعنی ایک لطیف جوہر کو اس کا ٹھیک ٹھیک تیار کر کے اپنی طرف سے ایک جان پھونکوں۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ روحی (اپنی جان) کا مطلب فرمایا ایک جان اپنے عالم غیب سے۔ جو مضمون روح کے متعلق سورہ بنی اسرائیل میں گزر چکا ہے۔ وہاں سے اور حقیقت روح کی کی گئی ہے ملاحظہ کیا جائے۔ (تفسیر عثمانی)

فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۔ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ

تو تم گر پڑو واسطے اس کے سجدہ میں پھر سجدہ کیا فرشتوں نے سب نے

اَجْمَعُوْنَ ۔ اِلَّآ اِبْلِيْسَ

اکٹھے ہو کر مگر ابلیس نے ★

★ یہ قصہ سورہ بقرہ، اعراف وغیرہ کئی سورتوں میں گزر چکا۔ اعراف کے فوائد میں ہم نے مفصل بحث کی ہے وہاں ایک مرتبہ دیکھ لیا جائے۔ تفسیر عثمانی

اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ

غرور کیا اور تھا وہ منکروں میں ★

ابلیس ★ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ پہلے (ابلیس عمل سے) کافر تھا

... کو خدا کے حکم سے ... لیکن جب (اپنی کثرت عبادت وغیرہ کے سبب سے) اپنے آپ کو فرشتوں میں ... (تفسیر حقانی)

## قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ

فرمایا اے ابلیس تجھے کس چیز نے روکا کہ تو سجدہ کرے [illegible]

## لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ

جسے میں نے اپنے ہاتھوں سے بنایا

قدرت سے ... حضرت ... صاحب لکھتے ہیں ... اور روح کو ... (یعنی) اپنے ہاتھ سے ... کی چیزیں ایک طرح کی قدرت سے ... ظاہر کی چیزیں دوسری طرح کی قدرت سے بنا ... انسان میں دونوں طرح کی قدرت خرچ کی ... (سورہ مائدہ میں پارہ ... کے قریب) بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ... فرمایا ... اللہ تعالیٰ کی ... صفات کی ... (تفسیر عثمانی)

خَلَقْتُ بِيَدَيَّ یعنی حضرت آدم علیہ السلام کے ... اللہ تعالیٰ نے یہ ارشاد فرمایا ہے کہ ... اپنے ہاتھ سے ... بنایا ... [illegible] ... قدرت ... کے معنی میں مستعمل ہے ... جیسے عَمِلَتْ أَيْدِينَا ... کا مطلب یہ ہے ... آدم کو اپنی قدرت سے پیدا کیا ... حالانکہ ... قدرت ہی سے پیدا ہوئی ہیں۔ لیکن جب اللہ تعالیٰ کسی چیز کو خاص شرف ... ظاہر کرنا ہوتا ہے تو اسے ... اپنی طرف منسوب کر دیتے ہیں ... حضرت صالح علیہ السلام کی اونٹنی کو ناقۃ اللہ اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو روح اللہ ... کہا گیا ہے ... حضرت آدم علیہ السلام کی ... ظاہر کرنے کے لیے ... (معارف القرآن)

## أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ

کیا تجھے غرور آ گیا یا تو تھا ہی مغروروں میں

... یا یہ ... کہ ... [illegible] ... ہے۔ (تفسیر حقانی)

## قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ

بولا میں اس سے بہتر ہوں تو نے مجھے آگ سے بنایا اور اسے

## مِنْ طِينٍ

مٹی سے

... [illegible] ... حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں ... آگ ... ہے ... اپنا کہا ... (موضح القرآن)

## قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ

فرمایا تو جنت سے نکل جا کہ تو راندہ گیا

... یعنی جنت سے یا فرشتوں کی جماعت سے نکل جا ... (تفسیر عثمانی)

مِنْهَا یعنی ... جنت سے یا آسمانوں سے نکل ... حسین ... اس ... اور خوبصورت ... جس ... [illegible] ... کیا اور ... صورت ... ہو گئی۔

فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ... [illegible] ... تو ... سے ... [illegible] ... (تفسیر مظہری)

## وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ

اور بیشک تجھ پر میری لعنت ہے قیامت تک

... [illegible] ... لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ... وہاں تو لعنت ... سامنے ... (تفسیر عثمانی)

إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ... کہنے سے ... قیامت ... لعنت ختم ... قیامت تک ... کے بعد لعنت کے ساتھ عذاب ... (تفسیر ...)

## قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

بولا اے رب مجھ کو مہلت دے جس دن تک مردے اٹھائے جائیں

... [illegible] ... (تفسیر ...)

## قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ

فرمایا تو تجھ کو مہلت ہے اس وقت [illegible]

| |
|---|
| الْمَعْلُومِ ۝ |
| معلوم ہے ☆ |

☆ یعنی پہلے نفخہ کے قریب تک نہ کہ اس کے بعد تک۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ |
| بولا تو قسم ہے تیری عزت کی میں گمراہ کروں گا ان سب کو مگر جو تیرے چنے ہوئے |
| مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ۝ |
| بندے ہیں ان میں فرمایا تو ٹھیک بات یہ ہے اور میں ٹھیک ہی کہتا ہوں ☆ |

☆ یعنی میری سب باتیں سچی اور ٹھیک ہی ہوتی ہیں۔ (تفسیر حقانی)

فَبِعِزَّتِكَ میں فا تعلیل کی ہے۔ ابلیس کو مہلت مل جانا ہی اس کے اغوا کا سبب ہے اگر اللہ کی طرف سے اس کو مہلت نہ ملتی تو وہ اغوا پر قادر نہ ہوتا۔ ابلیس لعین نے اللہ کی عزت یعنی غلبہ کمال اور بے نظیر قدرت کی قسم کھائی تاکہ اس ذریعہ سے اولادِ آدم کے اغوا پر تسلط حاصل ہو جائے۔

المخلصین یعنی وہ لوگ جن کو اللہ نے اپنی عبادت کے لئے منتخب فرما لیا ہے اور گمراہی سے محفوظ رکھا ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ |
| مجھ کو بھرنا ہے دوزخ تجھ سے اور جو ان میں تیری راہ چلے ان سب سے |
| قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ |
| تو کہہ میں مانگتا نہیں تم سے اس پر کچھ بدلہ اور میں نہیں ہوں بناوٹ کرنے |
| الْمُتَكَلِّفِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝ |
| والا یہ تو ایک نصیحت ہے سارے جہان والوں کو |

| |
|---|
| وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝ |
| اور معلوم کر لو گے اس کا احوال تھوڑی دیر کے پیچھے ☆ |

## پیغمبر کی خیر خواہی

☆ یعنی نصیحت سے غرض یہ ہے کہ اپنے دشمن اور دوست میں تمیز کرو۔ شیطان لعین جو ازلی دشمن ہے اس کی راہ مت چلو جو پیغمبر تم کو بتلاتے ہیں وہ خالص تمہاری بھلائی اور خیر خواہی کے لئے بتلاتے ہیں۔ میں تم سے اس نصیحت کا کوئی صلہ یا معاوضہ نہیں مانگتا۔ نہ بناوٹ اور اپنی طرف سے بنا کر کوئی بات کہتا ہوں۔ اللہ نے ایک فہمائش کی وہ تمہارے تک پہنچا دی۔ تھوڑی مدت کے بعد تم خود معلوم کر لو گے کہ جو خبریں دی گئی تھیں کہاں تک درست ہیں اور جو نصیحت کی گئی کیسی سچی اور مفید تھی۔

تم سورۃ ص بعون اللہ وحسن توفیقہ وللہ الحمد والمنۃ

(تفسیر عثمانی)

## تکلف اور تصنع کی مذمت

وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ (اور میں بناوٹ کرنے والوں میں سے نہیں ہوں) مطلب یہ ہے کہ میں تکلف اور تصنع کر کے اپنی نبوت و رسالت اور علم و حکمت کا اظہار نہیں کر رہا۔ بلکہ اللہ کے احکام ٹھیک ٹھیک پہنچا رہا ہوں۔ اس سے معلوم ہوا کہ تکلف اور تصنع شرعاً مذموم ہے چنانچہ اس کی مذمت میں بعض احادیث وارد ہوئی ہیں۔ صحیحین میں حضرت عبداللہ بن مسعودؓ کا ارشاد منقول ہے کہ "اے لوگو تم میں سے جس شخص کو کسی بات کا علم ہو وہ لوگوں سے کہہ دے لیکن جس کا علم نہ ہو تو وہ "اللہ اعلم" کہہ دے یہ کہنا بھی علم ہے (کیونکہ) اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بارے میں فرمایا ہے۔ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ (روح المعانی)

(معارف مفتی اعظم)

الحمدللہ سورۂ ص ختم ہوئی

**سورۂ زمر کی فضیلت:** حضرت عائشہؓ فرماتی ہیں کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نفل روزے اس طرح رکھتے چلے جاتے کہ ہم خیال کرتے کہ شاید اب آپ صلی اللہ علیہ وسلم چھوڑیں گے ہی نہیں۔ اور یہ بھی ہوتا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم روزہ چھوڑ دیتے یہاں تک کہ ہم کو خیال ہوتا کہ اب رکھیں گے ہی نہیں اور ہر رات آپ صلی اللہ علیہ وسلم سورۂ بقرہ اور سورۂ زمر کی تلاوت کرلیا کرتے۔ (تفسیر ابن کثیر)

**شانِ نزول:** بیہقی نے دلائل میں بروایت نحاس عبداللہ بن عباس رضی اللہ سے روایت کیا ہے کہ سورۂ زمر مکہ میں نازل ہوئی۔ بجز ان تین آیات کے جو وحشی قاتل حمزہ کے بارے میں نازل ہوگئیں وہ تین آیات **قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا ... تَشْعُرُوْنَ** کہ یہ مدینہ منورہ میں وحشی کے اسلام کے وقت نازل ہوئی اور بعض مفسرین کا قول ہے کہ سات آیات۔ (روح المعانی۔ فتح القدیر۔ تفسیر ابن کثیر) (معارف کاندھلوی)

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّثَمَانُ رُكُوْعَاتٍ

سورۂ زمر مکہ میں نازل ہوئی اور اس میں پچھتر آیتیں ہیں اور آٹھ رکوع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝

اتارنا ہے کتاب کا اللہ کی طرف سے جو زبردست ہے حکمتوں والا ☆

## قرآن کا مقابلہ کوئی نہیں کرسکتا

چونکہ زبردست ہے اس لئے اس کتاب کے مقابلہ کرنے والے عاجز ہو کر رہیں گے۔ کوئی مقابلہ اور مزاحمت اس کے شیوع اور نفاذ کو روک نہیں سکتی۔ اور حکیم ہے اس لئے دنیا کی کوئی کتاب اس کی خوبیوں اور حکمتوں کا مقابلہ نہیں کرسکتی۔ (تفسیر عثمانی)

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ

ہم نے اتارا ہے تیری طرف کتاب ٹھیک ٹھیک سو بندگی کر اللہ کی

مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۝

خالص کر کر اس کے واسطے بندگی۔ سنتا ہے اللہ ہی کیلئے ہے بندگی خالص ☆

## اللہ کی بندگی اور دعوت میں لگے رہو

☆ یعنی سب معمول اللہ کی بندگی کرتے رہئے جو شائبہ شرک و ریا وغیرہ سے پاک ہو اسی کی طرف قولاً و فعلاً لوگوں کو دعوت دیجئے اور اعلان کر دیجئے کہ اللہ اسی بندگی کو قبول کرتا ہے جو خالص اسی کے لئے ہو۔ کیونکہ خالص اللہ کی بندگی کے وہی مستحق ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

## عمل کی مقبولیت اخلاص کے مطابق ہوتی ہے

حضرت ابوہریرہؓ سے روایت ہے کہ ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے عرض کیا کہ یا رسول اللہ میں بعض اوقات کوئی صدقہ و خیرات کرتا ہوں یا کسی پر احسان کرتا ہوں جس میں میری نیت اللہ تعالیٰ کی رضا جوئی کی بھی ہوتی ہے اور یہ بھی کہ لوگ میری تعریف و ثناء کریں گے۔ رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قسم ہے اس ذات کی جس کے قبضہ میں محمد کی جان ہے کہ اللہ تعالیٰ کسی ایسی چیز کو قبول نہیں فرماتے جس میں کسی غیر کو شریک کیا گیا ہو۔ پھر آپ نے آیت مذکورہ بطور استدلال کے تلاوت فرمائی۔ **اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ**۔ (قرطبی)

متعدد آیات قرآنی اس پر شاہد ہیں کہ اللہ تعالیٰ کے یہاں اعمال کا حساب گنتی سے نہیں بلکہ وزن سے ہوتا ہے۔ **وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ** اور آیات مذکورہ نے بتلا دیا کہ اللہ کے نزدیک اعمال کی قدر اور وزن بقدر اخلاص ہوتا ہے اور یہ ظاہر ہے کہ کامل اخلاص بدون کامل ایمان حاصل نہیں ہوتا۔ کیونکہ اخلاص کامل یہ ہے کہ اللہ کے سوا کسی کو نفع و ضرر کا مالک نہ سمجھے اپنے کاموں میں کسی غیر اللہ کو متصرف خیال نہ کرے نہ کسی طاعت و عبادت میں غیر اللہ کا اپنے تصور سے دھیان آنے دے۔ غیر اختیاری وساوس کو اللہ تعالیٰ معاف فرما دیتا ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا

اور جنہوں نے پکڑ رکھے ہیں اس سے ورے حمایتی کہ ہم تو ان کو پوجتے ہیں

نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ

بس اس واسطے کہ ہم کو پہنچا دیں اللہ کی طرف قریب کے درجہ میں بیشک اللہ

يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

فیصلہ کر دیگا ان میں جس چیز میں وہ جھگڑ رہے ہیں ☆

## مشرکین کا فیصلہ ہو جائے گا

☆ بعض مشرک لوگ یہی کہا کرتے ہیں کہ ہم جو ان خداؤں اور بتوں کی پرستش کرتے ہیں تو ہم ان کو اپنے سے نزدیک خدا نہیں سمجھتے ہم یہی سمجھتے ہیں کہ ان کے مقام رب جانیں گے یہ ان کا خیال ہے وہ کہاں تک پہنچ جائیں سے

تو سیدنا مسیح بھی تو مخلوق ہیں، سب اللہ ہی کی مخلوق ہیں [illegible]
کل [illegible] معرفت سے [illegible] ہو جاتی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**آیت کا شانِ نزول** [illegible] روایت ہے کہ اس آیت کی تفسیر میں حضرت ابن عباس نے فرمایا یہ آیت [illegible] کے متعلق نازل ہوئی [illegible] فرشتوں کی [illegible] اللہ [illegible] ہم ان کی پوجا صرف اس لئے کرتے ہیں کہ یہ ہمیں اللہ کا مقرب بنا دیں (یعنی [illegible] کہ ہم خدا کے قریب ہو جائیں)

[illegible] ہے جب ان لوگوں سے پوچھا جاتا تھا کہ تمہارا رب کون ہے [illegible] آسمان اور زمین کس نے پیدا کئے؟ تو وہ جواب دیتے تھے سب کو اللہ نے پیدا کیا ہے۔ پھر کہا جاتا [illegible] پوجتے ہو؟ جواب دیتے [illegible] ان کی پوجا اس لئے کرتے ہیں [illegible] ہم اللہ کے مقرب ہو جائیں۔

**مشرکین عرب کا حال**

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ

یہ مشرکین عرب کا حال ہے اور اس زمانے کے عام مشرکین کی قریباً یہی عقیدہ رکھتے تھے کہ خالق و مالک اور تمام کائنات کا متصرف تو صرف اللہ [illegible] انہوں نے جن کو [illegible] اپنے خیال سے ملائکہ (فرشتوں) کی شکلوں پر بت تراشے اور یہ جانتے ہوئے کہ [illegible] ہیں انہیں کوئی علم و شعور اور قدرت و قوت نہیں۔ لیکن عقیدہ یہ تھا کہ ان بتوں کی تعظیم و تکریم سے وہ فرشتے ہم سے خوش ہوں گے جن کی شکلوں پر یہ بت بنائے گئے ہیں اور فرشتے اللہ کے نزدیک مقرب ہیں۔ انہوں نے بارگاہ خداوندی کو دنیا کے بادشاہوں پر قیاس کیا کہ جیسے شاہی مقرب کسی سے خوش ہوں تو وہ بادشاہ سے [illegible] سفارش کر کے [illegible] مقرب بنا دیتے ہیں۔ یہ سمجھے تھے کہ فرشتے بھی بادشاہ [illegible] اسی طرح جس کی چاہیں سفارش کر سکتے ہیں مگر ان کے یہ سب خیالات [illegible] اور باطل ہی باطل تھے۔ اول تو یہ بت فرشتوں کی شکل پر واقع ہی نہیں [illegible] اور [illegible] خدا کے مقرب فرشتے [illegible] سے لب کشائی [illegible] ہیں۔ ان کو [illegible] سے سخت نفرت ہے جو اللہ کے [illegible] خدا [illegible] کی سفارش نہیں کر سکتے جب تک ان کو کسی خاص شخص کے [illegible] سفارش کی اجازت نہ ملی ہو۔

آج کے [illegible] پرست [illegible] اللہ تعالیٰ کے [illegible] کے منکر ہیں اور اللہ تعالیٰ کی شان میں [illegible] کرتے ہیں [illegible] کفر [illegible] یہ بات سب میں [illegible] مشترک ہے کہ [illegible] خدا کوئی چیز نہیں [illegible] مالک ہیں۔ [illegible]

[illegible] زندگی [illegible] ایمان [illegible] ہو چکا [illegible] مقصد [illegible] ہے۔ [illegible] کی مثالیں [illegible] [illegible] ہے [illegible] [illegible] خدا [illegible] [illegible] [illegible] ہے۔ [illegible] ہے۔

[illegible]

| |
|---|
| إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ |
| البتہ اللہ راہ نہیں دیتا اس کو جو ہو جھوٹا حق نہ ماننے والا |

**سرکش اور [illegible] سے**

[illegible] اللہ [illegible] ہیں۔

[illegible]

| |
|---|
| لَّوْ أَرَادَ اللَّهُ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفَىٰ مِمَّا |
| اگر اللہ چاہتا کہ اولاد کرے تو چن لیتا اپنی خلق میں سے |
| يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ |
| جو کچھ چاہتا وہ پاک ہے [illegible] |

**اللہ تعالیٰ اولاد سے پاک ہے**

یہاں سے [illegible] کے لئے اولاد تجویز کرتے ہیں جیسے کہ نصاریٰ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو اللہ کا بیٹا کہتے ہیں [illegible] فرشتوں کو [illegible] بیٹیاں کہتے تھے۔ مطلب یہ ہے کہ اگر [illegible] اور ظاہر ہے [illegible] مخلوق [illegible] [illegible] ہے [illegible] مخلوق [illegible]

[illegible] جیسے کتاب کے ورق [illegible] لپیٹے جاتے ہیں [illegible] کی طرح [illegible]
[illegible] جب [illegible] کتاب کی [illegible] کا یہ مطلب [illegible]
لے [illegible] (تفسیر عثمانی)

## فرشتوں کو خدا کی اولاد

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا [illegible] بیان [illegible] ہے جو فرشتوں کو خدا کی اولاد کہتے تھے۔ [illegible] اور کمال کی [illegible] فرمایا کہ اگر بالفرض اللہ تعالیٰ اولاد ہوتی [illegible] حیثیت کے [illegible] ہے [illegible] ذات کے سوا سب مخلوقات ہی ہیں جن میں سے کسی کو [illegible] ہے [illegible] لازم ہے [illegible] خالق کی ہم جنس ہو [illegible] اس سے مخلوق [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ |
| وہی ہے اللہ اکیلا دباؤ والا ☆ |

یعنی ہر چیز اس کے سامنے دبی ہوئی ہے [illegible] چیزوں سے [illegible] (تفسیر عثمانی)

**هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ** یعنی الوہیت تو وہ ہے [illegible] واجب [illegible] ہے اور یہ مخلوق ممکن ہے [illegible] کے لئے [illegible] ہے [illegible] شریک [illegible] طرح ممکن [illegible] باپ کے بعض اجزاء سے [illegible] ہوتی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ |
| بنائے آسمان اور زمین ٹھیک لپیٹتا ہے |
| الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ |
| رات کو دن پر اور لپیٹتا ہے دن کو رات پر ☆ |

## نظام کائنات

مغرب کے وقت مشرق کی طرف دیکھو معلوم ہوگا کہ [illegible] ایک چادر [illegible] چلی آ رہی ہے [illegible] روشنی کو مغرب کی طرف صف کی طرح لپیٹتی جاتی ہے اسی طرح صبح صادق کے وقت نظر آ تا ہے کہ دن کا [illegible] رات کی ظلمت کو مشرق سے دھکیلتا [illegible] رہا ہے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ [illegible] ۔ (تفسیر عثمانی)

**يُكَوِّرُ کا معنی:** یعنی لپیٹنے کی طرح [illegible] ایک کو دوسرے کی جگہ [illegible] چھپا جاتا ہے [illegible] ایک کو دوسرے کے بعد [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ |
| اور کام میں لگا دیا سورج اور چاند کو ہر ایک چلتا ہے ایک ٹھہرے وعدہ پر |
| مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ |
| سنتا ہے وہی ہے زبردست گناہ بخشنے والا ☆ |

## اللہ تعالیٰ زبردست اور مغفرت کرنے والا ہے

یعنی اس زبردست قدرت سے [illegible] اور تمام [illegible] لوگوں کی گستاخیوں [illegible] جاتے [illegible] اپنی شان [illegible] مغفرت [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ |
| بنایا تم کو ایک جی سے پھر بنایا اسی سے |
| مِنْهَا زَوْجَهَا |
| اس کا جوڑا ☆ |

## تخلیق انسانیت

یعنی آدم علیہ السلام اور ان کا جوڑا حضرت حواء [illegible]
نفس واحدة یعنی حضرت آدم [illegible] سے [illegible] باپ کے پیدا کیا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۭ |
| اور اتارے تمہارے واسطے چوپایوں سے آٹھ نر و مادہ ☆ |

## دوسری مخلوقات

یعنی تمہارے [illegible] کے لئے چوپایوں [illegible] پیدا [illegible] [illegible] تمہارے [illegible] کے لئے [illegible] پیدا کرنے کا حکم دیا۔ اللہ [illegible] سے منتقل ہو کر [illegible] کہا جاتا ہے [illegible] مطلب ہے۔

ان اسباب سے رحم سے تمہارے لئے جو پائے پیدا کئے جوڑے جان دو مادہ یا اسے پہنچاتے ہیں جیسے تاروں کی شعاعیں اترتی ہیں۔ یہ مطلب بھی بیان کیا گیا ہے کہ حضرت آدم کے ساتھ اللہ نے جنت سے آٹھ چوپائے بھی پیدا کر دیے تھے پھر آپ ہی کے ساتھ اتار دیا گیا۔

**ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ** ۔ آٹھ جوڑے (مادہ) اور نر ملا کر ۸ ذات ہوتی ہیں۔ گائے بیل، بھیڑ بھیڑی، بکر بکری۔ (تفسیر مظہری)

**يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ**

بناتا ہے تم کو ماں کے پیٹ میں ایک طرح پر

**بَعْدِ خَلْقٍ**

دوسری طرح کے پیچھے ☆

## انسانی پیدائش میں قدرت کے کرشمے

☆ یعنی نطفہ سے پیدا کیا، پھر نطفہ سے علقہ بنایا، علقہ سے مضغہ بنایا، پھر ہڈیاں بنائیں، پھر ہڈیوں پر گوشت منڈھا، پھر روح پھونکی۔ (تفسیر حقانی)

اس میں قدرت خداوندی کے اس راز و اسرار کی طرف اشارہ ہے جو انسان کی تخلیق میں کار فرما ہیں اور یہ کہ اللہ تعالیٰ کی قدرت میں تو یہ بھی تھا کہ بچے کو شکم میں یک وقت مکمل بنا کر رکھ دیتے، مگر مقتضائے حکمت و مصلحت ایسا نہیں بلکہ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ تدریج اختیار کی کہ عورت جس کے پیٹ میں عالم صغیر بن رہا ہے اول سے آہستہ آہستہ اس کا بوجھ برداشت کرنے کی عادی ہوتی چلی جائے۔ دوسرے اس بے نظیر حسین ترین تخلیق کو جس میں مختصر اور نازک مشینیں اور بال کے برابر رگیں خون اور روح پہنچانے کے لئے لگائی گئی تھیں۔ یہ عام صنعت کا اس طرح نہیں کہ جگہ روشنی کی وہ بھی نہیں بلکہ تین اندھیریوں میں بنایا گیا جب پیدا کی گئی ہے جہاں کسی کی نظر تو کیا فکر کی بھی رسائی نہیں۔ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ۔ (معارف مفتی اعظم)

**فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ**

تین اندھیروں کے بیچ ☆

☆ ایک پیٹ دوسرا رحم تیسری جھلی جس کے اندر بچہ ہوتا ہے اور جھلی بچے کے ساتھ متعلق ہے۔ (تفسیر مظہری)

**ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا**

وہ اللہ ہے رب تمہارا اسی کا راج ہے کسی کی بندگی نہیں اس کے سوائے

**هُوَ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ**

پھر کہاں سے پھرے جاتے ہو ☆

## جامع دلیل

☆ یعنی جب خالق، رب، مالک اور بادشاہ وہی ہے تو معبود اس کے سوا کون ہو سکتا ہے۔ خدا سے دور کے [illegible] ان صفات کا اقرار کر کے بندہ دوسرے کی بندگی میں [illegible] کی تاریب ہیچ کر کے کدھر پھرے جاتے ہو۔ (تفسیر عثمانی)

ذٰلِكُمُ یعنی یہ تمہارا کام ہے وہ اللہ ہے تمہارا رب ہے۔ ذٰلِكُمْ مبتدا، اسم اشارہ بطور [illegible] ہے۔ رَبُّكُمْ دوسری خبر ہے۔ لَهُ الْمُلْكُ تیسری خبر۔ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ چوتھی خبر ہے۔ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یعنی کوئی مخلوق چونکہ ان افعال میں اس کی شریک اور حصہ دار نہیں ہے اس لئے عبادت کے لائق بھی اس کے سوا کوئی نہیں ہے۔ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ یعنی اس میں فا سببی ہے اور استفہام انکاری ہے یعنی تعجب ہے کہ اس واضح کھلے بیان کے بعد تم راہ حق سے پھرے جاتے ہو اور اپنی عبادات کو چھوڑ کر دوسروں کی طرف پھر جاتے ہو [illegible]

وہ تمہیں تمہاری ماؤں کے پیٹ میں پیدا کرتا ہے۔ جہاں تمہاری پیدائش ہوتی رہتی ہے۔ پہلے نطفہ پھر خون بستہ پھر لوتھڑا پھر گوشت پوست ہڈی بنتے پھر روح پھونکی، غور کرو کہ وہ کتنا بڑا خالق ہے۔ تین اندھیریوں میں تمہاری یہ طرح طرح کی تبدیلیاں کی جاتی ہیں اور پھر پیدا ہوتے ہو۔ پہلی اندھیری اس کے اوپر کی جھلی کی اندھیری اور پیٹ کی اندھیری۔ وہ جس نے آسمان و زمین کو اور تم کو اور تم سے پہلے کے لوگوں کو پیدا کیا ہے وہی سب کا رب ہے اسی کا ملک ہے وہی سب میں متصرف ہے وہی لائق عبادت ہے اس کے سوا کوئی اور نہیں۔ افسوس نہ جانے تمہاری عقلیں کہاں کھو گئیں کہ تم اس کے سوا دوسروں کی عبادت بندگی کرنے لگے۔ (تفسیر ابن کثیر)

**اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا**

اگر تم منکر ہو گے تو اللہ پروا نہیں رکھتا تمہاری اور پسند نہیں کرتا

**يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ**

اپنے بندوں کا منکر ہونا ☆

## اللہ تعالیٰ کی بے نیازی

☆ یعنی کافر بن کر اس کے احسانات و حقوق کا انکار کرو گے تو تمہارا ہی نقصان ہے اس کا کچھ نہیں بگڑتا۔ وہ بے پروا ہے کسی کے کفر سے راضی نہیں۔ اپنے بندوں کے کافر و منکر بننے سے خوش نہیں ہوتا۔ [illegible] نے

کا پسند کرنا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

غَنِيٌّ عَنكُمْ یعنی اللہ تم سے اور تمہارے ایمان سے بے نیاز ہے۔ وہ تمہارا اور تمہارے ایمان کا حاجت مند نہیں۔ اِن تَكْفُرُوا کی جزا محذوف ہے فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ محذوف جزا کے قائم مقام ہے۔ اصل کلام اس طرح تھا اگر تم کفر کرو گے تو اس کا کچھ بھی ضرر اللہ کو نہیں پہنچے گا کیونکہ وہ تو تمہارا حاجت مند نہیں۔ نہ تمہارے ایمان کا۔ اس کے کفر کا نتیجہ جو کفر سے تمہارا ہی ضرر ہوگا اور ایمان سے تمہارا ہی نفع ہوگا۔

یعنی اس کو کفر پسند نہیں اگرچہ کفر ایمان سب اسی کے ارادے (اور مشیت) سے ہوتا ہے جیسا اللہ نے خود فرمایا ہے۔ فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا اللہ جس کو ہدایت یاب کرنا چاہتا ہے اس کا سینہ اسلام کے لئے کھول دیتا ہے (کشادہ دلی سے وہ اسلام کو قبول کر لیتا ہے) اور جس کو گمراہ کرنا چاہتا ہے اس کا سینہ تنگ کر دیتا ہے (کہ اسلام اس کے دل میں داخل ہی نہیں ہوتا) علاوہ [illegible] کے یہی قول تمام اہل سنت و جماعت کا ہے اس پر اجماع ہے۔

## آیت کا ایک دوسرا مطلب

بغوی نے لکھا ہے کہ حضرت ابن عباسؓ اور سدی نے اس آیت کا یہ معنی بیان کیا کہ اللہ اپنے مومن بندوں کے لئے کفر کو پسند نہیں کرتا۔ یہ بندے وہی ہیں جن کے متعلق اللہ نے (ابلیس سے) فرما دیا تھا إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ۔ اس تفسیر پر رضا کو بمعنی ارادہ مجازاً اس جگہ ذکر کر دیا جانا [illegible] حق بات یہ ہے کہ رضا اور ارادہ ہم معنی لفظ نہیں ہیں [illegible] رضا ارادہ کی [illegible] ارادہ کا تعلق تو ہر شے سے ہوتا ہے اللہ نے جو چاہا ہوا [illegible] اور جس چیز سے متعلق ہو گیا اس کا وجود لازمی ہے نہ ہونا محال ہے۔ اللہ نے خود فرمایا ہے إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ۔ (تفسیر مظہری)

مسئلہ: اہل سنت والجماعت کا عقیدہ یہ ہے کہ دنیا میں کوئی اچھا یا برا کام ایمان یا کفر اللہ تعالیٰ کی مشیت یا ارادہ کے بغیر وجود میں نہیں آ سکتا۔ اس نے ہر چیز کے وجود میں آنے کے لئے ابتداء ہی سے شے کا ارادہ فرمایا ہے۔ البتہ رضا اور پسندیدگی حق تعالیٰ کی صرف ایمان اور اچھے کاموں سے متعلق ہوتی ہے۔ کفر و شرک اور معاصی ان کو پسند نہیں۔ شیخ الاسلام نووی نے اپنی کتاب الاصول والضوابط میں لکھا ہے۔ مذهب أهل الحق الإيمان بالقدر وإثباته وأن جميع الكائنات خيرها وشرها بقضاء الله وقدره وهو مريد لها كلها ويكره المعاصي مع أنه تعالى مريد لها لحكمة يعلمها جل وعلا۔ (معارف القرآن)

مذہب اہل حق کا عقیدہ یہ ایمان بالقدر ہے کہ تمام کائنات اچھی ہوں یا بری [illegible]

[illegible] اللہ تعالیٰ کفر و شرک [illegible] جو وجود میں آتی ہیں وہ اللہ تعالیٰ ہی کی تخلیق سے اور وہ بھی کرتا ہے مگر وہ [illegible] اس کو وہ ناپسند سمجھتا ہے۔ اگرچہ اس کی تخلیق [illegible] کسی حکمت و مصلحت سے ہے جس کو وہ خود ہی جانتا ہے۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ |
| اور اگر تم شکر کرو تو اس کو تمہارے لئے پسند کرتا ہے |

## اللہ کی پسندیدہ بات

یعنی بندہ کا حق [illegible] شکر گزار رہیں۔ یہ بات اس کو پسند ہے جس کا نفع انہی کو پہنچتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ |
| اور نہیں اٹھائے گا کوئی اٹھانے والا بوجھ دوسرے کا |

## اللہ عادل ہے

یعنی کسی کی گٹھڑی کوئی نہ اٹھائے گا [illegible] ہر ایک اپنے کئے کا [illegible] ذمہ دار ہوگا۔ (تفسیر عثمانی)

## رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی براءت

اس میں اشارہ ہے اس امر کی طرف کہ وبال کفر تم ہی پر پڑے گا [illegible] پس یہ نہیں ہے کہ تمہارے کافر رہنے سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو کوئی نقصان پہنچے وہ تو تمہارے ہی فائدے کے لئے تم کو اسلام کی دعوت دے رہے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ |
| پھر اپنے رب کی طرف تم کو پھر جانا ہے تو وہ جتلا دے گا جو تم کر |
| تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ |
| تے تھے مقرر اس کو خبر ہے دلوں کی بات کی |

## سب کے عمل سامنے آئیں گے

یعنی وہاں جا کر سب کے اچھے برے اعمال سامنے رکھ دیئے جائیں گے۔ [illegible] کیونکہ خدا سے کوئی چیز پوشیدہ نہیں۔ دلوں کی تہ میں جو بات چھپی ہوئی ہو اس سے بھی باخبر ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا |
| اور جب آ لگے انسان کو کچھ تکلیف پکارے اپنے رب کو رجوع ہو کر اس کی |

| |
|---|
| ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ |
| پھر جب بخشے اس کو نعمت اپنی طرف سے بھول جائے اس کو |
| يَدْعُوا إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا |
| کہ جس کے لئے پکارتا تھا پہلے سے اور ٹھہرائے اللہ کی برابر |
| لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ |
| اور وں کو تاکہ بہکائے اس کی راہ سے تو |

### انسان کی عجیب طبیعت

یعنی انسان کی حالت عجیب ہے۔ مصیبت پڑنے پر تو ہمیں یاد کرتا ہے کیونکہ دیکھتا ہے کہ کوئی مصیبت کو ہٹانے والا نہیں۔ پھر جہاں اللہ کی مہربانی سے وہ مصائب دور ہوئیں اور عیش و آرام حاصل ہوا وہ پچھلی حالت بھول جاتا ہے جس کے لئے ابھی ابھی ہم کو پکارتا تھا۔ بس اس کے نشہ میں ایسا مست و غافل ہو جاتا ہے گویا کبھی ہم سے واسطہ ہی نہ تھا۔ اللہ کی دی ہوئی نعمتوں کو دوسرے چھوٹے اور جھوٹے معبودوں کی طرف منسوب کرنے لگتا ہے اور ان کے ساتھ وہ معاملہ کرتا ہے جو خدائے واحد کے ساتھ کرنا چاہئے تھا۔ اس طرح خود بھی گمراہ ہوا اور اپنے قول و فعل سے دوسروں کو بھی گمراہ کرتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ |
| تو کہہ برت لے اپنے کفر کے ساتھ تھوڑے دنوں تو ہے |
| النَّارِ ﴿٨﴾ |
| دوزخ والوں میں |

### مہلت کو نجات نہ سمجھو

یعنی ایسا کافر دو چار روز یہاں عیش اڑا لے اور مزے اڑا لے جب تک مہلت دے رکھی ہے دنیا کی نعمتوں سے تمتع کر لے۔ اس کے بعد تجھے دوزخ میں رہنا ہے جہاں سے کبھی چھوٹنا نصیب نہ ہوگا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا |
| بھلا ایک جو بندگی میں لگا ہوا ہے رات کی گھڑیوں میں سجدے کرتا اور کھڑا رہتا |
| يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ |
| خطرہ رکھتا ہے آخرت کا اور امید رکھتا ہے اپنے رب کی مہربانی کی تو کہہ |

| |
|---|
| يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ |
| کوئی برابر ہوتے ہیں سمجھ والے اور بے سمجھ سوچتے |
| إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾ |
| وہی ہیں جن کو عقل ہے |

**مومن کی شان:** یعنی جو بندہ رات کی تنہائی اور آرام چھوڑ کر اللہ کی عبادت میں لگا۔ کبھی اس کے سامنے دست بستہ کھڑا ہے کبھی سجدہ میں گرا ہے ایک طرف آخرت کا خوف اس کے دل میں بے قرار کئے ہوئے ہے اور دوسری طرف اللہ کی رحمت نے ڈھارس بندھا رکھی ہے۔ کیا یہ سعید بندہ اور وہ بدبخت انسان جس کا ذکر اوپر ہوا کہ مصیبت کے وقت خدا کو پکارتا ہے اور جہاں مصیبت ٹلی خدا کو چھوڑ بیٹھا دونوں برابر ہو سکتے ہیں؟ ہرگز نہیں۔ ایسا ہو تو یوں کہو کہ ایک عالم اور جاہل یا سمجھدار اور بے وقوف میں کچھ فرق نہ رہا۔ مگر اس بات کو بھی وہی سوچتے سمجھتے ہیں جن کو اللہ نے عقل دی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

يَحْذَرُ الْآخِرَةَ۔ یعنی اپنے اعمال کی کوتاہی پر نظر رکھتا ہے تو طلب آخرت سے ڈرتا رہتا ہے اگرچہ اس کے اعمال اچھے ہی کیوں نہ ہوں تب بھی ان اعمال ہی پر بھروسہ نہیں کر لیتا۔ پھر اپنے رب کی رحمت کا امیدوار رہتا ہے۔ فاسق کی طرح بھی ہے اور امید بھی رکھتا ہے، جیسا خوف اس پر غالب ہوتا ہے ویسا ہی سب سے امید ہو جانے کا خوف۔ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ اللہ کی رحمت سے نا امید تو صرف کافر لوگ ہوتے ہیں۔ دوسری طرف سے یہ نہیں کیا ہے کہ اللہ کے عذاب سے بے خوف اور مطمئن ہو جائے کیونکہ وَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ۔

**آیت کا شان نزول:** (۵) بغوی نے لکھا ہے کہ عطاء نے کہا یہ آیت حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے حق میں نازل ہوئی۔ حضرت ابن عمر نے فرمایا کہ اس کا نزول حضرت عثمان کے بارے میں ہوا۔ ابن ابی حاتم نے بھی یہی قول نقل کیا ہے۔ (تفسیر مظہری)

ابن ابی حاتم بیان کرتے ہیں کہ یحییٰ البکاء نے ایک رضاعی کو رضی اللہ عنہما کو کہتے سنا کہ وہ یہ آیت أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ پڑھتے ہوئے حاضرین کو فرمایا یہ شخص جس کا ذکر قرآن کریم نے ان کلمات میں کیا وہ حضرت عثمان ہیں کیونکہ ان کی یہی شان تھی کہ پوری رات تہجد اور تلاوت میں گزر جاتی تھی اور کبھی ایسا ہوتا کہ ایک ہی رکعت میں پورا قرآن کریم پڑھ لیتے۔ (ابن کثیر)

**علم تقوی کی بنیاد ہے:** الَّذِينَ يَعْلَمُونَ یعنی جو لوگ خدا شناس ہیں اللہ کی صفات جلالی و جمالی کو جانتے ہیں اس لئے عذاب سے ڈرتے ہیں اور رحمت سے آس باندھے رکھتے ہیں، علم کی اطاعت کرتے اور تنہائی میں

سے بچھڑ رہتے ہیں۔ (مظہری)

**رات کی عبادت** نماز افضل ہے کہ رات کو ادا کیا جاتا ہے۔ رات کی تاریکی میں عبادت، حسنِ سکون و فراغت کی اور بسبب قرب خداوندی بھی ہے۔ پھر مولیٰ و معبود کی بارگاہ میں اس قدر محبوب عمل ہے کہ فرشتے اس کی بارگاہ میں [illegible] کے لئے ہم نصیحت کرتے ہیں۔ [illegible] [illegible] عمل کرنے والی سب سے پہلی بارگاہ جب [illegible] بتایا گیا۔ (ابن کثیر)

حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا کہ جو شخص یہ چاہتا ہے کہ حشر کے موقف حساب میں اللہ تعالیٰ اس پر سوال فرمانا آسان کردے تو چاہئے کہ رات کی تاریکی میں سجدہ اور قیام کی حالت میں رہے اور آخرت سے ڈرتا بھی ہو اور رحمت کی امید بھی۔ بعض حضرات نے مغرب و عشاء کے درمیان کے وقت کو بھی [illegible] کہا ہے۔ (قرطبی) (ردرمعانی)

**کامیاب کرنے والی دو صفتیں**

عبید بن حمید نے انسؓ بن مالک رضی اللہ عنہ سے حدیث روایت کی ہے کہ حضرت صلی اللہ علیہ وسلم ایک شخص کے پاس تشریف لے گئے جبکہ وہ مرض الموت کی حالت میں تھے۔ آپ نے اس شخص سے دریافت کیا کہ تم اس وقت اپنے آپ کو کس حالت میں پاتے ہو۔ جواب دیا کہ میں اللہ کے خوف اور رحمت کی امید دونوں کے درمیان ہوں اور اپنے گناہوں سے ڈر بھی رہا ہوں۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ یہ دو صفتیں اس طرح جس بندے کے قلب میں جمع ہوں تو اللہ تعالیٰ اس کو وہ عطا فرماتے ہیں جس کی وہ امید رکھتا ہے اور اس چیز سے اس کو امن دیتا ہے جس سے وہ ڈرتا ہے۔ [illegible] (روح المعانی)

**قانت کا معنی**۔ لفظ قانت کے کئی ترجمے کئے گئے ہیں۔ سب سے اوپر قول حضرت ابن مسعودؓ کا ہے۔ انھوں نے کہا کہ اطاعت گزار اور مطیع جب خاص نماز کے لئے ہوں۔ جیسے قوموا للہ قانتین۔ قرطبی [illegible] [illegible] اپنی نگاہ کو پست رکھے اور ادھر ادھر نہ دیکھے نہ اپنے ہاتھ پاؤں سے کھیل کرے نہ دنیا کی کسی چیز کو اپنے اختیار سے دل میں لائے۔ البتہ غیر اختیاری وسوسہ اس کے منافی نہیں۔ (قرطبی)

[illegible] کی تصدیق ہے کہ جس نے [illegible] کے لئے [illegible] عمل کی بات کا ثواب آخرت کی صورت میں ملے گا۔

| |
|---|
| قُلْ يٰعِبَادِ |
| تو کہہ اے بندو میرے |

[illegible]

| |
|---|
| الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا |
| جو یقین لائے ہو ڈرو اپنے رب سے جنھوں نے نیکی کی |
| فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ |
| اس دنیا میں ان کے لئے ہے بھلائی |

**نیکی کا بدلہ ضرور ملے گا**

یعنی جس نے دنیا میں نیکی کی آخرت میں اس کے لئے بھلائی ہے۔ یہ مطلب ہے کہ جس نے نیکی کی اس کو آخرت سے پہلے اسی دنیا میں بھلائی ملے گی [illegible] (مظہری)

**احسان کیا ہے**: احسنوا کی تفسیر میں اختلاف ہے۔ تو ایک قول کے مطابق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا احسان (نیکی اور عبادت کی خوبی) یہ ہے کہ تم اس طرح عبادت کرو گویا تم اس کو اپنے سامنے دیکھ رہے ہو [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

| |
|---|
| وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ |
| اور زمین اللہ کی کشادہ ہے صبر کرنے والوں ہی کو ملتا ہے |
| اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ |
| ان کا ثواب بے شمار |

**ہجرت کی فضیلت**

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

اس کے مقابلہ میں دنیا کی سب تکلیفیں ہیچ ہیں۔ [illegible]

**ہجرت اور جہاد**۔ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] سب کی عبادت کر سکے اس کی تفسیر پر [illegible]

[illegible]

**گناہوں اور لغزشوں سے فرار**

[illegible]

**آیت کا شانِ نزول**

[illegible]

**صابرین کی فضیلت**

[illegible]

[illegible]

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ

[illegible]

الدِّينَ ۝ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ

[illegible]

الْمُسْلِمِينَ ۝

**حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی اولیت**

[illegible]

اللہ کے سب سے پہلے فرمانبردار بندے ہیں۔ (صلی اللہ علیہ وسلم) (تفسیر مظہری)

مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ یعنی تنہا اسی کی عبادت کروں۔ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُوْنَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ یعنی مجھے خالص کا حکم اس لئے دیا گیا ہے کہ میں دین داری و قرب میں سب سے آگے بڑھ جاؤں کیونکہ سبقت کا دارومدار اخلاص پر ہے۔

## اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ کا مطلب:

قریش والوں کے جو لوگ مسلمان ہوں ان سب سے پہلے میں مسلم ہوں۔

مطلب یہ ہوا کہ پہلے خود مسلم ہو جانے اور خدا کے حکم کی تبلیغ کرنے کا حکم دیا گیا ہے جو کہ رسول اللہ کو حکم دیا گیا تھا کہ لوگوں کو اسلام کی دعوت دیں اور یہ اسی وقت ہو سکتا تھا کہ پہلے خود مسلم ہوں پھر دوسروں کو دعوت دے اور خود پہلے اس کو قبول کرتا ہے۔

اس مطلب کی وضاحت سے دوسروں کو اسلام کی طرف مائل کرنا مقصود ہے یعنی مطلب یہ ہے کہ میں تم کو اس چیز کی دعوت دے رہا ہوں جو تمہارے لئے بہتر ہے اگر یہ بہتر نہ ہوتی تو میں پہلے اس کا انتخاب نہ کرتا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| قُلْ إِنِّيْ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ |
| تو کہہ میں ڈرتا ہوں اگر حکم نہ مانوں اپنے رب کا ایک |
| يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۳﴾ |
| بڑے دن کے عذاب سے ڈرتا |

## نافرمانی موجب عذاب ہے

☆ یعنی مجھ جیسا معصوم مقرب بھی اگر بفرض محال نافرمانی کرے تو اس دن کے عذاب سے مامون نہیں۔ پھر دوسروں کا کیا ذکر۔ (تفسیر عثمانی)

**آیت کا مطلب**: اِنْ عَصَيْتُ یعنی اگر میں اخلاص ترک کر دوں اور تمہاری طرح شرک اور باطل کی طرف مائل ہو جاؤں تو مجھے عذاب کا ڈر ہے۔ سابق آیت کی طرح اس آیت میں بھی مخاطبین کو اسلام کی طرف مائل کرنا اور نافرمانی سے روکنا مقصود ہے۔

**شان نزول**: بغوی نے لکھا ہے کہ اس آیت کا نزول اس وقت ہوا جب آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو باپ دادا کا دین اختیار کرنے کی دعوت دی گئی تھی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| قُلِ اللّٰهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِيْنِيْ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا |
| تو کہہ میں تو اللہ کو پوجتا ہوں خالص کر کر اپنی بندگی اس کے واسطے اب تم |

| |
|---|
| مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ |
| پوجو جس کو چاہو اس کے سوائے |

## توحید پر استقامت

☆ یعنی میں تو اسی ایک کے لئے نہایت خلوص سے اپنی بندگی کرتا ہوں تم جدھر چاہو منہ پھیر لو اس کے سوا جس کو جی چاہے پوجو (کچھ انجام بھی سمجھتے ہو) (تفسیر عثمانی)

**کافروں کو دھمکی**: پہلے حکم دیا گیا تھا کہ خالص عبادت اللہ ہی کی کرے اس حکم کی تعمیل میں رسول اللہ نے فرمایا اب تم کو اختیار ہے اللہ کے سوا جس کی چاہو عبادت کرو۔ یہ حکم (کافروں کو) دھمکی دینے کے لئے ہے کہ کافروں کو اپنے باپ دادا کے دین پر لوٹ آنے کی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے متعلق جو امید تھی وہ بالکل منقطع ہو جائے اور ان کے لئے بھی تو یہ ہے کہ کوئی شخص کسی کو ترغیب دیتا ہے تو جس بات کا داعی ہو جاتا ہے۔

وَاعْبُدُوْا ... (عبارت ناصاف)

... (عبارت ناصاف) (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| قُلْ إِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْا أَنْفُسَهُمْ |
| تو کہہ بڑے ہارنے والے وہ جو ہار بیٹھے اپنی جان کو |
| وَأَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ أَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ |
| اور اپنے گھر والوں کو قیامت کے دن سنتا ہے یہی ہے |
| الْمُبِيْنُ ﴿۱۵﴾ |
| صریح ٹوٹا |

## مشرکین خسارے میں ہیں

☆ یعنی مشرکین نے اپنی جان کو اور اپنے متعلقین کو سب کو تباہ کر لیا اس سے بڑا خسارہ کیا ہو گا۔ (تفسیر عثمانی)

خَسِرُوْا أَنْفُسَهُمْ یعنی گمراہ ہو کر اپنی جانوں کو خسارہ میں ڈالا۔ وَأَهْلِيْهِمْ اور متعلقین کو ... مراد ہیں متعلقین ... قیامت کے دن ...

خسران کی وضاحت۔ بعض دانوں کا قول ہے کہ خسران یعنی مال اور صحت میں اگر نقصان ہو تو اس شخص کے گرفتار ہونے کی وجہ سے اور قیامت کے روز اگر جنتی جنت میں ہیں (کافر دوزخی ہے) ان سے جاملنا چاہیے تھے سے تیک ہو گیا۔

الخسران المبین یعنی دوزخ میں ہمیشہ کا خسران ہی حقیقت میں خسران ہے (جس کی تلافی ممکن نہ ہوگی) (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ |
| ان کے واسطے اوپر سے بادل ہیں آگ کے اور |
| تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ |
| نیچے سے بادل ہے |

یعنی ہر طرف سے آگ میں محصور ہوں گے جیسے بادل چھایا ہوتا ہے۔ (تفسیر حقانی)

ظُلَلٌ آگ اور دھوئیں کے بادل اوپر سے ان کے اور نیچے سے بھی ... آگ کا فرش اور بستر ... (ظلل) ... کے لیے ہوگا ... نیچے والوں کے لیے ... ہوگا۔

ذٰلِكَ یعنی یہ عذاب ... اللہ اپنے بندوں کو ڈراتا ہے تاکہ وہ ایسے کاموں سے بچیں جن کی سزا عذاب ہے۔

یعنی ... یہ ... ہے ... اور غضب کا موجب ہوں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ۭ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ |
| اس چیز سے ڈراتا ہے خدا اپنے بندوں کو اے بندو میرے تم مجھ سے ڈرو |

انجام بد سے ڈرو۔ یعنی مجھ سے ڈرتے رہو ... گناہوں سے بچتے رہو تو اللہ کے غضب سے بچاؤ کی صورت ہے۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا |
| اور جو لوگ بچے شیطانوں سے کہ ان کو پوجیں |
| وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى |
| اور رجوع ہوئے اللہ کی طرف ان کے لیے ہے خوشخبری |

## مومن کے لیے خوشخبری

جو لوگ شیطانوں کی پوجا پاٹ اور ہر قسم کے شرک سے ہٹ کر ... ایک ہی طرف رجوع ہو گئے ... ان کے لیے بڑی خوشخبری ہے۔ (تفسیر عثمانی)

الطَّاغُوْت: طغیان (سرکشی) کی حد سے بڑھا ہوا، طغیان میں حد سے بڑھا ہوا چونکہ شیطان ہے اس لیے طاغوت کا لفظ شیطان کے لیے مخصوص ہو گیا۔ بعض نے طاغوت سے مراد لیے ہیں بت ... یعنی عبادت کی ... شیطان ہی کی طرف راجع ہوتی ہے۔

... طرف رجوع ... ہوئے ... سے ...

**آیت کا شان نزول**۔ حضرت جابر بن عبداللہ کا بیان ہے کہ جب آیت لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ اتری تو ایک انصاری نے حاضر ہو کر عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میرے سات غلام ہیں میں نے ایک ایک دروازہ (کے لیے اللہ) کے لیے آزاد کر دیا (تفسیر مظہری) اس پر آیت فَبَشِّرْ عِبَادِ نازل ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| فَبَشِّرْ عِبَادِ ۙ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ |
| سو تو خوشی سنا دے میرے بندوں کو جو سنتے ہیں بات |
| فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۭ |
| پھر چلتے ہیں اس پر جو اس میں نیک ہے |

## اچھی گفتار والوں کے لیے بشارت

یعنی ... سننے والے ... ہیں جو اچھی باتوں پر چلتے ہیں ... یہ مطلب ہے کہ خدا کی بات سنتے ہیں ... ان میں ... کے ... عمل کرتے ہیں۔ مثلاً ... دوسری ... رخصت ... یا ... کلام ... کا ... کرتے ہیں ... کیونکہ ... کذا قال المفسرون۔ حضرت شاہ صاحب نے ایک اور طرح اس کا مطلب ... ہے ... چلتے ہیں ... ہر ... اس ... (تفسیر عثمانی)

**القول اور احسن کی مراد**۔ یعنی قرآن کو بھی ... اور ... کلام ... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا کلام بھی سنتے ہیں اور ... رسول اللہ ... ہیں (اس مطلب پر القول سے عام کلام مراد ہوگا ... اور ... احسن سے مراد ہوگا قرآن مجید اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا کلام) اس ... (التفسیر) ... (مظہری) ... حق

میں ہو گا (یعنی احسن کا نزول بہت تھا جو کہ بجز کیا ہوا) نیکی کا فرض کے کام میں تو کوئی امتحان نہیں ہوتا، اس کے ساتھ جس میں اللہ ہو اس کے رحم کے لئے سکھلا ہے پہچانا جاتا ہے۔

بعض نے بتلایا احسن سے مراد یہ ہے کہ جو احکام ان کو دئیے جاتے ہیں ان میں سے جو سب سے اچھے ہیں وہ چنتے ہیں اور عمل کرتے ہیں۔ بعض علماء نے کہا کہ قرآن میں ظلم سے انتقام لینے کی اور معاف کر دینے کی برابر کی اجازت ہے لیکن دونوں میں سے معاف کر دینا احسن ہے۔ قرآن میں جزا کا بھی ذکر ہے اور معاف کرنے کا بھی لیکن جزا کم احسن ہے۔

**آیت کا شان نزول:** عطاء نے حضرت ابن عباسؓ کا بیان نقل کیا ہے کہ حضرت ابوبکرؓ جب ایمان لے آئے تو حضرت عثمان، حضرت عبدالرحمن بن عوف، حضرت طلحہ بن عبید اللہ، حضرت زبیر بن عوام، حضرت سعد بن ابی وقاص اور حضرت سعید بن زید رضی اللہ عنہم آپ کے پاس آئے اور مسلمان ہونے کی خبر معلوم کی۔ حضرت ابوبکرؓ نے فرمایا میں ایمان لے آیا ہوں، یہ حضرات بھی مسلمان ہو گئے اور انہیں کے متعلق یہ آیت نازل ہوئی۔ ابن زید کا قول ہے کہ ان دونوں آیات کا نزول تین آدمیوں کے متعلق ہوا جو جاہلیت میں بھی لا الہ الا اللہ کے قائل تھے۔ (۱) زید بن عمرو بن نفیل (۲) سلمان فارسی (۳) ابوذر غفاری۔ اور احسن القول سے مراد لا الہ الا اللہ ہے۔ (مظہری)

## لفظ "احسن" کا اشارہ

واللہ احسن کا لفظ ذکر کرنے میں اس طرف اشارہ ہے کہ ان لوگوں نے قرآن اور تعلیمات رسول کا اتباع بے سوچے سمجھے نہیں کیا جیسا کہ اندھی تقلید کرنے والوں کا طریقہ ہے بلکہ ہر ایک بات میں غور کیا، تحقیق و بصیرت سے اس کا اتباع کرنے لگے۔ ان لوگوں نے جو اس کے رستوں کے کلام کو اپنی اور احسن دیکھنے کے بعد اس کا اتباع کیا ہے اور کہتے تھے کہ آیت میں اس کا حوالہ ہے۔ عقل والے ہونے کا مطلب ہو گیا ہے۔ یہی حکم قرآن کی کسی دوسری جگہ بھی ہے جو حضرت موسیٰ علیہ السلام کو تورات کے متعلق ہوا ہے۔ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا ۔ یہاں بھی احسن سے مراد تورات اور اس کے احکام ہیں۔

اور بعض نے کہا کہ ایک احسن اور دوسرا احسن جو ان میں سے احسن ہو اس کی اتباع کے لئے تیار کرتے ہیں۔ (معارف القرآن)

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ

وہی ہیں جن کو راستہ دیا اللہ نے اور وہی ہیں

## أُولُوا الْأَلْبَابِ

عقل والے ☆

## کامیابی کا راستہ

یہ بھی کامیابی کا راستہ ان کی طرف ہے جو عقل سلیم سے کام لیتے ہیں۔ سے کام لیتے ہیں حق اور باطل میں تمیز کرتے ہیں (تیسیر القرآن)

یہ لوگ باتیں تو سب ہی سنتے ہیں، مشرکوں کی بھی اور مومنوں کی بھی، حق کی باتیں بھی اچھی بھی اور بری بھی لیکن اتباع صرف اسی بات کا کرتے ہیں جو احسن ہے۔ توحید و شرک میں سے توحید کا، حق و باطل میں سے حق کا، اور حق سے مختلف درجات میں قرآن میں جو احسن درجات ہیں ان کا اتباع کرتے ہیں۔ اسی لئے ان کو دو صفات سے متصف کیا گیا۔ هَدَاهُمُ اللَّهُ یعنی یہ لوگ اللہ کی طرف سے ہدایت یافتہ ہیں۔ اس لئے مختلف چیزوں میں ان کو دھوکا نہیں ہوتا۔ دوسرے أُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ یعنی یہی لوگ عقل والے ہیں۔ عقل کا کام یہی ہے کہ اچھے برے، حق و باطل میں تمیز کرے۔ اور احسن کو پہچان کر حسن کو اختیار کرے۔ (معارف القرآن، تیسیر القرآن)

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ

بھلا جس پر ٹھیک ہو چکا عذاب کا حکم بھلا تو خلاصی کرے گا

تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ

اس کو جو آگ میں پڑا ہو

**بدبخت آدمی:** یعنی جس پر ان کی ضد و عناد اور بد اعمالیوں کی وجہ سے عذاب کا حکم ثابت ہو چکا ہو وہ کامیابی کا راستہ پا سکتے ہیں۔ بھلا ایسے بدبختوں کو جو تقدیر الٰہی کے سبب آگ میں گر چکے ہیں کون ہے جو بچا سکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**عذاب کے حقدار:** حق علیہ یعنی اللہ نے جس قوم کی عذاب کی تقدیر مقرر فرما دی۔ کلمۃ العذاب حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا ہے مراد ابولہب اور اس کا بیٹا ہے۔ (تفسیر طبری)

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِنْ

لیکن جو ڈرتے رہے اپنے رب سے ان کے واسطے ہیں بالاخانے

فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

جن کے اوپر اور بالاخانے چنے ہوئے ان کے نیچے بہتی ہیں

**الْاَنْهٰرُ ۬ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا یُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِیْعَادَ ﴿۲۰﴾**

[illegible] اللہ [illegible] وعدہ [illegible]

## جنت تیار ہے

[illegible] جنت [illegible] طرف اشارہ [illegible]
[illegible] تیار کئے جا چکے ہیں۔ [illegible]

## جنت کے محل اور ان کے حقدار:

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ جنت میں ایسے محل ہیں جن کا اندرونی حصہ باہر سے اور بیرونی حصہ اندر سے صاف دکھائی دیتا ہے۔ [illegible] نرم کلامی کریں، کھانا کھلائیں اور راتوں کو جب لوگ میٹھی نیند میں ہوں تو یہ اللہ کے سامنے کھڑے ہو کر نمازیں پڑھیں (ترمذی وغیرہ) [illegible] جنت میں ایسے بالاخانے ہیں [illegible] اللہ تعالیٰ نے اپنے [illegible] بنایا ہے جو کھانا کھلائیں [illegible] اور تہجد پڑھیں۔ [illegible] جنتی جنت کے بالاخانوں کو اس طرح دیکھیں گے جیسے تم آسمان کے ستاروں کو دیکھتے ہو [illegible] مشرقی اور مغربی کناروں کے ستارے [illegible] [illegible] تو انبیاء کے ہوں گے [illegible] ان لوگوں کے لئے جو اللہ تعالیٰ پر ایمان لائے اور رسولوں کو سچا جانا۔ (ترمذی وغیرہ) [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] یا رسول اللہ جب تک ہم آپ کی خدمت میں حاضر رہتے ہیں اور آپ کے چہرے کو دیکھتے رہتے ہیں اس وقت تک ہمارے دل نرم رہتے ہیں اور آخرت کی طرف متوجہ رہتے ہیں [illegible] مشغول ہو جاتے ہیں [illegible] حالت ہمیشہ رہتی تو [illegible] فرشتے اپنے ہاتھوں سے تم سے مصافحہ کرتے [illegible] اگر تم گناہ نہ کرتے تو اللہ تعالیٰ ایسے لوگوں کو لاتا جو گناہ کرتے [illegible] جنت کی [illegible]

وقت [illegible] حضرت [illegible] بلکہ [illegible] بہ جانے [illegible] بھی ہیں [illegible] (دیکھئے [illegible])

**وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا یُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِیْعَادَ** یہ اللہ کا وعدہ ہے [illegible] [illegible] جنت والے [illegible] مشرقی اور مغربی افق پر باقی رہ جانے والے چمکتے ہوئے ستارے [illegible] [illegible] انبیاء کے ہوں گے [illegible] [illegible] اللہ پر ایمان لائے اور (تمام) پیغمبروں کو سچا جانا [illegible]

**اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً**

تو نے نہیں دیکھا کہ [illegible] آسمان سے پانی

**فَسَلَكَهٗ یَنَابِیْعَ فِی الْاَرْضِ**

[illegible] چشموں میں [illegible]

## نظام آب رسانی

[illegible] زمین کا پانی پہاڑوں اور زمینوں کے مسامات [illegible] چشموں کی صورت میں [illegible] پانی [illegible] چشموں [illegible] [illegible] (دیکھئے [illegible])

## پانی کا کھارا کر دینا پانی سے بڑی نعمت ہے

[illegible]

انسان اس سے صرف بارش کے وقت یا اس کے متصل چند روز تک فائدہ اٹھا سکتا۔ حالانکہ پانی اس کی زندگی کا مدار ہے اس کی ضرورت ہے جس سے وہ ایک دن بھی مستغنی نہیں ہو سکتا۔ اس لئے حق تعالیٰ نے صرف اسی نعمت کے نازل کرنے پر اکتفاء نہیں فرمایا بلکہ اس کے محفوظ کرنے کے عجیب عجیب سامان فرما دیئے۔ کچھ تو زمین کے گڑھوں، حوضوں اور تالابوں میں محفوظ ہو جاتا ہے اور بہت بڑا ذخیرہ برف بنا کر پہاڑوں کی چوٹیوں پر لاد دیا جاتا ہے۔ جس سے اس کے سڑنے اور خراب ہونے کا امکان نہیں رہتا۔ پھر وہ برف آہستہ آہستہ پگھل کر پہاڑی رگوں کے ساتھ زمین میں اتر جاتا ہے اور جا بجا ابلنے والے چشموں کی صورت میں خود بخود بغیر کسی انسانی عمل کے پھوٹ نکلتا ہے اور نہروں کی شکل میں زمین میں بہنے لگتا ہے اور باقی پانی پوری زمین کی گہرائی میں چلا جاتا ہے جس کو کنواں کھود کر ہر جگہ نکالا جا سکتا ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ |
| پھر نکالتا ہے اس سے کھیتی کئی کئی رنگ بدلتے اس کے ☆ |

یعنی مختلف قسم کی کھیتیاں مثلاً گیہوں، چاول، جو وغیرہ۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا |
| پھر آئے تیاری پر تو تو دیکھے اس کا رنگ زرد پھر کر ڈالتا ہے اس کو چورا چورا |
| اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ |
| بے شک اس میں نصیحت ہے عقلمندوں کے واسطے ☆ |

## کھیتیوں میں نصیحت

☆ یعنی عقلمند آدمی کھیتی کا حال دیکھ کر نصیحت حاصل کرتا ہے کہ جس طرح اس کی رونق اور سرسبزی چند روزہ تھی پھر چورا چورا کیا گیا یہی حال دنیا کی چہل پہل کا ہوگا۔ چاہئے کہ دنیا کی عارضی بہار پر مفتون ہو کر انجام سے غافل نہ ہو جائے۔ یہ کھیتی مختلف اجزاء سے مرکب ہے مثلاً اس میں دانہ ہے جڑ ہے بھوسہ بھی ہے جو جانوروں کا چارہ بنتا ہے اور ہر ایک جز سے منتفع ہونا اس کے ممکن نہیں کہ دوسرے اجزاء سے جدا کر کے الگ کر لیں اور اپنے اپنے ٹھکانے پر پہنچا دیں۔ اسی طرح دنیا کو سمجھو کہ اس میں تنگی، راحت، تکلیف وغیرہ سب ملی جلی ہیں ایک وقت آئے گا کہ یہ کھیتی کٹے گی اور خوب چھانٹ پھٹک کر اس میں سے ہر ایک جز کو اس کے مناسب ٹھکانے پر پہنچا دیا جائے۔ نیکی اور راحت اپنے مرکز و مستقر پر پہنچ جائے اور بدی یا تکلیف اپنے مخزن میں جا ملے۔ غرض کھیتی کے مختلف احوال دیکھ کر عقلمند لوگ بہت سے سبق حاصل کر سکتے ہیں۔ نیز مضمون آیت میں اس طرف بھی اشارہ ہو گیا کہ جس خدا نے آسمان و زمین سے زمین میں چشمے جاری کر دیئے وہ ہی جنت میں نہایت قرینے سے ساتھ نہروں کا سلسلہ جاری کر دے گا۔ (تفسیر عثمانی)

## عقل والوں کے لئے نصیحت:

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ یعنی پانی آسمان سے اتارنے اور اس کو محفوظ کر کے انسان کے کام میں لگانے پھر اس سے قسم قسم کی نباتات اور درخت اگانے اور ان درختوں پر مختلف رنگ آنے کے بعد آخر میں زرد خشک ہو کر ٹوٹ پھوٹ جانے اور بھس ہو جانے میں بڑی نصیحت ہے عقل والوں کے لئے، جو اللہ تعالیٰ کی عظیم الشان قدرت و حکمت کے دلائل ہیں۔ جن کو دیکھ کر انسان اپنی تخلیق کے معاملہ کی حقیقت بھی پہچان سکتا ہے جو ذریعہ ہو سکتی ہے اپنے خالق و مالک کے پہچاننے کا۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ |
| بھلا جس کا سینہ کھول دیا اللہ نے دین اسلام کے واسطے سو وہ |
| عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ |
| روشنی میں ہے اپنے رب کی طرف سے سو خرابی ہے ان کو جن کے دل |
| مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ |
| سخت ہیں اللہ کی یاد سے وہ پڑے پھرتے ہیں بھٹکتے صریح ☆ |

## خوش بخت و بد بخت

☆ یعنی دونوں برابر کہاں ہو سکتے ہیں ایک وہ جس کا سینہ اللہ نے قبول اسلام کے لئے کھول دیا اور اسلام کے حق ہونے میں اس کو شک و شبہ نہ رہا، احکام اسلامی کی تسلیم سے انشراح، حق تعالیٰ نے اس کو توفیق و بصیرت کی ایک عجیب روشنی عطا فرمائی۔ جس کے اجالے میں نہایت سکون و اطمینان کے ساتھ اللہ کے راستہ پر اڑا چلا جا رہا ہے، دوسرا وہ بدبخت جس کا دل پتھر کی طرح سخت ہو، نہ کوئی نصیحت اس پر اثر کرے نہ خیر کا کوئی قطرہ اس کے اندر گھسے، نہ کسی خدا کی یاد کی توفیق ہو، جوں جوں اللہ کا ذکر سنے اور سخت ہوتا جائے اور اندھیریوں میں بھٹکتا پھرے۔ (تفسیر عثمانی)

**شرح صدر:** شرح صدر سے مراد یہ ہے کہ اللہ نے بندہ کے دل میں ایک نور پیدا کیا جس کی چمک میں اس نے حق کو حق اور باطل کو باطل دیکھ لیا اور بغیر کسی تردد اور شک کے وہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے لائے ہوئے دین پر ایمان لے آیا اور سب کی تصدیق کی اسی حالت کو شرح صدر سے

[illegible]

أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ [illegible]

[illegible]

## قساوت قلبی سب سے بڑی سزا ہے

[illegible]

## آیت کا مصداق

[illegible]

## اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا

[illegible]

## مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ

[illegible]

## قرآن میں مثانی مضامین

[illegible]

## تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ

[illegible]

## ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ

[illegible]

## إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ

[illegible]

## اولیاء اللہ کاملین کی حالت

یہ مجمل کتاب ہے کہ جن کو اللہ کے خوف اور اس کے کلام کی عظمت سے جن کے ان کانپ اٹھتے ہیں اور بدن کے رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں پھر ان کی کھالیں نرم پڑ جاتی ہیں۔ مطلب یہ کہ خوف و رعب کی کیفیت طاری ہو کر ان کے قلب و قالب اور روح سب اللہ کی یاد کے سامنے جھک جاتا ہے اور اللہ کی یاد ان کے بدن اور روح دونوں پر یکساں اثر پیدا کرتی ہے۔ یہ حال اولیائے کاملین کا تھا اگر کسی صاحب حال پر دوسری قسم کی کیفیات و احوال طاری ہو جائیں مثلاً غشی یا صعقہ وغیرہ تو یہ ان کی [illegible] سے نہیں ہوتی امتنان و تفصیل [illegible] ہے۔ بلکہ اس طرح کے خوارق [illegible] قائم ہو جانا عموماً اللہ کی قوت [illegible] ضعف کی دلیل ہے۔ جامع ترمذی کی ایک حدیث [illegible] وقت [illegible] اس قسم کے بعض احوال کا طاری ہونا [illegible] ہے۔ واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

یعنی اللہ کی رحمت اور عموم مغفرت کا جب وہ ذکر کرتے ہیں تو اس ذکر کی وجہ سے ان کے دلوں میں سکون و اطمینان پیدا ہوتا ہے۔ ذکر اللہ کے ساتھ رحمت کا ذکر نہیں کیا کیونکہ اصل تو رحمت ہی ہے۔ اللہ کی رحمت غضب پر غالب ہے۔ الی ذکر اللہ میں الی کا معنی لام ہے یعنی اللہ کے ذکر کی وجہ سے سکون و اطمینان ہو کر سکون و اطمینان کا مفہوم داخل ہے۔ (تفسیر مظہری)

**مومنوں کا خوف اور فضیلت:** آیت میں اس کا ذکر آیا ہے کہ مومنوں کے رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں اور بدن سکڑ جاتے ہیں جب عذاب کا ذکر ہوتا ہے اور جب آیات رحمت کا ذکر آتا ہے تو عالموں کا غم دور ہو جاتا ہے کھالیں نرم ہو جاتی ہیں اور دلوں میں سکون پیدا ہو جاتا ہے۔

حضرت عباسؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب اللہ کے خوف سے بندے کے رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں تو اس کے گناہ اس طرح جھڑ جاتے ہیں جس طرح درخت سے سوکھے پتے۔ رواہ البغوی الی ابن ضعیف رواہ البغوی۔ بغوی کی دوسری روایت ان الفاظ کے ساتھ ہے جب اللہ کے خوف سے بندے کے بدن کے رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں تو اللہ اس کو دوزخ کے لئے حرام کر دیتا ہے۔

**صحابہ اور غیر صحابہ کا فرق:** صحابہ کے قلوب وسیع تھے وہ صحبت رسول کی برکت سے ماشاء اللہ توی تھے اس لئے وارد و برکات کی تجلی طاری ہونے سے ان پر بیہوشی طاری نہیں ہوتی صحابہ کے علاوہ دوسروں کو یہ چیز میسر نہیں اس لئے وہ قلوب سے ان پر بیہوشی طاری ہو جاتی ہے۔ (۱) یا وارد ان برکات کی کم ہوتا ہے (۲) یا ان کا ظرف تنگ ہوتا ہے اور حوصلہ میں [illegible] نہیں ہوتی

جو صوفی وارد الٰہی پر چیخ اٹھتے ہیں وہ [illegible] قلب

[illegible] تھے ان کی حالت ابتدائی ہوتی تھی (تفسیر مظہری)

---

حد تک نہیں بلکہ اس طرح ہو جاتا ہے کہ آنکھوں سے آنسو بہنے لگتے ہیں بدن کے رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں اور ذکر رب سے دلوں میں سکون و اطمینان پیدا ہو جاتا ہے۔

**فرشتوں کا خوف:** بخاری نے حضرت ابوہریرہؓ کی روایت سے حدیث نقل کی ہے کہ جب اللہ آسمان پر کسی بات کا فیصلہ کرتا ہے تو اس کے کلام کو سن کر عاجزی کے ساتھ فرشتے اپنے بازو پھڑپھڑاتے ہیں (اور ایسی آواز ہوتی ہے) جیسے پتھر کی چٹان پر زنجیر کھینچنے سے پیدا ہوتی ہے پھر جب ان کے دلوں کی دہشت دور ہو جاتی ہے تو (بعض ملائکہ بعض) سے کہتے ہیں تمہارے رب نے کیا فرمایا وہ جواب دیتے ہیں (جو کچھ فرمایا) حق ہے۔ حدیث۔ ایک اور آیت میں حضرت موسیٰ کے بیہوش ہو جانے کا ذکر کیا ہے اور فرمایا ہے۔ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا

## انسان کی ہمت فرشتوں سے زیادہ ہے

تحقیق: علامت ہے انسان کی استعداد بڑا قوی اور وسیع ہونے کی اس کے ثبوت کیلئے آیت۔ فی سبیل کی دلیل ہے۔ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ تک کافی ہے اور وسعت حوصلہ اور قوت استعداد کو ظاہر کرتے ہوئے فرمایا اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ یہی وجہ ہے کہ فرشتوں نے جب وحی (کا کلام) سنا تو ان پر غشی طاری ہوگئی لیکن آدمی کی حالت یہ نہیں ہے مگر (عروج کے بعد) انسان کا نزول بھی مکمل ہو جائے تو عوام کی مثال کے عام حالات بنے والوں کی حالت میں کوئی فرق نہیں آتا اور اگر نزول کامل نہ ہوا تو بعض حالات میں تغیر آ جاتا ہے اور اولیاء اللہ عارف کامل نہ ہوں تو بیہوش ہو جاتے ہیں۔

**اولیاء اللہ کی صفات:** عبدالرزاق سے مروی ہے کہ حضرت قتادہ فرماتے ہیں اولیاء اللہ کی صفت یہ ہے کہ قرآن سن کر ان کے دل نرم ہو جائیں اور ذکر اللہ کی طرف وہ جھک جائیں ان کے دل ڈر جائیں ان کی آنکھیں آنسو بہائیں اور طبیعت میں سکون پیدا ہو جائے۔ (تفسیر مظہری)

حضرت اسماء بنت ابی بکر فرماتی ہیں کہ صحابہ کرام کا عام حال یہی تھا جب ان کے سامنے قرآن پڑھا جاتا تو ان کی آنکھوں میں آنسو بھر آتے اور بدن پر بال کھڑے ہو جاتے۔ (قرطبی)

حضرت عبداللہ ابن عباسؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس بندے کے بدن پر اللہ کے خوف سے بال کھڑے ہو جاتے ہیں اللہ تعالیٰ اس کے بدن کو آگ پر حرام کر دیتے ہیں۔ (قرطبی [illegible])

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۭ

یہ ہے راہ دینا اللہ کا اس طرح راہ دیتا ہے جس کو چاہے

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ

اور جس کو راہ بھلائے اللہ اس کو کوئی نہیں سمجھانے والا

## ہدایت اللہ ہی سے مانگو

[illegible]

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْۗءَ الْعَذَابِ يَوْمَ

بھلا ایک وہ جو روکتا ہے اپنے منہ پر برا عذاب دن

الْقِيٰمَةِ ۭ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ

قیامت کے اور کہے گا بے انصافوں کو چکھو جو تم

تَكْسِبُوْنَ

کماتے تھے

## محشر میں کافر کی حالت

[illegible]

[illegible]

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ

جھٹلا چکے ہیں ان سے اگلے پھر پہنچا ان پر عذاب

مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ

ایسی جگہ سے کہ ان کو خیال بھی نہ تھا پھر چکھائی ان کو اللہ

الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ

نے رسوائی دنیا کی زندگی میں اور عذاب

الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ

آخرت کا تو بہت ہی بڑا ہے اگر ان کو سمجھ ہوتی

## ماضی سے سبق حاصل کرو

[illegible]

**دنیا کی ذلت** [illegible]

**لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ** [illegible]

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ

اور ہم نے ڈالی ہیں لوگوں کے واسطے اس قرآن

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ قُرْاٰنًا

میں سب طرح کی مثلیں تاکہ وہ دھیان کریں قرآن ہے

**قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ**

عربی زبان کا جس میں ذرا بھی کجی نہیں تاکہ وہ پرہیزگاری کریں

## قرآن کے سمجھانے میں کوئی کمی نہیں

[illegible]

**خلق قرآن کا مسئلہ:** [illegible]

**ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ**

اللہ نے بیان کی ایک مثال ایک مرد ہے کہ کئی ہیں اس میں شریک

**مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۭ هَلْ**

جو آپس میں ضدی ہیں اور ایک مرد ہے پورا ایک شخص کا کیا

**يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا**

برابر ہیں دونوں مثال میں

## مشرک و موحد کی مثال

[illegible]

## مشرک مشترک غلام کی طرح ہے

[illegible]

## مومن موحد کی مثال

**وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ** [illegible]

**اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ**

سب تعریف اللہ کے لئے ہے پر وہ بہت لوگ سمجھ نہیں رکھتے

## اکثر لوگ نہیں سمجھتے

٭ یعنی سب خوبی اللہ کے لئے ہے جو کیسی اعلیٰ مثال (جو توحید کی بہت صاف اور واضح ہے) سے سمجھا دیتے ہیں مگر اس پر بھی بہت بدنصیب ایسے ہیں جو ان واضح مثالوں کے سمجھنے کی توفیق نہیں پاتے۔ (تفسیر عثمانی)

بعض اہل علم کا خیال ہے کہ الحمد سے پہلے لفظ قُل محذوف ہے یعنی آپ کہہ دیجئے کہ حمد صرف توحید عطا فرمانے والے اور یہ نعمت دینے والے خالق کی ہے، وہی ایک مستحق حمد ہے، اس کی حمد کرو جس نے جہان کے لئے سارا سامان مہیا کیا ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ |
| بیشک تم بھی مرتا ہے اور وہ بھی مرتے ہیں پھر مقرر تم |
| يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۝ |
| قیامت کے دن اپنے رب کے آگے جھگڑو گے ٭ |

## قیامت میں سب کا آمنا سامنا ہوگا

٭ یعنی جیسے شرک اور توحید میں جو اختلاف ہے اس کا اثر قیامت کے دن پوری طرح ظاہر ہوگا جس وقت پیغمبر اور منکر سب کھڑے کئے جائیں گے اور کفار انبیاء اور مومنین کے مقابلہ میں جھگڑے اور حجتیں نکالیں گے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "کافر مکر ہوں گے کہ ہم کو کسی نے حکم نہیں پہنچایا، پھر فرشتوں کی گواہی اور زمین کی اور ہاتھ پاؤں کی گواہی سے ثابت ہوگا" کہ اس بارے میں جھوٹے ہیں۔ اسی طرح دوسرے تمام جھگڑوں کا فیصلہ بھی اسی دن پروردگار کے سامنے ہوگا۔ بہتر یہی ہے کہ لفظ "اختصام" کو عام رکھا جائے تاکہ احادیث و آثار کے خلاف نہ ہو۔ (تفسیر عثمانی)

## صفت مشبہ کا صیغہ لانے کی وجہ

إِنَّكَ مَيِّتٌ ہر شخص کی موت یقینی ہے اس لئے بجائے فعل مضارع (تموت اور یموتون) کے صفت مشبہ کا صیغہ جو دوام اور ثبوت پر دلالت کرتا ہے استعمال کیا (یعنی میت اور میتون فرمایا)۔ فراء اور کسائی کی تحقیق ہے کہ میت اس شخص کو کہتے ہیں جو آئندہ مرنے والا ہو ابھی مرا نہ ہو اور میت اس کو کہتے ہیں جس کی جان نکل چکی ہو، اس لئے میت اور میتون مشدد ذکر فرمایا۔

**آیت کا شان نزول:** کلبی نے لکھا ہے کہ کفار کہا کرتے تھے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جلد وفات پا جائیں گے، اس پر آیت مذکورہ نازل ہوئی۔ مطلب یہ ہے کہ آپ بھی عنقریب مر جائیں گے اور یہ کفار بھی سب لوگ بھی مریں گے، پھر رسول اللہ ﷺ کی وفات سے ان کو خوشی نہ ہونا چاہئے۔

## عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ کی وضاحت

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عرض کریں گے اے میرے رب! میری قوم نے اس قرآن کو نظر انداز کر رکھا تھا، انہوں نے میری تکذیب کی اور جو کچھ میں لایا تھا اس کو جھٹلایا۔ ابن عباس سے مروی ہے کہ مشرک کہتے تھے ہم نے ان لوگوں کو ستایا، وہ کہیں گے کہ ہم کو پیغام پہنچانے والا کوئی نہیں آیا اور دنیا میں کفار و مکذبین پر غالب رہے۔ اللہ ہم سے خود ہی کہہ دے گا ہم شرک میں تھے اور اللہ کی قسم ہمارا رب ہے قسم کھا کر کہتے ہیں کہ ہم مشرک نہیں تھے، یہ بھی کہیں گے کہ ہمارے پاس کوئی ڈرانے والا نہیں آیا، جب بھی کسی کے ہم پیچھے برابر چلے گئے اور ان کے کہنے پر چلے اور ان چیزوں کی تکذیب کی جس پر باپ دادا کو پایا۔

لوگ آپس میں بھی اپنے حقوق اور ظلم کی بابت جھگڑیں گے، سب سے پہلے کس کی غرض اور کس کا فیصلہ کیا جائے گا؟ شیخین نے صحیحین میں حضرت ابن مسعودؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت کے دن لوگوں کے باہمی مقدمات میں سب سے پہلے خون کا فیصلہ کیا جائے گا۔

ترمذی اور ابن ماجہ اور طبرانی اور ابو یعلیٰ نے بیان کیا کہ حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا میں نے خود حضور سے سنا کہ مقتول اپنے ایک ہاتھ میں اپنا سر لئے اور دوسرے ہاتھ سے قاتل کو پکڑے ہوئے آئے گا، اس وقت اس کی گردن کی رگوں سے خون ابل رہا ہوگا اور عرش الٰہی کے پاس پہنچ کر رب العالمین کی بارگاہ میں عرض کرے گا کہ اس نے مجھے کیوں قتل کیا تھا؟ اس سے لے کر ... تو قاتل کو ہمیشہ کے لئے دوزخ کو بھیج دیا جائے گا۔ ترمذی نے اس حدیث کو حسن کہا ہے۔

طبرانی نے الاوسط میں حضرت ابن مسعودؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مقتول قاتل کو پکڑ کر لائے گا، اس کی گردن کی رگوں سے اس وقت خون ابل رہا ہوگا، عرض کرے گا اے میرے رب! اس سے پوچھ کہ اس نے مجھے کیوں قتل کیا؟ قاتل کہے گا میں نے اس کو اس لئے قتل کیا کہ اس کی عزت (غلبہ) حاصل ہو، اللہ فرمائے گا عزت تو (ساری) اللہ ہی کے لئے ہے۔ ابن ابی حاتم نے حضرت ابن مسعودؓ کی روایت سے بیان کیا ہے (کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا) قاتل اور مقتول دونوں کو لا کر رحمن کے سامنے کھڑا کیا جائے گا اور قاتل سے پوچھا جائے گا تو نے اس کو کیوں قتل کیا؟ اگر اس نے اللہ کے لئے قتل کیا ہوگا تو کہہ دے گا میں نے اس کو اس لئے قتل کیا تھا کہ غلبہ اللہ کا ہو، جواب دیا جائے گا بیشک عزت (غلبہ) اللہ ہی کے لئے ہے اور اگر قاتل نے کسی اور کی عزت کے لئے قتل کیا ہوگا تو وہ کہے گا میں نے اس کو اس لئے قتل کیا تھا کہ فلاں شخص کو غلبہ حاصل ہو، ارشاد ہوگا اس کے لئے تو عزت نہیں۔ غرض جس ظالم نے کسی کو قتل

... جو ہوگا کسی سے تمام لیا جائے گا ... اس کی صورت [illegible] بٹھا دیا جائے اور رہے گا جب تک ... نے دنیا میں قتل کیا ... سے محروم کیا تھا۔

امام احمد [illegible] نے حضرت عبداللہ [illegible] کی روایت سے بیان کیا ... ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ... اللہ علیہ وسلم ... [illegible] ... حق دار کو اس کا حق [illegible] ... واضح ہوگا۔

**مرد و عورت کا جھگڑا**: طبرانی نے ... سے حضرت ابو ایوب انصاری کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت کے دن مرد و عورت کا جھگڑا [illegible] ... عورت کے ہاتھ پاؤں اور زبان گواہی دیں گے ... کیا ہے ... جب ... کرتی تھی پھر مرد کے ہاتھ پاؤں ... گواہی دیں گے ... کرتا تھا۔

**ہمسایوں کا مقدمہ**: امام احمد [illegible] حضرت عقبہ بن عامر کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت کے دن سب سے پہلے [illegible] (اپنا مقدمہ پیش) کرنے آئیں گے۔

**دنیا ہی میں حقوق ادا کر دو**: بخاری نے حضرت ابوہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس کی طرف اس کے بھائی کا کوئی حق ہو [illegible] اس سے معافی حاصل کر لینی چاہئے [illegible] جب نہ دینار ہوگا نہ درہم ... اگر اس کے پاس کوئی عمل ہوگا تو اس کے حق کے موافق [illegible] لے لیا جائے گا اور اگر اس کی (ظالم) کی نیکیاں نہ ہوں گی تو مظلوم [illegible] کے گناہ [illegible] ڈال دیے جائیں گے۔

**مفلس کون ہے**: مسلم اور ترمذی نے حضرت ابوہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیا تم جانتے ہو مفلس کون ہے؟ صحابہ نے عرض کیا ہم میں مفلس وہ ہے جس کے پاس نہ درہم ہو نہ سامان۔ فرمایا میری امت کا مفلس وہ ہوگا جو قیامت کے دن نماز روزہ زکوٰۃ (سب کچھ) لے کر آئے گا لیکن کسی کو گالی دی ہوگی کسی پر تہمت لگائی ہوگی کسی کا مال کھایا ہوگا کسی کا خون بہایا ہوگا کسی کو مارا ہوگا [illegible] اس کی نیکیاں ایک (حق دار) کو [illegible] دی جائیں گی ... اگر حقوق ادا ہونے سے پہلے اس کی نیکیاں ختم ہو جائیں گی تو حق داروں کے گناہ [illegible] اس پر ڈال دیے جائیں گے پھر اس کو دوزخ میں پھینک دیا جائے گا۔

## اعمال کے [illegible] دین میں اہلسنت کا مسلک

[illegible] علماء [illegible] کی نیکیاں [illegible] ہے کہ

... ایمان [illegible] کی نیکیوں کا ثواب لے [illegible] کفر کے علاوہ [illegible] حقوق [illegible] ختم ہو جائے گی [illegible] اہل سنت کے مسلک کے مطابق ہے۔ [illegible] دوزخ میں [illegible] رہے گا اور ایمان کی [illegible] ... ختم ہو جائے گی [illegible] صرف ایمان باقی رہ جائے گا [illegible] مظلوموں کے گناہ [illegible] ڈال دیے جائیں گے [illegible] سزا [illegible] کے لیے [illegible] جنت [illegible] ہے۔

## قیامت کے دن حقوق دلائے جائیں گے

مسلم نے حضرت ابوہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت کے دن حقداروں کو ان کے حقوق ادا کئے جائیں گے یہاں تک کہ منڈی بکری کا سینگوں والی بکری سے (آ کر جس نے منڈی بکری کو [illegible] مارا تھا) بدلہ دلایا جائے گا۔ ایک روایت میں آیا ہے [illegible] (مظلوم) [illegible] (ظالم) [illegible] بدلہ دیا جائے گا۔ [illegible]

ایک اور حدیث میں ہے کہ دو بکریاں آپس میں لڑ رہی تھیں [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت ابوذر سے فرمایا [illegible] یہ کیوں لڑ رہی ہیں؟ حضرت ابوذر نے جواب دیا نہیں معلوم۔ [illegible] آپ نے فرمایا لیکن [illegible] اللہ کو معلوم ہے اور [illegible] قیامت کے دن ان دونوں میں فیصلہ کرے گا۔ [illegible]

**صحابہ کرام کا تعجب**: [illegible] نے حضرت زبیر بن العوام کی روایت سے بیان کیا ... آیت ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ نازل ہوئی [illegible] (قیامت کے دن اپنے رب کے [illegible]) [illegible] ایک دوسرے [illegible] یہاں تک [illegible] ۸ [illegible]

ابن مردویہ کی روایت بھی اسی طرح آئی ہے۔

حضرت ابوسعید خدری نے اس آیت کے ذیل میں فرمایا ہم کہتے تھے ہمارا رب ایک ہے ہمارا نبی ایک ہے ہماری کتاب ایک ہے پھر (قیامت کے دن) یہ باہمی جھگڑا کیسے ہوگا؟ آخر جب جنگ صفین کا دن آیا اور ہم میں سے بعض نے بعض پر تلواروں سے حملے کیے تو ہم نے کہا ہاں یہی وہ ہے۔

ابراہیم کا بیان ہے کہ جب آیت ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ نازل ہوئی تو لوگوں نے کہا کہ ہم تو بھائی بھائی ہیں ہمارا باہم جھگڑا کس طرح ہوگا لیکن جب حضرت عثمان شہید کر دیے گئے تو لوگوں نے کہا یہ ہے ہمارا باہمی جھگڑا۔

ان تمام مذکورہ بالا اقوال سے معلوم ہوتا ہے کہ علماء نے سمجھا تھا کہ آیت کا مطلب یہ ہے کہ جھگڑے مسلمانوں اور کافروں کے درمیان ہوں گے (مسلمانوں کے باہم جھگڑے نہیں ہوں گے) لیکن جب خلفاء قتل ہو گئے اور مسلمانوں کے آپس میں فساد ہونے لگے اس وقت ظاہر ہوا کہ خصومت اور جھگڑا مسلمانوں کے آپس میں بھی ہوگا۔ (تفسیر مظہری)

## مظلوم کا حق ظالم سے وصول کرنے کی صورت

حضرت ابن عباس فرماتے ہیں کہ یہاں لفظ إِنَّكُمْ میں مؤمن و کافر اور مسلم و ظالم و مظلوم سب داخل ہیں یہ سب اپنے اپنے مقدمات اپنے رب کی عدالت میں پیش کریں گے اور اللہ تعالیٰ ظالم سے مظلوم کا حق دلوائیں گے وہ کافر ہو یا مؤمن۔ اور صورت اس ادائیگی حقوق کی وہ ہوگی جو صحیح بخاری میں حضرت ابوہریرہ کی روایت سے آئی ہے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس شخص کے ذمہ کسی کا حق ہے اس کو چاہئے کہ دنیا ہی میں اس کو ادا یا معاف کرا کر حلال ہو جائے کیونکہ آخرت میں درہم و دینار تو ہوں گے نہیں۔ اگر ظالم کے پاس کچھ اعمال صالحہ ہیں تو بقدر اس کے ظلم کے اعمال اس سے لے کر مظلوم کو دے دیے جائیں گے اور اگر اس کے پاس حسنات نہیں ہیں تو مظلوم کی سیئات اور گناہ اس سے لے کر ظالم پر ڈال دیے جائیں گے۔ (معارف مفتی اعظم)

مسند احمد کی ایک حدیث میں یہ بھی ہے کہ آیت ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ یعنی پھر تم اپنے رب کے سامنے جھگڑو گے کے نازل ہونے پر حضرت زبیر نے سوال کیا کہ یارسول اللہ! کیا دنیوی خصومتوں کے ساتھ ساتھ گناہوں کا بھی سوال ہوگا؟ آپ نے فرمایا ہاں ان کا بھی یہاں تک کہ ہر حقدار کو اس کا حق دلوایا جائے۔ حضرت زبیر نے کہا پھر تو بڑی سختی ہوگی۔ مسند کی ایک حدیث میں یہ بھی ہے کہ حضرت زبیر نے جو تمام آیت ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ (الآیۃ) کے نازل ہونے پر پوچھا کہ یارسول اللہ! کون سی نعمتوں کا سوال ہوگا؟

کہ تمام اہل اسلام و ایمان جنہوں نے کسی کا حق دبایا ہے (قیامت کے دن) حاضر ہوں گے حضور نے فرمایا کہ آپ نے فرمایا اس دن قرض خواہوں کے مطالبے پورے کیے جائیں گے۔ حضرت زبیر نے آپ سے پوچھا یہ کون سا مقدمہ ہے؟ آپ نے فرمایا کہ کیا تم سمجھتے ہو کہ اسی دنیا کے جھگڑوں کے تصفیہ ہوں گے اور ان کے حقدار کو ان کا حق دلایا جائے گا؟ حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہاں یہ بھی ہوگا اور اس کے ساتھ نیکی اور بدی کی بات ہر ایک سے پوچھی جائے گی یہاں تک کہ تمام جھگڑوں کا فیصلہ قیامت کے دن ہوگا۔

**جسم اور روح کا جھگڑا:** ابن ابی حاتم نے حضرت ابن عباس سے روایت کی ہے کہ قیامت کے دن ہر شخص اپنے رب کے سامنے جھگڑا کرے گا یہاں تک کہ روح اور جسم بھی آپس میں جھگڑیں گے روح کہے گی کہ میں نے کچھ نہیں کیا سب کچھ جسم نے کیا اور جسم کہے گا کہ میں تو بے حس و حرکت تھا تمام گناہ روح نے کیے۔ اس وقت اللہ تعالیٰ ایک فرشتہ کو بھیجے گا جو ان کے درمیان فیصلہ کرے گا۔ یہ فرشتہ ان سے کہے گا کہ تمہاری مثال ایک اندھے اور ایک لنگڑے کی سی ہے جو ایک باغ میں داخل ہوئے لنگڑا پھل دیکھتا تھا مگر توڑ نہیں سکتا تھا اور اندھا چل سکتا تھا مگر دیکھ نہیں سکتا تھا۔ لنگڑے نے اندھے سے کہا کہ مجھے اپنی پیٹھ پر سوار کر لو تو میں پھل توڑوں پھر ہم دونوں کھائیں گے۔ چنانچہ اندھا لنگڑے کو کندھے پر بٹھا کر درختوں تک لے گیا اور لنگڑے نے پھل توڑے اور دونوں نے کھائے۔ اب بتاؤ ان دونوں میں سے مجرم کون ہے؟ جسم اور روح دونوں جواب دیں گے کہ دونوں ہی مجرم ہیں۔ فرشتہ کہے گا کہ یہی فیصلہ تمہارا ہے کہ جسم سواری ہے اور روح اس پر سوار۔ مراد یہ ہے کہ جسم سواری ہے اور روح اس پر سوار ہو کر اعمال کا ارتکاب کرتی ہے لہٰذا جسم و روح دونوں ہی عذاب کے مستحق ہیں۔ (ابن کثیر)

| |
|---|
| فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى |
| پھر اس سے ظالم زیادہ کون جس نے جھوٹ بولا |
| اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ |
| اللہ پر اور جھٹلایا سچی بات کو جب پہنچی اس کو |
| أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ |
| کیا نہیں دوزخ میں ٹھکانا منکروں کا |

## سب سے بڑا ظالم

یعنی اللہ پر جھوٹ بولنا یعنی اس کے شریک ٹھہرانا اولاد تجویز کرنا یا ایسی صفات اس کی طرف منسوب کرنا جو واقع میں اس کے لائق نہیں، بڑا ظلم ہے اور جب سچی بات اس کے پاس پہنچی انبیاء علیہم السلام کے ذریعہ خدا کی طرف سے اس کو سنتے ہی جھٹلانے لگا سوچنے سمجھنے کی تکلیف بھی گوارا نہ کی بلکہ جو کچھ سچائی کا حق تھا اس سے بڑھ کر کون ظالم ہوگا ایسے بد بختوں کا ٹھکانا دوزخ کے سوا کہاں ہو سکتا ہے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں۔

آیت کی تفسیر اسی طرح کی ہے مگر حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ یعنی اگر نبی نے (معاذ اللہ) جھوٹ خدا کا نام لیا تو اس سے برا کون اور اگر وہ سچا تھا اور تم نے جھٹلایا تو تم سے برا کون۔ دونوں باتیں کذب علی اللہ اور کذب بالصدق کا مصداق ایک ایک فریق ہوا بیان کی گئی۔ والذی جاء بالصدق سے تم مراد ہے۔ (موضح القرآن)

## سب سے بڑا بے انصاف

اس شخص سے بڑا بے انصاف کون ہوگا جس نے اللہ پر جھوٹ بولا اور اللہ کی طرف سے رسول خدا کے ذریعہ سے جب سچائی (اسلام) اس کے پاس آگئی تو اس نے سچائی کو جھوٹا بتا دیا (ایسے) کافروں کا ٹھکانا جہنم میں نہیں ہے۔

فَمَنْ اَظْلَمُ: اس میں شبہ نہیں ہے کہ کافروں کا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے جھگڑا کرنا انتہائی بے انصافی ہے جس کا سبب یہ ہے کہ ان لوگوں میں جن سے کسی سے زیادہ بے انصاف ہو ہی نہیں سکتا۔

كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ: یعنی اس نے اللہ کی طرف اولاد کی نسبت کی اور اس کے شریک ٹھہرائے۔

وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ: یعنی سچائی یعنی قرآن کو جھٹلایا یا پیام خدا کو جھوٹا بتایا جیسے محض سچائی کی تکذیب کی بلکہ یہ بھی نہیں دیکھا کہ اس کی سچائی کے دلائل اور اس کے صادق ہونے کے بکثرت شواہد موجود ہیں۔

حضور کیلئے تسلی: اَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ۔ یہ قرآن کریم کا تقاضا ہے کہ ایسے مقام پر استفہام تقریری ہے۔ ایک بحث یہ ہے کہ اس آیت میں روئے سخن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف ہے اور آپ کی تسکین خاطر کیلئے ہے۔ یعنی کافر آپ کی تکذیب کرتے ہیں تو آپ غم نہ کریں ان کا ٹھکانہ جہنم ہے، تو آپ ان کی فکر نہ کریں اور کافروں کے حال کو اللہ پر چھوڑ دیجئے وہ ان کو جہنم میں ڈالے گا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ |
| اور جو لے کر آیا سچی بات اور سچ جانا جس نے اس کو |
| بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ لَهُمْ |
| وہی لوگ ہیں ڈر والے ان کے |
| مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذٰلِكَ |
| لئے ہے جو وہ چاہیں اپنے رب کے پاس یہ ہے |
| ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ |
| جلد ۶ ص ۱۲۹ |

## ڈرنے والوں کی شان

یعنی سچی بات سے ڈرنے والوں کی شان یہ ہوتی ہے کہ سچی بات لائیں یعنی کسی سچی بات کی تصدیق کریں۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ جو سچی بات لے کر آیا اور جس نے سچ مانا، دونوں سے مراد ایک ہی ہے یعنی دونوں کا مصداق ایک ہے۔ (موضح القرآن)

آیت کا مصداق: حضرت ابن عباس نے فرمایا کہ (جاء بالصدق) لا الٰہ الا اللہ کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لے کر آئے اور آپ نے خود اس کی تصدیق کی یعنی ہر وہ شخص جس نے اس کو قبول کیا وہ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ سے مراد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کی پیروی کرنے والے اہل ایمان کی طرف بھی سب کی طرف اشارہ ہوگا۔

کلبی اور ابو العالیہ نے کہا قرآن لے کر آنے والے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تھے اور ان کی تصدیق کرنے والے حضرت ابوبکر صدیق۔ بعض نے حضرت علی کی طرف بھی اس قول کی نسبت کی ہے حضرت ابوہریرہ کی روایت میں بھی اسی طرح آیا ہے۔ حضرت حسان کا شعر ہے۔

من يهجو رسول الله منكم　　ويمدحه وينصره سواء

کیا تم میں سے جو شخص رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ہجو کرتا اور جو (شخص) آپ کی تعریف کرتا ہے اور آپ کی مدد کرتا ہے برابر ہو سکتے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ |
| تاکہ اتار دے اللہ ان پر سے برے سے برے کام |
| عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ |
| جو انہوں نے کئے تھے اور بدلے میں دے ان کو ثواب بہتر کاموں کا |

الَّذِیْ کَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۳۵﴾

جو [illegible] کرتے تھے ہیں

### غلطیوں کی معافی

(۲) [illegible] غلطیاں تقصیریں [illegible] کو ان کے بہترین اعمال کا بدلہ دے گا اور غلطی سے جو برا کام ہو گیا سب معاف کر دے گا (تفسیر) شاید اسوأ اور احسن صیغۂ تفضیل [illegible] اختیار فرمایا کہ [illegible] [illegible] بھلائی اور بدی کی [illegible] اور ادنیٰ بھلائی اور ادنیٰ برائی سے بہتر بھی پائی جاتی ہے۔ واللہ اعلم (تفسیر عثمانی)

### بڑے گناہ بھی معافی کے قابل ہیں

اسوأ (بہت برے) [illegible] (کلام کو [illegible] مانتے ہیں) فرمایا کہ جب سب سے برے اعمال کو بھی معاف فرما دے گا اور [illegible] سے برے اعمال کی معافی تو بدرجہ اولیٰ ہو جائے گی۔ یہ آیت دلالت کرتی ہے کہ کبیرہ [illegible] معاف ہو جائیں گے [illegible] کا قول [illegible] کہ آیت میں اسوأ الذی عملوا کہنے سے اس طرف بھی اشارہ ہے کہ جو گناہ تو بہ سے معاف ہو جائے (خواہ وہ کبیرہ ہو) سب سے برا ہی ہے [illegible] (چھوٹے بڑے) گناہ [illegible] کر جاتے ہیں۔

مقاتل نے کہا کہ ان کے اچھے اعمال کا پورا بدلہ دے گا اور برے اعمال کا بدلہ نہیں دے گا۔ (تفسیر مظہری)

حضرت عبدالرحمن بن زید بن اسلم فرماتے ہیں یہ ہی لوگ ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ہیں اور آپ کے ساتھ ہیں سچے ساتھی صحابہ ہیں۔ کیونکہ [illegible] اور پرہیزگار [illegible] اللہ تعالیٰ سے ڈرتے رہتے اور شرک کفر سے بچتے رہے ان کے لئے جنت میں جو وہ چاہیں سب کچھ ہے۔ جب طلب کریں گے پائیں گے [illegible] بدلہ ہے ان پاکبازوں کا [illegible] ان کی نیکیاں تو سلامت [illegible] بے اور برائیاں قبول کر لیتا ہے۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ [illegible] [illegible] [illegible] کی روایت [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (ابن کثیر)

حدیث شریف میں ہے اللہ کو یاد رکھ وہ تیری حفاظت کرے گا۔ [illegible] یاد رکھ اسے ہر وقت اپنے پاس پائے گا۔ آسانی کے وقت رب کو پہچان وہ سختی کے وقت تجھے کام آئے گا۔ جب کچھ مانگے تو اللہ ہی سے مانگ اور جب مدد طلب کرے تو اسی سے طلب کر۔ یقین رکھ کہ اگر تمام دنیا مل کر تجھے کوئی نقصان پہنچانا چاہے اور خدا کا ارادہ نہ ہو تو وہ سب تجھے ذرا سا بھی نقصان نہیں پہنچا سکتے۔ اور سب مل کر تجھے کوئی نفع دینا چاہیں جو خدا نے

اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ ؕ وَیُخَوِّفُوْنَکَ

کیا اللہ تعالیٰ اپنے بندہ [illegible] اور یہ لوگ آپ کو ڈراتے ہیں

بِالَّذِیْنَ مِنْ دُوْنِہٖ ؕ وَمَنْ یُّضْلِلِ

ان [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

اللّٰہُ فَمَا لَہٗ مِنْ ہَادٍ ﴿۳۶﴾ وَمَنْ یَّہْدِ اللّٰہُ

اللہ تعالیٰ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] اللہ

فَمَا لَہٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَیْسَ اللّٰہُ بِعَزِیْزٍ

تو اس کو کوئی [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ذِی انْتِقَامٍ ﴿۳۷﴾

بدلہ لینے والا

### اللہ کا بندہ غیر اللہ سے نہیں ڈرتا

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] کفار مکہ اور مشرکین کا [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

مقصد یہ تھا [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] نے لکھا ہے کہ [illegible] [illegible]

[illegible] آیت کا شانِ نزول۔ اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ۔ اس آیت کا شانِ نزول [illegible] [illegible] اللہ [illegible]

اس [illegible] [illegible] کر لیا ہے۔

### جو اللہ سے ڈرے اللہ اس کا محافظ ہے

جو شخص [illegible] [illegible]

اس آیت سے [illegible] اللہ تعالیٰ تمہاری حفاظت کے لیے کافی نہیں [illegible] [illegible]

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

اور جو تو ان سے پوچھے کس نے بنائے آسمان

وَالْاَرْضَ لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلْ اَفَرَءَیْتُمْ

اور زمین تو کہیں اللہ نے تو کہہ بھلا دیکھو تو

مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِیَ

جن کو پوجتے ہو اللہ کے سوا اگر چاہے اللہ مجھ پر

اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ

کچھ تکلیف تو وہ ایسے ہیں کہ کھول دیں تکلیف اس کی ڈالی ہوئی

اَوْ اَرَادَنِیْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ

یا وہ چاہے مجھ پر مہربانی تو وہ ایسے ہیں کہ روک دیں اس

رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِیَ اللّٰهُ ؕ عَلَیْهِ

کی مہربانی کو تو کہہ مجھ کو بس ہے اللہ اسی پر

یَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ

بھروسہ رکھتے ہیں بھروسہ رکھنے والے

### جو خالق ہے وہی معبود ہے

[illegible] [illegible]

مشرکین سے سوال [illegible] [illegible]

تو خدا کی قدرت کا اقرار کرنے کے بعد ان پر اس بات کا اقرار کرنا لازم ہو جاتا ہے کہ بت خدا کو اور فرشتے جن کو یہ خدا سمجھتے ہیں خدا کی بھیجی ہوئی مصیبت کو دفع کر سکتے ہیں نہ اس کی عطا کردہ رحمت کو روک سکتے ہیں۔

**شانِ نزول:** مقاتل کا بیان ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے (اس آیت کے نزول کے بعد) مشرکوں سے یہ سوال کیا تو لیکن انہوں نے کوئی جواب نہیں دیا اس پر آیت ذیل نازل ہوئی قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ آپ کہہ دیجئے میرے لئے خدا ہی کافی ہے بھروسہ کرنے والے اسی پر بھروسہ رکھتے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

**قوی اور غنی ہونے کا طریقہ:** ابن ابی حاتم نے حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مرفوعاً حدیث نقل کی ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا من احب ان یکون اقوی الناس فلیتوکل علی اللہ ومن احب ان یکون اغنی الناس فلیکن بما فی ید اللہ عز وجل اوثق منه بما فی یدیه ومن احب ان یکون اکرم الناس فلیتق اللہ عز وجل جس شخص کو یہ بات محبوب ہے کہ وہ دنیا میں سب سے زیادہ قوی ہو جائے اس کو چاہئے کہ اللہ پر توکل کرے اور جو شخص چاہتا ہے کہ سب سے زیادہ غنی ہو اس کو چاہئے کہ جو چیز خدا کے ہاتھ میں ہے اس پر اس چیز سے زیادہ اعتماد کرے جو خود اس کے ہاتھ میں ہے اور جو شخص چاہتا ہے کہ سب سے زیادہ عزت والا ہو اسے چاہئے کہ خدا کا تقویٰ اختیار کرے۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ |
| تو کہہ اے قوم کام کئے جاؤ اپنی جگہ پر |
| اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ |
| میں بھی کام کرتا ہوں اب آگے جان لوگے |
| يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ |
| کس پر آتی ہے آفت کہ اس کو رسوا کرے اور اترتا ہے اس پر |
| عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۴۰﴾ |
| عذاب سدا رہنے والا |

### خدا پرست ہی غالب ہوگا

قُلْ يٰقَوْمِ ... آپ کہہ دیجئے کہ اے میری قوم کے لوگو تم اپنی حالت پر عمل کئے جاؤ ... وقت جلد آنے والا ہے

گئے۔ یعنی اللہ کی طاقت ... عذاب مخزیہ سے دنیا کا عذاب اور عذاب مقیم سے آخرت کا عذاب مراد ہے۔ (تفسیر مظہری)

### ہر حال میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم غالب ہوں گے

انی عامل یعنی میں اپنی حالت پر عمل کرتا رہوں گا یہاں مکانتی کا لفظ اختصار کے لئے حذف کر دیا ... کامیاب ہوں گا ... مکانتی کے لفظ حذف کر دینے ... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی حالت ایک جگہ ٹھہری نہیں ... آپ کی قوت ... کریں۔ دونوں جہان میں کامیاب رہوں گا۔

عذاب یخزیہ: دنیا کی رسوائی ... آ جانے کی دلیل ہے ...

| |
|---|
| اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ |
| ہم نے اتاری ہے تجھ پر کتاب لوگوں کے واسطے |
| بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ |
| سچے دین کے ساتھ پھر جو کوئی راہ پر آیا سو اپنے بھلے کو |
| وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ |
| اور جو کوئی بہکا سو یہی بات ہے کہ بہکا اپنے برے کو |
| وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۴۱﴾ |
| اور تجھ پر نہیں ان کا ذمہ |

### آپ صلی اللہ علیہ وسلم اپنا فرض ادا کر چکے

[illegible]

[illegible]

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا

[illegible]

وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ

[illegible]

الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ

[illegible]

الْاُخْرٰى اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى اِنَّ فِيْ

[illegible]

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ان الله قبض ارواحكم حين شاء وردها حين شاء [illegible] (بخاری) [illegible]

[illegible] هذه الارواح [illegible] في يد الله يقبضها الله اذا شاء ويرسلها اذا شاء [illegible]

## خواب کے سچا اور جھوٹا ہونے کی وجہ

[illegible]

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى [illegible]

[illegible]

## سونے اور جاگنے کا مسنون طریقہ

[illegible]

[illegible]

اِنَّ فِيْ [illegible]

[illegible]

## اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ

[illegible]

## بتوں کی سفارش کی حقیقت

[illegible]

[illegible]

قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۳﴾

[illegible]

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۴۴﴾

[illegible]

### سب کچھ اللہ کے اختیار میں ہے

[illegible]

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۵﴾

[illegible]

### غیر اللہ کی محبت والے

[illegible]

### اشمئزاز اور استبشار کا فرق

[illegible]

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۶﴾

[illegible]

[illegible] میں جب کسی سوالی باتوں میں کسی جھگڑے ہوئے تھے اور اختلاف [illegible] بھی اس میں باقی نہ رہا تو [illegible] جھگڑے [illegible] کی بابت فیصلہ فرمائے گا۔ (تفسیر [illegible])

اللہ ہی سے دعا کیجئے: جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] کافروں سے معاملہ میں [illegible] آتے تو اللہ [illegible] قدرت [illegible] سب کا عالم ہے۔

انت تحکم بین عبادک [illegible] تو ہی فیصلہ کرے گا۔

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی دعا

ابو سلمہ کا بیان ہے میں نے حضرت عائشہ سے دریافت کیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] نماز شب کا آغاز کرتے تھے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے تھے: اللھم رب جبرائیل و میکائیل واسرافیل فاطر السموات والارض عالم الغیب والشہادۃ انت تحکم بین عبادک فیما کانوا فیہ یختلفون اھدنی لما اختلف فیہ من الحق باذنک انک تھدی من تشاء الی صراط مستقیم (اے اللہ! [illegible] آسمانوں اور زمین کو پیدا کرنے والے [illegible] (قیامت کے دن) تو ہی بندوں کے درمیان ان مسائل کا فیصلہ کرے گا جن میں وہ اختلاف کرتے تھے مجھے اپنے حکم سے مختلف فیہ امور میں حق کی [illegible]) (مسلم شریف)

## حضرت ربیع بن خثیم کی دربار الٰہی میں فریاد

ربیع بن خثیم کی مجلس میں حضرت حسین رضی اللہ عنہ کی شہادت کا ذکر کیا گیا [illegible] انا للہ وانا الیہ راجعون پڑھا [illegible] اللھم فاطر السموات والارض عالم الغیب والشہادۃ انت تحکم بین عبادک فی ما کانوا فیہ یختلفون۔ (روح المعانی)

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی سکھلائی ہوئی دعا

حضرت عبداللہ بن عمرو نے ایک کاغذ نکالا اور فرمایا [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] سکھائی ہے: اللھم فاطر السموات والارض عالم الغیب والشہادۃ انت رب کل شیء و [illegible] اشہد ان لا الہ الا انت وحدک لا شریک لک وان محمداً عبدک ورسولک والملائکۃ یشہدون اعوذ بک من الشیطان وشرکہ واعوذ بک ان اقترف علی نفسی سوءا او اجرہ الی مسلم [illegible]

[illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت [illegible] (مسند احمد) [illegible] حضرت ابوبکر صدیق [illegible] آپ نے فرمایا پڑھو: اللھم فاطر السموات والارض عالم الغیب والشہادۃ لا الہ الا انت رب کل شیء و ملیکہ اعوذ بک من شر نفسی ومن شر الشیطان وشرکہ وان اقترف علی نفسی سوءا او اجرہ الی مسلم [illegible]

**جنت میں پہنچانے والی دعا:** [illegible] اللھم فاطر السموات والارض عالم الغیب والشہادۃ انی اعہد الیک فی ہذہ الحیاۃ الدنیا انی اشہد ان لا الہ الا انت وحدک لا شریک لک وان محمدا عبدک ورسولک فانک ان تکلنی الی نفسی تقربنی من الشر وتباعدنی من الخیر وانی لا اثق الا برحمتک فاجعل لی عندک عہدا توفینیہ یوم القیامۃ انک لا تخلف المیعاد [illegible]

ہے کہ تیرے سوا کوئی معبود نہیں تو اکیلا ہے تیرا کوئی شریک نہیں اور میری یہ بھی شہادت ہے کہ محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) تیرے بندے اور تیرے رسول ہیں تو اگر مجھے میرے نفس کی طرف سونپ دے گا تو میں برائی سے قریب اور بھلائی سے دور ہو جاؤں گا۔ میں تو صرف تیری رحمت ہی کا سہارا اور بھروسہ ہے۔ پس تو بھی مجھ سے عہد کر لے جو قیامت کے دن پورا کرے بیشک تو عہد شکن نہیں۔ اس حدیث کے راوی سہیل فرماتے ہیں کہ میں نے قاسم بن عبدالرحمن سے جب کہا کہ عون اس طرح یہ حدیث بیان کرتے ہیں تو آپ نے فرمایا سبحان اللہ ہماری تو پردہ نشین بچیوں کو بھی یہ حدیث یاد ہے۔ (مسند احمد بحوالہ تفسیر ابن کثیر)

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا

اور اگر ظالموں کے پاس ہو جتنا کچھ کہ زمین میں ہے سارا

وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ

اور اتنا ہی اور اس کے ساتھ تو سب دے ڈالیں اپنے چھڑوانے

الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ

میں بری طرح کے عذاب سے دن قیامت کے اور نظر آئے ان کو

اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝ وَبَدَا

اللہ کی طرف سے جو خیال بھی نہ رکھتے تھے اور نظر

لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ

آئیں ان کو برائیاں اپنے کام کی جو کماتے تھے اور الٹ پڑے

مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

ان پر وہ چیز جس پر ٹھٹھا کرتے تھے ☆

## کافر کی نجات نہیں ہوگی

☆ یعنی جب قیامت کے دن ان اختلافات کا فیصلہ سنایا جائے گا اس وقت جو ظالم شرک کرتے تھے اور اللہ والوں کی شان گھٹاتے تھے ان کا سخت برا حال ہوگا اگر ان کے پاس دو گونہ بلکہ روئے زمین کے خزانے بلکہ اس سے بھی زیادہ ان کے پاس موجود ہوں تو چاہیں گے کہ سب دے دلا کر کسی طرح اپنا پیچھا چھڑا لیں۔ جو بدمعاشیاں دنیا میں کی تھیں سب ٹھیک ایک ایک کر کے ان کے سامنے ہوں گی اور ایسے قسم قسم کے ہولناک عذابوں کا مزہ چکھیں گے جو کبھی ان کے خیال و گمان میں بھی نہ گزرے تھے۔ غرض توحید خالص اور مقربین کی باتوں سے جو ٹھٹھا کرتے تھے اس کا وبال پڑ کر رہے گا اور جس عذاب کا مذاق اڑایا کرتے تھے وہ ان پر الٹ پڑے گا۔ (تفسیر عثمانی)

## کافروں کے لئے ناگہانی عذاب:

اہل جنت کے لئے فرمایا تھا فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ اس کے مقابل دوزخیوں کے لئے فرمایا۔ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ۔ یعنی ناقابل بیان برائی کا ایسا سخت عذاب ان کے سامنے ہوگا جس کا ان کو وہم و گمان بھی نہ تھا۔ مقاتل نے کہا یعنی وہ کبھی ان کو گمان بھی نہ تھا کہ ایسے عذاب سے آخرت میں دوچار ہوں گے۔ یہ مطلب بھی ہو سکتا ہے کہ دنیا میں ان کا خیال تھا کہ بت ہماری سفارش کریں گے۔ یا یہ خیال تھا کہ حشر نشر کچھ بھی نہ ہوگا یا یہ سمجھتے تھے کہ آخرت میں ہم مومنوں کے مقابلہ میں بہتر حالت میں ہوں گے قیامت کے دن ان تمام خیالات کے برعکس عذاب سامنے آئے گا۔ (تفسیر مظہری)

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا

سو جب آ لگتی ہے آدمی کو کچھ تکلیف ہم کو پکارنے لگتا ہے

## انسان کی خو

☆ یعنی جس کے ذکر سے چڑتا تھا مصیبت کے وقت اسی کو پکارتا ہے اور جن کے ذکر سے خوش ہوتا تھا انہیں بھول جاتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا

پھر جب ہم بخشیں اس کو اپنی طرف سے کوئی نعمت کہے یہ تو مجھ کو ملی

أُوتِيتُهُ عَلَى عِلْمٍ

کہ پہلے سے معلوم تھی ☆

☆ یعنی خدا پہلے ہی جانتا تھا کہ یہ نعمت مجھ کو دے کیونکہ میں اس کی لیاقت رکھتا ہوں، یا یہ کہ میں نے اپنے علم و ہنر سے کمائی ہے، خدا کو میری استعداد و لیاقت معلوم تھی۔ غرض اپنی لیاقت اور ہنر پر نظر کی فضل الٰہی پر خیال نہ کیا۔ (تفسیر عثمانی)

بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا

کوئی نہیں یہ جانچ ہے پر وہ بہت سے لوگ نہیں

يَعْلَمُونَ ۝

سمجھتے ☆

## نعمت و امتحان ہے

[illegible]

## کافروں کی ناسمجھی اور ضد

[illegible]

| |
|---|
| قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ |
| [illegible] |
| فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ |
| [illegible] |
| فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ |
| [illegible] |

[illegible]

| |
|---|
| وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ |
| [illegible] |
| سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ |
| [illegible] |

## مشرکین بھاگ نہیں سکتے

[illegible]

| |
|---|
| أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ |
| [illegible] |
| لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ |
| [illegible] |
| لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ |
| [illegible] |

## روزی اللہ کی مرضی سے ملتی ہے

[illegible]

## تمام نعمتیں اللہ کی طرف سے ہیں

[illegible]

| |
|---|
| قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ |
| [illegible] |
| لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ |
| [illegible] |
| يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ |
| [illegible] |
| الرَّحِيمُ |

[illegible]

## اللہ تعالیٰ کی شان کریمی

[illegible]

اعلان کر دی جو عموماً سب کے لئے ہے اور یہ اطلاق ہر قسم کے گناہوں کے لئے ایک عمومی حکم رکھتی ہے۔ مشرک، ملحد، زندیق، مرتد، یہودی، نصرانی، مجوسی، بدعتی، بدمعاش، فاسق، فاجر، کوئی ہو اگر بعد کو توبہ کر لے تو توبہ کی وجہ سے بالکل پاک ہو جائے گا اور اگر بغیر توبہ مر جائے گا تو اس کے لئے کوئی وجہ نہیں کیونکہ اللہ جس کے چاہے سب گناہ معاف کر سکتا ہے۔ کوئی اس کا ہاتھ نہیں پکڑ سکتا۔ پھر بندہ ناامید کیوں ہو ہاں یہ ضرور ہے کہ ایک دوسری آیت میں تصریح کر دی گئی کہ کفر و شرک کا جرم بدون توبہ کے معاف نہیں کرے گا۔ لہٰذا اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا کو بغیر توبہ کے ساتھ مقید کرنا ضروری ہے کہ قول تعالیٰ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ (سورۂ نساء ۱۱۶) اس تحقیق سے یہ لازم نہیں آتا کہ بدون توبہ کے اللہ تعالیٰ کوئی جرم بڑا قصور معاف ہی نہ کرے۔ اور نہ یہ مطلب ہوا کہ کسی جرم کے لئے توبہ کی ضرورت ہی نہیں رہتی۔ گناہ معاف کر دیئے جائیں گے اور صرف مشیت کی بنا پر شرک کے متعلق دوسری آیات میں بتا دیا گیا کہ وہ کفر و شرک سے بدون توبہ کے مغفرت نہ ہو گی۔ چنانچہ آیت بالا کی شان نزول بھی اس پر دلالت کرتی ہے جیسا کہ آگے آیت کے آخر سے معلوم ہو گا۔ (تفسیر حقانی)

**آیت کا شان نزول:** طبرانی نے ضعیف سند سے حضرت ابن عباسؓ کا بیان نقل کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے وحشی (قاتل حضرت حمزہؓ) کو اسلام کی دعوت دینے کے لئے ایک شخص کو بھیجا وحشی نے جواب دیا آپ مجھے اپنے مذہب میں داخل ہونے کی دعوت کس طرح دے رہے ہیں آپ کا قول یہ ہے کہ جو شخص قتل کرے یا شرک کرے یا زنا کرے گا اس کو قیامت کے دن دوہرا عذاب ہو گا اور میں نے یہ سب کچھ کیا ہے اس پر آیت اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا نازل ہوئی۔ وحشی نے جواب بھیجا یہ تو شرط سخت ہے شاید میں اس کو پورا نہ کر سکوں کیا اس کے علاوہ بھی کوئی صورت ہے۔ اس پر آیت اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ نازل ہوئی وحشی نے کہا اس آیت میں مغفرت کو مشیت پر موقوف رکھا گیا ہے ممکن ہے اللہ میرے لئے مغفرت نہ چاہے مجھے معلوم نہیں (اگر میں شرک سے توبہ کر لوں تو میری مغفرت ہو گی یا نہیں) اس پر آیت قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا نازل ہوئی۔

بغوی کی روایت میں اتنا زائد ہے کہ مسلمانوں نے عرض کیا یا رسول اللہ یہ بات صرف وحشی کے لئے خاص ہے یا تمام مسلمانوں کے لئے عموی (حکم) ہے حضورؐ نے فرمایا (نہیں) بلکہ سارے مسلمانوں کے لئے عام ہے۔

حاکم نے حضرت ابن مسعودؓ کا بیان نقل کیا ہے حضرت ابن مسعودؓ نے فرمایا ہم کہتے تھے کہ مسلمان ہونے اور ایمان لانے کے بعد جو لوگ مصیبت سے گھبرا کر دین چھوڑ بیٹھے ان کی توبہ قبول نہیں ہو گی لیکن جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ میں تشریف لے آئے تو ان ہی لوگوں کے متعلق یہ آیت قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا نازل فرمائی۔ بغوی نے حضرت ابن عمرؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ اس آیت کا نزول عیاش بن ابی ربیعہ اور ولید بن ولید اور مسلمانوں کی ایک جماعت کے حق میں ہوا کہ انہوں نے ایمان لے آنے کے بعد جب ان کو دکھ دیئے گئے اور فتنہ میں پڑ گئے تو اسلام چھوڑ بیٹھے ہم کہا کرتے تھے کہ ان کا کوئی نفل یا فرض قبول نہیں کرے گا اور نہ ان کی توبہ قبول ہو گی یہ لوگ اولاً مسلمان ہو گئے پھر دکھ دیئے جانے پر انہوں نے دین چھوڑ بیٹھے۔ اس پر اللہ نے یہ آیات نازل فرمائیں حضرت عمرؓ نے اپنے ہاتھ سے یہ آیات لکھ کر عیاش بن ابی ربیعہ اور ولید بن ولید کے پاس بھیج دیں اور ان کے علاوہ لوگوں کے پاس بھی یہ سب لوگ مسلمان ہو گئے اور ہجرت کر کے مدینہ کو آ گئے۔

شیخین نے صحیحین میں بیان کیا ہے کہ کچھ مشرک ایسے تھے جنہوں نے بہت خونریزی کی تھی اور زنا کا ارتکاب بھی بہت کیا تھا۔ یہ لوگ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا آپ جو کچھ فرماتے ہیں اور جس امر کی دعوت دیتے ہیں وہ بہت اچھا ہے کاش آپ بتا دیں کہ ہمارے گزشتہ گناہوں کا بھی کفارہ ہو جائے گا اس پر سورۂ فرقان کی آیت وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ سے غَفُوْرًا رَّحِيْمًا تک اور آیت قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ نازل ہوئی۔ ابن ابی حاتم نے صحیح سند سے بیان کیا کہ حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا آیت مشرکین مکہ کے متعلق نازل ہوئی۔ بغوی کی روایت میں بھی یہ قول آیا ہے حضرت ابن عباسؓ کی طرف سے۔

مقاتل بن حیان نے بروایت نافع حضرت ابن عمرؓ کا بیان نقل کیا ہے حضرت ابن عمرؓ نے فرمایا ہم گروہ صحابہ خیال کرتے تھے اور کہتے تھے کہ ہر نیکی قبول ہو گی اس کے بعد جب آیت يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ (اے ایمان والو! اللہ کی اطاعت کرو اور اللہ کے رسول کے فرمان پر چلو اور اپنے اعمال کو باطل نہ کرو) نازل ہوئی تو ہم سوچنے لگے کہ کبیرہ گناہ کریں اور فواحش کا ارتکاب کریں اور کس طرح باطل کر سکتے ہیں۔ یہ خیال آنے کے بعد جب ہم کسی کو کوئی کبیرہ گناہ کرتے دیکھتے تو کہتے یہ شخص تباہ ہو گیا اس کے بعد یہ آیت (قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا) نازل ہوئی تو ہم اپنے ان قولوں سے رک گئے اس کے بعد ہم کسی کو کوئی گناہ کرتے دیکھتے تو ہم کو اس کے متعلق (عذاب کا) خوف ہوتا اور کسی سے ارتکاب گناہ نہ ہوتا تو ہم اس کے متعلق (قبولیت) کی امید ہوتی۔

لوگوں کو مایوس نہ کرو: روایت ہے کہ حضرت ابن مسعودؓ مسجد میں تشریف

لے گئے وہاں ایک دروازہ کھلا ہوا تھا اور دروازے کا ... دروازے کے طرف زنجیر ڈال کر رہا تھا آپ جا کر اس کے دروازے کے پیچھے کھڑے ہو گئے اور آپ نے وعظ کرنے والے کو ایسے لوگوں کو مایوس کر رہا ہے پھر آپ نے آیت قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا الخ پڑھی۔

حضرت اسماء بنت یزید کا بیان ہے کہ میں نے خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے پڑھتے سنا۔ قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا۔ وَلَا یُبَالِیْ۔ (یعنی اللہ کی رحمت سے نا امید مت ہو، اللہ سب گناہ معاف کر دے گا اور (کسی کے) گناہوں کی پروا نہیں کرے گا) ولا یبالی کا لفظ حضور نے آیت کے بعد خود بڑھا دیا، جزو آیت کا نہیں ہے۔

حضرت جندب راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیان فرمایا ایک آدمی نے کہا خدا کی قسم فلاں شخص کی مغفرت نہیں فرمائے گا اللہ نے فرمایا وہ کون ہے جو مجھ پر قسم کھا کر کہہ رہا ہے کہ فلاں شخص کی میں مغفرت نہیں کروں گا میں نے اس شخص کو بخش دیا اور (اسے کہنے والے) تیرے اعمال کو اکارت کر دیا۔ او کما قال علیہ السلام۔ رواہ مسلم۔ حضرت ابن عباس نے آیت لا تقنطوا کے متعلق بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اللھم (صغیرہ گناہ یا کبیرہ گناہ جن کو کرنے کے بعد ندامت ہوئی ہو) تو معاف کر دے گا سب (گناہوں) کو بخش دے گا (اے اللہ) تیرا کونسا بندہ ہے جس نے ارتکاب گناہ نہیں کیا ہے۔ رواہ الترمذی۔ ترمذی نے اس حدیث کو حسن صحیح غریب کہا ہے۔

## بنی اسرائیل کے گنہگار کی مغفرت

حضرت ابو سعید خدری راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بنی اسرائیل میں ایک شخص تھا جو ننانوے آدمیوں کا قتل کر چکا تھا پھر (توبہ کی غرض سے) ایک تارک الدنیا درویش کے پاس گیا اور اس سے (اپنی توبہ کے متعلق) مسئلہ دریافت کیا، درویش نے کہا تیرے لئے کوئی توبہ (کی گنجائش) نہیں ہے، سائل نے یہ جواب سن کر اس درویش کو بھی قتل کر دیا اس کے بعد لوگوں سے دریافت کرتا پھرا کہ اب میں کس سے مسئلہ پوچھوں، ایک شخص نے کہا فلاں بستی میں جاؤ (وہاں ایک بڑا عالم ہے اس سے دریافت کرو) حسب ہدایت یہ قاتل اس بستی کی طرف چلا، (لیکن راستہ میں) اس کی موت آ پہنچی (مرتے مرتے) اس نے اپنا سینہ اس بستی کی طرف اٹھا دیا یعنی بڑھا دیا (اور مر گیا) رحمت اور عذاب کے فرشتوں میں اس شخص کے متعلق اختلاف ہو گیا اللہ نے ایک طرف (یعنی بستی کی طرف) والی زمین کو حکم دیا قریب ہو جا اور دوسری طرف والی زمین کو حکم دیا (یعنی جہاں سے وہ نکل کر) چلا تھا اس زمین کو حکم دیا کہ دور ہو جا (یعنی لمبی ہو جا) پھر فرشتوں نے (حسب الحکم) دونوں طرف کی زمین کو ناپا معلوم ہوا کہ بستی کی طرف والی زمین ایک بالشت کم پایا، اس لیے اس شخص کی مغفرت ہو گئی (متفق علیہ)

مسلم کی ایک روایت میں بھی یہ حدیث بیان کی گئی ہے۔ اس روایت کے الفاظ حدیث کے یہ الفاظ ہیں۔ اس قاتل کو ایک راہب کا پتہ بتایا گیا قاتل نے اس راہب سے جا کر کہا میں نے ننانوے آدمیوں کو قتل کیا ہے کیا میری توبہ (قبول) ہو سکتی ہے راہب نے کہا نہیں۔ اس شخص نے راہب کو بھی قتل کر دیا اس طرح سو کی تعداد پوری ہو گئی پھر لوگوں سے دریافت کیا (اب) اس زمین پر بسنے والوں میں سب سے بڑا عالم کون ہے کسی نے ایک عالم کا پتہ بتا دیا اس قاتل نے اس سے جا کر کہا میں نے سو آدمیوں کو قتل کیا ہے کیا میری توبہ (قبول) ہو سکتی ہے عالم نے جواب دیا ہاں توبہ قبول ہونے میں کون رکاوٹ ڈال سکتا ہے تم فلاں مقام پر جاؤ وہاں کچھ لوگ اللہ کی عبادت میں مشغول ہیں تم بھی ان کے ساتھ مل کر اللہ کی عبادت میں مشغول ہو جاؤ اور اپنے وطن کو لوٹ کر نہ آنا وہ وطن بری زمین ہے، یہ بات سن کر یہ شخص وہاں چل پڑا آدھا راستہ طے کیا تھا کہ موت آ پہنچی اس کے متعلق رحمت اور عذاب کے فرشتوں میں اختلاف ہو گیا ایک فرشتہ آدمی کی صورت میں آیا (ان کا اختلاف دور کرنے کے لئے) ان فرشتوں نے اس کو ثالث پنچ بنایا اس نے فیصلہ کیا کہ دونوں طرف کی زمین ناپ لو جس طرف کی زمین کم ہو اسی کے حکم میں اس شخص کو داخل کر دو فرشتوں نے زمین کی پیمائش کی تو اس طرف کی زمین کم پائی جہاں (عبادت کے لیے) جانے کا اس نے ارادہ کیا تھا چنانچہ رحمت کے فرشتوں نے اس کی روح پر قبضہ کر لیا۔

**ڈرنے والے گنہگار کی مغفرت:** بخاری اور مسلم نے صحیحین میں حضرت ابوہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے ایک آدمی تھا جس نے کبھی کوئی نیکی نہیں کی تھی جب مرنے لگا تو اس نے اپنے گھر والوں کو وصیت کی کہ مجھے مرنے کے بعد جلا دینا پھر جلی ہوئی خاک کو آدھی خشکی میں اور آدھی سمندر میں بکھیر دینا کیونکہ اگر خدا کا مجھ پر قابو چل گیا تو خدا کی قسم وہ مجھے ایسا عذاب دے گا جو سارے جہان میں کسی کو نہیں دے گا جب وہ شخص مر گیا تو گھر والوں نے وصیت کے مطابق عمل کر دیا تو اللہ نے سمندر کو حکم دیا سمندر نے وہ خاک جمع کر دی جو اس میں تھی اور خشکی کو حکم دیا تو اس نے بھی خشکی والی ساری خاک جمع کر دی پھر اللہ نے اس شخص سے پوچھا تو نے ایسا کیوں کیا اس نے جواب دیا اے میرے رب تیرے ڈر سے، تو رب نے اس کو معاف کر دیا۔

**حضرت ابوہریرہ کی نصیحت:** بغوی نے ضمضم بن جوش سے بیان کیا کہ میں مدینہ کی مسجد میں داخل ہوا ایک بوڑھے آدمی نے مجھ کو پکارا

نہ کرنا کہ مجھے پکار لیا اے شخص کیا تو دل سے تو بڑا پڑ کہا کہ اللہ تیری مغفرت نہ کرے گا اور تجھے جنت میں داخل نہ کرے گا۔ میں نے کہا آپ پر اللہ کی رحمت ہو آپ کون ہیں؟ انہوں نے کہا میں ابو ہریرہ ہوں میں نے کہا یہ لفظ ایسے ہیں جو غصے کے وقت ہر شخص کہتا ہے جب غصہ آجاتا ہے تو اپنے گھر والوں کو بھی کہہ دیتا ہے اور بیوی کو بھی۔ فرمایا میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو فرماتے سنا کہ بنی اسرائیل میں دو آدمی تھے جو باہم دوست تھے ایک عبادت میں بڑی محنت کرتا تھا اور دوسرا گنہگار تھا عابد اسے گناہگار دوست سے کہتا تھا اب اپنی حرکتوں سے باز آجا۔ گنہگار جواب دیتا تھا مجھے اور میرے رب کو چھوڑ دے۔ ایک روز عابد نے اپنے دوست کو کسی بڑے گناہ میں مبتلا پایا تو (حسب معمول) کہا اب باز آجا اس نے جواب دیا مجھے چھوڑ دے کیا تجھے میرا نگران بنا کر بھیجا گیا ہے عابد نے کہا خدا کی قسم اللہ تجھے کبھی معاف نہیں کرے گا اور نہ جنت میں کبھی تجھے داخل کرے گا۔ پھر دونوں فوت ہو گئے جب ملک الموت نے ان دونوں کی روحیں قبض کر لیں اور دونوں اللہ کے پاس جمع ہوئے تو اللہ نے اس گناہگار سے فرمایا میری رحمت سے جنت میں چلا جا اور دوسرے سے فرمایا کیا تو میرے بندوں سے میری رحمت کو روک سکتا ہے؟ بندہ نے کہا نہیں اے رب۔ تو (یہاں تک کہ اللہ نے فرمایا اس کو دوزخ میں لے جاؤ) حضرت ابو ہریرہ نے فرمایا قسم ہے اس ذات کی جس کے قبضہ میں میری جان ہے اس نے ایک بات کہی تھی جس نے اس کی دنیا اور آخرت میں اس کو تباہ کر دیا۔ اسی مضمون کی حضرت ابو ہریرہ کی روایت مسند احمد میں بھی بیان کی گئی ہے۔

**آیت کی فضیلت:** حضرت ثوبان سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مجھے پسند نہیں کہ دنیا اور دنیا کی ساری چیزیں اس آیت کے مقابلے میں مجھے ملیں (اسے یہ آیت ہیں) یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ الخ رواہ احمد والطبرانی فی الاوسط وابن مردویہ والبیہقی فی شعب الایمان۔

**مشرک کی بخشش نہیں ہے:** بیہقی کی روایت میں اتنا اور بھی ہے کہ ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جس نے شرک کیا ہو (کیا اس کو بھی معاف فرما دے گا) حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے کچھ دیر کے لئے سکوت فرمایا پھر فرمایا مگر جس نے شرک کیا (وہ شرک پر آ کر وفات تک پہنچا ہو اس کی مغفرت نہیں ہوگی)۔

حضرت ابو ذر کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اللہ اپنے بندے کو بخش دیتا ہے جب تک پردہ نہ پڑ جائے صحابہ نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پردہ پڑنا کیا؟ فرمایا کسی شخص کا مشرک ہونے کی حالت پر مر جانا۔ رواہ احمد والبیہقی فی کتاب البعث والنشور۔

یہی حضرت ابو ذر کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص اللہ سے ایسی حالت میں ملے (یعنی ایسی حالت میں مر جائے) کہ اس نے کسی چیز کو اس کے ساتھ شریک نہ قرار دیا ہو تو (خواہ) زمین کے برابر بھی اس کے گناہ ہوں اللہ معاف فرما دے گا۔ رواہ البیہقی فی کتاب البعث والنشور۔

## اپنے فوت شدہ آباؤ اجداد کے لئے دعا مغفرت کے ہدیے بھیجو

حضرت ابو ہریرہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جنت میں اللہ نیک آدمی کے درجے (اس کے اعمال سے) بلند کرتا ہے وہ عرض کرے گا اے رب یہ مرتبہ مجھے کہاں سے ملا؟ جواب ملے گا تیرے لئے تیری اولاد کے دعا مغفرت کرنے سے۔ رواہ احمد

حضرت ابن عباس راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قبر کے اندر مردہ ایسا ہوتا ہے جیسے کوئی ڈوبتا ہوا فریاد رس کا منتظر ہو ڈوبنے سے بچنے کے لئے وہ منتظر رہتا ہے کہ باپ یا ماں یا بھائی یا کسی دوست کی طرف سے دعا مغفرت اس کو پہنچ جائے۔ جب دعا اس کو پہنچ جاتی ہے تو دنیا اور دنیا کی ہر چیز سے زیادہ پیاری ہوتی ہے اور زمین کے باشندوں کی دعا سے اللہ قبر والوں پر پہاڑوں جیسا ثواب داخل کرتا ہے۔ مردوں کی جانب سے زندوں کا ہدیہ ان کے لئے دعا مغفرت کرنا ہے۔ رواہ البیہقی فی شعب الایمان۔

**اللہ تعالیٰ کی رحمتیں:** حضرت ابو ہریرہ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا خدا کی سو رحمتیں ہیں جن میں سے ایک رحمت اللہ نے جنوں انسانوں اور چوپایوں اور حشرات الارض کو عطا کی ہے اسی ایک رحمت کی وجہ سے آپس میں مہربانی اور رحم کرتے ہیں۔ وحشی جانور بھی اسی کی وجہ سے اپنے بچوں پر مہربانی کرتے ہیں اور ننانوے رحمتیں اللہ نے اپنے لئے محفوظ رکھی ہیں جن سے قیامت کے دن اپنے بندوں پر مہربانی فرمائے گا۔ متفق علیہ

## اللہ تعالیٰ ماں سے بھی زیادہ مہربان ہے

حضرت عمر بن خطاب نے فرمایا کچھ قیدی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں پیش کئے گئے قیدیوں میں ایک عورت تھی جس کی چھاتیوں سے دودھ بہہ رہا تھا وہ دوڑ رہی تھی اتنے میں اس کو قیدیوں میں ایک بچہ مل گیا اس نے بچے کو اٹھا کر اپنے پیٹ سے چمٹا لیا اور دودھ پلانے لگی۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیا تمہارا خیال ہے کہ یہ عورت اپنے بچے کو آگ میں پھینک سکتی ہے (جب کہ وہ روکنے کی قدرت رکھتی ہے) ہم نے عرض کیا نہیں جب تک اس کو روکنے کی طاقت ہوگی وہ بچہ کو آگ میں نہیں پھینکے گی حضور نے ارشاد فرمایا تو خدا اپنے بندوں پر اس سے زیادہ

مہربان ہے جتنی یہ عورت اپنے بچے پر مہربان ہے۔ متفق علیہ۔

حضرت عامر کا بیان ہے ہم حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر تھے ایک شخص چادر (یا کمبل) اوڑھے ہوئے آیا کوئی چیز اس کے ہاتھ میں تھی جو چادر (کے کونے) میں لپٹی ہوئی تھی اس نے عرض کیا میں درختوں کی ایک جھاڑی کی طرف سے گزرا اس نے پرندے کے چوزوں کی آواز سنی تھی میں نے ان کو پکڑ کر اپنی چادر میں رکھ لیا تھے میں ان کی ماں آگئی اور میرے سر کے گرد چکر لگانے لگی میں نے چادر ہٹا کر بچوں کو اس کے سامنے کر دیا فوراً وہ بچوں پر ٹوٹ پڑی میں نے سب کو اپنی چادر میں لپیٹ لیا اب وہ سب میرے پاس ہیں۔ حضور نے حکم دیا ان کو رکھ دو (چادر کھول کر) سب کو رکھ دیا مگر بچوں کی ماں بچوں سے چمٹی رہی حضور نے فرمایا کیا تم لوگوں کو تعجب ہو رہا ہے کہ ماں کو ان بچوں پر کیسی مہربانی ہے (کہ بچوں کو چھوڑ کر اپنی جان بچا کر اڑ کر نہیں جاتی) قسم ہے اس کی جس کے قبضہ میں میری جان ہے کہ ان بچوں کی ماں اپنے بچوں پر جتنی مہربان ہے اللہ اپنے بندوں پر اس سے زیادہ مہربان ہے۔ جاؤ ان کو لے جاؤ اور جہاں سے لائے ہو وہیں لے جا کر رکھ دو۔ حسب الحکم وہ شخص ان سب کو لے گیا۔ رواہ ابوداؤد۔

حضرت عبداللہ بن عمر کا بیان ہے ہم کسی جہاد میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ہمرکاب تھے۔ کچھ لوگوں کی طرف سے آپ کا گزر ہوا اور دریافت فرمایا کون لوگ ہو انہوں نے عرض کیا ہم مسلمان ہیں ان میں ایک عورت بھی تھی جو ہنڈیا میں آگ جلا رہی تھی اس کے ساتھ اس کا بچہ بھی تھا جب کوئی شعلہ اٹھتا تو وہ بچہ کو الگ کر لیتی تھی وہ حضور کی خدمت میں آئی اور عرض کیا کیا آپ اللہ کے رسول ہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہاں کہنے لگی میرے ماں باپ آپ پر قربان کیا اللہ ارحم الراحمین نہیں ہے حضور نے فرمایا کیوں نہیں۔ کہنے لگی کیا ماں جتنی اپنے بچے پر مہربانی کرتی ہے اللہ اپنے بندوں پر اس سے زیادہ مہربان نہیں ہے فرمایا کیوں نہیں کہنے لگی ماں اپنے بچے کو آگ میں نہیں ڈالتی یہ سن کر حضور سرنگوں ہو گئے اور رونے لگے کچھ دیر کے بعد سر اٹھایا اور فرمایا اللہ اپنے بندوں میں سے صرف اسی کو عذاب دے گا جو انتہائی سرکش اور سخت سرکشی کرنے والا ہو اور لا الٰہ الا اللہ کہنے سے انکار کرے۔ رواہ ابن ماجہ۔

## آخرکار مومن جنت میں جائے گا

حضرت ابوذر کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس بندے نے لا الٰہ الا اللہ (یعنی اقرار توحید) کیا پھر اسی حالت میں مر گیا وہ جنت میں ضرور داخل ہوگا میں نے عرض کیا خواہ اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو فرمایا خواہ اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو میں نے کہا خواہ اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو فرمایا خواہ اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو میں نے پھر کہا خواہ اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو تو فرمایا خواہ اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو وہ ضرور جنت میں جائے گا اگرچہ ابوذر کی ناک خاک آلود ہو۔ (متفق علیہ)

حضرت ابودرداء راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یہ آیت پڑھ رہے تھے ولمن خاف مقام ربہ جنتان میں نے عرض کیا (یا رسول اللہ) خواہ اس نے زنا کیا ہو یا چوری کی ہو حضور نے دوبارہ یہی آیت پڑھی میں نے دوبارہ یہی عرض کیا خواہ اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو حضور نے تیسری بار یہی آیت پڑھی جب میں نے تیسری بار کہا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اس نے زنا کیا ہو چوری کی ہو تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا خواہ ابودرداء کی ناک خاک آلود ہو جائے۔ (اس حدیث میں ولمن خاف کا مصداق جنت میں جانا ہے ... گناہ کرنے کے خلاف ہو جب بھی اللہ کا فیصلہ یہی ہوگا) رواہ احمد۔

ان حدیثوں کی بنا پر حضرت ... ثابت ہوتا ہے کہ آخرکار مومن جنت میں جائے گا۔

## ثواب کے لئے ایمان شرط ہے

اہل سنت و جماعت کا یہ مسلک حق ہے کہ کافر کی کوئی نیکی قابل قبول نہیں کیونکہ اس کی طاعت طاعت ہی نہیں ہے طاعت تو وہی ہے جو خالص اللہ کے لئے ہو اگر خلوص نہیں تو طاعت معصیت ہے ایمان تو ہر طاعت کی شرط ہے جس طرح وضو نماز کے لئے۔ رہا معصیت کا ارتکاب تو اس کا عذاب ضرور ہے لیکن یہ اللہ کی مشیت پر موقوف ہے چاہے تو معاف کر دے اور معاف کرنا نہ چاہے تو عذاب دے۔

**معافی کے ذرائع:** معافی توبہ سے ہو یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی شفاعت سے یا کسی ولی کی سفارش سے یا محض اللہ کی مہربانی اور رحمت سے۔ گناہگار مومن کو اگر عذاب بھی ہوگا تو وہ عذاب دوامی نہ ہوگا کیونکہ اللہ نے ہر نیکی کے ثواب کا وعدہ فرمایا ہے ارشاد فرمایا ہے فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ اور ایمان سب سے بڑی نیکی ہے (ہر نیکی کا مدار ایمان پر ہے) اور اللہ کے وعدہ کے خلاف ہونا ناممکن ہے اور مقام ثواب صرف جنت ہے لہٰذا ہر مومن جنت میں جائے گا خواہ سزا بھگتنے کے بعد یا بغیر عذاب کے۔

**گناہ! مومن اور کافر کے نزدیک:** مومن اپنے ایک گناہ کو بھی ایسا سمجھتا ہے جیسے وہ پہاڑ کے نیچے بیٹھا ہو اور پہاڑ اس پر گرنے والا ہو اور کافر اپنے گناہ کو ایسا سمجھتا ہے جیسے ناک پر مکھی بیٹھی ہو اور ہاتھ کے اشارے سے اس کو اڑا دے۔ رواہ البخاری۔ (تفسیر مظہری)

## سب سے زیادہ عظمت والی آیت

طبرانی میں حضرت ابن مسعود کا قول ہے کہ کتاب اللہ قرآن کریم کی

سب سے زیادہ حکمت والی آیت کون سی ہے اور نبی ﷺ نے فرمایا سب سے زیادہ جامع آیت یہ ہے ان اللہ یأمر بالعدل والاحسان پھر پوچھا سب سے زیادہ قرآن میں سب سے زیادہ امید دلانے والی آیت ومن یتق اللہ یجعل لہ مخرجا ویرزقہ من حیث لا یحتسب ہے انہی اللہ سے ڈرے اس کے لئے راستہ نکال دیتا ہے اور اسے ایسی جگہ سے روزی دیتا ہے جہاں کا اسے گمان بھی نہ ہو۔ حضرت ابن مسعودؓ نے یہ سن کر فرمایا کہ بیشک آپ سچے ہیں۔

## حضرت ابو ایوبؓ نے انتقال کے وقت

حضرت ابو ایوب انصاریؓ نے انتقال کے وقت فرمایا کہ میں نے ایک حدیث تم سے آج تک بیان نہیں کی تھی اب بیان کرتا ہوں میں نے رسول اللہ ﷺ سے سنا ہے آپ نے فرمایا اگر تم گناہ ہی نہ کرتے تو اللہ تعالیٰ ایسی قوم کو پیدا کرتا جو گناہ کرتی پھر اللہ ان کو بخشتا (صحیح مسلم وغیرہ)۔

## حضرت آدم علیہ السلام کی درخواست

حضرت قتادہ بن عمیر فرماتے ہیں کہ ابلیس ملعون نے کہا اے میرے رب تو نے مجھے آدم کی وجہ سے جنت سے نکالا ہے اور میں اس پر بغیر اس کے کہ تو مجھے اس پر غلبہ دے قابو نہیں پا سکتا۔ جناب باری نے فرمایا جا تو اس پر مسلط ہے۔ اس نے کہا اے اللہ مجھے کچھ اور بھی عطا فرما۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا جا اس کی جو اولاد ہوگی تو تیرے لئے بھی ہوگی۔ اس نے پھر التجا کی کہ باری تعالیٰ کچھ اور بھی مجھے زیادتی دے۔ پروردگار عالم نے فرمایا ان کے سینے میں تیرے لئے جگہ ہوگی اور تو ان کے جسم میں خون کی جگہ پھرے گا۔ پھر فرمایا کہ میں نے تجھے اور بھی دیا۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا تو ان پر اپنے سوار اور پیادے چڑھا لا اور ان کے مال و اولاد میں شریک ہو جا اور ان سے وعدے کر۔ شیطان کے وعدے سراسر دھوکے کی بات ہیں۔ اس وقت حضرت آدم علیہ السلام نے دعا کی کہ اے میرے رب تو نے اسے مجھ پر مسلط کر دیا ہے میں اس سے بغیر تیرے بچائے نہیں بچ سکتا۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا سنو تمہارے ہاں جو اولاد ہوگی میں اس کے ساتھ ایک محافظ مقرر کروں گا جو اسے شیطانی پھندوں سے محفوظ رکھے گا۔ حضرت آدمؑ نے اور زیادہ طلب کی اللہ تعالیٰ نے فرمایا ایک نیکی کو دس گنا کر دوں گا بلکہ اس سے بھی زیادہ۔ اور برائی ایک کی ایک ہی رہے گی یا معاف کر دوں گا۔ آپ نے پھر بھی اپنی چاہت ظاہر کی تو حق تعالیٰ نے فرمایا توبہ کا دروازہ تمہارے لئے اس وقت تک کھلا ہے جب تک جسم میں روح ہے۔ حضرت آدمؑ نے دعا کی کہ میرے پروردگار اب بس ہے۔ اللہ تعالیٰ نے یہی آیت یٰعبادی الذین اسرفوا علیٰ انفسہم الخ نازل فرمائی۔ (ابن ابی حاتم، تفسیر ابن کثیر)

گناہ بھی اسی کی طرف سے معاف کئے جاتے ہیں اور ان کی ترغیب کے لئے ارشاد فرمایا کہ تمہارا رب ہی تمہیں معاف فرماتا ہے کہ تم اس کی رحمت سے مایوس نہ ہو۔ بلکہ تمہیں چاہئے کہ تم توبہ کرو اور رحمت کی طرف دوڑو۔ آخرت کی زندگی سے پہلے پہلے توبہ کر لو تاکہ قرآن کے ساتھ رحمت کی طرف دوڑو اور رحمت خداوندی کی طرف پناہ لو۔ جس کا ذکر آگے یوں ہے۔

| |
|---|
| وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِن |
| اور تم اپنے رب کی طرف رجوع کرو اور اس کی فرمانبرداری کرو |
| قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا |
| پہلے اس سے کہ آئے تم پر عذاب پھر کوئی تمہاری مدد نہ کرے |
| تُنصَرُونَ |
| ۵۴ |

**توبہ کی ترغیب:** اس کے بعد اللہ تعالیٰ نے یہاں سے اصل مضمون کی طرف رجوع فرمایا ہے اور بندوں کو پیام دیا ہے کہ جو گناہ کرتے رہے ہیں وہ بھی اپنے رب کی طرف رجوع کریں اور اپنے گناہوں پر نادم ہو کر توبہ کریں اور اپنے رب کے احکام کے سامنے سر تسلیم خم کر دیں۔ نجات کا دار و مدار حقیقت میں اللہ تعالیٰ کے فضل ہی پر ہے مگر توبہ و انابت بھی اس کا ایک ذریعہ ہے اور توبہ کے بغیر نجات نہیں ہو سکتی۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ جب اللہ تعالیٰ نے اسلام کو غالب کیا تو جو کافر دشمنی میں لگے رہے تھے ان کو خیال ہوا کہ اب ہمارے گناہ معاف نہ ہوں گے کیونکہ ہم نے بڑی شرارتیں کی ہیں۔ مسلمان ہونے کے بعد بھی یہ خیال رہا کہ ان کی معافی نہ ہوگی۔ تب یہ آیت نازل ہوئی اور فرمایا کہ کوئی گناہ ایسا نہیں جس کو توبہ کے بعد اللہ تعالیٰ معاف نہ کرے۔ اس کی رحمت سے مایوس نہ ہو۔ جب عذاب سر پر آ جائے یا موت آ جائے تو پھر توبہ قبول نہیں ہوتی، اس وقت کی توبہ قبول نہیں۔ ...

**توبہ کی توفیق:** وانیبوا الی ربکم کے بعد واسلموا لہ فرمایا تاکہ اعمال کے لئے اخلاص پر تنبیہ ہو جائے۔ اور یہ بات کہ عذاب کا مقصد یہ ہے کہ بندہ یہ بات سمجھے کہ اس کی نجات کا مدار اس کی انابت پر ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ عمل کیا جائے یہ اللہ کا فضل ہے۔ انابت کی توفیق حاصل ہو... ...

| |
|---|
| وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن |
| اور چلو بہتر بات پر جو اتری تمہاری طرف تمہارے |

رَّبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ

[illegible]

بَغْتَةً وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝

[illegible]

[illegible]

أَن تَقُولَ نَفْسٌ يَا حَسْرَتَىٰ عَلَىٰ مَا

[illegible]

فَرَّطتُ فِي جَنبِ اللَّهِ وَإِن كُنتُ

[illegible]

لَمِنَ السَّاخِرِينَ ۝

[illegible]

[illegible]

[illegible]

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي

[illegible]

لَكُنتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝

[illegible]

[illegible]

[illegible]

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ

[illegible]

لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

[illegible]

[illegible]

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا

[illegible]

وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

اور غرور کیا اور تو تھا منکروں میں سے

**ہدایت کے مکمل اسباب موجود ہیں**

یہ بھی غلط کہتا ہے کہ اللہ نے اس کو ہدایت کی تھی اور اپنے پیغمبروں کو شرعاً ہدایت کے ساتھ بھیجا تھا مگر تو نے ان کی کوئی بات نہ سنی۔ جو کچھ کیا غرور اور تکبر سے اسے جھٹلاتا رہا۔ تیرا یہ قول محض تحکم ہے اور دعویٰ۔ اور بات یہ ہے کہ اللہ کو ازل سے معلوم تھا کہ تو ان کی آیات کا انکار کرے گا اور تکبر و سرکشی سے پیش آئے گا۔ جیسے ہدایت اور ضلالت کی اطاعت ہے اگر دوبارہ دنیا کی طرف لوٹایا جائے تب بھی اپنی حرکات سے باز نہیں آئے گا۔ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (انعام۔ رکوع ۳) ایسے لوگوں کی نسبت خدا کی عادت یہی ہے کہ ان کو ان کی احوال سے جھٹلادے۔ (تفسیر حقانی)

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى

اور قیامت کے دن تو دیکھے ان کو جو جھوٹ بولتے ہیں

اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ

اللہ پر کہ ان کے منہ ہوں سیاہ

**حق کو جھٹلانے کا انجام** جو اللہ کی طرف سے ہر سچی بات آتی ہے اس کا جھٹلانا یہی اللہ پر جھوٹ بولنا ہے کیونکہ جھٹلانے والا دعویٰ کرتا ہے کہ اللہ نے فلاں بات نہیں کہی حالانکہ درحقیقت میں کہی ہے۔ اس جھوٹ کی سزا یہ قیامت کے دن ان کے چہروں پر کالک ہوگی۔ (تفسیر عثمانی)

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝

کیا نہیں دوزخ میں ٹھکانا غرور والوں کا

**غرور کا انجام** (۱) پہلے کَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ میں دو چیزیں کا ذکر بیان ہوئی تھیں تکذیب جو متعلق ہے کذب پر اور تکبر۔ ان کا حال بیان کیا تھا یا کذب ، اور یہاں تک کہ کہا جائے گا کہ ان سے غرور و تکبر کا ٹھکانا دوزخ کے سوا کہیں نہیں۔ (تفسیر حقانی)

**تکبر کرنے والوں کا حشر:** ابن ابی حاتم کی مرفوع حدیث میں ہے کہ تکبر کرنے والوں کا حشر قیامت کے دن چیونٹیوں کی صورت میں ہوگا ہر چھوٹی سے چھوٹی مخلوق بھی انہیں روندتی جائے گی یہاں تک کہ جہنم کے جیل

خاصہ یعنی جو نہ کہ رہے ہیں گے جس کا نام بولس ہے جس کی آگ بہت تیز اور نہایت ہی مصیبت والی ہے جہنمیوں کے لہو پیپ اور گندگی انہیں پلائی جائے گی۔ (تفسیر ابن کثیر)

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫

اور بچا دے گا اللہ ان کو جو ڈرتے رہے ان کے بچاؤ کی جگہ

لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

نہ لگے ان کو برائی اور نہ وہ غمگین ہوں

**متقین کا انعام** یعنی اللہ تعالیٰ متقین کو ان کی ازلی فوز و سعادت کی بدولت کامیابی کے اس بلند مقام پر پہنچائے گا جہاں ہر قسم کی برائی سے محفوظ اور ہر طرح کے فکر و غم سے آزاد ہوں گے۔ (تفسیر عثمانی)

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۙ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ

اللہ بنانے والا ہے ہر چیز کا اور وہ ہر

شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ

چیز کا ذمہ لیتا ہے اسی کے پاس ہیں کنجیاں آسمانوں کی

وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

اور زمین کی اور جو منکر ہوئے ہیں اللہ کی باتوں سے

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

وہ لوگ جو ہیں وہی ہیں ٹوٹے میں پڑے

**تمام اختیارات اللہ کے پاس ہیں**

یعنی ہر چیز اسی نے پیدا کی اور پیدا کرنے کے بعد اس کی حفاظت کا ذمہ دار بھی وہی ہے اور زمین و آسمان کی تمام چیزوں میں تصرف و اختیار بھی اسی کو حاصل ہے کیونکہ سب خزانوں کی کنجیاں اسی کے ہاتھ ہیں۔ پھر ایسے خدا کو چھوڑ کر آدمی کہاں جائے چاہیے کہ اسی کے غضب سے ڈرے اور اسی کی رحمت کا امیدوار رہے کفر و ایمان اور جنت و دوزخ سب اسی کے زیر تصرف ہیں۔ اس کی باتوں سے منکر ہو کر آدمی کہیں کا نہیں۔ اس سے محروم ہو کر آدمی کس طرح کی امید رکھ سکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

یعنی حالانکہ جس قدر خیرات اور ایمان کا سب کچھ ہی حاصل ہے۔

وَكِيْلٌ [illegible]

**مقالید کی تفسیر** [illegible] المقالید السموت [illegible]

[illegible] الله اكبر و سبحان الله و بحمده و استغفر الله ولا حول ولا قوة الا بالله هو الاول والآخر والظاهر والباطن بيده الخير يحيي ويميت وهو على كل شيء قدير

حضرت [illegible] روایت [illegible]

(۱) [illegible]

(۲) [illegible]

(۳) [illegible]

(۴) [illegible]

(۵) [illegible] حضرت ابراہیم علیہ السلام کے ساتھ ہوگا۔

(۶) مرنے کے وقت [illegible]

[illegible]

[illegible] مطلب [illegible]

[illegible]

کافروں کے لئے خسارہ ہی ہے [illegible]

[illegible]

**اہل ایمان کی فلاح**

[illegible]

**آیت کا مطلب** [illegible]

[illegible]

**تیسرے کلمے کی فضیلت** [illegible]

سبحان الله و بحمده ولا اله الا الله والله اكبر ولا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم [illegible] مقاليد السموت والارض [illegible]

[illegible]

قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِّي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ

[illegible]

تمہاری عبادت کریں گے۔ اللہ تعالیٰ نے اس وقت یہ آیات نازل فرمائی کہ چھوڑ کر دوسروں کی پرستش کرے۔ دوسری حدیث میں ہے کہ جب قوم ہٹ دھرمی پر اتر آئی تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو اپنے آباؤ اجداد کی پرستش کی طرف بلایا تو اس کے جواب میں یہ آیات نازل ہوئیں۔ (تفسیر مظہری)

حضرت ابن عباس فرماتے ہیں مشرکین نے آپ سے کہا کہ آؤ تم ہمارے معبودوں کی پوجا کرو اور ہم تمہارے رب کی پرستش کریں گے تو آیت قل افغیر اللہ سے من الشاکرین تک نازل ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ

اور تم کو حکم ہو چکا ہے تم کو اور تجھ سے

مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ

اگلوں کو کہ اگر تو نے شریک مان لیا تو اکارت

عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

جائیں گے تیرے عمل اور تو ہوگا ٹوٹے میں پڑا

بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝

نہیں بلکہ اللہ ہی کو پوج اور رہ حق ماننے والوں میں

## فقط اللہ کی عبادت کرو

یہ بھی عقلی حیثیت سے دیکھا جائے کہ تم ان چیزوں کو پوجا کرو جن کا امکان بھی ممکن نہیں۔ تم کسی کے تصرفات کرتے ہو جبکہ صرف اللہ کا کام ہے وہ عبادت کا مستحق ہوا۔ تم کوئی ایسی چیز بتلا دو جو کسی حیثیت سے عبادت کی مستحق ہو تو تمہاری بات مانی جائے۔ جبکہ توحید کی صحت اور شرک کے بطلان پر متفق ہیں بلکہ صریح طور پر بھی بتلا دیا گیا ہے کہ (آپ سے پہلے) مشرک کے تمام اعمال اکارت ہیں اور شرک کا انجام خسارہ ہے جس کا خسران کے سوا کچھ نہیں۔ لہٰذا آپ ہی کا فرض ہے کہ وہ ہر طرف سے ہٹ کر ایک خدا کی عبادت کریں اور اسی کا شکر ادا کریں۔ ان کی عظمت و جلال کو سمجھے۔ ایسا حقیر مخلوق اور شریک ٹھہرانا اس کو کسی طرح بزرگی و برتری ماننے کے قابل ہو سکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

## شرک سے اعمال غارت ہو جاتے ہیں

اور آپ کی طرف بھی اور جو پیغمبر آپ سے پہلے گزرے ہیں ان کی طرف بھی یہ وحی بھیجی جا چکی ہے کہ (اے عام مخاطب) اگر تو شرک کرے گا تو تیرا کیا کرایا سب غارت ہو جائے گا کیونکہ ہر فرض ہے اس سے مراد یہ ہے کہ دین میں امید کرنا اور حسب کام اور پروردگار کا شکر ہونا۔

## مرتد ہونا نیکیوں کو اکارت کر دیتا ہے

اس آیت کی روشنی میں ہم کہتے ہیں کہ مرتد ہو جانے سے تمام گزشتہ نیکیوں کو اکارت کر دیتا ہے جس طرح اسلام تمام سابق گناہوں کو ختم کر دیتا ہے اسی طرح ارتداد سابقہ تمام نیکیوں کو اکارت کر دیتا ہے۔

امام ابو حنیفہ کا قول ہے کہ مرتد ہونے کے بعد مسلمان ہو جائے اور ابھی وقت ظہر باقی ہو اور اس وقت باقی ہے تو مرتد ہونے سے پہلے اگرچہ ظہر کی نماز پڑھ چکا ہو پھر بھی دوبارہ اس وقت کی نماز پڑھنی لازم ہے (سابق نماز کا لعدم ہو گئی) اسی طرح اگر پہلے حج فرض کر چکا ہے پھر مرتد ہو گیا اور دوبارہ پھر مسلمان ہو گیا تو اس کو دوبارہ حج فرض ہو گا کیونکہ کل اعمال اکارت ہو چکے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۖ

اور نہیں سمجھے اللہ کو جتنا کچھ وہ ہے

## مشرکین نے اللہ کی قدر نہیں کی

یعنی ان مشرکین نے اس کی عظمت و جلال اور بزرگی و برتری کو جیسا کہ سمجھنا چاہیے تھا نہ سمجھا اور جیسا اس کا حق ہے ایسا ایک بندہ تو کیسا عاجز سمجھنا چاہیے تھا اس کی شان اس کی قدرت اور اس کی قوت کا احساس کرتے تو کیا ایک بے حقیقت مخلوق کو کبھی تک اس کا شریک ٹھہرا سکتے ہیں۔ حاشا وکلا۔ آگے اس کی بعض شان عظمت و جلال کا بیان ہے۔ (تفسیر عثمانی)

یعنی ان لوگوں نے عظمت الٰہی کو ویسا نہیں جانا جیسا عظمت کا حق تھا (جیسی عظمت ہونی چاہیے تھی) کہ دوسروں کو اس کا شریک قرار دیدیا اور اس کی صفت اور اس کو مخلوق کی شان سے کمتر سمجھتے تو اسی کی اسی طرح عبادت کی جس طرح کرنی چاہیے تھی اور اس کی نعمتوں کا شکر ادا کیا ہوتا جیسا کرنا چاہیے تھا مرنے کے بعد دوبارہ زندگی کا انکار کر دیا۔ (تفسیر مظہری)

وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

اور زمین ساری ایک مٹھی ہے اس کی دن قیامت کے

وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَانَهُ

اور آسمان لپٹے ہوئے ہوں اس کے داہنے ہاتھ میں وہ پاک ہے

وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

اور بہت اوپر ہے اس سے کہ شریک بتلاتے ہیں

**عظمت شان الٰہی:** [illegible] قیامت [illegible] کی طرح [illegible] اگلی [illegible] تحریف [illegible] ہے۔ [illegible] (تفسیر) مطویات بیمینہ کے متعلق سورۂ انبیاء کی آیت [illegible] استفادہ [illegible] متشابہات میں سے [illegible] ایمان رکھنا واجب ہے [illegible] ہیں [illegible] تشبیہ، تجسیم [illegible] لگی ہوئی ہے۔ (تفسیر [illegible])

**آیت کی مراد:** یہ آیت متشابہات میں سے ہے جس کی حقیقی مراد اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا [illegible] مقصود [illegible] اللہ کی عظمت و جلال اور قدرت کاملہ پر تنبیہ کرنا ہے تاکہ وہ عظیم الشان [illegible] انسانی فہم [illegible] ہے اللہ کے لئے آسمان [illegible] اس کی قدرت [illegible] جہاں [illegible] نہیں۔

**آیت کا شان نزول:** [illegible] جب [illegible] یہودی عالم [illegible] کی تصدیق کر دی [illegible] تصدیق [illegible] کی تکذیب نہیں [illegible] صحیحین میں حضرت [illegible] مسعود کی روایت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا [illegible] قیامت کے دن [illegible] ایک انگلی پر [illegible] ایک انگلی پر پہاڑوں [illegible] ایک انگلی پر اور پانی اور [illegible] ایک انگلی پر [illegible] باقی مخلوق کو ایک انگلی پر [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] تصدیق کے لئے [illegible] پھر آپ نے یہ آیت پڑھی وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ۔

صحیحین میں حضرت ابو ہریرہ [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ قیامت کے دن اللہ زمین کو [illegible] آسمان کو لپیٹ کر اپنے داہنے ہاتھ میں لے کر فرمائے گا [illegible] بادشاہ ہوں [illegible] زمین کے بادشاہ کہاں ہیں۔

مسلم نے حضرت عبداللہ بن عمر [illegible] سے روایت کیا ہے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] آسمانوں کو لپیٹ کر [illegible] ہاتھ میں [illegible] طاقت والے کہاں ہیں [illegible]

[illegible] والے کہاں ہیں [illegible] کو لپیٹ [illegible] اپنے [illegible] ایک [illegible] بادشاہ کہاں ہیں [illegible] طاقت والے کہاں ہیں [illegible] حضرت [illegible] سے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] قیامت کا دن ہوگا [illegible] [illegible] ایک [illegible] اللہ [illegible] ہے [illegible] ہوا [illegible] (ترمذی) [illegible] کہا ہے۔

[illegible] کسی [illegible] آسمان [illegible] ہے۔ [illegible] (آیت) وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ [illegible] مخلوقات [illegible] صفات [illegible] یہ آیت وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ نازل ہوئی۔

ابن المنذر نے [illegible] بیان کیا ہے کہ جب آیت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] اس پر آیت وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ نازل ہوئی۔

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى [illegible] شرک [illegible] مطلب [illegible] طرف [illegible] ہے۔ [illegible]

## زمین و آسمان کو اپنے ہاتھ میں لینے کی کیفیت کا بیان

[illegible] آیت کی تلاوت [illegible] آپ [illegible] تعالیٰ [illegible] آپ [illegible] ایک [illegible] اس [illegible]

شَآءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا

[illegible]

**هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ**

[illegible]

[illegible]

**سورۃ کی آخری آیات کی فضیلت** [illegible]

[illegible]

**وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى**

[illegible]

**السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ**

[illegible]

علاماتِ قیامت

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ

الْكِتَابُ وَجِيءَ بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ

وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

یومِ قیامت

[illegible]

پیغمبروں کی شہادت [illegible]

[illegible]

امت محمدیہ [illegible]

[illegible]

**وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ**

[illegible]

## عمل کے مطابق بدلہ ملے گا

[illegible]

**وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ**

[illegible]

[illegible]

**وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا**

[illegible]

## کافروں کی ذلت

[illegible]

**حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا**

[illegible]

[illegible]

جنت کے دروازے [illegible]

**وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا**

[illegible]

[illegible]

**أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ**

[illegible]

[illegible]

يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُونَكُمْ

لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ

كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا

فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا

جنتیوں کا استقبال

حَتّٰى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا

وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ

فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ

[illegible]

(یعنی) ... [illegible]

[illegible] ... کُتِبَ عَلَیْکُمْ جَنّٰتٌ ... [illegible]

حضرت علی ... [illegible]

[illegible]

کَذٰلِکَ ... [illegible]

[illegible]

## وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهٗ

[illegible]

وقالوا الحمد للہ ... [illegible]

## وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ

[illegible]

وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ ... [illegible]

## نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ

[illegible]

[illegible]

## جنت میں اہل جنت کی آپس میں

## ملاقات اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت

نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ... [illegible]

[illegible]

## فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ

[illegible]

حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ

گھیرے ہوئے عرش کے گرد پاکی بولتے ہوئے اپنے رب کی حمد کے ساتھ

رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ

اور فیصلہ ہوا ان میں انصاف کا اور یہی بات کہتے ہیں کہ سب خوبی ہے

لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

اللہ کو جو رب ہے سارے جہان کا

## عدالتِ الٰہی کا منظر

جب حق تعالیٰ حساب کتاب کے لئے نزول اجلال فرمائیں گے۔ اس وقت فرشتے عرش کے گرد حلقہ باندھے اپنے رب کی تسبیح و تحمید کرتے ہوں گے اور تمام بندوں میں ٹھیک ٹھیک انصاف کا فیصلہ کر دیا جائے گا جس پر ہر طرف سے جوش و خروش کے ساتھ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ کا نعرہ بلند ہوگا یعنی ساری خوبیاں اس خدا کو زیبا ہیں جو تمام عالم کا پروردگار ہے (جس نے سارے جہان کا ایسا عمدہ فیصلہ کیا) اسی نعرہ تحسین پر دربار برخاست ہو جائے گا۔ عموماً مفسرین نے آیت کا یہی مطلب بیان کیا ہے لیکن حضرت شاہ صاحبؒ نے آیت کو دوسرے طرز پر حمل کیا اور قُضِيَ بَيْنَهُمْ کی ضمیر ملائکہ کی طرف راجع کی ہے۔ وہ لکھتے ہیں کہ فرشتوں میں فیصلہ یہ کہ ہر ایک فرشتہ (ملاء اعلیٰ میں) بیچ کا حصہ سے ایک تدبیر بولتا ہے (کہ جس کو اختصام الملاء الاعلیٰ فرمایا، وتفصیلہ فی تفسیر...) پھر اللہ تعالیٰ ایک بات جاری کرتے ہیں وہی ہوتی ہے۔ حکمت کے موافق یہ ماجرا اب بھی ہے اور قیامت میں بھی۔ واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔ تم سورۃ الزمر بعون اللہ وتوفیقہ وللہ الحمد (تفسیر عثمانی)

## تخلیق کائنات اور انتہائے امور میں ربط

قتادہ بیان کرتے ہیں کہ حق تعالیٰ نے کائنات کی تخلیق ابتداء حمد سے فرمائی، جیسے کہ فرمان ہے۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ تو مناسب ہوا کہ تمام مخلوقات کا انجام اور فیصلہ اور ان کے امور کی انتہا بھی حمد خداوندی ہی ہوگی۔ (معارف کاندھلوی)

الحمد للہ سورۃ الزمر ختم ہوئی۔

المؤمن — جس نے عذاب میں اس ایمان کی ان کی تصدیق کی ... کے بڑے فضیلت والا ایمان والا یعنی مخلص ہوگا (علامہ ابن کثیر)

(٤٠) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ ... وَهِيَ خَمْسٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

سورۃ المؤمن مکہ میں نازل ہوئی اور اس میں پچاسی آیتیں اور نو رکوع ہیں

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے)

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ

اتارنا کتاب کا اللہ سے ہے

الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ

جو زبردست ہے خبردار گناہ بخشنے والا اور توبہ قبول

التَّوْبِ

کرنے والا ۱۲

توبہ سچی توبہ قبول کرکے گناہوں سے ایسا پاک صاف کر دیتا ہے گویا کبھی گناہ کیا ہی نہ تھا اور مزید برآں توبہ کو مستقل طاعت قرار دے کر اس پر اجر عنایت فرماتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

سورۂ مومن مکی سورت ہے۔ اس سورت کو سورۂ غافر بھی کہتے ہیں۔ قرطبی کہتے ہیں کہ یہ سورت مکہ میں نازل ہوئی یہی قول عطا، جابر اور عکرمہ کا ہے۔ قتادہ کا قول ہے اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ دو آیتیں مدینہ میں نازل ہوئیں اس سورت میں پچاسی آیات اور نو رکوع ہیں۔

## سورۂ غافر کی فضیلت

بیہقی نے یہ حدیث نقل کی ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آل حم یعنی جو سورتیں حم سے شروع ہوتی ہیں وہ سات ہیں اور جہنم کے بھی سات دروازے ہیں۔ ہر دروازہ پر ایک حم اپنے تلاوت کرنے والے کو جہنم سے بچانے والی ہوگی۔

ربط: اس سے قبل سورۂ زمر کی ابتداء وحی الٰہی اور قرآن کریم کی عظمت کے بیان سے تھی اور انتہا اس مضمون پر تھی کہ حق تعالیٰ اپنی مخلوقات کے درمیان حق فیصلہ اور عدل و انصاف فرمائیں گے حق تعالیٰ کی شان عزت و کبریائی اور علم و حکمت پر مبنی ہے تو یہ سورت حق تعالیٰ نے ایسے ہی اوصاف عظیمہ کے ذکر سے شروع ہوتی ہے جو ما سبق کا تتمہ ہے۔ (معارف کاندھلوی)

[illegible]

حٰمٓ [illegible]

[illegible]

## آیت کی تفسیر

[illegible]

[illegible]

## ان آیات کے ذریعہ لوگوں کی اصلاح

[illegible] غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ

[illegible]

[illegible] تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ [illegible]

[illegible]

لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ

[illegible]

مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللّٰهِ إِلَّا الَّذِينَ

كَفَرُوا

[illegible]

شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ

[illegible]

[illegible]

فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ

[illegible]

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ

[illegible]

مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ

[illegible]

بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ

[illegible]

لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ

[illegible]

كَانَ عِقَابِ

[illegible]

[illegible]

وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ

[illegible]

كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ

[illegible]

[illegible]

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ

[illegible]

يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ

پاکی بولتے ہیں اپنے رب کی خوبیاں اور اس پر یقین رکھتے ہیں

وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا

اور گناہ بخشواتے ہیں ایمان والوں کے ۷۲

## مومنین کا شرف

گذشتہ آیات میں مجرمین و منکرین کا حال ذکر بیان ہوا تھا یہاں ان کے مقابل مومنین و متقین کا فضل و شرف بیان کرتے ہیں۔ یعنی عرش عظیم کو اٹھانے والے، اس کے گرد طواف کرنے والے، جو تمام فرشتوں کی نسبت حق تعالیٰ کی تسبیح و تحمید اور مقربین بارگاہ ہونے کی وجہ سے اول درجہ کا ایمان و یقین رکھتے ہیں، وہ بھی اپنے پروردگار سے مومنین کے لئے استغفار کرتے ہیں۔ سبحان اللہ! اس عزت افزائی اور شرف و احترام کا کیا ٹھکانا ہے کہ فرش خاک پر بسنے والے مومنین سے جو خطائیں اور لغزشیں ہو گئیں، وہ عرش کے حامل فرشتے بارگاہ رب العزت میں ان کے لئے معافی چاہیں اور جن کی شان میں وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ آیا ہے، تو حق تعالیٰ کی طرف سے اس کام پر مامور ہوں گے۔ (تفسیر عثمانی)

**عرش کے حامل فرشتے:** علماء بیان فرماتے ہیں کہ حاملین عرش فرشتوں اور ان کے گرد کے فرشتوں کو کروبین کہا جاتا ہے۔ بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ عرش کے حاملین چار فرشتے ہیں۔ ایسے فرشتے جن کی عظمت کا ہم تصور بھی نہیں کر سکتے۔ [illegible] تو کیا تعجب ہے کہ فرشتوں کی عظمت ایسی ہو کہ وہ عرش خداوندی کے حامل بن جائیں۔ اس روایت سے حاملین عرش کا عدد چار معلوم ہوا لیکن قرآن کریم کی آیت وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ بتاتی ہے کہ قیامت کے روز عرش کے اٹھانے والے فرشتے آٹھ ہوں گے۔ بظاہر یہ صورت اس امر پر دلالت کرتی ہے کہ قیامت سے پہلے ان کی تعداد چار ہے بعد کو آٹھ ہو جائے گی۔

شہر بن حوشب بیان کرتے ہیں کہ حاملین عرش آٹھ ہیں، ان میں سے چار کی تسبیح تو یہ ہوتی ہے۔ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلَىٰ حِلْمِكَ بَعْدَ عِلْمِكَ۔ اے اللہ تیری پاکی ہے حمد و ثنا کے ساتھ اور تیرے ہی واسطے حمد ہے تیرے اس حلم پر جو تیرے علم کے بعد ہے۔ اور چار کی تسبیح اس طرح ہوتی ہے سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلَىٰ عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ۔ یعنی تیری حمد و ثنا ہے تجھ ہی کو معاف کر دینے پر باوجود تیری قدرت کے۔ (معارف القرآن)

مِنْ حَوْلَهُ یعنی عرش کا طواف کرنے والے۔ حاملین عرش اور طواف کنندگان عرش تمام ملائکہ سے بہتر ہیں انہیں کروبین کہا جاتا ہے۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا حاملین عرش کے قدم سے ٹخنے تک پانچ سو سال کی مسافت کے برابر فاصلہ ہے۔ [illegible] کی روایت میں آیا ہے کہ ان کے پاؤں زمینوں کی تحتانی حد تک قائم ہیں اور آسمان ان کی کمر تک آتے ہیں۔ (شعبی) [illegible] کہتے ہیں۔ سُبْحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوتِ سُبْحَانَ ذِي الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوتِ سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ۔ میسرہ بن حبیب نے کہا ان کے قدم سب سے نچلی زمین میں ہیں اور ان کے سر عرش کو پھاڑے ہوئے ہیں (یعنی عرش سے اوپر ہیں) اور سب خشوع کی حالت میں ہیں نگاہ اوپر نہیں اٹھاتے اور ساتویں آسمان والوں سے زیادہ (اللہ کی ہیبت و جلال سے) خوف زدہ ہیں اور ساتویں آسمان والے اپنے نیچے والے آسمان والوں سے زیادہ خوف زدہ ہیں اور چھٹے آسمان والے اپنے (نیچے) والے آسمان والوں کے مقابلہ میں زیادہ خائف ہیں۔ مجاہد نے کہا ملائکہ اور عرش کے درمیان نور کے ستر پردے ہیں۔ محمد بن منکدر نے حضرت جابر کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا مجھے اجازت دی گئی ہے کہ حاملین عرش میں سے ایک فرشتہ کی (کیفیت) حالت بیان کروں، اس کے کان کی لو سے کاندھے تک سات سو برس کی راہ کے برابر فاصلہ ہے۔ رواہ ابو داؤد والضیاء بسند صحیح۔

حضرت جعفر بن محمد نے اپنے والد کے حوالہ سے دادا کا قول نقل کیا ہے کہ عرش کے پایوں میں سے ایک پایہ کی دوسرے پایہ سے مسافت اتنی ہے جتنی تیز رفتار اڑنے والے پرندے کی [illegible] ہزار برس کی راہ۔ عرش کو [illegible] ستر ہزار رنگ کے نور کے لباس پہنائے جاتے ہیں، کوئی مخلوق اس کی طرف نہیں دیکھ سکتی۔ اللہ نے تمام مخلوق کو عرش کے اندر ایسا رکھا ہے جیسے بیابان میں [illegible] کے اندر کوئی چھلا پڑا ہو۔ مجاہد نے کہا ساتویں آسمان اور عرش کے درمیان ستر حجاب (پردے) ہیں، ایک نور کا حجاب پھر تاریکی کا حجاب پھر نور کا حجاب پھر تاریکی کا حجاب۔ وہب بن منبہ نے کہا عرش کے گرد فرشتوں کی ستر ہزار قطاریں ہیں قطار در قطار ایک کے پیچھے ایک، سب عرش کا طواف کر رہے ہیں، [illegible] سامنے آتے ہیں، جب ایک دوسرے کے سامنے آتا ہے تو ایک لا الٰہ الا اللہ کہتا ہے اور دوسرا اللہ اکبر کہتا ہے۔ ان سے پیچھے صف باندھے ہوئے جب اگلی صف والوں کی تہلیل و تکبیر کی آواز سنائی دیتی ہے تو وہ بلند آواز سے کہتے ہیں۔ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ مَا أَعْظَمَكَ وَأَجَلَّكَ أَنْتَ اللهُ لَا إِلٰهَ غَيْرُكَ أَنْتَ الْأَكْبَرُ الْخَلْقُ كُلُّهُمْ رَاجِعُونَ إِلَيْكَ [illegible] سب کے سب تیری ہی طرف لوٹنے والے ہیں اور [illegible]

ہوتے ہیں، ان کی گردنیں جھکی ہوئی ہیں، یہ آسمان سے نیچے لٹکی ہوئی ہیں اور ان کے سینے پاؤں تلے ہیں، اور یہ ان کے مابین کی مسافت پانچ سو سال کی ہے، اور ایک تفسیر میں ہے کہ حاملین عرش ان میں سے ہر فرشتے کے دونوں بازوؤں کے درمیان کی مسافت سات سو برس کی راہ ہے۔ اور ان کے پاؤں ساتویں زمین کی مسافت کے برابر نیچے لٹکے ہوئے ہیں، اور عرش اور ان کے درمیان ستر حجاب آگ کے ستر حجاب اندھیرے کے ستر حجاب نور کے ستر حجاب سفید موتی کے ستر حجاب یاقوت سرخ کے ستر حجاب زمرد کے ستر حجاب برف کے ستر حجاب پانی کے اور اس کے سوا اور بہت سے حائل ہیں اور پھر ان کی تعداد اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا۔ حاملین عرش اور حوالی عرش والوں کی صورتیں مختلف ہیں، کسی کا چہرہ بیل کی شکل کا کسی کا گدھ کا اور کسی کا آدمی کے جیسا ہے جو ایک کے چار چار ہیں، جب وہ کھڑے ہوتے ہیں تو عرش کی طرف نگاہ اٹھاتے ہیں اور وہ بے ہوش ہو جاتے ہیں۔ وہ ہیبت الٰہی (جلال) کی وجہ سے کانپتے رہتے ہیں اور وہ تسبیح و تحمید و تکبیر کے سوا کوئی کام نہیں کرتے۔

**عرش کی بناوٹ:** بہت سے علماء کے نزدیک عرش سرخ یاقوت سے بنا ہے جس کا قطر اتنا بڑا ہے کہ وہ پچاس ہزار سال کی مسافت ہے، اسی طرح اس کا ارتفاع ساتویں زمین سے پچاس ہزار سال کی مسافت ہے۔ (تفسیر مظہری)

**ویؤمنون به** فرشتے دل سے مانتے ہیں کہ اللہ بے عیب ہے اور بے نظیر ہے، تمام چیزوں کا خالق ہے، ایک ہے بے نیاز ہے، نہ کسی کا باپ ہے نہ بیٹا اس کا کوئی ہمسر نہیں۔

**فرشتوں کی فضیلت:** اللہ نے ملائکہ کی فضیلت اور شرف کے اظہار کے لئے ان کے مومن ہونے کی صراحت کی اور اس طرف اشارہ فرمایا کہ بندگی عاجزی اور ایمان بالغیب کے لحاظ سے فرشتے بھی دوسری مخلوق کی طرح ہیں، وہ جیسے کہتے ہیں ایمان کا قول مقبول نہیں اس لئے کہ قرآن ان کا مقابلہ ہے صحیح نہیں کہ ملائکہ کی تجلیاں ہیں اس سے مراد جسم کے قول کی تردید ہوگی جو اللہ کا جسم قرار دیتے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

**غائبانہ دعاء:** صحیح مسلم شریف میں ہے کہ جب مسلمان اپنے بھائی مسلمان کے لئے اس کی غیر حاضری میں دعا کرتا ہے تو فرشتہ اس کی دعا پر آمین کہتا ہے اور اس کے لئے دعا کرتا ہے کہ خدا تجھے بھی یہی دے جو تو اس مسلمان کے لئے مانگ رہا ہے۔

**امیہ بن ابی الصلت کے اشعار:** مسند احمد میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے امیہ بن ابی الصلت کے بعض اشعار کی تصدیق کی جیسے یہ شعر ہے

وَعَلٰى ثَوْرٌ تَحْتَ رِجْلِ يَمِينِهِ　　وَالنَّسْرُ لِلْأُخْرٰى وَلَيْثٌ مُرْصَدُ

یعنی حاملان عرش چار فرشتے ہیں، ایک شکل بیل، دوسری گدھ، تیسری شیر، آپ نے فرمایا صحیح ہے، پھر اس نے کہا:

وَالشَّمْسُ تَطْلُعُ كُلَّ آخِرِ لَيْلَةٍ　　حَمْرَاءَ يُصْبِحُ لَوْنُهَا يَتَوَرَّدُ

تَأْبٰى فَمَا تَطْلُعُ لَنَا فِي رِسْلِهَا　　إِلَّا مُعَذَّبَةً وَإِلَّا تُجْلَدُ

یعنی سورج ہر رات کے آخر میں سرخ طلوع ہوتا ہے، پھر اس کا رنگ گلابی ہو جاتا ہے، اپنی رفتار سے نہیں نکلتا مگر عذاب دیا جاتا ہے، آپ نے فرمایا سچ ہے۔ اس کی سند بھی صحیح ہے اور اس سے صاف ثابت ہے کہ حاملین عرش اس وقت چار فرشتے ہیں، قیامت کے دن عرش کو آٹھ فرشتے اٹھائیں گے جیسا کہ قرآن مجید میں ہے ویحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية۔

| رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا |
|---|
| اے پروردگار ہمارے ہر چیز سمائی ہوئی ہے تیری بخشش اور خبر میں |
| فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ |
| سو معاف کر ان کو جو توبہ کریں اور چلیں تیری راہ پر |
| وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ |
| اور بچا ان کو آگ کے عذاب سے |

**رحمت و بخشش:** یہ فرشتے مغفرت کی سفارش کی تمہید کے طور پر عرض کرتے ہیں کہ اے ہمارے پروردگار تیرے علم اور رحمت ہر چیز پر حاوی ہے۔ پس جو کوئی تیرے علم میں سچے دل سے توبہ کرے اور تیری طرف رجوع ہو، تیری راہ پر چلے تو ان کو بخش دے، ان کے گناہوں اور خطاؤں کی معافی دے، یہ آپ کی رحمت سے ان کو معاف فرما دے۔ وہ ساتھ ساتھ یہ بھی بتا دیا کہ مومنین کے ساتھ محبت اور تعلق ہے کیونکہ مسلمان کو معلوم ہے کہ اہل ایمان کو سب سے پہلے ایمان اور تقویٰ ہی ایک دوسرے کی طرف سے ملاتا ہے۔ بعض محققین فرماتے ہیں کہ یہی مومنین کی دعا کرنے والے لفظ ان کے ساتھ ملائکہ کا تعلق اور پیوستگی ہے۔ (تفسیر مظہری)

| رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي |
|---|
| اے رب ہمارے اور داخل کر ان کو سدا بسنے کے باغوں میں جن کا |
| وَعَدتَّهُمْ وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ |
| وعدہ کیا تو نے ان سے اور جو کوئی نیک ہو ان کے باپوں میں |

وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

## عزیز و اقارب کی وجہ سے نجات

## عزیز و اقارب کی وجہ سے نجات

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۚ وَمَن تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

## برائیوں سے حفاظت اللہ کا فضل ہے

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِن مَّقْتِكُمْ أَنفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ

[illegible]

قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا

[illegible]

اثْنَتَيْنِ

[illegible]

## دو موتیں دو حیاتیں:

[illegible] كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ [illegible]

فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا

[illegible]

[illegible]

**منکرین کا اقرار:** فَاعْتَرَفْنَا [illegible]

فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ

[illegible]

حسرت [illegible]

[illegible]

**کافروں کی حسرت** [illegible]

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ

[illegible]

وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ

[illegible]

الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ

[illegible]

[illegible]

ذٰلِكُمْ [illegible] لا اله الا الله [illegible] وَحْدَهٗ [illegible]

[illegible]

فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ [illegible]

الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ [illegible]

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ

وہی ہے جو تم کو دکھاتا ہے اپنی نشانیاں اور اتارتا ہے تمہارے

مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن

واسطے آسمان سے روزی اور سوچ وہی کرتا ہے

يُنِيبُ ﴿١٣﴾

جو رجوع رکھتا ہے ☆

## عظمت و وحدانیت کی نشانی

یعنی اس کی عظمت و وحدانیت کی نشانیاں ہر چیز میں ظاہر ہیں۔ ایک اپنی روزی ہی کے مسئلہ کو لے لو، دیکھ لے جس کا سامان آسمان سے اتارا جاتا ہے تو سب کچھ سمجھ میں آ جائے لیکن جب آدمی عقل و فکر سے کام ہی نہ لے تو کیا خاک سمجھ حاصل ہو سکتی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ

سو پکارو اللہ کو خالص کر کر اس کے واسطے بندگی اور پڑے

كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٤﴾

برا مانیں منکر ☆

## کافروں کی پرواہ نہ کرو

یعنی بندوں کو چاہئے کہ ہر طرف سے ہٹ کر ایک خدا کی طرف رجوع ہوں اور اسی کی بندگی میں کسی کو شریک نہ کریں۔ بے شک مخلص بندوں کے اس طرز عمل سے کافر و مشرک ناک بھوں چڑھائیں گے کہ سارے معبودوں کو رد کر کے صرف ایک ہی خدا بنا دیا؟ مگر پکا موحد وہی ہے جو مشرکین کے بگڑنے اور سارے جہان کے جلنے کڑھنے کی ذرا پروا نہ کرے۔ (تفسیر عثمانی)

## فرض نماز کے بعد کی دعاء

حضرت عبداللہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ہر فرض نماز کے سلام کے بعد پڑھتے تھے۔ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ۔ اور فرماتے تھے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بھی ہر نماز کے بعد انہیں پڑھا کرتے تھے۔

(مسند احمد) یہ حدیث مسلم، ابوداؤد، نسائی وغیرہ میں بھی ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي

وہی ہے اونچے درجوں والا مالک عرش کا اتارتا ہے

الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ

بھید کی بات اپنے حکم سے جس پر چاہے اپنے

عِبَادِهِ

بندوں میں سے ☆

"بھید کی بات" سے وحی مراد ہے جو اول انبیاء علیہم السلام پر اترتی ہے اور ان کے ذریعہ سے دوسرے بندوں کو پہنچائی جاتی ہے چنانچہ قیامت تک اسی طرح پہنچتی رہے گی۔ (تفسیر عثمانی)

## ہر ضرورت کا کفیل اللہ تعالیٰ ہی ہے

مخلوق کی احتیاجات مادی اور احتیاجات روحانی ہر قسم کی احتیاج اسی کی بارگاہ عالیہ سے پوری ہوتی ہے۔ رزق کے ذریعہ مادی احتیاج پوری فرماتا ہے اور وحی نازل فرما کر روحانی احتیاج کو پورا فرماتا ہے تو اس پہلو کے لحاظ سے يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ فرما کر نظام تشریع اور وحی الٰہی کو بیان فرما دیا گیا کہ جس طرح اللہ رب العزت رزق پیدا فرما کر مخلوق کو مادی حاجتیں پوری فرماتا ہے اسی طرح وحی نازل فرما کر بندوں کی روحانی حاجتیں بھی پوری کی جاتی ہیں۔ تو اس ذات خداوندی کا کہ ایسی بلند و بالا صفات سے متصف ہو اور ایسی شان عظمت والا ہے یہ تقاضا ہے کہ جب کل کائنات اسی کی محتاج ہے۔ مادی احتیاج کے لحاظ سے بھی اور روحانی احتیاج کے لحاظ سے بھی تو لامحالہ وہی اس کے مستحق ہیں وہ یکتا ہے اس کے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں۔

روح سے مراد: روح سے مراد وحی الٰہی ہے جیسے آیت مبارکہ وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا میں وحی کو روح کے عنوان سے تعبیر کیا ہے اور بعض نے مراد لی ہے جبریل امین کو جیسا کہ ارشاد ہے نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ عَلَىٰ قَلْبِكَ جس میں حضرت جبرائیل امین کا ذکر اترنے والا کیا گیا ہے۔ (معارف کاندھلوی)

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ کا معنی: درجات سے مراد بعض حضرات نے صفات فرمایا ہے یعنی وہ رفیع الصفات ہے۔ یعنی اس کی صفات کمال سب سے زیادہ رفیع الشان ہیں۔ حضرت مجاہد نے اس کو

[illegible]

## يَوْمَ التَّلَاقِ

[illegible]

## يَوْمَ هُمْ بَارِزُوْنَ

[illegible]

## لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ

[illegible]

## لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ

[illegible]

## اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

[illegible]

## لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ

[illegible]

[illegible] لمن الملک الیوم آج کس کی حکومت ہے [illegible] للہ الواحد القہار [illegible]

[illegible]

**سوال اور جواب:** [illegible]

[illegible] لمن الملک الیوم [illegible]

[illegible] للہ الواحد القہار [illegible]

**جبابرہ متکبر کہاں ہیں:** [illegible]

[illegible]

[illegible] لاظلم الیوم [illegible]

[illegible]

**آج سب کا حساب:**

ان اللہ سریع الحساب [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ |
| اور ان کو قریب آنے والے دن سے ڈرائیے جس وقت دل [illegible] |

| |
|---|
| لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ |
| [illegible] |

**قیامت کی دہشت**

[illegible]

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ |
| [illegible] |
| يُطَاعُ ۚ |
| [illegible] |

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي |
| [illegible] |
| الصُّدُورُ ۝ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ |
| [illegible] |

[illegible]

[illegible]

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا

[illegible]

يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ

[illegible]

السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

[illegible]

فیصلہ کا اختیار [illegible]

إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ [illegible]

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا

[illegible]

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن

[illegible]

قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

[illegible]

وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ

[illegible]

فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُم

[illegible]

مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ

[illegible]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم

[illegible]

بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ

[illegible]

إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ

[illegible]

اللہ کا عذاب [illegible]

[illegible]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ

[illegible]

مُّبِينٍ

[illegible]

معجزات موسیٰ [illegible]

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ

[illegible]

فرعون، قارون اور ہامان۔ ہامان وزیر تھا فرعون کا اور قارون بنی اسرائیل میں سب سے بڑا مالدار اور تاجر تھا جو موسیٰ علیہ السلام کے خلاف فرعون کی مرضی پر چلتا تھا۔ پہلے اس کا قصہ گزر چکا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۞ |
| پھر کہنے لگے یہ جادوگر ہے جھوٹا ☆ |

☆ یعنی جادوگر ہے کہ معجزات دکھاتا ہے اور جھوٹا ہے کہ دعوے رسالت کرتا ہے۔ یعنی بعض نے کہا ہوگا اور دوسروں نے اس کی تصدیق کی ہوگی۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا |
| پھر جب پہنچا ان کے پاس لے کر سچی بات ہمارے پاس سے |
| قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ |
| بولے مار ڈالو بیٹے ان کے جو یقین لائے ہیں اس کے ساتھ |
| وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ |
| اور جیتی رکھو ان کی عورتیں ☆ |

## فرعون کی دہشت گردی

☆ یہ حکم اب دوسری مرتبہ موسیٰ علیہ السلام کی تشریف آوری کے بعد دیا تا کہ بنی اسرائیل کی تعداد نہ بڑھنے پائے اور ان کی تعداد گھٹ جائے اور ان کے دلوں میں یہ خیال بیٹھ جائے کہ یہ سب مصیبت ان پر موسیٰ علیہ السلام کی بدولت آئی ہے۔ یہ خیال کر کے لوگ ان کا ساتھ چھوڑ دیں گے اور دہشت انگیزی کی پالیسی کامیاب ہو جائے گی۔ آگے بتلاتے ہیں اس حکم پر عمل نہ ہو سکا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۞ |
| اور جو داؤ ہے منکروں کا سو غلطی میں ہے ☆ |

منکرین کے منصوبے جتنے پہلے از قسم تدبیروں سے کئے جاتے ہیں اللہ تعالیٰ اپنے مخلص بندوں کی مدد فرما کر منکرین کے سب منصوبے بیکار کر دیتے ہیں۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ |
| اور بولا فرعون مجھ کو چھوڑو کہ مار ڈالوں |
| مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ |
| موسیٰ کو اور پکارے اپنے رب کو ☆ |

## فرعون کی چالبازی

حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں فرعون نے کہا کہ مجھ کو چھوڑو شاید اس کے ارکان سلطنت موسیٰ کے قتل کا مشورہ دیتے ہوں گے ... فرعون ... اپنی قوت و شوکت کا اظہار کرنے سے اپنا رعب ... اور یہ خیال ... کہ لوگ سمجھیں کہ اس کو قتل سے کوئی چیز مانع نہیں اور اس کو کوئی روک نہیں سکتا۔ (تفسیر حقانی)

بعض نے لکھا ہے اس کلام سے مترشح ہو رہا ہے کہ فرعون کو موسیٰ کی صداقت کا یقین تھا اسی لئے موسیٰ کو قتل کرنے سے ڈرتا تھا ... خیال تھا کہ موسیٰ کو قتل کرنا آسان نہیں ... ہو جائے ... فرعون نے اس فقرہ میں اپنی جرأت کا اظہار کیا اور یہ بات ظاہر کی کہ مجھے پروا نہیں موسیٰ اپنے رب کو پکارے ... فرعون نے جو اپنے دربار سے ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى کہا ... اس کا رب اور ... ظاہر کرنا چاہتا تھا کہ اس کے ... اور اس کی قوم کے لوگ ہی ... موسیٰ کے قتل سے روکے ہوئے ہیں حالانکہ موسیٰ کو قتل کر دینے کے حکم سے جو امر مانع تھا وہ موسیٰ کی لاٹھی کا ڈر تھا جو فرعون کے دل میں بیٹھا ہوا تھا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ |
| میں ڈرتا ہوں کہ بگاڑ دے تمہارا دین یا |
| يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ۞ |
| پھیلائے ملک میں خرابی ☆ |

خوف اس کا ہے کہ اگر موسیٰ کو زندہ چھوڑ دیا گیا تو دینی اور دنیوی دونوں طرح کے نقصان کا اندیشہ ہے۔ ممکن ہے کہ یہ اپنے وعظ و تلقین سے تمہارے دین کو بدل ڈالے ... یا کم از کم ملک میں فساد پھیلا دے جس کا انجام یہ ہو کہ تمہاری (قبطیوں کی) حکومت کا خاتمہ ہو کر بنی اسرائیل کے ہاتھ میں چلی جائے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ |
| اور کہا موسیٰ نے میں پناہ لے چکا ہوں اپنے |
| وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ |
| اور تمہارے رب کی ہر غرور والے سے |

## حضرت موسیٰ کا عزم

[illegible]

... كَمَا قَالَ تَعَالَىٰ ... [illegible]

[illegible]

## فرعون کا نام نہ لینے کی حکمت

[illegible]

### لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ |
| [illegible] |
| يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ |
| [illegible] |
| رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم بِالْبَيِّنَاتِ مِن |
| [illegible] |
| رَّبِّكُمْ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ |
| [illegible] |
| وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي |
| [illegible] |

[illegible]

[illegible] فَقَالَ أَتَقْتُلُونَ مُوسَىٰ [illegible]

[illegible]

## صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کا جذبہ ایمان

[illegible] أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ [illegible]

حطیم میں نماز ادا کر رہے تھے کہ عقبہ بن ابی معیط آیا اور آپ کی گردن میں کپڑا ڈال کر زور سے کھینچا کہ گلا گھونٹا، وہ تکلیف انتہائی شدت کو پہنچ گئی۔ جب یہ دیکھا تو حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ آئے اور عقبہ کو دور سے ایک دھکا دیا اور فرمایا۔ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰہُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَیِّنٰتِ (افسوس تم ایک شخص کو قتل کرتے ہو صرف اس بات پر کہ وہ کہتا ہے کہ میرا رب اللہ ہے حالانکہ وہ تمہارے پاس بہت سی رسالت کے واضح دلائل تمہارے رب کی طرف سے لے کر آیا ہے) تو آلِ فرعون کا مردِ مومن تو اپنے ایمان کو چھپانے والا تھا، مگر امت محمدیہ کا یہ مردِ مومن ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ نے اول سے اپنے ایمان کا اعلان کیا۔ مسند بزار اور دلائل ابونعیم میں محمد بن علی سے روایت ہے کہ ایک مرتبہ حضرت علی رضی اللہ عنہ نے ایک خطبہ میں فرمایا کہ سب سے زیادہ بہادر اور طاقتور کون ہے؟ لوگوں نے جواب دیا کہ آپ ہی سب سے زیادہ بہادر ہیں، حضرت علی نے فرمایا کہ میرا حال تو یہ ہے کہ جس نے مجھ سے مقابلہ کیا میں نے اس سے انتقام لیا، مگر سب سے زیادہ بہادر ابوبکر تھے۔ میں نے دیکھا کہ قریش نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو مارتے ہوئے پکڑا اور یہ کہتے جاتے تھے کہ انت جعلت الآلھۃ الٰھا واحدا کیا تو ہی ہے وہ شخص جس نے بہت سے معبودوں کو ایک بنا دیا۔ اس وقت ہم میں سے کسی کی ہمت نہ ہوئی کہ آپ کے قریب جائے، اتفاق سے سامنے سے ابوبکر آئے اور مشرکین کے مجمع میں گھس پڑے اور بڑی قوت کے ساتھ کسی کو مارتے، کسی کو گھونسا مارتے، اور فرماتے مشرکین کو خطاب کرتے ہوئے فرمایا: ویلکم (ہلاکت ہو تمہاری) اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰہُ۔

حضرت علی کرم اللہ وجہہ یہ بیان کر کے رو پڑے، فرمایا میں تم لوگوں کو قسم دے کر پوچھتا ہوں کہ یہ آل فرعون کا مردِ مومن افضل ہے یا ابوبکر رضی اللہ عنہ؟ لوگ خاموش ہو گئے، آپ نے فرمایا خدا کی قسم ابوبکر رضی اللہ عنہ کی ایک گھڑی آل فرعون کے مردِ مومن کی تمام زندگی سے بہت بہتر ہے۔ اس نے تو اپنے ایمان کو چھپا رکھا تھا، مگر ابوبکر نے اپنے ایمان کا کھلم کھلا اعلان کیا (یعنی اس مردِ مومن کی حمایت تو محض زبانی تھی، اور ابوبکر کی یہ بھی ہمت نہ جاتا تھا لیکن ابوبکر رضی اللہ عنہ نے تو زبانی حمایت کے علاوہ اپنے ہاتھ پاؤں اور عمل سے مشرکین کی مدافعت کی۔ تو بے شک یہ بہت ہی اونچا درجہ ہے جو حق تعالیٰ نے صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کو عطا فرمایا (خ)

**رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ** - مقاتل اور سدی کا بیان ہے کہ یہ مومن قبطی تھا اور فرعون کے چچا کا بیٹا تھا۔ یہی شخص تھا جس کے متعلق سورۂ قصص میں اللہ نے فرمایا ہے وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِیْنَةِ یَسْعٰی۔ روایت میں آیا ہے کہ اس کا نام حبیب تھا

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو سخت ترین ایذاء

عروہ بن زبیر کا بیان ہے کہ میں نے حضرت عبداللہ بن عمرو بن عاص سے کہا مجھے بتائیے کہ مشرکوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو سب سے زیادہ سخت تکلیف دہ بات کون سی دی۔ حضرت عبداللہ نے فرمایا کہ ایک بار رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کعبہ کے پاس نماز پڑھ رہے تھے کہ عقبہ بن ابی معیط آیا اور حضرت کے دونوں مونڈھے پکڑ کر آپ کی گردن میں کپڑا ڈال کر مروڑنے لگا اور گلا گھونٹنے لگا۔ اتنے میں حضرت ابوبکر آ گئے، آپ نے عقبہ کے دونوں مونڈھے پکڑ کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے اس کو الگ کیا اور فرمایا: اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰہُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَیِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ۔

(رواہ البخاری، تفسیر مظہری)

**چند صدیقین**: ایک حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ صدیقین چند ہیں: ایک حبیب نجار جس کا قصہ سورۂ یٰسین میں ہے، دوسرے آل فرعون کا مومن، تیسرے ابوبکر، اور وہ ان سب میں افضل ہیں۔ (قرطبی)

**مسئلہ**: یَكْتُمُ اِیْمَانَهٗ سے معلوم ہوا کہ اگر کوئی شخص اپنے دل میں ایمان رکھتا ہو مگر زبان سے اس کا اظہار نہ کرے تو وہ مومن ہے مگر فقہاء کی تصریح ہے کہ ایمان کے مقبول ہونے کے لئے صرف دل کا یقین کافی نہیں بلکہ زبان سے اقرار کرنا شرط ہے۔ جب تک زبان سے اقرار نہ کرے مومن نہ ہوگا۔ البتہ زبان کا اقرار لوگوں کے سامنے اعلان کرنا ضروری نہیں۔ اس کی ضرورت صرف اس وقت ہے جب تک لوگوں کو اس کے ایمان کا علم نہیں ہوگا، اس کے ساتھ مومن و مسلم جیسا معاملہ کیسے کریں گے۔ (قرطبی، الاحسن، حق الاحسن)

| |
|---|
| اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ |
| بیشک اللہ راہ نہیں دیتا اس کو جو ہو بے لحاظ |
| كَذَّابٌ |
| جھوٹا |

موسیٰ کی سچائی کی دلیل یہ ہے کہ موسیٰ نے دعویٰ نبوت کیا اور بطور تحدی معجزات پیش کئے اور دعویٰ نبوت اور معجزات کا ظاہر کرنا اس بات کی دلیل ہے کہ اگر وہ جھوٹا ہوتا تو اللہ تعالیٰ اس کو کامیابی اور ترقی نہ دیتا اور نہ ہم جھوٹے مدعی کے ہاتھ پر معجزات ظاہر فرماتا۔ سب جانتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ جھوٹے مدعی کا کام نہیں بنایا کرتا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| یٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْیَوْمَ ظٰهِرِیْنَ |
| اے میری قوم آج تمہارا راج ہے چڑھ رہے |

فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِن بَأْسِ اللَّهِ إِن جَاءَنَا

[illegible]

**طاقت سے دھوکہ نہ کھاؤ**

[illegible]

قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ

[illegible]

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُم مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ

مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ

ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ

**تکذیب انبیاء کی سزا**

[illegible]

وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ

[illegible]

[illegible]

**موت کے مرجوعے کا اعلان** [illegible]

[illegible]

**منتشر ہونے کا اعلان** [illegible]

[illegible]

**خوش [illegible] اور [illegible] کا اعلان** [illegible]

مراد وہ وقت ہوں جو حشر کا ہوگا [illegible] اور پکاریں گے جنت والے دوزخ والوں کو اور دوزخ والے جنت والوں کو اور اصحاب اعراف [illegible] ایک دوسرے کو پکاریں گے۔ اس وقت ہر شخص اپنے حال میں [illegible] ان کے عمل کا [illegible] ہو جائے گا [illegible] سعیدوں کا سبب ہو گیا اس کے بعد شقاوت کا [illegible] بھی [illegible] ہو گیا۔ اب اس کی [illegible] کوئی امکان نہیں [illegible] ایک روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ سعادت و شقاوت کا اعلان وزن اعمال کے بعد ہوگا۔

**حضرت ابو حازمؒ کی حالت:** [illegible] حضرت ابو حازم [illegible] اپنے نفس کو مخاطب کر کے فرمایا کرتے تھے کہ اے [illegible] قیامت کے دن منادی [illegible] کہ فلاں قسم کے گناہ کرنے والے کھڑے ہو جائیں تو ان کے ساتھ کھڑا ہونا ہوگا پھر منادی ہوگی کہ فلاں قسم کے گناہ کرنے والے کھڑے ہوں تو ان کے ساتھ بھی کھڑا ہونا ہوگا پھر منادی ہوگی کہ فلاں قسم کے گناہ کرنے والے کھڑے ہوں تو ان کے ساتھ بھی کھڑا ہونا ہوگا [illegible] ہر قسم کے گناہ کرنے والے [illegible]

| |
|---|
| يَوْمَ تُوَلُّونَ مُدْبِرِينَ |
| جس دن لوٹو گے پیٹھ پھیر کر |

فتوں ہوگی [illegible] دوزخ کی طرف [illegible] کے عذاب سے بچانے کی [illegible] (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| مَا لَكُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ وَمَن |
| کوئی نہیں تم کو اللہ سے بچانے والا اور جس کو |
| يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ |
| غلطی میں ڈالے اللہ تو کوئی نہیں اس کو سمجھانے والا |

عناد کی سزا: [illegible] حضرت یوسف علیہ السلام [illegible] تمہاری [illegible] کی شامت سے اللہ تعالیٰ نے [illegible] یہ ہے کہ تم [illegible] اپنے [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِن قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ |
| اور تمہارے پاس آچکا ہے یوسف اس سے پہلے کھلی باتیں لے کر |
| فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُم بِهِ |
| پھر تم رہے شبہ ہی میں ان چیزوں سے جو وہ تمہارے پاس لایا |
| حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ |
| یہاں تک کہ جب مر گیا لگے کہنے ہرگز نہ بھیجے گا اللہ |
| مِن بَعْدِهِ رَسُولًا |
| اس کے بعد کوئی رسول |

حضرت یوسف علیہ السلام سے استدلال

یہ بھی [illegible] حضرت یوسف علیہ السلام [illegible] مگر [illegible] حضرت یوسف علیہ السلام کی زندگی میں [illegible] ان کی وفات کے بعد [illegible] مصر کی سلطنت [illegible] حضرت یوسف علیہ السلام [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ |
| اسی طرح بھٹکاتا ہے اللہ اس کو جو ہو بے لحاظ |
| مُّرْتَابٌ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ |
| شک کرنے والا وہ جو کہ جھگڑتے ہیں اللہ کی باتوں |
| اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ كَبُرَ مَقْتًا |
| میں بغیر کسی سند کے جو پہنچی ہو ان کو بڑی بیزاری |
| عِندَ اللَّهِ وَعِندَ الَّذِينَ آمَنُوا |
| ہے اللہ کے یہاں اور ایمانداروں کے یہاں |

سب سے بڑی نادانی

[illegible] حق بات [illegible] ایمانداروں [illegible] سب باتوں [illegible]

[illegible] (ترجمہ [illegible])

| |
|---|
| كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ |
| اسی طرح مہر کر دیتا ہے اللہ ہر دل پر |
| مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ |
| پر غرور والے سرکش کے |

غرور کی سرداری [illegible] حق کے سامنے غرور سے گردن نہ جھکاتے ہیں [illegible] ہیں [illegible] پر [illegible] طرح مہر [illegible] ہے [illegible] ہر دل پر [illegible]

ابن جریر نے حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت کی ہے کہ فرعون کے خاندان سے سوائے اس مرد مومن اور فرعون کی بیوی کے اور کوئی ایمان نہیں لایا۔ (ابن کثیر ج ۴ [illegible])

سرکش [illegible] حضرت [illegible] فرماتے ہیں جبار وہ شخص ہے جو [illegible] قتل کر ڈالے [illegible] وہ جب [illegible] (تفسیر [illegible])

**خیانت کرنے والا حکمران:** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں جو امام [illegible] خیانت [illegible] جنت کی خوشبو بھی نہیں پائے گا [illegible] واللہ سبحانہ وتعالیٰ الموفق للصواب۔ (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا |
| اور کہا فرعون نے اے ہامان بنا میرے واسطے |
| لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ |
| ایک [illegible] شاید میں پہنچ جاؤں رستوں پر آسمانوں کے |
| فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى |
| پھر جھانک کر دیکھوں موسیٰ کے معبود کو |

فرعون کی بے شرمی [illegible] کی انتہا [illegible] حضرت موسیٰ [illegible] اللہ تعالیٰ کی صفت [illegible] کہ موسیٰ کا خدا [illegible] ہے [illegible]

[illegible] (ترجمہ [illegible])

| |
|---|
| وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ |
| اور میرے خیال میں تو وہ جھوٹا ہے |

[illegible] مجھے تو اپنے سوا دوسرا نظر نہیں آتا [illegible] مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ [illegible] (ترجمہ [illegible])

| |
|---|
| وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ |
| اور اسی طرح بھلا دکھایا فرعون کو اس کے برے کام |
| وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ |
| اور روکا گیا سیدھی راہ سے |

## مسلسل برائی کا نتیجہ

[illegible] صورت نہیں رہتی [illegible] (ترجمہ [illegible])

| |
|---|
| وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۝ |
| اور جو داؤ تھا فرعون کا سو تباہ ہونے کے واسطے |

بیکار منصوبے [illegible] فرعون کے [illegible] سب بے حقیقت تھے [illegible] (ترجمہ [illegible])

| |
|---|
| وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ |
| اور کہا اس ایماندار نے اے قوم راہ چلو میری |
| اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝ |
| پہنچا دوں تم کو نیکی کی راہ پر |

[illegible] فرعون نے کہا تھا وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ [illegible] جواب میں مرد مومن نے کہا [illegible] سَبِيْلَ الرَّشَادِ [illegible] (ترجمہ [illegible])

[illegible]

يٰقَوْمِ إِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ

[illegible]

وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ

[illegible]

[illegible]

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰى إِلَّا

[illegible]

مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ

[illegible]

ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولٰئِكَ

[illegible]

يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا

[illegible]

بِغَيْرِ حِسَابٍ

[illegible]

## آخرت کی ایک جھلک

[illegible]

[illegible]

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْ أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجٰوةِ

[illegible]

وَتَدْعُونَنِيْ إِلَى النَّارِ

[illegible]

## عجیب معاملہ

[illegible]

تَدْعُونَنِيْ لِأَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَأُشْرِكَ بِهِ

[illegible]

مَا لَيْسَ لِيْ بِهِ عِلْمٌ

[illegible]

## قوم کو دعوت

[illegible]

وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ

[illegible]

## مرد مومن کی دعوت

[illegible]

مخالفت کرتی رہی۔ پھر تم کو ظاہر ہے تو ایسی چیزوں کے موافق کرتے تو وہ لوگ ہوتے۔ وہ ایسی ہستی ہی نہیں کہ آدمی اس کی طرف جھکے یا اس سے امید باندھ کر بیٹھ جائے۔ ہاں مجھ کو اس خدا کی پناہ میں آنے کی دعوت دیتا ہوں جس کی طرف تمہیں بلا رہا ہوں۔ (تفسیر حقانی)

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِیْٓ اِلَیْهِ لَیْسَ لَهٗ
آپ ہی ظاہر ہے کہ جس کی طرف تم مجھ کو بلاتے ہو اس کا بلانا
دَعْوَةٌ فِی الدُّنْیَا وَلَا فِی الْاٰخِرَةِ
کہیں نہیں دنیا میں اور نہ آخرت میں ۞

## قوم کی بے عقلی

☆ یعنی سوا خدا کے کوئی بھی ایسی ہستی جو دنیا یا آخرت میں ادنیٰ قدرت و اختیار کی مالک ہو پھر اس کی بندگی اور خدائی کا بلاوا بجز جہالت کے کیا ہے۔ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ یَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا یَسْتَجِیْبُ لَهٗٓ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ وَلَا یُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِیْرٍ یعنی آخر ایک عاجز اور بے بس چیز کی طرف آدمی کیا بلاوا دے اور ظاہر ہے کہ ان میں بعض چیزیں وہ ہیں جو خود بھی اپنی طرف دعوت نہیں دیتیں بلکہ دعوت دینے کی قدرت ہی نہیں رکھتیں۔ (تفسیر عثمانی)

وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَی اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِیْنَ
اور یہ کہ ہم کو پھر جانا ہے اللہ کے پاس اور یہ کہ زیادتی والے
هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۞
وہی ہیں دوزخ کے لوگ ☆

☆ یعنی انجام کار سب پھر کر اسی خدائے واحد کی طرف جانا ہے وہاں پہنچ کر سب کو پتہ چل جائے گا اور ہر ایک کا نتیجہ معلوم ہو جائے گا۔ جو اس سے بے حد بڑھ گیا اور حدود کا لحاظ نہ کیا اس کا ٹھکانا دوزخ ہے۔ (تفسیر عثمانی)

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ
سو آگے یاد کرو گے جو میں کہتا ہوں تم کو ☆

## بے وقت پشیمانی

☆ یعنی آگے چل کر جب بری باتوں کا مزہ چکھو گے اس وقت میری نصیحت کو یاد کرو گے کہ ہاں ایک مرد خدا ہم کو سمجھایا کرتا تھا وہ ٹھیک کہتا تھا۔ لیکن اس وقت یاد کرنے اور پچھتانے سے کوئی فائدہ نہ ہوگا۔ (تفسیر عثمانی)

وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْٓ اِلَی اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
اور میں سونپتا ہوں اپنا کام اللہ کو بیشک اللہ کی
بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۞
نگاہ میں ہیں سب بندے ☆

## اتمام حجت کے بعد خدا کے سپرد

☆ یعنی میں خدا کی حجت تمام کر چکا اور نصیحت کی بات کہہ چکا تم نہیں مانتے تو میرا کیا ہے میرا مطلب نہیں۔ اب میں اپنے کو بالکلیہ خدا کے سپرد کرتا ہوں اسی پر میرا بھروسہ ہے تم اگر مجھے ستانا چاہو گے تو وہی خدا میرا حامی ہے اور سب بندے اس کی نگاہ میں ہیں وہ میرا اور تمہارا دونوں کا معاملہ دیکھ رہا ہے کسی کی کوئی حرکت اس پر پوشیدہ نہیں۔ ایک مومن کا یہی کام ہے کہ اپنی امکانی سعی کر چکنے کے بعد نتیجہ کو خدا کے سپرد کرے۔ (تفسیر عثمانی)

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ
پھر بچا لیا اس کو اللہ نے برے داؤں سے جو کرتے تھے اور الٹ پڑا
بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۚ
فرعون والوں پر بری طرح کا عذاب ☆

## آخری نتیجہ

☆ یعنی حق و باطل کی اس کشمکش کا آخری نتیجہ یہ ہوا کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت موسیٰ علیہ السلام اور ان کے ہمراہیوں کو جن میں یہ مومن آل فرعون بھی تھا فرعونیوں کے منصوبوں سے محفوظ رکھا۔ کوئی داؤں کا چلنے نہ دیا۔ بلکہ ان کے داؤں خود ان ہی پر الٹ پڑے۔ جس نے حق پرستوں کا تعاقب کیا تھا وہ قوم سمیت بحر قلزم میں غرق ہوا۔ (تفسیر عثمانی)

وحاق بآل فرعون: یعنی فرعون اور فرعونیوں پر بڑا تکلیف دہ عذاب نازل ہوا فرعون کا ذکر نہیں کیا گیا کیونکہ وہ تو عذاب کا مستحق سب سے زیادہ تھا اس لئے اس کے ذکر کی ضرورت ہی نہیں تھی۔

سوء العذاب: یعنی دنیا میں پانی میں غرق کیا اور مرنے کے بعد دوزخ میں ڈال دیا۔

آل فرعون: بعض اہل تفسیر کا قول ہے کہ آل فرعون سے مراد وہ لوگ ہیں جن کو فرعون نے موسیٰ کی گرفتاری کے لئے بھیجا تھا اس صورت میں مراد

العذاب سے مراد ہو گا [illegible] جب موسیٰ [illegible] چلا گئے تو [illegible] نے اس کا پیچھا کیا اور سمندر میں چلے گئے [illegible] غرق ہو کر [illegible] میں مشغول رہا۔ چاروں طرف سے [illegible] ان کی حفاظت کرتے تھے [illegible] کر لوٹ پڑے [illegible] فرعون نے ان کو قتل کرا دیا۔ (تفسیر حقانی)

**اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا**

وہ آگ ہے کہ دکھلا دیتے ہیں اُن کو صبح اور شام ☆

**عذاب قبر پر قرآنی دلیل کا ثبوت:** جس میں وہ قیامت کے دن داخل کئے جائیں گے ہر صبح و شام ان کو دکھلا دیا جاتا ہے تاکہ آخرت کے [illegible] آنے والے عذاب کا کچھ حصہ چکھتے رہیں۔ یہ عالم برزخ کا حال ہوا۔ احادیث سے ثابت ہے کہ اسی طرح ہر کافر کے سامنے دوزخ کا اور ہر مومن کے سامنے جنت کا ٹھکانہ صبح و شام پیش کیا جاتا ہے (صحیحین) آیت ہذا سے صرف فرعونیوں کا عالم برزخ میں معذب ہونا ثابت ہوا [illegible] کے بعد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو معلوم کرایا گیا، بلکہ کافر [illegible] مومنین بھی برزخ میں معذب ہیں (اعاذنا اللہ منہ) [illegible] اور [illegible] ظاہر ہے کہ جس طرح [illegible] میں سے شہداء کی روحیں "طیر خضر" کے حواصل میں جنت کی سیر کرتی ہیں، اسی طرح [illegible] میں سے فرعونیوں کی ارواح کو "طیور سود" کے حواصل میں داخل کر کے صبح و شام دوزخ کی طرف بھیجا جاتا ہے (اب یہ ارواح کا تعلق ان کے اجساد کے جنت و دوزخ میں قیامت کے بعد آخرت میں ہوگا) اگر یہ حدیث جو فرعونیوں کے متعلق اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا اور [illegible] کے متعلق حدیث عرض علیہ مقعدہ بالغداۃ والعشی کے الفاظ کو دیکھا جائے تو [illegible] ہو جائے گا۔ (تفسیر عثمانی)

**عالم برزخ پر ایمان لانا ضروری ہے:** عالم برزخ [illegible] کا ثبوت [illegible] اور [illegible] جس طرح آخرت پر اور آخرت کے ثواب و عذاب پر ایمان ضروری ہے اسی طرح برزخ کے ثواب و عذاب پر بھی ایمان و یقین ضروری ہے اور ایمان کی تکمیل [illegible] عذاب برزخ پر ایمان لائے بغیر ممکن نہیں۔

**برزخ و قبر کیا ہے:** برزخ دنیا اور آخرت کے درمیان [illegible] عالم کا نام ہے۔ جس جگہ اور جس حال میں بھی مردہ [illegible] سے [illegible] تک [illegible] وہی برزخ ہے خواہ مردہ قبر میں دفن ہو جائے یا سمندر میں ڈال دیا جائے یا آگ میں جلا دیا جائے یا کوئی جانور [illegible] کھا لے۔ قرآن [illegible] حال کا نام برزخ ہے اور اسی کو اصطلاحی طور پر قبر کہا جاتا ہے۔ گرچہ [illegible] سے ذہن [illegible] جاتا ہے مگر شریعت کی نظر میں [illegible]

[illegible] مذکور ہوتے ہیں۔ اس [illegible] کا ثبوت کتاب اللہ [illegible] ہے [illegible] بعض [illegible] میں ہے۔ اسی لئے حضرات محققین [illegible] عذاب قبر کا [illegible] مستقل [illegible] کرتے ہیں۔

اس عالم کی روحانیت [illegible] [illegible] قول ہے کہ عالم برزخ [illegible] جیسے ایک [illegible] پیٹ [illegible] عالم کے ساتھ [illegible] عالم دنیا کے ساتھ [illegible] ایک حالت ہے۔ ایسے ہی اس عالم برزخ [illegible] عالم کھل جاتا ہے۔ انسان کے مر جانے کے بعد [illegible] عالم برزخ [illegible] کے [illegible] ایک کیفیت [illegible] ہوتا ہے۔ [illegible] سے بھی [illegible] ہے۔

**قبر کی حیات:** قبر میں میت کو جو حیات حاصل ہوتی ہے وہ دنیا کی حیات جیسی نہیں بلکہ [illegible] ہوتی ہے [illegible] اس کو [illegible] سمجھ [illegible] [illegible] اس طرح [illegible] جاتے [illegible] [illegible] آنکھ اور کانوں سے [illegible] [illegible] ہو جاتا ہے۔ پھر [illegible] میں [illegible] جاتا ہے۔

**قبر میں مومن و کافر کی حالت:** [illegible] قبر میں جب [illegible] سوال و جواب سے فارغ [illegible] کے سامنے ایک نہایت [illegible] ظاہر ہوتی [illegible] ہے۔ [illegible] کون ہے [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] عالم برزخ [illegible] ہے [illegible] اس کے متعلق [illegible] ہو جائے گا۔

**نکیرین کا سوال کس سے ہو گا:** شیخ عبدالکریم [illegible] فرماتے ہیں کہ نکیرین کا سوال [illegible] سے تعلق [illegible] ہے۔ بعض [illegible] سے تعلق [illegible] زندگی میں بھی [illegible] ہے [illegible] سے تعلق رکھتے ہیں۔ [illegible] طرح مرنے کے بعد قبر میں اللہ تعالیٰ [illegible] کے ساتھ روح کا تعلق قائم فرما [illegible]

عذاب اجمالی طور پر ہی تھا اس لئے مخصوص ہے تھا کہ وہ پھر قیامت کے دن کسی اور صورت سے عذاب شروع کر نے والی اصلی صورت میں ظاہر ہوں گے۔

## ثواب و عذاب قبر کے دلائل

علامہ اسلام حضرت ... قاضی ثناء اللہ نے ... فرمایا کہ اس آیت میں عذاب قبر کا ثبوت ہے: اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا ... یہ عذاب برزخ کا ہے جو قیامت سے پہلے ہے۔ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ کی صراحت سے یہ ثابت ہے کہ یہ عذاب قیامت سے پہلے کا ہے اور صاحب یٰس کے قصہ میں ثواب قبر کا ثبوت ہے۔ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ کہ شہادت کے بعد حکم ہو گیا کہ جنت میں داخل ہو جا اور جنت میں داخل ہو گیا تو اس نے تمنا کی کاش میری قوم کو بھی اس کی مغفرت و کرامت کا علم ہو جائے تاکہ وہ بھی ایمان لے آئے۔ ظاہر ہے کہ یہ ثواب مرنے کے بعد قبل از قیامت ہوا اسی طرح سے ثابت ہوا کہ قبل از قیامت عذاب قبر کی طرح ثواب قبر بھی ہے جو مومنین و مطیعین کے لئے ہو گا۔ اسی طرح آیت وَاتَّقُوْا ذُرِّيَّتَهُمْ وَّجَنَّتَ نَعِيْمٍ سے ظاہر ہے کہ مرنے کے بعد فوراً ہی ہے جو مومن کے حق میں مرنے کے بعد متصل ہو گا اور فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ یعنی کھولتے پانی اور جہنم کی آگ میں جھونکنا۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا عذاب قبر سے پناہ مانگنا احادیث متواترہ سے ثابت ہے۔

امام احمد نے بسند صحیح نقل کیا ہے کہ ایک یہودی عورت جو حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کی خدمت میں آیا کرتی تھی اور حضرت عائشہ اس کو کچھ دیا کرتی تھیں تو جب بھی اس کے ساتھ کوئی احسان کیا جاتا تو وہ یہودیہ یہ دعا دیتی کہ وقاک اللہ عذاب القبر (اللہ تم کو عذاب قبر سے بچائے) حضرت عائشہ نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے ذکر کیا تو آپ نے فرمایا یہودی جھوٹ بولتے ہیں اور یہ لوگ تو اللہ پر بہت ہی جھوٹ باندھتے ہیں قیامت سے پہلے کوئی عذاب نہیں۔ پھر کچھ دن گزرنے کے بعد ایک دن نصف النہار کے وقت اپنی چادر اوڑھے باہر نکلے اور آپ کی آنکھیں سرخ تھیں اور آپ بلند آواز سے فرما رہے تھے القبر كقطع الليل المظلم قبر اندھیری رات کے ٹکڑوں کی طرح ہے لوگو اگر تم کو وہ معلوم ہو جاتا جو میں جانتا ہوں تو تم ہنستے کم اور روتے زیادہ۔ لوگو قبر کے عذاب سے اللہ کی پناہ مانگو۔ عذاب قبر حق ہے۔ اسی مضمون کی حدیث بخاری اور مسلم نے روایت کی ہے۔ ... آپ نے لوگوں کو خطاب کر کے فرمایا: انكم تفتنون في القبور قريبا من فتنة الدجال۔

بخاری و مسلم نے حضرت عبداللہ بن عمر کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ان احدكم اذا مات عرض عليه مقعده بالغداة والعشي ان كان من اهل الجنة فمن اهل الجنة وان كان من اهل النار فمن اهل النار فيقال هذا مقعدك حتى يبعثك الله عزوجل اليه يوم القيامة۔ (متفق علیہ)

(یعنی آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب تم میں سے کوئی شخص مر جاتا ہے تو اس کا ٹھکانا صبح و شام اس کے سامنے پیش کیا جاتا ہے اگر وہ جنتی ہے تو جنت والوں کا ٹھکانا اور اگر اہل جہنم میں سے ہے تو جہنم والوں کا ٹھکانا اور اس سے کہا جاتا ہے کہ یہ تیرا ٹھکانا ہے یہاں تک کہ قیامت کے دن اللہ تجھے اس کی طرف اٹھائے)

## صبح و شام پیشی

حضرت عبداللہ بن مسعود نے فرمایا کہ آل فرعون کی روحیں سیاہ پرندوں کے پوٹوں میں ہیں جو صبح و شام دوزخ پر پیش کی جاتی ہیں اور ان سے کہا جاتا ہے کہ اے آل فرعون قیامت تک یہی تمہارا ٹھکانا ہے۔ ابن ابی حاتم نے حضرت عبداللہ بن عمر کی روایت سے بیان کیا ہے جو صحیحین میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب تم میں سے کوئی مر جاتا ہے تو اس کی قیام گاہ صبح شام اس کے سامنے لائی جاتی ہے اگر وہ جنتی ہے تو جنت والوں کی قیام گاہ اور اگر دوزخی ہے تو دوزخ والوں کی قیام گاہ (اس کے سامنے لائی جاتی ہے) اور اس سے کہا جاتا ہے کہ یہی تیری جگہ ہے یہاں تک کہ اللہ قیامت کے دن تجھے اٹھائے گا۔

قرینہ سے ثابت ہوتا ہے کہ اس آیت میں عذاب قبر (یعنی برزخی عذاب جو قیامت سے پہلے ہو گا) مراد ہے کیونکہ قیامت کے عذاب کا ذکر بعد میں الگ بیان کیا ہے۔

اَدْخِلُوْٓا (عذاب کے) فرشتوں کو حکم ہو جائے گا کہ آل فرعون کو سخت ترین عذاب میں داخل کرو۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا اشد العذاب سے مراد ہے ہر طرح کا عذاب جو عالم برزخ کے عذاب سے بالکل الگ قسم کا ہو گا۔ (تفسیر مظہری)

مسند احمد میں ہے کہ حضور نے فرمایا تم میں سے جب کوئی مرتا ہے تو صبح شام اس کی قیام گاہ اس کے سامنے پیش کی جاتی ہے اگر وہ جنتی ہے تو جنت اور اگر جہنمی ہے تو جہنم۔ اور کہا جاتا ہے کہ یہی تیری جگہ ہے جہاں تجھے اللہ تعالیٰ قیامت کے دن بھیجے گا۔ یہ حدیث بخاری و مسلم میں بھی ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

## ایک طالب علمانہ اشکال اور اس کا حل

بعض صحیح احادیث میں کچھ ایسے مضامین وارد ہوئے ہیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ عذاب قبر کا علم حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو مدینہ طیبہ کی

ہجرت کے بعد ہوا ہے اور یہ آیت مکہ شریف میں نازل ہوئی ہے تو جواب اس کا یہ ہے کہ آیت سے صرف اتنا معلوم ہوتا ہے کہ مشرکوں کی روحیں صبح و شام جہنم کے سامنے پیش کی جاتی ہیں۔ رہی یہ بات کہ یہ عذاب ہر وقت جاری اور باقی رہتا ہے یا نہیں؟ اور یہ بھی کہ آیا یہ عذاب صرف روح کو ہوتا ہے یا جسم کو بھی؟ اس کا علم آپ کو مدینہ شریف میں کرایا گیا اور آپ نے اسے بیان فرمایا۔ پس حدیث و قرآن دونوں سے یہ ہوا کہ عذاب و ثواب قبر روح اور جسم دونوں کو ہوتا ہے اور یہی حق ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ ۗ أَدْخِلُوا آلَ |
| اور جس دن قائم ہو گی قیامت حکم ہو گا داخل کرو |
| فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾ وَإِذْ |
| فرعون والوں کو سخت سے سخت عذاب میں اور جب |
| يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ |
| آپس میں جھگڑیں گے آگ کے اندر پھر کہیں گے کمزور |
| لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ |
| غرور کرنے والوں کو ہم تھے تمہارے تابع |
| تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا |
| پھر کچھ تم ہم پر سے اٹھا لو گے |
| نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ |
| حصہ آگ کا؟ |

## جھوٹے لیڈروں کا انجام

جہنمی دنیا میں ہم سے اپنی اطاعت اور تابعداری کراتے رہے جس کی بدولت آج ہم پکڑے گئے۔ اب یہاں اور یہ کہ کیا ہمارے کچھ آنے والے ہو؟ [illegible] بڑے حق چاہتے۔ دیکھئے ہمیں آج ہم کس قدر مصیبت میں ہیں۔ کیا تمہیں یہ ممکن ہے کہ اس مصیبت کا کوئی جزو ہم سے ہٹا دو؟ (ابن کثیر)

| |
|---|
| قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا |
| کہنے لگے جو غرور کرتے تھے ہم سب پڑے ہوئے ہیں اس میں |
| إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ |
| بیشک اللہ فیصلہ کر چکا بندوں میں |

تکبر والے جواب دیں گے کہ ہم تو خود تمہارے ساتھ جل رہے ہیں، ہم سب اسی مصیبت میں مبتلا ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے ہم میں سے ہر ایک کے جرم کے مطابق اس کا فیصلہ کر دیا ہے جو کسی طرح بدل نہیں سکتا، اب کوئی کسی کے کام نہیں آ سکتا۔ ہم اپنی مصیبت کو ہلکا نہیں کر سکتے تو تمہارے کیا کام آ سکتے ہیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ |
| اور کہیں گے جو لوگ پڑے ہیں آگ میں دوزخ کے |
| جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا |
| داروغوں کو مانگو اپنے رب سے کہ ہم پر ہلکا کرے |
| يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾ |
| ایک دن تھوڑا سا عذاب |

## داروغوں سے درخواست

جہنمی اپنے سرداروں کی طرف سے مایوس ہو کر جہنم کے فرشتوں سے درخواست کریں گے جو دوزخ کے نگہبان مقرر ہیں کہ تم ہی اپنے رب سے ہمارے لئے دعا کرو کہ کسی دن ہم پر سے عذاب کچھ ہلکا کر دیا جائے۔ (ابن کثیر)

| |
|---|
| قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم |
| وہ بولے کیا نہ آتے تھے تمہارے پاس تمہارے رسول |
| بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۗ |
| کھلی نشانیاں لے کر کہیں گے کیوں نہیں بولے پھر پکارو |
| وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٥٠﴾ |
| اور کچھ نہیں کافروں کا پکارنا مگر بھٹکنا |

## اب وقت نکل چکا ہے

یعنی اس وقت ان کی بات نہ سنی جائے گی اور ان کی فریاد نہ ہو گی۔ اب موقع ہاتھ سے نکل چکا اور فرشتے یہ جواب دیں گے کہ [illegible]

گئی۔ یہ سب نتیجے ہیں [illegible] ہم اپنے رسولوں کی حفاظت کیا کرتے ہیں [illegible] نصاریٰ نے [illegible] سے کوئی فائدہ ہے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "[illegible] کے [illegible] کبھی کے [illegible] کسی جگہ عذاب آئے پر [illegible] حاشیہ کا [illegible] خلاف ہی تھے" (تفسیر [illegible]) [illegible] کافر [illegible] قیامت تک [illegible] (تفسیر عثمانی)

# إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا

ہم مدد کرتے ہیں اپنے رسولوں کی اور ایمان والوں کی

# فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

دنیا کی زندگانی میں ☆

دنیا میں مدد [illegible] دنیا میں [illegible] کسی مقصد کے لئے [illegible] پیغمبروں کی [illegible] کا میابی [illegible] کی [illegible] ہمیشہ [illegible] کا سبب [illegible] علمی حیثیت سے [illegible] دلیل [illegible] اور [illegible] دشمن بھی [illegible] نہیں [illegible] کا اقبال [illegible] ہے [illegible] اور [illegible] تعالیٰ ان سے اپنے [illegible] انتقام [illegible] رہتے [illegible] مؤمنین کے لئے [illegible] ہے [illegible] مومن اور رسولوں کے [illegible] وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ([illegible] مومن [illegible] ہے کہ [illegible] (تفسیر [illegible])

[illegible] کہ [illegible] دنیا میں مدد کرنے سے مراد ہے [illegible]؟ حضرت ابن عباس نے فرمایا [illegible] ہے۔ [illegible] کافروں [illegible] انجام [illegible] ہے (اور [illegible] پیغمبروں [illegible] گیا ہے) بعض لوگوں نے کہا [illegible] سے مراد ہے دشمنوں سے انتقام [illegible] نے پیغمبروں کے دشمنوں سے پیغمبروں کا انتقام [illegible] (تفسیر مظہری)

**اللہ تعالیٰ کی سنت** [illegible] اللہ تعالیٰ کی [illegible] ہمیشہ سے جاری [illegible] اپنے [illegible] کی مدد فرماتا ہے اور ان کے مخالفوں سے بدلہ لے [illegible] تعالیٰ کی [illegible] آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] ہیں۔ فرمایا [illegible] ہے جو کوئی [illegible] دشمنی کا [illegible] اس نے [illegible] مقابلہ [illegible] کی [illegible] ہے کہ [illegible] کا [illegible] مقابلہ کرنے [illegible] دنیا [illegible] بھی [illegible] پیغمبر [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم آپ کے اصحاب کی [illegible] کی مدد [illegible] غالب فرمائی اور [illegible] اور لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ کا [illegible] مظلومیت [illegible] کہ [illegible] غالب [illegible] ایمان لانے والوں کے لئے [illegible] نصرت کی [illegible] پر [illegible] اللہ [illegible] اپنی ذات [illegible] بہت [illegible] آپ کے سامنے معافی مانگنے [illegible] ہیں اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] احسان فرمانے [illegible] ہیں۔ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ [illegible] لیکن آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا [illegible] کے [illegible] ہو گئے [illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی رحلت کے بعد خلفاء راشدین [illegible] افریقہ اندلس [illegible] کابل تک [illegible] اسلام کا [illegible] اور مشرق و مغرب [illegible] دنیا [illegible] (تفسیر ابن کثیر [illegible])

# وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ

اور جب کھڑے ہوں گے گواہ ☆

[illegible] حق کا [illegible] بیان [illegible] قیامت کے دن اللہ تعالیٰ اپنے [illegible] گواہوں کی [illegible] فرمائے گا۔ [illegible] ہے اور [illegible] (تفسیر [illegible])

يَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ [illegible] قیامت کا [illegible] ہے۔ [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ |
| جس دن کام نہ آئے گی گنہگاروں کو ان کی معذرت |
| وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝ |
| اور ان کو پھٹکار ہے اور ان کے واسطے برا گھر |

[illegible]

**سوء الدار کی تفسیر:** [illegible]

| |
|---|
| وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا |
| اور ہم نے دی موسیٰ کو راہ کی سوجھ اور وارث کیا |
| بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝ هُدًى وَّذِكْرٰى |
| بنی اسرائیل کو کتاب کا جو سوجھانے اور سمجھانے والی |
| لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ |
| عقل والوں کو |

[illegible]

| |
|---|
| فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ |
| سو تو ٹھہرا رہ بیشک وعدہ اللہ کا ٹھیک ہے اور بخشوا |
| لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ |
| اپنا گناہ اور پاکی بول اپنے رب کی خوبیاں شام کو |
| وَالْاِبْكَارِ ۝ |
| اور صبح کو |

**آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو [illegible]**

[illegible]

| |
|---|
| اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ |
| جو لوگ جھگڑتے ہیں اللہ کی باتوں میں بغیر |
| سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ |
| کسی سند کے جو پہنچی ہو ان کو اور کچھ نہیں ان کے جی میں |
| اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ |
| مگر غرور کہ کبھی نہ پہنچیں گے اس تک |

[illegible]

| |
|---|
| فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ |
| سو تو پناہ مانگ اللہ کی بیشک وہ ہی ہے |

| |
|---|
| الْبَصِيرُ |
| اور آنکھ والا |

[illegible]

| |
|---|
| لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ |
| البتہ پیدا کرنا آسمانوں کا اور زمین کا بڑا ہے |
| خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا |
| لوگوں کے بنانے سے لیکن بہت لوگ نہیں |
| يَعْلَمُوْنَ |
| سمجھتے |

[illegible]

| |
|---|
| وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ وَالَّذِيْنَ |
| اور برابر نہیں اندھا اور آنکھوں والا اور نہ |
| اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ |
| جو یقین لائے اور بھلے کام کرتے ہیں اور نہ بدکار |
| قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ اِنَّ السَّاعَةَ |
| تم بہت کم سوچ کرتے ہو تحقیق قیامت |
| لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ |
| آنی ہے اس میں دھوکا نہیں لیکن بہت |
| النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ |
| لوگ یقین نہیں لاتے |

مومن اور بدکار

[illegible]

| |
|---|
| وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ |
| اور کہتا ہے تمہارا رب مجھ کو پکارو کہ پہنچوں تمہاری پکار کو |

[illegible]

## اس امت کے لئے مخصوص تین چیزیں

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي |
| بیشک جو لوگ تکبر کرتے ہیں میری بندگی سے |
| سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ |
| [illegible] |

[illegible]

## تکبر کرنے والوں کا حشر

[illegible]

[illegible]

اور افضل ہے۔ (مظہری) اور حسب تصریح حدیث دعا عبادت ہے۔

## فضائل دعا

**حدیث:-** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک دعا سے زیادہ کوئی چیز کرم نہیں۔ (ترمذی، ابن ماجہ، حاکم عن ابی ہریرۃ)

**حدیث:-** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے الدعاء مخ العبادۃ یعنی دعا عبادت کا مغز ہے۔ (ترمذی عن انس)

**حدیث:-** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ سے اس کا فضل مانگا کرو کیونکہ اللہ تعالیٰ سوال و دعا کرنے کو پسند فرماتا ہے اور سب سے بڑی عبادت یہ ہے کہ آدمی کشادگی کا انتظار کرے۔ (ترمذی عن ابن مسعود)

**حدیث:-** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص اللہ سے اپنی حاجت کا سوال نہیں کرتا اللہ تعالیٰ اس پر غضب ناک ہوتا ہے۔ (ترمذی، ابن ماجہ عن ابی ہریرۃ)

ان سب روایات کو تفسیر مظہری میں نقل کر کے فرمایا کہ دعا نہ مانگنے پر غضب الٰہی کی وعید اس صورت میں ہے کہ بوجہ تکبر اور اپنے آپ کو مستغنی سمجھنے کی بنا پر ایسا کرے جیسا کہ آیت مذکورہ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ کے الفاظ سے ثابت ہوتا ہے۔

**حدیث:-** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ دعا سے عاجز نہ ہو کیونکہ دعا کے ساتھ کوئی ہلاک نہیں ہوتا۔ (ابن حبان، حاکم عن انس)

**حدیث:-** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ دعا مومن کا ہتھیار اور دین کا ستون اور آسمان و زمین کا نور ہے۔ (حاکم عن ابی ہریرۃ)

**حدیث:-** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس شخص کیلئے دعا کے دروازے کھول دیئے گئے اس کے واسطے رحمت کے دروازے کھل گئے اور اللہ تعالیٰ سے جو دعائیں مانگی جاتی ہیں ان میں سب سے زیادہ محبوب یہ ہے کہ انسان اس سے عافیت کا سوال کرے۔ (ترمذی، حاکم عن ابن عمرؓ) لفظ عافیت جامع لفظ ہے جس میں ہر آفت سے حفاظت اور ہر ضرورت و حاجت کا پورا ہونا شامل ہے۔

**مسئلہ:-** کسی گناہ یا قطع رحمی کی دعا مانگنا حرام ہے اور وہ اللہ کے نزدیک قبول بھی نہیں ہوتی۔ (کما فی الحدیث عن ابی سعید الخدریؓ)

**قبولیت دعا کا وعدہ:** آیت مذکورہ میں اس کا وعدہ ہے کہ بندہ جو دعا مانگے وہ قبول ہوتی ہے مگر بعض اوقات انسان یہ دیکھتا ہے کہ دعا مانگی اور قبول نہیں ہوئی۔ اس کا جواب ایک حدیث میں ہے جو حضرت ابو سعید خدریؓ سے منقول ہے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مسلمان جو بھی دعا اللہ سے کرتا ہے اللہ اس کو عطا فرماتا ہے بشرطیکہ اس میں کسی گناہ یا قطع رحمی کی دعا نہ ہو اور قبولیت کی تین صورتوں میں سے کوئی صورت ہوتی ہے ایک یہ کہ جو مانگا وہی دنیا میں مل گیا دوسرے یہ کہ اس کی مطلوب چیز کے بدلے اس کو آخرت کا کوئی اجر و ثواب دے دیا گیا۔ تیسرے یہ کہ مانگی ہوئی چیز تو نہیں ملی مگر کوئی آفت و مصیبت اس پر آنے والی تھی وہ ٹل گئی۔ (مسند احمد۔ مظہری)

**قبولیت دعا کی شرائط:** آیت مذکورہ میں تو بظاہر کوئی شرط نہیں۔ یہاں تک کہ مسلمان ہونا بھی قبولیت دعا کی شرط نہیں ہے۔ کافر کی دعا بھی اللہ تعالیٰ قبول فرماتا ہے۔ یہاں تک کہ ابلیس کی دعا تا قیامت زندہ رہنے کی قبول ہو گئی۔ نہ دعا کے لئے کوئی وقت شرط ہے نہ طہارت اور نہ باوضو ہونا شرط ہے۔ مگر احادیث معتبرہ میں بعض چیزوں کو مانع قبولیت فرمایا ہے۔ ان چیزوں سے اجتناب لازم ہے جیسا کہ حدیث میں حضرت ابو ہریرۃ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ بعض آدمی بہت سفر طے کرتے اور آسمان کی طرف دعا کے لئے ہاتھ اٹھاتے ہیں اور یارب یارب کہہ کر اپنی حاجت مانگتے ہیں مگر ان کا کھانا حرام، پینا حرام، لباس حرام، ان کو غذا بھی حرام سے دی گئی تو ان کی دعا کہاں قبول ہو گی۔ (رواہ مسلم)

اسی طرح غفلت و بے پروائی کے ساتھ بغیر دھیان دیئے دعا کے کلمات پڑھنے پر بھی حدیث میں اس کے متعلق بھی یہ آیا ہے کہ ایسی دعا بھی قبول نہیں ہوتی۔ (ترمذی عن ابی ہریرۃ کما سیاتی فی آخرہ)

| |
|---|
| اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا |
| اللہ ہے جس نے بنایا تمہارے واسطے رات کو کہ اس میں |
| فِیْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا |
| چین پکڑو اور دن بنایا دیکھنے کا ☆ |

رات اور دن: رات کی ظلمت اور تاریکی میں عام لوگ سوتے اور آرام کرتے ہیں جب دن ہوتا ہے تو دیکھ بھال کر اپنے کام میں مشغول ہوتے ہیں۔ دن کی روشنی میں دیکھتے بھالتے اور چلتے پھرتے ہیں کسب معاش وغیرہ میں مشغول رہتے ہیں۔ (ب۔ دیکھنا)

### رات اور دن کا انتظام اللہ تعالیٰ کی بہت بڑی نعمت ہے

اور یہ بھی بڑی نعمت ہے کہ قدرت نے تمام مخلوقات انسان یا جانوروں سب کے لئے فطری طور پر نیند کا ایک وقت معین کر دیا اور اس وقت کو اندھیرا کر کے نیند کے لئے مناسب بنا دیا اور سب کی طبیعت اس کے لئے آمادہ رکھی کہ اسی وقت یعنی رات کو نیند آتی ہے ورنہ جس طرح انسان اپنے کاروبار کے لئے اپنی اپنی طبیعت و سہولت کے لحاظ سے اوقات مقرر کرتا ہے اگر نیند بھی اسی طرح اس کے اختیار میں ہوتی۔ ہر انسان اپنی نیند کا وقت الگ الگ اوقات میں بنایا کرتا تو سونے والوں کو نیند کی لذت و راحت ملتی نہ

[illegible]

إِنَّ اللّٰهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

اللہ تو فضل رکھتا ہے لوگوں پر

وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

اور لیکن بہت لوگ حق نہیں مانتے

ناشکری: [illegible]

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ

وہ اللہ ہے رب تمہارا ہر چیز کا بنانے والا

لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾

کسی کی بندگی نہیں اس کے سوائے پھر کہاں سے الٹے جاتے ہو

**معبود برحق کی دلیل**

[illegible]

كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيٰتِ

اسی طرح بہکے جاتے ہیں جو لوگ کہ اللہ کی باتوں

اللّٰهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾ اللّٰهُ الَّذِي جَعَلَ

سے منکر ہوتے رہتے ہیں اللہ ہے جس نے بنا دی

لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً

تمہارے واسطے زمین کو ٹھہرنے کی جگہ اور آسمان کو عمارت

[illegible]

وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ

اور صورت بنائی تمہاری تو اچھی بنائیں صورتیں تمہاری اور روزی دی

مِنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ

دی تم کو ستھری چیزوں سے وہ اللہ ہے رب تمہارا

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِينَ ﴿٦٤﴾

سو بڑی برکت ہے اللہ کی جو رب ہے سارے جہان کا

[illegible]

**سب سے بہتر صورت اور سب سے بہتر رزق انسان کا ہے**

[illegible]

هُوَ الْحَيُّ

وہی ہے زندہ رہنے والا

[illegible]

لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ

کسی کی بندگی نہیں اس کے سوائے سو اس کو پکارو خالص کر کر اس کی

الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٦٥﴾

بندگی سب خوبی اللہ کو جو رب ہے سارے جہان کا

[illegible]

☆ کہ سب عمدہ صفات اور سب کمالات اسی کی ذات میں جمع ہیں یعنی وہی اللہ حق ہے وہی عبادت کا مستحق اور تمام کمالات اور خوبیوں کا مالک ہے اسی لئے قرآن نے بعد اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ فرمایا جیسا کہ پہلی آیت میں مختصر کلام کے بعد فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ فرمایا تھا۔ بعض سلف سے منقول ہے کہ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ کے بعد اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ کہنا چاہیے۔ اسی واسطے یہ آیت ہے۔ (تفسیر حقانی)

**حضرات سلف کا عمل:** فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ کی تفسیر میں ابن جریر سے منقول ہے فرمایا حضرات سلف کی ایک جماعت یہ کہا کرتی تھی کہ جو شخص لا الٰہ الا اللہ کہے اس کو چاہیے کہ اس کے بعد اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ بھی کہہ لیا کرے تاکہ اس آیت پر عمل ہو جائے۔ بروایت اعمش مجاہد حضرت عبداللہ بن عباسؓ سے بھی یہی نقل کیا کرتے تھے۔ عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ کا یہ معمول تھا کہ ہر نماز کا سلام پھیرنے کے بعد یہ کلمات پڑھا کرتے۔ لا الٰہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ لہ الملک ولہ الحمد وھو علی کل شیء قدیر لا حول ولا قوۃ الا باللہ ولا نعبد الا ایاہ لہ النعمۃ ولہ الفضل ولہ الثناء الحسن لا الٰہ الا اللہ مخلصین لہ الدین ولو کرہ الکافرون اور یہ بیان کیا کرتے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم بھی یہ کلمات ہر نماز کے بعد پڑھا کرتے تھے (صحیح مسلم، نسائی، تفسیر ابن کثیر جلد ۴ ص ۸۲، مسند احمد)

| |
|---|
| قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ |
| تو کہہ مجھ کو منع کر دیا گیا ہے کہ پوجوں ان کو |
| تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ |
| جن کو تم پکارتے ہو سوائے اللہ کے جب پہنچ چکیں |
| الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ |
| مجھے صاف نشانیاں میرے رب سے اور مجھ کو حکم ہوا کہ تابع رہوں |
| لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۶﴾ |
| جہان کے پروردگار کا ☆ |

☆ یعنی کھلے کھلے نشانات دیکھنے کے بعد کیا حق ہے کہ کوئی اپنے خدا کے سوا کسی کے سامنے سر جھکائے اور خالص اسی کا تابع فرمان بن کر رہنا چاہیے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ |
| وہی ہے جس نے بنایا تم کو خاک سے ☆ |

☆ یعنی تمہارے باپ آدم کو یا تم سب کو اس طرح کہ نطفہ جس غذا کا خلاصہ ہے وہ خاک سے ہی پیدا ہوتی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ |
| پھر پانی کی بوند سے پھر خون جمے ہوئے سے ☆ |

☆ یعنی بنی آدم کی اصل ایک پانی کی بوند (قطرہ منی) ہے جو آگے چل کر جما ہوا خون بن جاتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا |
| پھر تم کو نکالتا ہے بچہ پھر جب تک کہ پہنچو |
| اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا وَّمِنْكُمْ |
| اپنے پورے زور کو پھر جب تک کہ ہو جاؤ بوڑھے اور کوئی تم میں ایسا ہے |
| مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا |
| کہ مر جاتا ہے پہلے ہی سے اور جب تک کہ پہنچو |
| اَجَلًا مُّسَمًّى |
| مقرر وعدے تک ☆ |

☆ یعنی بچے سے جوان اور جوان سے بوڑھا ہوتا ہے اور بعض آدمی جوانی یا بڑھاپے سے پہلے ہی گزر جاتے ہیں۔ بہر حال سب کو ایک معین میعاد اور لکھے ہوئے وعدے تک پہنچنا ہے۔ موت سے کسی کو رستگاری نہیں۔

ہر آنکہ زاد بناچار بایدش نوشید
ز جام دہر مے کُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ

(تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ |
| اور تاکہ تم سوچو ☆ |

☆ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یعنی سوچو کہ ایک حال پر نہیں رہتے۔ ایک حال سے دوسرا حال ہو جاتا ہے۔ وہ بھی مر کر جینا ہے تو اس کو کیوں محال سمجھتے ہو۔" (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ فَاِذَا قَضٰٓى |
| وہی ہے جو جلاتا ہے اور مارتا ہے پھر جب حکم کرے |

**أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ**

کسی کام کو تو بس یہی کہتا ہے کہ ہو جا وہ ہو جاتا ہے ☆

☆ یعنی اس کی قدرت کاملہ اور شان کن فیکون کے سامنے یہ کیا مشکل ہے کہ موت کے بعد تمہیں دوبارہ زندہ کر دے۔ (تفسیر عثمانی)

**أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ**

تو نے نہ دیکھا ان کو جو جھگڑتے ہیں اللہ کی باتوں میں

**اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ الَّذِينَ كَذَّبُوا**

کہاں سے پھرے جاتے ہیں وہ لوگ کہ جنہوں نے

**بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا**

جھٹلایا اس کتاب کو اور اس کو جو بھیجا ہم نے اپنے رسولوں کے ساتھ

**فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ**

سو آخر جان لیں گے ☆

☆ کہ اس تکذیب کا نتیجہ کیا ہوتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ**

جب طوق پڑیں ان کی گردنوں میں اور زنجیریں بھی ☆

☆ زنجیر کا ایک سرا طوق میں اٹکا ہوگا اور دوسرا فرشتوں کے ہاتھ میں ہوگا۔ اسی طرح مجرموں کو قیدیوں کی مانند لائے جائیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

**يُسْحَبُونَ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ**

گھسیٹے جائیں گے جلتے پانی میں پھر آگ میں ان کو

**يُسْجَرُونَ**

جھونک دیں ☆

☆ یعنی دوزخ میں کبھی جلتے پانی کا اور کبھی آگ کا عذاب دیا جائے گا [illegible] (تفسیر عثمانی)

تقسیم کیا ہے۔ جہنم کے بہت سے طبقات ہوں گے جن میں قسم قسم کے عذاب ہوں گے انہی میں ایک طبقہ حمیم کا بھی ہو سکتا ہے جس کو [illegible] اور الگ ہونے کے جہنم سے خارج بھی کہا جا سکتا ہے اور چونکہ یہ بھی ایک طبقہ جہنم ہی کا ہے اس لئے اس کو جہنم ہی کہا جا سکتا ہے [illegible] جہنم [illegible] ڈالے جائیں گے [illegible] (تفسیر [illegible])

**ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ**

پھر ان کو کہیں کہاں گئے جن کو تم

**تُشْرِكُونَ مِن دُونِ اللَّهِ**

شریک بتلاتے تھے اللہ کے سوائے ☆

☆ یعنی اس وقت ان میں سے کوئی کام نہیں آتا کہ تمہیں اس عذاب سے بچا لے۔ (تفسیر عثمانی)

**قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا**

وہ بولے وہ ہم سے چوک گئے ☆

☆ یعنی ہم سے کھوئے گئے [illegible] الگ کر دیے [illegible] ضلوا عنا کا مطلب [illegible] جب [illegible] (تفسیر [illegible])

**بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا**

کوئی نہیں ہم تو پکارتے نہ تھے پہلے کسی چیز کو ☆

غلطی کا اعتراف [illegible] مفسرین نے اس کا مطلب یہ بیان کیا ہے کہ [illegible] دنیا میں پکارتے تھے اب [illegible] معلوم ہوا کہ وہ کچھ نہ تھے [illegible] اپنی غلطی کا اعتراف ہوگا [illegible] صاحب [illegible] مشرکین [illegible] ہم نے شریک ٹھہرا [illegible] کہ [illegible] جس شے کو شریک ٹھہرایا [illegible] کا انکار کر بیٹھے کہ ہم نے خدا کے سوا کسی کو پکارا ہی نہیں۔ (تفسیر [illegible])

**كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ**

اسی طرح بچلاتا ہے اللہ منکروں کو ☆

☆ یعنی جس طرح یہاں انکار کرنے [illegible] یہی حال ان کافروں کا دنیا میں تھا۔ (تفسیر عثمانی)

**ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ**

یہ بدلہ اس کا جو تم اتراتے پھرتے تھے زمین میں

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ۝

ناحق اور اس کا جو تم اتراتے تھے☆

☆یعنی دنیا میں ناحق کی خوشی اور غرور و تکبر کا تم پر جو نشہ چڑھا تھا اب وہ کافور ہو گیا۔ (تفسیر عثمانی)

فرح کا معنی ہے مال و دولت کے نشہ میں خدا کو بھول کر معاصی سے لذت حاصل کرنا اور اس پر خوش ہونا اور اترانا جائز نہیں [illegible] (تفسیر مظہری)

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ

داخل ہو جاؤ دوزخ کے دروازوں میں ☆

☆یعنی ہر قسم کے مجرم اس دروازے سے داخل ہوں گے جو ان کے لئے تجویز شدہ ہے۔ (تفسیر عثمانی)

خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى

سدا رہنے کو اس میں سو کیا برا ٹھکانا ہے

الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ

غرور والوں کا سو تو ٹھہرا رہ بیشک وعدہ اللہ کا

اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

ٹھیک ہے پھر اگر ہم دکھلا دیں تجھ کو کوئی وعدہ

الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا

جو ہم ان سے کرتے ہیں یا بھر لیں تجھ کو دونوں حالت میں ہماری طرف

يُرْجَعُونَ ۝

پھر آئیں گے☆

وعدہ کا مطلب: یعنی اللہ نے ان کو عذاب دینے کا جو وعدہ کیا ہے وہ ضرور پورا ہو کر رہے گا۔ ممکن ہے کہ کوئی وعدہ آپ کی موجودگی میں پورا ہو جیسے کہ [illegible] یا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد ہو۔ بہر حال یہ ہم سے بچ کر کہیں نہیں جا سکتے سب کا انجام ہمارے ہاتھ میں ہے اس زندگی کے بعد عذاب کی تکمیل اس زندگی میں ہوگی۔ چاہے وہ کسی صورت سے ہو۔ (تفسیر عثمانی)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ

اور ہم نے بھیجے ہیں بہت رسول تجھ سے پہلے

مِنْهُمْ مَنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ

بعضے ان میں وہ ہیں کہ سنایا ہم نے تجھ کو ان کا احوال

مَنْ لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ

اور بعضے ہیں کہ نہیں سنایا☆

یعنی بعض کا مفصل حال تجھ سے بیان کیا بعض کا نہیں کیا اور ممکن ہے کہ اس آیت کے نزول کے بعد ان کا بھی مفصل حال بیان کر دیا ہو۔ بہر حال جن کے نام معلوم ہیں ان پر تفصیلاً اور جن کے نام معلوم نہیں ان پر اجمالاً ایمان لانا ضروری ہے لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ (تفسیر عثمانی)

وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ

اور کسی رسول کو مقدور نہ تھا کہ لے آتا کوئی نشانی

إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ

مگر اللہ کے حکم سے☆

☆رسول اللہ تعالیٰ ہے یعنی اللہ کے سامنے سب عاجز ہیں۔ رسولوں کو بھی اختیار نہیں کہ جو معجزہ چاہیں اظہار کر دیں بلکہ اور جس قدر نشانات دکھلائے گئے ہیں وہ سب اجازت حق تعالیٰ کی طرف سے ہوں۔ (تفسیر عثمانی)

فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ

پھر جب آیا حکم اللہ کا فیصلہ ہو گیا انصاف سے

وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ۝

اور ٹوٹے میں پڑے اس جگہ جھوٹے☆

☆یعنی جس وقت اللہ کا حکم پہنچتا ہے رسولوں اور ان کی قوموں کے درمیان منصفانہ فیصلہ کر دیا جاتا ہے۔ اس وقت رسول سرخرو اور کامیاب ہوتے ہیں اور باطل پرستوں کے حصہ میں ذلت و خسران کے سوا کچھ نہیں آتا۔ (تفسیر عثمانی)

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا

اللہ ہے جس نے بنا دیئے تمہارے واسطے چوپائے تاکہ سواری کرو

مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيهَا

[illegible]

مَنَافِعُ

[illegible]

[illegible]

وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ

[illegible]

[illegible]

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾

[illegible]

[illegible]

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ

[illegible]

تُنكِرُونَ ﴿٨١﴾

[illegible]

[illegible]

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا

[illegible]

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ

[illegible]

كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا

[illegible]

فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا

[illegible]

يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

[illegible]

[illegible]

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا

[illegible]

بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم

[illegible]

مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨٣﴾

[illegible]

[illegible]

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ

[illegible]

# وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ

[illegible]

# مُشْرِكِيْنَ ۝

[illegible]

[illegible]

# فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا

[illegible]

# رَاَوْا بَاْسَنَا

[illegible]

[illegible]

# سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ

[illegible]

# عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝

[illegible]

[illegible]

# [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

# بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

شروع اللہ کے نام سے جو بڑا مہربان نہایت رحم والا ہے

# حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اُتارا ہوا ہے بڑے مہربان رحم والے کی طرف سے

[illegible]

# كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ

[illegible]

[illegible]

# قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

[illegible]

[illegible]

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ

سنانے والا خوشخبری اور ڈرانے والا ☆

یعنی قرآن اپنے ماننے والوں کو نجات و فلاح کی خوشخبری سناتا اور منکروں کو برے انجام سے ڈراتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝

پر دھیان میں نہ لائے وہ بہت لوگ سو وہ نہیں سنتے ☆

**اکثریت کا اعراض** ☆ یعنی ان سب باتوں کے باوجود بھی تعجب ہے کہ ان میں کے بہت لوگ اس کتاب کی اعلیٰ قیمتی نصائح کی طرف دھیان نہیں کرتے اور جب ادھر دھیان ہی نہیں تو سنتے کیسے جائیں گے۔ اور فرض کیجئے کانوں سے سن بھی لیا لیکن کوئی دل سے سننا اور قبول کرنے کی توفیق نہ ہوئی تو سنا ان سنا برابر ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**قرآن پاک کا عتبہ پر اثر:** سیرت ابن اسحاق میں ہے کہ قریشیوں کی مجلس ایک مرتبہ جمی ہوئی تھی اور حضرت صلی اللہ علیہ وسلم خانہ کعبہ کے ایک کونے میں بیٹھے ہوئے تھے۔ عتبہ قریشی نے کہا کہ اگر تم سب کا مشورہ ہو تو میں محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس جاؤں انہیں کچھ سمجھاؤں اور کچھ لالچ دلاؤں۔ اگر وہ کسی بات کو قبول کر لیں تو ہم انہیں وہ دے دیں اور انہیں ان کے کام سے روک دیں۔ یہ واقعہ اس وقت کا ہے کہ حضرت حمزہ مسلمان ہو چکے تھے اور مسلمانوں کی تعداد معقول ہو گئی تھی اور روز بروز بڑھتی جاتی تھی۔ سب قریشی اس پر رضامند ہو گئے۔ یہ حضور کے پاس آیا اور کہنے لگا کہ عزیز! تم حسب نسب میں ہم میں سے ہو ہماری آنکھوں کے تارے اور ہمارے کلیجے کے ٹکڑے ہو۔ افسوس کہ تم اپنی قوم کے پاس ایک عجیب و غریب چیز لائے تم نے ان میں پھوٹ ڈال دی۔ تم نے ان کے عقل مندوں کو بے وقوف قرار دیا۔ تم نے ان کے معبودوں کی عیب جوئی کی تم نے ان کے دین کو برا کہنا شروع کیا تم نے ان کے بڑے بوڑھوں کو کافر بنایا۔ اب سن لو آج میں آپ کے پاس ایک آخری اور انتہائی فیصلے کے لئے آیا ہوں۔ میں بہت سی صورتیں پیش کرتا ہوں ان میں سے جو آپ کو پسند ہو قبول کیجئے للہ اس فتنے کو بیٹھ جانے دیجئے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو تمہیں کہنا ہو کہو میں سن رہا ہوں۔ اس نے کہا سنو اگر تمہارا ارادہ اس چال سے مال کے جمع کرنے کا ہے تو ہم سب مل کر تمہارے لئے اتنا مال جمع کر دیتے ہیں کہ تم سے زیادہ مالدار سارے قریش میں کوئی نہ ہو۔ اور اگر آپ کا ارادہ اس سے اپنی سرداری کا ہے تو ہم سب مل کر تم کو اپنا سردار تسلیم کر لیتے ہیں۔ اور اگر آپ بادشاہت چاہتے ہیں تو ہم ملک آپ کو سونپ کر بادشاہ بنانے کے لئے بھی تیار ہیں۔ اور اگر آپ کو کوئی جن وغیرہ کا اثر ہے تو ہم اپنا مال خرچ کر کے بہتر سے بہتر طبیب اور جھاڑ پھونک کرنے والے مہیا کر کے آپ کا علاج کراتے ہیں۔ ایسا ہو جاتا ہے کہ بعض مرتبہ تابع جن اپنے عامل پر غالب آ جاتا ہے تو اسی طرح اس سے چھٹکارا حاصل کیا جاتا ہے۔ اب عتبہ خاموش ہوا تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اپنی سب کہہ چکے؟ کہا ہاں۔ فرمایا اب میری سنو۔ وہ متوجہ ہو گیا۔ آپ نے بسم اللہ الرحمٰن الرحیم پڑھ کر اس سورۃ کی تلاوت شروع کی۔ عتبہ با ادب سنتا رہا یہاں تک کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے سجدے کی آیت پڑھی اور سجدہ کیا۔ پھر فرمایا ابوالولید میں کہہ چکا اب تجھے اختیار ہے۔ عتبہ یہاں سے اٹھ کر اپنے ساتھیوں کی طرف چلا۔ اس کے چہرے کو دیکھتے ہی ہر ایک کہنے لگا کہ عتبہ کا حال بدل گیا۔ اس سے پوچھا کہو کیا بات رہی؟ اس نے کہا میں نے تو ایسا کلام سنا ہے کہ واللہ اس سے پہلے کبھی نہیں سنا۔ خدا کی قسم نہ تو وہ جادو ہے نہ شعر ہے نہ کاہنوں کا کلام ہے۔ سنو قریشیو میری مان لو اور میری اتنی سی بات قبول کر لو کہ اسے اس کے خیالات پر چھوڑ دو نہ اس سے مخالفت کرو نہ موافقت، جو عرب ہیں ان کا جو حال ہے اور جو یہ کتاب اس میں عظیم الشان ہے اس کا تقاضا ہے کہ وہ اپنی تمام طاقت اس کے مقابلے میں صرف کر رہا ہے۔ یا تو وہ اس پر غالب آ جائیں گے تو تم سے چھوٹ گیا یا یہ ان پر غالب آ گئے تو اس کا ملک تمہارا ملک کہا جائے گا اور اس کی عزت تمہاری عزت ہوگی اور سب سے زیادہ اس کے نزدیک مقبول تم ہی ہو گے۔ یہ سن کر قریشیوں نے کہا ابوالولید قسم خدا کی محمد نے تجھ پر جادو کر دیا۔ اس نے جواب دیا سنو جو میری رائے تھی میں آزادی سے کہہ چکا اب تمہیں اپنے فعل کا اختیار ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا

اور کہتے ہیں ہمارے دل غلاف میں ہیں اس بات سے کہ

تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ

جس کی طرف تو ہم کو بلاتا ہے اور ہمارے کانوں میں بوجھ ہے

وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ

اور ہمارے اور تیرے بیچ میں ہے پردہ

فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝

سو تو اپنا کام کر ہم اپنا کام کرتے ہیں ☆

**اکثریت کا جواب** ☆ یعنی صرف یہی نہیں کہ نصیحت کی طرف دھیان نہیں کرتے یا کان نہیں دھرتے، بلکہ کھلا اعلان کرتے ہیں جن کا

کہ تا کہ بالکل ہی نہ ہو جائے۔ اور نہ نصیحت سننے کا ارادہ بھی ترک کر دے۔ مطلب یہ ہے کہ ہمارے دلوں پر تو تمہاری باتوں کی طرف سے غلاف چڑھے ہوئے ہیں۔ اس لئے کوئی بات وہاں تک پہنچتی نہیں۔ اور جب تم بات کرتے ہو ہمارے کان اونچا سننے لگتے ہیں۔ ثقل سماعت کی وجہ سے کچھ سنائی نہیں دیتا اور ہمارے تمہارے درمیان ایسا پردہ ہے جو ایک کو دوسرے سے ملنے نہیں دیتا۔ دشمنی اور عداوت کی جو دیوار کھڑی ہے وہ درمیان سے اٹھ جائے اور جو حائل ہے وہ دور ہو جائے تب تم میں سے ایک دوسرے تک پہنچ سکے لیکن ایسا ہونا ممکن ہے کہ تم کھل کر اپنا سر جھکاتے ہو۔ ہم کو اپنے حال پر چھوڑ دو۔ تم اپنا کام کیے جاؤ ہم اپنا کام کریں گے۔ ہم کو تو حق مت۔ غور کرو ہم کبھی تمہاری نصیحتوں سے متاثر ہونے والے نہیں ہیں۔ (تفسیر علاء)

**وَمِنْۢ بَيْنِنَا** – یعنی ہم تو جس کی طرف تم ہم کو بلاتے ہو اس کی طرف سے دور ہو چکے ہیں۔ اس لئے تم ہم کو سمجھا نہیں سکتے۔

**وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ** – وقر ثقل سماعت، مطلب یہ کہ ہمارے کان بند ہیں ہم نے تمہاری بات سنی نہیں۔ یعنی تمہاری دعوت ہم قبول نہیں کرتے اس طرح جیسے کوئی بے عقل اور محض بہرا ہو جو نہ کچھ سمجھتا ہو نہ سنتا ہو۔

**حجاب کا معنی:** حجاب یعنی ہمارے اور تمہارے درمیان دین کا اختلاف ہے جس کی وجہ سے ہم تمہارے ساتھ نہیں ہو سکتے۔ حجاب سے مراد پردہ ہے، یعنی ایسا پردہ جو دونوں کی درمیانی مسافت کو پر کر دے۔ دونوں کے درمیان کوئی خلا نہیں کہ ایک فریق دوسرے کی طرف بڑھ سکے اور کچھ مل سکیں۔ آیت ذکر میں جو کہ جولی اور انتہائی درجہ کی تنگی تک بیان کیا گیا ہے۔

**فَاعْمَلْ**۔ سو آپ اپنے مذہب کے مطابق کام کریں یا یہ مطلب کہ آپ ہمارے عقائد و اعمال کے خلاف کام کئے جائیں۔

**آیت کا شان نزول:** حضرت عمر بن خطاب کی روایت ہے کہ مکہ کے قریش رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے حضور نے ان سے فرمایا تمہارے مسلمان نہ ہونے کی کیا وجہ ہے اسلام لے آؤ تو عرب کے سردار بن جاؤ گے قریشیوں نے کہا ہم آپ کی بات نہیں سمجھتے نہ ہم کو آپ کا کلام سنائی دیتا ہے ہمارے دلوں پر تو غلاف چڑھے ہوئے ہیں اور ابو جہل نے ایک کپڑا لے کر اپنے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے درمیان حائل کر کے کہا اور قَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں تم کو دو باتوں کی دعوت دیتا ہوں۔ شہادت دو کہ کیلئے اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اس کا کوئی ساجھی نہیں اور یہ کہ میں اللہ کا رسول ہوں مگر قریش نے جب یہ بات سنی تو پشت پھیر کر چل دیئے اور بولے کیا اس نے (ہمارے) تمام معبودوں کی جگہ ایک معبود بنا دیا یہ تو بڑی عجیب بات ہے اور ایک دوسرے سے کہنے لگا

چلو (چلو) اپنے معبودوں (کی پوجا) پر جمے رہو مقصود بھی یہ ہے ہم نے یہ بات تو پچھلی قوموں میں نہیں سنی تھی یہ محض گھڑی ہوئی بات ہے کیا نصیحت ہم میں (سب کو چھوڑ کر) اسی پر نازل کیا گیا۔ اس وقت یہ آیت نازل ہوئی اور انہوں نے یہاں تک کہا کہ یہ بات ہمیں نہیں۔ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے آپ کو حکم دیا فرمایا کہ یہ لوگ کہتے ہیں کہ قرآن کو سمجھنے سے ان کے دل پردوں میں ہیں اور ان کے کانوں میں ڈاٹ ہے ان کو کچھ سنائی نہیں دیتا کہ ان کی یہ بات صحیح ہوتی تو قرآن سن کر بھاگتے کیوں یا شور کیوں مچاتے ہیں لیکن سننے سے تو ان کو کوئی انکار نہیں کیونکہ ان کو قرآن سے نفرت ہے (یہ اللہ نے پہلے بیان کیا) جب سرداران مکہ میں سے کچھ آدمی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا کہ ہمارے دین پر اسلام پیش کیجئے (ہم مسلمان ہونا چاہتے ہیں) حضور نے اسلام پیش کیا اور وہ سب مسلمان ہو گئے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یہ بات دیکھ کر مسکرا دیئے اور فرمایا کل تم کہتے تھے کہ تمہارے اور میری دعوت کی طرف سے پردے پڑے ہیں اور تمہارے کانوں میں ڈاٹ ہے۔ آج تم لوگ سچے مسلمان ہو گئے اللہ کا شکر ہے کیسے تھے اور اللہ کے رسول ہم نے کل کہا تھا اگر وہ بات سچی ہوتی تو ہم ہدایت نہ پاتے اللہ کا ہاتھ ہے اور بندے کو جو نے ہیں اللہ کی ہے اور ہم ان کے آن ہیں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ |
| تو کہہ میں بھی آدمی ہوں جیسے تم حکم آتا ہے مجھ کو |
| اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ |
| کہ تم پر بندگی ایک حاکم کی ہے سو سیدھے رہو اس کی طرف |
| وَاسْتَغْفِرُوْهُ |
| اور اس سے گناہ بخشواؤ ☆ |

**پیغمبر کا خطاب:** سب سے حق بندگی خدا ہوں کہ نہ بندگی تمہارے دلوں کو پھیر سکوں، یا فرشتہ ہوں جس کے پیچھے جانے کی تم کو نفرت کیا کرتے ہو یا کوئی اور مخلوق ہوں، بلکہ تمہاری جنس و نوع کا ایک آدمی ہوں۔ جس کی بات کا سمجھنا تم کو ہم جنسی کی بنا پر آسان ہونا چاہئے اور وہ آدمی ہوں جسے حق تعالیٰ نے اپنی آخری اور کامل ترین وحی کے لئے چن لیا ہے جو علیحدہ خواہ تم سنو یا اعراض کرو اور تمہی کی باتیں اگلے ماتحت کر دیں خدائی پیغام تم کو پہنچانا ہے۔ پہنچاؤں گا۔ مجھ پر یہ وحی نازل کیا گیا ہے کہ تم سب کا معبود اور حاکم علی الاطلاق ایک ہے جس کے سوا کسی کی بندگی نہیں۔ لہٰذا اب تم کو لازم ہے کہ تمام عقائد و اعمال میں سیدھے اسی خدائے واحد کی طرف رخ کر کے چلو اس کے راستے سے ذرا

[illegible]

## إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ کا مطلب

[illegible]

| وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ۝ الَّذِينَ لَا |
| --- |
| اور خرابی ہے شریک کرنے والوں کو جو نہیں |
| يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُم بِالْآخِرَةِ |
| دیتے زکوٰۃ اور وہ آخرت سے |
| هُمْ كَافِرُونَ ۝ |
| منکر ہیں |

## مشرکوں کا انجام

[illegible]

## زکوٰۃ کا مطلب

[illegible]

[illegible]

## زکوٰۃ کو خصوصیت سے ذکر کرنے میں کیا حکمت ہے

[illegible]

## زکوٰۃ نہ دینے کا مطلب

[illegible]

| إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ |
| --- |
| البتہ جو لوگ یقین لائے اور کیے بھلے کام |
| لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝ |
| [illegible] |

مومنین کا اجر [illegible]

[illegible] کے لئے ہے۔ [illegible]

**آیت کا مصداق:** [illegible]

[illegible]

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي

[illegible]

خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَ

[illegible]

تَجْعَلُونَ لَهُ أَنْدَادًا ذَٰلِكَ رَبُّ

[illegible]

الْعَالَمِينَ

[illegible]

**مقام تعجب:** [illegible] مقام ہے کہ رب العالمین کی [illegible]

**آسمان و زمین کی تخلیق میں کیا ترتیب:** [illegible]

[illegible]

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا

[illegible]

وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا

[illegible]

زمین کی برکت [illegible]

وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِلسَّائِلِينَ [illegible]

**ہر علاقہ زمین کے الگ الگ خصوصیات کی حکمت**

حضرت حسن [illegible]

[illegible]

## ضروریات انسانی کا بے مثال گودام

[illegible]

فِىٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ

[illegible]

[illegible]

## دن کا مطلب

[illegible]

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِىَ دُخَانٌ

[illegible]

[illegible]

فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ

[illegible]

كَرْهًا قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ

[illegible]

**نظام کائنات** [illegible]

[illegible]

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ

[illegible]

## تخلیق زمین و آسمان میں تقدیم و تاخیر کا مسئلہ

[illegible]

## زمین و آسمان کی تخلیق کے دن

[illegible]

وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا

[illegible]

یعنی جو حکم جس آسمان کے لئے مناسب تھا حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں۔ "یہ سب کو معلوم ہے کہ وہاں کون مخلوق بستی ہے اور ان کا کیا دستور ہے (یعنی رنگ ڈھنگ) کیا ہے۔ اتنی بات یقینی ہے کہ سب نے تیرے ہی احکام سے آسمان آباد ہیں اپنے کاموں لگے۔" (تفسیر عثمانی)

اللہ تعالیٰ نے آسمان کو کیا حکم دیا: عطاء نے حضرت ابن عباس کا قول اس طرح نقل کیا ہے کہ اس نے ہر آسمان میں اس کی مخلوق یعنی فرشتوں کو پیدا کیا اور جو کچھ بھی پیدا کرنا تھا اس کے موافق حکم بھیجا اور سمندر اور پہاڑ آسمان میں سورج چاند اور ستارے پیدا کر دیئے۔ مقاتل نے کہا فرشتے جو امر و نہی دی جاتی وہ آسمان کو وحی کر دی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۖ |
| اور رونق دی ہم نے سب سے ورلے آسمان کو چراغوں سے |
| وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ |
| اور محفوظ کر دیا یہ سادھا ہوا ہے زبردست |
| الْعَلِيمِ ﴿۱۲﴾ |
| خبردار کا ☆ |

آسمان کی زینت یعنی دیکھنے میں معلوم ہوتا ہے کہ گویا سب ستارے اسی آسمان میں جڑے ہوئے ہیں۔ رات کو ان قدرتی چراغوں سے آسمان کیسا پر رونق معلوم ہوتا ہے۔ پھر محفوظ کتنا کر دیا ہے کہ کسی کی وہاں تک دسترس نہیں۔ فرشتوں کے زبردست پہرے لگے ہوئے ہیں۔ بڑی طاقت اس نظام محکم کی رکھنے والی ہستی کی جو سب سے بڑی زبردست اور باخبر ہستی کا قائم کیا ہوا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

بمصابیح۔ مصابیح سے مراد ہیں ستارے۔

وحفظا۔ یعنی ہم نے آفات یا چوری کرنے والوں سے اس کو محفوظ کر دیا۔ حفظا مفعول لہ ہے یعنی زینت اور حفاظت کے لئے ہم نے آسمان دنیا میں ستارے پیدا کر دیئے۔

العزیز۔ اپنی حکومت میں غالب۔

العلیم۔ اپنی مخلوق سے واقف۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً |
| پھر اگر منہ موڑیں تو تو کہہ میں نے خبر سنا دی تم کو ایک کڑک عذاب |
| مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿۱۳﴾ |
| کی جیسے عذاب آیا عاد اور ثمود پر |

کفار مکہ کو تنبیہ ☆ یعنی کفار مکہ اگر ایسی عظیم الشان آیات سننے کے بعد بھی نصیحت قبول کرنے اور توحید و اسلام کی راہ اختیار کرنے سے اعراض کرتے رہیں تو فرما دیجئے کہ میں تم کو ڈراتا ہوں کہ تمہارا انجام بھی "عاد" "ثمود" وغیرہ اقوام معذبہ کی طرح ہو سکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| إِذْ جَاءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِن بَيْنِ |
| جب آئے اُن کے پاس رسول آگے |
| أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ |
| سے اور پیچھے سے |

جاءتہم الرسل کا مطلب یعنی ہر طرف سے۔ شاید بہت رسول آئے ہوں گے مگر مشہور یہی دو رسول ہیں۔ حضرت ہود اور حضرت صالح علیہما الصلوٰۃ والسلام اور یا من بین ایدیہم ومن خلفہم سے مراد یہ ہو کہ ان کو ماضی اور مستقبل کی باتیں سمجھاتے ہوئے آئے۔ کوئی جہت اور کوئی پہلو نصیحت و فہمائش کا نہیں چھوڑا۔ (تفسیر عثمانی)

اذ جاءتہم الرسل۔ جب قوم عاد و ثمود کے پاس ان کے پیغمبر آئے۔

## آگے اور پیچھے سے کیا مطلب

ہر طرف سے تبلیغ اور ان کو ہدایت کرنے کی پوری کوشش کی۔ یا آگے پیچھے سے مراد ہے گذرے ہوئے اور آنے والے زمانے۔ گذشتہ کافروں پر جو عذاب آئے وہ بھی بتا دیئے اور آئندہ آخرت میں ان پر جو عذاب ہوگا اس سے بھی ڈرایا۔ یا آگے پیچھے سے مراد ہے پہلا پچھلا یعنی پہلے لوگوں کو اسلام کی طرف حضرت ہود علیہ السلام اور حضرت صالح نے اس کو پچھلے لوگوں کے احوال سے بھی باخبر کر دیا اور اسی طرح ایمان کی دعوت دی۔ من بین ایدیہم ومن خلفہم سے مراد ہے کہ حضرت ہود کے پیچھے دوسری آیت میں آیا ہے۔ يَٰقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي یعنی قوم ہود و ثمود نے جواب دیا۔

وَلَٰكِنَّآ أَكْثَرُهُمْ یعنی تم جو رسول ہونے کے مدعی ہو اور کہتے ہو کہ تم کو تبلیغ توحید کے لئے بھیجا گیا ہے۔ ہم تم کو نہیں مانتے۔ تم بھی ہماری طرح آدمی ہی ہو تم کو ہم پر کوئی برتری حاصل نہیں۔

## عجیب والے واقعہ کی تفصیل

بغوی نے حضرت جابر بن عبداللہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ

[illegible]

نہیں چاہا ان سے کچھ ... کہ کہیں تم پر عذاب آ جائے۔

[illegible]

محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس جا کر ان سے ... گفتگو کروں [illegible]

[illegible]

[illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْ شَاءَ

رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ

بِهِ كَافِرُونَ

فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ

الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ

هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا

يَجْحَدُونَ

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي

أَيَّامٍ نَحِسَاتٍ لِنُذِيقَهُمْ عَذَابَ

الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

[illegible]

وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ

[illegible]

وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ

[illegible]

عذاب آخرت [illegible]

[illegible]

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا

[illegible]

الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ

[illegible]

[illegible]

فاستحبوا العمی علی الھدی ۔ [illegible]

فَأَخَذَتْهُمْ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ

[illegible]

بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

[illegible]

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ

[illegible]

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ

[illegible]

يُوزَعُونَ

[illegible]

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ

[illegible]

سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُم

[illegible]

بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

[illegible]

## قَالُوا أَنطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنطَقَ كُلَّ شَيْءٍ

## وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

## وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ

عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ

وَلَا جُلُوْدُكُمْ

تستترون کا معنی

وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ

كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ

بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ

الْخٰسِرِيْنَ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ

مَثْوًى لَّهُمْ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا

فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ

فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ

مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ

وَالْإِنْسِ

إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا

لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ

لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ

### کافروں کی بک بک

فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا

شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي

**كَانُوا يَعْمَلُونَ**

[illegible]

... ان کے ... (تم ... ہی)

**ذٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللّٰهِ النَّارُ**

[illegible]

**لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءً**

ان کا اسی میں گھر ہے ... بدلہ اس کا

**بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ**

[illegible]

... تھے لیکن ... انکار ... کرتے رہے تھے (حم سجدہ)

**وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا**

[illegible]

**الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ**

وہ دونوں جنہوں نے ہم کو بہکایا جو جن سے

**وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا**

[illegible]

**لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ**

[illegible]

کافروں ... [illegible]
... میں سے جن ... [illegible]
[illegible]
... ہماری ... جہنم ... [illegible]
[illegible]

### ...کام کی بنیاد ڈالنے والوں کا حشر

... جن ... انسانوں میں سے ... [illegible]

[illegible]

**إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ**

[illegible]

**اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ**

[illegible]

**الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا**

[illegible]

**وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ**

[illegible]

**تُوعَدُونَ**

[illegible]

... استقامت والے ...

[illegible]

**استقامت کے معنی**

## مومنین کے لئے اللہ تعالیٰ کی دوستی اور رضاء

[illegible] نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ [illegible]

## سب سے آسان آیت

[illegible]

## استقامت کی دعا

[illegible]

## اسلام کے بعد سب سے اہم بات

[illegible]

| نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ہم | ہیں | تمہارے | دوست | دنیا میں |
| الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ | | | | |
| اور | آخرت | میں | بھی | |

دنیا و آخرت کی رفاقت [illegible]

[illegible]

مومنوں کے لئے بشارتیں [illegible]

[illegible]

جنت کے بازار [illegible]

[illegible]

## وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ

### جنت میں قناعت و رجعت کے باوجود ہر کی تمنا سے ہوگی

### ان اوصاف و نعمات کے اولین مصداق

## نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ

## وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ

خدا تعالیٰ کی مہمانی [illegible] جنتی [illegible] اپنے مہمانوں [illegible]

[illegible]

**اللہ تعالیٰ کی مہمانی۔** [illegible] ابن ابی الدنیا [illegible] نے حضرت علی [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] جنت [illegible]

[illegible]

ابن ابی الدنیا نے حضرت ابو امامہ کی روایت سے بیان کیا کہ جنتی [illegible]

[illegible]

**جنت میں اولاد۔** [illegible]

[illegible]

[illegible]

| وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ |
| --- |
| اور اس سے بہتر کس کی بات جس نے بلایا |
| اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِىْ |
| اللہ کی طرف اور کیا نیک کام اور کہا میں |
| مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ |
| [illegible] |

**اہل استقامت کا اعلیٰ مقام**

[illegible] اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا [illegible]

[illegible]

**داعی سے [illegible]** [illegible]

[illegible]

[illegible] شیطانی [illegible]

## اذان کی فضیلت

حضرت معاویہ [illegible] کا بیان ہے میں نے [illegible] کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] (رواہ مسلم)۔ حضرت ابو سعید کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا

جہاں تک (اذان کی) آواز پہنچتی ہے [illegible] اور ہر خشک و تر (جاندار و بے جان) قیامت کے دن اس کے لئے شہادت دے گی۔ (ابوداؤد)

حضرت ابوہریرہؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا امام ضامن ہے اور مؤذن امانت دار ہے۔ اے اللہ! اماموں کو ہدایت فرما اور مؤذنوں کی مغفرت فرما۔ (احمد، ابوداؤد، ترمذی، شافعی)

حضرت ابن عباسؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس نے سات برس ثواب کی نیت سے اذان دی اس کے لئے دوزخ سے براءت (نجات) لکھ دی گئی۔ (ترمذی، ابوداؤد، ابن ماجہ) حضرت ابن عمرؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تین شخص قیامت کے دن مشک کے ٹیلوں پر ہوں گے ایک وہ غلام جس نے اللہ کا حق بھی ادا کیا اور اپنے آقا کا بھی، اور وہ شخص جس نے کسی قوم کی امامت کی اور لوگ اس (کی امامت) سے خوش رہے، تیسرا وہ شخص جس نے رات دن میں پانچوں نمازوں کی اذان دی۔ (ترمذی) ترمذی نے اس حدیث کو غریب کہا ہے۔

حضرت ابوہریرہؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جہاں تک مؤذن کی آواز پہنچتی ہے [illegible] اور ہر خشک و تر اس کی شہادت دیتا ہے اور نماز میں حاضر ہونے والے کے لئے پچیس نمازوں (کا ثواب) لکھا جاتا ہے (یعنی باجماعت نماز پڑھنے والے کو پچیس نمازوں کا ثواب ملتا ہے) اور دو نمازوں کے درمیان کے گناہ معاف کر دئے جاتے ہیں۔ (احمد، ابوداؤد، ابن ماجہ)

حضرت [illegible] کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا دو چیزیں ہیں جن کو رد نہیں کیا جاتا [illegible] اذان کے وقت دعا کرنا اور جہاد کے وقت جب لوگ باہم گتھم گتھا ہو جائیں [illegible] ۔

حضرت ابن عمرؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس نے بارہ سال اذان دی اس کے لئے جنت واجب ہو گئی [illegible] روزانہ اس کی ہر اذان کے عوض ساٹھ نیکیاں اور ہر اقامت کے عوض تیس نیکیاں لکھی گئیں۔ (ابن ماجہ)

حضرت ابن عمرؓ نے فرمایا مغرب کی اذان کے وقت [illegible] کا حکم دیا جاتا تھا۔ (بیہقی فی الدعوات)

## اذان کا جواب

حضرت عبداللہ بن عمرو بن عاصؓ کا بیان ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب تم اذان سنو تو جو کلمے مؤذن کہتا ہے تم بھی وہی کہو پھر مجھ پر درود پڑھو، [illegible] جو مجھ پر ایک بار درود پڑھتا ہے اللہ اس پر دس بار رحمت بھیجتا ہے

[illegible] ایک شخص [illegible] ۔ [illegible] حرام ہے [illegible] ۔

حضرت عمرؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب مؤذن اللہ اکبر اللہ اکبر کہے اور تم میں سے کوئی (جواب میں) اللہ اکبر اللہ اکبر کہے [illegible] پھر [illegible] لا حول ولا قوۃ الا باللہ کہے [illegible] تو وہ جنت میں داخل ہو جائے گا۔ (مسلم)

حضرت سعد بن ابی وقاصؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص مؤذن کی اذان سن کر کہے [illegible] تو اس کے گناہ معاف کر دئے جاتے ہیں۔ (مسلم)

آیت کا شان نزول: [illegible] آیت میں کی مراد [illegible] حی علی الصلوۃ [illegible] ہے [illegible] ایک شخص [illegible] ہے اور یہ [illegible] ہے جیسے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ دو اذانوں کے درمیان نماز ہے دو اذانوں کے درمیان نماز ہے جو چاہے۔ ایک حدیث میں ہے کہ اذان و اقامت کے درمیان کی دعا رد نہیں ہوتی۔

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] جو اذان سنے [illegible] مسلم [illegible] ۔

## اذان و اقامت کے درمیان نماز و دعا

حضرت [illegible] کہتے ہیں کہ [illegible] اذان ہوتی [illegible] حضرت [illegible] (اس کی طرف) [illegible] ہوتے [illegible] اذان و اقامت کے درمیان [illegible] ہے۔ حضرت عبداللہ بن مغفلؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ہر دو اذانوں کے درمیان نماز ہے تیسری بار حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہر دو اذانوں کے درمیان نماز ہے اس کے لئے جو چاہے (پڑھنا) [illegible] متفق علیہ۔ حضرت انسؓ راوی ہیں کہ [illegible]

ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اذان اور اقامت کے درمیان (کی) ہوئی دعا رد نہیں کی جاتی (رواہ ابو داؤد والترمذی۔ تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ |
| اور برابر نہیں نیکی اور نہ بدی |
| اِدْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا |
| جواب میں وہ کہہ جو اس سے بہتر ہو پھر |
| الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ |
| تو دیکھ لے کہ تجھ میں اور جس میں دشمنی تھی گویا |
| وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿۳۴﴾ |
| دوست ہے قرابت والا ☆ |

**داعی کے اخلاق:** ☆ ان آیات میں ایک سچے داعی الی اللہ کو جس حسن اخلاق کی ضرورت ہے اس کی تعلیم دی گئی ہے۔ یعنی خوب سمجھ لو نیکی و بدی کے اور بدی تحمل کے برابر نہیں ہو سکتی۔ دونوں کی تاثیر جداگانہ ہے بلکہ ایک نیکی دوسری نیکی سے اور ایک بدی دوسری بدی سے اثر میں بڑھ کر ہوتی ہے جتنا ایک موتی ... خصوصاً ایک داعی الی اللہ کا مسلک یہ ہونا چاہئے کہ برائی کا جواب برائی سے نہ دے بلکہ جہاں تک گنجائش ہو برائی کے مقابلہ میں بھلائی سے پیش آئے اگر کوئی اسے سخت بات کہے یا برا معاملہ کرے تو اس کے مقابل وہ طرز اختیار کرنا چاہئے جو اس سے بہتر ہو۔ مثلاً غصہ کے جواب میں بردباری، گالی کے جواب میں تہذیب و شائستگی اور سختی کے جواب میں نرمی اور مہربانی سے پیش آئے۔ اس طرز عمل کے نتیجہ میں تم دیکھو گے کہ سخت سے سخت دشمن بھی ڈھیلا پڑ جائیگا اور گو دل سے دوست نہ بنے تاہم ایک وقت آئیگا جب وہ ظاہر میں ایک گہرے اور گرمجوش دوست کی طرح تم سے برتاؤ کرنے لگے گا بلکہ ممکن ہے کہ کچھ دنوں بعد سچے دل سے دوست بن جائے اور دشمنی و عداوت کے خیالات یکسر قلب سے نکل جائیں کما قال عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً (سورۃ ممتحنہ رکوع ۲) ہاں کسی شخص کی طبیعت کی افتاد ہی سانپ بچھو کی طرح ہو کہ کوئی نرم خوئی اور خوش اخلاقی اس پر اثر نہ کرے وہ دوسری بات ہے مگر ایسے افراد بہت کم ہوتے ہیں۔ بہر حال داعی الی اللہ کے منصب پر فائز ہونے والوں کو بہت زیادہ صبر و تحمل اور حسن خلق کی ضرورت ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**برائی کے بدلے اچھائی کرو:** بعض علماء نے آیت کا یہ مطلب بیان کیا ہے کہ برائیاں بھی سب ایک درجے کی نہیں ہوتیں اسی طرح نیکیوں کے مراتب بھی مختلف ہوتے ہیں اب اگر کوئی دشمن کوئی بدی کرے تو اس کے مقابلہ میں بہترین اعلیٰ درجہ کی نیکی سے کام لیا جائے مثلاً کسی نے تمہارے ساتھ بد خوئی کی اور تم درگزر کرو تو یہ ایک درجہ کی نیکی ہے لیکن اگر بدی کے عوض دشمن سے بہترین سلوک کیا جائے تو یہ احسن ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ |
| اور یہ بات ملتی ہے انہی کو جو صبر رکھتے ہیں |
| وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿۳۵﴾ |
| اور یہ بات ملتی ہے اسی کو جس کی بڑی قسمت ہے ☆ |

☆ یعنی بہت بڑا حوصلہ چاہئے کہ بری بات سہار کر بھلائی سے جواب دے۔ یہ اخلاق اور یہ خصلت اللہ کے ہاں سے بڑے قسمت والے خوش نصیب اقبال مندوں کو ملتی ہے (ربط) یہاں تک اس حریف اور دشمن کے ساتھ معاملہ کرنے کا بیان تھا جو حسن معاملہ اور خوش اخلاقی سے متاثر ہو سکتا ہے لیکن ایک دشمن وہ ہے جو کسی حال اور کسی تدبیر سے دشمنی نہیں چھوڑ سکتا تم کتنی ہی خوشامد یا نرمی برتو اس کا مقصد یہی ہے کہ تم کو ہر طرح نقصان پہنچائے ایسے پکے شیطانوں سے محفوظ رہنے کی تدبیر آگے بتلاتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

وَمَا يُلَقَّاهَا یعنی بدی کے مقابلہ میں بھلائی کرنے کی خصلت صرف ان لوگوں کو ملتی ہے جو نفسانیت اور خواہشات کی مخالفت پر جمے رہتے ہیں۔

ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ بڑا خوش نصیب۔ یعنی جس کو تجلیات ذاتی و صفاتی کا بڑا حصہ ملا ہے یعنی کہ یہ اسی خصلت ملتی ہے ... جب حق کی صفات جلوہ پذیر ہو جاتی ہیں تو بری صفات نکل جاتی ہیں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ |
| اور جو کبھی چوک لگے تجھ کو شیطان |
| نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ |
| کی چوک لگنے سے تو پناہ مانگ اللہ کی بیشک وہی |
| السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿۳۶﴾ |
| ہے سننے والا جاننے والا ☆ |

**شیطان کا مقابلہ:** ☆ یعنی ایسے شیطانوں کے مقابلہ میں نرمی اور درگزر سے کام نہیں چلتا۔ بس اس سے بچنے کی ایک ہی تدبیر ہے کہ خدا کی

[illegible] جہاں شیطان کی رسائی نہیں۔ [illegible]

[illegible] شیطان [illegible] حاصل کرے۔ (تفسیر حقانی)

## شیطان کی کوشش اور اس کا ازالہ

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ [illegible] شیطان [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ |
| اور اس کی قدرت کے نمونے ہیں رات اور دن |
| وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ |
| اور سورج اور چاند بھی |

**عظمت الٰہی کے دلائل** [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] سورج [illegible] چاند [illegible]

تعالیٰ [illegible]

| |
|---|
| لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ |
| سجدہ نہ کرو سورج کو اور نہ چاند کو |
| وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ |
| اور سجدہ کرو اللہ کو جس نے ان کو بنایا |
| إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ |
| اگر تم اسی کو پوجتے ہو |

[illegible] (تفسیر عثمانی)

## اللہ تعالیٰ کے سوا کسی کو سجدہ کرنا جائز نہیں

[illegible]

[illegible] سجدہ [illegible] حکم [illegible]

[illegible]

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ

[illegible]

رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

[illegible]

وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ

[illegible]

[illegible]

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ

اور اس کی نشانی یہ کہ تو دیکھتا ہے زمین کو

خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ

[illegible]

اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا

[illegible]

لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

[illegible]

قَدِيرٌ ٣٩

[illegible]

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا

[illegible]

لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا أَفَمَنْ يُلْقَىٰ فِي

[illegible]

لَهٗ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ

ڈالا گیا وہ بہتر یا وہ جو آئے گا امن سے دن

الْقِيٰمَةِ ۭ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ

قیامت کے کیے جاؤ جو چاہو بیشک

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

جو تم کرتے ہو وہ دیکھتا ہے ۝

**ملحد کا انجام:** یہ بھی ملحد کی طرف دعوت دینے والوں کی ایذا سے آیات قرآنیہ میں کج روی اور تحریف کر کے جو مذہب ... آیات الٰہیہ کو بگاڑنے میں جو لوگ کج روی سے باز نہیں آتے، وہ یہ بھی سمجھ لیں کہ ان باتوں کو اپنی جانب شبہات پیدا کر کے چھپ کر رہتے ہیں اور اپنے تحریف کردہ مطلب کو لوگوں میں پھیلاتے ہیں، اور یہ گمان کرتے ہیں کہ ان کی حقیقت کسی کو معلوم نہیں، وہ اپنی ذات کو بھی بہت ... آیات سے ... کرتے ہیں۔ ایسے لوگوں کی چال چلنے والوں کو خوب جانتا ہے لیکن جو لوگ اپنی سزا سے بچ جانے کا گمان رکھتے ہیں، ان کو معلوم ہونا چاہئے کہ ان کی کوئی چال پوشیدہ نہیں، جس وقت ساعت آئے گی تو دیکھ لیں گے کہ حق تعالیٰ ان سے کس طرح ... ہے مجرم کو ایک دم بھی نہیں چھوڑتا۔ اسی لئے آگے فرمایا: اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ یعنی اچھا جو تمہاری سمجھ میں آئے کئے جاؤ، کر لو، بے شک تمہاری سب حرکات اس کی نظر میں ہیں ایک دن ان کا کھلا نتیجہ سامنے آ جائے گا، پھر سوچ لو کہ ایک شخص جو اپنی شرارتوں کی بدولت جہنم کی آگ میں گرے اور ایک جو اپنی شرافت و سلامت روی کی بدولت بے خوف امن و چین سے رہے دونوں میں کون بہتر ہے؟ (تفسیر عثمانی)

**الحاد کیا ہے:** اس طرح سے الحاد ایسے انحراف کو کہتے ہیں کہ ظاہر میں تو قرآن اور اس کی آیات پر ایمان و تصدیق کا دعویٰ کرے مگر ان کے معانی اپنی طرف سے ایسے گھڑے جو قرآن و سنت کی نصوص اور جمہور امت کے خلاف ہوں اور جس سے قرآن کا مقصد ہی الٹ جائے۔ حضرت ابن عباس سے اس آیت کی تفسیر میں الحاد کے معنی یہی منقول ہیں فرمایا الالحاد ہو وضع الکلام علی غیر موضعہ۔ اور آیت مذکورہ میں ارشاد لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا بھی اس کا قرینہ ہے کہ الحاد کوئی ایسی کفر ہے جس کو یہ لوگ چھپانا چاہتے تھے اس لئے اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ ہم سے اپنا کفر نہیں چھپا سکتے۔

خلاصہ یہ ہے کہ الحاد ایک قسم کا کفر خفی ہے کہ ظاہر میں قرآن و آیت قرآن کو ماننے کا دعویٰ اور اقرار ہو لیکن آیت قرآنی کے معانی اپنے گھڑے ہوئے جو صریح نصوص قرآن و سنت اور اصول اسلام کے منافی ہوں۔

امام ابو یوسف نے کتاب الخراج میں فرمایا:

کذالک الزنادقۃ الذین یلحدون وقد کانوا یظہرون الاسلام (ایسے ہی وہ زندیق لوگ جن کو ملحد کہتے ہیں جو ظاہراً اسلام کا دعویٰ کرتے ہیں)۔

اس سے معلوم ہوا کہ ملحد اور زندیق وہ ہے جو کسی ایسی آیت کا قائل ہو جائے جو ظاہر میں اسلام کا دعویٰ کرے اور حقیقت میں اس نے احکام کی تکمیل سے انحراف کو یہ بہانہ بنانے کہ قرآن کے معنی جو اپنے گھڑے ہوئے ہیں جو نصوص و خلاف اجماع امت ہوں۔

اسی لئے علماء و فقہاء نے تصریح فرمائی ہے کہ جو تاویل جو تفسیر سے مانع ہوتی ہے کسی شخص کی تفسیر یا عمل جن کی ان کے مفہوم قطعی کے خلاف ہے، وہ ضروریات دین سے مراد وہ احکام و مسائل ہیں جو اسلام اور مسلمانوں میں ایسے مشہور اور معروف ہیں کہ مسلمانوں کے عام پڑھے جاہلوں تک کو بھی ان سے واقفیت ہو، جیسے پانچ نمازوں کا فرض ہونا، صبح کی دو ظہر کی چار رکعت کا فرض ہونا، رمضان کے روزے فرض ہونا، سود شراب خنزیر کا حرام ہونا وغیرہ اگر کوئی شخص ان مسائل سے متعلق آیات قرآن میں کوئی تاویل کرے جس سے مسلمانوں کا متواتر اور مشہور مفہوم بدل جائے تو وہ باجماع امت کافر ہے کیونکہ وہ در حقیقت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیم سے انکار ہے جو ایمان کی تعریف جمہور امت کے نزدیک یہی ہے۔ تصدیق النبی صلی اللہ علیہ وسلم فیما علم مجیئہ بہ ضرورۃ یعنی نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی تصدیق کرنا ان تمام امور میں جن کا جانا بداہۃً معلوم ہو کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے تواتر کے ساتھ ثابت ہوں یہی وجہ ہے کہ ایسے احکام بھی اس کو تے ہوں۔

اس لئے کفر کی تعریف اس کے بالمقابل یہ ہوئی کہ جن چیزوں کا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے ضروری الثبوت ہونا قطعی طور پر ثابت ہو ان میں سے کسی کا انکار ہے۔

تو جو شخص ایسی قسم کی ضروریات دین میں تاویل کر کے ان کے مفہوم متواتر کو بدلے وہ آپ کی وہی رسول تعلیم کا انکار کرتا ہے۔

## اس زمانہ میں کفر والحاد کی گرم بازاری

اس زمانہ میں ایک طرف تو دینیات اور علوم دین سے جہالت اور غفلت دن بدن ترقی کر رہی ہے پڑھے لکھے لوگ جو دینی علوم یا تعلیم سے بھی ناواقف رہتے ہیں، دوسری طرف جدید بے قید تعلیم میں آزاد خیالی کا دور دورہ ہے۔ پھر اس کے اثر سے آج یورپ کے مستشرقین نے کچھ یہاں سے پیدا اسلام کے خلاف شبہات و اوہام سے متاثر ہو کر بہت سے ایسے لوگوں نے اسلام اور اصول مذہب پر طبع آزمائی شروع کر دی ہے جن کو اسلام سے صحیح ... قرآن و حدیث کے علم سے کوئی واسطہ نہیں، انہوں نے اسلام کے

متعلق اگر کچھ معلومات بھی حاصل کی ہیں تو اہل یورپ و دشمنان اسلام سے حاصل کی ہیں اور ایسے لوگوں سے قرآن و حدیث کی نصوص [illegible] کی طرح طرح کی تاویلیں کرتے ہیں جو شریعت اسلامیہ کے متعلق صحیح اور نصوص قطعیہ سے ثابت شدہ احکام کی تحریف کو اسلام کی خدمت سمجھا ہے۔ جب ان سے کہا جاتا ہے [illegible] تو یہ اسی طرح کے [illegible] نہیں [illegible]۔

اس لئے وقت کی اہم ضرورت سمجھ کر [illegible] حضرت مولانا سید محمد انور شاہ کشمیری رحمۃ اللہ علیہ نے اس مسئلہ کی تحقیق کے لئے ایک مستقل کتاب تصنیف فرمائی جس کا نام اکفار الملحدین و المتأولین فی شیء من ضروریات الدین [illegible] ہے [illegible] کے علماء اقوال [illegible] سے ثابت کیا ہے [illegible] کسی کی تاویل [illegible] نہیں [illegible] ان کی تکفیر سے مانع نہیں۔ یہ کتاب [illegible] شائع ہوئی [illegible] حضرت [illegible] مفتی [illegible] صاحب [illegible] تالیف [illegible] قرآن [illegible] خلاصہ [illegible] کر دیا ہے۔ اس کو دیکھا جا سکتا ہے [illegible] اس کا خلاصہ حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی کی ایک تحریر سے نقل کیا جاتا ہے

**الحاد کی دو قسمیں:** حضرت شاہ عبدالعزیز نے فرمایا [illegible] قرآن کی تاویل و تحریف [illegible] قرآن کی آیت مذکورہ میں ذکر فرمایا ہے اس کی دو قسمیں ہیں اول وہ [illegible] جو نصوص قطعیہ متواترہ [illegible] کے خلاف [illegible] کفر ہے [illegible] نصوص کے خلاف ہو [illegible] قریب [illegible] خلاف [illegible] ہے [illegible] قرآن و حدیث کے الفاظ میں مختلف [illegible] کی [illegible] ہے۔

آیات مذکورہ کا خلاصہ [illegible] مسلمان [illegible] قرآن [illegible] کرتے ہیں جو قرآن [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی [illegible] کے خلاف [illegible] سے [illegible] قرآن [illegible] کرتے ہیں۔

## قیامت تک اہل حق کی جماعت موجود رہے گی

حدیث [illegible] کے مطابق قیامت تک مسلمانوں میں ایک جماعت قائم رہے گی جو تحریف کرنے والوں کی تحریف کو واضح کر کے قرآن کے

[illegible] تحقیق [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] قرآن [illegible] الحجر [illegible] کی حفاظت کی ذمہ داری اللہ تعالیٰ نے [illegible] ہے [illegible]۔

کہ بے شک ملحدوں [illegible] قرآن اور حدیث [illegible] فرمایا [illegible] فی ایٰتنا [illegible] آیات [illegible] تکذیب [illegible] تعالیٰ کی آیات [illegible] ملحدوں [illegible] تکذیب کرنے [illegible] قرآن کی قرأت کے وقت [illegible] قرآن کے معانی میں تحریف کرنے والے [illegible] کرنے والے سب [illegible] میں۔

[illegible]

[illegible] (تفسیر مظہری)

**اللہ تعالیٰ کی [illegible]** [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] خدا تعالیٰ کی [illegible] ایک [illegible] کا [illegible]

[illegible]

**اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا**

جو لوگ منکر ہوئے نصیحت [illegible]

**جَآءَهُمْ**

جب آئی ان کے پاس [illegible]

[illegible] قرآن [illegible] جماعت [illegible]

**وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِیْزٌ ۙ لَّا یَاْتِیْهِ**

اور وہ کتاب ہے نادر اس پر

الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ

جھوٹ [illegible] نہیں [illegible] سکتا ہے

وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِنْ

اور نہ پیچھے سے اتاری ہوئی ہے

حَكِيمٍ حَمِيدٍ (٤٢)

حکمتوں والے سب تعریفوں والے کی

[illegible] کتاب میں جھوٹ [illegible] آئے سے [illegible] کتاب کی حفاظت کا [illegible] باطل کی [illegible] نہیں گھس سکتے۔ (تفسیر عثمانی)

## قرآن پاک کی تحریف میں کوئی کامیاب نہیں ہو سکتا

[illegible] شیطان [illegible] قرآن میں کوئی [illegible] شیطان [illegible] قرآن [illegible] باطل [illegible] قرآن [illegible] [illegible]

[illegible] باطل [illegible] باطل سے مراد [illegible] [illegible] (تفسیر [illegible])

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ

تجھ کو وہی کہتے ہیں جو کہہ چکے ہیں

لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ

سب رسولوں کو تجھ سے پہلے تیرا رب کے

لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ

یہاں معافی [illegible] [illegible] ہے

أَلِيمٍ (٤٣)

دردناک [illegible]

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] [illegible] ہمیشہ [illegible] [illegible] [illegible] ہوں گے۔ (تفسیر [illegible])

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا

اور اگر ہم اس کو کرتے قرآن اوپری زبان کا تو کہتے

لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ءَأَعْجَمِيٌّ

کیوں نہ کھولی گئیں اس کی آیتیں کیا اوپری زبان کی کتاب

وَعَرَبِيٌّ

اور عربی آدمی

[illegible] قرآن [illegible] عربی [illegible] [illegible] (تفسیر [illegible])

آیت کا شان نزول [illegible] رسول اللہ [illegible] [illegible]

قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى

تو کہہ یہ ایمان والوں کے لئے سوجھ ہے اور روگ

وَشِفَآءٌ

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ

وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى

اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ

بَعِيْدٍ

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

فَاخْتُلِفَ فِيْهِ

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ

اَسَآءَ فَعَلَيْهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ

لِّلْعَبِيْدِ

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ

وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا

[illegible]

وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ

[illegible]

علم الٰہی [illegible]

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي

[illegible]

قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ

[illegible]

کافروں کی [illegible]

[illegible]

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن

[illegible]

قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ

[illegible]

[illegible]

لَا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن

[illegible]

مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ

[illegible]

رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ

[illegible]

لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً

[illegible]

وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ

[illegible]

لَلْحُسْنَىٰ

[illegible]

انسانی طبیعت کی نیرنگیاں [illegible]

[illegible]

لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ [illegible]

[illegible]

فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا

سو ہم جتلا دیں گے منکروں کو جو انہوں نے کیا ہے

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ۝

اور چکھائیں گے ان کو ایک گاڑھا عذاب

[illegible]

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ

اور جب ہم نعمت بھیجیں انسان پر تو ٹلا جائے اور موڑ لے

بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ

اپنی کروٹ اور جب لگے اس کو برائی تو دعائیں کرے

عَرِيْضٍ۝

چوڑی

[illegible]

[illegible]

**کافر اور مومن کی حالت:** [illegible]

[illegible]

**مسئلہ:** [illegible]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

تو کہہ بھلا دیکھو تو اگر یہ ہو اللہ کی طرف سے

ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ

پھر تم نے اس کو نہ مانا پھر اس سے گمراہ کون جو ہو

شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ۝

جو دور چلا جائے مخالفت میں

**انسانی امراض کا علاج:** [illegible]

[illegible]

سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ

[illegible]

حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ

[illegible]

[illegible]

أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ

| کیا | تیرا | رب | تھوڑا | ہے | ہر |
|---|---|---|---|---|---|

شَيْءٍ شَهِيدٌ

[illegible]

[illegible]

## آیت کے مختلف معانی:

[illegible]

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ

[illegible]

أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ

[illegible]

[illegible]

وہ شخص جن کو خوف میں یہ سورۃ ان ہاتھ سے اللہ کل سے اللہ نکالے گا۔

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً

سورۃ شوریٰ مکہ میں نازل ہوئی اس میں تریپن آیتیں اور پانچ رکوع ہیں

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

﴿شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے﴾

حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ

اسی طرح وحی بھیجتا ہے تیری طرف

وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ

اور تجھ سے پہلوں کی طرف اللہ زبردست

الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

حکمتوں والا اسی کا ہے جو کچھ ہے آسمانوں میں اور

الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

زمین میں اور وہی ہے سب سے اوپر بڑا ☆

**شانِ حکمت** :- یعنی جس طرح یہ سورۃ (جو نہایت اعلیٰ و افضل مضامین پر مشتمل ہے) آپ کی طرف وحی کی جا رہی ہے ایسے ہی اللہ تعالیٰ کی عادت آپ کی طرف اور دوسرے انبیاء کی طرف وحی بھیجنے کی رہی ہے۔ جس سے اس کی شانِ حکمت (حکومت) کا اظہار ہوتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

جابر اور عکرمہ سے منقول ہے فرمایا یہ سورت مکہ کرمہ میں نازل ہوئی۔

اس سورۃ کو سورۃ حٰمٓ عٓسٓقٓ بھی کہا جاتا ہے۔ (معارف القرآن)

**حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ کو الگ کرنے کی وجہ**

حٰمٓ عٓسٓقٓ: بغوی نے لکھا ہے کہ حسین بن فضل سے دریافت کیا گیا کہ حٰمٓ عٓسٓقٓ کے دو ٹکڑے کیوں کئے (یعنی حٰمٓ کو عٓسٓقٓ سے جدا کیوں کیا گیا) اور کٓهٰيٰعٓصٓ کے دو ٹکڑے نہیں کئے گئے۔ حسین نے جواب دیا جن سورتوں کو حٰمٓ سے شروع کیا گیا ان میں سے یہ بھی ایک سورت ہے اس لئے اس دوسری سورتوں کی طرح اس کا آغاز بھی (مستقل طور پر) حٰمٓ سے کیا گیا (اور کہنے کے سورت کا آغاز نہیں کیا گیا اس لئے مستقل نہیں) بے لگا کر کٓهٰيٰعٓصٓ کر دیا گیا۔

**حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ کا معنی** :- عکرمہ راوی ہیں کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا ح اللہ کا حلم اور م اللہ کی مجد اور ع اللہ کا علم اور س اللہ کی سناء

(زندگی یا نور) اور ق اللہ کی قدرت۔ اللہ نے ان کی قسم کھائی ہے۔ یہ بھی حضرت ابن عباس کا قول کہا جاتا ہے کہ ہر صاحب کتاب نبی کے پاس حٰمٓ عٓسٓقٓ کی وحی بھیجی گئی۔ (تفسیر مظہری)

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ

قریب ہے کہ آسمان پھٹ پڑیں اوپر سے

**پھٹ پڑنے کی وجہ** :- یعنی آسمان پھٹ پڑیں اللہ تعالیٰ کی عظمت و جلال کے زور سے یا بے شمار فرشتوں کے بوجھ سے یا ان کے ذکر کی کثرت سے قریب ہے کہ پھٹ پڑیں۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ آسمانوں میں چار انگشت جگہ نہیں جہاں کوئی فرشتہ سر بسجود نہ ہو اور بعض نے آیت کا مطلب یہ لیا ہے کہ جب مشرکین خدا تعالیٰ کے لئے شریک اور بیٹے بیٹیاں ٹھہراتے ہیں تو قدرت کی جناب میں ایسی سخت گستاخی ہے جس سے کچھ بعید نہیں کہ آسمان اوپر کی جانب تک پھٹ کر ٹکڑے ہو جائے گا۔ قال تعالیٰ سورۃ مریم "تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا" مگر اللہ کی شانِ مغفرت و رحمت اور ملائکہ کی تسبیح و استغفار کی برکت سے یہ نظام تھما ہوا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ

اور فرشتے پاکی بولتے ہیں خوبیاں اپنے رب کی

وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ

اور گناہ بخشواتے ہیں زمین والوں کے ☆

**فرشتوں کی دعا** :- یعنی اللہ تعالیٰ مومنین کی خطا لغزش کو معاف فرمائے اور کفار کو ہدایت دے کہ سچی توبہ کر کے بخشش کے حقدار ہوں۔ (تفسیر عثمانی)

**فرشتوں کی تسبیح و تحمید** :- یعنی فرشتے اللہ کی طرف صاحب عیوب ہونے کی نسبت کرتے ہیں اور ایسی باتیں اس کی ذات میں مانتے ہیں جو کسی طرح اس کی شان کے مناسب نہیں۔ ان سب سے فرشتے اللہ کے پاک ہونے کا اظہار کرتے ہیں خصوصاً ایسی حالت میں جبکہ عظمت الٰہیہ کا مشاہدہ کرتے ہیں تو اور زیادہ تسبیح میں مشغول رہتے ہیں۔

وَيَسْتَغْفِرُوْنَ :- یعنی مومنوں کے لئے معافی کے طلبگار ہوتے ہیں کیونکہ مومنوں کے ساتھ ان کا ایمان میں شرکت حاصل ہے اور اس شرکت ایمانی کا تقاضا ہے کہ اہل ایمان کے لئے دعائے مغفرت کریں۔ (تفسیر مظہری)

أَلَآ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ۝

سنتا ہے وہی (اللہ) معاف کرنے والا مہربان ☆

اللہ تعالیٰ کی مہربانی ☆ یعنی اپنی مہربانی سے فرشتوں کی دعا قبول کر کے مومنین کی خطاؤں کو معاف کرتا ہے اور کافروں کو ایک مدت کے لئے مہلت دیتا ہے ورنہ جیسا کہ سارا انکار، مخلوقات پر ظلم و دین میں ہوتا ہے سب برہم ہو جاتے۔ (تفسیر عثمانی)

وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهُ

اور جنہوں نے پکڑے ہیں اس کے سوائے رفیق اللہ

حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم

کو وہ سب یاد ہیں اور تجھ پر نہیں ان کا

بِوَكِيلٍ ۝

ذمہ ☆

اللہ تعالیٰ حفیظ ہیں ☆ یعنی دنیا میں مشرکین کو مہلت دے رہا ہے لیکن یہ نہ سمجھو کہ وہ ہمیشہ کے لئے بچ گئے ان کے سب اقوال و احوال اللہ کے ہاں محفوظ ہیں جو وقت پر کھول دیئے جائیں گے۔ آپ اس فکر میں نہ پڑیں کہ یہ مانتے کیوں نہیں، نہ ماننے کی صورت میں فوراً نتیجہ کیوں نہیں کر دیئے جاتے۔ آپ ان باتوں کے ذمہ دار نہیں صرف پیغام حق پہنچا دینے کے ذمہ دار ہیں۔ آگے اللہ کا کام ہے وقت آنے پر ہم ان کا سب حساب چکا دیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا

اور اسی طرح اتارا ہم نے تجھ پر قرآن عربی زبان کا

لِّتُنذِرَ أُمَّ ٱلْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا

کہ تو ڈر سنا دے بڑے گاؤں کو اور اس کے آس پاس والوں کو ☆

اُمّ القریٰ ☆ "ام القریٰ" (بڑا گاؤں) فرمایا مکہ معظمہ کو کہ سارے عرب کا مرجع وہاں تھا اور ساری دنیا کی اللہ کا گھر وہیں ہے اور وہی گھر سارے زمین پر سب سے پہلی عبادت گاہ قرار پائی۔ بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ ابتدائے آفرینش میں اللہ تعالیٰ نے زمین کو اسی جگہ سے پھیلانا شروع کیا جہاں خانہ کعبہ واقع ہے اور مکہ کے آس پاس سے اول ملک عرب اس کے بعد ساری دنیا مراد ہے۔ (تفسیر عثمانی)

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا "مکہ" کو خطاب

امام احمد نے مسند میں حضرت عدی بن حمراء زہری سے روایت کی ہے۔ انہوں نے فرمایا کہ میں نے رسول اللہ ﷺ سے اس وقت سنا جبکہ آپ (مکہ مکرمہ سے ہجرت کر رہے تھے اور) بازار مکہ کے مقام حزورہ میں تھے کہ آپ ﷺ نے مکہ مکرمہ کو خطاب کر کے فرمایا۔

انک لخیر ارض اللہ واحب ارض اللہ الی اللہ ولولا انی اخرجت منک لما خرجت (رواہ احمد والترمذی والنسائی وابن ماجہ وقال الترمذی ھذا حدیث حسن صحیح) (تو میرے نزدیک اللہ کی ساری زمین سے بہتر ہے اور ساری زمین سے زیادہ محبوب ہے اگر مجھے اس زمین سے نکالا نہ جاتا تو میں اپنی مرضی سے کبھی اس زمین کو نہ چھوڑتا)۔ معارف القرآن

## "مکہ" علمائے محققین کی نظر میں:

امام راغب فرماتے ہیں کہ مکہ مکرمہ کو ام القریٰ اس وجہ سے کہا جاتا ہے کہ کرۂ ارض کی ابتداء یہیں سے ہوئی کہ زمین کے اس حصے میں اصل نقطۂ مرکز یہی ہے جیسا کہ بعض روایات میں ہے کہ پانی کی سطح پر اللہ رب العزت نے پہلے جھاگ کی طرح ایک ٹکڑا چادر ظاہر فرمایا اور پھر اسی سے ساری زمین پھیلائی اور پھیلائی گئی تو تمام آبادی عالم اور خطۂ زمین کے لئے یہی جگہ اصل ہوئی اور اصل کو ام یعنی ماں کہا جاتا ہے۔ امام بغوی اور شیخ قشیری نے بھی اسی کو اختیار کیا ہے اور یہ کہ لفظ ام القریٰ یعنی زمین کی ناف ہے اور تمام دنیا اس کے اردگرد پھیلائی گئی۔ اگرچہ جانب شمال میں آبادی زیادہ ہے بہ نسبت جنوب کی جانب کے۔

آیۂ مبارکہ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ کی تفسیر میں حافظ ابن کثیرؒ اور ابن جریر طبری نے بھی بیان کیا کہ روئے زمین کی آبادی کی اصل یہی سرزمین مکہ ہے جہاں اللہ سے پہلے اس کا عرش پانی پر تھا، اللہ نے ایک ہوا چلائی جس نے پانی کی لہروں کو حرکت دی اور پانی کی سطح پر ایک بلند ٹیلہ سا ابھرا جو جھاگ کی شکل کا تھا پھر اسی سے اللہ نے تمام زمین کو پھیلا دیا اور جیسا کہ زمین کو پانی پر بچھایا گیا، متعدد روایات سے ثابت ہے زمین کا یہ ٹکڑا سب سے پہلا اللہ نے پیدا فرمایا اور یہ جگہ کعبۃ اللہ کی جگہ ہے، یہ جگہ روئے زمین کے واسطے نقطہ مرکز بن گیا۔ اس جغرافیائی مرکزیت کے ساتھ اللہ نے اس کو مرکزی مرکزیت بھی عطا کر دی کہ روئے زمین کے باشندوں کو اسی کی طرف عبادت کا حکم دیا۔ حضرت آدم علیہ السلام کے لئے اسی جگہ جنت سے موتیوں کا خیمہ اتارا گیا تھا جس کا انہوں نے طواف کیا۔ بعد میں اسی جگہ بیت اللہ کی عمارت قائم ہوئی۔ تفصیل کے لئے ناچیز کی کتاب تاریخ الحرمین کا ملاحظہ فرمائیں۔

حضرت ابراہیم علیہ السلام کی سرزمین مکہ میں آمد اور اس کی آبادی

تاریخی روایات سے ثابت ہے کہ طوفان نوح علیہ السلام کے بعد جب

[illegible]

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی خصوصیت

[illegible]

[illegible]

قیامت یقینی ہے

[illegible]

ثبات تقدیر

[illegible]

یوم الجمع [illegible]

فریق فی الجنۃ [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ فَرِيقٌ |
| اور جمع ہونے کے دن سے جس کے آنے میں کوئی شک نہیں ڈرا دے ایک گروہ |
| فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ |
| جنت میں ہوگا اور ایک گروہ جہنم میں |

[illegible]

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً

اور اگر چاہتا اللہ تو سب لوگوں کو کر دیتا ایک ہی فرقہ

وَلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ

لیکن وہ داخل کرتا ہے جس کو چاہے اپنی رحمت میں

وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ

اور گنہگار جو ہیں ان کا کوئی نہیں رفیق

وَّلَا نَصِيْرٍ

اور نہ مددگار

**قدرت اور حکمت** [illegible]

[illegible]

## کافروں کا عذاب کوئی بھی دفع نہ کر سکے گا

[illegible]

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ

کیا انہوں نے پکڑے ہیں اس کے سوا کام بنانے والے سو اللہ

هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى

جو ہے وہی ہے کام بنانے والا اور وہی جلاتا ہے مردوں کو اور وہ ہر

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

چیز کر سکتا ہے

[illegible]

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ

اور جس بات میں جھگڑا کرو تم لوگ کوئی چیز ہو

فَحُكْمُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ

اس کا فیصلہ ہے اللہ کے حوالے وہ اللہ

[illegible]

## حکم صرف اللہ کا ہے رسول اور اولی الامر وغیرہ سب کا حکم بھی اسی کے تابع ہے

☆ یعنی جس معاملہ میں کوئی بھی جھگڑا ہو، دین میں ہو یا دنیا میں، اس کا فیصلہ اللہ ہی کی طرف ہے، کیونکہ اصل حکم صرف اللہ ہی کا ہے جیسا کہ دوسری آیت میں ارشاد ہے۔ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ۔ اور دوسری آیات میں اولو الامر کے حکم میں رسول کو اور بعض آیات میں اولو الامر کو بھی شامل فرمایا گیا ہے، وہ اس کے منافی نہیں کیونکہ رسول یا اولو الامر جو کچھ فیصلہ یا حکم کرتے ہیں وہ ایک حیثیت سے اللہ تعالیٰ ہی کا حکم ہوتا ہے۔ رسول تو بحیثیت پیغام بر کتاب و سنت ہے تو اس کا حکم اللہ ہی کا حکم ہے اور اگر چہ اجتہاد سے ہے تو چونکہ اجتہاد کا مدار بھی نصوص قرآن و سنت پر ہوتا ہے اس لئے وہ بھی ایک حیثیت سے اللہ ہی کا حکم ہے۔ مجتہدین امت کے اجتہادات بھی اسی حیثیت سے حکم الٰہی میں داخل ہیں۔ کیونکہ جو مسائل قرآن و سنت کی صراحت میں نہیں ملتے ان کے حق میں حق تعالیٰ کی طرف سے یہی حکم ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

> ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝
>
> یہی اللہ میرا رب ہے، میں نے اسی پر بھروسہ رکھا ہے اور اسی کی طرف رجوع کرتا ہوں ☆

☆ یعنی تمام کاموں میں اسی پر بھروسہ رکھتا ہوں اور ہر معاملہ میں اسی کی طرف رجوع ہوتا ہوں۔ (تفسیر عثمانی)

> فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ
>
> بنا نکالنے والا آسمانوں کا اور زمین کا، بنا دیے تمہارے
>
> لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ
>
> واسطے تمہی میں سے جوڑے اور چوپایوں
>
> الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا
>
> میں سے جوڑے ☆

☆ یعنی چوپایوں میں سے ان کے جوڑے بنا دیے (نر و مادہ)۔ چونکہ وہ بھی تمہارے کام آتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

> يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ
>
> بکھیرتا ہے تم کو اسی طرح

یعنی اسی طریق سے تمہاری نسل کو پھیلاتا ہے اور جوڑوں کے ملنے سے توالد و تناسل کا سلسلہ جاری ہے، زمین پر اپنی روزی اور معیشت کا نظم قائم کر لیتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

> لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۚ
>
> نہیں ہے اس کی طرح کا سا کوئی ☆

## اس کی مثل کوئی نہیں

☆ نہ اس کی ذات میں اس کا کوئی ہمسر، نہ صفات میں، نہ اس کے افعال و فیصلوں کی طرح کسی کا حکم اور فیصلہ، جو بندوں کے دین کی طرح کامل ہو، جو تمام عالم کو اپنا مسخر رکھتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

مثل کا لفظ زائدہ ہے مطلب یہ ہے کہ اس کی نظیر کوئی نہیں ہے مگر کے لفظ کی زیادتی مفید تاکید ہے جس طرح ایک اور آیت میں آیا ہے فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ بعض کے نزدیک کمثلہ میں کاف زائد ہے یعنی اس کی مثل کوئی نہیں جو اس کی صفات اور افعال سے ہو، قرآن کی آیت ہے۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا اس کی کوئی نظیر نہیں ہے۔ (تفسیر مظہری)

> وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝
>
> اور وہی ہے سننے والا دیکھنے والا ☆

## اللہ کا دیکھنا سننا مخلوق کی طرح نہیں ہے

☆ یعنی بے شک وہ ہر چیز کو دیکھتا سنتا ہے مگر اس کا دیکھنا سننا مخلوق کی طرح نہیں۔ اس کی ذات میں سب ہے کوئی مثل ایسا نہیں جس کی کیفیت بیان کی جا سکے کیونکہ اس کی نظیر کہیں موجود نہیں، مخلوق کی مشابہت اور مماثلت سے بالکلیہ پاک اور مقدس و منزہ ہے پھر اس کی صفات کی کیفیت کس طرح سمجھ میں آ سکے۔ (تفسیر عثمانی)

## لیس کمثلہ سے ہونے والے ایک وہم کا ازالہ

☆ یہ جو فرمایا کہ وہی سننے والا دیکھنے والا ہے، یعنی اس میں یہ بتایا کہ وہ بھی حقیقت میں سننے اور دیکھنے والا ہی ہے، اور اس سے سننے اور دیکھنے کی صفات ثابت ہوتی ہیں۔ لیس کمثلہ شیء سے صفات کی نفی کا وہم ہو سکتا تھا کہ جب اس کا مثل نہیں تو اس کے اندر کوئی بھی صفت نہیں ہوگی، اس وہم کو دفع کرنے کے لئے یہ فرمایا۔ (تفسیر مظہری)

> لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ
>
> اسی کے پاس ہیں کنجیاں آسمانوں کی اور زمین کی

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ

پھیلا دیتا ہے روزی جس کے لئے چاہے اور ماپ کر دیتا ہے

اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ

وہ ہر چیز کی خبر رکھتا ہے

## تمام خزانوں کا مالک اللہ ہے

[illegible]

[illegible]

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۔ [illegible] (ترجمہ قرآن) [illegible]

اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ۔ [illegible]

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ

راہ ڈال دی تمہارے لئے دین میں وہی جس کا حکم کیا تھا

نُوْحًا وَّالَّذِیْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا

نوح کو اور جس کا حکم بھیجا ہم نے تیری طرف اور جس کا

وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى

حکم کیا ہم نے ابراہیم کو اور موسیٰ کو

وَعِيْسٰٓى

اور عیسیٰ کو

## اولوالعزم انبیاء

[illegible]

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی اولیت

[illegible]

[illegible]

## نوح علیہ السلام کو ذکر میں مقدم کرنے کی وجہ

[illegible]

## دین اسلام ہی تمام انبیاء کا دین ہے

[illegible]

یہ دین اسلام تمام انبیاء کا اللہ کی ذات اور صفات کا اور ان کے نبیوں اور ان کی کتابوں کو ماننے اور مرنے کے بعد دوبارہ زندہ ہونے کا اقرار کرنا ہے۔ جو کچھ وہ لے کر آئے سب کو ماننا اور ان کے حکم پر چلنا اور [illegible] جیسا کہ بیان ہوا اصل تمام شریعتوں میں [illegible] سب شریعتیں اس پر متفق ہیں۔ بعض عملی احکام منسوخ ہوتے [illegible] دین میں اختلاف پر دلالت نہیں کرتا (یعنی بعض شریعتوں کے بعض عملی احکام کو شریعت محمدیہ یا شریعت عیسویہ میں منسوخ کر دیے گئے تو اس سے دین وحدت میں کوئی فرق نہیں آتا) اس لئے تو آپ ہی کے احکام میں اختلاف اوقات میں ہوا ہے خود رسول اللہ ﷺ نے ہجرت کے بعد بیت المقدس کی طرف نماز پڑھی پھر یہ حکم منسوخ ہو گیا اور کعبہ کی طرف منہ کرنے کا حکم ہوا اس اختلاف حکم سے دین اسلامی کی وحدت پر کوئی اثر نہیں پڑا اسی طرح مختلف انبیاء کی شریعتوں میں اگر بعض فروعی احکام میں اختلاف ہے تو اس سے دین کا اختلاف لازم نہیں آتا سب کا دین ایک ہی ہے یعنی اللہ کے احکام کی اطاعت اور عبادت ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ |
| یہ کہ قائم رکھو دین کو اور اختلاف نہ ڈالو اس میں |

جو بعثت سب انبیاء ... اس کی بعثت کا مقصود واضح ہے [illegible] جیسے [illegible] ہے تو تم بھی اس دین میں کسی طرح کی تفرق اختلاف اور [illegible] نہیں (معارف)

## اقامت دین فرض اور اس میں تفرق حرام ہے

یہ بھی ظاہر ہے کہ دین مشترک جس کی انبیاء علیہم السلام کو تاکید کی گئی وہ [illegible] رسالت و آخرت وغیرہ اصول دین ہیں۔ فروعات جو [illegible] جن میں ان انبیاء کی شریعتوں میں باہم فرق ہے ان کو [illegible] کا حکم ہے جو سب ادیان اور شریعتوں میں مشترک ہے جیسے توحید وغیرہ اسی طرح قرآن سے ثابت ہے کہ فروعی احکام میں انبیاء کی شریعتوں میں اختلاف بھی ہے جیسے ارشاد ہے۔ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا۔ اس مجموعہ سے ثابت ہوا کہ آیت کے اس حصہ میں جس دین کی اقامت کا حکم اور اس میں تفرق کی ممانعت مذکور ہے وہ وہی اصول عقائد ہیں جو سب انبیاء علیہم السلام کی شریعتوں میں مشترک اور متفق علیہ چلے آئے ہیں۔ انہیں میں تفرق و اختلاف حرام اور موجب ہلاکت امم ہے۔

حدیث: حضرت عبداللہ بن مسعودؓ فرماتے ہیں کہ ایک روز رسول اللہ ﷺ نے ہمارے سامنے ایک سیدھا خط کھینچا پھر اس خط کے داہنے بائیں اور بہت سے خط کھینچ کر فرمایا کہ یہ داہنے بائیں کے خطوط وہ طریقے ہیں جو شیطان نے ایجاد کئے ہیں اور ان کے ہر راستہ پر ایک شیطان مسلط ہے جو لوگوں کو اس طرف چلنے کی تلقین کرتا ہے۔ پھر سیدھے خط کی طرف اشارہ کر کے فرمایا وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ۔ یعنی یہ میرا سیدھا راستہ ہے تم اسی کا اتباع کرو۔ (رواہ احمد والنسائی والدارمی۔ مظہری)

اس حدیث میں صراط مستقیم سے وہی دین قیم کا راستہ ہے جو سب انبیاء علیہم السلام میں مشترک چلا آ رہا ہے۔ اس کے اندر تفرقہ ڈالنا تفرق مذموم و شیطانی عمل ہے۔ اور انہیں اجماعی و متفق علیہ امور میں تفرقہ ڈالنے کی مذمت احادیث کثیرہ میں آئی ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: من فارق الجماعة شبرا فقد خلع ربقة الاسلام من عنقه۔ (رواہ احمد وابوداؤد) یعنی جس شخص نے جماعت مسلمین سے ایک بالشت بھی جدائی اختیار کی اس نے اسلام کا قلادہ اپنی گردن سے نکال دیا۔ اور ترمذی نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ید اللہ علی الجماعة (رواہ الترمذی بسند حسن) یعنی اللہ کا ہاتھ ہے جماعت پر اور معاذ بن جبلؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ شیطان انسان کے لئے بھیڑیا ہے جیسے بکریوں کے گلے کے لئے بھیڑیا ہوتا ہے وہ اسی بکری کو پکڑتا ہے جو اپنے گلے سے پیچھے یا الگ رہ جاتی ہے۔ اس لئے تمہیں چاہئے کہ جماعت کے ساتھ وابستہ رہو۔

## آئمہ مجتہدین کے فروعی اختلافات

## تفرق ممنوع میں داخل نہیں

اس سے یہ بھی واضح ہو گیا کہ فروعی مسائل میں جن کا قرآن و حدیث میں کوئی صریح حکم مذکور نہیں یا قرآن و سنت میں کوئی ظاہری تعارض ہے جس کی وجہ سے مجتہد نے اپنے اجتہاد سے کوئی حکم متعین کیا جس میں باہم اختلاف ہوا وہ اختلاف اس تفرق میں داخل نہیں جو آیت مذکورہ میں ممنوع ہے۔ یہ اختلاف صحابہ و تابعین میں شروع سے چلا آتا ہے اور باہمی رحمت ہے۔

اقامت دین سے مراد اس پر قائم رہنا ہے اس میں کسی طرف اشتباہ نہ ہو [illegible] میں کوئی خلل نہ آنے دینا ہے (قرطبی) (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ |
| بھاری ہے شرک کرنے والوں کو وہ چیز جس کی طرف |
| اَللّٰهُ يَجْتَبِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ |
| تو ان کو بلاتا ہے اللہ چن لیتا ہے اپنی طرف سے جس کو چاہے |

وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ﴿١٣﴾

[illegible]

## جہالت اور ضد کی انتہا

[illegible]

[illegible]

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ

[illegible]

الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

[illegible]

مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى لَقُضِيَ

[illegible]

بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِنْ

[illegible]

بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿١٤﴾

[illegible]

[illegible]

**بَغْيًا بَيْنَهُمْ کا معنی** [illegible]

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ

سو اسی طرف بلا اور قائم رہ جیسا کہ تجھ کو حکم ہوا ہے

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ

اور مت چل ان کی خواہشوں پر اور کہہ میں یقین لایا ہر کتاب پر جو اتاری

اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ۗ

اللہ نے اور مجھ کو حکم ہے کہ انصاف کروں تمہارے بیچ میں

اللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۗ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ

اللہ رب ہے ہمارا اور تمہارا ہم کو ملیں گے ہمارے کام اور تم کو

اَعْمَالُكُمْ ۗ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۗ اَللّٰهُ

تمہارے کام کچھ جھگڑا نہیں ہم میں اور تم میں اللہ

يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۗ

اکٹھا کرے گا ہم سب کو اور اسی کی طرف پھر جانا ہے

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا فرض

پس جب دین حق کے متعلق تفرقہ و اختلاف کے طوفان ہر طرف سے اٹھ رہے ہیں تو آپ کا فرض یہ ہے کہ پوری جرأت و عزم کے ساتھ اسی دین واحد کی طرف لوگوں کو بلاتے رہیں جس کی دعوت نوح اور ان کے بعد تمام انبیاء علیہم السلام دیتے چلے آئے ہیں آپ اپنے پروردگار کے حکم کے موافق اس پر قائم اور مستقیم رہیں اور کسی کی راہ پر چلنے کی طرف التفات نہ کریں جب تک مخالفین اور معاندین کی خواہشات کی پروا نہ کریں ان سے صاف صاف کہہ دیں کہ میں تو خدا کی طرف کی ہر بات پر یقین رکھتا ہوں جو کتاب بھی اللہ نے اتاری ہو میں اس کو مانتا ہوں، کوئی سچی کتاب ہو میں اس کے منکر نہیں مجھ کو حکم ملا ہے کہ تمہارے درمیان انصاف کروں، یعنی خدا نے یہ حکم دیا ہے کہ تمہارے درمیان انصاف کروں جو فیصلہ تم نے اٹھا رکھے ہیں ان کا فیصلہ عدل و انصاف سے کروں، اور تبلیغ احکام و شرائع اور فصل خصومات میں عدل و مساوات کا اصول قائم رکھوں یہ نہیں کہ کسی جگہ یا کسی مذہب میں فرق کروں بلکہ جیسا کرنا ہو سب کی بہتری اور خیر خواہی کی طرف بلاؤں اور سب سے پہلے میں خود ان احکام کی پوری تعمیل کروں جن کا مجھ کو حکم دیا گیا ہے

ہدایت کرے۔ مگر آج کسی سے چھپا ہوا نہیں کہ تمہارا اور ہمارا سب کا رب وہی ہے اس لئے ہم سب ہی کو اس کی خوشنودی کے لئے کام کرنا چاہئے اگر تم میری بات کو نہیں مانتے تو تم سے کوئی تعلق نہیں۔ ہم سب ایک رب کے بندے اور اسی کے محکوم ہیں تم میں سے کوئی اپنے عمل کا ذمہ دار ہے۔ ہر ایک کا عمل اس کے ساتھ ہے وہ اسی کے آگے آئے گا۔ چاہئے کہ اس کے نتائج برداشت کرنے کے لئے تیار رہے۔ بہرحال ہم کو تم سے جھگڑنے اور بحث و تکرار کی ضرورت نہیں سب کو خدا کی عدالت میں حاضر ہونا ہے وہاں جاکر ہر ایک کو اپنا پتہ لگ جائے گا کہ وہ راستہ کیا ہے جو کرا لایا ہے۔ (عثمانی) یہ بات تھی جب تک ان کی آیتیں صرف نازل ہو رہی تھیں۔ تحقیق۔

آیت کا شان نزول:

ابن المنذر نے عکرمہ کا قول نقل کیا ہے کہ جب سورۃ اذا جاء نصر الله والفتح ورأيت الناس يدخلون في دين الله افواجا نازل ہوئی تو مشرکوں نے کہا کہ جن لوگوں کے درمیان میں یہ موجود تھے کہ لوگ خدا کے دین میں گروہ در گروہ داخل ہو گئے تم بھی یہاں سے چلے جاؤ تب اللہ نے یہ آیت نازل فرمائی۔ (تفسیر مظہری)

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

اور جو لوگ جھگڑا ڈالتے ہیں اللہ کی بات میں جب لوگ اس کو

مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ

مان چکے ان کا جھگڑا باطل ہے ان کے

رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ

رب کے یہاں اور ان پر غصہ ہے اور ان کو سخت

شَدِيْدٌ ۝

عذاب ہے

## اہل کتاب کے جھگڑے

بعض اہل کتاب جب ان کی کتاب منسوخ ہوگئی اور ان کا جانشین مسلمان ہوگئے تو اسلام کے مقابلہ میں حجت بازی کرنے کے لئے اور اپنی برتری کا اظہار کرنے لگے۔ مگر جب اسلام غالب ہوگیا اس کے بعد جو لوگ ان کو جھگڑا کرنے لگے ایسے لوگوں کی حجتیں خدا کے نزدیک باطل ہیں وہ خدا کے غضب اور سخت عذاب کے مستحق ہیں کیونکہ ان کے جھگڑے محض بے اصل ہیں اور تعصب و عناد پر مبنی ہیں (مظہری)

مجاہدؒ اور قتادہؒ سے قریب قریب یہی قول نقل کیا ہے کہ جھگڑنے والوں سے مراد یہودی اور عیسائی (یعنی اہل کتاب) ہیں جو کہا کرتے تھے کہ ہماری کتاب تمہاری کتاب سے پہلے اور ہمارے پیغمبر تمہارے پیغمبر سے پہلے ہیں اس لئے ہم تم سے بہتر ہیں اور ہماری کتاب بھی پہلے اتری ہے۔

من بعد ما استجیب له، یعنی اس کے کہ لوگوں نے اس کی دعوت قبول کر لی اور مسلمان ہو گئے اور ہدایت کے راستے پر چل پڑے اور خدا کے نیک بندے شامل ہو گئے۔

حجتهم داحضة، ان کا جھگڑا اور بحث کرنا باطل ہے یہ مطلب ہے کہ جس بات کو وہ اپنی دلیل و حجت خیال کرتے ہیں حقیقت میں وہ کچھ بھی نہیں بلکہ بے بنیاد شبہ ہے (وہ وہم کو علم سمجھتے ہیں)

وعلیهم غضب، اور یہ لوگ جو جھگڑا کرتے ہیں ان پر اللہ کا غضب ہونے والا ہے۔

ولهم عذاب شدید، اور آخرت میں ان کے لئے سخت عذاب تیار ہے۔

**اللّٰهُ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَ الْمِیْزَانَ**

اللہ وہی ہے جس نے سچائی کے ساتھ کتاب نازل کی اور ترازو بھی

ترازو و عدل: یعنی ترازو کی اصل اور حقیقت ہی وہ ہے جس کو عدل کہتے ہیں اور یہی انصاف ہے [illegible] اور انصاف ہی سب سے بڑی ترازو ہے جو حق و ناحق کے درمیان فیصلہ کرتی ہے اور جس کا ذکر [illegible] کیا گیا ہے۔

**میزان کا معنی:** حضرت ابن عباسؓ نے میزان کی تفسیر عدل سے کی ہے، مجاہدؒ نے فرمایا کہ یہاں میزان سے مراد وہ ترازو ہے جس کو لوگ استعمال کرتے ہیں، [illegible] یعنی اللہ تعالیٰ نے حق کے ساتھ کتاب اتاری اور میزان بھی تاکہ حقوق کی ادائیگی میں انصاف ہو۔

حضرت ابن عباسؓ سے روایت ہے [illegible] تولنے کی ممانعت فرمائی۔

بعض علماء نے کہا کہ یہاں میزان سے مراد شریعت ہے جو قرآن کا حکم [illegible] اور انصاف کی بات ہے۔

**وَ مَا یُدْرِیْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِیْبٌ**

اور تجھ کو کیا خبر ہے شاید وہ گھڑی پاس ہو

[illegible] قیامت کی نشانیاں [illegible] قریب ہیں [illegible] کے آنے سے پہلے [illegible]

**ایک نحوی پیچیدگی کا حل:** [illegible] قیامت کی قربت بیان کی گئی ہے [illegible] قریب [illegible] (یعنی [illegible]) مراد ہے [illegible] (اور بحث ذکر کی ہے) اس لئے قریب بصیغہ مذکر آیا۔

**آیت کا شان نزول:** [illegible] جب بعض نے قیامت کا تذکرہ کیا اس وقت آپ [illegible] قیامت کب آئے گی [illegible] تو یہ آیت نازل ہوئی۔ (قرطبی)

**یَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ**

جلدی کرتے ہیں اس کی وہ لوگ جو اس پر یقین نہیں رکھتے

**بِهَا ۚ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا**

اور جو یقین رکھتے ہیں ان کو اس کا ڈر ہے

**وَ یَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِیْنَ**

اور جانتے ہیں کہ وہ ٹھیک ہے سنتا ہے جو لوگ

**یُمَارُوْنَ فِی السَّاعَةِ لَفِیْ ضَلٰلٍۭ بَعِیْدٍ**

جھگڑتے ہیں قیامت کے آنے میں وہ بہک کر دور جا پڑے ہیں

**مومن اور منکر:** [illegible] قیامت کا انکار کرنے والے [illegible] مذاق سے کہتے ہیں کہ صاحب وہ قیامت کب آئے گی؟ [illegible] اللہ تعالیٰ سے ڈرتے [illegible] اس کی ہولناکی [illegible] یقین [illegible] سمجھتے ہیں [illegible] جھگڑنے والے [illegible] قیامت [illegible]

خیال ہو سے وہ گمراہی میں دور بہت زیادہ اور دور چلا جائے گا۔ (تفسیر حقانی)

اور یہ جو فرمایا کہ مومن قیامت سے ڈرتے ہیں۔ مراد اس سے اعتقادی خوف ہے جو قیامت کے ہولناک ہونے سے ہے۔ یعنی اپنی کوتاہیوں پر نظر کرنے سے لازمی ہوتا ہے۔ مگر بعض اوقات کسی خاص کیفیت پر خدا تعالیٰ کی ملاقات کا شوق غالب ہو کر اس خوف پر غالب آ جاتا ہے وہ اس کے منافی نہیں۔ جیسا کہ قبر میں بعض مردوں کا یہ کہنا ثابت ہے "قیامت جلد آ جائے" اور یہ ہے کہ قبر میں جب فرشتوں کی طرف سے انسان کو بشارت رحمت و مغفرت کی مل جائے گی تو قیامت کا خوف مغلوب ہو جائے گا۔ (معارف مفتی اعظم)

## خدا اور رسول کی محبت قیامت کی تیاری ہے

ایک شخص نے حضرت انس سے رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا کہ یا رسول اللہ! قیامت کب ہوگی؟ یہ واقعہ سفر کا ہے اور حضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے ہم دور تھے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا وہاں جب وہ پہنچا آنے والی ہے تو تو نے اس کے لئے کیا تیاری کر رکھی ہے؟ اس نے کہا خدا تعالیٰ اور اس کے رسول کی محبت۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تو ان کے ساتھ ہوگا جن سے تو محبت رکھتا ہے۔ اور حدیث میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان ہے کہ ہر شخص ان کے ساتھ ہوگا جن سے وہ محبت رکھتا تھا۔ یہ حدیث یقیناً متواتر ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

یماروں۔ جھگڑتے ہیں اور وقوع قیامت میں شک کرتے ہیں۔ قاموس میں ہے مریۃ اور مریۃ شک۔ جھگڑا کرنا۔ اور مراء جو اس میں شک ہے اس کا اصل لغوی معنی ہے اونٹنی کے تھن کو دودھ دوہنے کے لئے ہاتھ سے ملنا۔ جھگڑا کرنے والے دونوں فریق بھی بحث کلامی کے ساتھ باہم جواب لینے کی کوشش کرتے ہیں اس لئے اس جھگڑے کو مریۃ کہا جاتا ہے۔

لفی ضلال۔ حق سے بہت ہی بھٹکے ہوئے ہیں۔ قیامت اگرچہ عقلی محسوس نہیں ہے لیکن قرآن، حدیث اور عقل سلیم کی شہادت ہے۔ اور انبیاء کا وہ ضروری جز ہے۔ اس لئے کہا جا سکتا ہے کہ قیامت اس وقت ہماری نظروں سے غائب ہے اور محسوس نہیں ہے مگر محسوس کے بہت زیادہ مشابہ ہے (گویا نظروں کے سامنے ہی ہے)۔ اب جو شخص قیامت کو ناممکن جانتا اور اللہ کی ہمہ گیر قدرت سے باوجود وقوع قیامت و قدرت کے احاطہ سے خارج سمجھتا ہے وہ بہت ہی گمراہ ہے اور جنت پذیری کی راہ سے بہکا ہوا ہے۔ (تفسیر مظہری)

<table>
<tr><td>اَللّٰهُ لَطِيفٌۢ بِعِبَادِهٖ</td></tr>
<tr><td>اللہ بڑی رعایت رکھتا ہے اپنے بندوں پر</td></tr>
</table>

اللہ تعالیٰ کی نرمی، مہربانی بحر بیکراں ہے اس کے بندوں کی کوئی حد نہیں۔ گو کہ بندوں کے بہت سے باریک احوال کی رعایت کرتا اور بہت رعایت رکھتا ہے یعنی لطیف۔ حالانکہ بہت فرماتا ہے۔ (تفسیر حقانی)

**لطیف کا مطلب:** مقاتل نے کہا لطیف کا مطلب ہے سب پر مہربانی کرنے والا۔ یعنی اس کی مہربانی کی وجہ سے کسی کو ہلاک نہیں کرتا۔ بعض نے یہ مطلب بیان کیا کہ نیکی کو پھیلانے والا اور مصائب کا رخ پھیر دینے والا۔ یعنی وہ بندوں کے حال سے واقف ہے۔ بعض نے کہا وہ ایسے باریک کاموں کا جاننے والا ہے جن کا علم کسی کو نہیں۔ بعض علماء کے نزدیک اس کا مطلب ہے بندے کی ضرورت سے زائد مہربانی کرنے والا، وہ عطا کرتا ہے اور طاقت کا لحاظ رکھتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

<table>
<tr><td>يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ</td></tr>
<tr><td>روزی دیتا ہے جس کو چاہے اور وہی ہے زور آور</td></tr>
<tr><td>الْعَزِيْزُ ﴿۱۹﴾</td></tr>
<tr><td>زبردست</td></tr>
</table>

اور جس کو چاہے جتنی چاہے روزی دے۔ (تفسیر حقانی)

**رزق میں دو طرح کی مہربانی:** حضرت جعفر بن محمدؒ نے فرمایا کہ رزق کے معاملہ میں اللہ تعالیٰ کی رحمت و مہربانی بندوں پر دو طرح کی ہے اول تو یہ کہ ہر ایک ذی روح کو اس کے مناسب حال غذا اور ضرورت عطا فرماتا ہے۔ دوسرے یہ کہ وہ کسی کو اس کا پورا رزق یکبارگی نہیں دے دیتا ورنہ اول تو اس کی حفاظت اس کو مشکل ہو جاتا۔ اور کتنی ہی حفاظت کرتا وہ پھر بھی سڑنے اور خراب ہونے سے نہ بچتا۔ (مظہری، معارف القرطبی)

**ایک مجرب عمل:** مولانا شاہ عبدالغنی پھولپوری نے فرمایا کہ حضرت حاجی امداد اللہ سے منقول ہے کہ جو شخص روزانہ ستر مرتبہ پڑھا کرے یہ آیت تو ان شاء اللہ وہ رزق کی تنگی سے محفوظ رہے گا۔ اور فرمایا کہ بہت مجرب عمل ہے وہ آیت یہی ہے جو اوپر مذکور ہوئی اَللّٰهُ لَطِيفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ۔ (معارف مفتی اعظم)

<table>
<tr><td>مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ</td></tr>
<tr><td>جو کوئی چاہتا ہو آخرت کی کھیتی</td></tr>
<tr><td>نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ</td></tr>
<tr><td>زیادہ کریں ہم اس کے واسطے اس کی کھیتی</td></tr>
</table>

ثواب میں زیادتی [illegible]

[illegible]

**حرث کا معنی** [illegible]

وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ

[illegible]

مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ

[illegible]

[illegible]

**اعمال کا دارومدار نیتوں پر ہے**

[illegible]

**اس امت کیلئے خوشخبری**

[illegible]

[illegible]

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ

[illegible]

الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْ بِهِ اللّٰهُ

[illegible]

ہدایت فقط اللہ کی طرف سے ہے [illegible]

وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ

[illegible]

بَيْنَهُمْ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ

[illegible]

عَذَابٌ اَلِيْمٌ

[illegible]

[illegible]

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا

[illegible]

كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ

[illegible]

[illegible]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

[illegible]

فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ ۖ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ

باغوں میں ہیں جنت کے ان کے لئے ہے جو وہ چاہیں

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ

اپنے رب کے پاس یہی ہے بڑی بزرگی

[illegible]

دوشیزاؤں کی بارش۔ [illegible]

ذَٰلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ

[illegible]

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

[illegible]

[illegible]

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا

تو کہہ میں مانگتا نہیں تم سے اس پر کچھ بدلہ مگر

الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ

دوستی چاہئے قرابت میں

دعوت کا عجیب انداز [illegible]

[illegible]

## مودۃ فی القربیٰ کا معنی

[illegible] الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ [illegible]

اہل بیت کی فضیلت [illegible]

کہ تم حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے اہل بیت میں دیکھو۔ ایک اور صحیح روایت میں ہے کہ آپ نے حضرت علیؓ سے فرمایا خدا کی قسم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے قرابت داروں سے سلوک کرنا مجھے اپنے قرابت داروں کے سلوک سے بھی پیارا ہے۔ حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ نے حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا واللہ تمہارا اسلام لانا مجھے اپنے والد خطاب کے اسلام لانے سے بھی زیادہ اچھا لگا۔ اس لئے کہ تمہارا اسلام حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو خطاب کے اسلام سے زیادہ محبوب تھا۔ صحیح مسلم وغیرہ میں حدیث ہے کہ حیان بن سبرہ اور عمر بن مسلم حضرت زید بن ارقم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس گئے۔ حضرت حصین نے کہا اے حضرت! آپ کو تو بڑی بڑی بھلائیاں مل گئیں۔ آپ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو اپنی آنکھوں سے دیکھا۔ آپ نے حضور کی حدیثیں اپنے کانوں سے سنیں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ جہاد کئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ نمازیں پڑھیں۔ حق تو یہ ہے کہ بڑی بڑی فضیلتیں آپ نے سمیٹ لیں۔ ہمیں بھی کوئی حدیث سنائیے۔ اس پر حضرت زید نے فرمایا بھتیجے میری عمر اب بڑی ہو گئی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی رحلت کو عرصہ گزر چکا بہت سی باتیں ذہن میں محفوظ بھی نہیں رہیں۔ اب تو جو میں خود بیان کروں سن لیا کرو ورنہ مجھے تکلیف نہ دو کہ تکلف سے بیان کروں۔ پھر آپ نے فرمایا (رضی اللہ عنہ) کہ مکہ و مدینے کے درمیان پانی کی جگہ کے پاس جسے خم کہا جاتا تھا کھڑے ہو کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں خطبہ سنایا۔ اللہ تعالیٰ کی حمد و ثنا کی وعظ و پند کیا۔ پھر فرمایا لوگو! میں ایک انسان ہوں کیا عجب کہ ابھی ابھی میرے پاس خدا تعالیٰ کا قاصد آ جائے اور میں اس کی مان لوں۔ سنو میں تم میں دو چیزیں چھوڑے جا رہا ہوں ایک تو کتاب اللہ جس میں نور و ہدایت ہے۔ تم خدا تعالیٰ کی کتاب کو مضبوط تھام لو اور اسے پکڑے رہو پس آپ نے اس کی بڑی رغبت دلائی اور بہت تاکید کی۔ پھر فرمایا میرے اہل بیت۔ میں تمہیں اپنے اہل بیت کے بارے میں خدا تعالیٰ کو یاد دلاتا ہوں۔ تین مرتبہ یہی فرمایا۔ حصین نے حضرت زید سے پوچھا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے اہل بیت کون ہیں؟ کیا آپ کی بیویاں اہل بیت میں داخل نہیں؟ فرمایا بے شک آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی بیویاں بھی آپ کے اہل بیت میں ہیں لیکن آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے اہل بیت وہ سب ہیں جن پر آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد صدقہ حرام ہے۔ پوچھا وہ کون ہیں؟ فرمایا آل علی، آل عقیل، آل جعفر، آل عباس (رضی اللہ عنہم)۔ پوچھا کیا ان سب پر صدقہ حرام ہے؟ فرمایا ہاں۔ حضرت جابر بن عبداللہ کی روایت سے ترمذی میں ہے کہ حج کے دن عرفہ کو رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی اونٹنی قصواء پر سوار ہو کر خطبہ دیا۔ میں نے سنا فرمایا لوگو! میں تم میں ایسی چیز چھوڑے جا رہا ہوں کہ اگر تم اسے تھامے رہو تو ہرگز گمراہ نہیں ہو گے۔ کتاب اللہ اور میری عترت یعنی اہل بیت۔ ترمذی کی روایت میں ہے کہ خدا کی نعمتوں کو مدنظر رکھ کر تم لوگ اللہ تعالیٰ سے محبت رکھو اور اللہ تعالیٰ کی محبت کی وجہ سے مجھ سے محبت رکھو۔ اور میری محبت کی وجہ سے میرے اہل بیت سے محبت رکھو۔ یہ حدیث ... حسن غریب ہے۔

اس مضمون کی اور احادیث ہم نے آیت انما یرید اللہ لیذہب عنکم الرجس اہل البیت الخ کی تفسیر میں وارد کر دی ہیں۔ یہاں ان کے دوبارہ لانے کی ضرورت نہیں۔ فالحمد للہ۔ ایک ضعیف حدیث مسند ابو یعلیٰ میں ہے کہ حضرت ابوذر نے بیت اللہ کے دروازے کا کنڈا تھامے ہوئے فرمایا لوگو! جو مجھے جانتے ہیں وہ تو جانتے ہی ہیں جو نہیں پہچانتے وہ اب پہچان لیں کہ میرا نام ابوذر ہے۔ سنو میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا ہے کہ تم میں میرے اہل بیت کی مثال مثل نوح علیہ السلام کی کشتی کے ہے۔ جو اس میں چڑھ گیا اس نے نجات پالی اور جو اس میں نہ بیٹھا وہ ہلاک ہوا۔ (تفسیر ابن کثیر)

قربت کا حق ادا یہ تھا کہ تم میری اطاعت کرتے۔ اگر اطاعت نہیں کرتے تو یہ رشتہ داری ہے تو یاد رکھا جائے اور تم میں ہر ایک سے قریب ہوں کوئی گھر نہیں جس سے میرا رشتہ نہ ہو اس لئے میری بات سنو اور اس پر توجہ کرو۔

[illegible]

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما سے صحیح بخاری اور مسند میں الا المودۃ فی القربیٰ کی یہی تفسیر منقول ہے۔

سعید بن جبیر نے فرمایا کہ حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما سے دریافت کیا گیا۔ رسول اللہ ﷺ نے قریش سے فرمایا۔

لا اسئلکم علیہ اجرا الا ان لا تؤذونی فی نفسی المودۃ فی القربیٰ ... منکم وتحفظوا القرابۃ التی بینی وبینکم۔

یعنی میں تم سے کسی قسم کا کوئی معاوضہ نہیں چاہتا مگر اس کے کہ تم مجھے ایذا نہ پہنچاؤ میری اس قرابت کی وجہ سے جو تم سے ہے اور تم اس قرابت کا لحاظ کرو جو میرے اور تمہارے درمیان ہے۔ (تفسیر ابن کثیر جلد ۴)

امام بیہقی نے اکلیل میں علیؓ سے روایت کیا ہے کہ آیت نازل ہوئی تھی کہ لوگ کثرت سے اس آیت کے بارے میں آپس میں دریافت کرتے اور بحث بازی کرتے۔ پھر انہوں نے حضرت عبداللہ بن عباس کی خدمت میں حاضر ہو کر پوچھا کہ یہ صحبت ... آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی آیت کی مراد کیا ہے تو ابن عباس نے بیان مراد کی۔ پھر فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا نسب قریش کی تمام شاخوں سے ملا تھا ایسی کوئی شاخ نہ تھی جس سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا نسب نہ ملتا ہو۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی دعوت اسلام و تبلیغ پر جب قریش نے انکار کیا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو جھٹلایا اور دشمنی پر اتر آئے۔ تو اس پر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اے لوگو! اگر تم

ہے۔ تو تم یہ مطلب نہ سمجھو (مودۃ فی القربیٰ) اس لئے کہ تم میری قرابت کا خیال کرو۔ ورنہ سمجھا جائے کہ اللہ تعالیٰ اور قدرت والے نے اپنے رب کا پیغام ان تک پہنچا دوں (تفسیر روح المعانی جلد ۲۵)

**فرقہ شیعہ کی غلط تفسیر:** فرقہ شیعہ میں یہ بات بڑی مشہور و معروف اور جمہور مفسرین کی اختیار کردہ تفسیر کہ جو الفاظ کی دلالت سے کوئی مناسبت رکھتی ہے۔ جمہور کے خلاف تفسیر کرتے ہیں کہتے ہیں کہ الا المودۃ فی القربیٰ سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے قرابت والوں سے محبت کرنا مراد ہے اور آیت کا مطلب یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کو حکم دیتا ہے کہ تم لوگوں سے یہ کہہ دو کہ میں تم سے اپنی تعلیم و دعوت اور تبلیغ پر کوئی اجرت و معاوضہ نہیں مانگتا البتہ صرف یہ چاہتا ہوں کہ میرے قرابت والوں سے محبت کرو اور میری قرابت والے صرف چار ہیں، فاطمہ، علی، حسن، حسین۔

جواب: یہ عجیب لغو ہے کہ قرابت کے تمام رشتوں کو صرف قرار دیا جائے حالانکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی تین دیگر صاحبزادیاں بھی تھیں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے چچا حضرت عباس اور ان کی اولاد بھی قرابت دار اور ان کی فہرست سے خارج ہیں۔ پھر شیعہ فرقہ کی تفسیر کی رو سے اجرت رسالت قرابت داروں کی اور ان میں سے کسی صرف چار کی محبت ہے۔ [illegible] کی بات بھی [illegible] کے حق کے لائق نہیں۔ [illegible] ان کی اولاد [illegible] جس کا حاصل دنیا ہی کچھ ہے کہ آپ چاہتے ہیں۔ [illegible] جو [illegible] حکومت اس طرح [illegible] جائے نہ پائے۔ [illegible] شیعہ فرقہ کی تفسیر میں فرق ظاہر ہے۔

سورۃ شوریٰ پوری کی پوری مکی ہے اور یہ بات ظاہر ہے کہ حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا کا نکاح حضرت علی رضی اللہ عنہ سے مدینہ میں ہجرت کے بعد ہوا اور حضرت حسن رضی اللہ عنہ ہجرت کے بعد تیسرے سال پیدا ہوئے اور حضرت حسین چوتھے سال پیدا ہوئے اور سب پر سورت کی [illegible] حسن حسین کی پیدائش سے کئی سال پہلے نازل ہو چکی تھی۔ تو یہ کیونکر ممکن ہے کہ حضرت صلی اللہ علیہ وسلم اس آیت کی تفسیر ایسی قرابت سے فرمائیں جس کا اس وقت کوئی وجود ہی نہیں۔ خصوصاً اس صورت میں کہ القربیٰ معرفہ ہے [illegible] جن کا [illegible] ان کے نزدیک معروف ہو اور جو پیدا ہی نہیں ہوئے وہ معروف و معلوم کیسے ہو سکتا ہے۔ زیادہ سے زیادہ یہ ممکن ہے کہ [illegible] سے حضرت فاطمہ حضرت علی کی محبت کا وجوب ثابت کیا جائے تو اس سے اہل سنت کب منکر ہیں اہل سنت کے نزدیک تو اہل بیت کی محبت جزو ایمان ہے۔

## ذوی القربیٰ کی محبت اہل سنت کے نزدیک ایمان کی بنیاد ہے

اہل سنت کا مسلک یہ ہے کہ آل بیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت ایمان کی روح اور روح ہے۔ حضرت علی بن ابی طالب، حضرت سیدہ فاطمہ، حضرت حسنین اور جملہ اہل بیت کی محبت فرض [illegible] ہے۔ اور اہل بیت میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے عم محترم حضرت عباس بن عبد المطلب اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے چچا زاد بھائی حضرت عبد اللہ بن عباس [illegible] شرف و صحابیت کے سب اہل ہیں۔ [illegible] کی محبت و عظمت اہل سنت کے عقائد میں ہے تو سوال یہ ہے کہ اگر آیت کے اندر شیعوں کے نزدیک محبت کے لئے اطاعت لازم ہے تو جملہ تعظیم و مقام صاحب رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی اطاعت فرض ہونی چاہئے اور حضرت علی کے علاوہ دوسرے صاحبزادیاں حضرت زینب، حضرت رقیہ، حضرت ام کلثوم کی اطاعت فرض ہونی چاہئے اور ان کے بعد حضرت فاطمہ کی اولاد کی [illegible] اور جب فاطمیہ کی اطاعت ضروری ہوئی تو پھر صاحبزادیوں کی بھی اطاعت واجب ہونی چاہئے اور ظاہر ہے کہ وہ ان کے قائل نہیں۔ پھر یہ سوال ہے کہ اگر اہل بیت کی محبت کا لازمی تقاضا ہے تو اہل سنت جو ان کے تعلق میں ہیں اہل تشیع کا اہل سنت پر اعتراض کا کوئی حق نہیں اور پھر کسی اعتراض کرنے یا اعتراض کا کوئی حق نہ ہوگا بلکہ وہ مجرم ہوگا اور اگر محبت سے اطاعت کے معنی مراد لیتے ہیں تو ہم ان سے پوچھیں گے کہ جملہ اہل بیت کی اطاعت کی فرضیت کے کیوں قائل نہیں۔ اور اس کا جواب ان کے [illegible] اہل بیت کی محبت کو فرض کہتے ہیں [illegible] کی محبت سے کریں [illegible] اس کا جواب ہو کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ ذاتی طور پر شرف و نجابت کے باعث امام معصوم اور خلیفہ بلا فصل ہوئے لیکن حضرت عثمان [illegible] صاحبزادیوں سے شرف زوجیت رکھنے کے باوجود امام ہوئے نہ معصوم اور نہ [illegible] ہوئے بلکہ ان کا بغض [illegible] کی حقیقت اور [illegible] ظاہر ہے۔ اس کا کوئی جواب قیامت تک نہیں دیا جا سکتا۔ اور یہی وجہ فرقہ شیعہ سے یہ مطالبہ کیا جا سکتا ہے۔ قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا [illegible] اہل بیت کے بارے میں [illegible] فرمایا ہم نے یہ [illegible] نے باب [illegible] میں بیان فرمایا ہے [illegible]

امام احمد [illegible] امام شعبی سے روایت کیا ہے اور حاکم نے اس کی سند کو صحیح کہا ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ لوگوں نے ہم سے اس آیت کی تفسیر کے متعلق سوالات کئے تو ہم نے حضرت ابن عباس کو خط لکھ کر دریافت کیا۔

روایت کی آپ نے جواب میں فرمایا کہ

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان وسط النسب في قريش ليس بطن من بطونهم الا وقد ولدوه فقال الله تعالى قل لا اسئلكم عليه اجرا الا المودة في القربى تودوني لقرابتي منكم وتحفظوني بها (رواہ) آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم قریش کے اپنے نسب سے تعلق رکھتے تھے ان کے ہر قبیلہ میں آپ کا رشتہ ولادت قائم تھا۔ اس سے اللہ تعالیٰ نے یہ فرمایا کہ آپ مشرکین سے کہہ دیجئے کہ اپنی ہدایت پر میں تم سے کوئی معاوضہ نہیں مانگتا مگر تم مجھ سے قرابت داری کی مروّت اور محبت کا معاملہ کرکے بغیر کسی تکلیف کے پہنچے درمیان رشتہ داری کی حفاظت کرو۔

اور ابن جریر وغیرہ نے یہ الفاظ بھی نقل کئے ہیں

يا قوم اذا ابيتم ان تبايعوني فاحفظوا قرابتي منكم ولا يكون غيركم من العرب اولى بحفظي ونصري منكم

(ترجمہ) اے قوم اگر تم میری اتباع سے انکار کرتے ہو تو تم سے جو میرا قرابت کا رشتہ ہے اس کی پاسداری تو کرو اور ایسا نہ ہو کہ عرب کے دوسرے لوگ تمہارے مقابلہ میں میری قرابت کا پاس کرکے میری حفاظت و نصرت میں تم سے بازی لے جائیں۔

حقیقت مسئلہ کی یہ ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی تعظیم و محبت کا سارے کائنات سے زائد ہونا جزو ایمان بلکہ مدار ایمان ہے اور اس کے لئے لازم ہے کہ جس کو جس قدر نسبت قرب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے ہے اس کی تعظیم و محبت بھی اسی پیمانے سے واجب و لازم ہونے میں کوئی شبہ نہیں۔ گر نسبی ذریت اور اولاد کو سب سے زیادہ نسبت قربت حاصل ہے اس لئے ان کی محبت بلا شبہ جزو ایمان ہے۔ مگر اس کے یہ معنی نہیں کہ ازواج مطہرات اور دوسرے صحابہ کرام جن کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ متعدد قسم کی نسبتیں قربت ہر قرابت کی حاصل ہیں ان کو فراموش کر دیں۔

خلاصہ یہ ہے کہ اہل بیت اطہار اور آل رسول صلی اللہ علیہ وسلم کا مسئلہ امت میں کبھی زیر اختلاف نہیں رہا، باجماع و اتفاق ان کی محبت و عظمت لازم ہے۔ اختلافات وہاں پیدا ہوتے ہیں جہاں دوسروں کی عظمت پر حملہ کیا جاتا ہے ورنہ آل رسول صلی اللہ علیہ وسلم ہونے کی حیثیت سے عام سادات خواہ ان کا سلسلہ نسب کتنا ہی بعید کیوں نہ ہو ان کی محبت و عظمت نیز صحابہ کرام جن کو اللہ تعالیٰ نے بیعت رضوان اور مدح سے نوازا ہے ان کی عظمت بھی عطا فرمائی ہے۔ اور ان کے درجات کا فیصلہ فرما دیا ہے۔ اور قرآن نے کثیر آیات اور تصریحات میں ان کی عظمت کو ثابت کر دیا ہے۔

اور اب آپ کا مثل اس آیت میں ان کی تعریف نازل فرما دیئے ہیں۔

جب یہ ضابطہ معلوم ہو گیا تو اب یہ سمجھو کہ قرآن کریم یہ کہتا ہے کہ اللہ تعالیٰ جس کو چاہے اس کی ایک آیت کی مثال بنائے سے بہتر ہیں جن کا مجموعہ آیات میں ثابت ہو چکا اور تمام ثابت ہے۔ ایسی تو بہو میں جو تجویز کی جائے وہ صورت سے حسب ضابطہ مذکورہ ہے۔ نہیں ہو سکتی۔ اس لئے آپ کا تعلق اور رسالت کی اجرت سے پاک ہے اللہ اور اس کے بندے کے درمیان معتبر ہیں۔

دوسری آیت میں غیر معتبر یہ ہے جو آپ کو نصیحت کی گئی ہے کہ آپ بھی ان کی طرف سے باز آ جائیں کہ بعض ان کی تکذیب کرتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ رحیم و کریم ہے وہ تو بہ کرنے والوں کی توبہ قبول فرمالیتا ہے اور ان کی غلطیوں کو بخش دیتا ہے۔ (معارف القرآن)

**شیعوں کا غلط استدلال:** ابن ابی حاتم طبرانی اور ابن مردویہ نے حضرت ابن عباس کا بیان نقل کیا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے دریافت کیا گیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم آپ کے قرابت داروں سے کون لوگ مراد ہیں۔ فرمایا علی اور فاطمہ اور ان کے دونوں بچے۔

فرقہ شیعہ نے اس حدیث کی روشنی میں اس آیت سے استدلال کیا ہے کہ تینوں سابق خلفاء کی خلافت صحیح نہ تھی۔ خلیفہ صرف حضرت علی تھے کیونکہ اللہ نے اس آیت میں امت کے ذمہ رسول اللہ کے قرابت داروں کی محبت فرض قرار دی ہے اور علی کے سوا دوسروں کی محبت واجب نہیں ہے اور محبت کا لازمی تقاضا ہے کہ محبوب کی اطاعت واجب ہو اسی لئے حضرت علی کے سوا کسی کی خلافت صحیح نہیں ہوئی۔

## ان کے استدلال کے جوابات:

فرقہ شیعہ کا یہ استدلال چند وجوہ سے غلط ہے۔

(۱) حدیث مذکور کی سند میں ایک راوی حسین اشقر ہے جو شیعہ غالی ہے۔ اس لئے یہ حدیث صحیح نہیں ہے پھر آیت مکی ہے اور مکہ میں حضرت سیدہ کا کوئی بچہ پیدا ہی نہ ہوا تھا۔

(۲) یہ تسلیم ہے کہ حضرت علی، حضرت فاطمہ اور دونوں صاحبزادوں کی محبت واجب ہے لیکن اس سے یہ تو لازم نہیں آتا کہ دوسروں کی محبت واجب نہ ہو۔ دیکھو ابن عدی نے حضرت علی کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ابوبکر و عمر سے محبت رکھنی ایمان ہے اور ان دونوں سے بغض رکھنا کفر ہے۔ یہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا تھا کہ ابوبکر و عمر کی محبت ایمان کی علامت ہے اور ان سے بغض کفر ہے۔ انصار کی محبت ایمان کی علامت ہے اور ان سے بغض کفر ہے۔ عرب کی محبت ایمان کی علامت ہے اور ان سے دشمنی کفر ہے اور جس نے میرے صحابہ کو گالی دی اس پر خدا کی لعنت۔ اور جو ان کے معاملہ میں میرا لحاظ رکھے گا میں قیامت

تم بھی ان کو محبوب رکھو اور … اللہ تمہارا کرم فرما ہوگا۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا انصار سے محبت ایمان کی نشانی اور انصار سے عداوت نفاق کی علامت ہے۔ (الخصائص الکبریٰ) یہ بھی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قریش سے محبت کرنا ایمان ہے اور ان سے بغض رکھنا کفر ہے۔ عرب کی محبت ایمان ہے اور ان کی عداوت کفر ہے جس نے عرب سے محبت کی اس نے مجھ سے محبت کی اور جس نے عرب سے عداوت کی اس نے مجھ سے عداوت کی۔ (رواہ طبرانی … منہاج السنہ)

مگر تفضیلیوں کا قول ہے کہ جس کی محبت واجب ہے وہی امام (خلیفہ) ہوگا اور اس کی امامت واجب ہوگی غلط ہے۔ بعض علماء کے نزدیک القربیٰ سے مراد ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے وہ قرابت دار جن کے لئے زکوٰۃ لینا جائز نہیں یعنی بنی ہاشم اور بنی مطلب۔ بنی مطلب بنی ہاشم سے جاہلیت کے دور میں بھی الگ نہ ہوئے تھے اور اسلام کے بعد بھی علیحدہ نہیں ہوئے۔

بعض نے کہا حضرت علیؓ، حضرت عقیلؓ، حضرت جعفرؓ، حضرت عباسؓ کی نسل مراد ہے۔ انہی کے بارے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا میں تمہارے اندر دو بھاری چیزیں چھوڑ کر جاؤں گا۔ اللہ کی کتاب جس کے اندر ہدایت اور نور ہے اس کو مضبوط پکڑے رہنا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان الفاظ سے مسلمانوں کو کتاب اللہ کے موافق عمل کرنے پر برانگیختہ کیا اور ترغیب دی پھر فرمایا (دوسری) میرے اہل بیت ہیں اپنے اہل بیت کے معاملہ میں تم کو خدا کی یاد دلاتا ہوں اپنے اہل بیت کے معاملہ میں تم کو خدا کی یاد دلاتا ہوں۔

مسلم نے نقل کیا ہے کہ حضرت زید بن ارقم سے دریافت کیا گیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے اہل بیت کون ہیں فرمایا آل علی اور آل عقیل اور آل جعفر اور آل عباس۔

## حضرت قاضی ثناء اللہ پانی پتیؒ کی تحقیق

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جو اپنی قرابت داری کی محبت طلب کی وہ اللہ نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو محبت طلب کرنے کا حکم دیا۔ صورت اجرت کی صورت تھی ورنہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو اس سے کوئی فائدہ نہیں پہنچا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے محبت رکھنے کا فائدہ محبت کرنے والے کو پہنچتا ہے۔ وہ اللہ کا محبوب، مقرب اور دوست ہو جاتا ہے اور اس محبت سے اس کو کمال ایمان کا درجہ حاصل ہو جاتا ہے۔ … سورۃ القربیٰ کی یہی تفسیر … ہے کہ میں تم سے صرف یہ چاہتا ہوں کہ میرے قرابت داروں، اہل بیت اور … سے محبت کرو۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خاتم النبیین تھے آپ کے بعد اور کوئی نبی ہونے والا نہ تھا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد فرائض تبلیغ ادا کرنے والے علماء امت ہی ہیں۔ علماء ظاہر ہوں یا علماء باطن (یعنی علمائے شریعت ہوں یا

حضرات صوفیاء) اللہ نے بیٹے کی طرح کی ان کے ساتھ محبت رکھنے کی آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے امت کو اپنے اہل بیت سے محبت رکھنے کی تلقین کی۔ یہ تو ظاہر ہے ان حضرات کا … حضرت علیؓ اور آپ کی اہل بیت جو آپ کی نسل میں سے ہوئے کمالات باطنیہ کے قطب تھے۔ اسی وجہ سے رسول اللہ نے ارشاد فرمایا تھا میں علم کا شہر ہوں اور علی اس کا دروازہ ہے۔ اور فرمایا کہ میں حکمت کا گھر ہوں اور علی اس کا دروازہ ہے۔ (کذا رواہ الترمذی)… حضرت عبداللہ بن مسعود … حضرت ابن عمرؓ، حضرت ابن عباسؓ اور حضرت علیؓ ہیں … ایک حدیث کو صحیح قرار دیا ہے۔ … حضرت علیؓ کے بعد ائمہ اہل بیت تک یہ فیض پہنچتا رہا۔ اولیاء امت میں بہت سے حضرات ان ائمہ سے فیضیاب ہوئے جیسے غوث الثقلین محی الدین شیخ عبدالقادر جیلانی حسنی حسینی۔ اور شیخ بہاء الدین نقشبند اور سید معین الدین چشتی اور سید ابوالحسن شاذلی وغیرہ۔ جن کا سلسلہ مبارک ہی تک جاتا ہے۔ الفضل بیدک اللہ یؤتیہ من یشاء۔ اکثر علماء تفسیر نے لکھا ہے کہ الا المودۃ فی القربیٰ میں استثناء منقطع ہے (اور الا کا ترجمہ لیکن) اور فی کا معنی لام ہے۔ مطلب یہ ہے کہ میں تم سے کوئی معاوضہ نہیں مانگتا لیکن تم سے یہ چاہتا ہوں کہ میری قرابت کی وجہ سے مجھ سے محبت رکھو یعنی میری رشتہ داری کا لحاظ کرو۔ حضرت زید بن ارقم کی روایت کردہ حدیث اذکرکم اللہ فی اہل بیتی میں بھی یہی مطلب واضح کیا گیا ہے۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے قرابتداروں اور اپنے اہل بیت کی محبت رکھنے کا امت کو حکم دیا اور امت کو ترغیب دی اس کی تائید اس آیت سے ہوتی ہے … (تفسیر مظہری)

وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا

اور جو کوئی کمائے گا نیکی ہم اس کو بڑھا دیں گے اس کی

حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝

خوبی بیشک اللہ معاف کرنے والا حق ماننے والا ہے ۝

نیکی میں برکت: یعنی نیکی کرنے والے کی … نیکی کا بدلہ ہے … آخرت میں اجر و ثواب کے لحاظ سے … محبت … کی معافی فرماتا ہے … یہاں اس مضمون کا ذکر … فرمایا کہ تم ذکر قرابت کی محبت مطلب ہے … نیکی … سے … ملے … ہر تکلیف پر نیکی ملتی ہے … تکلیف

[illegible]

## صوفیاء کے ہاں نیکی کے بڑھنے کی صورت

[illegible]

**آیت کا مصداق** [illegible]

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا

کیا وہ کہتے ہیں کہ اس نے باندھا اللہ پر جھوٹ

فَإِن يَشَإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ

سو اگر اللہ چاہے مہر کر دے تیرے دل پر

وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ

اور مٹاتا ہے اللہ جھوٹ کو اور ثابت کرتا ہے سچ کو

بِكَلِمَاتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

اپنی باتوں سے اس کو معلوم ہے جو باتیں ہیں دلوں میں

**تصدیقِ رسالت** [illegible]

[illegible]

## باطل کو مٹانے اور حق کو ثابت کرنے کا مطلب

[illegible]

**شیطانی خیال کا ازالہ** [illegible]

ہے کہ حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا جب آیت قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى نازل ہوئی تو کچھ لوگوں کے دلوں میں ایک شیطانی خیال پیدا ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اپنے بعد اپنے قرابت داروں کی اتباع پر ہم کو اس طرح سے آمادہ کرنا چاہتے ہیں۔ اس وقت جبرئیلؑ آئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو بتایا کہ لوگوں کے دلوں میں آپ کے متعلق اس طرح کے برے خیال پیدا ہوئے ہیں۔ اللہ نے آیت اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ تک نازل فرمائی جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ آیت لوگوں کو سنائی تو لا محالہ کہنے لگے اس سے توبہ کی اور کہا یا رسول اللہ ہم شہادت دیتے ہیں کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم سچے ہیں۔ اس پر یہ آیت نازل ہوئی (تفسیر مظہری)

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ

اور وہی ہے جو قبول کرتا ہے توبہ اپنے

عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ

بندوں کی اور معاف کرتا ہے برائیاں

وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ وَيَسْتَجِيْبُ

اور جانتا ہے جو کچھ تم کرتے ہو اور دعا سنتا ہے

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

ایمان والوں کی جو بھلے کام کرتے ہیں

وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَالْكٰفِرُوْنَ

اور زیادہ دیتا ہے انکو اپنے فضل سے اور جو منکر ہیں

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ ۲۶

اُن کے لئے سخت عذاب ہے ☆

**اللہ کا معاملہ:** یہ معنی ہیں کہ خدا کا پیغام پہنچانا ہے تم جھوٹ سمجھو یا سچ اس کے بعد بندوں کا سارا معاملہ خدا سے ہے جو ایک ایک بندے سے اچھی طرح واقف ہے۔ ان کے مناسب حال اور استعداد کے موافق معاملہ کرتا ہے۔ توبہ کرنے والوں کی توبہ قبول فرماتا ہے اور باوجود سب کچھ جاننے کے کتنی برائیوں سے درگزر کرتا ہے جو ایماندار اور نیک بندے اس کی بات سنتے ہیں وہ ان کی دعائیں سنتا اور ان کی عبادات کو شرف قبول بخشتا ہے اور جس قدر اجر و ثواب کے وہ مستحق ہیں اپنے فضل سے اس سے کہیں زیادہ مرحمت فرماتا ہے۔

گئے۔ حکم ہوا ہے کہ وہ لوگ توبہ کرتے رہیں تب جا کر قبول ہوگی تو پھر بھی معافی ان کا انجام اگلے جملہ میں مذکور ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**توبہ کی حقیقت:** توبہ کے لغوی معنی لوٹنے اور رجوع کرنے کے ہیں اور شرعی اصطلاح میں کسی گناہ سے باز آنے کو توبہ کہتے ہیں۔ اور اس کے صحیح ہونے کے لئے تین شرطیں ہیں۔

ایک یہ کہ جس گناہ میں فی الحال مبتلا ہے اس کو فوراً ترک کردے دوسرے یہ کہ ماضی میں جو گناہ ہوا اس پر نادم ہو اور تیسرے یہ کہ آئندہ اس کے ارتکاب نہ کرنے کا پختہ عزم کرلے اور کوئی شرعی فریضہ چھوڑا ہوا تھا اسے ادا یا قضا کرنے میں لگ جائے اور اگر گناہ حقوق العباد سے متعلق ہے تو اس میں ایک شرط یہ بھی ہے کہ اگر کسی کا مال اپنے ذمہ واجب ہے اور وہ شخص زندہ ہے تو یا اسے وہ مال لوٹائے یا اس سے معاف کرائے اور اگر وہ زندہ نہیں اور اس کے وارث موجود ہیں تو ان کو لوٹائے اگر وارث بھی نہیں ہیں تو بیت المال میں داخل کرائے بیت المال بھی نہیں ہے یا اس کا انتظام صحیح نہیں ہے تو اس کی طرف سے صدقہ کرے اور اگر کوئی غیر مالی حق کسی کا اپنے ذمہ واجب ہے مثلاً کسی کو تکلیف پہنچائی یا برا کہا ہے یا اس کی غیبت کی ہے تو اسے جس طرح ممکن ہو راضی کرکے اس سے معافی حاصل کرے۔

اور یہ جو ہر قسم کی توبہ کے لئے ضروری ہے کہ گناہ کو ترک کرنا اللہ کیلئے ہو اپنی کسی دنیاوی مصلحت یا مجبوری کی بنا پر نہ ہو۔ اور شریعت میں اصل مطلوب توبہ ہے کہ تمام گناہوں سے کی جائے لیکن اگر صرف کسی خاص گناہ سے توبہ کی تو اہل سنت کے مسلک کے مطابق اس گناہ کی حد تک تو معافی ہو جائے گی دوسرے گناہوں کا بوجھ رہ جائے گا۔ (معارف القرآن)

**توبہ کے چھ معانی:** بیضاوی نے لکھا ہے کہ حضرت علیؓ نے فرمایا گزشتہ گناہوں سے توبہ کرنے کے چھ معنی ہیں۔ (۱) گزشتہ فعل کے ضائع کردینے پر پشیمانی (۲) گزشتہ فرائض دوبارہ ادا کرنا (۳) حقوق ادا کرنا (۴) جس طرح نفس کو گناہوں میں گھلایا ہو اسی طرح نفس کو طاعت میں گھلانا (۵) جیسے پہلے نفس کو گناہوں کی لذت چکھائی ہو اسی طرح نفس کو طاعت کی تلخی چکھانا (۶) جیسے پہلے ہنستا رہا اسی طرح اب رونا۔

بغوی نے شرح السنۃ میں حضرت ابن مسعودؓ کا قول نقل کیا ہے ندامت توبہ ہے اور گناہ سے توبہ کرنے والا بے گناہ کی طرح ہو جاتا ہے۔

## اللہ اپنے بندہ کی توبہ سے کتنا خوش ہوتا ہے

حارث بن سوید کا بیان ہے میں حضرت عبداللہؓ کی عیادت کرنے گیا۔ حضرت عبداللہ نے فرمایا کوئی شخص کسی بیابان زمین میں ہو اور اس کی اونٹنی بھی اس کے ساتھ ہو جس پر وہ شخص ایک جگہ اتر کر سو جائے اور اونٹنی

کر دے تو اس نے جل چلائے جب وہ شخص بیدار ہوا تو اونٹنی موجود نہ تھی پھر اس کو تلاش کیا یہاں تک کہ اس کو سخت پیاس لگنے لگی (قریب المرگ ہو گیا) تو وہ شخص کہنے لگا کہ اب مجھے اسی مقام پر جا کر مرنا ہے جہاں سوتا تھا۔ پس وہ وہاں آ کر لیٹ گیا اور مرنے کے لئے آنکھیں بند کر لیں پھر جب آنکھیں کھولیں تو اپنا اونٹ اپنے پاس ہی کھڑا دیکھا اس پر کھانے پانی کا سامان لدا ہوا ہے۔ ایسے آدمی کو جتنی خوشی ہوتی ہے اس سے زیادہ اپنے بندے کی توبہ سے خوشی ہوتی ہے۔ مطلب یہ ہے کہ

## اللہ تعالیٰ توبہ قبول فرماتے ہیں۔

مسلم نے حضرت ابوہریرہؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص (گناہ کا) اقرار کر کے توبہ کر لیتا ہے اللہ اس کی توبہ قبول فرما لیتا ہے۔

نیز مسلم نے حضرت ابو موسیٰ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مغرب کی جانب سے سورج کے طلوع ہونے سے پہلے جو توبہ کرے گا اللہ اس کی توبہ قبول فرمائے گا۔

**توبہ کرنے والا** ابن ماجہ اور بیہقی نے حضرت ابن مسعودؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ایک آدمی تھا جس نے کبھی کوئی اچھا کام نہیں کیا تھا جب وہ مرنے لگا تو اس نے گھر والوں کو وصیت کی کہ جب میں مر جاؤں تو مجھے جلا (کر خاکستر کر) دینا پھر آدھی راکھ خشکی میں اڑا دینا اور آدھی دریا میں کیونکہ خدا کی قسم اگر اللہ نے (مجھ پر) قابو پا لیا تو وہ مجھے ایسا عذاب دے گا کہ کسی آدمی کو ایسا عذاب نہیں دے گا۔ غرض جب وہ مر گیا تو گھر والوں نے ویسا ہی کیا جیسا اس نے کہا تھا اس کے بعد اللہ نے سمندر کو حکم دیا سمندر نے وہ تمام جمع کر دی جو اس کے اندر تھی اور خشکی نے بھی سب جمع کر دیا اس میں جو کچھ تھا پھر اللہ نے اس سے فرمایا تو نے یہ کیوں کیا تھا اس شخص نے عرض کیا اے رب تیرے خوف سے میں نے کیا تھا تو خوب واقف ہے چنانچہ اللہ نے اسے بخش دیا۔

## ڈرنے والے کے لئے دو جنتیں ہیں

حضرت ابو الدرداءؓ کا بیان ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم منبر پر تقریر فرما رہے تھے میں نے سنا آپ یہ آیت تلاوت فرما رہے تھے ولمن خاف مقام ربه جنتان (جو شخص اپنے رب کے سامنے کھڑا ہونے سے ڈرتا ہے اس کے لئے دو جنتیں ہوں گی) میں نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خواہ اس نے زنا کیا ہو خواہ چوری کی ہو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے دوسری بار بھی فرمایا ولمن خاف مقام ربه جنتان میں نے دوبارہ یہی عرض کیا یا رسول اللہ

صلی اللہ علیہ وسلم فرمایا (خواہ) اس نے زنا کیا ہو خواہ چوری کی ہو۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے تیسری بار بھی ولمن خاف مقام ربه جنتان پڑھا میں نے تیسری بار بھی یہی عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خواہ اس نے زنا کیا ہو اور خواہ اس نے چوری کی ہو آپ نے فرمایا ہاں خواہ ابو الدرداء کی ناک خاک آلود ہو (یعنی ابو الدرداء کو ناگوار ہو) اس کے لئے دو جنتیں ہوں گی۔ (رواہ احمد)

ویعلم ما تفعلون۔ اس کی تفسیر پہلے گزر چکی ہے۔

**افضل ترین دعا** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی حدیث مبارک ہے افضل ترین دعا الحمد للہ ہے۔ (رواہ الترمذی، النسائی، ابن ماجہ، ابن حبان) یہ حسن حدیث ہے۔

**دعا قبول نہ ہونے کی وجہ** روایت میں آیا ہے کہ ابراہیم بن ادہم سے کسی نے پوچھا کہ ہم خدا سے دعا کرتے ہیں مگر ہماری دعا قبول نہیں ہوتی۔ ابراہیم نے جواب دیا اس لئے قبول نہیں ہوتی کہ اللہ نے تم کو (طاعت کی) دعوت دی اور تم نے اس کی دعوت قبول نہیں کی۔

ویزیدھم من فضلہ یعنی ان کی دعا پر توفیق سے زیادہ دیتا ہے۔ ابوصالح کی روایت میں حضرت ابن عباسؓ کا قول آیا ہے یعنی ان کے بھائیوں (دوستوں) کے لئے ان کی دعا قبول فرماتا ہے اور یزیدھم کا مطلب ہے کہ ان کے بھائیوں کے دوستوں کے حق میں بھی ان کی دعا قبول کرتا ہے۔

لھم عذاب شدید یعنی کافروں کو سخت عذاب ہے گو وہ دنیا میں ہوں آخرت میں سخت عذاب ہوگا۔ (تفسیر مظہری)

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا

اور اگر پھیلا دے اللہ روزی اپنے بندوں کو تو دھوم

فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ

اٹھا دیں ملک میں لیکن اتارتا ہے ناپ کر جتنی

مَّا يَشَآءُ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ

چاہتا ہے بیشک وہ اپنے بندوں کی خبر رکھتا ہے دیکھتا ہے

**حکمت کا تقاضا** قتادہ نے فرمایا ہم کو بتایا گیا ہے کہ دنیا کی زینت بہت بڑا فتنہ ہے اور کہا گیا ہے کہ یہ آیت اصحاب صفہ کے حق میں نازل ہوئی۔ انہوں نے تمنا کی تھی کہ ان کو دولت حاصل ہو جائے تو یہ آیت نازل ہوئی۔ حضرت خباب بن ارت نے فرمایا ہم نے بنی قریظہ اور بنی نضیر کے مالوں کو دیکھا تو ان کی خواہش کی اور ہم نے تمنا کی تو یہ آیت نازل ہوئی۔ اگر اللہ اپنے بندوں کے لئے رزق کشادہ کر دیتا تو وہ زمین میں سرکشی کرنے لگتے اور حد سے بڑھ جاتے

جیسا کہ ہم بحالت موجودہ بھی کثیر مرفہ الحال لوگوں میں مشاہدہ کرتے ہیں جتنا آدمی کے پاس سرمایہ و دولت کے طالب رہتے ہیں کوشش اور تمنا پیدا ہوتی ہے کہ سب کے گھر خالی کر کے اپنا گھر بھر لیں ظاہر ہے کہ ان جذبات کے ماتحت باہم اتحاد و خوشحالی کی صورت میں تمام دنیا میں زبردست فساد برپا ہوتا اور کسی کو کسی سے دبنے کی کوئی وجہ نہ رہتی اور دنیا کے عام امن و امان کے خلاف زمین میں کسی وقت غیر معمولی طور پر کچھ تغیر اور انقلاب کی گمراہی میں عام خوشحالی اور فارغ البالی کے باوجود بھی اس درجہ طغیان و سرکشی کی نوبت نہ آئے اور زمانہ کے انقلاب عظیم سے دنیا کے نظام عمل میں انقلاب پیدا کر دیا جائے وہ اس جاری اور مسلسل قاعدہ سے مستثنیٰ ہوگا بہرحال دنیا بحالت موجودہ جس نظام پر چل رہی ہے اس کا مقتضیٰ یہی ہے کہ سب کو خدا تعالیٰ برابر نہ رکھے بلکہ ہر ایک کو اس کی استعداد اور احوال کی رعایت سے جتنا مناسب ہے جانچ تول کر دیا جائے وہ خوب باخبر ہے کہ کس کے حق میں کیا صورت اصلح ہے کیونکہ سب کے کھلے اور چھپے حالات اس کے سامنے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**آیت کا شان نزول:** امام بغوی نے حضرت خباب بن ارت کا یہ قول نقل کیا ہے کہ ہم نے بنو قریظہ بنو نضیر اور بنو قینقاع کے مال و دولت کو دیکھا تو ہمارے دلوں میں بھی مال و دولت کی تمنا پیدا ہوئی اس پر یہ آیت نازل ہوئی اور حضرت عمرو بن حریث فرماتے ہیں کہ اصحاب صفہ میں سے بعض حضرات نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے اس خواہش کا اظہار کیا تھا کہ اللہ تعالیٰ ہمیں مالدار بنا دے اس پر یہ آیت نازل ہوئی۔ (روح المعانی وغیرہ)۔

**حکیمانہ نظام:** مقصد یہ ہے کہ نظام عالم کی مصلحت سے اللہ تعالیٰ نے ہر انسان کو مال و دولت میں وسعت دے کر نہیں بلکہ ایک حکیمانہ انداز سے رزق کی تقسیم فرمائی ہے یعنی کائنات کی جو نعمتیں عمومی ہیں ان میں سے ہر شخص کو حصہ عطا کیا ہے ہوا، پانی، بادل، زمین، آسمان اور ان کی قوتیں سب انسانوں کے فائدے کے لئے پیدا کی گئی ہیں اور یہ سب چیزیں اللہ کی بڑی نعمت پر دلالت کرتی ہیں

## تکلیفیں گناہوں کی وجہ سے آتی ہیں

اس کے بعد کسی شخص کو کوئی تکلیف پہنچتی ہے تو وہ اس کے اپنے اعمال کی وجہ سے پہنچتی ہے لہٰذا اسے چاہئے اللہ تعالیٰ کا شکوہ کرنے کے بجائے اپنے گریبان میں منہ ڈال کر دیکھے۔ وَمَا أَصَابَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ کا یہی مطلب ہے۔ حضرت حسن سے روایت ہے کہ جب یہ آیت نازل ہوئی تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ قسم ہے اس ذات کی جس کے قبضہ میں میری جان ہے۔ جس شخص کو کسی لکڑی سے کوئی خراش لگتی ہے یا کوئی رگ دھڑکتی ہے یا قدم کو لغزش ہوتی ہے یہ سب اس کے گناہوں کے سبب سے ہوتا ہے اور ہر گناہ کی سزا اللہ تعالیٰ نہیں دیتے بلکہ جو گناہ اللہ تعالیٰ معاف کر دیتے ہیں وہ ان سے بہت زیادہ ہیں جن پر کوئی سزا دی جاتی ہے۔

**عارفانہ نکتہ:** حضرت اشرف الشائخ نے فرمایا کہ جس طرح جسمانی بیماریاں اور تکلیفیں گناہوں کے سبب آتی ہیں اسی طرح باطنی امراض بھی کسی گناہ کا نتیجہ ہوتے ہیں آدمی سے کوئی ایک گناہ سرزد ہو گیا تو وہ سبب بن جاتا ہے دوسرے گناہوں میں مبتلا ہونے کا جیسا کہ حافظ ابن قیم نے الدواء الشافی میں لکھا ہے کہ گناہ کی ایک نقد سزا یہ ہوتی ہے کہ اس کے ساتھ دوسرے گناہوں میں مبتلا ہو جاتا ہے اسی طرح نیکی کا ایک نقد اجر یہ ہے کہ ایک نیکی دوسری نیکی کو کھینچ لاتی ہے۔ (معارف القرآن)

ایک حدیث میں حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے مروی ہے۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ جب کسی بندے کے گناہ زیادہ ہو جائیں اور اس کے پاس کوئی چیز ان گناہوں کے کفارے کے واسطے نہ ہو تو اللہ تعالیٰ اس کو کسی غم اور فکر میں مبتلا کر دیتے ہیں تاکہ اس کے گناہوں کا کفارہ ہو جائے۔ (بحوالہ تفسیر ابن کثیر)۔

## تقسیم رزق میں حکمت الٰہی معیار ہے

حق تعالیٰ نے اپنے بندوں کے واسطے تقسیم الرزق میں معیار الٰہی حکمت و مشیت کو بیان فرمایا کہ وہ اپنی حکمت سے جس کو جتنا چاہتا ہے رزق عطا فرماتا ہے جس میں یہ صورت ہوتی ہے کہ کسی کو زیادہ عطا فرماتا ہے اور کسی کو تنگی کرتا ہے تو اس کا فیصلہ بھی حکمت کے مطابق ہوتا ہے اور جس پر رزق کی تنگی فرماتا ہے وہاں پر بھی حکمت خداوندی ہی سے ہوتا ہے اور یہ بھی اسی کی حکمت ہے کہ ایک بندہ ایک عرصہ پر تنگی کا گذرتا ہے تو پھر اس کو فراخی اور وسعت عطا کر دیا جاتا ہے کبھی اس کا عکس ہوتا ہے اور یہ سب فراخی و وسعت کا گذرنا پھر اس کو تنگی و عسرت میں مبتلا کر دیا۔

**حضرت آدم کی تمنا:** روایات میں ہے کہ جب حق تعالیٰ نے آدم علیہ السلام کی پشت سے ان کی ذریت کو نکالا تو آدم علیہ السلام نے ان میں دیکھا کہ کچھ غنی ہیں اور کچھ فقیر تو عرض کیا۔ لولا سویت بین عبادک کہ اے پروردگار تو نے اپنے بندوں کے درمیان مساوات و برابری (رزق میں) کیوں نہ کر دی جواب دیا گیا احببت ان اشکر یعنی میں نے یہ چاہا کہ میرا شکر ادا کیا جائے کہ یہ سب اور یہ بات اسی پر موقوف ہے تفاوت مراتب ہو۔

**علامہ طیبی کی رائے:** علامہ طیبی کی رائے یہ ہے کہ عباد سے کل بندے مراد نہیں بلکہ اللہ کے وہ خاص بندے ہیں جن کو اللہ نے اپنا ولی بنایا اور قرب کی کرامت سے نوازا تھا کہ اللہ نے ان پر رزق کو تنگ کر دیا یا اگر ان پر رزق

ہو جاتا تو وہ بغاوت اور سرکشی اختیار کر لیتے اور یہ بات اللہ رب العزت کی حکمت کے خلاف ہے کہ وہ اپنے مقربین و مطیع لوگوں کو مالداری دے کر تقرب سے محروم کر دے۔ چنانچہ ایک حدیث کا مضمون یہ ہے۔ إذا أحب اللہ عبدًا حماہ الدنیا کما یظل أحدکم یحمی سقیمہ الماء۔ اللہ تعالیٰ جب کسی بندہ سے محبت کرتا ہے تو اس کو دنیا سے اس طرح بچاتا ہے جس طرح تم میں سے کوئی اپنے بیمار کو پانی سے بچاتا ہے (جس کو پانی نقصان دیتا ہو) [illegible]

## مومنوں کی تقسیم میں حکمت قدری کے بارے میں مفصل حدیث

بغوی نے حضرت انس بن مالک کی روایت نقل کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جبرئیل کے حوالہ سے اللہ تعالیٰ کا قول بیان فرمایا کہ جو میرے کسی ولی کی توہین کرتا ہے وہ مجھ سے جنگ کرنے کے لئے میدان میں نکل آتا ہے اور میں اپنے دوستوں کی حمایت کے لئے ایسا غضبناک ہوتا ہوں جیسا غضبناک شیر غضب میں آتا ہے۔ بندہ جن چیزوں سے میرا تقرب (حاصل کرنا) چاہتا ہے ان میں سب سے زیادہ پسندیدہ وہ ہیں جو میں نے اس پر فرض کی ہیں اور بندہ نوافل کے ذریعہ سے میرا قرب حاصل کرتا رہتا ہے یہاں تک کہ میں اس سے محبت کرنے لگتا ہوں اور جب میں اس سے محبت کرنے لگتا ہوں تو پھر میں اس کے کان اور آنکھ اور ہاتھ اور حامی بن جاتا ہوں [illegible] اگر وہ مجھ سے دعا کرتا ہے تو میں اس کی دعا قبول کرتا ہوں اور مجھ سے مانگتا ہے تو میں اس کو دیتا ہوں۔ کسی چیز کے کرنے میں مجھے ایسا تردد نہیں ہوتا جیسا مومن بندہ کی روح قبض کرنے میں ہوتا ہے کہ وہ مرنے کو ناگوار جانتا ہے اور مجھے اس کو دکھ پہنچانا ناپسند ہے حالانکہ مرنے کے بغیر اس کے لئے کوئی چارہ نہیں۔ میرے بعض مومن بندے ایسے ہیں جو کسی خاص عبادت (کا دروازہ کھولنے) کی درخواست کرتے ہیں لیکن میں اپنی طرف سے وہ دروازہ ان پر نہیں کھولتا تاکہ ان کے اندر عجب پیدا نہ ہو جائے اور ان کی عبادت تباہ نہ ہو جائے۔ اور میرے بعض مومن بندے ایسے ہیں کہ ان کے ایمان کی اصلاح صرف مالداری سے ہی ہو سکتی ہے، اگر میں ان کو نادار بنا دوں تو ان کا ایمان بگڑ جائے گا اور کچھ مومن بندے ایسے ہیں کہ ان کے ایمان کی درستی صرف ناداری سے ہوتی ہے، اگر میں ان کو مالدار کر دوں تو [illegible] اور بعض مومن بندے ایسے ہیں کہ ان کے ایمان کی اصلاح صرف تندرستی سے ہوتی ہے اگر میں ان کو بیمار کر دوں تو [illegible] اور بعض مومن بندے ایسے ہیں کہ ان کے ایمان کی درستی صرف بیماری سے ہوتی ہے اگر میں ان کو تندرست کر دوں تو صحت ان کے ایمان کو بگاڑ دے گی۔ میں اپنے بندوں کے کاموں کا ان کے علم کے مطابق

[illegible] ان کے اندرونی حالات معلوم ہیں جس کو جو بات مناسب [illegible] اس کو دیتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِن بَعْدِ |
| اور وہی ہے جو بارش برساتا ہے بعد اس کے کہ |
| مَا قَنَطُوا وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ |
| لوگ ناامید ہو چکے ہوں اور اپنی رحمت پھیلاتا ہے اور وہی کارساز ہے |
| الْحَمِيدُ ﴿۲۸﴾ |
| سب تعریفوں کے لائق ہے |

باران رحمت [illegible] ظاہری اسباب و حالات پر نظر کر کے جب لوگ بارش سے ناامید ہو جاتے ہیں اس وقت اللہ تعالیٰ بارش نازل فرماتا ہے [illegible] ہر طرف پھیلا دیتا ہے [illegible] تاکہ لوگوں کو معلوم ہو کہ رزق کی طرح اسباب رزق بھی اس کے قبضہ قدرت میں ہیں [illegible] (تفسیر مظہری) [illegible] حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ [illegible] (یوسف رکوع ۱۲ آخر)

| |
|---|
| وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ |
| اور اسی کی نشانیوں میں سے ہے آسمانوں |
| وَالْأَرْضِ |
| اور زمین کا |

مخلوق خالق کے کمال کی دلیل ہے [illegible] (تفسیر مظہری) [illegible]

تجلیات اور صفات الٰہی کے وجود پر اور کمال مصالح اور قدرت والا ہونے پر دلالت کرتی ہیں۔ (تفسیر مظہری)

وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ

اور جس قدر بکھیرے ہیں ان میں جاندار

☆ آیت سے ظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ زمین کی طرح آسمانوں پر بھی جاندار ہیں کوئی قسم کی مخلوق پائی جاتی ہے۔ (تفسیر حقانی)

**فیہما کا معنٰی:** فیھما سے مراد ہے ان دونوں میں سے ایک میں جیسے آیت يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ میں ہے حالانکہ موتی صرف کھاری سمندر سے نکلتے ہیں۔ اس صورت میں فیھما کی ضمیر اگرچہ آسمان و زمین کی طرف راجع ہے لیکن مراد صرف زمین ہے کیونکہ ممکن ہے کہ جو چیز دونوں میں سے ایک میں ہو تو اس کا حکم دونوں کے مجموعہ پر ہو جاتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ

اور وہ جب چاہے ان سب کو اکٹھا کر سکتا ہے ☆

☆ یعنی جس نے بکھیرے وہی سب کو اکٹھا کر سکتا ہے اور یہ قیامت کے دن ہوگا۔ (تفسیر عثمانی)

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا

اور جو پڑے تم پر کوئی سختی سو وہ

كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ

بدلہ ہے اسی کا جو کمایا تمہارے ہاتھوں نے اور معاف کرتا ہے بہت سے گناہ ☆

**مصائب کی علت:** یعنی بعض مصیبتیں ایسی ہیں جو بندوں کے اعمال کی وجہ سے آتی ہیں مصائب کا نزول کسی خاص اسباب و ضوابط کے ماتحت ہوتا ہے مثلاً بندوں کو جو کوئی بھی مصیبت پہنچتی ہے اس کا سبب قریب یا بعید بندوں ہی کے بعض اعمال ہوتے ہیں ٹھیک اسی طرح جیسے ایک شخص اپنی غذا میں احتیاط نہ کرنے سے بیمار ہو جاتا ہے بلکہ بعض اوقات ہلاک ہو جاتا ہے، بعض اوقات بادشاہ کی بے تدبیری کی وجہ سے سلطنت پر مصیبت آتی ہے یا کسی کی ایک غلطی ہی سے تباہی آتی ہے۔ بعض اوقات ایک شخص کی بے تدبیری اور حماقت سے پورے ملک یا شہر کو نقصان اٹھانا پڑتا ہے یہی حال اخلاقی اور باطنی بیماری اور بے تدبیری کا سمجھو۔ غرض دنیا میں جو مصیبت بندوں کو پہنچتی ہے وہ ان کے بعض اعمال کا نتیجہ ہے اور مستقل بیماری کی طرح نہیں ہوتا البتہ حق تعالیٰ کا معاملہ یہ ہے کہ وہ بہت سے گناہ تو یوں ہی معاف کر دیتا ہے اور بہت سے گناہوں سے درگزر کرتا ہے اگر ہر ایک جرم

پر گرفت ہوتی تو زمین پر کوئی شخص بھی باقی نہ رہتا۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یہ خطاب ہے بالغ لوگوں کو جو گناہگار ہیں، پیغمبر، نبی اس سے باہر ہیں اور چھوٹے بچے بھی شامل نہیں۔ ان کو جو سختی پہنچتی ہے وہ ان کے درجے بڑھانے کو ہوتی ہے اور قہر کی ہوتی ہے۔" (تفسیر عثمانی)

**بہت بڑھیا آیت:** بغوی نے لکھا ہے کہ حضرت علیؓ نے فرمایا کیا میں تم کو کتاب اللہ کی بہت بڑھیا آیت بتلاؤں جو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہم سے بیان فرمائی تھی اور وہ آیت یہ ہے وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ۔ میں اس کی تفسیر بیان کرتا ہوں۔ مَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ یعنی کوئی بیماری یا عذاب یا کوئی دنیوی بلاء۔ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ (دنیا میں پا لینے کے بعد) اللہ آخرت میں دوبارہ سزا نہیں دے گا اس کی شان اس سے برتر ہے۔ اور جس جرم سے دنیا میں ہی درگزر فرما دی تو معافی کے بعد پھر لوٹ کر اس کی آخرت میں سزا نہیں دے گا وہ حلم والا کریم ہے۔ رواہ احمد وغیرہ۔

**آیت کے مخاطب:** بیضاوی نے لکھا ہے آیت میں خطاب مجرموں کو ہے اور مجرموں ہی کے لئے آیت کا حکم خاص ہے کیونکہ جو قصور نہ کریں ان پر مصیبت ہو تو اس کی وجہ دوسری ہے مثلاً یہ مقصد ہوتا ہے کہ مومن صبر کرے تاکہ اجر عظیم کا مستحق ہو جائے۔

**تکلیف آنے کی حکمت:**

بغوی نے عکرمہ کا قول نقل کیا ہے بندہ کے جو ذرا سی تکلیف بھی لگ جاتی ہے وہ گناہ کی وجہ سے ہوتی ہے کہ اللہ اس کے بغیر اس کا گناہ معاف کرنے والا نہیں ہوتا یا کسی مرتبہ پر پہنچنے کے لئے ہوتی ہے کہ بغیر تکلیف کے اللہ اس مرتبہ پر اس کو پہنچانے والا نہیں ہوتا۔ (تفسیر مظہری)

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ

اور تم تھکا دینے والے نہیں بھاگ کر زمین میں

وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ

اور کوئی نہیں تمہارا اللہ کے سوائے کام بنانے والا

وَّلَا نَصِيْرٍ

اور نہ مددگار ☆

☆ یعنی محض اپنی مہربانی سے معاف کرتا ہے ورنہ زمین میں بھاگ کر چاہے مجرم بھاگ جائیں نہیں ہو سکتا اور اس کے سوا کوئی مددگار نہیں۔

ابھار کے لئے عذاب ہو سکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ

اور ایک اس کی نشانی ہے کہ جہاز چلتے ہیں

كَالْاَعْلَامِ ۝

دریا میں جیسے پہاڑ ☆

☆ یعنی جیسے زمین کی سطح پر پہاڑ ابھرے ہوئے ہیں سمندر کی سطح پر بڑے بڑے جہاز ابھرے ہوئے نظر آتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ

اگر چاہے تھام دے ہوا کو پھر رہیں

رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ

سارے دن ٹھہرے ہوئے اس کی پیٹھ پر ☆

ہوا بھی اللہ کے تابع ہے ☆ یعنی ہوا بھی اللہ کے قبضہ میں ہے اگر ہوا ٹھہر جائے چلنے نہ دے تو تمام بادبانی جہاز دریا کی پیٹھ پر جہاں کے تہاں کھڑے رہ جائیں کیونکہ پانی اور ہوا سب اسی کے زیر فرمان ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ

بیشک اس بات میں پتے ہیں ہر ٹھہرے رہنے والے کو

شَكُوْرٍ ۝

جو احسان مانے ☆

☆ یعنی ہر حال میں موافق ہو یا مخالف دونوں قسم کے حالات سے سابقہ پڑتا ہے اس لئے بہت ضرورت ہے کہ انسان موافق حالات پر شکر اور مخالف حالات پر صبر کرے اللہ تعالیٰ کی قدرت و رحمت کو پہچانے۔ (تفسیر عثمانی)

اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ

یا تباہ کر دے ان کو بسبب ان کی کمائی کے اور معاف کرے

عَنْ كَثِيْرٍ ۝

بہتیروں کو ☆

☆ یعنی چاہے تو مسافروں کے بعض اعمال کی پاداش میں جہازوں کو تباہ کر ڈالے لیکن اس حالت میں بھی بعض احسان فرماتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا ؕ

اور تا جان لیں وہ لوگ جو جھگڑتے ہیں ہماری قدرتوں میں

مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ۝

کہ نہیں ان کے لئے بھاگنے کی جگہ ☆

☆ یعنی تباہ اس لئے کئے جائیں کہ ان کے بعض اعمال کا بدلہ ہو اور بڑے بڑے جھگڑالو بھی دیکھ لیں کہ ہم خدائی گرفت سے نکل بھاگنے کی کوئی جگہ نہیں۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "جو لوگ ہر چیز اپنی تدبیر سے سمجھتے ہیں اس وقت عاجز ہو جائیں گے کوئی تدبیر نہیں چلے گی۔" (تفسیر عثمانی)

یہ مطلب بھی ہو سکتا ہے کہ جو لوگ قرآن کی تکذیب کرتے اور آیات خداوندی سے سبق اندوز نہیں ہوتے قیامت کے دن جب اللہ کے سامنے جائیں تو ان کو معلوم ہو جائے کہ عذاب سے بچ نکلنے کی کوئی راہ نہیں۔ (تفسیر مظہری)

فَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ

سو جو کچھ ملا ہے تم کو کوئی چیز ہو سو برت لینا ہے دنیا کی

الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

زندگانی میں اور جو کچھ اللہ کے یہاں ہے بہتر ہے اور باقی رہنے والا

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ

واسطے ایمان والوں کے جو اپنے رب پر بھروسہ کرتے ہیں ☆

دنیا کے سامان سے دھوکہ میں نہ پڑو

☆ یعنی یہ تمام باتیں سمجھنے کے بعد انسان کو چاہئے کہ اللہ کو راضی رکھنے کی فکر کرے یہ چند روزہ متاع فانی اور عیش فانی پر مغرور ہو اور خوب سمجھ لے کہ یہاں اس کو جو عیش و آرام ملا ہے اس سے کہیں بہتر اور باقی رہنے والا عیش و آرام سے بہتر بھی ہے اور پائیدار بھی وہ اس کی ہی طرح اللہ کی خوشنودی کا ملنا ہوگا۔ (تفسیر عثمانی)

فَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ۔ یعنی دنیا میں جو کچھ تم کو دیا گیا ہے۔

فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ۔ وہ دنیوی زندگی میں برتنے کا سامان ہے اس

زندگی میں اس سے فائدہ اٹھانا ہو تو یہ فائدہ دنیوی زندگی کا [illegible] ہے [illegible] آخرت کے لئے [illegible] بقدرِ ضرورت [illegible] جو چیز آخرت سے غافل بنا دے اس کو چھوڑ دو۔

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَیْرٌ: اور آخرت میں جو ثواب اللہ کے پاس ہے۔

[illegible] بہتر ہے [illegible] کیفیت [illegible] ہر لحاظ سے بہتر ہے [illegible] باقی رہنے والا ہے۔ (تفسیر [illegible])

**آیت کا شانِ نزول:** لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ: حضرت علی [illegible] بیان ہے [illegible] حضرت ابوبکر [illegible] نے [illegible] سارا مال [illegible] خیرات کر دیا [illegible] نے ان [illegible] پر [illegible] آیت نازل ہوئی۔ (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| وَالَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ |
| اور جو لوگ کہ بچتے ہیں بڑے گناہوں سے |
| وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ |
| اور بے حیائی سے اور جب غصہ آوے تو وہ |
| یَغْفِرُوْنَ ۟ |
| معاف کر دیتے ہیں۞ |

[illegible] یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ [illegible] "كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ" [illegible] "الْفَوَاحِشَ" [illegible] "وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ یَغْفِرُوْنَ" [illegible]

**حسنِ اخلاق کا عملی ثبوت:** حسنِ اخلاق کا [illegible] [illegible] (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| وَالَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا |
| اور جنہوں نے کہ حکم مانا اپنے رب کا اور قائم کیا |

| |
|---|
| الصَّلٰوةَ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَیْنَهُمْ |
| نماز کو اور کام کرتے ہیں مشورہ سے آپس کے |

مشورہ [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] صحابہ رضوان اللہ علیہم اجمعین سے مشورہ فرماتے تھے اور صحابہ کرام علیہم الرضوان آپس میں مشورہ کرتے تھے [illegible] خلافت [illegible] (تفسیر [illegible])

[illegible] وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ [illegible] (تفسیر [illegible])

**مومن کا مشورہ اور مشورہ کا ادب:**

یہ حقیقت ہے کہ جب کوئی مومن دوسرے مومن سے کسی معاملہ میں مشورہ کرتا ہے تو وہ صحیح مشورہ دیتا ہے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس سے مشورہ طلب کیا جائے وہ امانت دار [illegible] (تفسیر [illegible])

[illegible] حضرت علی [illegible] روایت [illegible] مشورہ طلب کیا جائے [illegible] (تفسیر [illegible])

حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات شریف ہوئی تو خلافت و امیر کے ساتھ پر لوگوں نے مشورہ کیا ... کہ ان کے کسی کو تعین نہ کیا تھا وہ اسی طرح امیر المؤمنین حضرت عمر رضی اللہ عنہ سے جب کہ آپ کو زخمی کر دیا گیا اور وفات کا وقت آ گیا تو آپ نے مقرر کر دیئے کہ یہ اپنے مشورے سے کسی کو امیر المؤمنین مقرر کر لیں۔ ان چھ بزرگوں کے نام یہ ہیں۔ عثمان، علی، طلحہ، زبیر، سعد اور عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہم۔ پھر سب نے اتفاق رائے سے حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو اپنا امیر مقرر کیا۔ (تفسیر ابن کثیر)

والذین استجابوا لربہم۔ خصوصیت کے ساتھ صدیق اکبرؓ کی طرف اشارہ ہے کیونکہ آپ سب کی دعوت پر لبیک کہنے والوں میں سب سے مقدم اور سب سے پیشوا ثابت ہوئے۔ اجابت میں تسلیم و انقیاد اور اقامت صلوٰۃ آپ کا معروف وصف ہے ... اور اقامت صلوٰۃ کا یہ وصف اس امر کا باعث بنا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے مرض وفات میں انہی کو اپنی جگہ امامت کے لئے مامور فرمایا اگرچہ حضرت عائشہؓ بار بار اس کو ٹالتی رہیں۔ لیکن آپ صلی اللہ علیہ وسلم برابر یہی فرماتے رہے مروا ابا بکر فلیصل بالناس یعنی ابوبکرؓ کو حکم دو کہ لوگوں کو نماز پڑھائیں۔

اور وامرہم شوریٰ بینہم میں حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کی طرف اشارہ ہے کیونکہ آپ کا معروف وصف شوریٰ تھا آپ اپنے زمانہ خلافت میں کوئی امر بدون مشورہ صحابہؓ کے انجام نہیں دیا کرتے تھے۔ اسی وجہ سے امور سلطنت ... جن پر آج تک ... فاروق اعظمؓ کے زمانہ میں مدون ہو چکا تھا۔ [illegible] فلعلموہ من شئ کان لہ حصہ والزمہ وطلق الغربی [illegible] یہ بھی ظاہر ہو رہا ہے کہ فاروق اعظم رضی اللہ عنہ کے اجتہادات اللہ کے نزدیک صحیح اور پسندیدہ تھے ... حق تعالیٰ نے بطور مدح ذکر فرمایا۔ (موضح القرآن)

## اسلام حقیقی جمہوریت کا بانی ہے

ابن کثیرؒ نے فرمایا کہ مہمات مملکت میں مشورہ لینا واجب ہے۔ اسلام میں امیر کا منتخب مجلس مشورہ پر موقوف ہے ... بادشاہتوں کو ختم کیا ہے ... وراثت ... اسلام نے سب سے پہلے اس کو ختم کر کے حقیقی جمہوریت کی بنیاد ڈالی مگر مغربی جمہوریت کی طرح عوام کو ہر طرح کے اختیارات نہیں دیئے بلکہ شوریٰ پر کچھ پابندیاں عائد فرمائی ہیں۔ اس فرق سے اسلام کا نظام حکومت تمام بادشاہت اور مغربی جمہوریت سے ... یہ مسئلہ ایک بہت مفصل مقالہ ہے ... تفسیر معارف القرآن جلد دوم ص ۲۰۵ سے ص ۲۱۲ تک میں دیکھ ... جا سکتی ہیں۔ اس وقت تمہارے لئے زمین کی پیٹھ بہتر ہے زمین کے پیٹ

سے بہتر ہو گی یعنی زندگی سے موت بہتر ہوگی۔ (رواہ الترمذی ...)

| |
|---|
| وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ |
| اور ہمارا دیا ہوا کچھ خرچ کرتے ہیں |
| وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ |
| اور وہ لوگ کہ جب ہو ان پر |
| الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝ |
| زیادتی تو وہ بدلہ لیتے ہیں ۳۹ |

**مومن کی شان:** یعنی جہاں معاف کرنا مناسب ہو معاف کرتے ہیں ... ایک شخص کی ... پر ... ندامت کے ساتھ اپنے عجز و قصور کا اعتراف کر لیا انہوں نے معاف کر دیا ... ہاں جو شخص ... ظلم و زیادتی کرتا جائے ... تو اس سے بدلہ لینا ... مسلمین کی ... (تفسیر عثمانی)

**ظلم کا انتقام میں معتدل فیصلہ:** حضرت ابراہیم نخعیؒ نے فرمایا کہ سلف صالحین یہ پسند نہ کرتے تھے کہ مومنین اپنے آپ کو فاسقوں کے سامنے ذلیل کریں اور ان کی ... اس لئے ... معاف کرنے سے فساق فجار کی جرأت بڑھے گی ... ان سے انتقام لینا بہتر ہوگا ... معاف کرنا افضل ہوگا ... ظلم کرنے والا اپنے فعل پر نادم ہو ... ظلم ... قاضی ابوبکر ابن العربی نے احکام القرآن میں ... یہی تفسیر ... اختیار کی ہے ... ظلم کرنے ... بدلہ لینا ... افضل ہے۔

حضرت اشرف تھانویؒ نے بیان القرآن میں ... تقریر فرمائی ... دونوں آیتوں میں ... مخلصین مومنین کی دو خصوصیتیں ذکر فرمائی ہیں۔ ھم یغفرون ... ھم ینتصرون ... بدلہ لیتے ہیں ... اور بدلہ لینے میں ... سے زیادہ نہیں کرتے ... معاف ...

[illegible]

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا

[illegible]

[illegible]

فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى

[illegible]

اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ

[illegible]

[illegible]

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ

مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ

[illegible]

[illegible]

ما علیھم من سبیل [illegible]

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ

الزام تو ان پر ہے جو ظلم کرتے ہیں

النَّاسَ

لوگوں پر

[illegible]

وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ

اور ناحق ملک میں سرکشی کرتے ہیں

أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَلَمَنْ

ان لوگوں کے لئے دردناک عذاب ہے اور جو

صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ

صبر کرے اور معاف کردے بیشک یہ کام ہمت

الْأُمُورِ

کے ہیں

[illegible]

## صبر کرنے والا شخص افضل ہے

[illegible]

## فضیل بن عیاض کی اپنے خادم کو نصیحت

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible] ولمن صبر وغفر ان ذلک لمن عزم الامور [illegible]

سلاطین سے جو ظلم پر مصر ہیں۔ ورنہ اس اندیشہ ہے کہ امت انتشار و افتراق کا شکار ہو جائے۔ مسلمانوں کو اس وقت کے مقابلہ میں قوت [illegible] نے منع کیا اور پھر جو [illegible] کے اطاعت قبول کی۔ [illegible] اور امام علی بن حسین تھے رضی اللہ عنہ [illegible] (حضرات قارئین تفصیل کے لئے [illegible] ملاحظہ فرمائیں)۔ [illegible]

**علامہ ابن زیاد کی گورنر کو نصیحت:**

حضرت محمد بن واسع رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں [illegible] دیکھا کہ مخلوق پر ظلم ہو رہا ہے۔ میں [illegible] تھا جو گرفتار کیا گیا اور امیر بصرہ [illegible] کے پاس بھیج دیا گیا۔ اس نے مجھ سے کہا [illegible]! تم کیا چاہتے ہو؟ میں نے کہا کہ اگر تم سے ہو سکے تو [illegible] کے بھائی جیسے بن جاؤ۔ پوچھا وہ کون ہے؟ کہا [illegible] نے اپنے ایک دوست کو ایک مرتبہ کسی صوبہ پر عامل بنایا تو انہوں نے اسے لکھا کہ حمد و صلوٰۃ کے بعد اگر ہو سکے تو یہ کرنا کہ تیری کمر بوجھ سے خالی رہے تیرا پیٹ حرام سے بچا رہے تیرے ہاتھ مسلمانوں کے خون و مال سے آلودہ نہ ہوں۔ تو جب یہ کرے گا تو تجھ پر کوئی گرفت کی راہ باقی نہ رہے گی۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ |
| اور جس کو راہ نہ سجھائے اللہ تو کوئی نہیں اس کا کام |
| وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ |
| بنانے والا اس کے سوا ☆ |

توفیق اللہ کی طرف سے ہے: جس کو اللہ کی توفیق دستگیری نہ کرے [illegible] اعمال و نصائح [illegible] کی اس [illegible] حاصل نہ کر سکیں [illegible] بہتر ہے اخلاق کی طرف راہ دے [illegible] ہے جو ہاتھ پکڑ کر اخلاق [illegible] اور [illegible] سے کام کا سکے (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ |
| اور تو دیکھے گنہگاروں کو جس وقت دیکھیں گے عذاب |
| يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ |
| کہیں گے کسی طرح پھر جانے کی بھی ہوگی کوئی راہ ☆ |

**کافروں کی حسرت:** [illegible] دنیا کی طرف پھر واپس کر دیے جائیں [illegible] سے توبہ [illegible] (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ |
| اور تو دیکھے ان کو کہ سامنے لائے جائیں گے آگ کے آنکھیں جھکائے ہوئے |
| الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ |
| ذلت سے دیکھتے ہوں گے چھپی نگاہ سے ☆ |

تو انکو ایک سہمے ہوئے مجرم کی طرح خوف اور ذلت و ندامت کے مارے چپکی نظر سے دیکھتے ہوں گے۔ کسی سے چھپی طرح آنکھ بھر کر نہ دیکھیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

**گنہگاروں کی حالت:** مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ۔ پوشیدہ چھپی نظر سے [illegible] جیسے [illegible] سے [illegible] چھپی نظر سے [illegible] (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ |
| کہیں وہ لوگ جو ایماندار تھے خرابی میں پڑے وہی جو ہار بیٹھے |
| خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ |
| اپنی جان کو اور اپنے گھر والوں کو قیامت کے دن ☆ |

[illegible] اپنے ساتھ اپنے متعلقین اور گھر والوں کو بھی [illegible] کو تباہ و برباد کر کے چھوڑا۔ (تفسیر [illegible])

**کافروں نے ایمان نہ لا کر اپنی حوریں کھو دیں**

بعض اہل تفسیر کے نزدیک اہل سے مراد حوریں ہیں اگر کافر ایمان لے آتے تو ان کو وہ حوریں مل جاتیں جو جنت میں ان کے لئے مقرر کی گئی ہیں لیکن کفر کی وجہ سے وہ ان حوروں تک نہیں پہنچ سکے اور اس طرح خسارے میں رہے۔ (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ؕ |
| سنتا ہے گنہگار پڑے ہیں سدا کے عذاب میں |
| وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ |
| اور کوئی نہ ہوئے ان کے حمایتی جو مدد کریں ان کی |
| مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا |
| اللہ کے سوا اور جس کو بھٹکائے اللہ اس کے |

لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ

اس کے لئے کہیں نہیں راہ ہے

یعنی اللہ جس کو [illegible] اس کی [illegible] نجات کی [illegible]

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ

مان لو اپنے رب کا حکم اس سے پہلے کہ آئے

يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ مَا لَكُمْ

وہ دن جس کو پھرنا نہیں خدا کے یہاں سے [illegible]

یعنی جس کے [illegible] [illegible] ٹل جائے [illegible]

نکلنا۔ (تفسیر عثمانی)

استجیبوا لربکم۔ یعنی تم جو اللہ کی طرف بلانے والے ہیں ان کی بات مانو۔

لا مرد لہ من اللہ۔ یعنی اللہ [illegible] آنے کو کوئی [illegible] سے بچے گا [illegible] نہیں سکے گا۔ (تفسیر مظہری)

مِنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ

کہیں بچاؤ کی جگہ اس دن اور نہ تمہاری طرف سے انکار ہوگا

[illegible] [illegible] جائے [illegible] [illegible] [illegible] کے پاس [illegible]

[illegible] [illegible] (مظہری)

یوم [illegible] قیامت۔

ملجاء [illegible] [illegible] ہو۔

ما لکم من نکیر۔ یعنی تم سے جو کچھ ہوا ہے اس کا انکار نہ ہو سکے گا۔ (مظہری)

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ

پھر اگر وہ منہ پھیر لیں تو تجھ کو نہیں بھیجا ہم نے ان پر

حَفِيْظًا ۭ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ

نگہبان تیرا ذمہ تو بس یہی ہے پہنچا دینا

یعنی آپ [illegible] [illegible] [illegible] اگر آپ [illegible] [illegible] [illegible] ہے [illegible] ہے [illegible] [illegible] کر سکتے۔ (مظہری)

وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

اور ہم جب چکھاتے ہیں آدمی کو اپنی طرف سے رحمت

فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا

اس پر پھولا نہیں سماتا اور اگر پہنچتی ہے ان کو کچھ برائی

قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ

بدلے میں اپنے ہاتھوں کے تو انسان بڑا ناشکرا ہے

**انسانی طبیعت** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] نسان کی طبیعت میں [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] انسان [illegible] [illegible] لگتا ہے [illegible] اپنی [illegible] [illegible] [illegible] سب [illegible] بھول جاتا ہے اور ایسا [illegible] ہو جاتا ہے گویا کبھی اس پر [illegible] [illegible] [illegible] کی حالت [illegible] اور تکلیف کی [illegible] [illegible] [illegible] تکلیف [illegible] [illegible] [illegible] کی حالت میں [illegible] حقیقی کا شکر ادا کرتے ہیں [illegible] [illegible] [illegible] کو [illegible] نہیں کرتے۔ (مظہری)

**مصیبت رحمت کا تقاضا نہیں ہے**

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] مصیبت [illegible] [illegible] رحمت نہیں [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] مصیبت [illegible] [illegible] [illegible] **تصبہم** کے [illegible] [illegible] [illegible] کا استعمال [illegible] (مظہری)

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَخْلُقُ مَا

اللہ کا راج ہے آسمانوں میں اور زمین میں پیدا کرتا ہے جو

يَشَاۗءُ ۭ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ

چاہے بخشتا ہے جس کو چاہے بیٹیاں اور بخشتا ہے

لِمَنْ يَّشَاۗءُ الذُّكُوْرَ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ

جس کو چاہے بیٹے یا ان کو دیتا ہے جوڑے

ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَاۗءُ عَقِيْمًا

بیٹے اور بیٹیاں اور کر دیتا ہے جس کو چاہے بانجھ

## إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ

[illegible]

[illegible]

## وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا

[illegible]

## أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا

[illegible]

## فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ

[illegible]

### اللہ تعالیٰ سے ہم کلامی کی صورتیں

[illegible]

[illegible]

### آیت کا شانِ نزول

[illegible]

[illegible]

وحی کا ثبوت [illegible]

[illegible]

نزول وحی کی کیفیت میں شدت کی وجہ [illegible]

[illegible]

وحی کی حقیقت [illegible]

[illegible]

## آیت میں مذکور تین صورتوں کی وضاحت

[illegible]

[illegible] میں بہت سے [illegible] آپ صلی اللہ علیہ [illegible] حضرت [illegible] کی طرف [illegible] اس صورت کے [illegible] جو [illegible] فرماتے [illegible] نہیں ہوتی تھی۔ [illegible] صورت [illegible] کی [illegible] بغیر [illegible] ایک [illegible] جیسے کہ حضرت نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] آسمانوں کی [illegible] کے بعد سدرۃ المنتہیٰ اور بیت المعمور تک [illegible] وہاں سے [illegible] بلند [illegible] تک پہنچایا گیا [illegible] کی صورت ہوئی [illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] کیا [illegible] میں اختلاف ہے لیکن [illegible] پہنچا [illegible] اور [illegible] ہے [illegible] کے عنوان سے بیان کیا گیا ہے [illegible] کلام [illegible] ایک ہی صورت میں ہو سکتی ہے جس [illegible] کلام [illegible] ساتھ [illegible] بات؟ [illegible]

## الہام اور اس کی صورتیں

[illegible] اللہ کا کلام ہے جو [illegible] اللہ کے برگزیدہ بندوں کے قلب پر [illegible] جاتے ہیں۔ [illegible] قلب میں بغیر کسی اکتساب اور استدلال کے حق تعالیٰ شانہ [illegible] کی جانب سے القاء ہوں [illegible] الہام کہتے ہیں۔

[illegible] فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا [illegible] کا [illegible] فرماتے ہیں کہ [illegible] کو [illegible] سے [illegible]

[illegible] رضی اللہ تعالیٰ عنہ [illegible] اسلام [illegible] آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] تعلیم فرمائی۔

اللّٰہم الہمنی رشدی واعذنی من شر نفسی۔ (اے اللہ مجھ کو [illegible] ہدایت کا [illegible] نفس [illegible] سے مجھ کو پناہ دے)

## وقال تعالیٰ شانہ

[illegible] (اور [illegible] طرف [illegible])

## وقال تعالیٰ شانہ

[illegible] (اور [illegible] کو [illegible] اپنی طرف [illegible])

## وقال اللہ جل جلالہ

[illegible] (اور [illegible] ایسے [illegible] ساتھ [illegible] (سورہ کہف)

[illegible] اللہ [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible]

لما علمنا [illegible] الاسلام [illegible] ہیں۔

والعلم اللدنی هو الذی لا واسطة فی حصوله بین النفس وبین الباری وانما هو کالضوء من سراج الغیب یقع علی قلب صاف فارغ لطیف [illegible]

علم لدنی وہ ہے جس کے حصول میں نفس اور حق تعالیٰ کے درمیان کوئی واسطہ [illegible] علم [illegible] کی طرح ہے جو چراغ غیب سے قلب صاف [illegible]

حضرت [illegible] کو [illegible] کرتے تھے۔

[illegible] منا [illegible] علما [illegible] (سورۃ [illegible]) [illegible] ہم نے [illegible] علم لدنی [illegible]

[illegible] الہام [illegible] قلب میں [illegible] کی جاتی ہے [illegible] قلب [illegible]

کما قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان روح القدس نفث فی روعی لن تموت نفس حتی تستکمل رزقها الحدیث وقال تعالی اذ یوحی ربک الی الملائکة انی معکم فثبتوا الذین آمنوا (سورۂ انفال) نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] روح القدس [illegible] کوئی شخص [illegible] اپنا [illegible] تک کہ وہ [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] کی طرف [illegible] کہ میں تمہارے ساتھ ہوں [illegible] کو ثابت قدم رکھو۔

[illegible] آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا [illegible] واعظ اللہ فی قلب کل مومن جیسا کہ امام [illegible] اور امام ترمذی [illegible] سے روایت کی ہے [illegible] جیسا

کہ حافظ ابن حجر نے مدارج السالکین میں ذکر کیا ہے۔

فرشتے حضرت عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو سلام کیا کرتے تھے مگر جب وہ داغ لگوانے لگے تو فرشتوں نے سلام چھوڑ دیا مگر جب انہوں نے داغ لینا چھوڑ دیا تو فرشتے پھر حسب عادت سلام کرنے لگے۔

ابو عمر ابن عبدالبر فرماتے ہیں کہ عمران بن حصین بڑے جلیل القدر تھے اور فقہاء صحابہ میں سے تھے اہل بصرہ اور حضرت عمران سے ناقل ہیں کہ وہ کراماً کاتبین کو دیکھا کرتے تھے اور ان سے باتیں کرتے تھے یہاں تک کہ داغ لیا۔ (کرامات اصحاب ج ۳)

حجۃ الاسلام غزالی قدس سرہ احیاء العلوم میں فرماتے ہیں کہ قلب کے دو دروازے ہیں ایک عالم ملکوت کی طرف جو علم غیب ہے اور دوسرا عالم شہادت کی طرف۔ ظاہری علوم و معارف ظاہری دروازے یعنی حواس خمسہ ظاہرہ سے قلب میں داخل ہوتے ہیں۔ اور عالم ملکوت اور عالم غیب کے علوم باطنی دروازے سے قلب میں آتے ہیں۔

حسن بصری، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت فرماتے ہیں کہ آنحضرت نے یہ ارشاد فرمایا کہ علم دو ہیں ایک ظاہری اور ایک باطنی اور آخرت میں علم باطن ہی نفع دیتا ہے۔ بعض علماء سے علم باطن کے متعلق دریافت کیا گیا تو یہ فرمایا کہ وہ ایک سر الٰہی ہے جس کو حق تعالیٰ اپنے محبوبین کے دلوں میں ڈالتے ہیں اور اس پر کسی فرشتہ اور بشر کو بھی مطلع نہیں فرماتے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ میری امت میں سے محدث اور معلم اور متکلم ہوں گے۔ اور عمر ان میں سے ہیں۔ اور ابن عباس کی قراءت میں ہے وما ارسلنا من قبلک من رسول ولا نبی ولا محدث اور محدث اور ملہم من اللہ ہے کہ جس کے باطن قلب میں ان حواس ظاہرہ کے سوا علوم و معارف کیلئے کوئی دوسرا راستہ کھل گیا ہو۔ ابو یزید رحمۃ اللہ علیہ یہ فرمایا کرتے تھے کہ وہ شخص عالم نہیں کہ جو کسی کتاب کو یاد کر لے اس لئے کہ اگر وہ اس کو بھول جائے تو جاہل رہ جائے گا۔ عالم حقیقی وہ ہے کہ جو اپنے رب سے جس وقت چاہے علم حاصل کرتا ہو بغیر حفظ اور درس کے اور یہی علم ربانی ہے اور وعلمناہ من لدنا علما میں اسی طرف اشارہ ہے۔ اگرچہ ہر علم حق ہی کے پاس سے ہے مگر بعض علم تعلیم خلق کے واسطے سے حاصل ہوتا ہے اس کو علم لدنی نہیں کہتے۔ علم لدنی وہ ہے کہ جو بغیر کسی ظاہری سبب کے خود بخود قلب میں حق جانب اللہ آتا ہو۔

حجۃ الاسلام قدس سرہ ایک دوسرے مقام پر لکھتے ہیں کہ حوض میں پانی داخل ہونے کی دو صورتیں ہیں ایک یہ کہ نہر وغیرہ سے پانی لایا جائے۔ دوسرے یہ کہ اسی حوض کو کھود کر اور اسکو پاک صاف کر کے اسی میں کوئی چشمہ جاری کر دیا جائے اور یہ پانی بہ نسبت نہر کے پانی کے نہایت صاف اور شیریں اور لطیف ہوگا۔ اسی طرح قلب بھی بمنزلہ حوض کے ہے کبھی علم اس میں حواس کی نہر سے لایا جاتا ہے اور کبھی بعد چند مجاہدہ و ریاضت قلب کو کھود کر صاف کر دیا جاتا ہے۔

اس وقت خود اندرون قلب ہی سے علم کے چشمے جاری ہو جاتے ہیں اور تحصیل علوم میں حواس خارجی کی ضرورت بالکل باقی نہیں رہتی جیسا کہ اولیاء اور علماء ربانیین کو عطا فرماتے ہیں مگر اس دوسرے باب کا انفتاح تحصیل علوم اور ریاضت و تقویٰ اور مجاہدہ و جہد اور مراقبہ و تفکر پر موقوف ہے۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو علم پر عمل کرے اللہ تعالیٰ اس کو ان چیزوں کا علم عطا فرماتے ہیں جن کو وہ نہیں جانتا۔ اور فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ جو چالیس روز اخلاص کے ساتھ عبادت کرے اللہ تعالیٰ علم و حکمت کے چشمے اس کے قلب سے اس کی زبان پر جاری فرما دیتے ہیں۔ فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ ایک گھڑی تفکر اور مراقبہ سال کی عبادت سے بہتر ہے تفکر۔ جب صحیح راستے پر چلے تو وہ مفتاح ابواب الغیب میں سے ہوتا ہے اور عالم غیب سے ایک دروازہ اس کے قلب میں کھل جاتا ہے اس وقت یہ شخص عالم اور عاقل اور مجتہد اور ملہم من اللہ ہو جاتا ہے۔ (رسالہ لدنیہ ص ۲۷)

## الہام انبیاء اور الہام اولیاء میں فرق

حافظ توربشتی رحمہ اللہ تعالیٰ المعتمد میں فرماتے ہیں کہ الہام انبیاء اور الہام اولیاء میں فرق ظاہر ہے انبیاء کا الہام قطعی ہوتا ہے جس طرح انبیاء کرام معصوم عن الخطا ہوتے ہیں۔ اسی طرح ان کا الہام بھی معصوم عن الخطا ہوتا ہے بخلاف الہام اولیاء کے کہ وہ ظنی ہوتا ہے اور خطا سے معصوم نہیں۔ اور یہ فرق ایسا ہی ہے جیسا کہ انبیاء اور اولیاء کے احوال میں۔ انبیاء کا ہر حال صالح ہوتا ہے اور اولیاء کا نہیں۔

امام ربانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ اپنے ایک مکتوب میں فرماتے ہیں۔

والہام کہ اولیاء راہست مقتبس از انوار
نبوت است از برکات و فیض متابعت
انبیاء است علیہم الصلوات والتسلیمات

(مکتوب ۲۳ جلد ۲ ص ۳۱)

اور اولیاء کا الہام انوار نبوت سے ماخوذ ہوتا ہے اور انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کی متابعت کے طفیل اور برکت سے ہوتا ہے۔ (انتہیٰ ملخصاً)

یعنی جس طرح مومنین کا ایمان اور ان کی دیگر صفات حسنہ نبوت کا پرتو اور ظل ہیں۔ مثلاً تسلیم و تفویض وغیرہ انبیاء کرام ہی کے ایمان اور صفات کا ایک عکس ہوتا ہے مومنین کے ایمان اور ان کے زہد و ورع کو انبیاء کے ایمان اور زہد و ورع سے کوئی نسبت نہیں ہوتی۔

اسی طرح الہام مومنین کو الہام انبیاء سے کوئی نسبت نہیں ہوتی۔ الہام مومنین تو الہام انبیاء کا ایک ادنیٰ سا پرتو اور عکس ہوتا ہے۔ یہ کہاں اور

کے انصرام ہو سکے جیسا کہ حضرت خضر کو ہوا۔

نیز الہام اولیاء فقط کسی شخص یا گروہ پر مشتمل ہوتا ہے اور الہام انبیاء میں امر و نہی اور احکام آتے ہیں جو بندوں کے متعلق ہوں وہ بھی لے آتے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ انبیاء پر اپنے الہام کی تبلیغ واجب ہے اور اولیاء پر مخفی رکھنا اس کا اظہار واجب نہیں جب تک کوئی ضرورت شرعیہ داعی نہ ہو۔

وحی و الہام کی تحقیق و تفصیل میں حضرت والد محترم کا یہ کلام نہایت جامع اور اسرار و حکمت پر مشتمل تھا جو جیسا کہ ترجمہ کیا گیا۔ کما اللہ قدہ ثم تغییر

سورۃ الشوریٰ کی اساس معارف القرآن کاندھلوی)

| |
|---|
| اِنَّهٗ عَلِیٌّ حَكِیْمٌ ۝ |
| تحقیق وہ سب سے اوپر ہے حکمتوں والا ☆ |

☆ یعنی اس کا علو اتنا ہے کہ جو طرح کلام کرے سراسر حکمت مقتضی ہے۔ بعض صورتیں ہم کلامی کی اختیار کی جاتی ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَكَذٰلِكَ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ رُوْحًا |
| اور اسی طرح بھیجا ہم نے تیری طرف ایک فرشتہ |
| مِّنْ اَمْرِنَا |
| اپنے حکم سے ☆ |

روح سے مراد وہ مقدس فرشتہ ہے جس کا نام روح القدس ہے اس سے مراد جبرئیل ہیں یعنی جبرئیل امین اور بعض مفسرین کہتے ہیں لیکن ظاہر یہ ہے کہ یہاں قرآن کریم کو روح سے تعبیر فرمایا کیونکہ اس کے ذریعہ سے مردہ قلوب زندہ ہوتے ہیں اور انسانوں کو اعلیٰ حیات نصیب ہوتی ہے کیونکہ جہالت میں کفر و ظلم اور بداخلاقی کی موت مری پڑی تھی کسی طرح قرآن نے ان میں جان ڈال دی۔ (تفسیر عثمانی)

روحًا روح سے مراد ہے کتاب یعنی قرآن مجید کذلک قال [illegible] کی وجہ سے ہے یہ کہ جس طرح روح سے بدن کی زندگی ہوتی ہے اسی طرح قرآن دلوں کو زندہ کرتا ہے اس لئے قرآن کو روح فرمایا گیا ہے کہ روح سے مراد یہی جبرئیل امین ہوں تو اس کا معنی یہ ہوگا یعنی ہم نے جبرئیل کو بھیجا۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا روح (سے مراد) نبوت ہے۔ حسن نے کہا رحمت مراد ہے ان دونوں سے مراد بھی قرآن ہی ہے نبوت اور رحمت کا نشان قرآن ہی ہے۔

من امرنا اپنے حکم سے۔ یعنی اپنے حکم سے ہم نے اس کو نازل کیا یا مطلب یہ ہے کہ روح ہمارے امر سے ہے (ہمارے امر کا نتیجہ ہے)۔ (تفسیر مظہری)

**روح القدس کی بات** صحیح ابن حبان کی حدیث میں ہے کہ روح القدس نے میرے دل میں یہ بات ڈالی ہے کہ کوئی شخص بھی جب تک اپنی روزی اور اپنا وقت پورا نہ کر لے ہرگز نہیں مرتا۔ پس اللہ تعالیٰ سے ڈرو اور طلب رزق میں اچھائی اختیار کرو۔ یہ حدیث اس بات سے پہلے حضرت مرتضیٰ سے کلام ہوا۔ کیونکہ یہ شخص کے کلام میں کر تمثال ورکھتا پایا لیکن وہ پہلے سے ملی تھا۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| مَا كُنْتَ تَدْرِیْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِیْمَانُ |
| تو نہ جانتا تھا کہ کیا ہے کتاب اور نہ ایمان ☆ |

## تفاصیل وحی کے ذریعہ معلوم ہوئیں

☆ یعنی ایمان و اعمال کی تفصیلات جو وحی کے ذریعہ اب معلوم ہوئیں پہلے سے کہاں معلوم تھیں گو آپ ایمان کے ساتھ ہمیشہ سے متصف تھے۔ (تفسیر عثمانی)

ما کنت تدری۔ یعنی وحی سے پہلے آپ نہیں جانتے تھے۔

## ایمان سے کیا مراد ہے:

یعنی ان احکام و شرائع سے واقف نہ تھے جن پر ایمان لانے کا طریقہ (عقلی نہیں بلکہ) محض نقلی ہے۔ محمد بن اسحاق نے کہا اس جگہ ایمان سے نماز مراد ہے جیسے دوسری آیت میں آیا ہے وما کان اللہ لیضیع ایمانکم اللہ ایسا نہیں کہ تمہاری (گذشتہ) نمازوں کو اکارت کر دے۔ اس تفسیر کی بناء اہل علم کے اس نظریہ پر ہے کہ انبیاء کا اللہ پر ایمان (نظری) الہامی ہوتا ہے وہ نظری طور پر یا اتباعاً نہیں۔ اس ایمان کا ایک حصہ جو تمام نقائص سے پاک اور تمام صفات کمالیہ سے موصوف ہے زمانے ہیں۔

یہ بات ضرور ہے کہ وحی سے پہلے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم غفلت پر اللہ تعالیٰ کی طرف راغب تھے۔ میں کہتا ہوں یہ کہا جا سکتا ہے کہ وحی سے پہلے ہی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مومن کامل تھے حقیقت ایمان کا یقین رکھتے تھے لیکن نہیں جانتے تھے کہ اس حالت کا نام ایمان ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِیْ بِهٖ مَنْ |
| ولیکن ہم نے رکھی ہے یہ روشنی اس سے راہ سمجھا دیتے ہیں |
| نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا |
| جس کو چاہیں اپنے بندوں میں ☆ |

نور ہدایت ☆ یعنی قرآن کی روشنی میں جن بندوں کو ہم چاہیں سعادت و فلاح کے راستے پر لے چلتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

ولکن جعلنٰہ نورا۔ حضرت ابن عباس نے فرمایا لیکن اس ایمان کو نور بنایا۔ سدی نے کہا قرآن کی طرف ضمیر راجع ہے یعنی اس قرآن کو نور بنا

[illegible]

وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ

[illegible]

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ

[illegible]

وَمَا فِي الْأَرْضِ

[illegible]

أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ

[illegible]

انجام کو سوچو [illegible]

تمت سورۃ شوریٰ

[illegible]

سورۃ الزخرف [illegible]

[illegible]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

[illegible]

حم ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ

[illegible]

قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

[illegible]

آیت کا لطیف معنی [illegible]

[illegible]

قسم کھانے کا مطلب [illegible]

قرآن کو واضح کہنے کا مطلب [illegible]

[illegible]

وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ

اور یہ قرآن لوح محفوظ میں ہمارے پاس بڑے رتبہ کی اور حکمت بھری کتاب ہے

[illegible]

## قرآن کے ام الکتاب ہونے کا تقاضا

[illegible]

أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن

كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ

## کسی کی شرارت کے سبب نزول ہدایت بند نہیں ہوتی

[illegible]

**آیت کا ایک اور مطلب:** [illegible]

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِينَ

[illegible]

**وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ**

[illegible]

**يَسْتَهْزِئُونَ**

[illegible]

[illegible]

وما یاتیہم [illegible]

[illegible]

من نبی [illegible]

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کیلئے پیغام تسکین

[illegible]

**فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضَىٰ**

[illegible]

**مَثَلُ الْأَوَّلِينَ**

[illegible]

[illegible]

**وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ**

[illegible]

**وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ**

[illegible]

**الْعَلِيمُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ**

[illegible]

**مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ**

[illegible]

**تَهْتَدُونَ**

[illegible]

**زمین کی نافعیت** [illegible]

[illegible]

مھدا [illegible]

سبلا [illegible]

لعلکم تہتدون [illegible]

**زمین کا نزول** [illegible]

**وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ**

[illegible]

[illegible]

**فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ**

[illegible]

**تُخْرَجُونَ**

[illegible]

**بعث بعد الموت** [illegible]

فانشرنا ... [illegible]

**دونفخوں کے درمیان مدت:** [illegible]

[illegible]

**آبِ حیات کی بارش:** [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا |
| [illegible] |

[illegible]

| |
|---|
| وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ |
| [illegible] |
| مَا تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ |
| [illegible] |

[illegible]

## جانوروں اور سواریوں کی نعمت

[illegible]

| |
|---|
| ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا |
| [illegible] |
| اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا |
| [illegible] |
| سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا |
| پاک ہے وہ ذات جس نے اس کو ہمارے بس میں کر دیا |
| وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ |
| [illegible] |

**انسانی صلاحیت کی نعمت:** [illegible]

"سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ" [illegible]

**سوار ہونے کے اذکار و دعائیں**

چنانچہ کتاب الاذکار ... [illegible]

[illegible]

اللهم إني أسألك في سفري هذا البر والتقوى ومن العمل ما تحب وترضى اللهم هون علينا سفرنا هذا واطو عنا بعده اللهم أنت الصاحب في السفر والخليفة في الأهل اللهم اصحبنا في سفرنا هذا واخلفنا في أهلنا [illegible]

**سفر سے واپسی کی دعا:** جب سفر سے آپ صلی اللہ علیہ وسلم واپس تشریف لاتے تو فرماتے آئبون تائبون إن شاء الله عابدون لربنا حامدون [illegible] (مسلم، ابوداؤد، ترمذی وغیرہ)

## سواری کے وقت دعا پڑھنے کی حکمت

[illegible]

## اللہ تعالیٰ کا پسندیدہ عمل

[illegible] ظلمت نفسي فاغفر لي ذنوبي إنه لا يغفر الذنوب إلا أنت [illegible]

[illegible]

**کافر و مؤمن کا فرق** [illegible]

> وَإِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ
>
> اور ہم کو اپنے رب کی طرف لوٹ کر جانا ہے

[illegible]

> وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ
>
> [illegible]
>
> الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۚ أَمِ اتَّخَذَ
>
> [illegible]
>
> مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم بِالْبَنِينَ
>
> [illegible]

ناشکری کی جا رہی ہے۔ اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کو پہچان کر شکر ادا کرنے کے بجائے [illegible] اللہ تعالیٰ کی جناب میں گستاخیاں کرنے لگا ہے [illegible] ناشکری کیا ہوگی کہ اس کے بیٹیاں تجویز کی جائے اور بیٹیاں بھی [illegible] اور یہ بھی یہاں اصل [illegible] کے [illegible] ایک بڑا [illegible] ہے [illegible] کے لئے اولاد تجویز کرنے کے یہ معنی ہیں کہ وہ [illegible] مرکب ہے اور مرکب کا حادث ہونا ظاہر ہے [illegible] اولاد بھی جانشین ہوا کرتی ہے وہ کسی ایک کی [illegible] کے حق میں عیب ہے یہاں [illegible] میں جانشین کا تصور بھی نہیں [illegible] کی باشان [illegible] کے سوا کہ [illegible] سب ضرورت ہے [illegible] نے اپنے لئے اولاد بھی کی تو [illegible] کو شرم آتی کہ اپنے حصہ میں تو [illegible] کے حصہ میں بیٹیاں اور بیٹیاں بھی لگاتے ہو۔ (تفسیر عثمانی)

**مشرکین کے دعوٰی کی حقیقت** وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا اور انہوں نے خدا کے بندوں میں سے خدا کا جز ٹھہرایا یہاں [illegible] ہے کہ مشرکین فرشتوں کو اللہ کی بیٹیاں کہا کرتے تھے [illegible] کے بجائے "جزء" کا لفظ اختیار کر کے مشرکین کے اس دعوے [illegible] کی طرف اشارہ [illegible] (معارف القرآن)

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ

اور جب ان میں کسی کو خوشخبری ملے اس چیز کی جس کو

لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا

رحمٰن کے نام لگایا تو سارے دن رہے منہ اس کا سیاہ

وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾

اور وہ جی میں گھٹ رہا ہے

**مشرکین کی بے عقلی** یہ بھی جہالت [illegible] خدا کے لئے تجویز کرتے ہیں وہ ان کے نزدیک عیب اور ذلیل و حقیر ہے کہ اگر خود انہیں ان کے ہاں لڑکی کی خوشخبری سنائی جائے تو [illegible] غم اور غصہ کے [illegible] جل جائیں اور دل ہی دل میں پیچ و تاب کھاتے [illegible] رنج [illegible] (تفسیر عثمانی)

**مَثَلًا کا ایک اور مفہوم** [illegible] سے مراد ہے صفت [illegible] اس صنف کی بشارت دی جاتی ہے جس کو اس نے رحمٰن کا وصف قرار دے رکھا ہے (اور [illegible] سخت [illegible] کا اظہار ہوتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

أَوَمَنْ يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي

کیا ایسا شخص کہ پرورش پاتا ہے زیور میں اور وہ

الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾

جھگڑے میں بات نہ کہہ سکے ☆

**ضعیف الرائے** یعنی کیا عورت جو اولاد لانے کے لئے لڑکی کو چنا ہے جو عادۃً آرائش و زیبائش میں نشوونما پاتے اور زیور و آرائش کے شوق میں مستغرق رہے جو دلیل ہے ضعف رائے و عقل کی اور وہ ضعف قوت فکر کے مباحثہ کے وقت قوت بیان بھی نہ رکھے [illegible] کی تقریروں میں غور کرنے سے مشاہدہ ہوتا ہے کہ نہ اپنے دعوے کو کافی بیان سے ثابت کر سکیں نہ دوسرے کے دعوے کو رد کر سکیں [illegible] بات تک کی [illegible] اس میں علاوہ [illegible] کی حجت کو مطلوب میں [illegible] ہو کر اس سے بھی نہیں [illegible] خلل پڑ جاتا ہے اور مباحثہ [illegible] اس حیثیت سے ہے کہ اس میں بیان کی احتیاج زیادہ ہونے کے ان کا عجز زیادہ ظاہر ہو جاتا ہے [illegible] ان کے حکم میں ہے اور مضمون جملوں کا [illegible] میں آتی ہیں [illegible] کی تحریر [illegible] (تفسیر [illegible])

**عورتوں کیلئے زیور کی اجازت اور مردوں کیلئے ممانعت کی حکمت**

يُنَشَّأُ (پرورش پاتی ہے) [illegible] اس سے معلوم ہوا کہ [illegible] صورت [illegible] زیور سے [illegible] ضرورت ہے کہ ان کے حسن ظاہری میں اضافہ ہو [illegible] ذاتی پر موقوف [illegible] حاصل نہیں [illegible] مردوں کو زیور کی ضرورت نہیں [illegible] کی طرف کہ ظاہری زیب و زینت [illegible] باطنی عیب [illegible] (تفسیر [illegible])

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ

اور ٹھہرایا انہوں نے فرشتوں کو جو بندے ہیں

الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ

رحمٰن کے عورتیں

**مشرکوں کا جھوٹ** [illegible] کو ایک اور جھوٹ ہے کہ فرشتوں کو عورتوں کی صف میں داخل کرتے ہیں حالانکہ وہ [illegible] [illegible] (تفسیر [illegible])

## مشرکین کی طرف سے فرشتوں کی توہین

اور انہوں نے فرشتوں کو جو خدا کے بندے ہیں عورتیں قرار دے رکھا ہے۔ یعنی مشرکوں نے نہ صرف یہ کہ خدا کے لئے اولاد تجویز کی اور خدا کو صاحب اولاد ہی ٹھہرایا [illegible] خدا کی توہین کی بلکہ فرشتوں کی بھی تحقیر کی [illegible] ان کو [illegible] قرار دے رکھا ہے۔

**آیت کا شان نزول:** ابن المنذر نے قتادہ کا قول نقل کیا کہ کچھ منافق [illegible] ان کے خیال کی تردید میں نازل ہوا وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا بغوی نے [illegible] بیان کیا ہے [illegible] فرشتوں کو خدا کی بیٹیاں قرار دیا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان سے [illegible] تم کو کیسے معلوم ہوا کہ فرشتے خدا کی بیٹیاں ہیں انہوں نے کہا ہم نے اپنے بزرگوں سے ایسا ہی سنا ہے اور ہم کو یقین ہے کہ انہوں نے غلط نہیں کہا اس پر آیت سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ نازل ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ |
| کیا دیکھتے تھے ان کا بننا اب لکھ رکھیں گے |
| شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ⑲ |
| ان کی گواہی اور ان سے پوچھ ہوگی |

## مشرکین کے دعوے بلا دلیل ہیں

یعنی [illegible] عقلی نقلی [illegible] ان کے پاس [illegible] جب فرشتوں کو [illegible] ان کی یہ گواہی دفتر اعمال میں لکھی جاتی ہے [illegible] جس وقت پیش ہوں گے تب اس کے متعلق ان سے پوچھا جائے گا کہ تم نے ایسا کیوں کہا اور کہاں سے کہا تھا۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ |
| اور کہتے ہیں اگر چاہتا رحمن تو ہم نہ پوجتے ان کو |

یہ [illegible] مشرکانہ [illegible] پر ایک [illegible] پیش کرتے ہیں کہ اگر خدا چاہتا تو ہم کو اپنے سوا دوسری چیزوں کی پرستش سے [illegible]

کہ [illegible] (تفسیر [illegible])

| |
|---|
| مَا لَهُمْ بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ |
| کچھ خبر نہیں ان کو اس کی یہ سب |
| إِلَّا يَخْرُصُونَ ⑳ |
| اٹکلیں دوڑاتے ہیں |

**جواب** [illegible]

" [illegible]

ان لوگوں [illegible] کہ اپنے معبودوں [illegible] عقلی [illegible] گھڑت [illegible] ہیں۔

**یخرصون** [illegible]

**ربط آیات:** اللہ نے پہلے مشرکوں کے [illegible] علم [illegible] (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ |
| کیا ہم نے کوئی کتاب دی ہے ان کو اس سے پہلے سو انہوں نے |
| مُسْتَمْسِكُونَ ㉑ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا |
| اس کو مضبوط پکڑ رکھا ہے [illegible] کہتے ہیں ہم نے پایا |
| آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِمْ |
| اپنے باپ دادوں کو ایک راہ پر اور ہم انہی کے قدموں پر ہیں |

**مُهْتَدُونَ ۞**

ہدایت پر ہیں ۞

مشرکین کی دلیل سے بھی خالی [illegible]

[illegible]

**وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي**

اور اسی طرح نہیں بھیجا ہم نے تجھ سے پہلے

**قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا**

کسی بستی میں کوئی ڈرانے والا مگر کہنے لگے وہاں کے خوشحال

**إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا**

ہم نے تو پایا اپنے باپ دادوں کو ایک راہ پر اور ہم

**عَلَىٰ آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ قَالَ أَوَلَوْ**

انہی کے قدموں پر چلتے ہیں وہ بولا

**جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدتُّمْ**

اور اگر میں لا دوں تم کو اس سے زیادہ سیدھی راہ جس پر تم نے پایا

**عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ**

اپنے باپ دادوں کو

پیغمبر کی دعوت [illegible]

**قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ۞**

تو کہنے لگے جو تم کو دے کر بھیجا گیا ہم اس کو نہیں مانتے

کافروں کی ہٹ دھرمی [illegible]

**فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ**

پھر ہم نے ان سے بدلہ لیا سو دیکھ لے کیسا ہوا انجام

**الْمُكَذِّبِينَ ۞ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَ**

جھٹلانے والوں کا اور جب کہا ابراہیم نے اپنے باپ کو اور

**قَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ إِلَّا الَّذِي**

اس کی قوم کو میں الگ ہوں ان چیزوں سے جن کو تم پوجتے ہو مگر

**فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۞**

جس نے مجھ کو بنایا سو وہ مجھ کو راہ سمجھائے گا

حضرت ابراہیم [illegible]

[illegible]

**قصہ کا مقصد**

[illegible]

**کلمہ باقیہ کی توجیہات**

[illegible]

## تقلید کرنی ہے تو حضرت ابراہیم علیہ السلام کی کرو

اگر اپنے آباء و اجداد ہی کے راستے پر چلنا چاہتے ہو تو حضرت ابراہیم علیہ السلام کے راستے پر کیوں نہیں چلتے جو تمہارے اشرف ترین جد اعلیٰ ہیں اور جن کی اولاد ہونے کو تم فخر سمجھتے ہو اور اپنے لئے سرمایۂ فخر سمجھتے ہو۔ وہ صرف توحید کے قائل تھے اور اپنی اولاد کو بھی اسی کی وصیت کر کے گئے بلکہ خود ان کا طرز عمل یہ تھا کہ کھلے ہوئے عقلی اور نقلی دلائل کی موجودگی میں محض باپ دادوں کی تقلید کرنا جائز نہیں۔ جب وہ دنیا میں مبعوث ہوئے تو ان کی ساری قوم اپنے آباؤ اجداد کی اتباع میں شرک میں مبتلا تھی لیکن انہوں نے اپنے آباؤ اجداد کی اندھی تقلید کے بجائے دلیل واضح کا اتباع کرتے ہوئے اپنی قوم سے بیزاری کا اعلان کیا اور فرمایا: **اِنَّنِیْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ**۔ (جن چیزوں کی تم عبادت کرتے ہو میں ان سے بیزار ہوں)

## بدعمل و بدعقیدہ لوگوں سے برأت کا اظہار ضروری ہے

اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ اگر کوئی شخص کسی بدعمل یا بدعقیدہ گروہ یا جماعت کے درمیان رہتا ہے اور خاموش رہنے کی صورت میں یہ اندیشہ ہے کہ اس کو بھی اسی گروہ کا ہم خیال سمجھا جائے گا تو محض اپنے عقیدے اور عمل کا درست کر لینا ہی کافی نہیں بلکہ اس گروہ کے عقائد و اعمال سے اپنی برأت کا اظہار بھی ضروری ہے چنانچہ یہاں حضرت ابراہیم علیہ السلام نے صرف توحید ہی نہیں کیا کہ اپنے عقائد و اعمال کو شرک سے محفوظ کر لیا بلکہ زبان سے بھی برأت کا صاف اظہار کیا۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ |
| اور اس بات کو باقی چھوڑ گیا اپنی اولاد میں |
| لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (۲۸) |
| تاکہ وہ رجوع کریں |

کہ حق کی ایک دوسرے سے توحید کا بیان اور اللہ کی طرف رجوع ہو۔ (خزائن)

**کلمۂ باقیہ کا مطلب:** مطلب یہ ہے کہ اپنے عقیدۂ توحید کو انہوں نے اپنی ذات ہی تک محدود نہیں رکھا بلکہ اپنی اولاد کو بھی اسی عقیدے پر قائم رہنے کی وصیت فرمائی چنانچہ آپ کی اولاد میں ایک بڑی تعداد موحدین کی ہوئی اور آپ کی وفات کے بعد سے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت کے وقت تک ایسے سلیم الفطرت حضرات موجود تھے جو صدیاں گزرنے کے بعد بھی حضرت ابراہیم علیہ السلام کے اصلی دین پر قائم تھے۔

## اولاد کی اصلاح کی فکر ضروری ہے

اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ اپنی ذات کے ساتھ اپنی اولاد کو دین حق پر کاربند کرنے اور رکھنے کی فکر بھی انسان کے فرائض میں داخل ہے۔ انبیاء علیہم السلام میں سے حضرت ابراہیم علیہ السلام کے علاوہ حضرت یعقوب علیہ السلام کے بارے میں بھی قرآن کریم نے بتایا ہے کہ انہوں نے وفات کے وقت اپنے بیٹوں کو دین حق پر قائم رہنے کی وصیت کی تھی اور جس طرح ممکن ہو ان کے اعمال و اخلاق کی اصلاح میں اپنی پوری کوشش صرف کرنا ضروری بھی ہے اور انبیاء کی سنت بھی۔ اور یوں تو اولاد کی اصلاح کے بہت سے طریقے ہیں جنہیں حسب موقع اختیار کیا جا سکتا ہے۔

## اولاد کی اصلاح کا کارگر عمل

حضرت شیخ عبدالوہاب شعرانی رحمۃ اللہ علیہ نے لطائف المنن والاخلاق میں لکھا ہے کہ اولاد کی اصلاح کے لئے سب سے زیادہ کارگر عمل یہ ہے کہ والدین ان کی دینی اصلاح کے لئے دعا کا اہتمام کریں۔ افسوس ہے کہ اس آسان تدبیر سے آج کل غفلت عام ہوتی جا رہی ہے اور اس کے انجام بد کا مشاہدہ خود والدین کرتے رہتے ہیں۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى |
| کوئی نہیں بلکہ میں نے برتنے دیا ان کو اور ان کے باپ دادا کو یہاں تک کہ |
| جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ (۲۹) |
| پہنچا ان کے پاس دین سچا اور رسول کھول کر سنانے والا |

**مشرکین پر افسوس:** یہ بھی افسوس ہے کہ ابراہیم علیہ السلام کی وراثت حاصل تھی اور ان کی وصیت پر نہ چلے بلکہ اللہ نے جو دنیا کا سامان دیا تھا اس کے مزے میں پڑ کر گزشتہ قوموں کی طرف سے بالکل غافل ہو گئے یہاں تک کہ ان کو خواب غفلت سے بیدار کرنے کے لئے حق تعالیٰ نے اپنا وہ پیغمبر بھیجا جس کی سچائی بالکل روشن اور واضح ہے اس نے ہماری بھیجی ہوئی آیتیں پڑھ کر سنائیں اور اللہ کے احکام نہایت صفائی کے ساتھ کھول کھول کر بیان کئے۔ (روح المعانی)

**مبین کا معنی:** رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ۔ معجزات کے ذریعے سے رسالت کو ظاہر کرنے والا یا آیات و براہین کی روشنی میں توحید کو ظاہر کرنے والا یا اللہ کے احکام کو ظاہر کرنے والا۔

**شانِ نزول:** ابن جریر نے قتادہ کے حوالے سے حضرت ابن عباس سے بیان نقل کیا ہے کہ جب اللہ نے اپنے رسول کو مبعوث فرمایا تو عرب نے ماننے سے انکار کر دیا اور کہنے لگے کسی انسان کو رسول بنا کر بھیجنے سے اللہ کی

شان بلند ہوتا ہے (یعنی وہ کسی انسان کو رسول نہیں مانتے تھے) اس پر اللہ نے آیت نازل فرمائی، وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ جب اور آیت کا (کفار کا) انکار ہوا تو کہنے لگے کہ اگر رسول بنانا ہی تھا تو مکہ اور طائف کے دو بڑے لوگوں میں سے کسی کو بنایا جاتا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ |
| اور جب پہنچا ان کے پاس سچا دین کہنے لگے یہ جادو ہے |
| وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾ |
| اور ہم اس کو نہ مانیں گے |

اور کہنے لگے قرآن یا اور دوسرے کتاب الٰہی کے انکار کرنے والے (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ |
| اور کہنے لگے کیوں نہ اترا یہ قرآن کسی |
| رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾ |
| بڑے مرد پر ان دونوں بستیوں میں کے |

**مشرکین کا اعتراض** یعنی اگر قرآن اترنا ہی تھا تو مکہ یا طائف کے کسی بڑے سردار پر اترا ہوتا جسے اللہ رسول بنایا جاتا کہ جو بڑے مالدار ہیں ان کو چھوڑ کر منصب رسالت کے لئے ایک یتیم کو چن لیا گیا جو دولت اور ریاست کے اعتبار سے کوئی امتیاز نہیں رکھتا۔ (تفسیر عثمانی)

## نبوت روحانی مرتبہ ہے اسکا دولت سے کوئی واسطہ نہیں

کافروں نے یہ سمجھا کہ رسالت بہت بڑا منصب ہے اور بڑا منصب بڑے آدمی کو ملنا چاہئے انہوں نے یہ نہ سمجھا کہ نبوت ایک روحانی مرتبہ ہے جس کا دنیوی وجاہت و دولت سے کوئی تعلق نہیں یہ مرتبہ تو اسے دیا جاتا ہے جس کا باطن پاکیزہ ہو اور اخلاق و کمالات ایسے ہوں جو اس منصب کا بار اٹھانے کی صلاحیت رکھتے ہوں۔

## کافروں کے نامزد عظیم آدمی

بغوی نے لکھا ہے کہ مجاہد نے کہا کافروں کی مراد یہ تھی کہ مکہ میں عتبہ بن ربیعہ یا طائف میں حبیب بن عمرو ثقفی پر نازل ہوتا۔ (تفسیر مظہری)

روایت میں ہے کہ اس معاملہ میں لوگوں نے مکہ کے ولید بن مغیرہ اور عتبہ بن ربیعہ کے اور طائف کے عروہ بن مسعود ثقفی حبیب بن عمرو ثقفی وغیرہ کے نام پیش کئے تھے۔ (معارف القرآن جلد ۷)

## کافروں کا اعتراض

ان آیات میں اللہ تعالیٰ نے مشرکین عرب کے اعتراض کا جواب دیا ہے جو وہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی رسالت پر کیا کرتے تھے، دراصل شروع میں تو وہ یہ ماننے کو ہی تیار نہ تھے کہ اللہ کا کوئی رسول انسان ہو سکتا ہے چنانچہ ان کا یہ اعتراض قرآن کریم نے جابجا ذکر فرمایا ہے کہ حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کیسے رسول ہیں جو عام انسانوں کی طرح کھاتے پیتے اور بازاروں میں چلتے پھرتے ہیں لیکن جب متعدد آیات قرآنی کے ذریعہ یہ واضح کر دیا گیا کہ پہلے زمانے کے انبیاء بھی انسان ہی تھے تو اب انہوں نے پینترا بدل کر یہ اعتراض کیا کہ اگر کسی انسان ہی کو نبوت ملنی تھی تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم مالی اعتبار سے کوئی بڑے صاحب حیثیت نہیں ہیں یہ منصب حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے بجائے مکہ یا طائف کے کسی بڑے دولتمند صاحب جاہ و منصب انسان کو کیوں نہیں دیا گیا۔ (معارف القرآن جلد ۷)

## مال و دولت کی زیادتی فضیلت کا سبب نہیں ہے

کفار نے جو یہ کہا تھا کہ مکہ و طائف کے کسی بڑے مالدار پر قرآن نازل کیا جاتا اس آیت میں اس کا دوسرا جواب دیا گیا ہے اور اس کا خلاصہ یہ ہے کہ دنیا کی دولت کے لحاظ سے اللہ تعالیٰ کے نزدیک کوئی قدر و قیمت نہیں ہے چنانچہ مال و دولت کی زیادتی کسی کی بڑائی کی دلیل نہیں ہو سکتی کیونکہ مال و دولت اللہ تعالیٰ کی نگاہ میں اتنی حقیر چیز ہے کہ اگر تمام مؤمنوں کے کافر ہو جانے کا اندیشہ نہ ہوتا تو اللہ سب کافروں کے گھر سونے چاندی کے بنا دیتے اور جامع ترمذی کی ایک حدیث میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے لو كانت الدنيا تعدل عند الله جناح بعوضة ما سقى كافرا منها شربة ماء (اگر دنیا اللہ کے نزدیک مچھر کے ایک پر کے برابر بھی ہوتی تو اللہ تعالیٰ کسی کافر کو اس سے پانی کا ایک گھونٹ بھی نہ پلاتا) اس سے معلوم ہوا کہ مال و دولت کی زیادتی حق فضیلت کی چیز ہے نہ کسی کو دوسروں سے کم رتبہ ہونے کی علامت ہے اور نبوت کے لئے تو اعلیٰ درجے کے اوصاف ضروری ہیں وہ مالدار ہونا یا نہ ہونا نہیں بلکہ وہ معیار ہی مختلف ہے جو انبیاء میں پائے جاتے ہیں اس سے یہ بات بالکل الگ ہے۔

| |
|---|
| أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ |
| کیا وہ بانٹتے ہیں تیرے رب کی رحمت کو |

**مالک الملک ہے تم نہیں** [illegible]

[illegible]

**اعتراض کا ایک جواب**

[illegible]

نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي

[illegible]

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ

[illegible]

دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا

[illegible]

[illegible]

**معاشی مساوات کی حقیقت** [illegible]

[illegible]

## فرائض و حقوق کا تعین انتہائی نازک مشکل کام ہے

[illegible]

**اعتراض** [illegible]

**تقسیم معیشت کا قدرتی نظام** نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ [illegible]

## تقسیم معیشت کا کام کسی ادارے کا نہیں ہے

[illegible]

والله ما هدى الخوى من المصحف حتى احد الحق له ولا
هدى المصحف من الخوى حتى احد الحق منه

## تقسیم حقوق فرائض اللہ کے ذمہ ہے

> وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً
اور اگر یہ بات نہ ہوتی کہ سب لوگ ہو جائیں
وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ
ایک دین پر تو ہم دیتے ان لوگوں کو جو منکر ہیں
بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ
رحمٰن سے ان کے گھروں کے واسطے چھت
فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ
چاندی کی اور سیڑھیاں جن پر چڑھیں
وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا
اور ان کے گھروں کے واسطے دروازے اور تخت جن پر
يَتَّكِـُٔوْنَ ۝ وَزُخْرُفًا
تکیہ لگا کر بیٹھیں اور سونے کے بھی

## اللہ کے ہاں دنیا کی بے قدری

یعنی اللہ کے ہاں ان دنیوی مال و دولت کی کوئی قدر و قیمت نہیں اس کا پایہ یہ کوئی معیار وجاہت عنداللہ نہیں ہے یہ تو اتنی بے قدر اور حقیر چیز ہے کہ اگر ایک دینی مصلحت مانع نہ ہوتی تو اللہ تعالیٰ کافروں کے مکانوں کی چھتیں، زینے اور دروازے چاندی کے اور تخت چوکیاں سب چاندی اور سونے کی بنا دیتا مگر اس صورت میں لوگ یہ سمجھ کر کہ کفر اس کا سبب ہے، سب کفر ہی کا راستہ اختیار کر لیتے (العیاذ باللہ) اور یہ مصلحت خداوندی کے خلاف ہوتی اس نے ایسا نہیں کیا۔ حدیث میں ہے کہ اگر اللہ کے نزدیک دنیا کی قدر ایک مچھر کے پر کے برابر ہوتی تو کافر کو ایک گھونٹ پانی کا نہ دیتا جو اس کے ہاں قدر و قیمت ہے تو پھر معلوم ہوا کہ مال و دولت معیار وجاہت عنداللہ اور قبولیت ہرگز نہیں ہے۔ اور کیا خوب فرمایا حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ کافر ہونے سے کیا ہوتا ہے، آخرت میں دائمی عذاب ہے، کہ یہ چند روزہ مال و دولت سب ہیچ ہے اور انجام کار ساری عزت متقین کے لئے ہے۔ (موضح القرآن)

اور ان آیات میں یہ کہا گیا ہے کہ اگر کافروں پر یہ دولت ایسی فراوانی کر دی جاتی تو سب لوگ کافر ہو جاتے اس میں مراد لوگوں کی اکثریت ہے ورنہ خدا کے کچھ نیک بندے آج بھی ایسے موجود ہیں جو یقین

سکتے ہیں کہ کفر اختیار کرنے سے وہ ممنوع ہو جائے۔ چنانچہ ہم دیکھتے ہیں کہ بہت سے لوگ دولت کی خاطر کفر اختیار نہیں کرتے ایسے لوگ ہر دور میں ملتے ہیں جو ایمان پر قائم رہ جائے لیکن ان کی تعداد اتنی کم تھی کہ ہر ہوتی۔ (معارف علی معجم)

وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ
اور یہ سب کچھ نہیں ہے برتنا
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ
دنیا کی زندگانی کا اور آخرت تیرے رب کے
رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝
یہاں ان ہی کے لئے ہے جو ڈرتے ہیں

یہ سب کچھ دنیا کی زندگی ہی کا سامان ہے، اور آخرت تیرے رب کے ہاں متقین کے لئے مخصوص ہے۔ (معارف القرآن)

## مومنین کے لئے آخرت ہے

یہی وجہ ہے کہ اس دنیا میں حضرات انبیاء ہی کو زیادہ تر تنگی کا سامنا کرنا پڑا۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے بڑھ کر کوئی محبوب نہیں ہو سکتا، ایک روایت میں ہے کہ ایک مرتبہ حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کی ازواج مطہرات سے کچھ ناراضی تھی اس وجہ سے آپ نے ایک بالا خانہ میں قیام فرمایا تھا، حضرت عمر فاروق جب وہاں حاضر ہوئے اور دیکھا کہ آپ کھری چٹائی پر لیٹے ہوئے ہیں جس کے نشانات آپ کے جسم مبارک پر پڑ گئے ہیں، اور سرہانے ایک تکیہ ہے جس میں کھجور کی چھال بھری ہوئی ہے تو آنکھوں میں آنسو آ گئے۔ عرض کیا، یا رسول اللہ قیصر و کسریٰ جس ٹھاٹ باٹ میں ہیں ظاہر ہے اور ہمیں ان کے پاس دنیا کی نعمتوں کی کوئی حد و انتہا نہیں اور آپ اللہ کے برگزیدہ پیغمبر ہو کر ایسی حالت میں ہیں؟ آپ نے فرمایا اے ابن خطاب کیا اس پر بھی تمہیں شک ہے؟ پھر فرمایا یہ وہ لوگ ہیں جن کو ان کی لذتیں اسی دنیا میں جلدی دے دی گئیں، لیکن آخرت میں ان کا کوئی حصہ نہیں۔ اور ایک روایت میں ہے کہ کیا تم راضی نہیں ہو کہ ان کے لئے دنیا ہو اور ہمارے لئے آخرت۔ (ابن کثیر)

**دنیا کی قیمت** ۔ حضرت سہل بن سعد ساعدی کا بیان ہے کہ میں ان لوگوں میں شامل تھا جو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ایک مردہ بکری کے بچے پر سے گزرے تھے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیا تم لوگ دیکھ

رہے ہو کہ اس کو بے قدر سمجھ کر گھر والوں نے یہاں پھینک دیا ہے۔ حاضرین نے عرض کیا: جی ہاں بے قدر سمجھ کر اس کو پھینکا گیا ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جتنا یہ گھر والوں کی نظر میں بے قدر ہے اس سے زیادہ اللہ کے نزدیک دنیا بے قدر ہے۔ رواہ البغوی۔

ابو نعیم نے لکھا ہے کہ داؤد بن ہلال الحبشی نے کہا حضرت ابراہیم کے صحیفوں میں لکھا ہوا ہے کہ دنیا تو نیکوں کے سامنے آراستہ ہو کر آتی ہے لیکن تو ان کی نظر میں بہت حقیر ہے میں نے ان کے دلوں میں تیری طرف سے اور تیری طرف سے بے رغبتی پیدا کر دی ہے۔ میں نے کوئی مخلوق نہیں پیدا کی جو ہر حالت میں تجھ سے زیادہ حقیر ہو تیرا انجام فنا ہے اسی کی طرف تو جا رہی ہے جس روز میں نے تجھے پیدا کیا تھا اسی روز فیصلہ کر دیا تھا کہ تو کسی کے لیے باقی نہیں رہے گی اور نہ کوئی تیرے لیے باقی رہے گا خواہ تیرا مالک تیرے بارے میں کتنا ہی بخل کرے تیرے سلسلہ میں۔ خوشخبری ہے ان نیک لوگوں کے لیے جو (میری) خوشنودی پر راضی رہ کر اور دل کی سچائی سے مجھے دیکھتے اور صدق و استقامت پر قائم رہتے ہیں خوشخبری ہے میری طرف سے ان کے لیے بڑی خوشخبری ہے کہ ان کے لیے وہ ثواب ہے جو میرے پاس ہے جب وہ قبروں سے نکل کر میری طرف آئیں گے تو ان کا نور ان کے آگے آگے اور داہنی طرف ہوگا اور فرشتے ان کو گھیرے ہوئے ہوں گے اس رحمت میں ان کو پہنچا دوں گا جس کے وہ امیدوار تھے۔

حضرت جابر راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا دنیا ملعون ہے اور جو کچھ اس میں ہے وہ ملعون ہے سوائے اس چیز کے جو اللہ کی طرف سے ہو (یعنی دینی اعمال، علم، کتب، انبیاء وغیرہ) رواہ الضیاء

## دنیا کو بے عقل جمع کرتا ہے

حضرت عائشہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا دنیا اس کا گھر ہے جس کا آخرت میں (بہشت کے اندر) کوئی گھر نہیں اور یہ اس کے لیے مال ہے جس کا (آخرت میں) کوئی مال نہیں اس کو وہی جمع کرتا ہے جس کے اندر عقل نہیں۔

حدیث کی مراد یہ ہے کہ مومن خواہ کتنے ہی عیش دنیوی میں ہو لیکن آخرت میں جو ثواب اس کے لیے مقرر کیا گیا ہے اس کے مقابلہ میں یہ عیش دنیا ایک قید خانہ ہے اور کافر اس زندگی میں خواہ کتنے ہی دکھ اور مصیبت میں ہو لیکن آخرت میں جو عذاب اس کے لیے مقرر کیا گیا ہے اس کے مقابلہ میں یہ دکھوں کے ساتھ بھی اس کے لیے جنت ہے۔ رواہ مسلم۔

## اہل اللہ کا بلند مقام:

مؤلف مسند الفردوس نے حضرت ابن عباس کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا دنیا اہل آخرت کے لیے حرام ہے اور آخرت اہل دنیا کے لیے حرام ہے اور دنیا و آخرت (دونوں) اہل اللہ کے لیے حرام ہیں۔ اس کا کیا مطلب ہے۔

بیضاوی نے لکھا ہے اس حدیث کا مطلب یہ ہے کہ اہل آخرت یعنی مومنین کے لیے دنیا کی محبت اور اس میں پھنسنا حرام ہے یہ مطلب نہیں کہ دنیا کا حصول حرام ہے کیونکہ اللہ نے فرمایا قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ (اللہ نے اپنے بندوں کے لیے زیبائش اور پاکیزہ رزق کو حرام نہیں کیا ہاں قیامت کے دن یہ عیش و لذت مومنوں کے لیے مخصوص ہے اب جو دنیا کی محبت میں پھنسا رہتا ہے وہ اپنی آخرت خراب کرتا ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے جس نے اپنی دنیا سے محبت کی اس نے اپنی آخرت کو نقصان پہنچایا اور جس نے اپنی آخرت سے پیار کیا اس نے اپنی دنیا کو نقصان پہنچایا تم غیر فانی (آخرت) کو فانی (دنیا) پر ترجیح دو۔ (یعنی آخرت کو اختیار کرو) رواہ احمد والحاکم عن ابی موسیٰ۔

آخرت سے مراد ہیں آخرت کی خوش عیشیاں، لذتیں، اہل دنیا یعنی کافر جن کا مقصد صرف دنیا کا حصول ہے آخرت کی لذتیں ان کے لیے حرام ہیں آیت إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ میں اسی کی طرف اشارہ ہے۔

باقی رہی آخرت یعنی دونوں کی محبت اہل اللہ کے لیے حرام ہے اہل اللہ کے دلوں میں اللہ کی محبت اتنی رچی بسی ہوتی ہے کہ دوسری طرف وہ گوشۂ چشم سے بھی نہیں دیکھتے ان کے دلوں کی توجہ کسی دوسری طرف ہوتی ہی نہیں روایت میں آیا ہے کہ رابعہ بصریہ ایک ہاتھ میں پانی سے بھرا کوزہ اور دوسرے ہاتھ میں آگ کا انگارا لے کر جا رہی تھیں کسی نے پوچھا کہاں جا رہی ہیں فرمایا میں چاہتی ہوں کہ اس پانی سے دوزخ کی آگ کو بجھا دوں اور اس آگ سے جنت کو جلا دوں تاکہ جنت کے لالچ اور دوزخ کے خوف سے کوئی شخص اللہ کی عبادت نہ کرے بلکہ محض لوجہ اللہ عبادت کرے۔

## حضرت مجدد الف ثانی رحمہ اللہ کا ارشاد:

مجدد الف ثانی نے فرمایا رابعہ کا یہ قول سکر پر مبنی تھا سلوک کی انتہا پر پہنچ کر مومن کا فرض ہے کہ جنت کی خواہش صرف اس وجہ سے کرے کہ وہ رحمت خداوندی کا مقام ہے اور دوزخ سے اللہ کی پناہ کا طلب گار ہو کیونکہ دوزخ خدا کی ناراضگی اور غضب کا محل ہے جنت کی تمنا ہوتی ہے یا دوزخ کا ڈر ان کی خواہش و تمنا کی بنا اس بات پر ہوتی ہے کہ ایک مرکز رحمت اور دوسرا غضب ہے۔

**طلب معیشت:** سامان زیست جمع کرنا جائز ہے بشرطیکہ اللہ اور اس کے بندوں کی حق تلفی نہ ہو بلکہ طلب معاش جائز بلکہ فرض ہے رسول اللہ

[illegible]

**رفیق کی صحبت کا مطلب** [illegible]

[illegible]

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ

[illegible]

نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ

[illegible]

**حق سے منہ موڑنے کا عذاب** [illegible]

[illegible]

**آیت کا شانِ نزول** [illegible]

[illegible]

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

[illegible]

وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ

[illegible]

اور نہ ہی ان کی تدبیر بھی باقی نہیں رہتی۔ (تفسیر جمل)

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ

یہاں تک کہ جب آئے ہمارے پاس کہے کسی طرح

بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ

مجھ میں اور تجھ میں فرق ہو مشرق مغرب کا سا

فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝

کہ کیا برا ساتھی ہے ☆

یہ وقت حسرت سے شیطان کے پاس پہنچ کر کہے گا کہ کیسے برے ساتھی تھے۔ اس وقت حسرت اور غصہ سے کہے گا کہ کاش مجھ میں اور تیرے درمیان مشرق اور مغرب کا فاصلہ ہوتا اور تیری صحبت میں نہ گزرتا تم بہت برے ساتھی ہو۔ جو حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "نقل ہے کہ شیطان نے دنیا میں اس کے ساتھ چلتا ہے اور وہاں اس کی صحبت سے بچانا ہے گا۔ اس طرح کا ساتھی شیطان کے ساتھ جلتا ہے کسی کو دوزخ میں"۔ (تفسیر عثمانی)

حضرت ابو سعید خدری کا بیان ہے کہ جب کافر کو قبر سے اٹھایا جائے گا تو اس کے ساتھ اس کے شیطان کو ملا کر جوڑ دیا جائے گا شیطان اس سے الگ نہ ہوگا یہاں تک کہ دونوں دوزخ میں داخل ہوں گے۔ (تفسیر مظہری)

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ

اور کچھ فائدہ نہیں تم کو آج کے دن جب کہ تم ظالم ٹھہر چکے

اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝

اس بات سے کہ تم عذاب میں شامل ہو ☆

## کسی صورت عذاب میں تخفیف نہ ہوگی

دنیا کا قاعدہ ہے کہ جس مصیبت میں عام طور پر چھوٹے بڑے سب شریک ہوں تو کچھ ہلکی معلوم ہونے لگتی ہے مشہور ہے کہ "مرگ انبوہ جشنے دارد" مگر دوزخ میں شیاطین الانس والجن اور بعض دوسرے کافر عذاب میں شریک ہوں گے کہ کچھ فائدہ نہ ہوگا عذاب کی شدت ایسی ہوگی کہ اس طرح کی کسی بات سے تسلی اور تخفیف نہیں ہوتی۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یعنی کافر کہیں گے کہ انہوں نے ہم کو عذاب میں ڈالا اب جو ان پر بڑی سزا ہو تو ہم کو اس سے کیا فائدہ"۔ (تفسیر عثمانی)

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي

سو کیا تو سنائے گا بہروں کو یا سجھائے گا

الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ

اندھوں کو اور اس کو جو صریح بھٹکتا ہو

مُّبِيْنٍ ۝ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا

سو پھر اگر کبھی ہم تجھ کو یہاں سے لے جاویں

مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ

تو ہم کو ان سے بدلہ لینا ہے یا تجھ کو دکھلا دیں جو ان سے وعدہ

وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝

ٹھہرایا ہے تو وہ ہمارے بس میں ہیں

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ

سو تو مضبوط پکڑ رہ اس کو جو حکم بھیجا تجھ کو

اِنَّكَ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

تو ہے بیشک سیدھی راہ پر ☆

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو تسلی

یعنی ایسوں کو راہ حق دکھلا دینا یا بہروں کو حق کی آواز سنانا جو عمداً غفلت اور گمراہی میں پڑے ہوں یہ آپ کے قبضہ میں نہیں کہ ان کو صاف سڑک پر چلا دیں آپ کے اختیار میں نہیں بلکہ خدا تعالیٰ کے اختیار میں ہے وہ چاہے آپ کی آواز میں اثر پیدا کر دے۔ بہرحال آپ اس غم میں نہ پڑیے کہ یہ لوگ حق کو کیوں قبول نہیں کرتے اور عمل کا انجام خراب کر رہے ہیں ان کا معاملہ خدا کے سپرد کیجئے وہ ہی ان کے انکار کی سزا دے گا خواہ آپ کی وفات کے بعد دی جائے یا آپ کو دکھلا کر دی جائے بہرصورت یہ ہمارے قابو سے نکل کر جا نہیں سکتے ہیں ... آپ کا کام یہ ہے کہ جو حکم آئے اس پر مضبوطی کے ساتھ جمے رہیں اور برابر اپنا فرض ادا کئے جائیں کیونکہ آپ بیشک درست راستہ پر جا رہے ہیں آپ اللہ کے فضل سے سیدھی راہ پر ہیں جس سے ایک قدم ادھر ادھر ہٹنے کی ضرورت نہیں۔ کسی اور راست کی تلاش یا آرزو کی طرف متوجہ ہونے کی حاجت ہے۔ (تفسیر عثمانی)

آیت مذکورہ میں مشرکین مکہ مراد ہیں جن سے بدر کی لڑائی میں اللہ نے ان سے انتقام لے لیا۔ اکثر اہل تفسیر کا یہی قول ہے۔

حسن اور قتادہ کا قول ہے کہ امت اسلامیہ مراد ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانہ میں تو امت مسلمہ کے درمیان ایسی کوئی ایسی بات نہیں ہوئی جو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے تکلیف رساں اور رنجیدہ ہوتی لیکن حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کی امت محمدیہ شدید عذاب (باہمی جدال، قتال اور نفاق و شقاق) میں مبتلا ہو گئی۔

روایت میں آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو خواب میں وہ حوادث دکھائے گئے جو امت کو آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد پیش آنے والے تھے اس خواب کے بعد سے وفات تک آپ کو کبھی خنداں فرماتے نہیں دیکھا گیا۔

عبدالرحمن بن مسعود عبدی کا بیان ہے کہ حضرت علی نے اس آیت کی تلاوت کے بعد فرمایا اللہ کے نبی تو چلے گئے اور اللہ کا عذاب ان کے دشمنوں کے لئے باقی رہ گیا۔ (تفسیر مظہری)

**آیت کا حاصل مقصود:** مقصود یہ ہے کہ دشمنوں سے وعدے ہم آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی زندگی میں دکھلا دیں گے اور بعض وعدے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد ظہور پذیر ہوں گے۔ خدا نے جو وعدے کئے ہیں وہ ضرور بالضرور پورے ہوں گے۔ کوئی ادھر سے کوئی ادھر سے پہنچے ایسا ہی واقع ہوا کہ بعض وعدے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی زندگی میں پورے ہو گئے جیسے فتح خیبر اور مکہ کا اور بعض وعدے جیسے فارس اور روم کی فتح کا وعدہ جو آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانہ حیات میں واقع نہیں ہوا بلکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد خلفاء راشدین کے زمانے میں پورا ہوا۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم بیشمار احادیث سے جس میں وعدہ فارس اور روم کی فتح کا وعدہ ہے۔ اور نیز وعدہ ہے کہ اللہ تعالیٰ اس دین کو کیا شہر کیا دیہات اور کیا اہل زمین و صحرا غرض سب کے گھروں میں پہنچا رہے گا۔ خواہ عزت اور خواہ ذلت عزت تو یہ کہ مشرف باسلام ہوں گے اور ذلت یہ کہ جزیہ اور خراج دیتے ہوئے اسلام کے ماتحت رہیں گے اور ظاہر ہے کہ فتح فارس اور روم کی فتح کا وعدہ آنحضرت کی حیات میں ظہور پذیر نہیں ہوا بلکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد خلفاء راشدین کے زمانے میں پورا ہوا اور جس کے ہاتھ پر خدا کے وعدے پورے ہوئے جن کا اللہ نے اپنے نبی سے وعدہ کیا تھا۔ وہی اس کے نبی کا خلیفہ برحق ہے۔ (معارف کاندھلوی)

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ

اور یہ مذکور ہے تیرا اور تیری قوم کا ☆

**اعزاز و ترقی کا سامان:** یعنی قرآن کریم تیرے اور تیری قوم کے لئے خاص فضل و شرف کا سبب ہے۔ اس سے بڑھ کر عزت اور خوش نصیبی کیا ہوگی کہ خدا کا کلام اور ساری دنیا کی نجات و فلاح کا ضابطہ و دستور العمل ان کی زبان میں اترا اور وہ اس کے اولین مخاطب قرار پائے۔ چاہئے تھا کہ وہ اس نعمت عظمیٰ کی قدر کرتے۔ بہرحال قرآن جہان سب کے لئے نصیحت ہے۔ اس کی ہدایت پہنچانا سب سے پہلے نبی کی قریبی رشتہ داروں کے حق میں ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**مستقبل کیلئے بشارت:** اور جملہ وَلِقَوْمِكَ سے یہ بتلانا ہے کہ قریش میں سے چند لوگ ہوں گے جو ظاہر و باطن کی قرابت سے مشرف و ممتاز ہوں گے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے دین کے حامی ہوں گے۔ اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد آپ کے خلیفہ ہوں گے اور اعلاء کلمۃ اللہ کریں گے۔ (ازالۃ الخفاء ص ۵۵۰ معارف کاندھلوی)

**آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی قوم کا شرف:** حضرت عدی بن حاتم نے فرمایا میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بیٹھا ہوا تھا حضور نے ارشاد فرمایا میرے سوال میں جو اپنی قوم کی محبت ہے، اللہ کو معلوم تھی اس لئے اس نے مجھے میری قوم کے شرف عطا فرمایا اور ارشاد فرمایا وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ اللہ نے اپنی کتاب میں (اس آیت میں) میری قوم کو ذکر اور شرف عنایت فرمایا اس کے بعد فرمایا وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ۔ پس اللہ کا شکر ہے کہ اس نے صدیق کو میری قوم سے بنایا شہید کو میری قوم سے، یہ معاملہ میری قوم سے کیا۔ بے شک اللہ نے بندوں کے دلوں کو پلٹ کر دیکھا تو ان سے قریش کو تمام عرب سے بہتر پایا اور قریش ہی اسلام کی برکت والا درخت ہے جس کے متعلق اللہ نے اپنی کتاب میں فرمایا ہے كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ۔ اس سے مراد ہے شرف اسلام جس کی ہدایت اللہ نے قریش کو کی اور انکو اس شرف کا اہل بنایا۔ انہی کے بارے قریش کے حق میں اللہ نے سورۂ لایلاف نازل فرمائی۔

حضرت عدی بن حاتم کا بیان ہے میں نے کبھی نہیں دیکھا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے کسی کا ذکر خیر آیا ہو اور آپ خوش نہ ہوئے ہوں اتنے خوش کہ چہرہ مبارک پر مسرت کے آثار سب لوگوں کو دکھائی دیتے تھے اور آپ اکثر آیت وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ پڑھا کرتے تھے۔

**قریش اور عرب کی فضیلت:** حضرت معاویہ کا بیان ہے میں نے خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو فرماتے سنا کہ یہ امر قریش میں رہے گا جو کوئی ان سے دشمنی کرے گا اللہ اس کو منہ کے بل گرا دے گا جب تک وہ دین کو قائم رکھیں گے (یعنی دین پر قائم رہیں گے)۔

جو ہم نے کہی تو ہم نے ... یہ قرآن عرب کی زبان میں نازل ہوا
عام عرب کو یہ شرف و فضل ہے ... میں عرب کی خصوصیت
ہے کیونکہ ان کے لئے شرف کی خاص بات تھی ... (خصوصی طور پر)
... قریش ... قرآن ... ہے

| |
|---|
| وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ |
| اور آگے تم سے پوچھ ہوگی ☆ |

## قرآن کے بارے میں پوچھ ہوگی

اور آگے تم سے پوچھ ہوگی کہ اس نعمت عظمیٰ کی کیا قدر کی اور اس پر کہاں تک عمل کیا۔

قیامت کے دن سب سے قرآن کے متعلق پوچھا جائے گا ... جب ان کو پوچھا جائے گا ...

| |
|---|
| وَسْـَٔلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ |
| اور پوچھ دیکھ جو رسول بھیجے ہم نے تجھ سے پہلے |
| مِن رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِن دُونِ |
| کیا ہم نے رکھے ہیں رحمن کے |
| الرَّحْمَٰنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ |
| سوائے اور حاکم کہ پوجے جائیں ☆ |

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی دعوت کوئی انوکھی نہیں

اور پوچھ دیکھ ... پہلے ... تعلیم
کی ... کے ... کبھی ... رکھا ... کے
سوا اور ... کی پرستش کی جائے ... پوچھ دیکھو ... سے
ملاقات ہوئی (جیسے شب معراج میں ہوئی) ... سے تحقیق کر کے
... استعمال کی ... صاف ثابت ہو
... کی اجازت نہیں ...

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے تمام انبیاء کا اجتماع

... روایت ہے کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا جب معراج میں
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو لے جایا گیا تو حضرت آدم اور آپ کی نسل میں
جو انبیاء ہوئے سب کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ... کے لئے بھیجا گیا
حضرت جبرئیل نے اذان اور اقامت کہی اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ...

نماز پڑھائی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ... نماز سے فراغت کے بعد
جبرئیل نے کہا ... وَسْـَٔلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا ... آپ
سے پہلے جو انبیاء ہم نے بھیجے ... رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وسلم نے فرمایا مجھے پوچھنے کی ضرورت نہیں ... ہے۔

... شب معراج میں ...
... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ... بات ...
... رسول اللہ ...

**سوال کا مطلب** ... اور یقین ... ہے ... طرف سے ... کے لئے بھیجی
گئی ... قرآن ... ہے ...

## سوال کرنے کا ایک اور مطلب

انبیاء علیہم السلام سے پوچھنا ... ہو ... کے
صحیفوں سے تحقیق کر ... کی ... سے ... پوچھا ... ہے ...
انبیاء بنی اسرائیل ... میں ... تحریفات کے
... موجود ... اور ... کی تعلیم ... ہے۔

## انبیاء کے صحیفوں میں توحید کی تعلیم

... بات ... کہ خداوند کی عبادت ...
کے سوا کسی ... (... ۱۴)

اور ... اسرائیل ... خدا ایک ہی خدا ہے ... (...)
اور حضرت انبیاء علیہم السلام ... ہے۔

"میں ہی خداوند ہوں اور کوئی نہیں میرے سوا کوئی خدا نہیں ...
مشرق سے مغرب تک لوگ جان لیں کہ میرے سوا کوئی نہیں میں ہی خداوند
ہوں میرے سوا کوئی دوسرا نہیں (... ۴۵)

اور حضرت مسیح علیہ السلام کا یہ قول تو چاروں انجیلوں میں مذکور ہے۔
"اے اسرائیل سن! خداوند ہمارا خدا ایک ہی خداوند ہے اور تو
خداوند اپنے خدا سے اپنے سارے دل ... اپنی ساری
عقل اور اپنی ساری طاقت سے محبت رکھ۔" (...)

... نے ... مرتبہ ... کیا ...
اور ... ہے کہ ... خدا ... اور ...
مسیح کو ... جائیں ... ۔

| |
|---|
| وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ |
| اور ہم نے بھیجا موسیٰ کو اپنی نشانیاں دے کر |

فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ

[illegible]

رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا

[illegible]

إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ۝

[illegible]

[illegible]

وَمَا نُرِيهِم مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ

[illegible]

مِنْ أُخْتِهَا ۫

[illegible]

[illegible]

**اکبر کا مطلب:**

[illegible]

من تلق منهم تقل لاقيت سيدهم
مثل النجوم التي يسري بها الساري

[illegible]

وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ

[illegible]

يَرْجِعُونَ ۝

[illegible]

[illegible]

وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ

[illegible]

[illegible]

ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ۝

[illegible]

**قوم کی قریش** [illegible]

**فرعون کی دھوکہ بازی** [illegible]

[illegible]

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ

[illegible]

يَنكُثُونَ ۝

[illegible]

**بنی اسرائیل کی بد عہدی**

[illegible]

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ

يَٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ

اے میری قوم کیا میرے پاس نہیں حکومت مصر کی اور یہ

الْأَنْهَٰرُ تَجْرِي مِن تَحْتِيٓ ۖ أَفَلَا

نہریں کہ چل رہی ہیں میرے محل کے نیچے [illegible]

تُبْصِرُونَ

[illegible]

[illegible]

کی طلب [illegible] ہونے کے بعد فرعون نے قوم کے مجمع میں پکار کر کہا [illegible]

[illegible]

تجری من تحتی۔ یعنی میرے محلات کے نیچے جاری ہیں [illegible]

[illegible]

أَمْ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا ٱلَّذِى هُوَ مَهِينٌ

[illegible]

وَلَا يَكَادُ يُبِينُ

[illegible]

فرعون کا تجزیہ۔ یعنی موسیٰ علیہ السلام کے [illegible]

[illegible]

فَلَوْلَآ أُلْقِىَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ

[illegible]

أَوْ جَآءَ مَعَهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ

[illegible]

[illegible]

فَٱسْتَخَفَّ قَوْمَهُۥ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ

[illegible]

كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ

[illegible]

فرعون کی [illegible]

[illegible]

فاستخف قومہ [illegible]

[illegible]

فَلَمَّآ ءَاسَفُونَا

[illegible]

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ |
| پھر جب ہم کو غصہ دلایا تو ہم نے ان سے بدلہ لیا پھر ڈبو دیا |
| اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۵﴾ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا |
| ان سب کو پھر کر ڈالا ان کو گئے گزرے |
| وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾ |
| اور ایک عبرت پچھلوں کے واسطے |

[illegible]

**انتقام کی صورتیں** [illegible]

| |
|---|
| وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا |
| اور جب مثال لائے مریم کے بیٹے کی تو |
| قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿۵۷﴾ وَقَالُوْٓا |
| تیری قوم اس سے چلانے لگتی ہے اور کہتے ہیں |
| ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ |
| ہمارے معبود بہتر ہیں یا وہ |

**مشرکین کا واویلا** [illegible]

[illegible] وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ [illegible]

| |
|---|
| مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا بَلْ |
| یہ مثال جو ڈالتے ہیں تجھ پر سو جھگڑنے کو بلکہ |
| هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾ اِنْ هُوَ |
| یہ لوگ ہیں جھگڑالو وہ تو |
| اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ |
| ایک بندہ ہے کہ ہم نے اس پر فضل کیا اور کھڑا کر دیا |
| مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۵۹﴾ |
| بنی اسرائیل کے واسطے |

**مشرکین کی عادت** [illegible]

سے جان دو کہ جنہیں جو تم اللہ کو چھوڑ کر پوجتے ہو [illegible] عطا فرمائی تھی۔ [illegible]
[illegible] کا مضمون [illegible] اللہ کے نبی [illegible] بنی اسرائیل کی
ہدایت کے واسطے نمونہ بنایا گیا ہے [illegible] پر بھی بہت کر
ان کی پرستش کی طرف [illegible] مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ
[illegible] حضرت حفصہ [illegible]
[illegible] قرآن
کریم [illegible] کے
خلاف ہے [illegible] سے ایک
قریب [illegible] (تفسیر حقانی)

### اِلَّا جَدَلًا کا مطلب:

چنانچہ جانتے ہیں کہ آیت مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ
کی مراد [illegible] معلوم ہے [illegible] مراد [illegible]
آیت میں مَا ضَرَبُوْهُ کا لفظ اگرچہ عام ہے [illegible] مخصوص بعض ہے۔

### جھگڑنے کی نحوست:

حضرت ابو امامہ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا
جو قوم ہدایت پر ہونے کے بعد گمراہ ہوئی [illegible] اس کو
جدال (جھگڑا) [illegible] دی گئی [illegible]
[illegible] (پھر آپ نے
آیت مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ تلاوت فرمائی۔ [illegible]
[illegible]

### حضرت عیسیٰ علیہ السلام عبرت آفرین شخصیت

وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا۔ یعنی ہم نے ان کو عجیب انسان بنایا [illegible]
[illegible] بنی اسرائیل کے لئے ان کے
[illegible] قدرت ظاہر [illegible]
[illegible]

| |
|---|
| وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِی |
| اور اگر ہم چاہیں تو کر دیں تم میں سے فرشتے رہیں |
| الْاَرْضِ یَخْلُفُوْنَ ۝ |
| زمین میں تمہاری جگہ |

### کسی چھوٹی سی بات سے کوئی معبود نہیں بن جاتا:

[illegible] عیسیٰ علیہ السلام کی [illegible] فرشتوں کے [illegible]
[illegible] پر بھی مشارکت کر جانا ہے [illegible] کوئی بات
سے کوئی معبود نہیں بن جاتا۔ اگر ہم چاہیں تو تمہاری نسل سے ایسے لوگ
پیدا کریں یا تمہاری جگہ آسمان سے فرشتوں کو [illegible] زمین پر آباد کریں۔ ہم کو
سب قدرت حاصل ہے۔ (تفسیر عثمانی)

حاصل کلام یہ ہے کہ عیسیٰ علیہ السلام کا وجود اگرچہ عجیب ہے [illegible]
[illegible]
[illegible] بھی ہو سکتی ہے [illegible]
[illegible] کس طرح
ہو سکتا ہے [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ |
| اور وہ نشان ہے قیامت کا پتہ |

### حضرت عیسیٰ علیہ السلام۔۔۔ نشانِ ہدایت

یعنی حضرت مسیح علیہ السلام کا اول مرتبہ آنا تو نشان تھی اسرائیل کے
لئے ایک نشان تھا کہ بدون باپ کے پیدا ہوئے اور عجیب و غریب معجزات
دکھلائے [illegible] قیامت کا نشان ہوگا ان کے نزول سے لوگ معلوم
کر لیں گے کہ قیامت بالکل قریب آ لگی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

مسئلہ نزول عیسیٰ بن مریم علیہ السلام: حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے نزول
میں ایک بڑی حکمت یہ ہے کہ جب [illegible] قریب ہوگی تو
عیسیٰ علیہ السلام [illegible] بعض اقوال سے [illegible]
[illegible] ایک
[illegible] آسمان پر اٹھا لیا [illegible] فوت نہ ہوگا۔
[illegible] عیسیٰ علیہ السلام کی [illegible]
حیات [illegible] اللہ تعالیٰ ان کو [illegible] نازل کرے گا
تاکہ ان کی موت [illegible] کے
لئے وہ مبعوث ہوئے تھے۔ جیسا کہ ارشاد ہے [illegible]
[illegible] سعادت نصیب ہو
[illegible] قریب دجال کو قتل کرنے کے لئے آ جائیں [illegible] کے
[illegible] پائیں گے۔ اور [illegible]
میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے قریب دفن ہوں گے۔ [illegible]
[illegible] معلوم ہوتا ہے [illegible]
[illegible] حضرت [illegible] کے
[illegible]

[illegible]

علامات قیامت کے بیان [illegible]

[illegible] علامہ جلال الدین [illegible] نے [illegible]

[illegible]

وخروج الدجال ويأجوج ومأجوج وطلوع الشمس من
مغربها ونزول عيسى عليه السلام من السماء وسائر
علامات القيامة على ما وردت به الأخبار الصحيحة حق
كائن والله تعالى يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم

[illegible]

[illegible] روایت کرتے ہیں [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

ابن عباس [illegible] آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

**قیامت کی دس نشانیاں:** [illegible]

[illegible]

**نزول عیسیٰ علیہ السلام کی احادیث** [illegible]

[illegible]

[illegible] لیکن [illegible]

[illegible]

فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هٰذَا

[illegible]

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ

[illegible]

الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

[illegible]

[illegible]

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ

[illegible]

جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ

[illegible]

[illegible]

وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ

[illegible]

تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ

[illegible]

[illegible]

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ

[illegible]

هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۚ هٰذَا

[illegible]

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝

[illegible]

[illegible]

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ

[illegible]

[illegible]

قائل ہو گئے۔ پھر نصاریٰ آپس میں کئی فرقے بن گئے بعض حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو خدا کا بیٹا کہتے ہیں کوئی ان کو تین خداؤں میں سے ایک کہتا ہے کوئی کچھ اور کہتا ہے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی اصلی تعلیم پر ایک بھی نہیں۔ (تفسیر حقانی)

احزاب یعنی بہتر فرقوں میں بٹ گئے۔ پس اس حکم سے یہودیوں اور عیسائیوں کا مجموعہ مراد ہے۔ فویل یعنی بڑی ہلاکت (اور خرابی) ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ |
| سو خرابی ہے گنہگاروں کو آفت سے دکھ |
| يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا |
| والے دن کی اب یہی ہے کہ راہ دیکھتے ہیں |
| السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ |
| قیامت کی کہ آ کھڑی ہو ان پر اچانک اور ان کو |
| لَا يَشْعُرُونَ ۝ |
| خبر بھی نہ ہو ☆ |

**منکرین کی ہلاکت کا اعلان ☆:** ایسے کھلے بیانات اور واضح ہدایات کے باوجود بھی جو لوگ نہیں مانتے تو وہ کس بات کے منتظر ہیں۔ ان کے احوال کو دیکھ کر یہی کہا جا سکتا ہے کہ قیامت ایک دم ان کے سر پر آ کھڑی ہو تب مانیں گے حالانکہ اس وقت کا ماننا کچھ کام نہ دے گا۔ (تفسیر حقانی)

للذین ظلموا: ان لوگوں کے لئے جنہوں نے خواہشات کی پیروی کر کے اور کتاب حق کو ترک کر کے اپنے اوپر ظلم کیا۔

من عذاب یوم الیم۔ یعنی آتش جہنم۔

## ناجی فرقہ اہل سنت والجماعت ہے

حضرت عبداللہ بن عمرو راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قدم بقدم میری امت پر وہی باتیں آئیں گی جو بنی اسرائیل پر آئی تھیں اگر بنی اسرائیل میں سے کسی نے علانیہ اپنی ماں سے زنا کیا تو میری امت میں سے بھی کوئی ایسا کرے گا بنی اسرائیل بہتر فرقوں میں بٹ گئے میری امت تہتر فرقوں میں بٹ جائے گی اور سوائے ایک فرقے کے سب فرقے دوزخ میں جائیں گے۔ صحابہ نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وہ (ناجی جماعت یافتہ) کونسا گروہ ہوگا فرمایا جو اس راستے پر چلتا ہوگا جس پر میں اور میرے صحابی ہیں۔ رواہ الترمذی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ |
| جتنے دوست ہیں اس دن ایک دوسرے کے دشمن ہوں گے |
| عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝ |
| مگر جو لوگ ہیں ڈر والے ☆ |

**قیامت کی ہیبت ☆:** اس دن دوست سے دوست بھاگے گا کہ اس کے سبب سے کہیں میں نہ پکڑا جاؤں۔ دنیا کی سب دوستیاں اور محبتیں منقطع ہو جائیں گی۔ آدمی پچھتائے گا کہ فلاں شریر آدمی سے دوستی کیوں کی تھی جو اس کے اکسانے سے آج گرفتار مصیبت ہونا پڑا۔ سمجھے ہوا کہ کاش محبوب کی صورت دیکھنے سے پہلے مر گیا ہوتا۔ البتہ جن کی محبت اور دوستی اللہ کے واسطے تھی اور اللہ کے خوف پر مبنی تھی وہ وہاں کام آئے گی۔ (تفسیر عثمانی)

**اچھے اور برے دوست:** بغوی نے اس آیت کے ذیل میں حضرت علی کا ارشاد نقل کیا ہے آپ نے فرمایا دو دوست مومن اور دو دوست کافر ہوتے ہیں ایک مومن مر جاتا ہے وہ عرض کرتا ہے اے میرے رب فلاں شخص مجھے تیری اور تیرے رسول کی اطاعت کرنے کا مشورہ دیتا تھا مجھے نیک کام کرنے کا حکم دیتا تھا اور برے کام سے روکتا تھا اور مجھ سے کہتا تھا کہ ایک دن مجھے تیرے سامنے آنا پڑے گا اے میرے رب میرے بعد تو اس کو گمراہ نہ کرنا اور جیسے تو نے مجھے راہ راست پر چلنے کی توفیق دی ایسے ہی اس کو بھی ہدایت پر قائم رکھنا اور جس طرح تو نے میری عزت افزائی کی اسی طرح اس کی بھی عزت افزائی کرنا۔ جب اس کا دوست مر جاتا ہے تو دونوں کو جمع کیا جاتا ہے اور کہا جاتا ہے تم دونوں ایک دوسرے کی تعریف کرو چنانچہ ہر ایک دوسرے کے متعلق کہتا ہے یہ اچھا بھائی اچھا دوست اچھا ساتھی ہے۔

اور جب دونوں کافر دوستوں میں سے ایک مر جاتا ہے تو وہ عرض کرتا ہے اے میرے رب فلاں شخص مجھے تیری اور تیرے رسول کی اطاعت سے منع کرتا تھا برے کام کرنے کا مشورہ دیتا تھا، اچھے کام سے روکتا تھا اور مجھ سے کہتا تھا کہ مجھے تیرے پاس آنا نہیں ہے۔ وہ اس کا برا بھائی برا دوست اور برا ساتھی ہے۔ حضرت ابوہریرہ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت کے دن اللہ فرمائے گا میری عظمت و بزرگی کی وجہ سے باہم محبت کرنے والے کہاں ہیں آج میں ان کو اپنے سایہ میں رکھوں گا آج میرے سایہ کے علاوہ کوئی سایہ نہیں ہے۔ رواہ مسلم۔

**اللہ کیلئے محبت کرنے والے:** حضرت ابوہریرہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اگر خدا کے واسطے باہم محبت کرنے والے دو بندوں میں ایک مشرق میں ہو اور دوسرا مغرب میں۔ تو قیامت کے دن اللہ دونوں کو یکجا کر دے گا اور فرمائے گا یہی وہ شخص ہے جس سے تو

میرے لئے محبت کرتا تھا۔ (روح المعانی ملخصاً بحوالہ تفسیر مظہری)

## دوستی درحقیقت وہی ہے جو اللہ کے لئے ہو

اس آیت نے یہ حقیقت کھول کر بتادی کہ یہ دوستانہ تعلقات جن پر انسان دنیا میں ناز کرتا ہے اور جن کی خاطر حلال و حرام ایک کر ڈالتا ہے قیامت کے روز نہ صرف یہ کہ کام نہ آئیں گے بلکہ عداوت میں تبدیل ہو جائیں گے۔ چنانچہ حافظ ابن کثیرؒ نے اس آیت کے تحت حضرت علیؓ کا یہ ارشاد مصنف عبدالرزاق اور ابن ابی حاتمؒ کی روایت سے نقل کیا ہے کہ دو دوست مومن تھے اور دو کافر۔ مومن دوستوں میں سے ایک کا انتقال ہوا اور اسے جنت کی خوشخبری سنائی گئی تو اسے اپنا دوست یاد آیا۔ اس نے دعا کی کہ یا اللہ! میرا فلاں دوست مجھے آپ کی اور آپ کے رسول کی اطاعت کی تاکید کرتا، بھلائی کا حکم دیتا اور برائی سے روکتا تھا اور یہ یاد دلاتا رہتا تھا کہ مجھے ایک دن آپ کے پاس حاضر ہونا ہے لہٰذا یا اللہ! اس کو میرے بعد گمراہ نہ کیجئے تاکہ وہ بھی (جنت کے) وہ مناظر دیکھ سکے جو آپ نے مجھے دکھائے ہیں اور آپ جس طرح مجھ سے راضی ہوئے ہیں اسی طرح اس سے بھی راضی ہو جائیں۔ اس دعا کے جواب میں اس سے کہہ دیا گیا کہ جاؤ اگر تمہیں معلوم ہو جائے کہ میں نے تمہارے اس دوست کے لئے کیا اجر و ثواب رکھا ہے تو تم روؤ کم اور ہنسو زیادہ۔ اس کے بعد جب دوسرے دوست کی وفات ہو چکے گی تو دونوں کی ارواح جمع ہوں گی اور اللہ تعالیٰ ان سے فرمائے گا کہ تم میں سے ہر شخص دوسرے کی تعریف کرے تو ان میں سے ہر ایک دوسرے کے بارے میں یہ کہے گا کہ یہ بہترین بھائی، بہترین ساتھی اور بہترین دوست ہے۔

اس کے برخلاف جب کافر دوستوں میں سے ایک کا انتقال ہوگا اور اسے بتایا جائے گا کہ اسے جہنم میں داخل ہونا ہے تو اسے بھی اپنا دوست یاد آئے گا اور اس وقت وہ یہ دعا کرے گا کہ یا اللہ! میرا فلاں دوست مجھے آپ کی اور آپ کے رسول کی نافرمانی کی ترغیب دیتا تھا اور برائی کی تاکید کرتا اور بھلائی سے روکتا تھا اور مجھ سے کہا کرتا تھا کہ میں کبھی آپ کے حضور حاضر نہیں ہوں گا۔ لہٰذا یا اللہ! اس کو میرے بعد ہدایت نہ دیجئے تاکہ وہ بھی (دوزخ کے) وہ مناظر دیکھے جو آپ نے مجھے دکھائے ہیں اور آپ جس طرح مجھ سے ناراض ہوئے ہیں اسی طرح اس سے بھی ناراض ہوں۔ اس کے بعد دوسرے دوست کا بھی انتقال ہو جائے گا تو دونوں کی روحیں جمع کی جائیں گی اور ان سے کہا جائے گا کہ تم میں سے ہر شخص اپنے ساتھی کی تعریف کرے تو ان میں سے ہر ایک دوسرے کے بارے میں کہے گا یہ بدترین بھائی، بدترین ساتھی اور بدترین دوست ہے۔ (ابن کثیر ص ۱۳۳ ج ۴) اسی لئے دنیا کی قربت و محبت کے لحاظ سے بہترین دوستی وہ ہے جو اللہ کے لئے ہو۔ جن دو مسلمانوں میں صرف اللہ کے لئے محبت ہو ان کے بڑے فضائل احادیث میں وارد ہوئے ہیں جن میں سے ایک یہ ہے کہ میدان حشر میں یہ لوگ اللہ کے عرش کے سایہ میں ہوں گے اور اللہ کے لئے محبت کا مطلب یہ ہے کہ دوسرے سے اس بنا پر تعلق ہو کہ وہ اللہ کے دین کا سچا پابند ہے۔

چنانچہ علماء دین کے استاد شیخ اور مرشد علماء اہل اللہ سے نیز عالم اسلام کے تمام مسلمانوں سے بے لوث محبت اسی میں داخل ہے۔ (معارف القرآن مختصر)

| |
|---|
| يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ |
| اے بندو میرے نہ ڈر ہے تم پر آج کے دن اور نہ تم |
| اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ |
| غمگین ہو گے |

جو یقینی نجات کے کاموں پر لگے رہے۔ (تفسیر حقانی)

**نحوی ترکیب:** یٰعِبَادِ جملہ مستانفہ ہے بعض نے قول محذوف ہے یعنی ایمان تقویٰ رکھنے والے لوگوں سے فرمائے گا اے میرے بندو آج تم کو کوئی خوف ہے نہ غمگین ہو گے۔

**دوستوں کیلئے اعلان:** معتمر بن سلیمان نے اپنے باپ کی سند سے بیان کیا۔ معتمر کے باپ نے کہا میں نے سنا ہے کہ جب لوگوں کو قبروں سے اٹھایا جائے گا تو ہر ایک گھبرایا ہوا ہوگا اس وقت (حق کی طرف سے) ایک منادی ندا کرے گا يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ یہ سن کر لوگوں کو کچھ امید ہو جائے گی لیکن یہ منادی اس کے بعد کہے گا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ یہ سن کر سوائے مسلمانوں کے سب مایوس ہو جائیں گے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ |
| جو یقین لائے ہماری باتوں پر اور رہے حکم بردار ☆ |

ایمان و اسلام: یعنی دل سے یقین کیا اور جوارح سے اس کے حکم بردار رہے یہاں سے ایمان اور اسلام کا فرق ظاہر ہوتا ہے جیسا کہ حدیث جبرئیل میں اس کا مفصل بیان ہوا ہے۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ |
| چلے جاؤ بہشت میں تم اور تمہاری عورتیں |
| تُحْبَرُوْنَ ۝ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ |
| کہ تمہاری عزت کریں۔ لئے پھریں گے ان کے پاس رکابیاں |
| مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ |
| سونے کی اور آبخورے ☆ |

☆ یعنی غلمان لئے پھریں گے۔ (تفسیر حقانی)

تُحْبَرُوْنَ۔ یعنی تم خوش کئے جاؤ گے یا تمہاری عزت کی جائے گی یا تم کو نعمتیں دی جائیں گی۔ حبور کا معنی ہے خوشی یا اثر جو (مبارک) حالت کا چہرے پر نشان یا سرور کا اثر چہرے پر آ جاتا ہے۔ حبرت اس وقت بولا جاتا ہے جب چہرے پر خوشی کا اثر ہو۔ حبرت یعنی زیب دینا ہے۔ اس کا ترجمہ ہے تمہاری خوش حالی کی عزت افزائی کی جائے گی۔

یُطَافُ عَلَیْہِمْ۔ یعنی تمام جنتیوں کے اہل جنت کے لئے سونے کے پیالوں اور گلاسوں کا دور کریں گے۔ صحاف صحفۃ کی جمع ہے۔ بڑے پیالے کو کہتے ہیں۔ اکواب کوب کی جمع ہے۔ کوب وہ پیالہ ہے جس کا دستہ اور ٹونٹی نہ ہو۔ (تفسیر مظہری)

وَفِیْهَا مَا تَشْتَهِیْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ

اور وہاں سب وہ جو جی چاہے اور جس سے

الْاَعْیُنُ

آنکھیں آرام پائیں ☆

دیدار الٰہی سب سے اعلیٰ چیز جس سے آنکھیں آرام پائیں گی وہ دیدار ہے حق تعالیٰ کا (ابن مردویہ بتفصیل و ترجمہ) (تفسیر مظہری)

صوفی کی طلب: یعنی ہر شخص کو جنت میں وہ چیز ملے گی جس کا وہ خواہش مند ہوگا۔ صوفی صافی ہے۔ جو ایسے حسن کا جس کی کوئی کیفیت بیان نہیں کی جا سکتی اور جیسے دیدار کا جو کسی غائب کا ہو ویسا ہی جس کو صحت حاصل ہو اس کی صورت کے علاوہ صورت دکھائے یہ صوفی حق کا طلبگار ہوگا جس کو وہ نصیب ہوگی۔

جنت میں گھوڑے اور اونٹ: بغوی نے حضرت عبدالرحمن بن سابط کی روایت سے بیان کیا کہ ایک شخص نے عرض کیا کہ یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مجھے گھوڑے بہت پسند ہیں۔ کیا جنت میں گھوڑے بھی ہوں گے۔ فرمایا اگر اللہ تم کو جنت میں داخل کرے تو پھر تم چاہو گے کہ سرخ یاقوت کے گھوڑے پر سوار ہو کر اڑ کر جنت کے اندر جہاں چاہو پھرو تو ایسا ہی ہو گا۔ ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میں اونٹ کو پسند کرتا ہوں کیا جنت میں اونٹ ملیں گے۔ فرمایا اے عبداللہ اگر اللہ تجھے جنت میں داخل کرے گا تو تجھے وہاں ہر وہ چیز ملے گی جس کو تیرا دل چاہے گا اور جس سے آنکھوں کو لذت حاصل ہوگی۔ (تفسیر مظہری)

وَاَنْتُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَتِلْكَ

اور تم ان میں ہمیشہ رہو گے اور یہ وہی

الْجَنَّةُ الَّتِیْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ

جنت ہے جو میراث پائی تم نے بدلے میں ان کاموں

تَعْمَلُوْنَ ۝

کے جو کرتے تھے ☆

یعنی یہ تمہارے باپ آدم کی میراث والی ملی تھی جو اعمال کے سبب سے اور اللہ کے فضل سے ہے۔ (تفسیر مظہری)

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِیْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۔ ابن ابی حاتم نے حضرت ابو ہریرہ کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ہر شخص کو اس کا جنت والا مقام (یعنی وہ مقام اگر وہ مومن ہوتا تو اس کا وہ مقام ہوتا) دکھایا جائے گا۔ پس کافر حسرت سے اس وقت کہے گا: لَوْ اَنَّ اللّٰهَ ہَدٰىنِیْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ۔ کاش مجھے ہدایت یاب کر دیتا تو میں متقیوں میں ہو جاتا۔ اور ہر جنتی کو اس کا دوزخ والا مقام (یعنی وہ مقام کہ اگر وہ مومن نہ ہوتا تو اس کو ملتا) دکھایا جائے گا تاکہ وہ شکر کرے۔ جنتی شکر کرے گا۔

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِیْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا۔ بیہقی نے حضرت ابو ہریرہ کی روایت سے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہر شخص کا ایک گھر جنت میں اور ایک گھر دوزخ میں ہے کافر کے جنت والے مکان کا مومن وارث ہوگا یہی مطلب ہے (آیت) وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِیْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ کا۔ (تفسیر مظہری)

لَكُمْ فِیْهَا فَاكِهَةٌ كَثِیْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝

تمہارے واسطے اس میں بہت میوے ہیں ان میں سے کھاتے رہو ☆

اور کچھ میں بھی ہو کر (تفسیر مظہری)

جنت کے پھل: بزار اور طبرانی نے بیان کیا کہ حضرت ثوبان نے فرمایا میں نے خود حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ جنتی جس پھل کو توڑے گا اس کی جگہ دوسرا پھل دوبارہ پیدا کر دیا جائے گا۔

بزار نے حضرت ابو بن ثوبان کی روایت سے بیان کیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جنت والے جب کوئی پھل توڑیں گے تو اس کی جگہ دوسرا نکل آئے گا۔ جنت کے پھل بھی ایسے ہیں ہر ایک کے ذائقہ بھی جدا ہے تو یہ تمہارے پھل جنت کے پھلوں سے بہتر فرمایا ہے۔ یہ قریب ہو جاتے ہیں اور تمہاری پہنچ میں ہیں۔

ابن ابی الدنیا کا بیان ہے کہ حضرت ابن مسعود شام میں تھے لوگوں نے جنت کا تذکرہ کیا۔ حضرت ابن مسعود نے فرمایا جنت کا ایک خوشہ (انگور) اتنا بڑا ہوگا جتنی مسافت یہاں سے صنعاء (یمن) تک ہے۔

ابن ابی الدنیا نے کہا حضرت ابی عبیدہ نے فرمایا جنت کے کھجور کے درخت ایک ایک پھل بارہ بارہ ہاتھ کا ہوگا اور ان کے اندر گٹھلی نہیں ہوگی۔ (تفسیر مظہری)

اِنَّ الْمُجْرِمِیْنَ فِیْ عَذَابِ جَهَنَّمَ

البتہ جو لوگ کہ گنہگار ہیں وہ دوزخ کے عذاب میں

خٰلِدُوْنَ ۝ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ

ہمیشہ رہنے والے ہیں نہ ہلکا ہوگا ان پر سے اور وہ اس میں

مُبْلِسُوْنَ ۝

پڑے رہیں آس توڑے ☆

## دوزخیوں کی ناامیدی

یعنی عذاب کسی وقت موقوف ہوگا نہ ہلکا کیا جائے گا دوزخی ناامید ہو جائیں گے کہ عذاب جہنم سے نکلنے کی کوئی شکل نہیں۔ (تفسیر مظہری)

المجرمین۔ یعنی کے مجرم۔ مراد ہیں کافر کیونکہ مومنوں کے متصل مجرموں کا ذکر کیا گیا ہے اس لئے مجرموں سے کافر مراد ہیں۔ (تفسیر مظہری)

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ۝

اور ہم نے ان پر ظلم نہیں کیا لیکن تھے وہی بے انصاف ☆

اپنے اوپر خود ظلم کیا یعنی ہم نے دنیا میں بھلائی برائی کے سب پہلو سمجھا دیے تھے اور پیغمبروں کو بھیج کر حجت تمام کر دی تھی۔ کوئی معقول عذر ان کے لئے باقی نہیں چھوڑا تھا اس پر بھی نہ مانے اور اپنی بدبختیوں سے ہلاکت کے راستوں پر جا پڑے تو ظلم کون کر سکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۝

اور پکاریں گے اے مالک کہیں ہم پر فیصل کر چکے تیرا رب ☆

داروغۂ جہنم کا "مالک" نام ہے فرشتہ جو دوزخ کا داروغہ ہے دوزخی اس کو پکاریں گے ہم نہ مرتے ہیں نہ چھوٹتے ہیں اپنے رب سے کہہ کہ ایک دفعہ عذاب دے کر ہمارا کام ہی ختم کر دے گویا نجات سے مایوس ہو کر موت کی تمنا کریں گے۔ (تفسیر عثمانی)

دوزخیوں کی بدحالی۔ ابن جریر، طبرانی، ابن ابی حاتم، حاکم، بیہقی، ابن مردویہ نے حضرت عبداللہ بن عمرو بن عاص کا قول نقل کیا ہے کہ دوزخی مالک کو پکاریں گے اور کہیں گے۔ يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ۔ مالک چالیس برس تک ان کو کوئی جواب نہیں دے گا۔ پھر ان کو جواب دے گا تم کو یہیں رہنا ہے۔ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ۔ (تفسیر مظہری)

قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ۝

وہ کہے گا تم کو ہمیشہ رہنا ہے ☆

☆ یعنی چلانے سے کچھ فائدہ نہیں تم کو اسی حالت میں ہمیشہ رہنا ہے کہتے ہیں دوزخی ہزار برس چلائیں گے تب یہ جواب ملے گا۔ (تفسیر عثمانی)

ابن جریر، ابن ابی حاتم، ابن ابی الدنیا اور بیہقی نے اس آیت کی تشریح میں حضرت ابن عباس کا قول نقل کیا ہے کہ ایک ہزار برس تک مالک ان کو جواب نہیں دے گا ہزار برس کے بعد کہے گا۔ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ۔

## دوزخیوں کی پانچ دعائیں

سعید بن منصور اور بیہقی نے محمد بن کعب کی روایت سے بیان کیا کہ دوزخی پانچ دعائیں کریں گے۔ چار دعاؤں کا تو اللہ جواب دے گا اور پانچویں دعا کے بعد پھر وہ کبھی کوئی کلام نہیں کریں گے۔ دوزخی کہیں گے۔ رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ اس جواب میں اللہ فرمائے گا۔ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ پھر اہل جہنم کہیں گے۔ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ۔ اللہ جواب میں فرمائے گا۔ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ پھر دوزخی کہیں گے رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ اللہ جواب میں فرمائے گا۔ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ پھر دوزخی کہیں گے رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ اللہ جواب میں فرمائے گا اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاۗءَكُمُ النَّذِيْرُ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ پھر وہاں دوزخی کہیں گے رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَاۗلِّيْنَ اللہ جواب میں فرمائے گا۔ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ۔ اس کے بعد وہ کوئی بات نہیں کریں گے۔ (تفسیر مظہری)

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ

ہم لائے ہیں تمہارے پاس سچا دین پر تم

اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝

بہت لوگ سچی بات سے برا مانتے ہو ☆

☆ یعنی دنیا میں پیغمبروں کی زبانی سچائی پہنچ چکی تھی اور بہت سے خواہشوں کی طرح ان کے پیچھے ہو لئے۔ (تفسیر عثمانی)

اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ۝

کیا انہوں نے ٹھہرا لی ہے ایک بات تو ہم بھی کچھ ٹھہرا دیں گے ☆

کفر کی تدبیریں [illegible] کفار عرب [illegible] کے [illegible] تھے [illegible] حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں [illegible] کافروں نے [illegible] مشورہ [illegible] سے [illegible] کے [illegible] اور اللہ نے [illegible] (تفسیر عثمانی)

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] مطلب ہے [illegible] تفسیر [illegible] سے نفرت [illegible]

[illegible] ہم نے بھی ان کا [illegible] (تفسیر مظہری)

**أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ**

کیا خیال رکھتے ہیں کہ ہم نہیں جانتے ان کا بھید

**وَنَجْوَاهُمْ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ**

اور ان کا مشورہ کیوں نہیں اور ہمارے بھیجے ہوئے

**يَكْتُبُونَ**

ان کے پاس لکھتے رہتے ہیں۔

ہم سب جانتے ہیں جو کچھ ان کے دلوں کے بھید ہیں اور ان کے خفیہ مشورے ہم سنتے ہیں اور [illegible] اللہ کی [illegible] ہمارے فرشتے (کراماً کاتبین) ان کے سب اقوال و احوال لکھتے جاتے ہیں [illegible] (تفسیر عثمانی)

شانِ نزول۔ ابن جریر نے محمد بن کعب قرظی کی روایت سے لکھا ہے کہ [illegible] کے درمیان [illegible] دو قریشی تھے اور ایک ثقفی [illegible] ایک قریشی۔ [illegible] کے خیال میں کیا [illegible] اس پر یہ آیت نازل ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

**قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا**

تو کہہ اگر ہو رحمٰن کے واسطے اولاد تو میں

**أَوَّلُ الْعَابِدِينَ**

سب سے پہلے پوجوں اس کو

عقیدۂ اولاد کی تردید [illegible] خدا کے بیٹے اور بیٹیاں [illegible] عبادت [illegible] (تفسیر عثمانی)

أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ۔ یعنی تم سے پہلے میں اس کی عبادت کرنے والا ہوں [illegible] سب سے پہلے [illegible] تعظیم [illegible] اولاد کی بھی تعظیم [illegible] کرتا ہے۔

آیت کا مقصود: یہ ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] اولاد ہونے کا انکار کر رہے ہیں [illegible] بلکہ حقیقت یہ ہے کہ [illegible] سب سے پہلے [illegible]

بغوی نے لکھا ہے کہ حضرت ابن عباس نے [illegible] آیت کا مطلب یہ بیان کیا [illegible] سب سے پہلے [illegible] (تفسیر مظہری)

**سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ**

پاک ذات ہے وہ رب آسمانوں کا اور زمین کا صاحب

الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

عرش کا ان باتوں سے جو یہ بیان کرتے ہیں ﴿٨٢﴾

پاک ذات یعنی جن باتوں کی نسبت یہ لوگ اس کی طرف کرتے ہیں مثلاً اولاد وغیرہ ان سے خدا تعالیٰ کی ذات برتر اور منزہ ہے اس کی ذات میں [illegible] (تفسیر عثمانی)

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا

سو چھوڑ دے ان کو کہ بک بک کریں اور کھیلیں یہاں تک کہ ملیں

يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

اپنے اس دن سے جس کا ان کو وعدہ دیا ہے ﴿٨٣﴾

قریب ہے وہ وقت یعنی غفلت اور حماقت کے نشہ میں جو کچھ بکتے ہیں بکنے دیجئے [illegible] کھیل تماشے کرتے ہیں [illegible] آخر وہ موعود دن آتا ہے جس میں ایک ایک حرکت کے [illegible] سارا نشہ ہرن ہو جائے گا۔ (تفسیر عثمانی)

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي

اور وہی ہے جس کی بندگی ہے آسمان میں اور زمین میں

الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾

اور وہی ہے حکمت والا سب سے خبردار ﴿٨٤﴾

معبود فقط اللہ ہے [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

اور بڑی برکت ہے اس کی جس کا راج ہے آسمانوں میں اور زمین میں

وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ

اور جو کچھ ان کے بیچ میں ہے اور اسی کے پاس ہے خبر قیامت کی

یعنی قیامت کب آئے گی [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

اور اسی کی طرف پھیرے جاؤ گے ﴿٨٥﴾

یعنی [illegible] حساب ہونے کا [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ

اور اختیار نہیں رکھتے وہ لوگ جن کو یہ پکارتے ہیں اس کے سوائے

الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ

سفارش کا مگر جس نے گواہی دی سچی اور ان کو

يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

خبر تھی ﴿٨٦﴾

سفارش کا حق یعنی [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ

اور اگر تو ان سے پوچھے کہ ان کو کس نے بنایا تو کہیں گے

اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾

اللہ نے پھر کہاں سے الٹے جاتے ہیں ﴿٨٧﴾

توحید کی دلیل یعنی [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

قسم ہے رسول کے اس کہنے کی کہ اے رب یہ لوگ ہیں کہ یقین نہیں لاتے ﴿٨٨﴾

نبی کی شکایت [illegible] (تفسیر عثمانی)

**کافروں پر غضب کے متعدد اسباب:** یہ سوال ہوتا ہے کہ [illegible] کافروں پر غضب تھا اور نازل ہونے کے متعدد سبب موجود تھے ایک طرف قرآن کے [illegible] ہونے [illegible] رسول [illegible] اور [illegible] بنا کر بھیجے گئے ہیں (صلی اللہ علیہ وسلم) [illegible] لوگوں کی شفاعت [illegible] کے بارے میں [illegible] کہ انہوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی [illegible] تکلیف [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] شفاعت [illegible] (تفسیر [illegible])

**فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۚ**

تو آپ ان سے بے رخی رہیے اور کہہ دیجیے (کہ تم کو) سلام ہے۔

[illegible] ان کے پیچھے نہ پڑو [illegible] سے درگزر کیجئے [illegible] (تفسیر [illegible])

**دائمی حکم کا وظیفہ:** [illegible] جواب [illegible] [illegible] وقت یا [illegible] کی بات کر [illegible] سے بچنے کے لئے [illegible] اختیار کرو۔

**سلام کہنے کا مطلب:** [illegible] سلام [illegible] مقصود [illegible] السلام علیکم کہا جائے [illegible] الفاظ سے سلام کرنا [illegible] ایک طریقہ ہے [illegible] جس [illegible] قطع تعلق [illegible] کہتے ہیں کہ [illegible] طرف سے سلام [illegible] سلام کرتے [illegible] (تفسیر [illegible])

**فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝**

اب آگے ان کو معلوم ہو جائے گا۔

[illegible] کافروں کو [illegible] کہ [illegible] میں پڑے ہوئے تھے۔ چنانچہ [illegible] میں [illegible] ذلت [illegible] ہے۔

[illegible]

جو شخص خواب میں اس کی تلاوت [illegible] کی [illegible] دو ظالموں سے [illegible] عذاب قبر، عذاب جہنم اور [illegible] سے محفوظ رہے گا۔ [illegible]

**فضیلت سورت:**

حضرت ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] جو شخص جمعہ کی رات میں سورۃ دخان پڑھے گا [illegible] معاف ہو چکے ہوں گے اور حضرت ام المومنین [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible] سورۃ دخان پڑھا [illegible] اللہ تعالیٰ اس کے لئے جنت میں گھر بنا دیں گے۔ (قرطبی [illegible])

ترمذی نے ضعیف سند سے حضرت ابو ہریرہؓ کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص رات کو حم الدخان پڑھے گا [illegible] ستر ہزار فرشتے اس کے لئے دعائے مغفرت کرتے ہیں۔

ضعیف سند سے [illegible] ترمذی کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا شب جمعہ جو شخص حم الدخان پڑھے گا اس [illegible] [illegible] شب جمعہ میں جو شخص سورۃ دخان پڑھے گا اس کے پچھلے گناہ معاف کر دیے جائیں گے۔ [illegible] نے ضعیف سند سے حضرت ابو امامہ کی روایت سے بیان کیا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص [illegible] دن [illegible] پڑھے گا [illegible] ان کے لئے جنت کے اندر [illegible] [illegible]

**سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً**

سورۃ دخان مکی ہے [illegible] اس میں انسٹھ آیتیں [illegible] ہیں

**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝**

شروع کرتا ہوں اللہ کے نام سے جو بڑا مہربان نہایت رحم والا ہے

**حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ**

قسم ہے اس کتاب واضح کی [illegible]

**فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ**

ایک برکت کی رات میں ہے

**شب براءت یا شب قدر:** "برکت کی رات" شب قدر ہے۔ کہا تعالیٰ "اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ" (القدر: ۱) اور رمضان میں واقع ہے

تو فرمایا "شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ" (بقرہ، رکوع ۲۳)
اس رات میں قرآن کریم "لوح محفوظ" سے سماء دنیا پر اتارا گیا پھر بتدریج تئیس سال میں پیغمبر علیہ السلام پر اترا نیز اسی شب پیغمبر پر اس کے نزول کی ابتداء ہوئی۔ (تفسیر عثمانی)

## ابن صیاد کاہن کے جھوٹ کا ظاہر ہونا

صحیحین میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ابن صیاد کاہن سے فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ چھپا کر اس سے پوچھا کہ بتا میں نے اپنے دل میں کیا چھپا رکھا ہے؟ اس نے کہا دخ۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بس برباد ہو اس سے آگے تیری نہیں چلے گی۔ اس میں بھی ایک قسم کا اشارہ ہے کہ ابھی اس کا انتظار باقی ہے اور یہ کوئی آنے والی چیز ہے۔ چونکہ ابن صیاد کاہنوں کے طرز پر بعض باتیں زبان سے بتانے کا مدعی تھا اس کے جھوٹ کو ظاہر کرنے کے لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے پرکھا۔ جب وہ پورا نہ بتا سکا تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے لوگوں کو اس کی حالت سے واقف کر دیا کہ اس کے ساتھ شیطان ہے کلام کے ٹکڑے اچک لیتا ہے یہ اس سے زیادہ قدرت نہیں رکھتا۔

## دخان علامت قیامت ہے جو آنے والی ہے

حضرت علیؓ فرماتے ہیں دخان گزر نہیں گیا بلکہ اب آئے گا۔ ابن ابی ملیکہ فرماتے ہیں کہ ایک دن صبح کے وقت میں (حضرت) ابن عباسؓ کے پاس گیا تو آپ فرمانے لگے رات کو میں بالکل نہیں سویا میں نے پوچھا کیوں؟ فرمایا اس لئے کہ لوگوں سے سنا کہ دم دار ستارہ نکلا ہے تو مجھے اندیشہ ہوا کہ کہیں یہی دخان نہ ہو پس صبح تک میں نے آنکھ سے آنکھ نہیں ملائی۔ اس کی سند صحیح ہے اور حبر الامۃ ترجمان القرآن حضرت ابن عباسؓ کے ساتھ صحابہ اور تابعین کی اور مرفوع حدیثیں بھی ہیں جن میں صحیح حسن اور ہر طرح کی ہیں اور ان سے ثابت ہوتا ہے کہ دخان ایک علامت قیامت ہے جو آنے والی ہے۔

## رات میں برکت کی وجہ

برکت (خیر کثیر) رات میں اس وجہ سے پیدا ہوئی کہ اسی رات میں قرآن نازل ہوا جو تمام دینی اور دنیوی منافع کا حامل ہے اسی رات میں ملائکہ رحمت کا نزول ہوتا ہے اور دعائیں قبول ہوتی ہیں۔

## مبارک رات کونسی ہے

مبارک رات سے مراد ہے شب قدر۔ قتادہ اور ابن زید کا یہی قول ہے۔ دونوں بزرگوں کا بیان ہے کہ شب قدر میں قرآن مجید لوح محفوظ سے آسمان دنیا پر نازل ہوا پھر تئیس سال میں حضرت جبرئیل کی وساطت سے تھوڑا تھوڑا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر اتارا گیا۔

بعض لوگوں کا خیال ہے کہ نصف شعبان کی رات مراد ہے مگر یہ خیال غلط ہے اللہ نے خود فرمایا ہے۔ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ۔ اور دوسری آیت میں آیا ہے إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ (اس سے معلوم ہوا کہ شب قدر رمضان میں ہے)۔

قاسم بن محمد نے بوساطت اپنے ... بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا نصف شعبان کی رات کو اللہ سماء دنیا پر نزول اجلال فرماتا ہے اور ہر شخص کو بخش دیتا ہے سوائے اس شخص کے جس کے دل میں کینہ ہو یا مشرک ہو۔ بغوی نے اس حدیث کی روایت کی ہے۔ یہ بات ثابت نہیں ہوتی کہ قرآن کا نزول نصف شعبان کی رات میں ہوا۔ (تفسیر مظہری)

لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ سے مراد جمہور مفسرین کے نزدیک شب قدر ہے جو رمضان مبارک کے آخری عشرہ میں ہوتی ہے قرآن کی سورۃ قدر میں تصریح کے ساتھ آیا ہے إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ اس سے ظاہر ہوا کہ یہاں بھی لیلۃ مبارکہ سے مراد شب قدر ہی ہے۔ اور ایک حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بھی منقول ہے کہ اللہ تعالیٰ نے جتنی کتابیں ابتداء دنیا سے آخر تک اپنے انبیاء علیہم السلام پر نازل فرمائی ہیں وہ سب ماہ رمضان المبارک ہی کی مختلف تاریخوں میں نازل ہوئی ہیں۔ حضرت قتادہ نے بروایت واثلہ نقل کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ صحف ابراہیم علیہ السلام رمضان کی پہلی تاریخ میں اور تورات رمضان کی چھٹی تاریخ میں، زبور بارھویں میں، انجیل اٹھارھویں میں اور قرآن چوبیس تاریخ گزرنے کے بعد یعنی پچیسویں شب میں نازل ہوا۔ (قرطبی)

قرآن کے شب قدر میں نازل ہونے کا مطلب یہ ہے کہ لوح محفوظ سے پورا قرآن سماء دنیا پر اسی رات میں نازل کر دیا گیا تھا پھر تئیس سال کی مدت میں تھوڑا تھوڑا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر اترتا رہا اور بعض حضرات نے فرمایا کہ ہر سال میں جتنا قرآن نازل ہونا مقدر تھا وہ اسی شب قدر میں لوح محفوظ سے سماء دنیا پر نازل کر دیا جاتا تھا۔ (قرطبی) (معارف مفتی اعظم)

جمہور مفسرین کے نزدیک یہی متعین ہے کہ شب قدر میں قرآن کریم لوح محفوظ سے آسمان دنیا پر اتارا گیا اور پھر تئیس سال کی مدت میں بتدریج آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر اترتا گیا۔ تو اس وجہ سے اس موقعہ پر لیلۃ مبارکہ سے شب برأت مراد لیا جانا مشکل ہے۔ (معارف کاندھلوی)

قسم کا مقصود: اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے قرآن کی قسم کھا کر ارشاد فرمایا ہے کہ ہم نے اسے ایک مبارک رات میں نازل فرمایا جس کا مقصد غافل انسانوں کو بیدار کرنا ہے اسی طرح کی قسم انہی الفاظ کے ساتھ سورۂ زخرف کے شروع میں بھی گزر چکی ہے جہاں تفصیل آ چکی ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

## نزول قرآن کے مختلف مراحل

نزول قرآن پاک کے بارے میں تین طرح قرآن حکیم میں وارد

ہوسکتی ہیں ﴿فِیْ لَیْلَۃٍ مُّبٰرَکَۃٍ﴾ کو ﴿شَہْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْہِ الْقُرْاٰنُ﴾ ﴿اِنَّآ اَنْزَلْنٰہُ فِیْ لَیْلَۃِ الْقَدْرِ﴾۔

لیلۃ القدر اسی سال شہر رمضان میں ہوئی ہی کے ان دونوں میں اختلاف نہیں۔ پہلا لیلۃ مبارکہ سے مراد لیلۃ البراءت ہے۔ نزول قرآن کے بھی تین درجات ہیں۔ درجہ اول وہ ہے کہ امر الٰہی سے شب کو جو تمام کتاب لوح محفوظ سے آسمان دنیا پر آئی۔

نزول قسم دوم تھوڑا تھوڑا مطابق واقعات کے۔ حضرت عمرؓ کہ کو وحی کیا اور واقعات بیت العزت سے معالجہ تفسیر متعلق ہیں جن پر لیلۃ مبارکہ کی لیلۃ البراءت یعنی جس میں ہر ایک واقعہ کا فیصلہ ہوتا ہے وہ مراد ہیں۔

﴿فِیْہَا یُفْرَقُ کُلُّ اَمْرٍ حَکِیْمٍ﴾ میں ﴿فِیْ لَیْلَۃٍ﴾ سے کہ جس میں نزول اول مراد ہے کہ ہر ایک امر کا کتاب سے فیصلہ کرنے کا حکم ہوا اور ”لیلۃ القدر“ سے نزول ثانی مراد ہے کہ بیت العزت کی جانب نزول ہوا۔

حضرت مولانا اشرف علی تھانوی صاحب رحمۃ اللہ اور بہت سے مفسرین کا رجحان بھی ہے کہ مضمون ایک ہی ہے صرف تعبیر میں مختلف انداز ہیں۔ ان حضرات کی رائے یہ ہے کہ نزول قرآن کا آغاز شب قدر میں ہوا وہ اس سال شب قدر، رمضان شریف میں تھی۔ اسی شب کو لیلۃ مبارکہ فرمایا گیا ہے۔ حضرت قتادہ سے بسند صحیح (سورۂ دخان) کی تفسیر میں منقول ہے فرماتے ہیں ”رات برکت کی شب قدر ہے“

جس شب کو سورۂ دخان میں ”لیلۃ مبارکہ“ فرمایا گیا ہے اس کی خصوصیت یہ بیان ہوئی ہے ”اس شب میں ہر ایک حکمت والا اور قابل فیصلہ معاملہ (تقدیروں) سے متعلق کئے اور تمام امور الٰہی اور فیصلہ شدہ کی حیثیت سے جدا کئے جاتے ہیں اور ہر کام کے لئے فرشتے بھیجے جاتے ہیں اور ”لیلۃ القدر“ کی خصوصیت سورۃ القدر میں یہ بتائی گئی ہے کہ اس شب کو فرشتے اور روح (روح القدس) کا نزول رب العالمین کے حکم سے ہوتے ہیں۔ جمیع خیر اور عبادت میں خاص قسم کی سعادت محسوس ہوتی ہے۔

حضرت عکرمہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں۔

”نصف شب (شعبان کی پندرھویں شب) میں سال بھر کے امور طے ہو کر فرشتوں کے حوالے کر دیئے جاتے ہیں وفات پانے والوں کے نام الگ درج کر دیئے جاتے ہیں پھر ان میں کوئی تبدیلی نہیں ہوتی“۔ یہی مضمون حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے مروی ہے۔

(تفسیر مظہری جلد ۸ ص ۱۵۵ ، تفسیر ابن کثیر)

## اِنَّا کُنَّا مُنْذِرِیْنَ ۝

ہم ہیں آگاہ کرنے والے ☆

دستور الٰہی کے مطابق ہم کو ہمیشہ بندوں کو متنبہ کرنا منظور ہوتا ہے۔ اسی لئے ہم نے قرآن کو اتارا۔ (تفسیر عثمانی)

## فِیْہَا یُفْرَقُ کُلُّ اَمْرٍ حَکِیْمٍ ۝ اَمْرًا

اسی میں جدا کیا جاتا ہے ہر کام جانچا ہوا حکم ہو کر

## مِّنْ عِنْدِنَا ؕ

ہمارے پاس سے ☆

## شب قدر اور شب براءت میں کیا ہوتا ہے

اس شب میں ہر سال سے متعلق فیصلے اور تقدیریں، رزق اور فیصلے اور حکیم انسان، موت اور پیدائش، لوح محفوظ سے نقل کر کے فرشتوں کے حوالے کئے جاتے ہیں جو شعبان سے ختم حیات تک کام کرنے والے ہیں بعض روایات سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ درمیانی پندرھویں رات ہے جسے شب براءت کہتے ہیں لیکن صحیح یہ ہے کہ یہ کام شب قدر میں ہوتا ہے اور شب قدر میں ہی پورا ہو جاتا ہے۔ (واللہ اعلم)

صحیح روایات یہی ہیں کہ قرآن شب قدر میں اترا اور یہ رات بہت برکت والی ہے اور شب قدر میں ہی حضرت جبرئیل امور کا فیصلہ کرتے ہیں اسی لئے قرآن کا نزول بھی اسی رات میں ہوا۔

حضرت ابن عباسؓ کا بیان ہے کہ شب قدر میں آئندہ سال تک ہونے والے تمام واقعات لوح محفوظ سے نقل کر دیئے جاتے ہیں۔ خیر اور شر، رزق اور بارش، زندگی موت یہاں تک کہ یہ بھی لکھ دیا جاتا ہے کہ فلاں شخص اس سال حج کرے گا۔ (تفسیر مظہری)

﴿فِیْہَا یُفْرَقُ کُلُّ اَمْرٍ حَکِیْمٍ ۝ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا﴾ یعنی اس رات میں ہر حکمت والے معاملہ کا فیصلہ ہماری طرف سے کیا جاتا ہے۔ یہی معنی حضرت ابن عباسؓ نے بیان فرمائے ہیں کہ یہ رات جس میں نزول قرآن ہوا یعنی شب قدر اسی میں تقدیرات سے متعلق تمام امور جن کے پہلے اس سال میں اگلی شب قدر تک واقع ہونے والے ہیں طے کئے جاتے ہیں کہ کون کون اس سال میں پیدا ہوں گے کون کون آدمی اس میں مریں گے کس کو کس قدر رزق اس سال میں دیا جائے گا۔ یہی تفسیر دوسرے ائمہ تفسیر حضرت قتادہ، مجاہد، حسن وغیرہ سے بھی منقول ہے اور مہدوی نے فرمایا کہ معنی اس کے یہ ہیں کہ یہ تمام فیصلے جو تقدیر الٰہی میں پہلے سے طے شدہ تھے اس رات میں متعلقہ فرشتوں کے سپرد کر دیئے جاتے ہیں۔ (معارف القرآن)

## اِنَّا کُنَّا مُرْسِلِیْنَ ۝

ہم ہیں بھیجنے والے ☆

## فرشتوں کے کام

☆ یعنی فرشتوں کو ہر کام پر جو ان کے مناسب ہو چنانچہ جبریل کو قرآن دے کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بھیجا۔ (تیسیر)

ہم ہی (پیغمبروں کو) بھیجنے والے ہیں یعنی ہمارا ضابطہ یہی ہے کہ ہم بندوں کو عذاب سے ڈراتے ہیں اور پیغمبروں کو تبلیغ دے کر بھیجتے ہیں۔ اس لئے جب آسمان کی طرف نظر آنے والا دھواں پیدا ہوگا سب لوگوں پر چھا جائے گا۔ یہ دردناک عذاب ہوگا۔ (تفسیر جلالین)

| |
|---|
| رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ |
| رحمت سے تیرے رب کی وہی ہے سننے |
| الْعَلِيْمُ ۝ |
| جاننے والا ☆ |

رحمت و حکمت الٰہی ☆ یعنی تم ہر عالم کے حالات سے باخبر ہے اور ان کی پکار سنتا ہے۔ اسی لئے جس ضرورت کے وقت خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم کو قرآن دے کر ہمارے لئے رحمت کبریٰ بنا کر بھیج دیا۔ (تفسیر جلالین)

| |
|---|
| رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ |
| رب آسمانوں کا اور زمین کا اور جو کچھ ان کے |
| اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ |
| بیچ ہے اگر تم کو یقین ہے ☆ |

ربوبیت الٰہی ☆ یعنی اگر تم کسی چیز پر یقین رکھنے کی صلاحیت رکھتے ہو تو سب سے پہلی چیز یقین رکھنے کے قابل اللہ تعالیٰ کی ربوبیت و وحدت ہے جس کے آثار روز روشن سے زیادہ نمایاں ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ |
| کسی کی بندگی نہیں سوائے اس کے جلاتا ہے اور مارتا ہے رب تمہارا اور رب |
| اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ |
| تمہارے اگلے باپ دادوں کا ☆ |

بے شبہ حقیقت ☆ یعنی جس کے قبضہ میں مارنا جلانا اور وجود و عدم ہو وہی مالک ہوا اور سب اگلے پچھلے آخر اسی کے زیر تربیت ہوئے۔ کیا اس کے سوا دوسرے کی بندگی جائز ہو سکتی ہے؟ یہ ایک ایسی صاف حقیقت ہے جس میں شک و شبہ کی قطعاً گنجائش نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝ |
| کوئی نہیں وہ دھوکے میں ہیں کھیلتے ☆ |

مشرکین کی بے توجہی ☆ یعنی ان واضح نشانات و دلائل کا تقاضا یہ تھا کہ یہ لوگ مان لیتے مگر یہ ابھی نہیں مانتے، بلکہ وہ تو ہیں اور شیطان کی طرف سے شک میں پڑے ہیں اور دنیا کے کھیل کود میں مصروف ہیں۔ آخرت کی فکر نہیں جو حق طلب کریں اور اس میں غور و فکر سے کام لیں۔ یہ اسی حالت میں ہیں کہ بیٹھے ہیں۔ جانتے نہیں کہ سامنے کی چیز نہیں جو کہ ان سے انجام کی باتوں کو کھیل میں اڑا دیتے ہیں۔ (تفسیر جلالین)

| |
|---|
| فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ |
| سو تو انتظار کر اس دن کا کہ لائے آسمان دھواں |
| مُّبِيْنٍ ۝ يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ |
| صریح جو گھیر لے لوگوں کو یہ ہے عذاب |
| اَلِيْمٌ ۝ |
| دردناک ☆ |

واضح دھواں ☆ یعنی "دخان مبین" سے یہاں کیا مراد ہے؟ اس میں سلف کے دو قول ہیں۔ ابن عباس رضی اللہ عنہ وغیرہ کہتے ہیں کہ قیامت کے قریب ایک دھواں اٹھے گا جو تمام لوگوں کو گھیر لے گا۔ نیک آدمی کو اس کا اثر خفیف پہنچے گا جس سے زکام سا ہو جائے گا۔ اور کافر و منافق کے دماغ میں گھس کر بے ہوش کر دے گا۔ دخان یہاں مراد ہے شاید یہ وہی دھواں ہو جس کا ذکر "يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى" میں ہوا ہے گویا آسمان کی طرف سے ایک چیز جو اس کی طرف ظاہر ہوگی۔ آگے اس کے اوپر اس کی ابتدا ہوگی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ اور ابن مسعود رضی اللہ عنہ اور جمہور کے متعلق کہتے ہیں کہ یہ آیت سے مراد دھواں نہیں جو علامات قیامت میں سے ہے بلکہ قریش کے کفر و طغیان سے تنگ آ کر نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے دعا فرمائی تھی کہ ان پر بھی سات سال کا قحط مسلط کر دے جیسے یوسف علیہ السلام کے زمانہ میں مصریوں پر مسلط ہوا تھا چنانچہ قحط پڑا جس میں کہ بالوں کو مردار اور چمڑے چمڑیاں کھانے کی نوبت آ گئی تھی۔ اسی دوران میں "یہ" کے دیکھ

فرمایا ہے" اس لئے حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ کا مطلب یہ ہے کہ ان پر بھوک سے نظر نہ آتی تھی دھواں سا دکھائی دیتا تھا۔ تو مراد دھواں نہیں بلکہ بھوک اور پیاس کے شدت کے سبب وہ دیکھنے لگے تھے کہ شدت کی بھوک اور سخت قحط سالی کے زمانہ میں جو کیفیت ہو جاتی ہے ان کے درمیان ویسی سی آنکھوں کے سامنے نظر آتا ہے اور یہ بھی مدت دراز تک بارش بند رہنے سے گرد و غبار وغیرہ بھی ہو کر آسمان پر دھواں سا معلوم ہونے لگتا ہے۔ اس کو یہاں دخان سے تعبیر فرمایا۔ اس تقریر پر "ذلک فی الدنیٰ" میں لوگوں سے مراد مکہ والے ہوں گے گویا ایک پیشین گوئی کی (کما یدل علیہ قولہ "للتوقف") محمود التفسیر ص۱ج۲

**قیامت کی سب سے اول علامات۔** ابن جریر طبری اور بغوی نے حضرت حذیفہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا سب سے اول (قیامت کی) نشانی دھواں اور عیسیٰ ابن مریم کا نزول ہے۔ ایک آگ ہوگی جو عدن کے کسی غار سے نکلے گی اور لوگوں کو میدان حشر کی طرف ہانک کرے جائے گی اور جہاں لوگ دوپہر کو آرام کرنے ٹھہریں گے وہ بھی ٹھہر جائے گی۔ (تفسیر مظہری)

**تین چیزیں جن سے ڈرایا گیا:** ابن جریر نے ابو مالک اشعری سے روایت کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میں تمہیں تین چیزوں سے ڈراتا ہوں۔ ایک دھواں (یعنی دخان) جو مومن کے لئے صرف ایک طرح کا زکام پیدا کرے گا اور کافر کے تمام بدن میں بھر جائے گا یہاں تک کہ اس کے ہر مسام اور مسام سے نکلے گا اور دوسری چیز دابہ (یعنی دابۃ الارض) ہوگی عجیب قسم کا جانور زمین سے نکلے گا) اور تیسرے دجال اس روایت کو ابن کثیر نے نقل کر کے فرمایا (یہ اسناد جید ہے) (معارف مفتی اعظم)

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا

اے رب کھول دے ہم پر سے یہ آفت ہم

مُؤْمِنُونَ

یقین لاتے ہیں ☆

بے موقع جب دیکھو وہ ایمان کی طرف سے ہمارا کیوں نہیں کہیں گے کہ اب تو اس آفت سے نجات دیجئے گا تو اس وقت ہم کو یقین آ گیا پھر شرارت نہ کریں گے۔ پھر مسلمان ہو کر رہیں گے۔ اس کا جواب دیا کہ یہ نہیں ہوگا۔

أَنَّىٰ لَهُمُ الذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَاءَهُمْ

کہاں ملے ان کو سمجھنا اور آ چکا ان کے پاس

رَسُولٌ مُّبِينٌ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا

رسول کھول کر سنانے والا پھر اس سے پیٹھ پھیری اور کہنے لگے

مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ

سکھایا ہوا ہے باؤلا ☆

اب دیکھتا ہے کیا بہرت ہوئی اب ان پر کھلے اور نصیحت سے فائدہ اٹھانے کا جبکہ وہ اس وقت تو مانا نہیں جب پیغمبر کھلے کھلے نشان لے کر آیا تھا اس وقت کہتے تھے کہ یہ باؤلا ہے۔ کبھی کہتے کہ کسی دوسرے سے سیکھ کر اس نے یہ کتاب تیار کر لی ہے (ابن عباس رضی اللہ عنہ کی تفسیر پر یہ مطلب ہوا) اور ابن مسعود رضی اللہ عنہ کی تفسیر کے موافق یہ مطلب ہوگا کہ ان کے ہاتھ وغیرہ سے نکل کر دوام اور ہمیشہ کی بات کہاں رہے گی جبکہ بعض روایات میں ہے کہ ابوسفیان وغیرہ نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر کہا آپ تو کہتے ہیں کہ میں رحمت بنا کر بھیجا گیا ہوں آپ کی قوم قحط اور خشک سالی سے تباہ ہو رہی ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم ہماری اور قرابت کا لحاظ کرتے ہوئے دعا کیجئے کہ یہ مصیبت دور ہو جائے تو ہم ایمان لے آئیں گے۔ چنانچہ آپ کی دعا سے بارش ہوئی اور شام سے غلہ آنے لگا پھر وہ لوگ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے خیر خواہ بن گئے اور الکار پر قائم رہے۔ یہی کہ فرماتے ہیں "إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ" تم ایسی ہی باتوں سے ماننے والے کہاں ہیں اس قسم کی چیزیں تو بہت دیکھ چکے جو پیغمبر کی کھلی ہوئی آیات سے۔ یا ان دونوں کی کبھی آپ کی پیغمبری اس کو دیوانہ مجنون بناتے رہے کسی سے کہا کہ صاحب فلاں آدمی کا کام ہے یہ مضامین سکھلاتے ہیں اور یوں اپنی حالت میں اللہ کرنے لگے ہیں بھلا صاحب عقل ایسے کہنے کی کیا تو قع رکھی جائے۔ (موضح القرآن)

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ

ہم کھولے دیتے ہیں یہ عذاب تھوڑی مدت تم پھر

عَائِدُونَ

وہی کرو گے ☆

**مشرکین کی بدکرداری**

یعنی اگر ہم تھوڑی دیر کے لئے عذاب ہٹا دیں پھر وہی حرکتیں کریں گے جو پہلے کرتے تھے اور ابن مسعود رضی اللہ عنہ کی تفسیر پر یہ مطلب ہوا کہ

تو اچھا ہم تھوڑی مدت کے لئے یہ عذاب اٹھا لیتے ہیں۔ پھر دیکھ لینا وہ اسی کفر کی طرف لوٹ آئیں گے جیسے پہلے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا |
| جس دن پکڑیں گے ہم بڑی پکڑ تحقیق ہم |
| مُنتَقِمُونَ |
| بدلہ لینے والے ہیں ☆ |

**بڑی پکڑ** ☆ ابن عباس رضی اللہ عنہ کے نزدیک بڑی پکڑ قیامت میں ہوگی۔ غرض یہ ہے کہ آخرت کا عذاب یقینی ہے اور ابن مسعود رضی اللہ عنہ کے نزدیک "بڑی پکڑ" سے معرکہ "بدر" کا واقعہ مراد ہے۔ "بدر" میں ان لوگوں سے بدلہ لے لیا گیا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ |
| اور جانچ چکے ہیں ہم ان سے پہلے فرعون کی قوم کو |
| وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ |
| اور آیا ان کے پاس رسول عزت والا ☆ |

## قوم فرعون کی آزمائش

یعنی حضرت موسیٰ علیہ السلام کے ذریعہ سے ان کا امتحان لیا گیا کہ خدا کے پیغام کو قبول کرتے ہیں یا نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ |
| کہ حوالے کرو میرے اللہ کے بندے ☆ |

## دعوت موسوی

یعنی خدا کے بندوں کو میرے حوالے کرو۔ بنی اسرائیل کو غلامی سے آزاد کر کے میرے ساتھ کر دو میں جہاں چاہوں لے جاؤں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ وَأَنْ لَا |
| میں تمہارے پاس آیا ہوں بھیجا ہوا معتبر اور یہ کہ نہ چڑھو |
| تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُم بِسُلْطَانٍ |
| اللہ کے مقابلہ میں لاتا ہوں تمہارے پاس سند |

| |
|---|
| مُبِينٍ |
| کھلی ہوئی ☆ |

**کھلی سند** ☆ کھلی سند وہ معجزات تھے جو حضرت موسیٰ علیہ السلام نے دکھائے جیسے "عصا" اور "ید بیضا" وغیرہ۔ (تفسیر عثمانی)

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ یعنی اللہ کی طرف سے تمہاری طرف بھیجا گیا ہوں۔
أَمِينٌ اللہ کی وحی کا امانت دار۔ معجزات میری سچائی پر دلالت کر رہے ہیں مجھ پر جھوٹ کی تہمت نہیں لگائی جاسکتی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَن |
| اور میں پناہ لے چکا اپنے رب کی اور تمہارے رب کی اس بات سے |
| تَرْجُمُونِ |
| کہ تم مجھ کو سنگسار کرو ☆ |

**فرعونی دھمکیوں کا جواب** ☆ یعنی ان کی دھمکیوں کا جواب دیا کہ میں تمہارے ظلم و ایذا سے خدا کی پناہ حاصل کر چکا ہوں وہ میری حمایت پر ہے وہ ہی اپنی قدرت سے مجھے بچا سکتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَإِن لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ |
| اور اگر تم یقین نہیں کرتے مجھ پر تو مجھ سے پرے رہو ☆ |

یعنی اگر میری بات نہیں مانتے تو کم از کم مجھے ایذا دینے کے درپے نہ ہو، میرے راستہ سے ہٹ جاؤ اور حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "یعنی اپنی قوم کو لے جانے دو"۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ |
| پھر دعا کی اپنے رب سے کہ یہ لوگ گنہگار ہیں |
| فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ |
| پھر لے نکل راتوں رات میرے بندوں کو البتہ تمہارا پیچھا کریں گے ☆ |

## حضرت موسیٰ کی دعا اور حکم الٰہی

یعنی آخر مجبور ہو کر اللہ سے فریاد کی کہ یہ لوگ اپنے جرائم سے باز آنے والے نہیں۔ آپ میرے اور ان کے درمیان فیصلہ کر دیجئے۔ اور ان لوگوں

دیر تھی۔ حضرت موسیٰ علیہ السلام کو حکم ہوا کہ فرعونیوں کو اطلاع کیے بغیر بنی اسرائیل کو لے کر راتوں رات مصر سے چلے جاؤ کیونکہ دن ہونے پر جب انہیں اطلاع ہوگی اس وقت تمہارا پیچھا کریں گے لیکن راستے میں سمندر پڑے گا اس پر عصا مارنے سے پانی ادھر ادھر ہٹ جائے گا اور درمیان میں خشک و صاف راستہ نکل آئے گا اسی راستے سے اپنی قوم کو لے کر گزر جانا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُندٌ |
| اور چھوڑ جا دریا کو تھما ہوا البتہ وہ لشکر |
| مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾ |
| ڈوبنے والے ہیں ☆ |

**فرعون کی ہلاکت کا سامان:** یعنی اس کی حرکت کو رکی ہوئی چھوڑ دے یعنی خدا کی قدرت سے جو راستہ بن گیا وہ باقی رہے اس کو اسی حالت میں چھوڑ دے یہ راستہ دیکھ کر ہی تو فرعون کے لشکر اس میں گھسنے کی ہمت کریں گے چنانچہ وہ سب خشک راستہ دیکھ کر اندر گھسے جب ہوا کے حکم سے سمندر کا پانی چاروں طرف سے آ کر مل گیا سارا لشکر اس طرح غرقاب ہوا۔ (تفسیر عثمانی)

## تمام دریاؤں کا سردار

حضرت عبداللہ بن عمر فرماتے ہیں مصر کا دریائے نیل مشرق و مغرب کے دریاؤں کا سردار ہے اور سب سمندر اس کے ماتحت ہیں جب اس کی روانی اللہ تعالیٰ کو منظور ہوتی ہے تو تمام نہروں کو اس میں پانی پہنچانے کا حکم ہوتا ہے جہاں تک اللہ تعالیٰ کو منظور ہوتا ہے اس میں پانی آ جاتا ہے پھر اللہ تبارک و تعالیٰ اور نہروں کو روک دیتا ہے اور حکم ہوتا ہے کہ اب اپنی اپنی جگہ چلی جاؤ۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾ |
| بہت سے چھوڑ گئے باغ اور چشمے |
| وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ وَنَعْمَةٍ |
| اور کھیتیاں اور گھر خاصے اور آرام کا سامان |
| كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾ كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا |
| جس میں باتیں بنایا کرتے تھے یوں ہی ہوا اور وہ سب ہاتھ لگا دیا |
| قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾ |
| ہم نے ایک دوسری قوم کے ☆ |

## بنی اسرائیل کے لئے غنیمت

☆ یعنی بنی اسرائیل کے ہاتھوں میں دے دیا جیسا کہ سورۂ شعراء میں ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ فرعون کے غرق ہونے کے بعد مصر میں بنی اسرائیل کا دخل ہوا اور اگر یہ ثابت نہ ہو تو مطلب یہ ہوگا کہ جس قسم کے سامان فرعونیوں نے چھوڑے تھے ایسے سامان ہم نے بنی اسرائیل کو دیئے۔ واللہ اعلم (تفسیر عثمانی)

**فرعونیوں کے باغات:**

ان فرعونیوں کے یہ باغات دریائے نیل کے دونوں کناروں پر مسلسل چلے گئے تھے اسوان سے لے کر رشید تک اس کا سلسلہ تھا اور اس کی نو خلیجیں تھیں۔ خلیج اسکندریہ، خلیج دمیاط، خلیج سردوس، خلیج منف، خلیج فیوم، خلیج منتہی اور ان سب میں باتصال تھا ایک دوسرے سے متصل تھیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ |
| پھر نہ رویا ان پر آسمان اور زمین ☆ |

## مومن اور کافر کی موت

☆ روایات میں ہے کہ مومن کے مرنے پر آسمان کا وہ دروازہ روتا ہے جس سے اس کی روزی نازل ہوتی یا جس سے اس کا عمل صالح اوپر چڑھتا تھا اور زمین روتی ہے جہاں وہ نماز پڑھتا تھا یعنی کسی درجہ میں صدمہ محسوس کرتی ہے۔ کافر کے پاس عمل صالح کا ذخیرہ ہی نہیں پھر اس پر آسمان اور زمین کیوں روئے۔ بلکہ شاید خوش ہوتے ہوں گے کہ اچھا ہوا "خس کم جہاں پاک"۔ (تفسیر عثمانی)

**کافر پر آسمان و زمین نہیں روتے:**

ابن جریر نے حضرت شریح بن عبید حضرمی کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو مومن سفر کی حالت میں مر جاتا ہے اس کے غم میں کوئی اس کے پاس نہیں ہوتے تو آسمان و زمین اس پر رویا کرتے ہیں۔ پھر حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے آیت فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ تلاوت فرمائی اور ارشاد فرمایا کافر پر آسمان و زمین نہیں روتے۔ (تفسیر طبری)

## آسمان میں ہر بندہ کے لئے دو دروازے ہیں

مسند ابو یعلیٰ موصلی میں ہے ہر بندے کے لئے آسمان میں دو دروازے ہیں ایک سے اس کی روزی اترتی ہے دوسرے سے اس کے اعمال اور اس کے کلام چڑھتے ہیں۔ جب یہ مر جاتا ہے اور وہ عمل و رزق کو گم کر دیتے ہیں تو روتے ہیں۔ پھر یہی آیت حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے تلاوت کی۔

## کسی کی موت پر آسمان کے رونے یا نہ رونے کی وجہ

حضرت علی سے کسی نے پوچھا کہ آسمان و زمین کبھی کسی پر روئے بھی ہیں؟ آپ نے فرمایا آج تو نے وہ بات دریافت کی کہ تجھ سے پہلے مجھ سے

اس کا حال کسی نے نہیں کیا۔ ستو برمہ کے لئے زمین میں ایک نماز کی جگہ ہوتی ہے اور ایک جگہ آسمان میں اس کے عمل کے چڑھنے کی ہوتی ہے۔ اور آل فرعون کے نیک اعمال ہی نہ تھے جو چڑھتے نہ زمین پر کوئی عبادت گاہ تھی جہاں وہ خدا کی عبادت کرتے تو زمین و آسمان کیوں روتے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا |
| اور نہ ان کو ملی ڈھیل اور ہم نے بچا لیا |
| بَنِي إِسْرَاءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ |
| بنی اسرائیل کو ذلت کی مصیبت سے |
| مِنْ فِرْعَوْنَ |
| جو فرعون کی طرف سے تھی ☆ |

☆ بلکہ فرعون کا وجود ایک مجسم مصیبت تھا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ |
| بیشک وہ تھا چڑھا ہوا حد سے بڑھنے والوں میں ☆ |

☆ یعنی بڑا متکبر اور سرکش تھا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى |
| اور ان کو ہم نے پسند کیا جان بوجھ کر |
| الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾ |
| جہان کے لوگوں سے ☆ |

**بنی اسرائیل کی فضیلت** ☆ یعنی اگرچہ بنی اسرائیل کی کمزوریاں ہم کو معلوم تھیں تاہم ان کو ہم نے اس زمانہ کے تمام لوگوں سے فضیلت دی۔ اور بعض فضائل جزئیہ تو ایسے ہیں جو آج تک کسی قوم کو میسر نہیں ہوئے مثلاً اتنے بے شمار انبیاء کا ان میں پیدا ہونا۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَآتَيْنَاهُمْ مِنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ |
| اور دیں ہم نے ان کو نشانیاں جن میں تھی |
| مُبِينٌ ﴿٣٣﴾ |
| مدد صریح ☆ |

نشانیاں ☆ یعنی حضرت موسیٰ علیہ السلام کے ذریعے سے خلاف معمول کی نشانیاں دکھائیں اور احسانات کیے مثلاً من و سلویٰ کا اتارنا، دریا کو چیرنا وغیرہ وغیرہ۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنْ هِيَ |
| یہ لوگ کہتے ہیں اور کچھ نہیں |
| إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ |
| مگر یہی مرنا ہے پہلا اور ہم کو پھر |
| بِمُنْشَرِينَ ﴿٣٥﴾ |
| اٹھنا نہیں ☆ |

**انکار بعث** ☆ درمیان میں حضرت موسیٰ کی قوم کا ذکر مختصر ہوا۔ گویا تقابل سے یہاں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی قوم کا ذکر کرتا ہے۔ یعنی یہ کہتے ہیں کہ ہماری آخری حالت بس یہی ہے کہ ایک بار موت آ جائے موت کے بعد سب قصہ ختم۔ مرنے کے بعد دوسری زندگی کوئی نہیں۔ کہاں کا حشر اور کیسا حساب کتاب۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ |
| پھر لے آؤ ہمارے باپ دادوں کو اگر تم سچے ہو ☆ |

**اہل مکہ کی دلیل** ☆ یعنی پیغمبر اور مؤمنین سے کہتے ہیں کہ اگر تم اپنے عقیدہ میں سچے ہو کہ مرنے کے بعد دوبارہ زندہ کیے جائیں گے تو اچھا ہمارے مرے ہوئے باپ دادوں کو زندہ کر کے دکھاؤ تب ہم جانیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ |
| بھلا یہ بہتر ہیں یا تُبَّع کی قوم ☆ |

**تُبَّع** ☆ "تُبَّع" لقب تھا یمن کے بادشاہ کا جس کی حکومت "سبا" اور حضر موت وغیرہ سب پر تھی۔ "تبع" بہت گزرے ہیں۔ اللہ جانے یہاں کونسا مراد ہے۔ بہرحال اتنا ظاہر ہوا کہ ان کی قوم بہت قوت و جبروت والی تھی جو اپنی سرکشی کی بدولت تباہ کی گئی۔ ابن کثیر نے اس سے قوم سبا مراد لی ہے جس کا ذکر سورہ سبا میں گزر چکا واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

**بادشاہوں کے القاب:** یہ قوم تبع عرب قحطان تھے جب کہ قریش عرب عدنان تھے۔ تبع یمن کے بادشاہ کا لقب ہوتا تھا جیسا کہ مسلم شاہ فارس کو اور قیصر شاہ روم کو اور فرعون بادشاہ مصر کو اور نجاشی شاہ حبشہ کو کہتے تھے۔

**تبع کا ایمان لانا:** [illegible]

[illegible] ۔

[illegible]

## اہل مدینہ کی عجیب شرافت:

[illegible]

## حجۃ اللہ پر غلاف کی ابتداء

[illegible]

[illegible]

[illegible]

شهدت على احمد انه رسول من الله باری النسم

فلو مد عمری الی عمره لكنت وزيرا له وابن عم

وجاهدت بالسيف اعداءه وفرجت عن صدره كل غم

[illegible]

**تبع کی دو وصیتیں:** [illegible]

**تبع کو برا بھلا مت کہو:** [illegible]

وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ

ان سے پہلے تھے ہم نے ان کو ہلاک کر دیا بیشک وہ

كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

مجرم تھے

عاد و ثمود کا حشر [illegible]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا

اور ہم نے نہیں بنائے آسمان اور زمین اور جو

بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ

ان کے بیچ ہے کھیلتے ہوئے [illegible]

وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

پر بہت لوگ نہیں سمجھتے

کارخانہ کائنات [illegible]

اکثر لوگ آسمان و زمین میں غور نہیں کرتے

[illegible]

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

تحقیق فیصلہ کا دن وعدہ ہے ان سب کا

[illegible]

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا

جس دن کام نہ آئے کوئی رفیق کسی رفیق کے کچھ بھی

وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

اور نہ ان کو مدد پہنچے

[illegible]

إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ

مگر جس پر رحم کرے اللہ بیشک وہی ہے زبردست

الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

رحم والا

رحمت الٰہی [illegible]

[illegible]

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾

مقرر درخت سینڈھ کا کھانا ہے گنہگار کا

[illegible]

آگ میں درخت اُگنا ممکن ہے

[illegible]

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ

جیسے پگھلا ہوا تانبا کھولتا ہے پیٹوں میں جیسے

الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ

کھولتا پانی پکڑو اس کو اور دھکیلتے ہوئے لے جاؤ بیچوں بیچ

الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾

دوزخ کے

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ

الْحَمِيمِ

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ

## ابوجہل کا دعویٰ اور اس کی تذلیل

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ

ان لكم ان تصحوا فلا تسقموا ابدا وان لكم ان تحيوا فلا تموتوا ابدا وان لكم ان تشبوا فلا تهرموا ابدا

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ۝

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۝

وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۵۷﴾

[illegible]

بڑی کامیابی [illegible]

[illegible]

**اللہ پر کسی کا حق نہیں جنت کا ملنا اللہ کی رحمت ہے**

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ [illegible]

[illegible]

ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ [illegible]

[illegible]

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ

[illegible]

يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۸﴾

[illegible]

تیسیر قرآن [illegible]

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿۵۹﴾

اب آپ [illegible]

[illegible]

## سورة الجاثیة

[illegible]

(۴۵) سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ (۶۵) رُكُوْعَاتُهَا ۴ اٰيَاتُهَا ۳۷

[illegible]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

شروع اللہ کے نام سے [illegible]

حٰمٓ ﴿۱﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ

[illegible]

الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۲﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

[illegible]

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۳﴾

اور زمین میں [illegible]

ایمان [illegible]

[illegible]

العزة تدل على القهر [illegible]
المصير فكيف لا يدل منه نظام العجيب
[illegible] على الصانع اللطيف [illegible]

[illegible]

[illegible]

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

اور تمہارے [illegible]

ءَايَـٰتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝

نشانیاں ہیں ان لوگوں کے واسطے جو یقین رکھتے ہیں ۝

[illegible] (تفسیر عثمانی)

**انسان کی تدریجی بناوٹ:** وَفِي خَلْقِكُمْ [illegible] (تفسیر مظہری)

وَٱخْتِلَـٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ وَمَآ

اور بدلنے میں رات اور دن کے اور جو

أَنزَلَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مِن رِّزْقٍ

کہ اتارا اللہ نے آسمان سے روزی کو

رزق کا جوہر [illegible]

فَأَحْيَا بِهِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

پھر زندہ کر دیا اس سے زمین کو اس کے مر جانے کے بعد

وَتَصْرِيفِ ٱلرِّيَـٰحِ ءَايَـٰتٌ لِّقَوْمٍ

اور بدلنے میں ہواؤں کے نشانیاں ہیں ان لوگوں کے

يَعْقِلُونَ ۝

واسطے جو سمجھ رکھتے ہیں

**غور کی ضرورت** [illegible]

تِلْكَ ءَايَـٰتُ ٱللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ

یہ باتیں ہیں اللہ کی ہم سناتے ہیں

بِٱلْحَقِّ ۖ فَبِأَىِّ حَدِيثٍۭ بَعْدَ

تجھ کو ٹھیک ٹھیک پھر کونسی بات کو

ٱللَّهِ وَءَايَـٰتِهِۦ يُؤْمِنُونَ ۝

اللہ اور اس کی باتوں کو چھوڑ کر مانیں گے ۝

**اللہ کی بات سے بڑھ کر کوئی نہیں:** [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝ يَسْمَعُ ءَايَـٰتِ

خرابی ہے ہر جھوٹے گنہگار کے لئے کہ سنتا ہے آیتیں

ٱللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

اللہ کی کہ اس کے پاس پڑھی جاتی ہیں پھر ضد کرتا ہے غرور سے

كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۖ

گویا ان کو سنا ہی نہیں

**ضد اور غرور** [illegible]

**ثُمَّ** [illegible]

فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَإِذَا

سو خوشخبری دے اس کو عذاب دردناک کی اور جب

عَلِمَ مِنْ ءَايَـٰتِنَا شَيْـًٔا ٱتَّخَذَهَا

خبر پائے ہماری باتوں میں سے کسی چیز کی اس کو ٹھہرائے ٹھٹھا

هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ

مُّهِينٌ

[illegible]

مِّن وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِي عَنْهُم

مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِن

دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ

[illegible]

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ هَٰذَا هُدًى

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ

عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ

[illegible]

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ

لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ

[illegible]

وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ

تَشْكُرُونَ

[illegible]

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي

الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ

[illegible]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا

يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ

لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ

إِسَاءَ فَعَلَيْهَا

[illegible]

[illegible]

ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ

[illegible]

[illegible]

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ

[illegible]

وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ

[illegible]

الطَّيِّبَاتِ

[illegible]

## بنی اسرائیل پر روحانی و جسمانی انعامات

[illegible]

وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِنَ الْأَمْرِ

[illegible]

[illegible]

فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ

[illegible]

الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي

[illegible]

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ

[illegible]

يَخْتَلِفُونَ

[illegible]

## اصول میں فرقہ بندی کی مذمت

[illegible]

[illegible]

مذہبوں اور عیسائیوں کے بہتر فرقے کسی دنیا کی راستی میں نہیں بن گئے تھے بلکہ کل آپس کی ضد سے بن بیٹھے تھے۔ امت اسلامیہ کے بہتر فرقے بھی جو مقام ایمان کی بنا پر نہیں ہوئے بلکہ نصوص قطعیہ کے مقابلہ میں صرف اپنی وہم کی بیت سے ہو گئے۔ (اس وہم کو ہر فرقہ دانش قرار دیتا ہے) جیسے فرقہ معتزلہ نے فلاسفہ کے اتباع میں بہت سے مسائل (ارادی) کا فیصلہ کرنے میں عقل کو کافی قرار دیا اور نصوص کی مخالفت کی۔ مترجم) یا جسم نے خیال کر لیا کہ ہر موجود کا جسم ہونا ضروری ہے (اس لئے خدا کا بھی جسم ہے) یا کسی اور وجہ سے بہتر فرقے (اجماع امت سے الگ ہو کر) بن گئے۔ جیسے معارف وغیرہ۔ (تفسیر مظہری)

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ

پھر تجھ کو رکھا ہم نے ایک رستہ پر دین کے کام کے

فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا

سو تو اسی پر چل اور مت چل خواہشوں پر

يَعْلَمُوْنَ

نادانوں کی ☆

**صراط مستقیم** ☆ ان اختلاف اور فرقہ وارانہ مشکلات کی موجودگی میں ہم نے آپ کو دین کے صحیح راستہ پر قائم کر دیا تو آپ کو اور آپ کی امت کو چاہیے کہ اس راستہ پر برابر مستقیم رہے کبھی بھول کر بھی جاہلوں اور نادانوں کی خواہشات پر نہ چلے۔ مشرکوں کی خواہش یہ ہے کہ آپ ان کے طور و طریق اور تعلیم وحدت سے ہٹ کر رسومات ترک کر دیں یا مسلمانوں میں بھی وہی اختلاف و تفریق پڑ جائے جس میں وہ لوگ خود مبتلا ہیں اور یہی صورت واجب ہے دین کی خواہشات کو الگ پامال کر دیا جائے۔ (تفسیر عثمانی)

شَرِيْعَةٍ۔ یعنی راستہ صراط مستقیم جس پر چلنے کا نبی کو حکم دیا گیا ہے۔

مِنَ الْاَمْرِ۔ امر سے مراد ہے امر دین۔

فَاتَّبِعْهَا۔ جس سے مراد آپ شریعت حق پر چلئے۔

وَلَا تَتَّبِعْ۔ یہ ہر چند رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو خطاب ہے لیکن خطاب اصل میں امت کی طرف ہے۔

**لَا يَعْلَمُوْنَ کا مطلب:** مشرکین کو نادان جانتے تھے لیکن قصداً انہوں نے شرعی کتاب پر عمل ترک کر دیا اور روایات کتب کی من چاہی تاویلیں کرتے تھے تو گویا وہ علم ہی سے محروم تھے جیسے علماء یہود تھے اسی طرح مسلمانوں میں سے جو لوگ

بھی جو ہدایت حق سے ہٹ کر اپنی خواہشات کے تابع تھے۔ (تفسیر مظہری)

**قانون شریعت کے اجزاء:** قانون شریعت تین چیزوں کا مجموعہ ہے۔ بصیرت، ہدایت اور رحمت۔ ترتیب طبعی بھی یہی ہے۔ انسان کی پہلے آنکھیں کھلتی ہیں تو صحیح راستہ نظر آتا ہے اور منزل مقصود پہچان کر اس کی طرف چلنا شروع کر دیتا ہے۔ بصیرت سے راستہ نظر آتا ہے ہدایت منزل تک پہنچانے والے راستہ پر چلنا ہے اور رحمت حصول مقصد اور وصول منزل پر مرتب ہونے والے ثمرہ کا نام ہے۔ (معارف القرآن)

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْــًٔا

وہ ہرگز کام نہ آئیں گے تیرے اللہ کے سامنے ذرا بھی ☆

☆ یعنی ان کی طرف جھکنا تم کو اللہ کے ہاں کچھ کام نہ دے گا۔ (تفسیر عثمانی)

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ

اور بے انصاف ایک دوسرے کے رفیق ہیں

وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ

اور اللہ رفیق ہے ڈر رکھنے والوں کا ☆

**سچے مسلمان:** یعنی منصف اور راستی پسند مسلمان ظالم اور بے انصاف کافروں کے رفیق نہیں ہو سکتے۔ وہ تو اللہ کے متقی بندے ہیں اور اللہ ان کا رفیق اور مددگار ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ۔ متقیوں کا ولی اللہ ہے آپ شریعت پر چلتے رہیے۔ (تفسیر مظہری)

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى

یہ سوجھ کی باتیں ہیں لوگوں کے واسطے اور راہ کی

وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ

اور رحمت ہے ان لوگوں کے لئے جو یقین لاتے ہیں ☆

**بصیرت افروز حقائق:** یعنی یہ قرآن بڑی بڑی بصیرت افروز حقائق پر مشتمل ہے جو لوگوں کو کام کی باتیں اور راہ ہدایت دکھلاتا ہے اور جو لوگ ان کی ہدایت و نصائح پر یقین کر کے عمل پیرا ہوتے ہیں ان کے حق

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ

نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَآءَ مَا

يَحْكُمُوْنَ

شان نزول

نیک لوگ بدوں کے برابر نہیں ہو سکتے ہیں

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ

وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ

لَا يُظْلَمُوْنَ

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُ هَوَاهُ

وَأَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ

ایک بیماری جو خود اپنی دوا بھی ہے

وَخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ

عَلٰى بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ يَّهْدِيْهِ

مِنْ بَعْدِ اللّٰهِ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ

[illegible]

عالم آخرت اور اس میں جزا اور سزا [illegible]

[illegible]

**وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ**

اور کہتے ہیں [illegible] ہم مرتے ہیں

**وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ**

[illegible]

[illegible] استدلال [illegible]

[illegible]

[illegible] کی نادانی [illegible]

[illegible]

دہر کا معنی اور مشرکین کا استدلال [illegible]

[illegible]

**وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ**

[illegible]

**هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝٢٤**

[illegible]

[illegible]

**علم کے حصول کے دو طریقے:** (۱) [illegible] (۲) [illegible]

| |
|---|
| وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا |
| اور جب سنائی جاتی ہیں ان کو ہماری آیتیں کھلی کھلی |
| كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا |
| اور کچھ حجت نہیں ان کی مگر یہی کہ کہتے ہیں لے آؤ ہمارے باپ دادوں کو |
| إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ |
| اگر تم سچے ہو |

**مشرکین کا مطالبہ** [illegible]

**حجتهم** [illegible]

| |
|---|
| قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ |
| تو کہہ اللہ ہی جلاتا ہے تم کو پھر مارتا ہے تم کو پھر |
| يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا |
| جمع کرے گا تم کو قیامت کے دن تک اس میں |
| رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ |
| کچھ شک نہیں پر بہت لوگ |
| لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ |
| نہیں سمجھتے |

**جواب** [illegible]

**یحییکم** [illegible] **یمیتکم** [illegible] **ثم یجمعکم** [illegible] **الی یوم القیامۃ** [illegible] **لا ریب فیہ** [illegible] **ولکن اکثر الناس لا یعلمون** [illegible]

| |
|---|
| وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ |
| اور اللہ ہی کا راج ہے آسمانوں میں اور زمین میں |
| وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ |
| اور جس دن قائم ہوگی قیامت اس دن خراب |
| الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾ |
| ہوں گے جھوٹے |

**قیامت میں حقیقت کھلے گی** [illegible]

## وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً

[illegible]

## كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰىٓ اِلٰى كِتٰبِهَا ۭ اَلْيَوْمَ

## تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

### سب کے اعمال نامے دیئے جائیں گے

[illegible]

## هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ

[illegible]

## اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ

## تَعْمَلُوْنَ

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ

فِي رَحْمَتِهِ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

الْمُبِينُ

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ

آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ

وَكُنتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ

وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُم مَّا

نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِن نَّظُنُّ إِلَّا

ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ

بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ

لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا

اس طرح تم سے یادداشت میں ہم کے ہمیشہ کے لئے اس طرح عذاب میں پڑا چھوڑ دیں گے جیسے تم نے اپنے اس دن کی ملاقات کو بھلا دیا تھا۔ (تفسیر مظہری)

**بھول جانے کا مطلب:** جس طرح تم نے آج کی ملاقات کی تیاری ترک کر دی تھی اور اس کی پرواہ بھی نہیں کی تھی۔ الفاظ بھولنے میں سبب کی اضافت ظرف کی طرف ہے۔ یعنی آج کے دن سے ملنے کے دن کی تیاری یا اعمال کا بدلہ دینے کے دن کی تیاری تم نے ترک کر دی تھی۔ (تفسیر مظہری)

وَمَأْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ

اور ٹھکانا تمہارا دوزخ ہے اور کوئی نہیں تمہارا

نّٰصِرِيْنَ ۞ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ

مددگار۔ یہ تم پر اس واسطے کہ تم نے پکڑا اللہ کی

اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ

باتوں کو ٹھٹھا اور بہکے رہے دنیا کی زندگانی پر سو

**غلط خیال کی نفی:** ہم نے جو تمہیں ڈھیل دی تھی تو تم نے سمجھا کہ ہمارے سامنے پیش نہ ہونا پڑے گا اور کبھی یہ خیال آیا بھی تو یہ سمجھ کر دل کی تسلی کر لی کہ جس طرح دنیا میں ہم مسلمانوں سے مقدم رہے وہاں بھی اچھی حالت میں رہیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا

سو آج نہ ان کو نکالنا منظور ہے وہاں سے اور نہ

هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۞

ان سے مطلوب ہے توبہ۔

## قیامت آنے پر کافروں کے لئے تمام مواقع ختم ہو چکیں گے

یعنی نہ تو ان کو دوزخ سے نکالا جائے گا نہ ان سے یہ چاہا جائے گا کہ اب خدا کو راضی کرنے کی کوشش کریں۔ (تفسیر عثمانی)

یعنی ان سے اس بات کی طلب نہیں کی جائے گی کہ توبہ کر کے اللہ کو راضی کر لو۔ کیونکہ توبہ کا وقت گزر چکا ہوگا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا موت کے بعد طلب رضامندی (یعنی توبہ) نہیں ہوگی۔ ...

کہ حصول اعمال پر موقوف ہے۔ اور اعمال کا وقت (اس) کے بعد گذر چکا ہے۔ صاحب نہایہ نے ... اور بدکاری سے توبہ ... بخاری نے (ای) حق کے لفظ سے ... نہیں کی جائے گی کہ اللہ کی طاعت کی طرف لوٹ آئیں۔ (تفسیر مظہری)

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ

سو اللہ ہی کو ہے سب خوبی جو رب ہے آسمانوں کا اور رب

الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ

ہے زمین کا رب سارے جہان کا اور اسی کے لئے بڑائی ہے

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ

آسمانوں میں اور زمین میں اور وہی ہے

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞

زبردست حکمت والا۔

**اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کرو:** یعنی چاہیے کہ اس کی طرف سے ملنے والے احسانات و انعامات کی قدر کرو اور سب ... کی خوشخبری حاصل کرنے کی فکر رکھے اور اس کی بڑائی و عظمت کے سامنے ... باقی ... حدیث قدسی ہے "الکبریاء ردائی والعظمۃ ازاری فمن نازعنی واحدا منهما قذفته فی النار" کبریائی میری چادر اور عظمت میری ازار ہے جو کوئی ان دونوں میں سے کسی میں مجھ سے منازعت کرے گا، میں اسے آگ میں پھینک دوں گا۔ اللھم ارحمنا ... وهب لنا ... سورۃ جاثیہ ... تمام ہوئی ... (تفسیر عثمانی)

**فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ** اللہ ہی کے لئے تعریف ہے کہ اس نے مومنوں اور کافروں سے جو وعدہ کیا تھا پورا کیا۔ **رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ** ... ربوبیت اس کی ایک مستقل نعمت ہے جو اس کے کمال قدرت پر دلالت کرتی ہے اس لئے لفظ کو مکرر ذکر کیا۔ **وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ** یعنی اللہ کی عظمت و بزرگی کے آثار آسمانوں اور زمین میں ظاہر ہیں۔ **الْعَزِيْزُ** یعنی زبردست جس پر کوئی غالب نہیں آ سکتا ... **الْحَكِيْمُ** ... ہر فیصلہ پر حکمت ہے۔

الحمد للہ سورۃ جاثیہ کی تفسیر ختم ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

[illegible]

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

[illegible]

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ

[illegible]

الْحَكِيْمِ ۞ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

[illegible]

وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ

[illegible]

## کارخانۂ کائنات بے مقصد نہیں

[illegible]

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا

[illegible]

مُعْرِضُوْنَ ۞

[illegible]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

[illegible]

اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ

[illegible]

اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ

[illegible]

[illegible]

قل ۔ محمد صلی اللہ علیہ وسلم آپ کہہ دیجئے۔

[illegible]

[illegible]

يَأْتُونِي بِكِتَابٍ مِّن قَبْلِ هَٰذَا أَوْ

[illegible]

أَثَارَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

[illegible]

[illegible]

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِن

[illegible]

دُونِ اللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ

[illegible]

إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَن دُعَائِهِمْ

[illegible]

غَافِلُونَ

[illegible]

[illegible]

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ

[illegible]

أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ

[illegible]

لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا

[illegible]

[illegible]

[illegible]

هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ كَفَىٰ

[illegible]

بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ

[illegible]

قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا

[illegible]

جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ

[illegible]

کافروں کی بے پروائی [illegible]

[illegible]

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

[illegible]

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ

[illegible]

وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ

[illegible]

إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا

[illegible]

إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ

[illegible]

سے کہ میں دو فریقوں میں سے کس کا ساتھ دوں، خواہ وہ معاملہ دنیا کا ہو یا آخرت کا، کسی کی مجھے کچھ خبر نہیں۔ اور غیبیہ کے متعلق میں جو کچھ کہتا ہوں وہ سب وحی الٰہی سے کہتا ہوں چنانچہ قرآن کریم میں خود مذکور ہے کہ اللہ تعالیٰ نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو بے شمار علوم امور غیبیہ کے متعلق عطا فرمائے ہیں تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ کا یہی مطلب ہے۔ امور آخرت، دوزخ، جنت، حساب کتاب، سزا جزا سے متعلق تو تفصیلات احادیث متواترہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے منقول ہیں جس سے ثابت ہوا کہ آیت مذکورہ کا حاصل صرف اتنا ہے کہ میں امور غیبیہ کے علم میں بھی خدا تعالیٰ کی طرح نہیں ہوں اور نبی کے علم میں خود مختار نہیں بلکہ مجھے بواسطہ وحی جتنا کچھ بتلا دیا جاتا ہے وہ میں ذکر کر دیتا ہوں۔

تفسیر روح المعانی میں اسی قول کو نقل کر کے لکھا ہے کہ میرا اعتقاد یہ ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اس دنیا سے اس وقت تک رخصت نہیں ہوئے جب تک کہ اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات اور آخرت اور دنیا کی وہ تمام چیزیں آ جانے لائق تمام معاملات سے آپ کو پوری طرح باخبر نہیں کر دیا گیا۔ رہا افلاس وافراد کے جزوی شخصی حالات و معاملات کا علم کہ وہ کل کیا کام کریگا اور اس کا انجام کیا ہو گا اور کے اپنے گھر میں کس کیا کام کر رہے ہیں یا کریں گے تو ان امور غیبیہ کا علم نہ کوئی کمال ہے نہ اس کے نہ ہونے سے کمال نبوت میں کوئی فرق آتا ہے۔

## رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے علم غیب کے متعلق تقاضائے ادب

جناب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے علم غیب کے متعلق تقاضائے ادب یہ ہے کہ یوں نہ کہا جائے کہ آپ غیب نہیں جانتے تھے بلکہ یوں کہا جائے کہ اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو امور غیب کا بہت بڑا علم دیا تھا جو انبیاء میں سے کسی دوسرے کو نہیں ملا اور بعض حضرات مفسرین نے جو یہ فرمایا کہ اس آیت میں نفی علم صرف امور دنیویہ سے متعلق ہے آخرت کے متعلق علم غیب کی نفی اس میں شامل نہیں (کما ذکرہ القرطبی) انہوں نے جملہ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ کو جملہ مستانفہ قرار نہیں دیا اس سے نفی علم غیب کو امور دنیا کیساتھ مخصوص فرمایا کیونکہ آخرت کے متعلق تو کھلے طور پر آپ نے بتا دیا کہ کافر دوزخ میں اور مومن جنت میں جائے گا۔ (تفسیر قرطبی)

| |
|---|
| قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ |
| تو کہہ بھلا دیکھو تو اگر یہ آیا ہو |
| عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ |
| اللہ کے یہاں سے اور تم نے اس کو نہیں مانا |

| |
|---|
| وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّن بَنِي |
| اور گواہی دے چکا ایک گواہ بنی |
| إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ |
| اسرائیل کا ایک ایسی کتاب کی پھر وہ یقین لایا |
| وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي |
| اور تم نے غرور کیا بیشک اللہ راہ نہیں دیتا |
| الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ |
| گنہگاروں کو ☆ |

**علمائے یہود کی گواہی** ☆ اس زمانہ میں عرب کے جاہل مشرک بنی اسرائیل کے علم و فضل سے مرعوب تھے جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی نبوت کا چرچا ہوا تو مشرکین نے اس بارے میں علمائے بنی اسرائیل کا مشورہ لینا چاہا غرض یہ تھی کہ وہ لوگ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی تکذیب کر دیں تو کہنے کو ایک بات ہاتھ آ جائے کہ دیکھو اہل علم اور اہل کتاب بھی ان کی باتوں کو جھوٹ کہتے ہیں مگر اس مقصد میں مشرکین ہمیشہ ناکام رہے اللہ تعالیٰ نے انہی بنی اسرائیل کی زبانوں سے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی تصدیق و تائید کرائی۔ نہ صرف اتنی بات سے کہ وہ لوگ بھی قرآن کی طرح تورات کو آسمانی کتاب اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی طرح حضرت موسیٰ کو پیغمبر کہتے تھے اور اس طرح حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا دعوائے رسالت اور قرآن کی وحی کوئی انوکھی چیز نہیں رہتی بلکہ اس طرح کہ بعض علمائے یہود نے صریحاً اقرار کیا اور گواہی دی کہ بے شک ہمارے ہاں اس ملک (عرب) سے ایک عظیم الشان رسول اور کتاب کے آنے کی خبر دی گئی ہے اور یہ رسول وہی معلوم ہوتا ہے اور یہ کتاب اسی طرح کی ہے جس کی خبر دی گئی تھی۔ علمائے یہود کی شہادتیں فی الحقیقت ان پیشین گوئیوں پر مبنی تھیں جو باوجود ہزارہا تحریف و تبدیل کے آج بھی تورات وغیرہ میں موجود چلی آتی ہیں جن سے پتہ چلتا ہے کہ بنی اسرائیل کا سب سے بڑا گواہ (حضرت موسیٰ علیہ السلام) ہزاروں برس پہلے خود گواہی دے گیا ہے کہ بنی اسرائیل کے بھائیوں (بنی اسمٰعیل) میں سے انہی کی شکل کا ایک رسول آنے والا ہے إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا (المزمل رکوع ۱)۔ یہی سبب تھا کہ بعض منصف و حق پرست احبار یہود مثلاً عبداللہ بن سلام وغیرہ

حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا چہرہ دیکھتے ہی اسلام لے آئے اور بول اٹھے کہ یہ منہ اور چہرہ کسی جھوٹے کا نہیں [illegible] انہوں نے قرآن مجید [illegible] آپ کے حق ہونے کی گواہی دی پھر جب [illegible] علیہ السلام [illegible] ایمان [illegible] کے صرف [illegible] باقی [illegible] مشرف با اسلام ہو جاتے اور ان سب شہادتوں کے باوجود تم اپنی ضد [illegible] سے اس کا انکار کرتے [illegible] ظلم اور گناہ [illegible] ظالم اور [illegible] کو ہدایت و فلاح کی کیا توقع ہو سکتی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**شان نزول:** [illegible] روایت کیا ہے کہ ایک دن نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم مسجد سے [illegible] جانے لگے اور میں آپ کے ساتھ تھا۔ یہاں تک کہ یہودیوں کے کنیسہ میں داخل ہو گئے [illegible] اور ان [illegible] اور ان سے کہا [illegible] آپ نے فرمایا اے گروہ یہود مجھے بارہ آدمی ایسے دکھاؤ جو گواہی دیتے ہوں کہ لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ تو آسمان کے نیچے جو بھی یہودی ہے اس سے اللہ تعالیٰ اپنا غضب دور فرما دے گا۔ سب خاموش ہو گئے کسی نے کوئی جواب نہ دیا اس کے بعد آپ نے پھر فرمایا تو بھی کسی نے جواب نہ دیا آپ نے تیسری مرتبہ فرمایا تب بھی کسی نے کوئی جواب نہ دیا اس کے بعد آپ نے فرمایا میں [illegible] میں ہوں [illegible] اور میں ہی مقفی ہوں اور اب خواہ تم ایمان لاؤ یا نہ لاؤ۔ یہ فرما کر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کنیسہ سے چلنے لگے میں بھی آپ کے ساتھ تھا ہم نکلنے ہی والے تھے کہ ایک شخص آپ کے پیچھے سے پکارتے ہوئے اے محمد صلی اللہ علیہ وسلم ذرا ٹھہرئیے آپ نے اس شخص [illegible] تو اس نے کہا اے گروہ یہود تم لوگ مجھے کیا سمجھتے ہو سب نے جواب دیا خدا کی قسم ہم میں سے کوئی شخص تم سے زیادہ کتاب اللہ کا عالم نہیں نہ تم سے زیادہ کوئی فقیہ ہے نہ تمہارے باپ سے اور نہ تمہارے دادا سے۔

جب یہودی یہ سب کچھ کہہ چکے تو اس شخص نے کہا تو پھر میں گواہی دیتا ہوں کہ خدا کے سوا کوئی معبود نہیں اور محمد اللہ کے سچے رسول ہیں جن کا ذکر تم [illegible] ہو یہ سنتے ہی یہودی [illegible] اور کہنے لگے کہ تو جھوٹا ہے [illegible] سب سے برے [illegible] بیان کرتے ہیں کہ یہ عبداللہ بن سلام تھے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یہاں سے باہر چلے گئے [illegible] قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ [illegible]

[illegible] بیان [illegible] فرمایا اس سے یہ معلوم ہوا کہ [illegible]

[illegible] کیا [illegible] ہے۔

وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ [illegible] شاہد سے [illegible] مراد [illegible] حضرت [illegible] یوسف [illegible] بن حضرت یعقوب بن حضرت اسحاق بن حضرت ابراہیم کی نسل میں سے تھے۔

## حضرت عبداللہ بن سلام اور ان کے گھر والوں کے اسلام لانے کے تفصیلی واقعات

[illegible] حضرت [illegible] روایت سے اور محمد بن اسحاق نے عبداللہ بن سلام کی [illegible] روایت سے بیہقی نے حضرت موسیٰ بن عقبہ [illegible] کی روایت سے [illegible] حضرت عبداللہ بن سلام کے حوالے سے [illegible] حضرت عبداللہ نے فرمایا جب میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا تذکرہ سنا [illegible] ہم لوگ انتظار [illegible] آنے والے نبی کی [illegible] میں [illegible] بات [illegible] جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تشریف لائے [illegible] تو ایک شخص نے آپ کی تشریف آوری کی خبر دی۔ میں اس وقت کھجور کے درخت پر چڑھا ہوا تھا اور میری پھوپھی [illegible] نیچے بیٹھی ہوئی تھیں۔ [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی آمد کی خبر سنی [illegible] کہا [illegible] پھوپھی نے [illegible] حضرت موسیٰ بن عمران کی آمد کی خبر [illegible] اظہار مسرت [illegible] پھوپھی [illegible] کے بھائی [illegible] ان کے دین پر [illegible] ویسے ہی [illegible] بات ہے۔ پھر میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف [illegible] چہرۂ مبارک [illegible] کہ یہ چہرہ جھوٹے کا نہیں ہو سکتا۔

## سب سے پہلی بات جو عبداللہ بن سلام نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے سنی

حضرت عبداللہ نے جو بات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سب سے پہلے سنی وہ یہ تھی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا لوگو! [illegible] سلام [illegible] کھانا کھلاؤ [illegible] اور رات کو جب لوگ سوتے ہوں تو تم نماز پڑھا کرو [illegible] جنت میں داخل ہو جاؤ گے۔

## تین باتیں جن کا علم نبی کے علاوہ کسی کو نہیں ہو سکتا

حضرت عبداللہ نے عرض کیا۔ میں آپ سے تین باتیں دریافت کرتا ہوں جن کا علم نبی کے علاوہ کسی کو نہیں ہو سکتا۔ قیامت کی سب سے پہلی نشانی کیا ہوگی؟ اہل جنت کو سب سے پہلے کون سا کھانا دیا جائے گا؟ اولاد باپ یا ماں کی طرف کیوں کھنچتی ہے (یعنی باپ یا ماں کے ہم شکل کیوں ہوتی ہے) اور (چوتھی بات ایک یہ ہے کہ) چاند میں سیاہی کیسی ہے؟

حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ مجھے ابھی جبرئیل نے بتایا ہے۔ حضرت عبداللہ نے کہا جبرائیل نے بتایا ہے؟ فرمایا ہاں۔ عبداللہ نے کہا وہ تو یہودیوں کا دشمن فرشتہ ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت کی اول ترین نشانی ایک آگ ہوگی جو مشرق سے برآمد ہوگی اور لوگوں کو مغرب کی طرف لے جائے گی۔ اور اہل جنت سب سے پہلے جو کھانا کھائیں گے وہ مچھلی کے جگر کی زائد بوٹی ہوگی۔ اور مرد کا پانی غالب آتا ہے تو بچے کو اپنی شکل کی طرف کھینچ لیتا ہے اور عورت کا پانی غالب آتا ہے تو بچے کو اپنی جانب کھینچ لیتی ہے۔ اور وہ سیاہی جو چاند میں ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ یہ دونوں سورج (یعنی چمکدار) تھے اللہ نے فرمایا ہے۔ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ۔ پس یہ سیاہی وہی محو ہے (یعنی اللہ نے رات کی چمک مٹا دی ہے) حضرت عبداللہ یہ سن کر فوراً بول اٹھے اشهد ان لا اله الا الله وانك محمد رسول الله پھر آپ نے گھر جا کر سب کو مسلمان ہو جانے کا مشورہ دیا۔ سب گھر والے بھی مسلمان ہو گئے۔ لیکن اس وقت آپ نے اپنا اسلام چھپائے رکھا۔

پھر کچھ وقت کے بعد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا یا رسول اللہ یہودی جانتے ہیں کہ میں ان کا سردار ہوں اور ان کے سردار کا بیٹا ہوں اور ان کا سب سے بڑا عالم ہوں اور سب سے بڑے عالم کا بیٹا ہوں مگر یہ لوگ بڑے جھوٹے ہیں آپ پہلے ان سے میرے متعلق دریافت کریں اگر آپ کی دریافت کرنے سے پہلے ان کو میرے مسلمان ہو جانے کا علم ہو جائے گا تو یہ مجھ پر دروغ بافی کریں گے اور میرے اندر وہ عیب نکالیں گے جو مجھ میں نہیں ہیں اس لئے میں چاہتا ہوں کہ مجھے آپ اپنے گھر کے اندر کسی کوٹھری میں چھپ جانے کی اجازت دیجئے پھر ان کو بلا کر میرے متعلق دریافت کیجئے۔

حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے عبداللہ کو اپنے گھر کے اندر ایک کوٹھری میں چھپ جانے کی اجازت دے دی پھر یہودیوں کو طلب فرمایا یہودی آ گئے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان سے فرمایا "اے گروہ یہود اللہ سے ڈرو قسم ہے اس خدا کی جس کے سوا کوئی معبود نہیں تم لوگ بلاشبہ جانتے ہو کہ میں اللہ کا رسول ہوں حق دین اور شریعت لے کر آیا ہوں تم مسلمان ہو جاؤ (الی آخرہ)" یہودیوں نے کہا ہم تو آپ کے دین کو حق نہیں جانتے۔ حضور نے فرمایا عبداللہ تمہارے اندر کیسا آدمی ہے؟ یہودیوں نے کہا وہ ہم سے بہتر ہے اور سب سے افضل آدمی کا بیٹا ہے۔ ہمارا سردار ہے اور ہمارا سردار زادہ ہے ہم میں سب سے بڑا عالم ہے اور سب سے بڑے عالم کا بیٹا ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اچھا اگر وہ اسلام لے آیا (تو تم مسلمان ہو جاؤ گے) کہنے لگے اللہ اس کو بچائے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے (آواز دے کر) حضرت عبداللہ سے فرمایا۔ باہر آ جاؤ۔ فوراً عبداللہ باہر آ گئے اور بولے میں شہادت دیتا ہوں کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اور میں گواہی دیتا ہوں کہ محمد اللہ کے رسول ہیں اے گروہ یہود اللہ سے ڈرو جو دین تمہارے پاس آ گیا ہے اس کو قبول کر لو اللہ کی قسم تم بلاشبہ جانتے ہو کہ یہ اللہ کے سچے رسول ہیں تمہارے پاس توریت ہے اس میں تم ان کا نام اور ان کے اوصاف لکھے ہوئے پاتے ہو اس لئے میں شہادت دیتا ہوں کہ یہ اللہ کے رسول ہیں میں ان پر ایمان رکھتا ہوں ان کی تصدیق کرتا ہوں اور ان کو پہچانتا ہوں یہودی بولے تو جھوٹا ہے تو ہم میں سب سے زیادہ برا اور سب سے برے باپ کا بیٹا ہے غرض یہودیوں نے حضرت عبداللہ کے تمام نقص بیان کئے (حتی تہمت تراشی کی) حضرت عبداللہ نے عرض کیا یا رسول اللہ کیا میں آپ کو پہلے ہی سے نہیں بتا چکا تھا کہ یہ لوگ بڑے بہتان تراش دروغ گو اور بدکار ہیں۔

اس کے بعد حضرت عبداللہ نے اپنے اور اپنے گھر والوں کے مسلمان ہونے کا اعلان کر دیا۔ آپ کی پھوپھی بنت حارث بھی مسلمان ہو گئیں اور اچھی مسلمان ثابت ہوئیں۔

### حضرت عبداللہ بن سلام کی فضیلت:

شیخین نے لکھا ہے کہ حضرت سعد بن ابی وقاص نے فرمایا میں نے نہیں سنا کہ سوا عبداللہ بن سلام کے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے روئے زمین پر چلنے والے کسی (زندہ) شخص کے متعلق فرمایا ہو کہ وہ اہل جنت میں سے ہے۔ عبداللہ ہی کے متعلق آیت وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ نازل ہوئی (تفسیر مظہری)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

اور کہنے لگے منکر ایمان والوں کو

لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ

اگر یہ دین بہتر ہوتا تو یہ نہ دوڑتے اس پر ہم سے پہلے ☆

کافروں کی خود رائی ☆ جب کمزور لوگ اور لونڈی غلام مسلمان

[illegible] اگر یہ [illegible] تو [illegible] اس کی طرف پہلے [illegible] آ گئے [illegible] ہم پیچھے [illegible] [illegible] سے پیچھے رہ جاتے۔ (قرطبی)

بلال رضی اللہ عنہ [illegible] کی بابت کافروں نے کہا۔

[illegible] آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]۔

**شان نزول:** (۱) [illegible] سے نقل کیا ہے [illegible] ہم [illegible] سے [illegible] [illegible] ہوتا تو [illegible] سے [illegible] نہ کھاتے۔ [illegible]

(۲) ابن المنذر [illegible] روایت [illegible] بیان کیا ہے کہ حضرت عمر [illegible] جب [illegible] تھا آپ سے پہلے [illegible] ہو گئی۔ حضرت عمر [illegible] مسلمان [illegible] سوال [illegible] اسلام [illegible] حق [illegible] ہوتا تو [illegible] سے [illegible] کے متعلق اس آیت کا نزول ہوا [illegible] روایت سے بھی اسی طرح نقل کیا ہے۔ (قرطبی)

**آیت کا مطلب:** [illegible] لکھا ہے اگر یہ آیت [illegible] نزول [illegible] اسلام سے متعلق مانا جائے تو آیت کا مطلب یہ ہوگا کہ [illegible] یہود نے [illegible] کہ اگر [illegible] بہتر ہوتا تو [illegible] اسلام [illegible] سے پیچھے رہ گئے تھے۔

| |
|---|
| وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ |
| اور جب وہ نہیں آئے اس کے ذریعے راہ پر تو اب کہیں گے |
| هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾ |
| یہ جھوٹ ہے بہت پرانا ☆ |

[illegible] پہلے [illegible] تھیں۔ [illegible] (قرطبی)

**هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ** [illegible] جھوٹ ہے۔ [illegible] [illegible] محمد صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم کہتے ہیں۔ (قرطبی)

| |
|---|
| وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا |
| اور اس سے پہلے کتاب موسیٰ کی تھی راہ ڈالنے والی |

| |
|---|
| وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ |
| اور رحمت اور یہ کتاب ہے اس کی تصدیق کرتی ☆ |
| لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ |
| عربی زبان میں کہ ڈر سنائے |
| ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾ |
| گنہگاروں کو اور خوشخبری نیکی والوں کو ☆ |

**قدیم سچائی** [illegible] بات [illegible] قرآن [illegible] [illegible] اصولی تعلیم [illegible] [illegible] تعلیمات [illegible] روایت کی [illegible] [illegible] قرآن [illegible] تصدیق [illegible] (قرطبی)

**وَمِن قَبْلِهِ** اور قرآن سے پہلے کتاب موسیٰ یعنی توریت [illegible] اور رحمۃ [illegible] اللہ کی طرف سے [illegible] [illegible] کتاب ہے۔ مصدق۔ یعنی موسیٰ کی کتاب کی [illegible] [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم کی [illegible] روایت [illegible] ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ |
| مقرر جنہوں نے کہا رب ہمارا اللہ ہے پھر |
| اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا |
| اسی پر قائم رہے تو نہ ڈر ہے ان پر اور نہ |
| هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾ |
| وہ غمگین ہوں گے ☆ |

[illegible] اسی طرح کی آیت "ثم استقاموا" [illegible] گزر چکی ہے۔ [illegible] (تفسیر مظہری)

اس آیت میں بڑی جامعیت کے ساتھ پورے اسلام کو ایمان اور عمل صالح [illegible] ربنا اللہ کا اقرار [illegible] ایمان ہے [illegible] استقامت میں ایمان [illegible] قائم رہنا بھی شامل ہے [illegible] کے مقتضیات [illegible]

عمل بھی لفظ استقامت اور اس کی اہمیت کی تشریح و تفصیل سورۂ حٰم سجدہ میں بیان ہو چکی ہے۔

**ایمان و استقامت پر بشارت:** آیت مذکورہ میں ایمان و استقامت پر یہ وعدہ کیا گیا ہے کہ ایسے لوگوں کو نہ آئندہ کسی تکلیف و پریشانی کا خوف ہوگا نہ ماضی کی تکلیف پر رنج و افسوس ہوگا۔ بعد کی آیت میں اس سے عظیم بشارت کی گئی اور غیر منقطع ہونے کی بشارت دی گئی ہے۔ اس کے بعد کی آیت میں انسان کو اپنے والدین کے ساتھ حسن سلوک کی ہدایت اور ان کے خلاف کرنے کی مذمت اور ضمن میں انسان پر ماں کے اور باپ کے احسانات کا اور اولاد کے لئے محنت و مشقت برداشت کرنے کا ذکر کر کے پھر بڑی عمر کو پہنچنے کے ساتھ انسان کو حق تعالیٰ کی طرف رجوع و توبہ کی خاص تعلیم فرمائی گئی ہے۔ (معارف القرآن مفتی اعظم)

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ

وہ لوگ ہیں جنت والے سدا رہیں گے

فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

اُس میں بدلہ ہے اُن کاموں کا جو کرتے تھے ☆

**مومنوں کا انعام** ☆ یعنی اپنے نیک اعمال کے سبب حق تعالیٰ کی رحمت سے ہمیشہ جنت میں رہیں گے۔ (تفسیر حقانی)

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ

اور ہم نے حکم کر دیا انسان کو اپنے ماں باپ سے

إِحْسَانًا

بھلائی کا ☆

**والدین کے حقوق** ☆ قرآن میں کئی جگہ اللہ تعالیٰ نے اپنے حق کے ساتھ ماں باپ کا حق بیان فرمایا ہے۔ کیونکہ موجد حقیقی تو اللہ ہے لیکن عالم اسباب میں والدین اولاد کے وجود کا سبب ظاہری اور حق تعالیٰ کی شان ربوبیت کا مظہر خاص بنتے ہیں۔ یہاں بھی پہلے "ان الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا" میں اللہ تعالیٰ کے حقوق کا ذکر تھا اب والدین کا حق بتلا دیا۔ یعنی انسان کو حکم دیا گیا ہے کہ اپنے والدین کے ساتھ اچھا سلوک کرے ان کی تعظیم و محبت اور خدمت گزاری کو اپنی سعادت سمجھے دوسری جگہ بتلایا ہے کہ اگر والدین مشرک ہوں تب بھی ان کے ساتھ دنیا میں معاملہ اچھا رکھنا چاہئے۔ خصوصاً ماں کی خدمت گذاری کہ بعض وجوہ سے اس کا حق باپ سے بھی فائق ہے جیسا کہ احادیث صحاح اس پر دال ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**ماں کا حق باپ سے زیادہ ہے:** شروع آیت میں حسن سلوک کا حکم ماں اور باپ دونوں کے لئے ہے مگر اس جگہ صرف ماں کے محنت و مشقت کا ذکر کرنے میں حکمت یہ ہے کہ ماں کی محنت و مشقت لازمی اور ضروری ہے۔ حمل کے زمانے کی تکلیفیں پھر وضع حمل اور درد زہ کی تکلیف ہر حال میں بچے کے لئے لازمی ہے جو صرف ماں ہی کو اٹھانا ہے باپ کے لئے پرورش کی محنت اٹھانا لازمی نہیں ہو سکتا ہے کہ کسی باپ کو اولاد کی تربیت میں کوئی بھی محنت مشقت اٹھانی پڑے جیسے والد صاحب مرحوم و منعم ہو اور ان سے اولاد کی خدمت لے یا وہ کسی دوسرے ملک میں چلا گیا اور خرچ بھیجتا رہا یہی وجہ ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اولاد پر ماں کے حق کو باپ سے زیادہ رکھا ہے۔ ایک حدیث میں ارشاد ہے بِرَّ أُمَّكَ ثُمَّ أُمَّكَ ثُمَّ أُمَّكَ ثُمَّ أَبَاكَ ثُمَّ أَدْنَاكَ فَأَدْنَاكَ (مظہری) یعنی حسن سلوک اور خدمت کرو اپنی ماں کی پھر اپنی ماں کی پھر اپنی ماں کی اس کے بعد اپنے باپ کی اور اس کے بعد قریب تر رشتہ داروں کی پھر جو اس کے بعد ہو۔ (معارف مفتی اعظم)

حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا

پیٹ میں رکھا اُس کو اُس کی ماں نے تکلیف سے اور جنا اُس کو تکلیف سے ☆

**ماں کی مشقت** ☆ یعنی حمل جب کچھ بڑا ہو جاتا ہے اس کا بوجھ محسوس ہونے لگتا ہے اس حالت میں اور ولادت کے وقت ماں کیسی کیسی سختیاں برداشت کرتی ہے۔ پھر دودھ پلاتی ہے اور برسوں تک اس کی ہر طرح نگہداشت رکھتی ہے اپنی آسائش و راحت کو اس کی آسائش و راحت پر قربان کر دیتی ہے۔ باپ بھی بڑی حد تک ان تکلیفوں میں شریک رہتا ہے اور سامان تربیت فراہم کرتا ہے۔ بے شک یہ سب کام فطرت کے تقاضے سے ہوتے ہیں مگر اسی فطرت کا تقاضا یہ ہے کہ اولاد ماں باپ کی شفقت و محبت کا احسان اور ان کی محنت و مشقت کی قدر کرے۔ (تنبیہ) حدیث میں ماں کی خدمت گذاری کا تین مرتبہ حکم فرما کر باپ کی خدمت گزاری کا ایک مرتبہ حکم فرمایا ہے۔ لطف یہ ہے کہ آیت ہذا میں والد کا ذکر صرف ایک مرتبہ لفظ "والدیہ" میں ہوا اور والدہ کا تین مرتبہ ذکر ہوا یعنی "والدیہ" میں پھر "حملتہ امہ" میں پھر "وضعتہ" میں۔ (تفسیر عثمانی)

**ماں سے حسن سلوک کی وجہ:** کرھا۔ یہ اچھا سلوک کرنے کی وجہ بتائی ہے۔ کرہ کا معنی ہے مشقت یعنی مشقت والا ہو کر اور کرہ دونوں ہم معنی ہیں اور لغت میں دونوں لفظ آتے ہیں بعض نے کہا ضم کے ساتھ اسم مصدر ہے اور فتح کے ساتھ مصدر ہے۔

آیت میں اشارہ ہے باپ کی بہ نسبت ماں حسن سلوک کی زیادہ مستحق ہے۔ (تفسیر مظہری)

**وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا**

اور حمل میں رہنا اس کا اور دودھ چھوڑنا تیس مہینے میں ہے ☆☆

**دودھ پلانے کی مدت:** ☆ شاید یہ اشارہ مدت کی طرف ہے فرمایا حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ "لڑکا اگر قوی ہو تو اکیس مہینہ میں دودھ چھوڑ سکتا ہے اور نو مہینے پیٹ میں حمل کے "پائیں" ہو کر اگر کم مدت حمل چھ مہینے ہے تو دو برس میں دودھ چھڑایا جاتا ہے اس طرح کل مدت تیس مہینے ہوئے مدت رضاعت بالاتفاق ہے۔ تمام مدت قلیل ... (تفسیر عثمانی)

الفصال: بمعنی تمام دودھ چھڑانا اور دودھ پلانا ختم کرنا ہی کی تمام سے موسوم کیا گیا۔ اس آیت سے استدلال کیا گیا ہے کہ کم سے کم حمل کی مدت چھ ماہ ہے کیونکہ دوسری آیت میں آیا ہے وَفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اس کا دودھ چھڑانا دو سال میں ہے اور اس جگہ حمل و فصال کی مجموعی مدت ۳۰ ماہ بیان کی گئی جب دو سال فصال کے نکال دیئے گئے تو حمل کی مدت چھ ماہ رہ گئی۔

عکرمہ نے حضرت ابن عباسؓ کا قول نقل کیا ہے کہ جب مدت حمل پورے نو مہینے ہو جائے تو عورت بچے کو دودھ ۲۱ مہینے پلائے گی (یعنی مدت رضاعت ۲۱ ماہ ہوگی) اور اگر چھ ماہ میں بچہ پیدا ہو جائے تو ۲۴ مہینے دودھ پلائے گی (مدت رضاعت دو سال ہوگی)۔

**ایک عورت کا واقعہ:**

قتادہ نے بروایت ابو حرب بن ابی الاسود دؤلی بیان کیا کہ حضرت عمرؓ کی خدمت میں ایک عورت کو پیش کیا گیا جس کے چھ ماہ میں بچہ ہوا تھا۔ حضرت عمرؓ نے صحابہ کرام سے اس کے متعلق دریافت کیا۔ حضرت علیؓ نے فرمایا اس پر رجم نہ ہوگا دیکھئے اللہ نے فرمایا ہے وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا اور دوسری آیت میں آیا ہے وَفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ (حمل اور فصال کی مجموعی مدت تیس ماہ ہے) اور صرف دودھ چھڑانے کی مدت دو سال (دو سال کم کرنے کے بعد) حمل کی مدت چھ ماہ باقی رہتی حضرت عمرؓ نے یہ سنتے ہی عورت کو چھوڑ دیا۔ پھر اس کے بعد ہمیں اطلاع ملی کہ چھ ماہ کے بعد اس عورت کے ایک بچہ پیدا ہوا۔ نافع بن جبیر نے کہا حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا میں اس عورت کے ساتھ تھا جس کے شوہر کا بچہ پیدا ہوا تھا اور حضرت عمرؓ کی خدمت میں پیش کیا گیا تھا لوگوں پر اس کا شوہر ... کو شک ہوا (یعنی انہوں نے عورت کو زنا کا مجرم سمجھا) میں نے حضرت عمرؓ سے کہا آپ ظلم کیسے کر رہے ہیں۔ فرمایا اللہ نے کہا ہے وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ۔ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ۔ فرمایئے سال کے کتنے مہینے ہوتے ہیں فرمایا بارہ۔ میں نے کہا چوبیس مہینے کے دو سال پورے ہو گئے (اب چھ ماہ باقی رہے) کہ ان ماہ میں حمل رہتا

چالیس برس قریب عمر کو پہنچتا ہے ... کہ حضرت عمرؓ ...

**حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ**

یہاں تک کہ جب پہنچا اپنی قوت کو اور پہنچ گیا

**اَرْبَعِيْنَ سَنَةً**

چالیس برس کو ☆

**عقلی اور اخلاقی تکمیل کی مدت:** ☆ چالیس برس کی عمر میں عموماً انسان کی عقلی اور اخلاقی قوتیں پختہ ہو جاتی ہیں اسی لئے انبیاء علیہم السلام کی بعثت چالیس برس سے پہلے نہیں ہوئی تھی۔ (تفسیر عثمانی)

**چالیس سال کی زندگی:** وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۔ عمر انسانی کی جوانی اور قوت کی تکمیل کا بیان ہے ... فرمایا ... چالیس سال کی عمر ... عقل پختہ ہو جاتی ہے اور اس حالت پر پہنچ جاتی ہے اس کے بعد اس میں تبدیلی نہیں ہوتی ... حضرات انبیاء کو نبوت و رسالت چالیس برس کی عمر میں عطا فرمایا گیا۔

حافظ ابو یعلیٰ نے حضرت عثمان غنیؓ کی روایت بیان کی ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے مسلمان بندہ جب چالیس برس کی عمر کو پہنچ جاتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کا حساب ہلکا کر دیتا ہے اور جب ساٹھ برس کا ہو جاتا ہے تو اللہ اپنی طرف رجوع کی توفیق عطا کرتا ہے اور جب ستر برس کا ہو جاتا ہے تو آسمان والے اس سے محبت کرنے لگتے ہیں اور جب اسی برس کا ہو جاتا ہے تو اس کی نیکیاں لکھی جاتی ہیں اور برائیاں مٹا دی جاتی ہیں اور جب نوے برس کا ہو جاتا ہے تو اس کے اگلے پچھلے گناہ معاف کر دیئے جاتے ہیں اور اس کے گھر والوں کے حق میں اس کی شفاعت قبول کی جاتی ہے آسمان والے اس کو کہتے ہیں اسیر اللہ فی الارض۔ (مسند ابو یعلیٰ)

**حضرت ابو بکرؓ کی زندگی:** یہ سب حالات حضرت ابو بکر صدیقؓ کے ہیں ... بیان ... اس حکمت سے کیا گیا ہے کہ دوسرے مسلمانوں کو بھی اس کی ترغیب ہو ... قرطبی نے بروایت عطاء حضرت ابن عباسؓ سے نقل کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جب پچیس سال کی عمر میں حضرت خدیجہؓ کے مال سے تجارت کا قصد فرمایا اور ملک شام کا سفر کیا تو اس سفر میں ابو بکر صدیقؓ آپ کے ساتھ تھے اس وقت ان کی عمر اٹھارہ سال کی تھی جو صدیق ہے ... پھر اس سفر میں انہوں نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے

[illegible]

قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِيٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيٓ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِيٓ ۚ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

جس سے تو راضی ہو اور مجھ کو دے نیک اولاد میری [illegible]

[illegible]

حضرت ابوبکرؓ کی خصوصیت [illegible]

[illegible]

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيٓ أَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ۚ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

یہ وہ لوگ ہیں جن سے ہم قبول کرتے ہیں [illegible]

[illegible]

حضرت عثمانؓ کی فضیلت [illegible]

[illegible]

[illegible]

**أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ**

[illegible]

**خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي**

[illegible]

**وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا**

[illegible]

**قرآن کی گستاخ کلامی** [illegible]

**وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ**

[illegible]

**آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ**

[illegible]

**آیت کا مصداق** [illegible]

**والدین کی کا** [illegible]

فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ

پھر کہتا ہے یہ سب نقلیں ہیں

الْاَوَّلِيْنَ

پہلوں کی ﴿۱۷﴾

یہ بھی اس کی کہانیاں ہیں جن کو بیان کرنے والوں کے قصے اسی طرح مشہور ہو جاتے ہیں ... حقیقت کچھ نہیں ہوتی۔ (تفسیر حقانی)

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ

یہ وہ لوگ ہیں کہ جن پر ثابت ہوئی بات عذاب کی شامل

فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ

اور فرقوں میں جو گزر چکے ہیں ان سے

مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ

پہلے جنوں کے اور آدمیوں کے ﴿۱۸﴾

بدبختوں کا انجام یعنی خدا کی یہ بات ہے کہ "لاملئن جهنم من الجنة والناس اجمعين" (میں جہنم کو بھر دوں گا) یعنی جس طرح بہت سی جماعتیں جنوں اور آدمیوں کی ان سے پہلے جہنم کی مستحق ہو چکی ہیں یہ بدبخت بھی ان کی طرح بن رہے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

حق۔ واجب ہو گیا، ثابت ہو گیا۔

فی امم۔ گزشتہ فرقوں کے بارے میں۔

جن بھی بولتے ہیں۔ یہ اسی کا بیان ہے۔ اس آیت میں ان لوگوں کا جن کو قرآن نے ... سے دوری کا اظہار فرمایا، ظاہر ہے کہ حضرت عبدالرحمن تو اہل اسلام میں شمار کئے گئے آپ کے متعلق آیت کا نزول نہیں ہو سکتا۔ (تفسیر مظہری)

اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ

بیشک وہ تھے ٹوٹے میں پڑے ہوئے

بدبختوں کا نقصان: ... نے اپنی ... سے ... ہوئی ... ان بدبختوں نے ضائع کر دیا ... انجام کار ... حاصل

کرنے سے کہ اس کا مال بھی یا پھر غفلت ... سے فلاح کر بیٹھے۔ (تفسیر حقانی)

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا

اور ہر فرقے کے کئی درجے ہیں اپنے کئے ہوئے کاموں کے موافق ☆

اہل جنت و اہل دوزخ کے درجات ☆ یعنی دونوں کے کاموں کے تفاوت سے جیسے اہل جنت کے کئی درجے ہیں اسی طرح اہل دوزخ کے بھی۔ (تفسیر عثمانی)

### مسلمان ہونے میں تقدیم و تاخیر کا اعتبار

بغوی نے لکھا ہے کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا مراد یہ ہے کہ جو پہلے اسلام لایا وہ بعد کو مسلمان ہونے والے سے افضل ہے۔ ... ایک ... حاصل ہے۔

ابن زید نے اس آیت کی تشریح میں کہا دوزخیوں کے لئے درجات (زینے۔ سیڑھیاں) نیچے کی طرف ہوتے ہیں گے اور اہل جنت کے درجات اوپر کو جائیں گے۔ (تفسیر مظہری)

وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ

اور تاکہ پورا دے ان کو کام ان کے اور ان پر

لَا يُظْلَمُوْنَ

ظلم نہ ہوگا ﴿۱۹﴾

یعنی کسی نیکی کا ثواب کم کیا جائے گا نہ کسی بدی کی سزا مناسب سے زائد دی جائے گی۔ (تفسیر عثمانی)

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى

اور جس دن لائے جائیں گے منکر آگ کے کنارہ پر

النَّارِ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ

ضائع کر چکے تم اپنے مزے دنیا کی زندگانی میں

الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا

اور ان کو برت چکے ☆

کافر کی نیکیوں کا اجر: کافر نے کوئی نیک کام کیا ... ایمان کی روح نہیں ہوتی، محض صورت ہوتا ہے ... اس کی فانی تنخواہ کا اجر بھی ...

[illegible]

فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ

[illegible]

بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ

[illegible]

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ

[illegible]

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اور صحابہ کرام کا [illegible]

[illegible]

[illegible]

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

بخاری کا بیان ہے کہ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف [illegible]

[illegible]

حضرت عمرؓ کی حالت [illegible]

[illegible]

بیان کیا گیا ہے کہ حضرت عمرؓ جب شام میں تشریف لے گئے تو آپ سے [illegible]

[illegible]

اس کا پانی بہت کے طرح کی ہوتی (سبزی) ہوں، ایک شخص نے کہا میں چاہتا ہوں کہ آپ لذیذ کھانے سے واقف ہیں، حضرت عمرؓ نے فرمایا، مجھے تیری ماں روئے قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے اگر قیامت کے دن مجھے اپنی نیکیاں کم ہو جانے کا اندیشہ نہ ہوتا تو میں تم لوگوں کو لذیذ کھانے میں شریک کر لیا کرتا لیکن خود بھی لذیذ کھانا کھاتا اور تم کو بھی کھلاتا۔

حسن کی روایت ہے کہ اہل بصرہ کا ایک وفد حضرت ابوموسیٰؓ کے ساتھ حضرت عمرؓ کی خدمت میں حاضر ہوا۔ حضرت عمرؓ کی روزانہ کی غذا ... روٹی تھی۔ کبھی ہم روٹی کے ساتھ ... کبھی خشک گوشت کا قیمہ ہوتا کبھی تازہ گوشت کا سالن ہوتا لیکن ایسا کم ہوتا تھا۔ حضرت عمرؓ نے ہم سے فرمایا خدا کی قسم میں دیکھ رہا ہوں کہ تم کو یہ (کھانا) پسند ہے اور تم اس سے نفرت کرتے ہو لیکن بخدا اگر میں چاہتا تو تم سب سے زیادہ لذیذ کھانا کھاتا اور سب سے عمدہ زندگی گزارتا خدا کی قسم میں ... آیتوں سے ناواقف نہیں ہوں لیکن اللہ نے ... لوگوں کو عار دلائی ہے ... فرمایا ہے۔ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ... (تفسیر مظہری)

## وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ

اور یاد کر عاد کے بھائی کو جب

جب کبھی سرور عالم صلی اللہ علیہ وسلم "عاد" کے ... ہے ... !

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا سابقہ اقوام سے عبرت حاصل کرنے کا سبق دینا

مسند احمد میں حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے مروی ہے کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو کبھی کھلکھلا کر اس طرح ہنستے ہوئے نہیں دیکھا کہ آپ کے مسوڑھے نظر آئیں، آپ تبسم فرمایا کرتے تھے۔ اور جب ابر اٹھتا اور آندھی چلتی تو آپ کے چہرے سے فکر کے آثار نمودار ہو جاتے۔ چنانچہ ایک روز میں نے آپ سے کہا یا رسول اللہ لوگ تو ابر دیکھ کر خوش ہوتے ہیں کہ اب بارش ہوگی لیکن آپ کی اس کے برعکس یہ حالت ہو جاتی ہے۔ آپ نے فرمایا عائشہ میں اس بات سے کہ کہیں اس میں عذاب ہو کیسے مطمئن ہو جاؤں ایک قوم ہوا سے ہلاک کی گئی، ایک قوم نے عذاب کے بادل کو دیکھ کر کہا تھا کہ یہ بادل ہے جو ہم پر بارش برسائے گا۔

**ہوا کے وقت کی دعا:** مسند احمد میں ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جب کبھی آسمان کے کنارے سے ابر اٹھتا دیکھتے تو اپنے تمام کام چھوڑ دیتے اگرچہ نماز میں ہوں اور یہ دعا پڑھتے۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ۔ خدایا میں تجھ سے اس برائی سے پناہ چاہتا ہوں جو اس میں ہے پس اگر کھل جاتا تو اللہ عزوجل کی حمد کرتے اور اگر برس جاتا تو یہ دعا پڑھتے۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ یا اللہ میں تجھ سے اس کی اور اس میں جو ہے اس کی اور جس کے ساتھ یہ بھیجی گئی ہے اس کی بھلائی طلب کرتا ہوں اور تجھ سے اس کی اور اس میں جو ہے اس کی اور جس چیز کے ساتھ یہ بھیجی گئی ہے اس کی برائی سے پناہ چاہتا ہوں۔ اور جب ابر اٹھتا تو آپ کے رنگ متغیر ہو جاتا کبھی اندر کبھی باہر کبھی آتے کبھی جاتے جب بارش ہو جاتی تو آپ کی یہ فکرمندی دور ہو جاتی۔ حضرت عائشہؓ نے اسے سمجھ لیا اور آپ سے ایک بار سوال کیا تو آپ نے جواب دیا کہ عائشہ خوف اس بات کا ہوتا ہے کہ کہیں یہ اسی طرح نہ ہو جس طرح قوم ہود نے اپنی طرف بادل بڑھتا ہوا دیکھ کر خوشی سے کہا تھا یہ بادل ہمیں سیراب کریگا۔ (تفسیر ابن کثیر)

## إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ

جب ڈرایا اپنی قوم کو احقاف میں ☆

**احقاف ☆** ... "ارض القرآن" باب "احقاف" کے تحت تحریر کرتا ہے "یہاں یمن، حضرموت اور عمان کے بیچ میں جو صحرائے اعظم "الدہنا" یا "ربع خالی" کے نام سے موسوم ہے گو وہ آبادی کے قابل نہیں لیکن اس کے اطراف میں کہیں کہیں آبادی کے لائق تھوڑی تھوڑی زمین ہے خصوصاً اس صحرا کا ... حضرموت سے نجران تک پھیلا ہوا ہے، گو آج وہ قابل آبادی نہیں ہے تاہم کسی زمانہ میں یہاں حضرموت اور نجران کے درمیانی حصہ میں "عاد ارم" کا مشہور قبیلہ آباد تھا جس کو ... (ارض القرآن)

احقاف جمع ہے حقف کی اور حقف کہتے ہیں ریت کے پہاڑ کو ... حضرموت کی وادی جس کا نام برہوت ہے جہاں کفار کی روحیں ڈالی جاتی ہیں۔ یہ مطلب بھی احقاف کا بیان کیا گیا ہے۔ قتادہؓ کا قول ہے کہ یمن میں سمندر کے کنارے ریت کے ٹیلوں میں ایک بستی تھی جس کا نام شحر تھا یہاں یہ لوگ آباد تھے۔

حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ حضرموت میں ایک وادی کا نام احقاف ہے ... ایک قوم ... ساحل سمندر ... عراق کے قریب ... ان کی بستیاں بھی ... (روح المعانی)

## وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ

اور گزر چکے تھے ڈرانے والے اس کے سامنے سے

يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا

اور پیچھے سے کہ بندگی نہ کرو کسی کی

اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ

اللہ کے سوائے میں ڈرتا ہوں تم پر

عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ

آفت سے ایک بڑے دن کے ☆

**ہود کی دعوت** ☆ یعنی ہود علیہ السلام سے پہلے اور پیچھے بہت ڈرانے والے آئے سب نے وہی کہا جو حضرت ہود علیہ السلام نے کہا تھا یعنی ایک خدا کی بندگی کرو اور کفر و معصیت کے برے انجام سے ڈرو۔ لیکن یہ قوم ہود میں بھی حضرت ہود علیہ السلام کے علاوہ اور منذر آئے ہوں۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

طبرانی کی مرفوع حدیث میں ہے کہ عادیوں پر اتنی ہی ہوا کھولی گئی تھی جتنا انگوٹھی کا حلقہ ہوتا ہے۔ یہ ہوا پہلے دیہات والوں اور بادیہ نشینوں پر آئی وہاں سے شہری لوگوں پر آئی جسے دیکھ کر یہ کہنے لگے کہ یہ ابر جو ہماری طرف بڑھا چلا آ رہا ہے یہ ضرور ہم پر بارش برسائے گا لیکن اس میں جنگلی لوگ تھے جو ان شہریوں پر گرا دیے گئے تھے اور سب ہلاک ہو گئے۔ ہوا کے خزانچیوں پر ہوا کی سرکشی اس وقت اتنی تھی کہ دروازوں کے سوراخوں سے وہ نکلی جا رہی تھی۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔ (تفسیر ابن کثیر)

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ

بولے کیا تو آیا ہے ہمارے پاس کہ پھیر دے

اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ

ہم کو ہمارے معبودوں سے سو لے آ ہم پر جو وعدہ کرتا ہے

كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ

اگر ہے تو سچا ☆

**کافروں کا مطالبہ** ☆ یعنی ہم اپنے آبائی طریقہ سے ہٹنے والے نہیں اگر تو اپنی دھمکیوں میں سچا ہے تو دیر کیا ہے۔ جو زبان سے کہتا ہے کر کے دکھلا دے۔ (تفسیر عثمانی)

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ

کہا یہ خبر تو اللہ ہی کو ہے

وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ

اور میں تو پہنچا دیتا ہوں تم کو جو کچھ دے کر بھیجا ہے میرے ہاتھ

وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ

لیکن میں دیکھتا ہوں تم لوگ نادانی کرتے ہو ☆

**مطالبہ کا جواب** ☆ یعنی اس قسم کا مطالبہ کرنا تمہاری نادانی اور جہالت ہے۔ میں خدا کا پیغمبر ہوں جو پیغام میرے ہاتھ بھیجا گیا وہ پہنچا رہا ہوں اس سے زائد کا مجھے علم نہ اختیار۔ یہ علم خدا ہی کو ہے کہ کس قوم کو کس وقت دنیا کی سزا کی مستوجب ہوتی ہے اور کس وقت تک اسے مہلت ملنی چاہیے۔ (تفسیر عثمانی)

**الْعِلْمُ** ـ یعنی وقت عذاب کا علم۔

**عِنْدَ اللّٰهِ** ـ یعنی عذاب مقررہ وقت پر آئے گا۔ اگر اس وقت تک نہیں آیا تو اس سے یہ لازم نہیں کہ میں جھوٹا ہوں یا مجھے عذاب لانے میں کوئی دخل نہیں کہ جلد لانے کا طلب گار ہوں۔

**وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ** ـ یعنی پیام توحید احکام اور تمہارے ایمان نہ لانے کی صورت میں نزول عذاب کی اطلاع دے رہا ہوں جو مجھے تمہارے پاس بھیجا گیا ہے میں وہ تم کو پہنچا رہا ہوں۔

**قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ** ـ یعنی تم نہیں جانتے کہ علیم و قدیر نے پیغمبروں کو صرف تبلیغ توحید و احکام و ڈرانے کے لیے بھیجا ہے نہ کہ پیغمبر عذاب دینے والے ہوتے ہیں نہ نزول عذاب کی (پیغمبر کے) ہاں طلب کرنے والے۔ (تفسیر مظہری)

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ

پھر جب دیکھا اس کو ابر سامنے آیا

اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ

ان کے نالوں کے بولے یہ ابر ہے

مُّمْطِرُنَا ۭ

ہم پر برسے گا ☆

**قوم عاد پر عذاب کے آنے کی کیفیت** ☆ یعنی سامنے سے

یہ بادل اللہ تعالیٰ کی طرف سے ... سمجھے کہ سب [illegible] ... تھے۔ [illegible] ... اس وقت [illegible] ... کی ضرورت تھی۔ [illegible]

قوم عاد پر کئی سال سے بارش نہیں ہوئی تھی۔ جب بادل اپنے سامنے آتے دیکھا تو بہت خوش ہوئے اور کہنے لگے یہ تو بادل آیا ہے جو ہم پر برسے گا۔ [illegible] حضرت ہود نے فرمایا یہ بادل نہیں بلکہ یہ وہ عذاب ہے جس کی تم جلدی مچاتے تھے۔ یہ ایک آندھی ہے جس کے اندر دردناک عذاب ہے۔

سب سے پہلے عذاب ہونے کی شناخت ان کو اس وقت ہوئی جب بستی کے [illegible] ... اپنے گھروں [illegible] ... [illegible] سب لوگ [illegible] ... [illegible] آٹھ دن تک [illegible] ... [illegible] سمندر میں پھینک دیا [illegible] ... حضرت ہود [illegible] ... ایک محفوظ مقام میں داخل ہو گئے۔

حافظ عماد الدین ابن کثیرؒ نے مسند احمد سے ایک روایت امام احمد بن حنبل کی مسند سے نقل کی ہے [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... کی طرف [illegible] ... [illegible] ... کی مرضی [illegible]

اے اللہ (اس کی ... ) [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible]

کہ مفہوم اشعار میں ... [illegible] ... سخر ہا علیہم سبع لیال وثمانیۃ ایام حسوما

علامہ آلوسیؒ نے ایک روایت [illegible] ... کہ سب سے پہلے اس عذاب [illegible] ... ایک [illegible] ... کی طرف [illegible] ... اٹھ رہے تھے۔

ایک روایت میں آتا ہے کہ حضرت ہود علیہ السلام نے جب محسوس کیا کہ یہ آندھی عذاب ہے [illegible] ... ایک خط کھینچ لیا [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible]

بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ

بلکہ نہیں، یہ تو وہ چیز ہے جس کی تم جلدی مچاتے تھے

فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ

ہوا ہے کہ اس میں عذاب ہے دردناک

[illegible] ... عذاب الہٰی کی آندھی ہے ... جس کے لیے جلدی مچا رہے تھے۔ [illegible]

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا

اکھاڑ پھینکے ہر چیز کو اپنے رب کے حکم سے پھر کل [illegible]

لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ

کہ کوئی نظر نہیں آتا تھا سوائے [illegible] گھروں کے یوں ہم

نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝

سزا دیتے ہیں [illegible] لوگوں کو ۲۵

عذاب [illegible] ... سلسلہ [illegible] ... خطرناک طوفان چلا جس کے سامنے [illegible] ... حقیقت [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible]

[illegible] (تفسیر [illegible])

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ

اور ہم نے مقدور دیا تھا ان کو اس میں

اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ

جو تم کو نہیں دیا [illegible]

کفار مکہ کو نصیحت [illegible]

[illegible]

وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّ

اور ہم نے دیئے تھے ان کو کان اور آنکھیں اور

اَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ

دل پھر کام نہ آئے ان کے کان

وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ

اور نہ آنکھیں اور نہ ان کے دل

شَيْءٍ

کسی چیز میں

[illegible]

اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ

اس لئے کہ منکر ہوتے تھے اللہ کی باتوں سے اور الٹ پڑی

بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ

ان پر جس بات سے کہ وہ ٹھٹھا کرتے تھے ☆☆

[illegible] (تفسیر [illegible])

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى

اور ہم غارت کر چکے ہیں جتنی تمہارے آس پاس ہیں بستیاں

قوم ثمود اور قوم لوط [illegible]

[illegible]

وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ

اور طرح طرح سے پھیر کر سنائیں ان کو باتیں

يَرْجِعُوْنَ

تاکہ وہ باز آئیں

[illegible] (تفسیر [illegible])

مشرکین کو عبرت کی دعوت: [illegible]

[illegible]

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

پھر کیوں نہ مدد پہنچی ان کو ان لوگوں کی طرف سے جن کو پکڑا تھا

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ

اللہ کے سوا [illegible]

ان بتوں کو [illegible]

اس کو قرب حاصل کرنے کا ذریعہ سمجھا تھا (تفسیر عثمانی)

قُرْبَانًا اٰلِهَةً۔ یعنی اللہ کے سوا دوسرے جن کو انہوں نے معبود بنا رکھا تھا کہ ان کے ذریعہ سے اللہ کا قرب حاصل کر لیں گے جیسا کہ انہوں نے کہا تھا مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى (تفسیر مظہری)

## بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ

کوئی نہیں گم ہو گئے ان سے ☆

اب بت کہاں گئے جو یقیناً ان کا کہیں پتہ نہیں۔ عذاب کے وقت ان کو پکارا جاتا ہے تو غائب ہو گئے جب جو ایسی مصیبت میں کسی کام نہیں آتے۔ (تفسیر عثمانی)

بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۔ یعنی غائب ہو گئے (کھو گئے) مطلب یہ کہ عذاب نازل ہونے کے وقت غائب ہو گئے جس طرح کوئی غائب سے طلب مدد کرے تو اسی طرح ان معبودوں سے مدد طلب کرنی بھی بے کار تھی۔ (تفسیر مظہری)

## وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ

اور یہ جھوٹ تھا ان کا اور جو باتیں بناتے تھے ☆

جھوٹ کے پاؤں نہیں ہوتے یہ بات بالکل ظاہر ہو گئی کہ وہ جن چیزوں پر اعتماد کر کے ان سے امیدیں قائم کرتے تھے محض جھوٹی اور من گھڑت باتیں تھیں، جھوٹ کے پاؤں نہیں ہوتے کہ وہ چلے کیسے (ربط) اوپر کی آیات میں انسانوں کے غرور سرکشی کی داستان تھی۔ آگے اس کے مقابل جنوں کے اطاعت شعار و فرمانبرداری کا حال سنا دیا ہے۔ معلوم ہو کہ جو قوم خاص طور پر جس قدر اکثر سرکشی واقع ہوئی ہے اس کے بعض افراد کس طرح اللہ کا کلام سن کر موم ہو جاتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

بعض اہل تفسیر نے لکھا ہے کہ ذٰلِکَ سے اشارہ عذاب کی طرف ہے یعنی اہل مکہ پر ان کے جھوٹ کی سزا آئی ہے۔

وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ یعنی ان کا افترا۔ (تفسیر مظہری)

## وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ

اور جس وقت متوجہ کر دیے ہم نے تیری طرف کتنے ایک لوگ جنوں میں

## يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ

سننے لگے قرآن کو جب وہاں پہنچ گئے

## قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى

بولے چپ رہو پھر جب ختم ہوا الٹے پھرے

## قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ

اپنی قوم کو ڈر سناتے ہوئے ☆

**جنات کا مسلمان ہونا** بعثت محمدی سے قبل جنوں کو کچھ آسمانی خبریں معلوم ہو جاتی تھیں۔ جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر وحی آنا شروع ہوئی تو وہ سلسلہ تقریباً بند ہو گیا اور بہت کثرت سے شہاب کی مار پڑنے لگی۔ جنوں کو خیال ہوا کہ ضرور کوئی نیا واقعہ ہوا ہے جس کی وجہ سے آسمانی خبروں پر بہت سخت پہرے بٹھائے گئے ہیں۔ اسی کی جستجو کے لیے جنوں کے مختلف گروہ مشرق و مغرب میں پھیل پڑے۔ ان میں سے ایک جماعت "بطن نخلہ" کی طرف گذری۔ وہاں اتفاق سے اس وقت حضور صلی اللہ علیہ وسلم اپنے چند اصحاب کے ساتھ نماز فجر ادا کر رہے تھے۔ اللہ تعالیٰ نے جنوں کی اس ٹکڑی کا رخ قرآن سننے کے لیے ادھر پھیر دیا۔ قرآن کی آواز انہیں بہت عجیب اور مؤثر معلوم ہوئی اور اس کی عظمت و ہیبت دلوں پر چھا گئی۔ آپس میں کہنے لگے کہ چپ رہو اور خاموشی کے ساتھ یہ کلام پاک سنو۔ آخر قرآن نے ان کے دلوں میں گھر کر لیا۔ وہ سمجھ گئے کہ یہی وہ چیز ہے جس نے جنوں کو آسمانی خبروں سے روکا ہے۔ بہرحال جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم قرآن پڑھ کر فارغ ہوئے، یہ لوگ اپنے دلوں میں ایمان و یقین لے کر واپس گئے اور اپنی قوم کو نصیحت کی۔ اس کی مفصل حکایت "سورہ جن" میں آئے گی۔ احادیث سے معلوم ہوتا ہے کہ اس مرتبہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو ان کے آنے اور سننے جانے کا پتہ نہیں لگا۔ ایک درخت نے باذن اللہ گویا اجمالی اطلاع آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو دی اور مفصل حال اس کے بعد وحی کے ذریعہ سے معلوم کرایا گیا۔ کما قال تعالیٰ قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ الخ (الجن رکوع ۱) بعدہ بہت بڑی تعداد میں جن مسلمان ہوئے اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے ملاقات کرنے اور دین سیکھنے کے لیے ان کے وفود حاضر خدمت ہوئے۔ غالباً یہ روایت میں وارد ہوئی ہے کہ چھ مرتبہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے جنوں سے ملاقات کی۔ اس لیے روایت میں جو اختلاف ان کے عدد یا مقام وغیرہ کے متعلق معلوم ہوتا ہے ان کو تعدد وقائع پر حمل کرنا چاہیے۔ (تفسیر عثمانی)

### اہل مکہ جنوں سے بھی بڑھ کر سرکش ہیں

کفار مکہ باوجودیکہ آدم کی نسل تھے جو اشرف المخلوقات اور خدا نے ان کی طرف ہی علم بھیجا اور ان کی صلاحیت بہت زیادہ تھی، پھر بھی جن کے مقابلہ میں یہ بات ہے کہ وہ قوم تو جن ہیں شدت غرور اور سرکشی اور عنادی

جنات سے متاثر ہونے کا وصف ان میں زائد ہے لیکن اس قناعت نے جب قرآن کریم کی خوبی اور خوبی اثر سے ساتھ ہی تو فوراً ان کی طرف قلوب مائل ہو گئے اور قرآن کریم کی عظمت سے اس قدر متاثر ہوئے کہ حاضر وقت، فوراً انہی کا سر جھکا دیا اور نہ صرف یہ کہ خود ہدایت قبول کی بلکہ پھر اسی طرف پلٹ کر اپنی قوم کو بھی دعوت دی تو جس قصہ سے اول کر کے جنات اور قرآن سنی کا اندازہ کیا جا سکتا ہے کہ وہ قرآن کریم اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے کس قدر متاثر و گرویدہ تھے۔ (معارف القرآن)

**جنات کے قرآن سننے کا واقعہ:** مسند احمد میں حضرت زبیرؓ سے اس آیت کی تفسیر میں مروی ہے کہ یہ واقعہ نخلہ کا ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اس وقت نماز عشاء ادا کر رہے تھے۔ یہ سب جنات سب آپ کے ارد گرد بھیڑ نما شکل میں کھڑے ہو گئے۔ ابن عباسؓ کی روایت میں ہے کہ یہ جنات نصیبین کے تھے تعداد میں سات تھے۔ کتاب دلائل النبوۃ میں جو روایت ابن عباسؓ مروی ہے کہ نہ تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے جنات کو سنانے کی غرض سے قرآن پڑھا نہ آپ نے انہیں دیکھا۔ آپ تو اپنے صحابہ کے ساتھ عکاظ کے بازار جا رہے تھے۔ ادھر یہ ہوا تھا کہ شیاطین کے اور آسمان کی خبروں کے درمیان روک ہو گئی تھی اور ان پر شعلے برسنے شروع ہو گئے تھے۔ شیاطین نے آ کر اپنی قوم کو خبر دی تو انہوں نے کہا کوئی نہ کوئی نئی بات پیدا ہوئی ہے۔ جاؤ تلاش کرو، یہ نکل کھڑے ہوئے۔ ان میں کی جو جماعت عرب کی طرف متوجہ ہوئی تھی وہ جب یہاں پہنچی تب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سوق عکاظ کی طرف جاتے ہوئے نخلہ میں اپنے اصحاب کو صبح کی نماز پڑھا رہے تھے۔ ان کے کانوں میں جب آپ کی تلاوت کی آواز پہنچی تو یہ ٹھہر گئے اور کان لگا کر بغور سننے لگے۔ اس کے بعد انہوں نے فیصلہ کر لیا کہ بس یہی وہ چیز ہے جس کی وجہ سے تمہارا آسمان تک پہنچنا موقوف کر دیا گیا ہے۔ یہاں سے یہ فوراً ہی واپس لوٹ کر اپنی قوم کے پاس پہنچے اور ان سے کہنے لگے کہ ہم نے عجیب قرآن سنا جو بھلائی کا رہبر ہے۔ ہم تو اس پر ایمان لا چکے اور اقرار کرتے ہیں کہ اب ناممکن ہے کہ ہم خدا کے ساتھ کسی کو شریک کریں۔ اس واقعہ کی خبر اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کو سورۂ جن میں دی۔ یہ حدیث بخاری و مسلم وغیرہ میں بھی ہے۔

**آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی دعا:** سیرت ابن اسحاق میں محمد بن کعب کا ایک لمبا بیان منقول ہے جس میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا طائف جانا، انہیں اسلام کی دعوت دینا ان کا انکار کرنا وغیرہ پورا واقعہ بیان ہے۔ حضرت حسن نے بھی وہ دعا بھی ذکر کیا ہے جو آپ نے اس تنگی کے وقت کی تھی وہ یہ ہے۔ اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضَعْفَ قُوَّتِيْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِيْ وَهَوَانِيْ عَلَى النَّاسِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ وَاَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّيْ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِيْ اِلٰى عَدُوٍّ يَتَجَهَّمُنِيْ اَمْ اِلٰى صَدِيْقٍ قَرِيْبٍ مَلَّكْتَهُ اَمْرِيْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ بِكَ غَضَبٌ عَلَيَّ فَلَا اُبَالِيْ غَيْرَ اَنَّ عَافِيَتَكَ اَوْسَعُ لِيْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلُحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَنْ يَّنْزِلَ بِيْ غَضَبُكَ اَوْ يَحِلَّ بِيْ سَخَطُكَ وَلَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ ”الٰہی! کمزوری اور بے سروسامانی اور کس مپرسی کی شکایت صرف تیرے سامنے کرتا ہوں، اے ارحم الراحمین تو سب سے زیادہ رحم و کرم کرنے والا ہے اور کمزوروں کا رب تو ہی ہے۔ میرا پالنہار بھی تو ہی ہے۔ تو مجھے کس کو سونپ رہا ہے۔ کسی دور والے دشمن کو جو مجھے عاجز کر دے یا کسی قریب والے دوست کو جسے تو نے میرے ہر کام کا اختیار دے رکھا ہو اگر تیری کوئی خفگی مجھ پر نہ ہو تو مجھے اس درد و دکھ کی کوئی پرواہ نہیں لیکن تاہم اگر تو مجھے عافیت کے ساتھ ہی رکھے تو وہ میرے لئے بہت ہی راحت رساں ہے۔ میں تیرے چہرے کے اس نور کے باعث جس کی وجہ سے تمام اندھیریاں جگمگا اٹھی ہیں اور دین و دنیا کے تمام امور کی اصلاح کا مدار اسی پر ہے۔ تجھ سے اس بات کی پناہ طلب کرتا ہوں کہ مجھ پر تیرا غضب اور تیرا غصہ نازل ہو یا تیری ناراضگی مجھ پر آ جائے۔ مجھے تیری ہی رضامندی اور خوشنودی درکار ہے اور نیکی کرنے اور بدی سے بچنے کی طاقت تیری ہی مدد سے ہے۔“

## رات کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا جنوں کے پاس تشریف لے جانا

حضرت علقمہ حضرت ابن مسعودؓ سے پوچھتے ہیں کہ کیا تم میں سے کوئی اس رات حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ موجود تھا؟ تو آپ نے جواب دیا کہ کوئی نہ تھا۔ آپ رات بھر ہم سے غائب رہے اور ہمیں ہر وقت یہ خیال گذرتا رہتا تھا کہ شاید کسی دشمن نے آپ کو دھوکہ دے دیا ہو۔ آپ کے ساتھ کوئی ایسا ناخوشگوار واقعہ پیش آ گیا ہو۔ رات ہم نے بڑی بری طرح گزاری صبح صادق سے کچھ ہی پہلے ہم نے دیکھا کہ آپ غار حرا سے واپس آ رہے ہیں۔ ہم نے رات کی اپنی ساری کیفیت بیان کر دی تو آپ نے فرمایا میرے پاس جنات کا قاصد آیا تھا جس کے ساتھ جا کر میں نے انہیں قرآن سنایا۔ چنانچہ آپ ہمیں لے کر گئے اور ان کے نشانات اور ان کی آگ کے نشانات ہمیں دکھائے۔ روایت کی دوسری سند میں ہے کہ حضور نے فرمایا یہ وہ جنات جو آج مجھ سے ملے تھے یہ تمہارے دینی بھائی ہیں آج رات مجھ سے قرآن سننے کے لئے آنے والے جن اس شہر جزیرہ اور [illegible] کے تھے۔ ابن مسعودؓ کہتے ہیں کہ میں اس جگہ گیا تو دیکھا کہ [illegible] ساتھ بیٹھے

کی نہ ہے۔ اور حدیث میں ہے کہ جب جنات کا اژدھام ہو گیا تو ان کے سردار وردان نے کہا یا رسول اللہ میں انہیں ادھر ادھر کر کے آپ کو اس تکلیف سے بچا لیتا ہوں تو آپ نے فرمایا اللہ سے بڑھ کر مجھے کوئی بچانے والا نہیں۔

دوسری روایت میں ہے کہ اس رات حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو صحابہ کرام بہت ہی گھبرائے تھے اور تمام وادیوں اور گھاٹیوں میں تلاش کرتے رہے تھے۔ اور حدیث میں ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آج رات میں جنات کو قرآن سناتا رہا اور جن کی بستی کے اسی شغل میں رات گزار دی۔ ابن جریر میں حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت ہے کہ آپ نے فرمایا تم میں سے کون ہے جو آج کی رات جنات کے امر میں میرے ساتھ رہے۔ پس میں موجود ہو گیا۔ آپ مجھے لے کر چلے جب مکہ شریف کے اونچے والے حصہ میں پہنچے تو آپ نے اپنے پاؤں سے ایک خط کھینچ دیا اور مجھ سے فرمایا اسی میں بیٹھے رہو۔ پھر آپ چلے اور ایک جگہ کھڑے ہو کر آپ نے قرأت شروع کی پھر تو اس قدر جماعت آپ کے ارد گرد کھڑی ہو گئی کہ میں تو آپ کی قرأت سننے سے بھی رہ گیا۔ پھر میں نے دیکھا کہ جس طرح ابر کے ٹکڑے پھٹتے ہیں اسی طرح وہ ادھر ادھر جانے لگے اور یہاں تک کہ اب بہت تھوڑے رہ گئے۔ پس حضور صلی اللہ علیہ وسلم صبح کے وقت فارغ ہوئے اور آپ وہاں سے دور نکل گئے اور حاجت سے فارغ ہو کر میرے پاس تشریف لائے اور پوچھنے لگے وہ باقی کے کہاں ہیں؟ میں نے کہا وہ یہ ہیں پس آپ نے انہیں ہڈی اور لید دی۔ پھر آپ نے مسلمانوں کو ان دونوں چیزوں سے استنجا کرنے سے منع فرما دیا۔

**نصیبین کے جن:** کہتے ہیں یہ جنات تعداد میں سات تھے۔ نصیبین کے تھے۔ انہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جنوں کی طرف اپنا قاصد بنا کر بھیجا اور جو روایت نصیبین سے ان کے نام یہ ہیں حسی، حسا، منسی، ساصر، ناصر، الاردوبیان، الاحتم۔ ابو حمزہ ثمالی فرماتے ہیں انہیں بنو شیبان کہتے ہیں یہ قبیلہ جنات کے اور قبیلوں سے تعداد میں بہت زیادہ تھا اور یہ ان میں نسب کے بھی شریف مانے جاتے تھے عموماً یہ ابلیس کے لشکروں میں سے تھے۔

**ایک کاہن کی گواہی:** صحیح بخاری شریف کی یہ روایت بھی ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ جس چیز کی نسبت جب کبھی کہتے کہ میرے خیال میں یہ اس طرح ہوگی تو وہ عموماً اسی طرح نکلتی۔ ایک مرتبہ آپ بیٹھے ہوئے تھے کہ ایک حسین شخص گزرا۔ آپ نے اسے دیکھ کر فرمایا اگر میرا گمان غلط نہیں تو یہ شخص اپنے جاہلیت کے زمانے میں ان لوگوں کا کاہن تھا جاؤ اسے میرے پاس لاؤ۔ جب وہ آ گیا تو آپ نے اپنا یہ خیال اس پر ظاہر فرمایا۔ وہ کہنے لگا مسلمانوں میں اس ذہانت و فطانت کا کوئی شخص آج تک میری نظر سے نہیں گزرا۔ حضرت عمرؓ نے فرمایا اب میں تجھ سے کہتا ہوں کہ تو مجھے کوئی خبر سنا۔ اس نے کہا جاہلیت کے زمانہ میں میں ان کا کاہن تھا میرے پاس میری جن جو سب سے زیادہ تعجب خیز خبر لایا وہ سنئے۔ میں ایک مرتبہ بازار میں جا رہا تھا کہ وہ آئی اور سخت گھبراہٹ میں تھی اور کہنے لگی کیا تو نے جنوں کی بربادی اور مایوسی اور ان کا پیچھے کے بعد پست ہو جانا اور ان کی ذلت نہیں دیکھی؟

**حضرت عمرؓ کی گواہی:** حضرت عمرؓ نے فرمایا یہ سچ ہے ایک مرتبہ میں ان کے بتوں کے پاس سویا ہوا تھا ایک شخص نے وہاں ایک بچھڑا چڑھایا کہ اچانک ایک سخت پر زور آواز آئی کہ اتنی بلند اور کرخت آواز میں نے کبھی نہیں سنی۔ اس نے کہا اے جلیح نجات دینے والا امر آچکا ایک شخص ہے جو فصیح زبان سے لا الہ الا اللہ منادی کر رہا ہے۔ سب لوگ تو مارے ڈر کے بھاگ گئے لیکن میں وہیں بیٹھا رہا کہ دیکھوں اس کے بعد کیا ہوتا ہے؟ کہ پھر وہی آواز آئی اور اس نے وہی کہا پس کچھ ہی دن گزرے تھے جو نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی نبوت کی آوازیں ہمارے کانوں میں پڑنے لگیں۔ اس روایت کے ظاہری الفاظ سے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ خود حضرت فاروقؓ نے یہ آواز اس ذبح شدہ بچھڑے سے سنی اور ایک ضعیف روایت میں صراحتاً یہ بھی آیا ہے لیکن باقی روایتیں اس پر متفق ہیں کہ اسی کاہن نے اپنے دیکھنے سننے کا ایک واقعہ بھی بیان کیا تھا۔ واللہ اعلم۔ امام بیہقیؒ نے یہی کہا ہے اور یہی کچھ ٹھیک معلوم ہوتا ہے۔ اس شخص کا نام سواد بن قارب تھا جو شخص اس واقعہ کی پوری تفصیل دیکھنا چاہتا ہو وہ میری کتاب سیرۃ عمر کو دیکھ لے وللہ الحمد والمنۃ۔ امام بیہقی فرماتے ہیں ممکن ہے یہی وہ کاہن ہو جس کا ذکر بغیر نام کے صحیح حدیث میں ہے۔

**سواد بن قارب کے اسلام لانے کا واقعہ**

حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ منبر نبوی پر ایک مرتبہ خطبہ سنا رہے تھے اسی میں پوچھا کیا سواد بن قارب یہاں موجود ہیں؟ لیکن کسی نے جواب نہ دیا۔ اس سال تک کسی نے ہاں نہیں کی اگلے سال آپ نے پھر پوچھا تو حضرت براءؓ نے کہا سواد بن قارب کون ہے؟ اس سے کیا مطلب ہے؟ آپ نے فرمایا ان کے اسلام لانے کا قصہ عجیب و غریب ہے ابھی یہ باتیں ہو رہی تھیں جو حضرت سواد بن قاربؓ آ گئے۔ حضرت عمرؓ نے ان سے کہا سواد اپنے اسلام کا ابتدائی قصہ کہو۔ آپ نے فرمایا سنئے میں ہند گیا ہوا تھا میرا ساتھی جن ایک رات میرے پاس آیا میں اس وقت سویا ہوا تھا مجھے اس نے جگا دیا اور کہا اٹھ اور اگر تجھ میں ہوش ہے تو سن لے اور سمجھ لے لوئی بن غالب میں سے خدا کے رسول مبعوث ہو چکے ہیں۔ میں جنات کی حس اور ان کے بوریے بستر باندھنے پر تعجب کر رہا ہوں اگر تو طالب ہدایت ہے تو فوراً آنحضرت کی طرف کوچ کر۔ سمجھ لے کہ بہتر اور بدتر جن یکساں نہیں۔ جا جلدی جا اور بنو ہاشم کے اس دلارے کے منہ مبارک سے

پر تھیں تو اس نے مجھے پھر غنودگی سی آ گئی تو اس نے مجھے دبایا اور کہنے لگا اے سواد بن قارب اللہ عزوجل نے اپنا رسول بھیج دیا ہے۔ تم ان کی خدمت میں پہنچو اور ہدایت اور بھلائی سمیٹ لو۔ دوسری رات پھر آیا اور مجھے جگا کر کہنے لگا مجھے جنات کے جستجو کرنے اور جلد جلد پالان اور جھولیں کسنے پر تعجب معلوم ہوتا ہے۔ مگر تو بھی ہدایت کی طلب سے ان کے کا قصد کر۔

تو اٹھ اور جلدی جلدی بنو ہاشم کے اس پسندیدہ شخص کی خدمت میں پہنچ اور اپنی آنکھیں اس کے دیدار سے منور کر۔ تیسری رات پھر آیا اور کہنے لگا مجھے جنات کے باخبر ہو جانے اور ان کے قافلوں کے فوراً تیار ہو جانے پر تعجب ہو رہا ہے۔ وہ سب کے سب ہدایت کے لئے مکہ کی طرف دوڑے جا رہے ہیں۔ ان میں کے برے بھلوں کی برابری نہیں کر سکتے تو بھی اٹھ اور اس بنو ہاشم کے چیدہ شخص کی طرف نگاہ کر۔ مومن جنات کافروں کی طرح نہیں۔ تین راتوں تک برابر یہی سنتا رہا۔ پھر تو میرے دل میں بھی دفعۃً اسلام کا ولولہ اٹھا اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وقعت اور محبت سے دل پر ہو گیا۔ میں نے اپنی سواری پر کجاوہ کسا اور بغیر کسی اور جگہ قیام کے سیدھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا۔ آپ اس وقت شہر مکہ میں تھے اور لوگ آپ کے آس پاس ایسے تھے جیسے گھوڑے پر ایال۔ مجھے دیکھتے ہی نبی اللہ کے پیغمبر نے فرمایا سواد بن قارب کو مرحبا ہو آؤ ہمیں معلوم ہے کہ کیسے اور کس لئے اور کس کے کہنے سننے سے آ رہے ہو؟ میں نے کہا حضور! میں نے کچھ اشعار کہے ہیں اگر اجازت ہو تو پیش کروں؟ آپ نے فرمایا سواد شوق سے کہو تو حضرت سواد رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے وہ اشعار پڑھے جن کا مضمون یہ ہے میرے پاس میرا جن میرے سو جانے کے بعد رات گئے آیا اور اس نے مجھے ایک سچی خبر پہنچائی تین راتیں برابر وہ میرے پاس آتا رہا اور ہر رات کہتا رہا کہ لؤی بن غالب میں اللہ کے رسول مبعوث ہو چکے ہیں۔ میں نے بھی سفر کی تیاری کر لی اور جلد جلد راہ طے کرتا یہاں پہنچ گیا ہوں اب میری گواہی ہے کہ بجز اللہ کے اور کوئی رب نہیں اور آپ اللہ کے امانت دار رسول ہیں۔ آپ سے شفاعت کا آسرا سب سے زیادہ ہے اے بہترین بزرگوں اور پاک لوگوں کی اولاد اے تمام رسولوں سے بہتر رسول جو حکم آپ کی جانب سے ہمیں پہنچیں گے وہ ہم سنیں گے اور مانیں گے گو وہ کتنے ہی مشکل اور طبیعت کے خلاف کیوں نہ ہوں ناممکن ہے کہ ہم سے ٹال دیں۔ آپ قیامت کے دن ضرور میری سفارشی بننا کیونکہ وہاں بجز آپ کے سواد بن قارب کا سفارشی اور کون ہو گا؟ اس پر حضور صلی اللہ علیہ وسلم بہت ہنسے اور فرمانے لگے سواد تم نے فلاح پا لی۔ حضرت عمر نے یہ واقعہ سن کر پوچھا کیا وہ جن اب بھی تیرے پاس آتا ہے؟ اس نے کہا جب سے میں نے قرآن پڑھا وہ نہیں آتا اور اللہ کا بڑا شکر ہے کہ اس کے عوض میں نے رب کی پاک کتاب پائی۔

## حضرت ابن مسعودؓ کی زبانی لیلۃ الجن کا قصہ

اب جس حدیث کو ہم حافظ ابو نعیم کی کتاب دلائل النبوۃ سے نقل کرتے ہیں اس میں بھی اس کا بیان ہے کہ مدینہ شریف میں بھی جنات کا وفد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں باریاب ہوا تھا۔ حضرت عمرو بن غیلان ثقفی حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس جا کر ان سے دریافت کرتے ہیں کہ مجھے یہ معلوم ہوا ہے کہ جس رات جنات کا وفد حاضر حضور صلی اللہ علیہ وسلم ہوا تھا اس رات حضور کے ساتھ آپ بھی تھے؟ جواب دیا کہ ہاں ٹھیک ہے۔ میں نے کہا ذرا واقعہ تو سنائیے۔ فرمایا صفہ والے مساکین صحابہ کو لوگ اپنے اپنے ساتھ رات کو کھلانے کے لئے لے گئے اور میں یونہی رہ گیا۔ میرے پاس سے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا گزر ہوا۔ پوچھا کون ہے؟ میں نے کہا ابن مسعود۔ فرمایا تمہیں کوئی نہیں لے گیا کہ تم بھی کھا پی لیتے؟ میں نے جواب دیا مجھے کوئی نہیں لے گیا۔ فرمایا میرے ساتھ چلو شاید کچھ مل جائے تو دے دوں گا۔ میں ساتھ ہو لیا آپ حضرت ام سلمہؓ کے حجرے میں گئے۔ میں باہر ہی ٹھہر گیا۔ تھوڑی دیر میں اندر سے ایک لونڈی آئی اور کہنے لگی حضور فرماتے ہیں ہم نے اپنے گھر میں کوئی چیز نہیں پائی تم اپنی خواب گاہ میں چلے جاؤ۔ میں واپس مسجد میں آ گیا اور مسجد میں کنکریوں کا ایک چھوٹا سا ڈھیر کر کے اس پر سر رکھ کر اپنا کپڑا لپیٹ کر سو گیا۔ تھوڑی ہی دیر گزری ہو گی جو وہی لونڈی پھر آئی اور کہا رسول اللہ آپ کو یاد فرما رہے ہیں۔ میں ساتھ ہو لیا اور مجھے امید پیدا ہو گئی کہ اب تو کھانا ضرور ملے گا۔ جب میں اپنی جگہ پہنچا تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم گھر سے باہر تشریف لائے۔ آپ کے ہاتھ میں کھجور کے درخت کی ایک چھڑی تھی جسے میرے سینے پر رکھ کر فرمانے لگے جہاں میں جا رہا ہوں کیا تم بھی میرے ساتھ چلو گے؟ میں نے کہا جو اللہ نے چاہا۔ تین مرتبہ یہی سوال جواب ہوا۔ پھر آپ چلے اور میں بھی آپ کے ساتھ چلنے لگا۔ تھوڑی دیر میں بقیع غرقد پہنچے پھر قریب قریب وہی بیان ہے جو اوپر کی روایتوں میں گزر چکا ہے۔ اس کی اسناد غریب ہے اور اس کی سند میں ایک مبہم راوی ہے جن کا نام ذکر نہیں۔

## ایک شہید جن صحابی:

ابو نعیم میں ایک روایت ہے کہ ایک شخص حضرت عثمان ذوالنورین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں آئے اور کہنے لگے امیر المومنین میں ایک جنگل میں تھا میں نے دیکھا کہ دو سانپ آپس میں خوب لڑ رہے ہیں۔ یہاں تک کہ ایک نے دوسرے کو مار ڈالا۔ اب میں انہیں چھوڑ کر جہاں معرکہ ہوا تھا وہاں گیا۔ دیکھا تو بہت سے سانپ قتل کئے ہوئے پڑے ہیں اور بعضوں سے اسلام کی خوشبو آ رہی ہے۔ میں نے ایک ایک کو سونگھنا شروع کیا۔

یہاں تک کہ ایک روز میں گھر کے پیچھے سو رہا تھا کہ میں نے دیکھا سیاہ رنگ کا سانپ ... کی طرف بڑھا ... جا رہا تھا جو میں نے ایک آواز سنی کہ اے اللہ کے بندے تجھے خدا کی طرف سے بڑی ... یہ دونوں صاحب جنات کے قبیلہ کے تھے ... ان دونوں میں جنگ ہوئی اور جو سانپ تم نے دیکھا ... اسی میں سے ایک ... جسے تم نے قتل کیا وہ تھے جنہوں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان وحی الٰہی سنی تھی۔ حضرت عثمان یہ قصہ بیان کر فرمانے لگے اسے ... اگر تو چاہے تو ... تم نے عجیب واقعہ دیکھا اور اگر جھوٹا ہے تو جھوٹ کا وبال تجھ پر ہے۔

## مومن جنوں کے جنت میں جانے کا مسئلہ

جب کافر جنات کو جہنم میں ڈالا جائے گا جو مقتضائے عدل ہے تو مومن جنات کو جنت میں کیوں نہ لے جایا جائے؟ یہ مقام فضل ہے بلکہ یہ بطریق اولیٰ ہوگا۔ جمہور جنوں کے داخل جنت ہونے کے قائل ہیں اور اسی پر روایتیں بھی وہیں ہیں جن میں عام طور پر ایمان داروں کو جنت کی خوشخبری دی گئی ہے مثلاً لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ وغیرہ وغیرہ جن میں ایمانداروں کا جنت میں داخل ہونا مذکور ہے۔

حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ جنات جنت میں تو نہ جائیں گے بلکہ جنت کے اطراف و اکناف میں رہیں گے۔ بعض لوگ کہتے ہیں جنت میں تو ہوں گے لیکن دنیا کے بالکل برعکس انسان انہیں دیکھیں گے وہ انسانوں کو دیکھ نہیں سکیں گے۔ بعض لوگوں کا قول ہے کہ جنت میں کھائیں گے پئیں گے نہیں صرف تسبیح و تقدیس ان کا طعام ہوگا جیسے فرشتے ہیں۔ ... کہ جو بھی ہو ... ان تمام اقوال میں نظر ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

## چھ مرتبہ جنات حاضر ہوئے

علماء نے احادیث و روایات سے حضرت ابن عباس سے نقل کیا ہے کہ جنات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں چھ بار حاضر ہوئے۔ تو جن لوگوں نے فرمایا ... روایات جمع کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ جنات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر ... کرنے کے واقعات چھ مرتبہ پیش آئے ہیں (کذا فی الروح واقعہ دیکھئے بیان القرآن ... واللہ اعلم)

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا

بولے اے قوم ہماری ہم نے سنی ایک کتاب

اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى

جو اتری ہے موسیٰ کے بعد ☆

## توراۃ کی گواہی

کتب سابقہ میں حضرت موسیٰ کی کتاب (توراۃ) ہی ایسی کتاب تھی جو احکام و شرائع کو حاوی تھی ... انجیل کا عمل ... حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے بھی یہی ... کہ میں توراۃ کو پورا کرنے کے لئے آیا ہوں ... اور حضرت سلیمان علیہ السلام کے وقت سے جنات میں توراۃ مشہور چلی آتی تھی اس لئے اس موقع پر جنوں نے اسی کی طرف اشارہ کیا اور توراۃ میں بھی جو پیشین گوئی نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی آئی ہے اس کے الفاظ یہ ہیں کہ (حضرت موسیٰ علیہ السلام) "تیرے مانند ایک نبی اٹھاؤں گا"۔ (تفسیر حقانی)

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ

سچ کرنے والی سب اگلی کتابوں کو ☆

☆ شاید اس وقت قرآن کا جو حصہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے تلاوت فرمایا تھا اس میں یہ مضمون آیا ہوگا یا قرآن سے سمجھے ہوں۔ (تفسیر عثمانی)

يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ

سمجھاتی ہے سچا دین اور ایک راہ سیدھی ☆

## قرآن کی رہنمائی

یعنی سچے عقیدے اور عمل کا سیدھا راستہ۔ (تفسیر عثمانی)

یَهْدِیْٓ اِلَی الْحَقِّ۔ حق سے مراد ہیں صحیح عقائد اور طریق مستقیم ← سے مراد ہیں عملی احکام۔ (تفسیر مظہری)

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ

اے قوم ہماری مانو اللہ کے بلانے والے کو اور اس پر یقین لاؤ ☆

## جنوں کی اپنی قوم کو دعوت

☆ یعنی رسول کی بات مانو جو اللہ کی طرف بلا رہے ہیں اور ان کی رسالت پر یقین کرو۔ (تفسیر مظہری)

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ

کہ بخش دے تم کو کچھ تمہارے گناہ ☆

## اسلام سے گناہ معاف ہو جاتے

یعنی جو گناہ حالت کفر میں کر چکے ہو، اسلام کی برکت سے سب معاف ہو جائیں گے۔ (آگے حدیث ہے) اور قرضوں کا ذکر ہے یہاں ذنوب کا ذکر ہے۔ حقوق العباد کا معاملہ اس سے نہیں نکلا۔ (تفسیر عثمانی)

یَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ ۔ اللہ تمہارے گناہ معاف کر دے گا یعنی وہ گناہ معاف کر دے گا جن کا تعلق حق اللہ سے ہوگا۔ حقوق العباد ایمان لانے سے معاف نہیں ہوتے۔ جنات کی اس تبلیغ سے ستر جن مسلمان ہو گئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اس وقت بطحا میں تھے۔ آپ نے ان کو قرآن پڑھ کر سنایا، اوامر و نواہی کا علم دیا۔ اس بات کا ثبوت ملتا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم جن و انس دونوں کے لئے بھیجے گئے۔ سورۃ جن میں ہم نے مومن جن کے متعلق علماء کے اختلاف پر روشنی ڈالی ہے۔ (تفسیر مظہری)

وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ أَلِيْمٍ وَمَنْ

اور بچا دے تم کو ایک عذاب دردناک سے۔ اور جو کوئی

لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ

نہ مانے گا اللہ کے بلانے والے کو تو وہ نہ تھکا سکے گا

فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُوْنِهِ

بھاگ کر زمین میں اور کوئی نہیں اس کا اس کے سوائے

أَوْلِيَاءُ

مددگار ☆

## خدا کے باغی کا کہیں ٹھکانہ نہیں

یعنی خدا سے بھاگ کر اور اس کے قبضہ سے نکل کر کہاں جا سکتے ہیں۔ حضرت شاہ صاحب "فی الارض" کی قید پر لکھتے ہیں کہ شیاطین اوپر کو جاتے تھے، فرشتوں سے، سو پیچھے تو زمین ہی کو بھاگے گئے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ ۔ یعنی زمین پر اللہ کو مغلوب نہیں کر سکتا۔ اس کو زمین میں کوئی ایسی جگہ نہیں ملے گی جہاں وہ اللہ کی پکڑ سے چھوٹ سکے۔ (تفسیر مظہری)

أُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾ أَوَلَمْ

وہ لوگ بھٹکتے ہیں صریح کیا نہیں

يَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

دیکھتے کہ وہ اللہ جس نے بنائے آسمان

وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ

اور زمین اور نہ تھکا ان کے بنانے میں ☆

## یہود کے عقیدہ کی تردید

اس فقرہ میں "یہود" کے عقیدہ کا رد ہے جو کہتے تھے کہ چھ دن میں اللہ نے زمین و آسمان پیدا کئے، پھر "استراحت" (آرام) کیا۔ (مواہب الرحمن)

وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ ۔ اور ان کو پیدا کرنے سے تھکا نہیں، کیونکہ اس کی قدرت ذاتی ہے، پیدا کرنے اور موجود کرنے سے اس میں نقص نہیں آ سکتا۔ (تفسیر مظہری)

بِقٰدِرٍ عَلٰٓى أَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ۚ بَلٰٓى

وہ قدرت رکھتا ہے کہ زندہ کرے مردوں کو

إِنَّهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

کیوں نہیں وہ ہر چیز کر سکتا ہے ☆

## موت کے بعد زندگی

یعنی جو خدا مرنے کے بعد دوبارہ زندہ کرے گا، اس کی قدرت کے آگے کچھ مشکل نہیں۔ جو آسمان اور زمین کے پیدا کرنے سے نہ تھکا، اس کو مردوں کا دوبارہ پیدا کر دینا کیا مشکل ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى

اور جس دن سامنے لائے جائیں منکر آگ کے

النَّارِ ۭ أَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى

کیا یہ ٹھیک نہیں کہیں گے کیوں نہیں

| |
|---|
| وَرَبِّنَا ؕ |
| قسم ہے ہمارے رب کی ☆ |

**کافروں کا اقرار:** ☆ یعنی اس وقت کہا جائے گا کہ دوزخ کا وجود اور اس کا عذاب کیا واقعی چیز نہیں؟ آخر سب ذلیل ہو کر اقرار کریں گے کہ بے شک واقعی ہے (ہم غلطی پر تھے جو اس کا انکار کیا کرتے تھے) (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا |
| کہا تو چکھو عذاب بدلے اس کا |
| كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ |
| جو تم منکر ہوتے تھے ☆ |

☆ یعنی اس وقت کہا جائے گا کہ اچھا اب اس انکار و تکذیب کا مزہ چکھتے رہو۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ |
| سو تو ٹھہرا رہ جیسے ٹھہرے رہے ہیں ہمت والے |
| الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ |
| رسول اور جلدی نہ کر ان کے واسطے ☆ |

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی تسلی

☆ یعنی جب معلوم ہو چکا کہ منکرین کو سزا ملنی ضرور ہے، آخرت میں ملے یا دنیا میں بھی، تو آپ ان کے معاملہ میں جلدی نہ کریں۔ بلکہ ایک میعاد معین تک صبر کرتے رہیں جیسے اولوالعزم پیغمبروں نے صبر کیا ہے (تنبیہ) بعض سلف نے کہا کہ سب رسول اولوالعزم (ہمت والے) ہیں اور عرف میں پانچ پیغمبر خصوصی طور پر اولوالعزم کہلاتے ہیں۔ حضرت نوح علیہ السلام، حضرت ابراہیم علیہ السلام، حضرت موسیٰ علیہ السلام، حضرت عیسیٰ علیہ السلام اور حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم۔ (تفسیر عثمانی)

اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اولوالعزم رسول سے مراد سب پیغمبر ہوں تو مِنَ الرُّسُلِ کا من بیانیہ ہونے کے لئے ہوگا واللہ اعلم۔

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ یعنی آپ صبر کیجئے جیسے ہمت والے پیغمبروں نے صبر کیا تھا۔

فَاصْبِرْ۔ یعنی اے محمد آپ کافروں کی طرف سے پہنچنے والی تکلیفوں پر صبر کیجئے۔ مطلب یہ کہ جب آپ کو معلوم ہو گیا کہ کافروں کو دوزخ کے عذاب کا مزہ چکھنا ہوگا تو آپ صبر کیجئے۔ انتقام کا ارادہ نہ کیجئے۔

### حضرت مجدد الف ثانی رحمہ اللہ کا ارشاد:

شیخ احمد مجدد الف ثانی نے فرمایا اولوالعزم والے پیغمبر آدم، نوح، ابراہیم، موسیٰ، عیسیٰ، اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم ہو کر القدرہ یا ثانی کا تذکرہ خصوصیت کے ساتھ آیت میثاق (مذکورہ بالا) میں کر دیا گیا ہے یہ حضرات (اہل شرائع) شریعتوں کے مالک بھی تھے ان کے بعد جو پیغمبر ہوئے وہ انہیں کی شریعتوں کے پابند تھے رہے حضرت آدم تو ظاہر ہے کہ وہ سب سے پہلے تھے ان کی شریعت سب سے اول تھی (جس پر دوسرے چلے)۔

### اہل عزم کا مقام:

بغوی نے لکھا ہے کہ مسروق نے کہا مجھ سے حضرت عائشہؓ نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے روزہ رکھ کر فرمایا عائشہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم اور آل محمد کے لئے دنیا مناسب نہیں عائشہ اللہ نے اہل عزم کے لئے دنیا کی مکروہات پر صبر رکھنے اور مرغوبات سے صبر (اعراض و گریز) کرنے ہی کو پسند فرمایا اور مجھے بھی اسی امر کا مکلف کیا جس کا مکلف دوسرے اولوالعزم کو کیا تھا میرے لئے اس بات کو اس نے پسند کیا، اور فرمایا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ اور واللہ میرے لئے بھی طاعت خداوندی کے سوا کوئی چارہ نہیں جیسے انہوں نے صبر کیا میں بھی صبر کروں گا اور جیسے انہوں نے تکلیفیں برداشت کیں میں بھی اپنی طاقت بھر محنت کروں گا ولا قوۃ الا باللہ۔

### ایک نبی کا صبر:

حضرت ابن مسعود نے فرمایا گویا وہ منظر میری آنکھوں کے سامنے ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ایک نبی کا واقعہ بیان فرما رہے تھے جن کو ان کی قوم نے مار مار کر لہولہان کر دیا لیکن وہ اپنے چہرے سے خون پونچھتے جاتے تھے اور کہتے جاتے تھے اے اللہ میری قوم کو معاف کر دے یہ لوگ نادان ہیں۔ متفق علیہ (غالباً نبی سے مراد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی اپنی ذات مبارک تھی آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی ذات کو مبہم الفاظ میں بیان فرمایا) (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ ۙ |
| یہ لوگ جس دن دیکھیں گے اس چیز کو جس کا ان سے وعدہ ہے |
| لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ |
| جیسے ڈھیل نہ پائی تھی مگر ایک گھڑی دن کی ☆ |

## جب عذاب آئے گا تو پتہ چلے گا

"یعنی یہ باقی زندگی جو تم کو بہت طویل معلوم ہوتی ہے تو جب عذاب جلد بھی آئے گا اس وقت جانیں گے کہ بہت تھوڑی دیر دنیا میں رہے تھے۔ اور عالم قبر کی مدت بھی ایک گھڑی معلوم ہوگی۔ قاعدہ ہے کہ گذری ہوئی مدت تھوڑی معلوم ہوا کرتی ہے۔ خصوصاً سختی اور مصیبت کے وقت پیچھے راحت کا زمانہ بہت کم نظر آنے لگتا ہے۔" (تفسیر عثمانی)

لَمۡ یَلۡبَثُوۡۤا۔ یعنی دنیا میں نہیں ٹھہرے مگر گھڑی بھر۔ روز قیامت اور عذاب کی ہولناکی کی وجہ سے دنیا کی زندگی ان کو بہت ہی تھوڑی محسوس ہو گی یعنی کہ جو مدت گزر گئی وہ کتنی ہی طویل ہو لیکن جب گذر چکی تو گویا تھی ہی نہیں۔ (تفسیر مظہری)

| بَلٰغٌ ۚ فَهَلۡ یُهۡلَكُ اِلَّا الۡقَوۡمُ |
|---|
| یہ پہنچا دینا ہے اب وہی غارت ہوں گے جو لوگ |
| الۡفٰسِقُوۡنَ ۟ |
| نافرمان ہیں ۳۵ |

حجت پوری ہو چکی: یعنی ہم نے نصیحت کی بات پہنچا دی اور سب نیک و بد کھول کر بتلا دیے۔ اب جو نہ مانیں گے وہی تباہ و برباد ہوں گے۔ ہماری طرف سے حجت تمام ہو چکی اور کسی کو بے قصور ہم نہیں پکڑتے۔ اسی کو قوت کرتے ہیں قومًا ملعونًا۔ تم سورۃ الاحقاف بفضل اللہ وحسن توفیقہ فللّٰہ الحمد والمنۃ۔ (تفسیر عثمانی)

بَلٰغٌ۔ یعنی یہ نصیحت جو کی گئی یہ نصیحت یا قرآن اللہ کی طرف سے تم کو پہنچا ہے۔ یعنی کہ تم اس کا پہچانا ہم پر کافی ہے یا اس کے ذریعہ ہدایت کی طرف اشارہ ہے۔ بلاغ یعنی یہ کافی ہے نصیحت کے لئے جو ہم نے کہا ہے۔

فَهَلۡ یُهۡلَكُ۔ سوال انکاری ہے یعنی سوائے نافرمان لوگوں کے عذاب سے کوئی ہلاک نہیں کیا جائے گا۔

الۡفٰسِقُوۡنَ۔ یعنی نصیحت پذیری یا اطاعت سے خارج ہو جانے والے۔ زجاج نے اس کی تشریح میں کہا کہ اللہ کی رحمت اور کرم کی موجودگی میں عذاب سے ہلاک ہونے والے صرف نافرمان لوگ ہوں گے (باقی لوگوں پر اللہ کی رحمت ہوگی) اسی لئے بعض لوگوں نے کہا کہ رحمت خداوندی سے امید رکھنے کے سلسلہ میں جو آیات آئی ہیں ان میں یہ آیت سب سے زیادہ قوی ہے۔

الحمد للّٰہ رب العٰلمین وصلی اللّٰہ تعالٰی علٰی خیر خلقہ محمد و آلہ و اصحابہ اجمعین۔ (تفسیر مظہری)

جو شخص اس کو شب میں پڑھے اس کی تعبیر یہ ہے کہ اس کے پاس فرشتہ اچھی صورت میں آئے گا۔

## اس سورۃ کا نام "قتال" ہونے کی وجہ

سورۂ محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) کا دوسرا نام قتال بھی ہے کیونکہ جہاد و قتال کے احکام اس میں بیان ہوئے ہیں۔ ہجرت مدینہ کے فوراً بعد یہ سورت نازل ہوئی یہاں تک کہ اس کی ایک آیت وَکَاَیِّنۡ مِّنۡ قَرۡیَۃٍ کے متعلق حضرت ابن عباسؓ سے یہ منقول ہے کہ وہ مکی آیت ہے کیونکہ اس کا نزول اس وقت ہوا ہے جبکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم ہجرت کی نیت سے مکہ مکرمہ سے نکلے اور مکہ مکرمہ کی بستی اور بیت اللہ پر نظر کرتے آپ نے فرمایا کہ ساری دنیا کے شہروں میں مجھے تو ہی محبوب ہے اگر اہل مکہ مجھے یہاں سے نہ نکالتے تو میں خود اپنے اختیار سے مکہ مکرمہ نہ چھوڑتا۔ (معارف القرآن)

| سُوۡرَۃُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِیَّۃٌ وَّ هِیَ ثَمَانٌ وَّ ثَلٰثُوۡنَ اٰیَۃً وَّ اَرۡبَعُ رُکُوۡعَاتٍ |
|---|
| سورۂ محمد مدینہ میں نازل ہوئی اور اس میں اڑتیس آیتیں ہیں اور چار رکوع |
| بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ |
| شروع اللہ کے نام سے جو بیحد مہربان نہایت رحم والا ہے |
| اَلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَ صَدُّوۡا عَنۡ |
| جو لوگ کہ منکر ہوئے اور روکا اوروں کو |
| سَبِیۡلِ اللّٰهِ |
| اللہ کی راہ سے ☆ |

راہ حق سے روکا: جیسا کہ مشرکین مکہ کی عادت تھی کہ جان، مال اور ہر طرح سے اس کی کوشش کرتے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

| اَضَلَّ اَعۡمَالَهُمۡ ۝۱ |
|---|
| کھو دیئے اللہ نے ان کے کام ☆☆ |

خوش فہمی: ☆☆ یعنی جن اعمال کو وہ نیک سمجھتے تھے بوجہ عدم ایمان کے وہ مقبول نہیں ہوئے ان میں سے بعض تو ایسے ہیں جو موجب عذاب ہوتے ہیں جیسے لوگوں کو اسلام سے روکنے کی بے خبری کرنا۔ (تفسیر حقانی)

## اعمال بغیر ایمان کے مقبول نہیں

[illegible]

دوسرا ترجمہ: [illegible] (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ |
| اور جو یقین لائے اور کیے بھلے کام |
| وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ |
| اور یقین لائے اس پر جو اترا محمد پر اور وہی ہے سچا |
| مِن رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ |
| ان کے رب کی طرف سے اتاریں ان پر سے برائیاں ان کی |
| وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ |
| اور سنوارا ان کا حال |

[illegible] حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں [illegible]

[illegible]

[illegible]

ایک لطیف تعبیر [illegible]

[illegible]

صلاح حال: وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا |
| یہ اس لیے کہ جو منکر ہیں وہ چلے |
| الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا |
| جھوٹی بات پر اور جو یقین لائے |
| اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ |
| انہوں نے مانی سچی بات اپنے رب کی طرف سے یوں |
| يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ |
| بتاتا ہے اللہ لوگوں کو ان کے احوال |

واضح بیان [illegible]

| |
|---|
| فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ |
| سو جب تم بھڑو منکروں سے تو مارو |

الرِّقَابِ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ

گردنیں یہاں تک کہ جب خوب قتل کر چکو ان کو

فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ

تو مضبوط باندھ لو قید پھر یا احسان کیجئو

وَاِمَّا فِدَآءً

اور یا معاوضہ لیجیئو

## باطل سے مقابلہ کی ہدایات

یعنی حق اور باطل کا مقابلہ تو ہوتا ہی ہے۔ جس وقت مسلمان اور کافروں میں جنگ ہو جائے تو مسلمانوں کو پوری طرح مضبوطی اور بہادری سے کام لینا چاہیے۔ باطل کا زور جب ہی ٹوٹے گا کہ بڑے بڑے شریر مارے جائیں اور ان کے جتھے توڑ دیے جائیں۔ اس لئے ہنگامہ کارزار میں کسی قسم کی سستی، بزدلی اور تقصیر روا نہ رکھو اور دشمنان خدا کی گردنیں مارنے میں [illegible] باک نہ کرو [illegible] خونریزی کے بعد جب تمہاری دھاک بیٹھ جائے کافروں کا زور ٹوٹ جائے اس وقت قید کرنے کی بھی کفایت کرتا ہے قال تعالیٰ "مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ" (انفال رکوع ۹) یہ قیدی دشمن جو ان کے لئے نمونۂ عبرت کا کام دیں گے اور مسلمانوں کے پاس رہ کر اسلام کی اور مسلمانوں کی حالت کو دیکھیں گے اور اسلام کی تعلیمات میں غور کرنے کا موقع بھی ملے گا۔ [illegible] اسلام کی حقانیت و صداقت کا [illegible] مصلحت سمجھو تو [illegible] ان پر احسان کر کے چھوڑ دو [illegible] بعض صورتوں میں یہ احسان بہت سے فوائد [illegible] ہے تمہارے احسان اور خوش خلقی سے متاثر ہو کر تمہاری طرف راغب ہوں اور تمہارے دین سے محبت کرنے لگیں [illegible] یا مسلمان قیدیوں کے تبادلہ میں ان قیدیوں کو چھوڑ دو [illegible] اس میں کئی طرح کا فائدہ ہے [illegible] اگر قیدیان جنگ کو ان کے وطن کی طرف واپس کرنا [illegible] معاوضہ میں چھوڑ دینا [illegible] ان میں جو صورت امام کے نزدیک اصلح ہو اختیار کر سکتا ہے۔ حنفیہ کے ہاں بھی فتح القدیر اور شامی وغیرہ میں اسی طرح کی روایات موجود ہیں [illegible] قیدیوں کا ان کے وطن کی طرف واپس کرنا مصلحت [illegible] غلام بنانا [illegible] یا قتل کر دینا [illegible] حالات [illegible] ہو سکتی ہے البتہ غلام [illegible] کی کوشش کرنی روا رکھی گئی۔ (تفسیر عثمانی)

اَثْخَنْتُمُوْهُمْ۔ اثخنتم [illegible] سے مشتق ہے جس کا لغوی معنی ہے مقابلہ (کی طاقت) سے عاجز کر دینا۔ فَضَرْبَ الرِّقَابِ۔ اصل جملہ ہے فَاضْرِبُوا الرِّقَابَ ضربًا [illegible] سے مراد ہے قتل کر دینا [illegible] گردن کے کٹ جانے سے ہلاکت ہو جاتی ہے [illegible] موت ہو جاتی ہے [illegible] گردنیں کاٹنے کا حکم دیا یعنی قتل کر دو۔ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ۔ یہاں تک کہ جب تم خوب قتل کر چکو۔ اثخنتم۔ ثخن سے ماخوذ ہے [illegible] قتل کر چکو یعنی کثرت سے [illegible] کر چکو۔ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ۔ [illegible] گرفتار کر کے مضبوطی کے ساتھ باندھ لو تاکہ بھاگ نہ جائیں۔ وثاق اور وَثاق [illegible] جس سے کسی چیز کو باندھا جاتا ہے۔ فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ۔ [illegible] کرنے کے بعد [illegible] بغیر معاوضہ کے چھوڑ دو۔ وَاِمَّا فِدَآءً [illegible] کے لئے معاوضہ ادا کریں۔ (تفسیر مظہری)

**جنگی قیدیوں کا مسئلہ:** خلاصہ یہ ہے کہ آیت انفال نے جنگی قیدیوں کو بلا عوض چھوڑ دینا [illegible] ممنوع ہوتا اور سورۂ محمد کی آیت [illegible] نے ان دونوں چیزوں کو جائز قرار دیا ہے اسی لئے اکثر صحابہ اور ائمہ فقہاء نے فرمایا کہ سورۂ محمد کی آیت نے سورۂ انفال کی آیت کو منسوخ کر دیا۔ تفسیر مظہری میں ہے کہ حضرت عبداللہ بن عمر اور حسن اور عطاء اور اکثر صحابہ و جمہور فقہاء کا یہی قول ہے اور ائمہ فقہاء میں سے ثوری، شافعی، احمد، اسحاق رحمہم اللہ کا بھی یہی مذہب ہے اور ابن عباس نے فرمایا کہ غزوۂ بدر کے موقع پر مسلمانوں کی قلت تھی اس وقت [illegible] اور پھر جب مسلمانوں کی شوکت و تعداد بڑھ گئی تو سورۂ محمد میں [illegible] فداء کی اجازت دیدی گئی۔ تفسیر مظہری میں حضرت قاضی ثناء اللہ نے اس کو نقل کر کے فرمایا کہ یہی قول صحیح اور مختار ہے کیونکہ خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس پر عمل فرمایا اور آپ کے بعد خلفائے راشدین نے اس پر عمل فرمایا اس لئے یہ آیت سورۂ انفال کی آیت کے لئے ناسخ ہے [illegible] سورۂ انفال کی آیت غزوۂ بدر کے وقت نازل ہوئی [illegible] ہجرت کے [illegible] اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] قیدیوں کو [illegible] اور فرمایا ہے سورۂ محمد کی اس آیت [illegible] کے مطابق ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

### جنگی قیدیوں کے متعلق امام المسلمین کو چار اختیار

مذکورہ الصدر تقریر سے [illegible] ہو گیا کہ جنگی قیدیوں کے قتل اور [illegible] غلام بنا لینے کا جواز امام المسلمین [illegible] تمام امت کا اجماعی ہے [illegible] فرمایا [illegible] احسان کر [illegible] اور [illegible] کے نزدیک یہ دونوں صورتیں بھی جائز ہیں۔

[illegible]

## مسئلہ غلامی کے بارے میں اسلام پر اعتراض اور اس کا جواب

[illegible]

[illegible]

## غلاموں کے بارے میں اسلام کا نقطۂ نظر

[illegible]

اخوانکم جعلهم الله تحت ایدیکم فمن کان اخوه تحت یده فلیطعمه مما یاکل ولیلبسه مما یلبس ولا یکلفه ما یغلبه فان کلفه ما یغلبه فلیعنه ([illegible])

[illegible]

## اسلام نے غلاموں کو تمام معاشرتی حقوق دیئے

[illegible]

## اسلام میں غلاموں کی تعلیم و تربیت کے مواقع

[illegible]

## غلاموں کی آزادی کے لئے کافی مواقع

[illegible]

ہیں۔ کفارہ صوم، کفارۂ قتل، کفارۂ ظہار، کفارۂ یمین ان تمام صورتوں میں سب سے پہلا حکم یہ موجود ہے کہ کوئی غلام آزاد کیا جائے یہاں تک کہ حدیث میں یہ بھی فرمایا گیا ہے کہ اگر کسی نے غلام کو بلاوجہ طمانچہ مار دیا تو اس کا کفارہ یہ ہے کہ اسے آزاد کر دیا جائے۔ (صحیح مسلم۔ [illegible])

### بعض صحابہ کے آزاد کردہ غلاموں کی تعداد

صاحب النجم الوہاج نے بعض صحابہ کے آزاد کردہ غلاموں کی تعداد نقل کی ہے

| | | | |
|---|---|---|---|
| حضرت عائشہؓ | ۶۹ | حضرت عباسؓ | ۷۰ |
| حضرت حکیم بن حزامؓ | ۱۰۰ | حضرت عبد اللہ بن عمرؓ | ۱۰۰۰ |
| حضرت عثمان غنیؓ | ۲۰ | حضرت ذوالکلاع الحمیریؓ | ۸۰۰۰ (ایک ہی دن میں) |
| حضرت عبد الرحمن بن عوفؓ | ۳۰۰۰۰ | | |

(فتح الملہم شرح مسلم [illegible])

جس سے معلوم ہوتا ہے کہ صرف سات صحابہؓ نے ۳۹۲۵۹ غلام آزاد کئے اور ظاہر ہے کہ دوسرے ہزاروں صحابہ کے آزاد کردہ غلاموں کی تعداد اس سے کہیں زیادہ ہوگی۔

غرض اسلام نے غلامی کے مسئلہ میں جو بہت سی اصلاحات کیں ان کے پیش نظر منصف مزاج آدمی یہ نتیجہ نکالے بغیر نہیں رہ سکتا کہ دوسری اقوام کے [illegible] اسلام نے ان اصلاحات کے بعد جنگی قیدیوں کو غلام بنانے کی اجازت ان پر ایک رحمت بن گئی ہے۔

### اسلام نے جنگی قیدیوں کو غلام بنایا
### فرض نہیں بلکہ صرف جواز ہے

یہاں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ جنگی قیدیوں کو غلام بنانے کا حکم صرف جواز اور اجازت کی حد تک ہے یعنی اگر اسلامی حکومت مصالح کے مطابق سمجھے تو انہیں غلام بنا سکتی ہے، ایسا کرنا مستحب یا واجب نہیں ہے بلکہ قرآن و حدیث کے مجموعی ارشادات سے آزاد کرنے کا افضل ہونا سمجھ میں آتا ہے اور یہ اجازت بھی اس وقت تک کے لئے ہے جب تک اس کے خلاف دشمن سے کوئی معاہدہ نہ ہو، اگر دشمن سے یہ معاہدہ ہو جائے کہ نہ وہ ہمارے قیدیوں کو غلام بنائیں گے نہ ہم ان کے قیدیوں کو تو پھر اس معاہدہ کی پابندی لازم ہوگی۔ اور موجودہ زمانے کی بہت سی قوموں نے ایسا معاہدہ کیا ہوا ہے لہٰذا جو اسلامی ممالک اس معاہدہ میں شریک ہیں ان کے لئے غلام بنانا اس وقت تک جائز نہیں جب تک یہ معاہدہ قائم ہے۔ (معارف القرآن)

حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا

جب تک کہ رکھ دے لڑائی اپنے ہتھیار ☆

[illegible] جب تک لڑائی اپنے ہتھیار نہ رکھ دے [illegible] (تیسیر [illegible])

### حرب اور اوزار کا مطلب

مطلب یہ ہے کہ جنگ اسی طرح ہوتی رہے یہاں تک کہ لڑائی ختم ہو جائے اور جنگ کرنے والے صلح کر لیں [illegible] اوزار سے مراد ہیں ہتھیار [illegible] مشرک اپنے ہتھیاروں کا بوجھ [illegible] مطلب یہ [illegible] بعض اہل علم نے کہا ہے کہ حرب سے مراد [illegible] اور اوزار سے مراد ہیں مشرکوں کے گناہ اور شرک [illegible] مطلب یہ ہے کہ [illegible] مشرکوں کے [illegible] مسلمان ہو جائیں [illegible] اسلام میں داخل ہو گئے۔

### احکام اسلام کا مقصد

اللہ نے [illegible] آخر زمانہ میں [illegible] کا مسلسل حکم ہو جائے اور مشرکوں کا زور ٹوٹ جائے [illegible] حضرت عیسیٰؑ کے نزول کے بعد ہو جائیگا۔

### ظلم کے خلاف جہاد جاری رہے گا

حضرت عمران بن حصینؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میری امت کا ایک گروہ ہمیشہ حق پر جنگ کرتا رہے گا اپنے مخالفوں پر غالب رہے گا یہاں تک کہ ان کا آخری گروہ دجال سے جنگ کرے گا [illegible] جہاد جاری ہے [illegible] (تفسیر مظہری)

ذٰلِكَ ۛ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ

یہ سن چکے اور جو چاہے اللہ تو بدلہ لے لے ان سے

وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ

پر جانچنا چاہتا ہے تمہارے ایک سے دوسرے کو ☆

**قتل و جہاد کی حکمت:** یعنی خدا کو قدرت ہے کہ ان کافروں کو کوئی آسمانی عذاب بھیج کر عاد و ثمود وغیرہ کی طرح ہلاک کر دے۔ لیکن جہاد و قتال مشروع کر کے اپنے بندوں کا امتحان کرنا ہے، وہ دیکھنا ہے کہ کتنے مسلمان اللہ کے نام پر جان و مال نثار کرنے کے لئے تیار ہیں اور کفار

سے کتنے لوگ ان تبلیغی کارروائیوں سے بیدار ہوتے اور اس مہلت سے فائدہ اٹھاتے ہیں جو اللہ نے دے رکھی ہے کہ بجلی آسمانوں کی طرح ایک جگہ کر استعمال نہیں کرتا ہے۔ (تفسیر جمالی)

**جہاد کی ایک حکمت**: کافروں سے جہاد کا حکم مومنوں کی جانچ کرنے اور جہاد کرنے والوں کے ثواب کے مستحق ہو جانے اور دوسرے سبب سے جنگ کرنے کا، کافروں کی جانچ کرنے اور مسلمانوں نے جن کافروں کو مارا ہے وہ اس لئے کہ کچھ لوگ کفر سے باز آجائیں اور بعض لوگ کفر پر قائم رہ کر عذاب کے مستحق قرار پائے۔

حاصل یہ ہے کہ اللہ اگرچہ کافروں کے بیچ ہی سے اکھاڑ پھینکنے کی قدرت رکھتا ہے لیکن اس نے جو جہاد کا حکم دیا ہے یہ حکم حکمت اور مصلحت پر مبنی ہے اور مصلحت یہ ہے کہ مومنوں اور کافروں کی جانچ ہو جائے۔ (تفسیر مظہری)

## مشروعیت جہاد کی دوسری حکمت

وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ: اس آیت میں حق تعالیٰ نے ارشاد فرمایا کہ اس امت میں کفار سے جہاد و قتال کی مشروعیت درحقیقت ایک رحمت ہے۔ کیونکہ وہ آسمانی عذابوں کے قائم مقام ہے جو کفر و شرک اور اللہ سے بغاوت کی سزا پچھلی قوموں پر آسمانی اور زمینی عذابوں کے ذریعہ دی گئی ہے امت محمدیہ میں ایسا ہو سکتا تھا مگر رحمۃ للعالمین کی برکت سے اس امت کو ایسے عام عذابوں سے بچا لیا گیا اسکے قائم مقام جہاد شروع کر دیا گیا جس میں بہ نسبت عذاب عام کے بہت سی سہولتیں اور مصلحتیں ہیں۔ اول تو یہ کہ عذاب عام میں پوری قوم مرد و عورت بچے سب ہی تباہ ہوتے ہیں اور جہاد میں عورتیں بچے تو اس سے بری ہیں مرد بھی صرف وہی اس کی زد میں آتے ہیں جو اللہ کے دین کی مخالفت کرنیوالوں کے مقابلہ پر قتال کے لئے آئیں۔ پھر ان میں بھی سب مقتول نہیں ہوتے ان میں بہت سے لوگوں کو اسلام و ایمان کی توفیق نصیب ہو جاتی ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

اور جو لوگ مارے گئے اللہ کی راہ میں

فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ سَيَهْدِيْهِمْ

تو وہ ضائع نہ کرے گا ان کے کام ان کو راہ دیگا

وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝

اور سنوار دیگا ان کا حال

**شہید کامیاب ہیں**: اللہ تعالیٰ جو لوگ اللہ کے راستے میں شہید ہوتے ہیں وہ بظاہر ناکام نظر آتے ہیں لیکن حقیقت میں وہ کامیاب ہیں اللہ ان کے کام کو ضائع نہ کرے گا۔ بلکہ انجام کار ان کی محنت کا پھل دے گا ان کو جنت کی طرف راہ دے گا اور آخرت کے تمام منازل و مواقف میں ان کا حال درست کرے گا۔ (تفسیر حقانی)

**تین قسم کے شہید**: اصبہانی نے ترغیب میں اور بزار و بیہقی نے حضرت انس کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا شہید تین ہیں۔ نمبر ۱۔ ایک شخص وہ ہے جو اللہ کی راہ میں اپنی جان و مال کے ساتھ امید ثواب لے کر لڑنے کے لئے اور مسلمانوں کے گروہ کی تعداد بڑھانے کے لئے جہاد پر چڑھتا ہے نہ وہ خود مارنا چاہتا ہے نہ مارا جانا یہ شخص اگر مر جائے گا یا مارا جائے گا تو اس کے سارے گناہ معاف کر دیئے جائیں گے اور اس کو عذاب قبر سے محفوظ رکھا جائے گا اور (قیامت کے دن) بڑی گھبراہٹ سے مامون رہے گا حور عین سے اس کا جوڑ لگایا جائے گا عزت کا لباس اس کو پہنایا جائے گا اور اس کے سر پر وقار کا تاج رکھا جائے گا۔ دوسرا وہ شخص (شہید) ہے جو امید ثواب اپنی جان و مال کے ساتھ (راہ خدا میں) نکلتا ہے اور قتل کرنا چاہتا ہے لیکن مارا جانا نہیں چاہتا یہ شخص اگر مر جائے گا یا مارا جائے گا تو وہ ابراہیم خلیل اللہ کے ساتھ اللہ کے سامنے ایک با اقتدار بادشاہ کی مجلس صدق میں ہوگا تیسرا وہ شخص ہے جو اپنی جان و مال کے ساتھ امید ثواب لئے نکلتا ہے وہ چاہتا ہے کہ (دشمنوں کو) قتل کرے اور خود بھی مارا جائے یہ شخص اگر مر جائے گا یا مارا جائے گا تو قیامت کے دن تلوار سونتے ہوئے کندھے پر رکھے ہوئے آئے گا سب لوگ دوزانوں بیٹھے ہوں گے اور یہ شہداء کہیں گے ہم نے راہ خدا میں اپنے خون اور مال خرچ کئے ہیں ہمارے لئے جگہ کرو۔ وہ چلے چلے سب عرش کے نیچے پہنچ کر نور کے منبروں پر بیٹھ جائیں گے اور لوگوں کے فیصلے ہوتے ہوئے دیکھیں گے اور نہ ان کو موت کا غم ہوگا نہ برزخ کی فکر میں مبتلا ہوں گے نہ (صور اسرافیل سے) ان کو گھبراہٹ ہوگی نہ میزان حساب اور پل صراط کی فکر ہوگی جو کچھ مانگیں گے ان کو دیا جائے گا جس سے چاہیں سفارش کریں سفارش مان لی جائے گی جنت کا جو حصہ پسند کریں گے ان کو دیا جائے گا جنت میں جہاں چاہیں گے رہیں گے۔ واللہ اعلم۔

## اُحد کے دن کی صورتحال:

ابن ابی حاتم نے لکھا ہے کہ قتادہ نے کہا ہم سے ذکر کیا گیا ہے کہ آیت الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ احد کے دن نازل ہوئی مسلمانوں میں زخمی اور شہید پڑے ہوئے تھے اور مشرکوں نے پکار کر کہا تھا اُعْلُ هُبَل (ہبل سربلند ہو) اس کے جواب میں مسلمانوں نے نعرہ بلند کیا اللہ اعلیٰ و اجل (اللہ سب سے اونچا اور سب سے زیادہ بزرگی والا ہے) مشرکوں نے کہا اِنَّ لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ (عزیٰ دیوی ہماری ہے تمہاری کوئی عزیٰ نہیں) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم کہو اَللّٰهُ مَوْلٰنَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ (اللہ ہمارا مولیٰ ہے اور تمہارا کوئی کارساز نہیں) (تفسیر مظہری)

### شہید کے لیے انعامات:

ایک یہ کہ حق تعالیٰ ان کو ہدایت کرے گا۔ دوسرے ذہن کے سب حالات درست کر دے گا۔ حالات سے مراد دنیا و آخرت دونوں جہان کے حالات ہیں۔ دنیا میں تو یہ کہ وہ شخص جہاد میں شریک ہوا اگر چہ وہ شہید نہ ہو سلامت رہا وہ بھی شہید کے ثواب کا مستحق ہو گیا۔ اور آخرت میں یہ کہ وہ قبر کے عذاب سے محشر کی پریشانی سے نجات دے گا۔ اور اگر کچھ لوگوں کے حقوق اس کے ذمہ رہ گئے ہیں تو حق تعالیٰ صاحب حق کو اس سے راضی کر کے اس کی خلاصی کرا دیں گے۔ (کما ورد فی روایۃ البیہقی ... معارف مفتی اعظم)

## تین قسم کے آدمی جن کا قرض اللہ تعالیٰ ادا کریں گے

ابو نعیم نے حلیہ میں حضرت سہل بن سعد کی روایت سے اور بیہقی نے شعب الایمان میں نیز بزار نے حضرت ابن عمر کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تین (قسم کے) آدمیوں کی طرف سے قیامت کے دن اللہ (ان کا قرضہ) ادا فرما دے گا۔

نمبر ۱- وہ شخص جس کو اندیشہ ہو کہ دشمن مسلمانوں کے کسی لشکر پر حملہ کر دے گا اور اس کے پاس طاقت نہ ہو اس نے قرض لے کر ہتھیار خرید کر قوت حاصل کر لی اور قرض ادا کرنے سے پہلے مر جائے تو اللہ اس کی طرف سے اس کا قرض ادا کر دے گا۔

نمبر ۲- وہ شخص جس کا مسلمان بھائی مر جائے اور اس کے پاس کفن نہ ہو کسی نے اس کے لئے قرض لے کر کفن خرید لے اور ادائے قرض کی قدرت حاصل ہونے سے پہلے مر جائے اس کا قرض بھی اللہ ادا کر دے گا۔

نمبر ۳- وہ شخص جس کو (نفسانی خواہش سے مغلوب ہو کر) اللہ کا خوف ہو (یعنی قرض لے کر) کسی عورت سے نکاح کر لے اور اس طرح پاک دامن رہے اور ادائے قرض (پر قدرت حاصل ہونے) سے پہلے مر جائے تو اس کا قرض بھی اللہ ادا کر دے گا۔ (تفسیر مظہری)

**وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝**

اور داخل کرے گا ان کو بہشت میں جو معلوم کرا دی ہے ان کو

یعنی جس جنت کا وعدہ ان کو انبیاء علیہم السلام کی زبانی اور اچھے اعمال کے صلہ میں ملا تھا اس میں داخل کئے جائیں گے اور وہاں پہنچ کر ہر ایک اپنے ٹھکانے پر خود بخود پہنچے گا گویا ہمیشہ سے وہیں رہتا تھا۔ (تفسیر عثمانی) حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے "عرفها لهم" کے معنی "طیبها لهم" کئے ہیں یعنی جنت ان کے لئے خوشبوؤں سے مہکا دی گئی ہے۔ (تفسیر مظہری)

## جنتیوں کو اپنی بیویوں اور گھروں کی صحیح شناخت ہو گی

حضرت ابو سعید خدری کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قسم ہے اس کی جس نے مجھے (نبی برحق) بنا کر بھیجا ہے تم دنیا میں اپنی بیویوں اور اپنے گھروں کو اس سے زیادہ شناخت نہیں کرتے جتنی شناخت اہل جنت اپنی بیویوں اور اپنے گھروں کی کرتے ہوں گے۔ ابن جریر نے اپنی تفسیر میں ایک طویل حدیث کے ضمن میں اس کا بیان کیا ہے بیہقی نے البعث میں اور طبرانی نے ... وغیرہ نے بھی یہ حدیث بیان کی ہے۔ (تفسیر مظہری)

## خوشبو سے مہکائے ہوئے مکان

حضرت عبداللہ بن عباس عرفها لهم کی تفسیر میں یہی فرمایا کرتے تھے طیبها لهم۔ طیب کے معنی خوشبو کے ہیں یعنی وہ مکانات جنتیوں کے واسطے خوشبوؤں سے مہکائے ہوئے ہوں گے۔ (معارف کاندھلوی)

**يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ**

اے ایمان والو اگر تم مدد کرو گے اللہ کی

یعنی اللہ کے دین کی اور اس کے پیغمبر کی۔ (تفسیر عثمانی)

**يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝**

تو وہ تمہاری مدد کرے گا اور جما دے گا تمہارے پاؤں

**مومنوں کی ہمت افزائی:** یعنی اگر تم اللہ کی مدد کرو گے تو تمہارے قدم نہیں ڈگمگائیں گے اور ... ثابت قدم رہو گے جیسے ... حضرت ... صاحب لکھتے ہیں ... کافروں کو مسلمان کرنے کے لیے ... مشکور نہیں ... اللہ کی طرف سے کام ... (تفسیر عثمانی)

ویثبت اقدامکم - یعنی کافروں سے جہاد کرتے وقت اور حقوق اسلام ادا کرتے وقت ثابت قدم رکھے گا۔ (تفسیر مظہری)

**وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ**

اور جو لوگ کہ منکر ہوئے سو وہ ٹھوکر کھائیں

**وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝**

اور کھوئے ان کے کیے کام

**کافروں کی بربادی:** یعنی جس طرح مومنین کے قدم جما دیے

[illegible]

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللّٰهُ

[illegible]

فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ

[illegible]

## ہلاکت کا سبب

[illegible]

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا

[illegible]

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن

[illegible]

قَبْلِهِمْ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ

[illegible]

أَمْثَالُهَا

[illegible]

[illegible]

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا

[illegible]

وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ

[illegible]

إِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا

[illegible]

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي

[illegible]

مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

[illegible]

## اللہ مومنین کا مددگار ہے

[illegible]

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً

مِّن قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ

أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ

كَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا

أَهْوَاءَهُم

وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ

كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ

کہ حق پرستی کی شان ان صفت والوں کے مناسب ہے۔ (تفسیر مظہری)

## مومن و کافر برابر نہیں ہو سکتے

افمن کان ... مطلب یہ ہے کہ دونوں فریق ایک جیسے نہیں ہو سکتے، مومن کا کردار [illegible] ہے اور کافر کا قول و کردار [illegible] (یعنی ایمان) بالکل حق قرآن [illegible] ہے جو اس کے رب کی طرف سے آیا ہے [illegible] شرک اور بد اعمالی خوبصورت شکل میں شیطان سے آتا ہے اور وہ اپنی نفسانی خواہشات پر چلنا [illegible] دونوں فریق برابر نہیں ہو سکتے [illegible]۔ (تفسیر مظہری)

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ

حال اس جنت کا جس کا وعدہ پرہیزگاروں سے ہے

فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ

اس میں نہریں ہیں پانی کی جو بو نہیں کر گیا

جنت کا پانی [illegible] کسی چیز کے ملنے سے [illegible] تبدیل نہیں ہوگا [illegible]۔ (تفسیر مظہری)

## اعلیٰ ترین جنت کی دعا مانگو

ایک حدیث میں ہے آپ (صلی اللہ علیہ وسلم) نے فرمایا ہے کہ جب تم اللہ سے جنت کے لئے دعا مانگو تو فردوس کا سوال کیا کرو کیونکہ فردوس جنت کا درمیانی اور اعلیٰ ترین مقام ہے جس سے تمام نہریں جنت کی بہہ رہی ہیں اور اس کے اوپر عرش رحمٰن ہے۔ (مظہری)

## جنت کا پانی، دودھ اور شراب

جنت کے پانی، دودھ اور شراب کی [illegible] لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ [illegible] جنت کی نہریں شہد کا [illegible] دودھ، شراب، شہد اور پانی [illegible] جنت کی چیزوں کو دنیا کی چیزوں پر قیاس [illegible] وہاں کی ہر چیز کی لذت و کیفیت [illegible]

کبھی نہیں پھٹیں گے۔ (معارف)

جنت میں چار دریا: حضرت معاویہ بن حیدہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جنت میں ایک دریا پانی کا، ایک دریا شہد کا، ایک دریا دودھ کا اور ایک دریا شراب کا ہے، پھر ان سے نہریں نکلتی ہیں۔ رواہ البیہقی و الترمذی۔ ترمذی نے اس کو حسن کہا ہے۔ حضرت ابو ہریرہ کی روایت ہے [illegible] جنت کی نہریں مشک کے پہاڑ سے پھوٹتی ہیں۔ [illegible]

## جنت کی نہریں سطح زمین کے اوپر ہیں

مسروق کا بیان ہے کہ جنت کی نہریں بغیر گڑھے کے (ہموار سطح پر) چلتی ہیں۔ رواہ ابن ابی شیبہ و البیہقی۔

حضرت انس راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا شاید تم خیال کرتے ہو کہ جنت کی نہریں زمین کے گڑھے میں (بہتی) ہیں، نہیں خدا کی قسم وہ سطح زمین پر بہتی ہیں، ان کے دونوں کنارے موتیوں کے خیمے ہوں گے اور ان کی مٹی خالص مشک ہوگی۔

## سیحون، جیحون، فرات اور نیل

حضرت ابو ہریرہ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا سیحون اور جیحون اور فرات اور نیل سب جنت کی نہروں سے ہیں۔ رواہ مسلم۔ حضرت کعب [illegible] فرمایا چار (دریا) جنت کی نہریں (دریا) ہیں [illegible] فرات [illegible] سیحون اور جیحون [illegible] جنت کے [illegible] شہد کا دریا [illegible] دودھ کا دریا [illegible] شراب کا دریا [illegible] پانی کا [illegible]۔ رواہ البیہقی۔

بغوی نے کعب احبار کا قول اس طرح بیان کیا ہے [illegible] جنتیوں کے پانی کا دریا ہے اور فرات [illegible] دودھ کا دریا ہے [illegible] شہد کا دریا [illegible] یہ چاروں دریا [illegible] نکلتے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ

اور نہریں ہیں دودھ کی جس کا مزہ نہیں بدلا

جنت میں دودھ کے [illegible] مزے میں [illegible] تبدیلی نہیں آئے گی۔ (تفسیر حقانی)

## وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ

اور نہریں ہیں شراب کی جس میں مزہ ہے پینے والوں کے لئے

[illegible]

### جنت کا دودھ شراب شہد

[illegible]

### جنت کا نہری نظام

[illegible]

## وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى

اور نہریں ہیں شہد کی جھاگ [illegible]

جو ہر حیات غذائے لطیف سامان سرور اور شفاء

[illegible]

## وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ

اور ان کے لئے وہاں سب طرح کے میوے ہیں

[illegible]

## وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ

اور معافی ہے ان کے رب سے

[illegible]

## كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً

برابر ہے اس کے جو ہمیشہ رہے آگ میں اور ان کو پلایا جائے کھولتا

## حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ

پانی تو ٹکڑے کر ڈالے ان کی آنتوں کو

[illegible]

## وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ حَتّٰٓى

اور بعض ان میں ہیں کہ کان لگاتے ہیں تیری طرف یہاں تک کہ

حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ

اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى

قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى

وَاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ

تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا

فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ

[illegible]

## توبہ میں تاخیر نہ کرو:

[illegible]

**قیامت قریب ہے** [illegible]

[illegible]

**قیامت کی نشانیاں** [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

[illegible]

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

[illegible]

وَالْمُؤْمِنٰتِ

[illegible]

[illegible]

پہلو چھوڑ کر دوسرا اچھا پہلو اختیار کرنا گو وہ حدود جواز و احسان میں ہو مقربین کے حق میں ذنب (گناہ) سمجھا جاتا ہے۔ "حسنات الابرار سیئات المقربین" کے یہی معنی ہیں۔ حدیث میں ہے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ایک مجلس میں سو بار استغفار فرماتے تھے۔ (مسلم) "فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" کا خطاب ہر مخاطب کو ہے اور اگر خاص نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم مخاطب ہوں تو مطلب یہ ہے کہ اس علم پر برابر قائم رہیے اور استغفار کرتے رہیے اور "فاعلم" کی تفریع اسی طرح ہے کہ قیامت آنے کے بعد کسی کا ایمان و توبہ وغیرہ نافع نہیں تو آدمی کو چاہیے کہ وقت سے پہلے توحید و معرفت حاصل کرے۔ ایمان و استغفار کے طریق پر مستقیم رہے۔ (تفسیر عثمانی)

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ۔ تو آپ یقین رکھیے کہ بجز اللہ کے اور کوئی قابل عبادت نہیں ہے۔ فاعلم میں فاء سببیہ ہے یعنی جب آپ کا مومنوں کا خوش نصیب ہونا اور کافروں کا بدنصیب ہونا معلوم ہوگیا تو آپ اس پر محمد صلی اللہ علیہ وسلم اللہ کی وحدانیت اور نفس کے معالج ہونے کا علم حاصل ... دنیا میں رہتے ہوئے قیامت کے دن کی ہم آپ کے لئے مقید ہوں۔

## آنحضرت کو استغفار کا حکم دینے کا مطلب

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اگرچہ ہر گناہ سے معصوم تھے کسی گناہ کا دھوکا آپ سے ممکن نہ تھا لیکن چونکہ حق عبادت اللہ کی عظمت و جلال کے مقابلے میں ہر عمل قاصر ہے (عبادت کا حق کون ادا کر سکتا ہے) اسی لئے حکم دیا کہ آپ کوئی عبادت ادا کرنے کے بعد قاصر سمجھتے ہوئے استغفار کیجئے اور آپ کی امت کو بھی آپ کی پیروی کرنی چاہئے۔

**ابلیس کا مقولہ:** حضرت ابوبکر صدیق کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا لا الٰہ الا اللہ اور استغفار کی کثرت کر لو کیونکہ ابلیس کا مقولہ ہے میں نے گناہوں (کا ارتکاب) کرا کے لوگوں کو تباہ کر دیا لیکن انہوں نے لا الٰہ الا اللہ اور استغفار (کی کثرت) سے مجھے تباہ کر دیا جب میں نے یہ دیکھا تو (ان کے مقابلہ میں) نفسانی خواہشات (پیدا کرنے کا ذریعہ) سے تباہ کیا کہ وہ اپنے آپ کو ہدایت یافتہ سمجھتے رہے۔

## کلمہ لا الٰہ الا اللہ پر مرنے والا

حضرت عثمان بن عبداللہ کے بیٹے یحییٰ کی روایت ہے کہ حضرت عمر نے حضرت طلحہ کو غمگین دیکھ کر وجہ دریافت کی تو حضرت طلحہ نے کہا میں نے اللہ کے رسول سے سنا تھا آپ صلی اللہ علیہ وسلم فرما رہے تھے مجھے ایک ایسی بات معلوم ہے کہ اگر مرتے وقت (کوئی) اس کو کہے گا تو اللہ موت کی سختی اس سے دور کر دے گا اس کا رنگ چمک جائے گا (یعنی چہرہ نورانی ہو جائے گا) اور (کیفیت) اس پر وہ ہوگی جو اس کے لئے مسرت بخش ہوں گی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے دریافت نہیں کر سکا کہ وہ بات کیا ہے (اسی بات نے مجھے غمگین کر دیا) اسی حالت میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات ہوگئی حضرت عمر نے فرمایا مجھے وہ بات معلوم ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تو کوئی بات اس کلمہ سے بہتر نہیں ہے جو (ابو طالب) کے مرنے سے پہلے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان پر پیش کی تھی لا الٰہ الا اللہ (کا اقرار) حضرت طلحہ نے فرمایا واللہ یہی بات تھی۔ حضرت عثمان راوی ہیں کہ رسول اللہ نے فرمایا جو شخص اس حالت میں مرے کہ لا الٰہ الا اللہ پر یقین ہو وہ جنت میں (بغیر حساب) داخل ہو جائے گا۔ (مظہری)

## ایک حدیث اور اس کی صوفیانہ تشریح

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میرے دل پر (بھی) [illegible] زنگ آ جاتا ہے اور روزانہ سو مرتبہ میں اللہ سے معافی کا طلب گار ہوتا ہوں۔ رواہ مسلم و ابو داؤد و النسائی من حدیث الاغر المزنی۔

میں کہتا ہوں دل پر زنگ (غین) آنے سے شاید وہ کیفیت مراد ہے جو امکان ذاتی کی وجہ سے پیدا ہوتی ہے اور ممکن اپنے تمام (وجود اور اس کے توابع) کمالات کو اپنی ذات کی طرف منسوب کرتا ہے (اور اس طرح امکان کی تاریکی) یہی مطلب ... ذات ... ہو جاتی ہے۔

مجدد الف ثانی نے ایک مکتوب میں لکھا ہے جو شخص اپنے نفس کی خوبی کا قائل ہے وہ اللہ کی معرفت سے ... اس کے لئے تمام ... بے سود ... ہے ممکن ... آپ اگر ... چاہتا ... جانتا اور کافر فرنگ سے بدتر جانتا تو اس کی فضیلت دین کی ضرورت ... ہے۔ حضرت مجدد نے جواب دیا ہر ممکن موجود ہے قسمت ... سے کوئی ممکن خالی نہیں۔ وجود اور اس کے تابع صفات کا نور ... ممکن سے ... ہے اور ... کمالات کی نسبت حق تعالیٰ کی جانب صوفی کرتا ہے اور "وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ" کے حکم کی تعمیل میں ... جاتا ہے ... سمجھ ... ہے اور اس کا نفس (ممکن بالذات ہونے کی وجہ سے) ... چونکہ حقیقت اور عدم کا ... ادراک کے ... اپنے نفس کو کافر فرنگ سے بھی بدتر جاننا ... ایمان ... ہوتا ہے ... نفس کی جانب منسوب کرتے ہیں ... (تفسیر مظہری)

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے لفظ "ذنب" کی توجیہ

اس جگہ یہ ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ہر لحظہ درجات کی ترقی میں

جنھیں کا وعدہ ہے اور جو تمام کوتاہی گزشتہ کوتاہی کی نسبت حضرت والد ہی کے مقام پر پہنچانے والی ہوتی تھی۔ اور آپ نے قلب و ذہن میں جن مدارج، مقامات کی آرزو ہوتی تھی ان تک آپ کا نہ پہنچ سکنا۔ یہ محسوس کرنا کہ ابھی کچھ تقصیر کا وجود ہے جس کو ذنب کے لفظ سے تعبیر کیا گیا اس پر گواہ یہ حکم ہے جو اسی کی تکمیل میں آپ کا یہ دستور العمل تھا جو مسلم شریف میں ہے۔ انی لاستغفر الله کل یوم مائة مرة کہ میں روزانہ اللہ سے استغفار کرتا ہوں سو مرتبہ (مسند احمد بن حنبل۔ جامع ترمذی) امام مسلم، ابوداؤد، نسائی نے اغر مزنی سے روایت کیا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا۔

انہ لیغان علی قلبی وانی لاستغفر الله فی کل یوم مائة مرة کہ میرے قلب پر ایک قسم کی رکاوٹ یا تکدر محسوس ہوتا ہے اور البتہ میں اللہ رب العزت سے استغفار کرتا ہوں ہر روز ایک سو مرتبہ۔ حضرت ابوموسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان نقل کرتے تھے آپ نے فرمایا جب بھی میں صبح کرتا ہوں تو کبھی ایسا نہیں ہوتا کہ میں سو مرتبہ استغفار نہ کرلوں۔ معلوم ہوا کہ حق یہ ہے ہر دن کی صبح کے وقت ہی یہ معمول ہوا ہے اور نہ آپ کا تو ایک ایک مجلس میں ایک ہی دن میں متعدد بار سو مرتبہ سے زیادہ استغفار کی تعداد ہو جاتی تھی جیسا کہ حضرت عبداللہ بن عمرؓ فرماتے ہیں کہ ہم ایک ہی نشست میں آپ کے استغفار شمار کرتے تو سو مرتبہ سے زیادہ ہو جاتا تھا۔

## دل پر رکاوٹ آنے کی وضاحت

اس رکاوٹ کا سبب مراتب عالیہ کی طرف عروج و ترقی ہی تھی جس کا ذکر حدیث میں مذکور ہوا۔ اس کی حقیقت یہ معلوم ہوتی ہے کہ رحمۃ للعالمین کی ظاہری اور باطنی دو جانبیں ہیں ایک اشتغال الی الحق اور دوسری جانب اشتغال مع الخلق ہے اگرچہ آپ کے اشتغال مع الخلق بھی جو کہ امت کی تعلیم و تربیت کی صورت تھا اشتغال الی الحق سے بظاہر عمل نظر آتا ہے تو اسی کو آپ تقصیر شمار فرماتے اور اسی پر مسلسل استغفار جاری رکھتے جو انہ لیغان علی قلبی میں فرمایا گیا۔ (معارف کاندھلوی)

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ۝

اور اللہ کو معلوم ہے بازگشت تمہاری اور گھر تمہارا ☆

اصلی گھر ☆ یعنی جتنے پردوں میں پھرو گے پھر جنت یا دوزخ میں پہنچ کے جو تمہارا اصلی گھر ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**متقلب اور مثویٰ کا معنی:** حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا متقلب یعنی مشاغل دنیا میں گھومنا پھرنا اور مثویٰ سے مراد ہے آخرت میں جنت یا دوزخ کی طرف جانا۔ عکرمہ کا قول ہے کہ متقلبکم سے مراد ہے دن میں کام کاج اور مثواکم سے مراد ہے رات کو خواب گاہ میں بستر پر

ہو جانا۔ عکرمہ نے کہا متقلبکم یعنی پشت پدر سے رحم مادر میں آنا اور مثواکم سے مراد ہے زمین میں ٹھہرنا۔ ابن کیسان نے کہا متقلبکم یعنی پشت سے رحم میں آنا اور مثواکم یعنی قبروں میں قیام کرنا۔ سب کا حاصل مطلب یہ ہے کہ تمہارا ہر حال اللہ جانتا ہے اس سے تمہاری کوئی حالت پوشیدہ نہیں اس لئے اس سے ڈرو اور طلب مغفرت کرو۔ (تفسیر مظہری)

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا

اور کہتے ہیں ایمان والے کیوں نہ

نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ

اتری ایک سورت ☆

☆ یعنی ایسی سورت جس میں جہاد کی اجازت ہو۔ (تفسیر عثمانی)

ویقول الذین امنوا۔ یعنی جہاد کی اجازت نہ ملنے کی وجہ سے مسلمان کہتے ہیں۔ لولا نزلت سورة۔ یعنی کوئی ایسی سورت کیوں نہیں نازل کی گئی جس میں جہاد کا حکم ہوتا۔ (تفسیر مظہری)

فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ

پھر جب اتری ایک سورت جانچی ہوئی ☆

سورۃ محکمۃ ☆ یعنی جچے تلے احکام پر مشتمل ہے جو غیر منسوخ ہیں اور ٹھیک اپنے وقت پر اترتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**محکمۃ کا معنی:** محکمہ کے لفظی معنی مضبوط و مستحکم کے ہیں اس لفظی معنی کے اعتبار سے تو قرآن کی ہر سورت محکم ہے لیکن اصطلاح شریعت میں محکم بمقابلہ منسوخ استعمال ہوتا ہے یعنی جو آیت منسوخ نہ ہو ... قتادہؓ نے فرمایا کہ جتنی سورتوں میں قتال و جہاد کے احکام آئے ہیں وہ سب محکم ہیں۔ یہاں چونکہ اصل مقصود حکم جہاد اسی پر عمل ہے اس لئے سورت کے ساتھ محکمہ کا لفظ بڑھا کر جہاد کی طرف اشارہ کر دیا جس کی آگے تصریح آرہی ہے۔ (قرطبی کا معارف مفتی اعظم)

وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ

اور ذکر ہوا اس میں لڑائی کا تو تو دیکھے

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ

جن کے دل میں روگ ہے تکتے ہیں

| |
|---|
| إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ |
| تیری طرف جیسے تکتا ہے کوئی بے ہوشی پڑا ہوا مرنے کے وقت |
| فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ۝ |
| سو خرابی ہے ان کی |

**منافقوں پر حکم جہاد کا اثر:** حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ "مسلمان صورت مانگتے تھے کسی کافر سے لڑائی لینا ہے [illegible] جہاد کا حکم [illegible] ہیں۔ جب جہاد کا حکم آیا تو منافق اور کچے لوگوں پر بھاری ہوا [illegible] آنکھوں سے پیغمبر کی طرف دیکھنے لگے کہ کاش ہم کو اس حکم سے معاف رکھیں [illegible] جیسے مرتے وقت آنکھوں کا نور [illegible] ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**جہاد کا حکم:** قتادہ نے کہا جس سورت میں جہاد کا حکم دیا گیا وہ محکم ہے [illegible] پہلے [illegible] کا حکم دیا گیا [illegible] منسوخ کرنے والا ہے۔ حکم جہاد قیامت تک جاری رہے گا۔ جہاد کا حکم جس سورت میں نازل ہوا منافقوں پر اس سورت کا نزول سارے قرآن سے زیادہ شاق اور دشوار ہوا۔

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ - مرض سے مراد ہے دل کی [illegible] اور ضعف۔ ایسے [illegible] لوگ۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ |
| حکم ماننا ہے اور بھلی بات کہنی پھر جب تاکید ہو |
| الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا |
| کام کی تو اگر سچے رہیں اللہ سے تو ان کا بھلا |
| لَّهُمْ ۝ |
| ہے |

**مخلص ہونے کا تقاضا:** یعنی ظاہر میں تو سب فرمانبرداری کا اظہار اور زبان سے اطاعت [illegible] کرتے ہیں۔ مگر کام کی بات یہ ہے کہ [illegible] عمل (حکم ماننا اور [illegible]) کا علم۔ [illegible] جہاد [illegible] کے سامنے سچے ثابت ہوں تو یہ صورت ان کی بہتری اور بھلائی کی ہوتی۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں

[illegible] حکم شرعی [illegible] سے [illegible] حکم ہر طرح ماننا [illegible] بات [illegible] کہ [illegible]۔ ہاں جب [illegible] وقت [illegible] ہیں [illegible]

ترکیب نحوی: الامر [illegible] پہلے مضاف محذوف ہے [illegible] اور [illegible] حکم [illegible] جب جہاد پر [illegible] مستعد ہو گئے۔

[illegible] یعنی [illegible] سے [illegible] کے نزدیک شرط [illegible] جزا [illegible] جب جہاد لازم ہو گیا تو انہوں نے اپنے قول [illegible] جہاد کو [illegible] سمجھا [illegible] اپنی [illegible]

| |
|---|
| فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن |
| پھر تم سے یہ بھی توقع ہے کہ اگر تم کو حکومت مل جائے |
| تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا |
| تو خرابی ڈالو ملک میں اور قطع کرو |
| أَرْحَامَكُمْ ۝ |
| اپنی قرابتیں |

**اگر اقتدار ملے تو فساد پھیلاؤ گے:** [illegible] اقتدار کے نشہ میں لوگ [illegible] انصاف پر قائم نہیں رہا کرتے۔ [illegible] جان اور مال کی [illegible] اور [illegible] بھی بگڑے [illegible] آخر [illegible] ایک دوسرے سے قطع تعلق۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "[illegible] جان سے تنگ ہو کر [illegible] اور اگر اللہ تم کو [illegible] کرا دے تو [illegible]" ([illegible]) [illegible] قدس اللہ روحہ نے "تولیتم" کا ترجمہ حکومت مل جائے [illegible] سے منقول ہیں [illegible] "تولی" کے معنی [illegible] مطلب لیتے ہیں کہ اگر تم [illegible] سے [illegible] ہو گئے تو [illegible] ہو جائیں گے [illegible] قائم [illegible] ہے [illegible] نقصان [illegible] کہ [illegible] فساد [illegible] ہے [illegible] تم [illegible] سے [illegible] زمانہ جاہلیت کی [illegible] کے [illegible] قطع [illegible] ہو جاتے تھے [illegible] پھر تم [illegible] ہو جاؤ گے اور اگر [illegible] خلاف [illegible] ایک مطلب [illegible] جہاد سے اعراض کرو گے

[illegible]

لیس الواصل بالمکافی [illegible]

[illegible]

صلہ رحمی کی فضیلت [illegible]

یہ حدیث ترمذی میں بھی ہے اور امام ترمذی نے حسن صحیح کہا ہے۔ حضرت عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بیماری کے لئے لوگ گئے تو آپ فرمانے لگے تم نے صلہ رحمی کی ہے۔ اور یہ حدیث بھی ہے آپ فرماتے ہیں رحم عرش سے لٹکا ہوا ہے وہ کہتا ہے کہ جو مجھے ملائے اللہ اسے ملائے، اور جس نے مجھے کاٹا اللہ اسے کاٹے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں (سب سے زیادہ گناہ کا) یہ ہے کہ ایک شخص جانتے ہوئے کسی جگہ ہو بلا تعلقی قرابت والوں سے بدسلوکی کرے اور اسی وقت ایسے لوگوں پر لعنت خدا نازل ہوتی ہے اور ان کے کان بہرے اور آنکھیں اندھی کر دی جاتی ہیں، سالہا سال تک زندگی بہت کی ہو چھیں ہیں (واللہ اعلم۔ ابن کثیر)

| |
|---|
| أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ |
| ایسے لوگ ہیں جن پر لعنت کی اللہ نے |
| فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ |
| پھر کر دیا ان کو بہرا اور اندھی کر دیں ان کی آنکھیں |

## فسادیوں اور ظالموں پر لعنت

یعنی حکومت کے غرور میں اللہ سے بہرے ہو کر ظلم کرنے لگے۔ پھر نصیحت کا سننا نصیب نہ ہوا، بلکہ خدا کی پھٹکار نے اعلیٰ سے بھی غافل بنا دیا اور یہ سب کچھ ان کو اپنے استعداد سے ملا۔ (تفسیر عثمانی)

اولئک۔ یعنی یہ لوگ زمین میں تباہی پھیلانے والے اور قرابت داروں سے قطع تعلق کرنے والے۔

الذین لعنہم اللہ۔ وہ لوگ ہیں جن کو اللہ نے اپنی رحمت سے دور کر دیا ہے۔ خارج کر دیا ہے۔

فاصمہم۔ اور کلام حق سننے سے بہرا کر دیا ہے اور تصور حق دیکھنے سے اندھا بنا دیا ہے (اسی لئے کلام حق سننے سے وہ بہرے ہیں اور چشم حقیقت بین سے محروم ہیں)۔ (تفسیر مظہری)

## حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کا استنباط:

حضرت فاروق اعظم نے اسی آیت سے ام الولد کی بیع کو حرام قرار دیا یعنی وہ مملوکہ کنیز جس سے کوئی اولاد پیدا ہو گئی ہو اس کی فروخت کرنا اس اولاد سے قطع رحمی کا ذریعہ ہے جو موجب لعنت ہے اس لئے ام ولد کی فروخت کو حرام قرار دیا (رواہ الحاکم و صححہ وابن المنذر و ابن مردویہ)۔

## کسی معین شخص پر لعنت کا حکم اور لعن یزید کی بحث

اور حضرت امام احمد کے صاحبزادے عبد اللہ نے ان سے یزید پر لعنت

کی جائے جس پر اللہ نے اپنی کتاب میں لعنت کی ہے۔ سو عبد اللہ نے عرض کیا کہ میں نے تو قرآن کو پڑھا اس میں کہیں یزید پر لعنت نہیں آئی آپ نے یہ آیت پڑھی اور فرمایا کہ یزید سے زیادہ کون قطع رحم کرنے والا ہوگا جس نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے نبیرہ کو ایذا دی ہو یہ بات نہیں کہ کسی معین شخص پر لعنت کرنا جائز ہے جب تک کہ اس کا کفر پر مرنا یقینی طور پر ثابت نہ ہو۔ ہاں نام وصف کے ساتھ لعنت کرنا جائز ہے جیسے لعنۃ اللہ علی الکاذبین، لعنۃ اللہ علی المفسدین ولعنۃ اللہ علی قاطع الرحم وغیرہ (روح المعانی میں اس جگہ اس مسئلہ پر مفصل بحث کی ہے علماء اسے دیکھیں) (معارف القرآن مفتی اعظم)

| |
|---|
| أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ |
| کیا دھیان نہیں کرتے قرآن میں یا |
| قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا |
| دلوں پر لگ رہے ہیں ان کے قفل |

یعنی منافق قرآن میں غور نہیں کرتے یا ان کی شرارتوں کی بدولت دلوں پر قفل پڑ گئے ہیں کہ نصیحت کے اندر جانے کا راستہ ہی نہیں رہا۔ اگر قرآن کے کہنے کی توفیق ہوتی تو آسانی سمجھ لیتے کہ جہاد میں کس قدر دنیوی و اخروی فوائد ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

## آیت کی وضاحت علم معانی کی روشنی میں

یا استفہام انکاری ہے۔ قلوب کو اقفال سے تخصیص دی اور نکرہ لانا ہے تشکیل کے لئے اور ابہام کے لئے کہ مناسب ضرور ہے کہ ایسی شدت کو حیثیت کے لئے ثابت کی ہے پھر اقفال کی قلوب کی طرف وضاحت کی گئی ہے تا کہ یہ معلوم ہو جائے کہ دلوں پر جو قفل پڑے ہیں وہ وہ مستقل معروف قفل نہیں ہیں بلکہ غیر معمولی تالے ہیں جو قلوب کے مناسب ہیں (یعنی قفلوں سے مراد لوہے پیتل وغیرہ کے قفل نہیں ہیں) تو یہ بصورت کنایہ یہ بات بتائی کہ ان کے اندر استعداد ہی نہیں ہے ان کے دل نصیحت پذیری کی قابلیت کھو چکے اگر اخروی پیغام قرآن پر غور بھی کریں تب بھی نہیں سمجھ سکیں گے۔

## ایک نوجوان کا واقعہ:

بغوی نے بروایت ہشام بن عروہ کا بیان نقل کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے آیت أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا۔ تلاوت فرمائی ایک شخص جوان نے یہ آیت سن کر کہا کیوں نہیں یقیناً ان دلوں پر تالے پڑے ہیں اللہ ہی ان کو دور کرے یہاں تالے دلوں پر پڑے رہیں گے

[illegible]

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم

[illegible]

مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى

[illegible]

الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ

[illegible]

## منافقین شیطان کے چکر میں ہیں

[illegible]

[illegible]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا

[illegible]

مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ

[illegible]

الْأَمْرِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ

[illegible]

## منافقوں کا یہودیوں سے گٹھ جوڑ

[illegible]

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ

[illegible]

وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ

[illegible]

نفاق کا مرض [illegible]

[illegible]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ

[illegible]

اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ

[illegible]

أَعْمَالَهُمْ

[illegible]

## اعمال غارت کرنے والا راستہ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ

کیا خیال کرتے ہیں وہ لوگ جن کے دلوں میں روگ ہے

أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ

کہ اللہ ظاہر نہ کرے گا ان کے کینے

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم

[illegible]

بِسِيمَاهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ

[illegible]

الْقَوْلِ

[illegible]

## اللہ تعالیٰ کے علم اور حضور کے

## نور فراست سے منافق چھپ نہیں سکتے

[illegible]

[illegible]

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ

[illegible]

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

[illegible]

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ

[illegible]

وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ

[illegible]

مختلف روایتوں میں تطبیق

[illegible]

یعنی ہر ایک کے ایمان اور اطاعت و انقیاد کا وزن معلوم ہو جائے اور سب کے معمول احوال کی خبریں عملاً محقق ہو جائیں (مجید) "حتی نعلم" الخ سے جو شبہ حدوث علم کا ہوتا ہے اس کا مفصل جواب پارہ "سیقول" کے شروع "الا لنعلم من یتبع الرسول" الخ کے حواشی میں ملاحظہ کر لیا جائے۔ (تفسیر عثمانی)

## ایک اشکال اور اس کا دفعیہ:

امتحان اور جانچ وہ شخص کرتا ہے جس کو امتحان لینے سے پہلے علم نہ ہو لیکن اللہ کو تو پہلے ہی تمام آئندہ واقعات کا علم ہے اس کو امتحان لینے ذریعہ کی ضرورت ہے اس کے جواب کے لئے مفسرین نے علم بعد الوجود کی مراد ایک قید کا اضافہ کیا۔ اللہ کو ہر چیز کا علم ازل وجود سے پہلے ہے جیسے وجود کے بعد لیکن جو علم ازلی ہے اس پر احکام مرتب نہیں ہوتے اور امتحان کے بعد جو علم ہوتا ہے وہ حادث بھی ہے اور اس پر احکام کا ترتب بھی ہوتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ

جو لوگ منکر ہوئے اور روکا انہوں نے اللہ کی راہ

اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

سے اور مخالف ہوگئے رسول سے بعد اس کے کہ ظاہر ہو چکی ان پر

الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ

سیدھی راہ وہ نہ بگاڑ سکیں گے اللہ کا کچھ اور وہ اکارت کر دیگا

أَعْمَالَهُمْ

ان کے سب کام ☆

## کافر و منافق اپنا ہی نقصان کرتے ہیں

☆ یعنی اپنا ہی نقصان کرتے ہیں اللہ کا کیا نقصان ہے۔ نہ اس کے دین اور پیغمبر کا کچھ بگاڑ سکتے ہیں وہ قدرت والا ان کے سارے منصوبے غلط اور تمام کام اکارت کرے گا اور سب کوششیں خاک میں ملا دے گا۔ (تفسیر عثمانی)

مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۔ یعنی ایمان لانے سے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی پیروی کرنے سے روکا۔

وَشَاقُّوا الرَّسُولَ ۔ اور اللہ کے رسول کی مخالفت کی۔ اس جگہ الذین کفروا آگے سے بنی قریظہ اور بنی نضیر کے یہودی اور روز (قریش) کے کافر مراد ہیں جنہوں نے بدر کی لڑائی میں کافروں کے لشکر کو باری باری سے کھانا کھلایا تھا۔ یہ بارہ آدمی تھے جو ہر بار دن بدن ہی سے لشکر کو کھانا دیا تھا۔

(لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ) یعنی اپنے کفر سے وہ اللہ کو کوئی ضرر پہنچا نہیں سکے اللہ کو کچھ نقصان نہیں پہنچا سکتے۔

وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ۔ اور یقیناً اللہ ان کے اعمال کو اکارت کر دے گا ان کو آخرت میں ثواب نہیں دے گا نہ دنیا میں ان کو کوئی فائدہ حاصل ہو گا۔ حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا آیت میں وہ لوگ مراد ہیں جنہوں نے بدر کے زمانے میں (کافروں کے لشکر کو) کھانا دیا تھا۔ (تفسیر مظہری)

## کفار قریش کی مدد کرنے والے منافق

حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا کہ یہ ان منافقین کے متعلق ہے جنہوں نے غزوۂ بدر کے موقع پر کفار قریش کی امداد اس طرح کی کہ ان میں سے بارہ آدمیوں نے ان کے پورے لشکر کو کھانا پہنچانے کے ساتھ مر روز ان میں سے ایک آدمی لشکر کفار کے کھانے کا انتظام کرتا تھا۔ (معارف مفتی اعظم)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ

اے ایمان والو حکم پر چلو اللہ کے

وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا

اور حکم پر چلو رسول کے اور ضائع مت کرو اپنے کئے ہوئے

أَعْمَالَكُمْ

کام ☆

اعمال کی مقبولیت کی شرط ☆ یعنی جہاد یا اللہ کی راہ میں اور کوئی محنت و ریاضت کرنا اس وقت مقبول ہے جب اللہ و رسول کے حکم کے موافق ہو محض اپنی طبیعت کے شوق پر نفس کی خواہش پر کام نہ کرو ورنہ ایسا عمل یوں ہی بیکار ضائع جائے گا۔ مسلمان کا کام نہیں کہ جو نیک کام کر چکا ہو اب اس کو کسی صورت سے ضائع ہونے دے نیک کام کو بیچ میں چھوڑ دے ریاء سے وارا یا عجب و فخر و غیرہ سے اس کو برباد کر دے اور ایسا جا بے جو ایک دم تمام اعمال کو اکارت کر دیتا ہے العیاذ باللہ۔ (تفسیر عثمانی)

**شان نزول:** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابی خیال کرتے تھے کہ جس طرح شرک کی موجودگی میں کوئی اچھا عمل مفید نہیں اسی طرح لا الہ الا اللہ کے قائل کو کوئی گناہ ضرر نہیں پہنچائے گا۔ اس خیال کی تردید میں یہ آیت نازل ہوئی۔ آیت کا سبب نزول ابن ابی حاتم اور محمد بن نصر مروزی نے کتاب الصلوٰۃ میں بحوالہ ابوالعالیہ بیان کیا ہے۔ اس آیت کے نازل کے بعد صحابہ کو اندیشہ ہوا (ہم وہ جان گئے) کہ گناہ سے نیکی ضائع ہو جاتی

[illegible] کی روایت [illegible] ہے۔

**کام اضافی نہ کرو کا مطلب:** [illegible]

[illegible]

**مسئلہ:** [illegible] امام ابو حنیفہ کا قول [illegible] الہدایہ والقدوری وغیرہ۔

**ضیافت کے لیے نفلی روزہ توڑنا:** [illegible]

**اختلاف کے دلائل:** [illegible]

[illegible]

مطلب یہ [illegible] یا ہر وہ کیا تم نے [illegible] کا فائدہ
سے عرض کیا [illegible] (ترمذی) [illegible]

میں کہتا ہوں لا تبطلوا کا مصدر ابطال ہے (اور لا تبطلوا کی تفسیر)
ابطال [illegible] بلکہ اس سے عام ابطال سمجھا جاتا ہے (اور یہ ابطال
کرنے [illegible] کے صحابہ [illegible] کی ممانعت اس سے معلوم
ہوتی ہے۔ جو شخص [illegible] نفل نماز [illegible] اسے پانی [illegible]
ہر حال [illegible] (تجبیر) [illegible] مستحب [illegible] عمل ہے جس سے
پہلے [illegible] عمل [illegible] ضرور [illegible]
[illegible] اس آیت سے ہی [illegible] قرار پاتا ہے۔ ان احادیث سے
[illegible] کے وقت احادیث آتا ہے آیت کی
[illegible] کی صورت میں [illegible]
دلالت [illegible] ہے اور حدیث [illegible] اور تحریم کو [illegible] پر مقدم رکھنا
واجب ہے۔ اس نے [illegible] کے [illegible] نفل نماز اور روزہ کو
توڑ [illegible] کے نزدیک [illegible] توڑ دیا تو قضا واجب ہے (یعنی نفل نماز
روزہ [illegible] قضا واجب ہوگی [illegible]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن
جو لوگ منکر ہوئے اور روکا لوگوں کو
سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ
اللہ کی راہ سے پھر مر گئے اور وہ منکر ہی رہے
فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ
تو ہرگز نہ بخشے گا ان کو اللہ

محارب کافر [illegible] اللہ کے ہاں بخشش نہیں خصوصاً ان
کافروں کی [illegible] کو خدا کے راستے سے روکتے [illegible]
(تفسیر عثمانی)

فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ
سو تم بودے نہ ہو جاؤ اور لگو بلانے صلح کی طرف

مسلمانو! [illegible] میں [illegible] کفار کے مقابلہ
میں [illegible] ہمت [illegible] صلح کی طرف
[illegible] اور [illegible] اسلام کا غلبہ

[illegible] کوئی اسلامی [illegible] صلح [illegible] کی بھلائی
[illegible] صلح کر لیتے [illegible] معاہدہ [illegible]
[illegible] صلح کی [illegible]
فَلَا تَهِنُوا یعنی جہاد میں کمزوری نہ دکھاؤ۔
وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ یعنی اس کافروں کو صلح کی طرف [illegible] مطلب
[illegible] کا مطلب تھنوا [illegible] کے لیے [illegible]
[illegible] کافروں سے صلح کی درخواست کرنے کی ممانعت فرما دی
[illegible]

**صلح اور اس کی شرط**: [illegible] مسلمانوں کے [illegible]
بھی جائز ہے [illegible] مسلمانوں کی [illegible] جائے [illegible]
[illegible] آیت کے شروع میں فلا تھنوا [illegible]
طرف [illegible] صلح [illegible] اور اللہ کی [illegible] جہاد
کرنے [illegible] بھی کوئی [illegible] جنحوا للسلم
کی آیت کے [illegible] صورت کے ساتھ مقید کیا ہے جس میں صلح بھلائی کا سبب
[illegible] صلح [illegible]
[illegible]

وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن
اور تم ہی رہو گے غالب اور اللہ تمہارے ساتھ ہے
يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ
نقصان نہ دے گا تمہارے کاموں میں

[illegible] تم ہی غالب رہو گے [illegible]
کے [illegible] تمہارے ساتھ ہے [illegible]
[illegible] کسی حالت میں بھی تم کو نقصان [illegible]
[illegible]
وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ یعنی اللہ کی مدد سے تم غالب ہونے والے ہو۔
[illegible]

وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ یعنی [illegible] تمہارے اعمال کی جزا میں کوئی کمی
نہیں [illegible] تکلیف بھی [illegible]
[illegible]

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا [illegible]

محبت کی ہو گئی ہے مگر کسی کو اپنی جان کی محبت اور بھائی کی محبت مال و دولت کی محبت سب رذائل ہیں ان آیات میں یہ بتلایا گیا ہے کہ یہ سب چیزیں ہیں جب تم ... فانی ہیں ... آخرت باقی رہنے والی ہے تو ان کی محبت پر غالب ہو ... (معارف القرآن)

| |
|---|
| إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِن |
| یہ دنیا کا جینا تو کھیل ہے اور تماشا اور اگر تم |
| تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ |
| یقین لاؤ گے اور بچ کر چلو گے دے گا تم کو تمہارا بدلہ |
| وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ |
| اور نہ مانگے گا تم سے مال تمہارے ☆ |

**دنیا پرست نہ بنو تقویٰ اختیار کرو**

☆ یعنی آخرت کے مقابلہ میں دنیا کی حقیقت ایک کھیل تماشا جیسی ہے۔ اگر تم یہ ... تقویٰ اختیار کرو گے اور اس کھیل تماشے سے دور رہو گے تو اللہ تم کو پورا بدلہ دے گا اور تمہارا مال بھی تم سے طلب نہ کرے گا اسے کیا حاجت ہے۔ وہ تو خود دینے والا ہے ما اریدُ منھم من رزق وما ارید ان یطعمون ان اللہ ھو الرزاق ذو القوۃ المتین۔ اور ... طلب بھی کرے تو ایک تھوڑا ... کی کاٹ کر ... کے محتاجوں کے مصالح میں خرچ کرنے کو کہتا ہے تمہارے سارے مال کا مطالبہ نہیں کرتا۔ بلکہ ایک تھوڑا سا حصہ طلب کیا جاتا ہے۔ وہ بھی اپنے لئے نہیں تمہارے فائدہ کو۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ حق تعالیٰ نے ... سوال ہوں تھوڑے سے مال ... بھیجیں خرچ کرنا ... بھر ... خرچ ... قرآن ... کی ... جگہ فرمایا ہے کہ ... (تفسیر عثمانی)

ولا یسئلکم اموالکم۔ اور تمہارے مال تم سے طلب نہیں کرے گا یعنی تمہارے مال کا تاوان نہیں ہے تم کو ایمان و طاعت کا حکم ... اس کے بدلے میں تم کو جنت عطا فرمائے ... یہ مضمون دوسری آیت میں فرمایا ہے۔ ما ارید منھم من رزق۔

**آیت کا ایک اور مطلب۔** بعض اہل تفسیر نے آیت کا یہ مطلب بیان کیا کہ اللہ ... تم سے ... سارا مال نہیں طلب کرے گا

بلکہ ایک حقیر قلیل حصہ یعنی چالیسواں حصہ بلکہ اس سے بھی کم طلب کرے گا۔ جیسے ۱۲ ... میں ... لیا جاتا ہے ... بھی ... کی ... مطلب کی ... آیت ... ترکیب ... سے (... آیت میں ...) کہ تمہارا سارا مال صرف کرنا چاہتا ہے ... کرنے کے لئے فرمایا کہ خدا تمہارا سارا مال طلب نہیں فرمائے گا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| إِن يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا |
| اگر مانگے تم سے وہ مال پھر تم کو تنگ کرے تو بخل کرنے لگو |
| وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ |
| اور ظاہر کر دے تمہارے اندر کی خفگیاں ☆☆ |

**اللہ تم سے مال طلب نہیں کرتا**

☆☆ یعنی اگر خدا تعالیٰ تم کے ساتھ کل مال طلب کرنے لگے ... تو ... تمہارے ... دل ... ہیں ... تنگی ... ہے ... حکم ... ہی ... کے ... سے ... مال ... ظاہر ہو جائے گی۔ ... یعنی اگر وہ تم سے تمہارا سارا مال طلب کرتا اور تم کو ... میں ڈال دیتا ... کسی کام ... جہاد ... ہے ... اللہ ... سے ... ہو ...

یحفکم اور تم کو تنگ کرے ... ہے۔

ویخرج اضغانکم۔ اللہ تمہارے دلوں میں چھپے ہوئے کینوں کو ظاہر کر دیتا تمہارا بخل تمہارے کینوں کو ظاہر کر دیتا ... اللہ کو معلوم تھا کہ مال طلب کرنے ... جائے گا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا |
| سنتے ہو تم لوگ تم کو بلاتے ہیں کہ خرچ کرو |
| فِي سَبِيلِ اللَّهِ |
| اللہ کی راہ میں ☆ |

**اللہ کے دیئے میں مخصوص حصہ خرچ کرو**

☆ یعنی ایک حصہ ... دیئے ہوئے مال کا ... کی راہ میں اپنے ... کی خاطر۔ (تفسیر عثمانی)

وَمَنۡ یَّبۡخَلۡ فَاِنَّمَا یَبۡخَلُ عَنۡ نَّفۡسِہٖ ... لِتُنۡفِقُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ ... تم کو تمہارے مال میں سے تھوڑا سا اللہ کی راہ میں خرچ کرنے کی دعوت دی جاتی ہے تو تم میں سے بعض لوگ اس میں بھی بخل کرنے لگتے ہیں ... فَاِنَّمَا یَبۡخَلُ عَنۡ نَّفۡسِہٖ یعنی جو شخص اس میں بھی بخل کرتا ہے وہ اللہ کا نقصان نہیں کرتا بلکہ خود اپنی جان کا نقصان کرتا ہے ... وَاللّٰہُ الۡغَنِیُّ وَاَنۡتُمُ الۡفُقَرَآءُ ... [illegible]

فَمِنۡکُمۡ مَّنۡ یَّبۡخَلُ ۚ وَمَنۡ یَّبۡخَلۡ

پھر تم میں بعض ایسے ہیں جو بخل کرتے ہیں اور جو کوئی بخل کرتا ہے

فَاِنَّمَا یَبۡخَلُ عَنۡ نَّفۡسِہٖ

سو وہ بخل کرتا ہے آپ سے

دینے کا نفع تمہیں ہے ... بخل کرنے والا خود اپنے ہی نقصان کے لئے بخل کرتا ہے ... [illegible]

**اپنا مال اور وارثوں کا مال:** حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم میں سے کون ایسا ہے جس کو اپنے (مملوکہ) مال سے زیادہ وارث کا مال محبوب ہو ... مال سے زیادہ محبت ہے ... اپنا مال تو وہی ہے جو اس نے آگے بھیج دیا اور وارث کا مال وہ ہے جو (مرنے کے بعد) پیچھے چھوڑ گیا ... [illegible]

**دو فرشتوں کی دعاء:** حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہر روز صبح دو فرشتے اترتے ہیں اور ایک کہتا ہے اے اللہ خرچ کرنے والے کو بدل عطا فرما، دوسرا کہتا ہے اے اللہ روک رکھنے والے (بخیل) کے مال کو تلف کر دے ... متفق علیہ

**خرچ کرتے رہو:** حضرت اسماء رضی اللہ عنہا روایت کرتی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا خرچ کرو اور گن گن کر نہ رکھو ... [illegible] ... متفق علیہ (تفسیر مظہری)

وَاللّٰہُ الۡغَنِیُّ وَاَنۡتُمُ الۡفُقَرَآءُ ۚ

اور اللہ بے نیاز ہے اور تم محتاج ہو

**اللہ محتاج نہیں تم ہو:** ... صاحب لکھتے ہیں ... [illegible] ... تمہارے ہی فائدہ کے لئے ہے ... [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَاللّٰہُ الۡغَنِیُّ یعنی اللہ کو تمہاری عبادات و صدقات کی ضرورت نہیں۔

وَاَنۡتُمُ الۡفُقَرَآءُ اور تم دنیا و آخرت میں اس کے محتاج ہو ... [illegible] (تفسیر مظہری)

وَاِنۡ تَتَوَلَّوۡا یَسۡتَبۡدِلۡ قَوۡمًا

اور اگر تم پھر جاؤ گے تو بدلے میں لے آئے گا اور لوگ

غَیۡرَکُمۡ ۙ ثُمَّ لَا یَکُوۡنُوۡۤا اَمۡثَالَکُمۡ ﴿٪۳۸﴾

تمہارے سوا پھر وہ نہ ہوں گے تمہاری طرح کے

**اللہ تمہارا محتاج نہیں:** ... اللہ تعالیٰ جس حکمت و مصلحت سے ... [illegible] ... تم اگر بخل ... [illegible] ... قوم کو ... [illegible] ... اللہ کی حکمت ... [illegible] ... حضرت سلمان فارسی رضی اللہ عنہ ... [illegible] ... فارس کے لوگ ... [illegible] ... ایمان کا ... [illegible] ... کی صدق پر کافی شہادت ہے ... [illegible]

ہو ہی صدیق اور صاحب ولی ہیں رضی اللہ تعالیٰ عنہ وارضاہ۔ (تفسیر عثمانی)

## امام اعظم رحمہ اللہ کی فضیلت

شیخ محمد بن یوسف صالحی شافعی نے سیرۃ شامیہ میں جلال الدین سیوطی کے قول سے کہ جب اس حدیث میں ابوحنیفہ اور آپ کے شاگرد مراد ہیں۔ کوئی شک نہیں کہ علم کی اس چوٹی پر امام ابوحنیفہ اور ان کے ساتھی پہنچ گئے کوئی فارسی اس چوٹی تک نہیں پہنچا امام ابوحنیفہ کے والد فارس میں سے تھے۔ ابوحنیفہ کی دادا ہی کی ماں کی کاسہ پر فارسی تھی آپ ہی کی اولاد میں ابوالفضل شیخ عبد القادر جیلانی ہیں جو قطب جمال اور قطب وقت ہوئے اور حسنی اور قطب عبدالقادر گیلانی تھے۔ (از تفسیر مظہری)

اللہ سے دعا کرتا ہوں کہ میرا خاتمہ ایمان پر ہو جس پر حضور خاتم المرسلین کے برکت ہو، لوگوں کو معلوم ہو کہ اللہ اس تفسیر کے ختم ہونے کا ثواب اپنے حبیب محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے صحابہ اور اولاد و ازواج مطہرات کی پاک روحوں کو اور اولیاء امت محمدیہ خصوصاً شیخ شمس الدین حبیب اللہ مظہر اور آپ کے تمام متعلقین کو پہنچا دے۔ آمین (از تفسیر مظہری)

## دین کا قیام کسی خاص قوم پر موقوف نہیں ہے

خدا کا دین کسی جماعت پر موقوف نہیں کہ صرف وہی دین خدا کی حفاظت و اعانت کرسکتے ہیں اس کے سوا کوئی یہ کام انجام نہیں دے سکتا یہ خیال غلط ہے وہ اپنی حکمت سے جس قوم کو چاہے اٹھا دے اور اعلاء کلمۃ اللہ کے لئے منتخب کرلے اَللّٰهُ يَجْتَبِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ

ہے حق جس کی خدمت سلطان آئی کی

مدت شہرت اس کی کامرت ہر ایک

(از تفسیر عثمانی)

## اللہ تعالیٰ غنی اور اغنیاء ہے

اس آیت میں حق تعالیٰ نے غنی الاغنیاء ہونے کا اس طرح واضح کیا ہے کہ اللہ کو تمہارے مال کی تو کیا ضرورت ہے وجود کی بھی کوئی ضرورت نہیں۔ اگر تم سب کے سب مل جاؤ اسلام کی تعمیل چھوڑ دو تو جب تک اسے دنیا کو اور اس میں اسلام کو باقی رکھنا ہے ہم اپنے دین کی حفاظت اور اپنے احکام کی تعمیل کیلئے دوسری ایک قوم پیدا کردیں گے جو تمہاری طرح احکام شریعت سے گریز اور اعراض نہ کریگی بلکہ مکمل اطاعت کریں گی۔ (معارف مفتی اعظم)

تم سورۃ محمد صلی اللہ علیہ وسلم بتوفیق اللہ تعالیٰ فللہ الحمد والمنۃ

غرض اس کا جواب میں یہ ہے کہ اس کی تعمیر ہے یہ اللہ تعالیٰ کو محبوب ہے۔ (تفسیر عثمانی)

## سورۃ کا شان نزول اور فضیلت

امام احمد بخاری ترمذی نسائی ابن حبان وغیرہم حضرت عمر بن خطاب سے بیان کرتے ہیں کہ حضرت عمر بن خطاب نے فرمایا ہم ایک سفر میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ہمراہ تھے میں نے ایک بات کے متعلق تین بار رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے دریافت کیا لیکن حضور نے کوئی جواب نہیں دیا تو میں نے (اپنے دل میں) کہا عمر تیری ماں تجھے روئے تو نے تین بار رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے پوچھا لیکن حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے تینوں بار جواب نہیں دیا۔ حضرت عمر نے فرمایا پھر میں نے اپنے اونٹ کو بڑھایا اور دوسرے لوگوں سے آگے بڑھ گیا مجھے یہ اندیشہ ہوا کہ میرے بارے میں قرآن کی کوئی آیت نازل ہوگی۔ (جس میں شاید مجھ پر عتاب ہو) کچھ دیر گزری تھی کہ میں ایک پکارنے والے کی آواز سنی جو مجھے پکار رہا تھا۔ میں فوراً رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آج رات مجھ پر ایک ایسی سورت نازل ہوئی ہے جو مجھے ان سب سے پیاری ہے جن پر سورج نکلتا ہے پھر آپ نے اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا کی تلاوت فرمائی۔

حاکم وغیرہ نے حضرت مسور بن مخرمہ اور مروان بن حکم کی روایت سے بیان کیا کہ سورۃ فتح اول سے آخر تک مکہ اور مدینہ کے درمیان صلح حدیبیہ کے واقعہ کے متعلق نازل ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں حدیبیہ سے لوٹتے ہوئے لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ نازل ہوئی تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مجھ پر ایک آیت اتاری گئی ہے جو مجھے روئے زمین سے زیادہ محبوب ہے پھر آپ نے یہ آیت پڑھ کر سنائی صحابہ آپ کو مبارکباد دینے لگے اور کہا حضور یہ تو ہوئی آپ کے لئے ہمارے لئے کیا ہے؟ اس پر یہ آیت لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ سے فَوْزًا عَظِيْمًا تک نازل ہوئی (بخاری و مسلم) حضرت مجمع بن جاریہ انصاری رضی اللہ عنہ جو قاری قرآن تھے فرماتے ہیں حدیبیہ سے ہم واپس آرہے تھے تو میں نے دیکھا کہ لوگ اونٹوں کو بھگائے لئے جارہے ہیں پوچھا کیا بات ہے؟ معلوم ہوا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر کوئی وحی نازل ہوئی ہے تو ہم لوگ بھی اپنے اونٹوں کو دوڑاتے ہوئے سب کے ساتھ پہنچے آپ اس وقت کراع الغمیم میں تھے جب سب جمع ہوگئے تو آپ نے یہ سورت تلاوت کر کے سنائی تو ایک صحابی نے کہا یارسول اللہ کیا یہ فتح ہے؟ آپ نے فرمایا ہاں قسم اس کی جس کے ہاتھ میں محمد کی جان ہے یہ فتح ہے۔

حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں حدیبیہ سے

[illegible]

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

سورۂ فتح مدینہ میں نازل ہوئی اور اس کی انتیس آیتیں اور چار رکوع ہیں

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا

ہم نے فیصلہ کر دیا تیرے واسطے صریح فیصلہ

سورۃ کے مضامین کا خلاصہ:

[illegible]

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ

تا معاف کرے تجھ کو اللہ جو آگے ہو چکے

## ذہنیت و ماٰثر

[illegible]

### صلح حدیبیہ فتوحات کا دیباچہ

☆ "صلح حدیبیہ" کی صلح بظاہر ذلت و مغلوبیت کی صلح نظر آتی [illegible] صلح [illegible] کہ تمام جھگڑوں کا فیصلہ قریش کے حق میں ہوا۔ چنانچہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ اور دوسرے صحابہ رضوان اللہ علیہم اجمعین بھی [illegible] بظاہر [illegible] کر سخت [illegible] مضطرب تھے اور [illegible] تھے کہ اسلام [illegible] کے سامنے قریش اور [illegible] تمام [illegible] کا فیصلہ [illegible] نہیں کر دیا جاتا [illegible] رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وسلم) کی آنکھیں ان [illegible] دیکھ رہی تھیں جو [illegible] تھے اور اللہ نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] سے [illegible] واقعات [illegible] کرنے کے لئے کھول دیں تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم بے مثال [illegible] سے [illegible] اپنے اصحاب کو [illegible] رضی اللہ عنہم [illegible] اللہ اور اس کا رسول [illegible] جانتے ہیں [illegible] اور [illegible] صلح اور فیصلہ کا نام فتح [illegible] لوگ [illegible] تعجب [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] فرمایا [illegible] حقیقت [illegible] کا مرعوب ہو کر [illegible] نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] قدرت [illegible] تعظیم بیت اللہ کی خاطر [illegible] واقعہ ایک طرف اللہ کی خصوصی [illegible] کے [illegible] تھے اور دوسری جانب دشمنوں کے قلوب پر اسلام کی اخلاقی اور روحانی طاقت اور پیغمبر [illegible] پیغمبری کا سکہ بٹھلا رہے تھے کہ [illegible] وقت ظاہر بینوں کو [illegible] نظر آتی تھی [illegible] سے [illegible] کر غور کرنے والے خوب سمجھتے تھے کہ فی الحقیقت [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے حق میں [illegible] ہے۔ حق تعالیٰ نے [illegible] مبین [illegible] کیا [illegible] صلح [illegible] فتح [illegible] کے لئے بھی آپ کے حق میں سب [illegible] فتوحات ظاہری و باطنی [illegible] صلح کے بعد کافروں اور مسلمانوں [illegible] اختلاط [illegible] مسلمانوں کی زبان سے اسلام کی باتیں سنتے اور ان مقدس مسلمانوں کے احوال [illegible] دیکھتے تو خود بخود ایک کشش اسلام کی طرف

ہوتی تھی۔ نتیجہ یہ ہوا کہ صلح "حدیبیہ" سے فتح مکہ تک [illegible] سال کی مدت میں [illegible] مشرف باسلام ہوئے کہ کبھی اس قدر نہ ہوئے تھے۔ خالد بن الولید اور عمرو بن العاص جیسے [illegible] اسی دوران میں اسلام کے حلقہ بگوش بنے [illegible] اسلام [illegible] ترقی [illegible] قوت اسلام چاروں طرف [illegible] قریش [illegible] نے [illegible] مکہ فتح کر کے بیت اللہ [illegible] کی [illegible] "حدیبیہ" میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ہمراہ صرف [illegible] جانباز [illegible] فتح عظیم [illegible] ہزار کا لشکر جرار [illegible] فتح [illegible]

حدیبیہ [illegible] فتوحات اسلامیہ [illegible] حدیبیہ [illegible] دیباچہ [illegible] اور [illegible] اور تعظیم حرمات اللہ [illegible] سے صلح میں ظاہر ہوئی [illegible] باطنی مقامات اور مراتب کا [illegible] اندازہ کون کر سکتا ہے۔ [illegible] اشارہ [illegible] ملا [illegible] کی بیعت [illegible] اللہ [illegible] صلح [illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] "[illegible]" [illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] اللہ تعالیٰ نے [illegible] حدیث [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] عبادت [illegible] کرتے تھے [illegible] جاتے تھے اور لوگوں [illegible] صحابہ [illegible] رضی اللہ عنہم [illegible] یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] اللہ تعالیٰ تو آپ کی سب اگلی پچھلی [illegible] معاف فرما چکا [illegible] "افلا اکون عبداً شکوراً" (تو کیا میں اس کا شکر [illegible] بندہ نہ بنوں) [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] عبادت [illegible] قیامت [illegible] حدیث [illegible] جب [illegible] حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے [illegible] محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس جاؤ جو خاتم النبیین ہیں [illegible] کی اگلی پچھلی سب [illegible] اللہ تعالیٰ معاف کر چکا ہے [illegible] مقام [illegible] بھی [illegible] عام کے [illegible] چلنے [illegible] کو [illegible] (تفسیر عثمانی)

**اگلے اور پچھلے گناہوں کا مطلب۔** علامہ [illegible] نے [illegible]

[illegible]

## وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ

اور پورا کرے تجھ پر اپنا احسان ☆

[illegible]

## وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا

اور چلائے تجھ کو سیدھی راہ ☆

**ہدایت میں ترقی:** [illegible]

## وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا

اور مدد کرے تجھ کو اللہ زبردست مدد ☆

**بے مثال مدد** [illegible] "لیغفر لک اللہ" [illegible]

[illegible]

## هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ

وہی ہے جس نے اتارا اطمینان دل میں

## الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ

تاکہ ان کو اور بڑھ جائے ایمان اپنے ایمان کے ساتھ

**نزول اطمینان:** [illegible]

**ایمان بڑھنے کا مطلب:** [illegible]

[illegible]

## وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

اور اللہ کے ہیں سب لشکر آسمانوں کے اور زمین کے

## وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ④

اور ہے اللہ خبردار حکمت والا ☆

### حالات و احکام کی حکمت اللہ ہی جانتا ہے

[illegible]

[illegible]

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ

[illegible]

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ

[illegible]

فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ

[illegible]

[illegible]

وَكَانَ ذَٰلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا

اور یہ ہے اللہ کے یہاں بڑی مراد ملنی ۞

[illegible]

معلوم ہوا کہ اللہ کے ہاں یہی بڑا کمال ہے (احمد جی)

وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ

اور تاکہ عذاب کرے منافق مردوں کو اور منافق عورتوں کو

وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ

[illegible]

[illegible]

الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ

[illegible]

[illegible]

عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ

[illegible]

[illegible]

وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ

[illegible]

وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا

[illegible]

وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ

اور اللہ کے ہیں سب لشکر آسمانوں کے اور زمین کے اور ہے

**وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا حَكِيمًا (۷)**

اللہ زبردست حکمت والا ہے

[illegible]

[illegible]

**إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا**

ہم نے تجھ کو بھیجا احوال بتانے والا اور خوشی

**وَنَذِيرًا (۸)**

اور ڈر سنانے والا

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا کام

[illegible] ... (خزائن)

## قیامت میں امت کے تمام اعمال پر حضور صلی اللہ علیہ وسلم گواہی دیں گے

[illegible]

**لِتُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ**

تاکہ تم لوگ یقین لاؤ اللہ پر اور اس کے رسول پر اور اس کی مدد کرو

**وَتُوَقِّرُوهُ**

اور اس کی عزت کرو

اللہ اور رسول اللہ کی مدد کرو

[illegible]

**وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا (۹)**

اور اس کی پاکی بولتے رہو صبح اور شام

[illegible]

**إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا**

تحقیق جو لوگ بیعت کرتے ہیں تجھ سے وہ

**يُبَايِعُونَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ**

بیعت کرتے ہیں اللہ سے اللہ کا ہاتھ ہے اوپر ان کے ہاتھ کے

## حضور کے ہاتھ میں بیعت گویا اللہ سے بیعت ہے

[illegible] مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللّٰهَ [illegible]

## مشائخ طریقت کی بیعت

[illegible]

إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ ۔ یعنی آپ سے (محمد صلی اللہ علیہ وسلم سے) بیعت کرنے والے آپ سے جو بیعت (معاہدہ) کر رہے ہیں کہ میدان جنگ سے نہیں بھاگیں گے یہ لوگ اس وقت حقیقت میں اللہ سے بیعت کر رہے ہیں۔

## یداللہ کے اوپر ہونے کا مطلب:

دوسری آیت میں جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی بیعت کو اللہ کی بیعت قرار دیا اور بیعت کا دستور تھا کہ ہاتھ پر ہاتھ رکھتے تھے تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی دونوں ہاتھوں سے اس طرح بیعت لی تھی گویا اللہ کے ہاتھ (کی) بیعت ان کے ہاتھوں کے اوپر ہے کا تخیل پیدا ہو گیا۔

حضرت ابن عباس نے فرمایا تمہارے جو ان سے خیر کا وعدہ کیا تھا اس کو پورا کرنے کا اللہ کا احسان ان کے احسان پر غالب ہے (یعنی حضرت ابن عمر کی) [illegible] یداللہ فوق ایدیہم کی [illegible] قرار پائے گی جس کی کیفیت نا قابل فہم ہے۔

کلبی نے کہا ید اللہ یعنی اللہ کی طرف سے ہدایت کی نعمت فوق ایدیہم یعنی ان لوگوں کی بیعت سے بڑھ کر ہے یعنی انہوں نے جو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بیعت کی اس سے بڑھ کر اللہ کا احسان ان پر ہے۔

## واقعہ حدیبیہ کی تفصیلات

عبد بن حمید اور ابن جریر نے بروایت مجاہد اور بیہقی نے عروہ کی روایت سے اور ابن جریر نے ابو زید اور محمد بن عمرو کے توسط سے بیان کیا کہ حدیبیہ کو روانگی سے پہلے مدینہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے خواب دیکھا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے صحابہ امن کے ساتھ مکہ میں داخل ہو رہے ہیں، کچھ لوگوں کے سر منڈے ہوئے ہیں اور کچھ نے بال کتروائے ہیں اسی حالت میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کعبہ کی کنجی لے کر بیت اللہ میں داخل ہو گئے۔ کذا قال البغوی و محمد بن یوسف الصالحی فی سبل الرشاد۔

**جنگ کی تیاری اور روانگی:** ابن سعد اور محمد بن عمرو وغیرہ کا بیان ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے پاس کے صحابہ اور اطراف کے لوگوں کو اور دیہات کے اعرابیوں کو اپنے ساتھ نکلنے کی ترغیب دی کیونکہ آپ کو اندیشہ تھا کہ قریش جنگ اور تعرض کریں گے اور کعبہ تک پہنچنے میں رکاوٹ ڈالیں گے۔ (آپ کی طلب کے باوجود) بکثرت بادیہ نشین پیچھے رہ گئے۔

امام احمد، بخاری، عبد بن حمید، ابوداؤد، نسائی نے مسور بن مخرمہ اور مروان بن حکم کی روایت سے اور ابن اسحاق نے بروایت زہری عروہ از مسور بن مخرمہ اور مروان بن حکم بیان کیا کہ حدیبیہ کے سال (روانگی سے پہلے) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے گھر کے اندر غسل کیا اور دو کپڑے (چادر اور لنگی) پہنے پھر دروازے کے پاس سے اپنی قصواء اونٹنی پر سوار ہو گئے۔ حضرت ام سلمہ، حضرت ام عمارہ، اسماء بنت عمرو اور ام منیع اشہلیہ بھی آپ کے ساتھ تھیں۔ مہاجرین، انصار اور دوسرے عرب بھی آپ کے ساتھ نکل پڑے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے خواب کی وجہ سے کسی کو فتح میں کوئی شک بھی نہیں تھا۔ ان حضرات کے پاس تلواروں کے سوا اور کوئی ہتھیار نہیں تھے، تلواریں بھی نیاموں کے اندر تھیں۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے قربانی کے جانور پہلے سے بھجوا دیئے تھے، ذوالقعدہ کی چاند رات پیر کے دن (مدینہ سے) روانہ ہوئے، ذوالحلیفہ میں پہنچ کر ظہر کی نماز پڑھی، قربانی کے لئے ستر اونٹ تھے سب کو جھولیں پہنائی گئیں اور ان میں سے چند اونٹوں کے قلادے ڈالے گئے، سب اونٹوں کا رخ قبلہ کی طرف کیا گیا۔ (اشعار کیا) اور دائیں کوہان کو شعار کرنے کا حکم دیا اور ایک اونٹ (قربانی کے) لیے ابوجہل کا تھا جو بدر کے دن مسلمانوں نے [illegible] اپنی قربانی کے اونٹوں کی گردنوں میں [illegible] مسلمانوں کے ساتھ سو گھوڑے بھی تھے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بشر بن سفیان (قریش کی خبر) [illegible] بھیجا اور [illegible] بیس سواروں کے ساتھ [illegible] آگے روانہ کیا جو [illegible] معتبر آدمی تھا۔

**عمرہ کا احرام باندھنا:** پھر آپ نے دو رکعت نماز پڑھی اور ذوالحلیفہ کی مسجد کے دروازے سے نکل کر سوار ہو گئے اور قبلہ رخ ہوئے جب اونٹنی کھڑی ہو گئی تو آپ نے عمرہ کا احرام باندھا تاکہ لوگوں کو یہ اطمینان ہو جائے کہ آپ جنگ کے لئے نہیں جا رہے بلکہ صرف بیت اللہ کی زیارت اور تعظیم کے لئے جا رہے ہیں۔

حضور نے لبیک کہی، آپ کے ساتھ اکثر لوگوں نے احرام باندھا، حضرت ام سلمہ نے کہا مجھے ابھی احرام باندھنا ہے، بعض صحابہ نے جحفہ پہنچ کر احرام باندھا۔ آپ پہاڑ کے راستے سے چل کر مکہ اور مدینہ کے درمیان قبا کی طرف آئے، مزینہ اور جہینہ کے دیہاتی نہیں آئے۔ آپ کا گزر ان کی طرف سے ہوا تو آپ نے ان کو بھی ساتھ چلنے کی ترغیب دی لیکن وہ اپنے مال و دولت میں مشغول رہے اور آپس میں ایک نے دوسرے سے کہا کہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم جو کرتے ہیں لوگوں سے لڑنے کے لئے جا رہے ہیں جو لوگ اسلحہ لیے ہوئے ہیں [illegible] تو جیسے محمد صلی اللہ علیہ وسلم اور ان کے ساتھی سب قتل کر دیئے جائیں گے اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم کبھی لوٹ کر نہیں آئیں گے۔ یہ کہنے والے اللہ کے پاس اعراب تھے ان کی تعداد (معقول) تعداد تھی، ان کو [illegible] سفر میں ایک واقعہ یہ ہوا کہ حضرت قتادہ جو احرام میں نہ تھے ایک گورخر کا شکار کیا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں اس کا کچھ حصہ پیش کیا۔ یہ واقعہ سورۂ مائدہ کی آیت لا تقتلوا الصید و انتم حرم کی تفسیر میں گزر چکا ہے۔

**مقام جحفہ پر آنحضرت کا خطاب:** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جب جحفہ میں پہنچے تو آپ درخت کے نیچے بیٹھ گئے [illegible] اور قریش [illegible] کے بعد لوگوں کو خطاب کیا اور فرمایا میں تمہارا پیش خیمہ ہوں [illegible] [illegible] اللہ کی کتاب اور [illegible] [illegible] اگر تم ان کو [illegible] ہو گئے تو گمراہ ہو گے۔

**اہل مکہ کا مشورہ اور لڑائی کی تیاری:** [illegible] مشرکوں کو جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی روانگی کی اطلاع پہنچی تو انہوں نے [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] کے لئے اپنے لشکر کو لے [illegible] چاہتے ہیں اب [illegible] کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] نے [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ان کے ساتھ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے جنگ کریں گے [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] کی اطلاع پہنچ چکی تھی۔

## بشر بن سفیان کا حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو اطلاع دینا

بشر بن سفیان [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] مقرر کر کے بھیجا تھا [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے ملے اور عرض کیا کہ قریش کو آپ کی روانگی کی اطلاع [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] قریش [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] تو ان کا کیا نقصان ہو جاتا اور اگر عرب [illegible] غالب آ جاتے تو ان کی مراد پوری ہو جاتی [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] کہ اللہ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

**مسلمانوں کا باہم مشورہ:** [illegible] اس کے بعد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے مسلمانوں [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] رسول اللہ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] لڑیں گے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تو پھر بسم اللہ کر کے چل پڑو۔

**صف بندی:** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے صحابہ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

**نماز خوف کا حکم:** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] نماز کا وقت ہوا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible]

صلح و خوف بڑھ گیا، ان کی تفصیل سورت [illegible] میں ہو چکی ہے۔

**ثنیۃ المرار سے گزرنا:** محمد بن عمر (واقدی) نے معتبر قابل اعتماد راویوں کی سند سے حضرت ابو سعید خدری کا بیان نقل کیا ہے کہ ثنیۃ المرار پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کون ہے جو ہم کو ایسے راستہ سے لے چلے جو [illegible] کے سامنے [illegible] کے راستے کے علاوہ ہو [illegible] ہم [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] آپ خالد سے [illegible] نہیں ہوتے تھے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم میں سے [illegible] والی [illegible] سے واقف ہے؟ [illegible] نصیب [illegible] باشندہ واقف ہیں۔

مسلم نے حضرت جابر کی روایت سے اور بزار نے حضرت ابو سعید کے حوالہ سے بیان کیا ہے کہ حدیبیہ کے سال ہم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ نکلے جب عسفان میں پہنچے تو [illegible] رات میں چل کر ثنیۃ المرار کے سامنے پہنچ گئے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آج رات اس ثنیہ کی مثال بس وہ دروازہ ہے جس میں داخل ہونے کا حکم اللہ نے بنی اسرائیل کو دیا تھا اور فرمایا تھا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ [illegible] اس گھاٹی کو جو شخص عبور کرے گا اس کی مغفرت کر دی جائے گی صحابہ نے عرض کیا یا رسول اللہ ہم کو اندیشہ ہے کہ قریش ہماری چولہوں کی آگ دیکھ لیں گے، [illegible] جب گھاٹی پر چڑھ [illegible] گئے تو [illegible] قریش ہم کو دیکھ لیں گے [illegible] ہرگز نہیں دیکھ سکیں گے۔

**سب کی مغفرت:** پھر فرمایا تم سب اس کی رحمت کے قبضہ میں ہو، میری جان ہے [illegible] (واقدی) سوائے ایک شخص کے جو سرخ اونٹ پر سوار ہے سب کو بخش دیا گیا۔

**ایک بدقسمت شخص:** (یہ شخص) [illegible] کی وجہ سے وہی جو شخص تھا حضرت [illegible] اور ابن سعد نے لکھا [illegible] ایک شخص ہے۔ حضرت جابر کا بیان ہے کہ ہم نے اس سے کہا چل کر رسول اللہ سے درخواست کر کہ تیرے لیے دعائے مغفرت کر دیں کہنے لگا، میری گمشدہ اونٹنی مجھ کو مل جائے تو [illegible] مجھے دعائے مغفرت سے زیادہ پسند ہے وہ [illegible] جب ہم [illegible] کے سامنے پہنچے تو اس کی اونٹنی کا پاؤں پھسلا اور وہ گر کر مر گیا [illegible] جب تک درندوں نے اس کو کھا نہ لیا۔

**حدیبیہ میں قیام:** حضرت مسور بن مخرمہ اور مروان کی روایت ہے کہ جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حدیبیہ کے قریب پہنچے تو آپ کی اونٹنی کا پاؤں [illegible] اونٹنی بیٹھ گئی لوگوں نے کہا قصواء اڑ گئی قصواء اڑ گئی حضور نے فرمایا قصواء اڑی نہیں [illegible] نہ اس کی عادت ہے بلکہ اس کو ہاتھیوں کو روکنے والے نے روک لیا۔

نکالا جائے اگر یہ لوگ مجھ سے کسی ایسی بات کی درخواست کریں گے جس میں اللہ کی حرمتوں کی عظمت ہو تو میں ان کی بات مان لوں گا، پھر آپ نے اونٹنی کو ڈانٹا اونٹنی اٹھ کھڑی ہوئی اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم اس سے ہٹ کر چلے اور حدیبیہ کے آخری کنارے پر جہاں تھوڑا سا پانی تھا جا کر اتر پڑے۔

**آنحضرت کا معجزہ:** [illegible] خیال ہے کہ [illegible] پانی تھوڑا تھا لوگ تھوڑا تھوڑا لیتے رہے چنانچہ تھوڑی ہی دیر میں سارا پانی (اس تالاب یا کنویں) کا کھینچ کر ختم کر دیا، لوگوں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے پانی کی قلت کی شکایت کی، آپ نے اپنے ترکش میں سے ایک تیر نکال کر دیا کہ اس کنویں میں جہاں گڑھے میں پانی جمع ہے (گاڑ دو) تیر کا گاڑنا تھا کہ پانی ابل پڑا اور سب سیراب ہو کر لوٹ آئے، اس کے باہر نکلنے تک حضرت مسور کا بیان ہے کہ (پانی اتنا ہو گیا) لوگ کنارے پر بیٹھے بیٹھے اپنے برتن بھرنے لگے، تیر لے کر کنویں کے اندر اترنے والے ناجیہ بن جندب تھے جو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے اونٹوں کو ہانکنے والے تھے۔ محمد بن عمر کی روایت ہے کہ اسلم کے کچھ لوگوں نے مجھ سے بیان کیا کہ وہ پانی میں اترنے والے ناجیہ بن جندب تھے، ناجیہ کا بیان ہے کہ جب پانی کی کمی کی شکایت کی تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے مجھے طلب فرمایا اور اپنے ترکش میں سے ایک تیر نکال کر مجھے دیا اور ایک ڈول پانی لے کر آخر میں منہ ڈال کر کلی کر کے (ڈول میں) ڈال دیا اور حکم دیا کہ ڈول کا پانی کنویں میں ڈال دوں اور تیر کو گاڑ دوں چنانچہ میں نے ایسا ہی کیا قسم ہے اس ذات کی جس نے آپ کو حق کے ساتھ بھیجا ہے میں کنویں سے نکلنے بھی نہ پایا تھا کہ پانی اتنا جوش مارنے لگا کہ مجھے ڈوبنے کا خطرہ ہو گیا۔ [illegible] پانی اس طرح جوش مار کر بڑھا جیسے ہانڈی میں ابال آتا ہے، یہاں تک کہ کنویں کے کنارے تک آ گیا۔ [illegible] سب لوگوں نے کنارے پر بیٹھ کر پانی لیتے تھے۔

بخاری نے حضرت براء کی روایت سے اور مسلم نے حضرت سلمہ بن اکوع کی روایت سے بیان کیا ہے کہ حدیبیہ کے دن ہم لوگوں کی تعداد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ چودہ سو تھی، حدیبیہ ایک کنویں (یا پانی کے گڑھے) کا نام تھا، ہم نے اس کا سارا پانی کھینچ لیا یہاں تک کہ ایک قطرہ بھی نہیں چھوڑا، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو اطلاع ملی تو آپ تشریف لائے اور کنویں کی منڈیر پر بیٹھ گئے پھر پانی کا ایک برتن منگوایا اور وضو کیا پھر کلی کی اور دعا کی اور کلی کا پانی کنویں میں ڈال دیا پھر فرمایا تھوڑی دیر اس کو چھوڑ دو، پھر ہم نے اور ہمارے اونٹوں نے جتنا چاہا اس کنویں سے پانی پیا۔

[illegible]

## بدیل بن ورقاء کی آمد

[illegible]

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا جواب:

[illegible]

## بدیل کی قریش کے پاس واپسی

[illegible]

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اور عروہ بن مسعود کے مابین گفتگو اور صحابہ کی جاں نثاری کے مظاہرے

[illegible]

اٹھا کر یہ پوچھا کہ یہ کون ہے لوگوں نے کہا یہ مغیرہ بن شعبہ ہیں عروہ نے کہا اے غدار ابھی کل ہی تو تو نے اپنے سرین کی نجاست دھوئی ہے ایک دو دن میں ہو ا ہے بیٹھنے کے لئے تو نے بنی ثقیف کی عداوت ہمارے ساتھ پیدا کر دی ہے۔ واقعہ یہ ہوا تھا کہ حضرت مغیرہ نے زمانہ جاہلیت میں کچھ لوگوں کے ساتھ جو سفر میں تھے ساتھ پایا تھا اس نے ان کو قتل کر دیا اور ان کا مال لے آیا پھر آ کر مسلمان ہو گئے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اسلام کو تو میں قبول کرتا ہوں لیکن اس مال سے میرا کوئی تعلق نہیں (یعنی اس کا ذمہ دار نہیں) اس کے بعد عروہ (نے) محمد کے اصحاب کرام کی حالت کا مشاہدہ کرنے لگا اس نے دیکھا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ناک کی رینٹ بھی جو پھینکتے ہیں اس کو زمین پر گرنے سے پہلے کوئی صحابی اپنے ہاتھ پر لے کر جلدی جلدی لیتے ہیں جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم کسی کام کا حکم دیتے ہیں تو سب لوگ اس حکم کی تعمیل کرنے کی طرف پیش قدمی کرتے ہیں اور جب آپ صلی اللہ علیہ وسلم وضو کرتے ہیں تو وضو کا استعمالی پانی لینے کے لئے سب ایسی چھینا جھپٹی کرتے ہیں جیسے لڑ پڑیں گے جب آپ صلی اللہ علیہ وسلم کوئی بات کرتے ہیں تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بولنے کے وقت سب لوگ اپنی آوازیں پست کر لیتے ہیں اور تعظیم و ہیبت کی وجہ سے نظر اٹھا کر آپ کی طرف نہیں دیکھتے۔

## عروہ کی اپنے رفقاء کی طرف واپسی اور تاثرات

یہ دیکھ کر عروہ اپنے رفقاء کے پاس لوٹ کر آ یا اور کہا میری قوم والو! خدا کی قسم میں بادشاہوں کے پاس گیا۔ قیصر و کسریٰ اور نجاشی کے دربار میں بھی حاضر ہوا لیکن خدا کسی کے ساتھیوں کو بادشاہ کی ایسی تعظیم کرتے نہیں دیکھا جیسے کہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھی محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی کرتے ہیں جب محمد صلی اللہ علیہ وسلم ناک کی رینٹ بھی پھینکتے ہیں تو وہ (زمین پر پہنچنے سے پہلے) کسی صحابی کے ہاتھ پر پڑتی ہے اور وہ اس کو اپنے چہرے اور جلد پر مل لیتا ہے اور جب وہ کسی کام کا حکم دیتے ہیں تو ان کے ساتھی اس کام کے کرنے کی طرف پیش قدمی کرتے ہیں اور جب وہ وضو کرتے ہیں تو وضو کا استعمالی پانی لینے کے لئے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ لوگ لڑ پڑیں گے اور جب وہ بات کرتے ہیں تو ان کے ساتھی اپنی آوازیں نیچی کر لیتے ہیں اور تعظیم کی وجہ سے ان کی طرف نظر اٹھا کر نہیں دیکھتے انہوں نے اب ایک اچھی بات پیش کی ہے تم اس کو قبول کر لو قریش نے جواب دیا نہیں۔ یہیں اس سال ہم ان کو واپس کر دیں گے اور وہ اگلے سال (عمرہ کریں) عروہ نے کہا تو مجھے یہ نظر آتا ہے کہ تم پر مصیبت آنے والی ہے یہ کہہ کر عروہ اپنے ساتھیوں کو لے کر طائف کو واپس چلا گیا۔

## حلیس بن علقمہ کی طرف

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آمد اور واپسی

مختلف قبائل کے متعدد افراد جو قریش کی حمایت کے لئے آئے تھے ان کی جماعت کا سردار اس روز حلیس بن علقمہ تھا عروہ کے جانے کے بعد وہ اٹھ کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف چلا جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کو آتا دیکھا تو فرمایا یہ ایسے لوگوں میں سے ہے جو قربانی کے جانوروں کی بڑی تعظیم کرتے ہیں اور خدا پرست ہیں تم لوگ اس کے سامنے سے قربانی کے جانوروں کو لے کر گزرو کہ وہ دیکھ لے جب حلیس نے قربانی کے جانوروں کا سیلاب وادی کے عرض سے آتا ہوا دیکھا اور یہ بھی دیکھا کہ ان کی گردنوں میں قلادے پڑے ہوئے ہیں اور طول حبس کی وجہ سے ان کے بال اڑ گئے ہیں تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تک نہیں پہنچا فوراً لوٹ کر قریش کے پاس چلا گیا اور ان سے جا کر کہا اے گروہ قریش میں نے دیکھا کہ قربانی کے جانوروں کی گردنوں میں قلادے لٹکے ہوئے ہیں طول حبس کی وجہ سے ان کے بال اڑ گئے ہیں ان کو روکنا جائز نہیں۔

**حلیس اور قریشیوں کا باہمی تکرار:** قریش نے کہا بیٹھ جاؤ تم بدو ہو تم کو علم نہیں اس بات پر حلیس کو غصہ آ گیا اور بولا اے گروہ قریش! واللہ ہم نے تم سے معاہدہ نہیں کیا تھا معاہدہ یہ ہوا تھا کہ جو خانہ کعبہ کی تعظیم کے لئے آئے گا تم اس کو روک دو گے قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں حلیس کی جان ہے یا تو محمد صلی اللہ علیہ وسلم اور ان کے مقصد اور کے درمیان تم حائل نہ ہو گے ورنہ میں مختلف قبائل کی پوری جماعت کو یک نفس ہو کر جاؤں گا (یعنی میں اس ساری جماعت کو لے کر چلا جاؤں گا) قریش نے کہا حلیس خاموش ہو جاؤ اور ہم کو مہلت دو ہم اپنے لئے جو بات پسند کریں گے اس کو اختیار کر لیں گے۔

## مکرز کا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں آ جانا

ایک شخص جس کا نام مکرز بن حفص تھا کھڑا ہوا اور بولا مجھے ان کے پاس جانے کی اجازت دو (لوگوں نے اجازت دے دی مکرز روانہ ہو گیا) جب صحابہ کے سامنے پہنچا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یہ مکرز ہے یہ غدار آدمی ہے یا فرمایا یہ بدکار آدمی ہے جب مکرز رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں پہنچا تو حضور نے اس سے وہی فرمایا جو بدیل اور عروہ سے فرمایا تھا مکرز لوٹ کر اپنے ساتھیوں کے پاس چلا گیا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جو کچھ جواب دیا تھا اس کی اطلاع ان سے کر دی۔

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا قریشیوں کے پاس اپنا قاصد بھیجنا

محمد بن اسحاق اور محمد بن عمر وغیرہ کا بیان ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے اونٹ پر جس کو ثعلب کہا جاتا تھا خراش بن امیہ کو سوار کر کے سرداران قریش کے پاس بھیجا تا کہ ان کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے آنے کی غرض معلوم ہو جائے عکرمہ بن ابی جہل نے اونٹ کی کونچیں کاٹ دیں اور خراش کو قتل کر دینے کا ارادہ کیا

[illegible]

[illegible]

[illegible]

## حضرت عثمانؓ کی سرداران قریش سے ملاقات اور ان کا جواب

[illegible]

[illegible]

## حضرت عثمانؓ کی وفا شعاری

[illegible]

## قریش کے خفیہ لشکر کے سردار کی مسلمانوں کے ہاتھوں گرفتاری

[illegible]

## چند مسلمانوں کے چند آدمیوں کی مکہ میں گرفتاری

کچھ مسلمان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی اجازت سے حضرت عثمانؓ کے ساتھ [illegible] مکہ میں داخل ہو گئے تھے [illegible] عبداللہ بن [illegible] عمرو بن [illegible] عبداللہ بن [illegible] حاطب بن ابی بلتعہ [illegible] مکہ میں داخل ہونے کی قریش کو اطلاع [illegible] ان کو گرفتار [illegible] قریش کو بھی اطلاع مل گئی [illegible] ان کے آدمیوں کو پکڑ لیا اس لئے قریش کی ایک جماعت (خفیہ طور پر) مسلمانوں کی طرف آئی (مسلمانوں کو بھی اطلاع مل گئی [illegible] تیر اندازی ہونے لگی مسلمانوں نے [illegible] گرفتار کر لیا [illegible] ایک پہاڑ [illegible]

**بیعت رضوان:** [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو خبر پہنچی کہ حضرت عثمانؓ اور ان کے ساتھیوں کو شہید کر دیا گیا ہے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے لوگوں کو بیعت کے لئے طلب فرمایا۔

[illegible] حضرت [illegible] کی روایت سے [illegible] حضرت [illegible] والی روایت [illegible] روایت سے [illegible] اپنے [illegible] بیان کیا۔ حضرت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] بیعت [illegible] حضرت [illegible] لوگوں سے پہلے میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی بیعت کی [illegible] یہاں تک کہ جب [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] بیعت کر لی [illegible] بیعت [illegible] میں نے [illegible] بیعت کر لی اس کے بعد حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اور لوگوں سے بیعت لی جب [illegible] بھی بیعت کر چکا [illegible] بیعت [illegible] سب سے پہلے [illegible] بیعت کر چکا فرمایا [illegible] تیسری بار بھی بیعت کر لی [illegible] ہاتھ پر بیعت [illegible]

[illegible] حضرت [illegible] فرمایا [illegible] بیعت [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] بیعت [illegible] اور سب نے [illegible] بیٹھے [illegible]

طبرانی نے حضرت [illegible] روایت [illegible]

[illegible] حضرت [illegible] کی روایت سے [illegible] جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے لوگوں کو بیعت کے لئے طلب فرمایا تو سب سے پہلے [illegible] بیعت کرنے کے لئے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] بیعت کرنا چاہتا ہوں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] بیعت [illegible] حضرت [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] بیعت [illegible] بیعت [illegible]

[illegible] حضرت [illegible] کی روایت سے [illegible] حضرت [illegible] روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیعت رضوان [illegible] جب حضرت عثمانؓ [illegible] حیثیت سے مکہ [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے بیعت کی حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible] عثمانؓ [illegible] رسول [illegible] ایک ہاتھ [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] عثمانؓ [illegible] لوگوں کے لئے [illegible] بہتر تھا۔

## قریش کی معذرت اور گرفتار شدگان کا تبادلہ

قریش نے سہیل بن عمرو [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بھیجا [illegible] مسلمان ہو گئے تھے : سہیل نے کہا آپ کے آدمیوں کو [illegible] آپ سے [illegible] معاملہ [illegible] ہمارے [illegible] نہیں [illegible] ان کے ساتھیوں نے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible] میرے [illegible] ساتھیوں [illegible] چھوڑا [illegible] تمہارے آدمیوں کو نہیں چھوڑوں گا [illegible] ان کے ساتھیوں نے کہا آپ نے [illegible] بات [illegible] ساتھیوں نے قریش کے پاس [illegible] قریش [illegible] ان کے پاس تھے [illegible] حضرت عثمانؓ [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی قریش کے [illegible] مسلمانوں کے [illegible] چھوڑ دیا۔

## سہیل کی واپسی اور قریش کی صلح پر آمادگی

[illegible] کی [illegible] روایت سے [illegible] بخاری [illegible]

نے مروان بن حکم کے حوالے سے بیان کیا ہے کہ جب عثمان اور ان کے ساتھی قید سے چھوٹ گئے تو سہیل بن عمرو، حویطب اور مکرز بن حفص قریش کے پاس پہنچے اور مسلمانوں سے جو کچھ دیکھا تھا جو بیعت کی تھی وہ بیان کی تھی۔ جب ان کی اطلاع قریش کو ملی تو یہ خبر قریش پر بہت شاق گذری اور ان میں سے جو اہل الرائے تھے انہوں نے کہا سب سے بہتر بات یہ ہے کہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم سے اس شرط پر صلح کرلی جائے کہ اس سال وہ واپس چلے جائیں پھر بیت اللہ تک پہنچیں تاکہ جن عربوں نے ان کے آنے کی خبر سنی ہے وہ یہ کہہ سکیں کہ ہم نے محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو روک دیا۔ آئندہ سال وہ آ کر تین روز قیام کریں اور قربانی کریں پھر واپس چلے جائیں۔ سب کا اتفاق اسی پر ہو گیا۔

**صلح کی شرائط اور صلح نامہ:** سہیل کو مامور کیا گیا کہ جا کر انہی شرائط پر محمد صلی اللہ علیہ وسلم سے صلح کرے اور یہ شرط ضرور ہو کہ اس سال مکہ میں داخل نہیں ہوں گے۔ جب سہیل کو محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے آتے دیکھا تو سہیل رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف چل دیا، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے (صحابہ سے) فرمایا لوگ صلح کے خواہشمند ہیں اسی لئے انہوں نے سہیل کو بھیجا ہے۔ بہت ہی [illegible] حضور نے فرمایا تمہارا کام آسان ہو گیا۔ اس وقت حضور صلی اللہ علیہ وسلم چار زانو بیٹھے ہوئے تھے اور پیچھے عباد بن بشر اور سلمہ بن اسلم کھڑے ہوئے تھے (اول الذکر) دونوں حضرات لوہے سے ڈھکے ہوئے تھے۔ سہیل آیا اور دو زانو بیٹھ گیا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بات شروع کی اور لمبی بات کی۔ دونوں کی گفتگو دور تک چلی، باتوں میں اونچ نیچ بھی ہوئی، عباد بن بشر نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے آواز پست رکھو۔ جب تمام باتیں طے ہو گئیں اور صلح ہو گئی تو سہیل نے کہا آئیے ہم (صلح نامہ) تحریر کر لیں۔ حضور نے حضرت علی کو طلب فرمایا۔ بخاری نے حضرت براء کی روایت سے اور حاکم نے حضرت عبداللہ بن مغفل کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت علی سے فرمایا لکھو بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ سہیل نے کہا رحمن رحیم کو تو ہم نہیں جانتے۔ آپ یہ لکھیں باسمک اللّٰھم، جیسے آپ لکھا کرتے تھے۔ مسلمانوں نے کہا خدا کی قسم ہم یہی نہیں لکھیں گے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ باسمک اللّٰھم ہی لکھو۔ پھر فرمایا لکھو یہ (معاہدہ) وہ ہے جس پر محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فیصلہ کیا ہے۔ سہیل بولا اگر ہم جانتے کہ آپ اللہ کے رسول ہیں تو آپ کو کعبہ سے نہ روکتے نہ آپ سے لڑتے۔ محمد بن عبداللہ لکھو۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت علی سے فرمایا رسول اللہ (کے لفظ) کو مٹا دو۔ حضرت علی نے جواب دیا میں تو مٹانے والا نہیں۔ محمد بن عمر کا بیان ہے کہ اسید بن حضیر اور سعد بن عبادہ نے حضرت علی کا ہاتھ پکڑ لیا اور کہا محمد رسول اللہ کے علاوہ اور کچھ نہیں لکھو ورنہ تلوار ہمارے اور ان (مشرکوں) کا فیصلہ کرے گی۔ آوازیں اونچی ہو

گئیں تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا (رسول اللہ کا لفظ) مجھے دکھاؤ۔ حضرت علی نے دکھا دیا تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے ہاتھ سے اس کو مٹا دیا اور فرمایا محمد بن عبداللہ لکھو۔ بعض روایات میں آیا ہے کہ حضرت علی نے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے وہ خط اپنے ہاتھ میں لیا اور آپ اچھی طرح نہیں لکھ سکتے تھے اس کے باوجود لکھا یہ (معاہدہ) وہ ہے جس پر محمد بن عبداللہ اور سہیل بن عمرو نے اتفاق کیا ہے، دس سال تک لوگوں سے جنگ نہ کرنے کا فیصلہ کیا اس مدت میں جنگ بند رہے گی لوگ امن سے رہیں گے ہر شخص دوسرے سے بچا رہے گا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے سہیل سے فرمایا چلو (یہ بھی طے ہو) کہ تم ہمارے اور بیت اللہ کے درمیان حائل نہ ہو گے ہم طواف کریں گے۔ سہیل نے کہا نہیں خدا کی قسم (ایسا) اس سال تو نہیں ہوگا ورنہ عرب کہیں گے کہ ہم دب گئے، آئندہ سال آپ کو اس کا اختیار ہوگا یہ بات لکھ دی گئی۔ سہیل نے کہا ایک شرط یہ بھی ہے کہ ہماری طرف کا کوئی آدمی اپنے سرپرست کی اجازت بغیر آپ کے پاس جائے گا آپ اس کو واپس کر دیں گے خواہ وہ مسلمان ہی ہو۔ مسلمانوں نے کہا سبحان اللہ یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ مشرکوں کے پاس اس کو لوٹا دیا جائے گا جو مسلمان ہو کر آئے گا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہاں ہم میں سے جو شخص مشرکوں کے پاس چلا جائے گا اللہ نے اس کو دور کر دیا (یعنی وہ مسلمان ہی نہ تھا چلا گیا تو اچھا ہوا) اور ان میں سے جو کوئی ہمارے پاس آ جائے گا (اور ہم اس کو واپس کر دیں گے) تو اللہ اس کے لئے کوئی راستہ پیدا کر دے گا۔

حضرت براء کا بیان ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے تین شرطوں پر صلح کی تھی مشرکوں میں سے جو شخص نکل کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آ جائے گا آپ اس کو مشرکوں کو واپس کر دیں گے اور مسلمانوں میں سے جو شخص مشرکوں کے پاس چلا جائے گا وہ مسلمانوں کو واپس نہیں دیں گے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مکہ میں آئندہ سال داخل ہو سکیں گے اور تین روز قیام کریں گے اور مکہ میں داخل ہوں گے تو اسلحہ تلوار کمان وغیرہ غلاف میں رکھ کر داخل ہوں گے۔ فریقین میں مصالحت ہو گئی اور یہ طے ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور قریش کے درمیان یہ معاہدہ سربند صندوق ہوگا اس میں اندرونی چھپی کوئی حرکت ہوگی نہ خیانت۔

**قبائل کی حمایت:** جو شخص (اس معاہدہ کی رو سے) محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ شامل ہونا پسند کرے وہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ہو جائے اور جو قریش سے معاہدہ چاہے وہ ان کے ساتھ شامل ہو جائے۔ قبیلہ خزاعہ فوراً کھڑے ہو گئے اور کہا ہم محمد کے معاہد ہیں اور بنو بکر کھڑے ہوئے اور کہا ہم قریش کے معاہد اور مددگار ہیں۔ جب صلح نامہ مکمل ہو گیا اور معاہدہ تحریر ہو گیا اور کوئی کام باقی نہیں رہا۔

**حضرت عمر کی گفتگو:** حضرت عمر نے کہا [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

کے پاس آئے اور کہا کیا آپ اللہ کے سچے نبی نہیں ہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیوں نہیں حضرت عمرؓ نے کہا کیا ہم حق پر اور وہ لوگ باطل پر نہیں ہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیوں نہیں حضرت عمرؓ نے کہا کیا ہمارے مقتول جنت میں اور ان کے مقتول دوزخ میں نہیں ہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیوں نہیں۔ حضرت عمرؓ نے کہا تو پھر آپ ہم کو ہمارے دین میں یہ ذلت کیوں دے رہے ہیں کیوں لوٹ جائیں حالانکہ ابھی اللہ نے ہمارا اور ان کا فیصلہ نہیں کیا (یعنی لڑائی نہیں ہوئی) اور عمرہ کئے بغیر جا رہے ہیں (یہ بڑی ذلت کی بات ہے) حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں اللہ کا بندہ اور اس کا رسول ہوں میں اللہ کے حکم کے خلاف نہیں کر سکتا۔ وہ مجھے ضائع نہیں کرے گا اللہ میرا مددگار ہے حضرت عمرؓ نے کہا کیا آپ ہم سے یہ نہیں فرماتے تھے کہ ہم مکہ پہنچیں گے اور بیت اللہ کا طواف کریں گے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیوں نہیں مگر کیا میں نے تم سے یہ کہا تھا کہ اسی سال ہم بیت اللہ تک پہنچیں گے حضرت عمرؓ نے کہا یہ تو نہیں فرمایا تھا حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تو یقیناً تم بیت اللہ پہنچو گے اور اس کا طواف کرو گے اس کے بعد حضرت عمرؓ غصہ کی حالت میں حضرت ابوبکرؓ کے پاس پہنچے اور صبر نہ کر سکے اور بولے ابوبکر کیا یہ اللہ کے سچے نبی نہیں ہیں حضرت ابوبکرؓ نے کہا کیوں نہیں حضرت عمرؓ نے کہا کیا ہم حق پر اور وہ لوگ باطل پر نہیں ہیں حضرت ابوبکرؓ نے کہا کیوں نہیں حضرت عمرؓ نے کہا کیا ہمارے مقتول جنت میں اور ان کے مقتول دوزخ میں نہیں جائیں گے حضرت ابوبکرؓ نے کہا کیوں نہیں حضرت عمرؓ نے کہا تو پھر کیوں یہ ذلت آپ ہم کو ہمارے دین میں دے رہے ہیں (یہ معاملات تو ہمارے دین کی ذلت ہے) اللہ نے ہمارا ان کا فیصلہ نہیں کیا اور ہم لوٹ جائیں (یہ بڑی ذلت ہے) حضرت ابوبکرؓ نے کہا اے عمرؓ وہ اللہ کے رسول ہیں اپنے رب کے حکم کے خلاف نہیں کرتے وہی ان کا مددگار ہے تم مرتے دم تک ان کی رکاب (یعنی دامن) پکڑے رہو بلا شبہ وہ سچائی پر ہیں۔

ایک روایت میں آیا ہے کہ حضرت ابوبکرؓ نے فرمایا بلا شبہ وہ اللہ کے رسول ہیں حضرت عمرؓ نے کہا میں بھی شہادت دیتا ہوں کہ وہ اللہ کے رسول ہیں۔ حضرت عمرؓ نے یہ بھی کہا کیا وہ ہم سے یہ نہیں کہتے تھے کہ ہم بیت اللہ پہنچیں گے اور طواف کریں گے حضرت ابوبکرؓ نے کہا کیوں نہیں لیکن کیا انہوں نے تم کو یہ بھی بتایا تھا کہ اسی سال تم بیت اللہ پہنچو گے حضرت عمرؓ نے کہا نہیں حضرت ابوبکرؓ نے کہا تو پھر یقیناً تم بیت اللہ پہنچو گے اور طواف کرو گے۔

مذکورہ بالا شرائط صلح حضرت عمرؓ پر بڑی شاق تھیں چنانچہ صحیح روایت میں آیا ہے کہ حضرت عمرؓ نے فرمایا جب سے میں مسلمان ہوا مجھے کبھی (رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی کسی بات میں) شک نہیں ہوا۔ حضرت عمرؓ اسی روز رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے جواب دہی کر رہے تھے (یہاں تک کہ ابو عبیدہؓ نے کہا ابن خطاب کے بیٹے کیا تم نہیں سنتے) تم کہو اعوذ باللہ من الشیطٰن چنانچہ حضرت عمرؓ کا بیان ہے میں نے اعوذ باللہ من الشیطٰن کہا ابن اسحاق اور ابن عمر و اسلمی کی روایت ہے کہ حضرت عمرؓ نے فرمایا اس روز جو کچھ مجھ سے حرکت ہوئی اس کی معافی کے لئے میں (جب برابر) خیرات کرتا رہا روزے رکھتا اور نماز اور غلام آزاد کرتا رہا۔

معجزہ: امام احمد اور حاکم نے حضرت عبداللہ بن مغفل کی روایت سے اس حدیث میں یہ بھی بیان کیا ہے حضرت عبداللہ بن مغفل نے فرمایا ہم اسی حالت میں تھے کہ تیس مسلح جوان (یکایک سامنے آگئے) اور انہوں نے ہماری طرف حملہ کیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کے لئے بددعا کی اللہ نے ان کو اندھا کر دیا۔ حاکم کی روایت میں ہے اللہ نے ان کی بصارت سلب کر لی ہم نے ان کو پکڑ لیا حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیا تم کسی کی ذمہ داری میں آئے ہو یا تم کو کسی نے امان دی ہے انہوں نے کہا نہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کو چھوڑ دیا اس پر آیت وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ نازل ہوئی۔

امام احمد مسلم اور ابن ابی شیبہ نے حضرت انسؓ کی روایت سے بیان کیا کہ اہل مکہ کے اسی (۸۰) مسلح آدمی کوہ تنعیم کی جانب سے اتر کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف آئے ان کا مقصد یہ تھا کہ اچانک حملہ کر کے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر حملہ کریں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کے لئے بددعا کی وہ پکڑے گئے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کو معاف کر دیا (چھوڑ دیا)

بیہقی کی حدیث بھی عروہ کی مرسل روایت ہے اور مسلم اور محمد بن یحییٰ کے بیان میں خود حضرت سلمہ بن اکوعؓ کی روایت سے آیا ہے کہ حضرت سلمہؓ نے فرمایا جب میں نے اہل مکہ کے شریک ہونے کی خبر سنی تو تلوار سونت کر چار مشرکوں کی طرف گیا وہ سو رہے تھے میں نے ان کے ہتھیار لے لئے اور گٹھا کر کے ان کو رسول اللہ کی خدمت میں لے آیا (اس پر آیت) وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ (نازل ہوئی)۔

**حضرت ابو جندلؓ کا واقعہ:** کتابت صلح ابھی ہو ہی رہی تھی کہ ابو جندل بن سہیل بن عمرو اپنی بیڑیوں میں چلتے ہوئے (اہل مکہ کے) نشیب سے نکل کر پہنچے اور آتے ہی مسلمانوں کے سامنے گر پڑے ان کے باپ سہیل نے ان کو قید میں جکڑ رکھا تھا مسلمان فتح مکہ کے ساتھ مقدم کے متعلق خواب دیکھنے سے بے شک اور (معاف کرکے) رہائی پانے کی امید رکھتے تھے۔ سہیل نے یہ حالت دیکھی تو اٹھ کر بیٹے کی طرف گیا اور اس کے منہ پر تھپڑ مارا اور گریبان پکڑ لیا اور کہا محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) یہ پہلا واقعہ ہے جس کا میں آپ سے مطالبہ کرتا ہوں یہ معاہدہ کر لیا گیا تھا کہ (جو شخص ہم میں سے آپ کے پاس آ جائے گا) آپ اس کو واپس

[illegible]

## حضرت کعب بن عجرہ کا احرام

[illegible]

بقرہ کی اس آیت کی تفسیر کے ذیل میں حصار (راستہ کی رکاوٹ) ہو جانے کی صورت کی وجہ سے رک جانے والے اور اس سے متعلق کچھ مسائل بیان کر دیے ہیں۔

**معجزہ:** مسلم نے حضرت سلمہ بن اکوع کی روایت سے اور بیہقی نے حضرت ابن عباسؓ کی روایت سے اور بزار، ابو یعلیٰ، بیہقی نے حضرت ابو خنیس کی روایت سے اور ابو نعیم نے اپنے شیوخ کی سند سے بیان کیا کہ حدیبیہ سے واپسی میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے (بجیل) مرّالظہران میں اور ان کے علاوہ (دوسری منزل) عسفان میں کہیں پہنچ کر لوگوں کے پاس کھانے کو کچھ نہیں رہا۔ صحابہؓ نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے یہ شکایت کی اور عرض کیا کیا ہم کچھ اونٹ کو ذبح کر لیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کو اجازت دے دی حضرت عمرؓ نے عرض کیا یا رسول اللہ ایسا نہ کیجئے لوگوں کے پاس سواریاں رہیں زیادہ مناسب ہیں اگر کل کو دشمن سے مقابلہ ہو گیا اور ہم بھوکے بھی ہوئے اور پیدل بھی تو کیا ہوگا میری رائے یہ ہے کہ آپ کچھ لوگوں کے پاس کھانے کی چیز رہ گئی ہو وہ طلب کر لیں پھر برکت کی دعا کریں امید ہے کہ خدا آپ کی دعا سے ہم کو (منزل مقصود تک) پہنچا دے گا۔ حضرت عمر کے مشورہ کے مطابق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جو سامان کھانے کا (کسی کے پاس) باقی رہ گیا تھا طلب فرمایا اور چمڑے کا ایک دسترخوان بچھا دیا سب سے زیادہ لانے والا ایک شخص تھا جو ایک صاع (تقریباً چار سیر) چھوارے لایا تھا لوگوں کے پاس کھانے کی جو چیز تھی وہ سب دسترخوان پر جمع کر دی گئی پھر حضور نے کھڑے ہو کر جو کچھ خدا نے چاہا (برکت کی) دعا کی نتیجہ یہ ہوا کہ سب نے پیٹ بھر کر کھایا اور اپنے برتن بھی بھر لئے اور چیزیں جتنی تھیں اتنی ہی رہیں۔ حضور والا یہ دیکھ کر ہنس دیئے اتنے کہ کچلیاں دکھائی دیں حضرت سلمہ بن اکوع نے اندازہ کیا کہ ہم اس روز تقریباً ۱۴۰۰ آدمی تھے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں شہادت دیتا ہوں کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اور میں اللہ کا رسول ہوں جو بندہ ان دونوں (توحید و رسالت) پر ایمان رکھے گا وہ دوزخ سے محفوظ رہے گا۔

**ابوبصیر کا واقعہ:** امام احمد، بخاری، ابوداؤد اور نسائی نے حضرت مسور بن مخرمہ کی روایت سے اور بیہقی نے زہری کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جب حدیبیہ سے مدینہ آگئے تو ابوبصیر عتبہ بن اسید ثقفی مکہ سے بھاگ کر مسلمان ہو کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں پہنچ گئے۔ خاندان بنی زہرہ کا حلیف تھا اخنس بن شریق ثقفی اور ازہر بن عبد عوف زہری نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس ایک شخص خنیس بن جابر عامری کے ہاتھ بھیجا جس میں گزشتہ معاہدہ کا ذکر کر کے درخواست کی کہ ابوبصیر کو واپس بھیج دیا جائے۔ ابوبصیر کے پہنچنے کے تین روز بعد عامری اپنے غلام کے ساتھ جس کا نام کوثر تھا خط لے کر پہنچا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ابوبصیر کو حکم دیا کہ ان دونوں کے ساتھ چلے جاؤ۔ تم واقف ہو کہ ہم نے ان لوگوں سے معاہدہ کیا ہے اور ہمارے مذہب میں عہد شکنی جائز نہیں۔ خدا تمہارے لئے اور تمہارے ساتھ دوسرے مسلمانوں کے لئے کوئی کشائش اور رہائی کا راستہ پیدا کرے گا۔ غرض دونوں شخص ابوبصیر کو لے کر ذوالحلیفہ پہنچ گئے یہاں پہنچ کر ابوبصیر نے مسجد میں دو رکعت نماز ظہر پڑھی اور نماز کے بعد جو کچھ کھانے کا سامان ساتھ لائے تھے کھانے لگے اور عامری کو اور اس کے ساتھی کو بھی کھانے میں شریک ہونے کی دعوت دی وہ دونوں بھی آ گئے اور کھانے کے بعد عامری کے پاس تلوار کو دیکھ کر کہنے لگے۔ عامری نے تلوار نیام سے نکال لی اور کہا میں اس تلوار سے کئی دن تک اوس و خزرج کو مارتا رہوں گا ابوبصیر نے کہا کیا تمہاری تلوار واقعی تیز ہے عامری نے کہا ہاں ابوبصیر نے کہا مجھے ذرا دکھاؤ عامری نے ابوبصیر کے ہاتھ میں تلوار دے دی ابوبصیر نے جب تلوار قبضہ میں لے لی تو عامری پر ایسی ضرب ماری کہ وہ ٹھنڈا ہو گیا کوثر بھاگ کر مدینے پہنچا اور مسجد میں گھس گیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیا بات ہے کوثر نے کہا میرے ساتھی کو قتل کر دیا گیا اور میں بچ کر آیا ہوں ورنہ میں بھی مارا جاتا۔ غرض کوثر نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے فریاد کی اور ابھی وہ فریاد کر ہی رہا تھا کہ ابوبصیر عامری کے اونٹ پر سوار ہو کر آ گیا۔ اونٹ کو مسجد کے باہر بٹھایا اور خود تلوار لٹکائے ہوئے اسی حالت میں مسجد میں آ گیا اور عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم آپ نے تو اپنا ذمہ پورا کر دیا اور اللہ نے آپ سے یہ ذمہ داری ادا کرا دی آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے مجھے دشمن کے ہاتھ میں دے دیا لیکن میں اپنے دین کی وجہ سے مصیبت میں پڑنے سے محفوظ رہا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ افسوس یہ لڑائی کی آگ بھڑکا دے گا اگر کوئی اس کا (مددگار) مل گیا۔ ابوبصیر نے عامری کا مال جس پر اس نے قتل کرنے کے بعد قبضہ کیا تھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں پیش کیا تاکہ آپ اس مال میں سے پانچواں حصہ لے لیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اگر میں ان میں سے خمس لے لوں گا تو وہ لوگ خیال کریں گے کہ میں نے ان سے کیا ہوا عہد پورا نہیں کیا تم جانو اور تمہارا مال اور جہاں چاہو چلے جاؤ۔

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی دعاء کا اثر قریشیوں کا خود اپنی شرط سے دستبردار ہونا

صحیح روایت میں آیا ہے کہ ابوبصیر نے جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے یہ بات سنی کہ تو لڑائی کی آگ بھڑکانے والا ہے تو انہوں نے سمجھ لیا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم مجھے ضرور واپس کر دیں گے اس لئے ابوبصیر اور ان کے ساتھ وہ پانچ آدمی جو مکہ سے ان کے ساتھ مدینہ میں آئے تھے اور کسی نے ان کی رہائش بھی نہیں کی تھی نکل کر چل دیے اور ساحل سمندر میں پہنچ کر عیص اور ذی

طرح وہ سب مل کر قریش کے قافلے کا راستہ روک کر بیٹھ گئے تھے جو مسلمان ہو کر بھاگتا وہ ابوبصیر کے پاس پہنچ جاتا اور جب ابوجندل کو اطلاع ملی تو وہ بھی چھپ کر نکل گئے اور ابوبصیر کے پاس پہنچ گئے۔

محمد بن عمرو کا بیان ہے کہ حضرت عمر بن خطاب نے مکہ کے مسلمانوں کو لکھا تھا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ابوبصیر کے متعلق فرمایا تھا افسوس ہے اس کی ماں کے لئے، اگر اس کے ساتھ کچھ لوگ ہوتے تو یہ جنگ بھڑکا دیتا (یعنی اگر کچھ لوگ اس کی مدد کو موجود ہوتے) حضرت عمر نے یہ بھی اطلاع دی تھی کہ ابوبصیر سمندر کے ساحل پر مقیم ہے۔ اور ابوجندل بن سہیل جس کو حدیبیہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے واپس مشرکوں کو دے دیا تھا وہ بھی تقریباً ستر سواروں کے ساتھ جو مسلمان ہو گئے تھے ابوجندل کے ساتھ ہو گئے اور سب جا کر ابوبصیر سے مل گئے کیونکہ ابوجندل نے ابوبصیر کے پاس رہنا پسند کیا۔ ابوبصیر نے ان سب کی سرداری ابوجندل کے سپرد کر دی کیونکہ ابوجندل قرشی تھے وہی نماز کی امامت کرتے تھے۔ ابوجندل کی خبر سن کر قبائل غفار، اسلم، جہینہ اور متفرق قبائل کے کچھ لوگ فرار ہو کر ان کے پاس جمع ہو گئے یہاں تک کہ ان کی تعداد تین سو تک پہنچ گئی۔ بے دینی زہری نے بیان کیا ہے قریش کا جو قافلہ ادھر سے گزرتا یہ لوگ اس کا مال چھین لیتے تھے اور قافلہ والوں کو قتل کر دیتے تھے آخر قریش نے تنگ آ کر (ابوسفیان کو) رسول اللہ کے پاس بھیجا۔ قریش نے ابوسفیان بن حرب کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بھیج کر یہ پیغام دیا کہ ابوبصیر اور اس کے ساتھیوں کو آپ (اپنے پاس) بلا لیں، آئندہ ہمارا جو آدمی آپ کے پاس چلا جائے آپ اس کو روک لیں آپ کے لئے روک لینا جائز ہوگا۔

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا خط ابوبصیر وابوجندل کے نام

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ابوبصیر و ابوجندل کو لکھ بھیجا کہ تم دونوں میرے پاس آ جاؤ اور وہ سب مسلمان جو تمہارے ساتھ ہیں ان کو حکم دے دو کہ وہ اپنی اپنی بستیوں کو اور اپنے گھروں کو لوٹ جائیں اور قریش کی یا ان کے قافلوں کی طرف سے کسی سے کوئی تعرض نہ کریں۔ ابوبصیر کے پاس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا نامہ گرامی اس وقت پہنچا جب ان کا آخری وقت تھا جان کنی کی حالت تھی ہاتھ میں خط لے کر پڑھ رہے تھے اسی حالت میں وفات ہو گئی ابوجندل نے ان کو اسی جگہ دفن کر دیا اور ان کی قبر کے قریب مسجد بنا لی۔ اس کے بعد ابوجندل اپنے ساتھیوں کو ساتھ لے کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں پہنچ گئے اور باقی لوگ اپنے اپنے گھروں کو چلے گئے صلح حدیبیہ کا قصہ ختم ہونے کے بعد جب ابوجندل بھاگ کر مسلمانوں کے پاس آ گئے تو کچھ لوگوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو مشورہ دیا تھا کہ ابوجندل کو باپ کے حوالے نہ کیا جائے لیکن حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے واپس کر دیا تھا اب جب کہ قریش کی درخواست پر ابوجندل کو واپس مدینہ آنے کی اجازت مل گئی تو قرآن مجید کی یہ آیت نازل ہوئی اور جو فرمایا گیا تھا اور رسول کی فرمانبرداری پر صحابہ میں ان کے لئے حکم سے خوشی کو پیدا کر دیا گیا۔

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے وعدہ کا پورا ہونا

جب یہ واقعہ ہوا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں نے جو تم لوگوں سے وعدہ کیا تھا وہ بھی ہو گیا اور جب فتح مکہ کے دن کعبہ کی کنجی دستیاب ہوئی تو حضرت عمر بن خطاب نے فرمایا یہ وہی ہے جو میں نے تم لوگوں سے کہا تھا۔ اور حجۃ الوداع کے زمانہ میں عرفات میں تھے اس وقت بھی حضرت عمر نے یاد دلایا یہ وہی ہے جو میں نے تم لوگوں سے کہا تھا۔

## صلح حدیبیہ سے بڑھ کر کوئی فتح نہیں

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے یہی ارشاد فرمایا صلح حدیبیہ سے بڑی کوئی فتح نہیں ہوئی حضرت ابوبکر فرماتے تھے اسلام میں صلح حدیبیہ سے بڑھ کر کوئی فتح نہیں ہوئی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے رب کے درمیان جو معاملہ طے ہوا لوگوں کی عقلیں اس کو سمجھنے سے قاصر رہیں۔ لیکن اللہ ان کی عجلت (بے صبری) کی وجہ سے جلدی نہیں کرتا جب تمام امور اللہ کی مشیت کے مطابق ہو جاتے ہیں تو وہ کرتا ہے میں نے حجۃ الوداع میں سہیل بن عمرو کو قربان گاہ کے قریب کھڑے ہوئے دیکھا کہ وہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی قربانی کے اونٹ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے قریب لاتے تھے اور آپ اپنے ہاتھ سے ان کو ذبح کر رہے تھے پھر حجام کو طلب فرما کر آپ نے سر منڈایا اس وقت میں نے سہیل کو دیکھا کہ سہیل بن عمرو بالوں کو چن چن کر اپنی آنکھوں پر رکھ رہے تھے اور مجھے یاد ہے کہ حدیبیہ کے دن بسم اللہ الرحمن الرحیم لکھنے سے انہوں نے انکار کیا تھا لیکن انہوں نے شکر کیا کہ اللہ نے ان کو اسلام کی توفیق عطا فرمائی۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ |
| پھر جو کوئی قول توڑ دے سو توڑتا ہے اپنے نقصان کو |
| وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ |
| اور جو کوئی پورا کرے اس چیز کو جس پر اقرار کیا اللہ |
| فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا (١٠) |
| سے تو وہ اس کو دے گا اجر بڑا |

یعنی بیعت کے وقت جو قول اقرار کیا ہے اگر کوئی اس کو توڑے گا تو اپنا ہی نقصان کرے گا اللہ و رسول کو کچھ ضرر نہیں پہنچا سکتا۔ اس کو عہد شکنی کی سزا

سے نہیں اور جس نے استقامت دکھائی اور اپنے عہد پیمان کو مضبوطی کے ساتھ پورا کیا تو اللہ اسے بھی بہت بڑا اجر دے گا۔ (تفسیر حقانی)

وفی ذلک ۔ یعنی جو بیعت پوری کرے گا۔

فسیؤتیہ اجرا عظیما ۔ یعنی جنت یا اللہ کی خوشنودی اور اس کا دیدار (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ |
| اب کہیں گے تجھ سے پیچھے رہ جانے والے |
| الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا |
| گنوار کہ ہم مشغول رہے اپنے مالوں کے |
| وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا |
| اور گھر والوں کے سو ہمارا گناہ بخشوا |

## منافقوں کے اندیشے اور بہانے

جب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] کو ساتھ چلنے کے لئے تیار کیا تو [illegible] دوسرے [illegible] کا احساس ہوا [illegible] اور اپنے [illegible] کہنے لگے کہ بھلا [illegible] طرف جائیں جو محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے گھر [illegible] کے ساتھیوں کو قتل کر چکی اب ہمارے گھر [illegible] سے نکلیں گے [illegible] اور ان کے ساتھی اس سفر سے واپس آنے والے نہیں [illegible] دیں گے ان آیات میں حق تعالیٰ نے ان کے نفاق [illegible] آپ کو مدینہ پہنچنے سے قبل ہی مطلع کر دیا کہ تمہارے [illegible] دیہاتی اپنی غیر حاضری کے جھوٹے عذر اور حیلے بہانے کرتے ہوئے آئیں گے اور کہیں گے کہ ہم کو گھر بار کے دھندوں سے فرصت نہ ملی کوئی پیچھے گھر والوں کی خبر لینے والا نہ تھا بہرحال ہم سے قصور ضرور ہوا آپ اللہ سے ہمارا قصور معاف کرا دیجئے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي |
| وہ کہتے ہیں اپنی زبان سے جو نہیں ہے |
| قُلُوبِهِمْ |
| دل میں ان کے |

جھوٹی ظاہرداری ۔ یعنی [illegible] زبان سے کہتے ہیں [illegible] استغفار کی درخواست کرنا بھی محض ظاہرداری ہے دل سے نہیں [illegible] تو سمجھتے ہیں کہ اس کی ضرورت ہی نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ |
| تو کہہ کون ہے کہ کچھ بس چلے تمہارا اللہ سے تمہارے |
| شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ |
| واسطے اگر وہ چاہے تمہارا نقصان یا چاہے |
| بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا |
| تمہارا فائدہ بلکہ اللہ ہے تمہارے |
| تَعْمَلُونَ خَبِيرًا |
| سب کاموں سے خبردار |

**حیلہ تراشی کا جواب** یعنی کسی ہر طرح نفع نقصان خدا کے قبضہ میں ہے کسی کی حیثیت نہیں کہ اس کے سامنے کسی کا کچھ بھی چلا سکے فرض کیجئے تم اس سفر میں رسول کی شرکت کرتے تو نقصان پہنچ جانا تھا، سمجھے کہ [illegible] ہم نہ جانے سے بچ گئے ۔ [illegible] وہ ان سے تمہاری حیلہ تراشی سے قبل ہی کام ان جھوٹے [illegible] حال انہی نے ارادہ کر لیا ہے کہ تمہارے مال اور گھر والوں کی حفاظت کی وجہ سے شرکت نہ ہو سکی [illegible] ۔ کیا خدا اگر تمہیں ان کی طرف سے تم کو نقصان پہنچانا چاہے تو کوئی بچا سکتا ہے [illegible] اور گھروالوں کی حفاظت کی وجہ سے شرکت نہ ہو سکی کیا خدا اگر تم پر سے مال اولاد وغیرہ میں نقصان پہنچانے کا ارادہ کرے تم گھر بیٹھے روک دو گے ۔ یا نفع پہنچانا چاہے تو کوئی دنیا میں کوئی روک سکتا ہے [illegible] میں مشغول کیا اسے کوئی روک سکتا ہے ۔ جب نفع نقصان کا فیصلہ خدا کے ہاتھ میں ہے تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خوشنودی کے مقابلہ میں اہل و عیال کو ترجیح دینا سخت حماقت و ضلالت ہے۔ ان حیلوں بہانوں سے مت سمجھو کہ اللہ خوش ہو جائے گا بلکہ یاد رکھو کہ تمہارے سب اگلے پچھلے اعمال و احوال کی پوری خبر رکھتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| بَلْ ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ |
| کوئی نہیں تم نے تو خیال کیا تھا کہ پھر کر نہ آئے گا رسول |

وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ

[illegible]

ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ

[illegible]

وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا

[illegible]

[illegible]

وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ

[illegible]

فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا وَلِلَّهِ

[illegible]

مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَن

[illegible]

يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ

[illegible]

غَفُورًا رَّحِيمًا

[illegible]

[illegible]

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ

[illegible]

مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ

[illegible]

يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ قُل

[illegible]

لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن

[illegible]

قَبْلُ

[illegible]

### غزوہ خیبر سے متعلق منافقوں کا رویہ

[illegible]

کیا یا استثنا جاہل وہ کیا جو نبی کی طرف منسوب نہیں ہے (تفسیر مظہری)

## ایک اشکال اور اس کا جواب

رہی یہ بات کہ جب مسلمان اتنے ہی دور تھے تو مکہ میں زبردستی کیوں داخل نہ ہو گئے تو اس کی وجہ یہی تھی کہ قریش پر اللہ نے رحم فرمایا کہ اپنے رسول کو اور مسلمانوں کو داخل ہونے سے روک دیا جیسے قریش پر رحم کرنے کے سبب باقی رہنے والے مسلمانوں کو مکہ میں داخل ہونے سے روک دیا تھا کیونکہ اللہ کو یہ علم تھا کہ آئندہ قریش کے اکثر لوگ مسلمان ہو جائیں گے اور ان کی نسل سے بہت سے مؤمن پیدا ہوں گے ایک بات یہ بھی تھی کہ مسلمان مکہ میں زبردستی گھستے اور جنگ ہوتی تو وہاں کچھ مسلمان مرد اور عورتیں بھی پوشیدہ تھے جو حملہ کرنے والوں کو معلوم نہیں تھا ان کے ہلاکت میں پڑ جانے کی وجہ سے بھی رکاوٹ تھی کہ مسلمانوں نے زبردستی داخل ہونے کی کوشش نہیں کی اور اللہ نے یہ باقی رکھا۔

قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا یعنی صرف نفی کے طور پر یہ پیشین گوئی ہے کہ یہ لوگ مال غنیمت کی لالچ میں تمہارے ساتھ جانے کی بات کریں گے مگر اللہ نے پہلے سے فرما دیا کہ یہ تو کوشش ہو گی مگر یہ پیشین گوئی فرمائی کہ یہ جہاد سے ساتھ جانے کی کوشش کریں گے اور ہرگز ساتھ نہیں جا سکیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا |
| پھر اب کہیں گے کہ نہیں تم تو جلتے ہو ہمارے حصہ لینے سے ☆ |

**منافقوں کی چرب زبانی** ☆ یعنی اللہ نے تم کو کوئی منع نہیں فرمایا بلکہ یہ وجہ ہے کہ ہمارا فائدہ نہ ہو سب مال غنیمت تم کو ہی ملے تمہارے ہی ہاتھ آ جائے۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا |
| کوئی نہیں پر وہ نہیں سمجھتے ہیں مگر تھوڑا سا ☆ |

**منافق احمق ہیں** ☆ یعنی بہت تھوڑی سمجھ ہے احمق ہیں یہی سمجھ کر مسلمانوں سے یہ بات کہی جاتی ہے کہ اللہ کے حکم کو حسد پر محمول کرتے ہیں اور پیغمبر اسلام پر حسد کا جھوٹا الزام لگاتے ہیں۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ |
| کہہ دے پیچھے رہ جانے والے گنواروں سے |

| |
|---|
| سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ |
| آئندہ تم کو بلائیں گے ایک قوم پر جو بڑے سخت لڑنے والے |
| شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ |
| تم ان سے لڑو گے یا وہ مسلمان ہوں گے |
| فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا |
| پھر اگر حکم مانو گے دے گا تم کو اللہ بدلہ اچھا ☆ |

## منافقوں کے جھوٹے شوق کی تسکین ☆

یعنی اگر لڑائی کا شوق ہے تو لڑائی میں جانے کے بہت مواقع آگے پیش آنے والے ہیں جہاں سخت جنگجو قوموں سے مسلمانوں کے مقابلے ہوں گے جن کا سلسلہ اس وقت تک جاری رہے گا جب تک کہ وہ قومیں مسلمان ہو کر یا جزیہ دے کر اسلام کی مطیع نہ ہو جائیں۔ اگر واقعی تم کو شوق جہاد ہے تو اس وقت میدان میں آ کر شجاعت دکھلانا۔ اس موقع پر خدا کا حکم مانو گے تو اللہ بہتر بدلہ دے گا (تنبیہ) ان جنگجو قوموں سے "بنو حنیفہ" وغیرہ مراد ہیں جو "مسیلمہ کذاب" کی قوم تھی یا "ہوازن و ثقیف" وغیرہ جن سے حنین میں مقابلہ ہوا یا وہ مرتدین جن پر صدیق اکبر رضی اللہ عنہ نے فوج کشی کی۔ یا فارس و روم اور ترک وغیرہ جن سے خلفائے راشدین کے زمانہ میں لڑائیاں ہوئیں۔ ان میں سے بہت سے لوگ بڑے مسلمان ہوئے اور مال غنیمت بھی بہت آیا۔ (تفسیر عثمانی)

## اسلام کی تین شرطیں (۱) اسلام (۲) لڑائی (۳) جزیہ

تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ یعنی دونوں باتوں میں سے ایک ہو گی قتل یا اسلام۔ مراد یہ ہے کہ دونوں میں سے ایک بات ہونی ضرور ہے یا تو ان سے جنگ کرتے رہو یا وہ اسلام لے آئیں تیسری بات نہیں ہو سکتی ان سے جزیہ نہیں لیا جا سکتا۔ یہ حکم صرف عرب کے مشرکوں اور مرتد ہونے والے مسلمانوں کے لئے خاص تھا۔ اہل اسلام اور دوسری قوموں کے لئے تین صورتیں تھیں جنگ، اسلام یا جزیہ۔

## شیخین کی خلافت کی طرف اشارہ

اس تفسیر پر حضرت ابوبکر کی خلافت کا برحق ہونا اس آیت سے ثابت ہو جائے گا۔ کیونکہ مرتدوں سے جہاد کرنے کی آپ ہی نے مسلمانوں کو دعوت دی لیکن حضرت ابن عباس مجاہد عطاء اور ابن جریج کے نزدیک قوم سے مراد

[illegible]

## حضرت علی رضی اللہ عنہ کا دورِ خلافت:

[illegible]

[illegible]

## مسلمانوں کے نام حضرت ابوبکر صدیقؓ کا خط

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

[illegible]

آپ کے خط کا اثر: [illegible]

گے۔ یہ روایت قرطبی۔ اسی طرح حضرت عثمان غنیؓ نے عبداللہ بن ابی سرح کی کمک کے لئے جبکہ انہوں نے وہاں کے بادشاہ سے جنگ چھیڑی اعراب کو بلایا۔ اور یہ واقعہ بھی مشہور ہے۔ تو یہ تمام تفصیلات اسی امر کو ثابت کر رہی ہیں کہ وہ بلانا جس کا ذکر قرآن مجید میں ہے وہ انہی خلفاء کے عہد کا ہے اور ان میں سے ہر ایک خلیفہ راشد تھا ان کی طرف سے جہاد کی دعوت حکم شرعی تھا اس کا انکار قرآنی فیصلہ تھا جس پر اجر کا وعدہ دیا گیا اور ان کے حکم کی خلاف ورزی عذاب خداوندی کا سبب تھا۔ (معارف کاندھلوی)

**جنگجو قوم سے مراد:** حضرت ابوہریرہؓ فرماتے ہیں اس سے مراد کرد لوگ ہیں۔ ایک مرفوع حدیث میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں قیامت قائم نہ ہوگی جب تک کہ تم ایک ایسی قوم سے لڑائی نہ کرو گے جن کی آنکھیں چھوٹی چھوٹی ہوں گی اور ناک بیٹھی ہوئی ہوگی ان کے منہ مثل تہ بہ تہ ڈھالوں کے ہوں گے۔ حضرت سفیانؒ فرماتے ہیں اس سے مراد ترک ہیں۔ ایک اور حدیث میں ہے کہ تمہیں ایک قوم سے جہاد کرنا پڑے گا جن کی جوتیاں بالوں والی ہوں گی۔ حضرت ابوہریرہؓ فرماتے ہیں اس سے مراد کرد لوگ ہیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

## جنگجو قوموں سے مقابلے دور خلافت میں ہوئے

ارشاد فرمایا سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ یعنی ایک ایسا وقت آنے والا ہے جبکہ تمہیں جہاد کی دعوت دی جائے گی اور یہ جہاد ایک بڑی سخت جنگجو قوم کے ساتھ ہوگا۔ اور تاریخ اسلام شاہد ہے کہ یہ واقعہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے عہد مبارک میں پیش نہیں آیا کیونکہ اول تو آپ کا اس کے بعد اعراب کو کسی غزوہ میں دعوت شرکت دینا ثابت نہیں دوسرا یہ کہ بعد کسی ایسی قوم سے مقابلہ کی نوبت نہیں آئی جو ایسے بہادر اور سخت ہوں جیسا قرآن نے ذکر فرمایا ہے کیونکہ غزوۂ تبوک میں اگرچہ مقابلہ ایسی قوم سے تھا مگر نہ اس غزوہ میں اعراب کو دعوت دینا ثابت ہے اور نہ ہمیں قتال کی نوبت آئی کیونکہ مقابل آدمیوں پر اللہ نے رعب ڈال دیا وہ مقابلہ پر نہیں آئے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اور صحابہ بغیر قتال کے واپس آئے اور غزوۂ حنین میں بھی نہ ان کو دعوت دینا ثابت ہے اور نہ اس وقت مقابل کوئی ایسی قوم تھی جو بڑی سخت اور ساز و سامان والی ہو۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ |
| اور اگر پلٹ جاؤ گے جیسے پلٹ گئے تھے |
| قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿۱۶﴾ |
| پہلی بار دے گا تم کو ایک عذاب دردناک ☆ |

دینگی ☆ یعنی جیسے پہلے "حدیبیہ" جانے سے پیچھے ہٹ گئے تھے اگر آئندہ بھی معرکوں سے پیچھے ہٹے تو سخت دردناک سزا ہوگی شاید آخرت سے پہلے دنیا ہی میں مل جائے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى |
| اندھے پر تکلیف نہیں اور نہ لنگڑے پر |
| الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ |
| تکلیف اور نہ بیمار پر تکلیف ☆ |

☆ یعنی جہاد ان معذوروں پر فرض نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ |
| اور جو کوئی حکم مانے اللہ کا اور اس کے رسول کا اس کو |
| جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ |
| داخل کریگا باغوں میں جن کے نیچے بہتی ہیں نہریں |
| وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿۱۷﴾ |
| اور جو کوئی پلٹ جائے اس کو عذاب دیگا دردناک ☆ |

☆ یعنی تمام احکام اور معاملات میں یہی ضابطہ ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ |
| تحقیق اللہ خوش ہوا ایمان والوں سے |
| إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ |
| جب بیعت کرنے لگے تجھ سے اس درخت کے نیچے ☆ |

بیعت رضوان ☆ جو کیکر کا درخت تھا حدیبیہ میں ہوا تھا۔

"لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ" ایسا فرمانے کی وجہ سے ہی اس بیعت کو بیعت الرضوان کہتے ہیں شروع سورت میں اس کا مفصل قصہ گزر چکا۔ (تفسیر عثمانی)

**صحابہ کی تعریف:** اس آیت سے مقصود مومنوں کی تعریف اور مدح ہے جو گزشتہ کلام سے ملا ہوا ہے جو بیعت پر ابھی تک کی تفصیل تھا۔

پہلے بیان ہو چکا ہے کہ حضرت جابر بن عبداللہؓ نے فرمایا ہم حدیبیہ کے دن ایک

جہنم میں داخل نہ ہوگا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم لوگ آج روئے زمین میں سب سے بہتر ہو۔ مسلم نے حضرت جابرؓ کی مرفوع روایت سے بیان کیا ہے۔ جن لوگوں نے درخت کے نیچے بیعت کر لی تھی ان میں سے کوئی دوزخ میں نہیں جائے گا۔ (تفسیر مظہری)

## اہل عراق کا جھوٹ اور حضرت عثمانؓ کی فضیلت

عراقی لوگوں نے حضرت حسن بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شان میں گستاخی کی جب ۲ ... اور ... تشیع کا سلسلہ شروع کیا تو انہوں نے حضرت عثمانؓ پر الزامات اور تہمتوں کی ایک فہرست تیار کی ہوئی تھی اور ... کے مطابق ... یہ بات بھی کہتے کہ عثمانؓ تو بیعت رضوان میں غیر حاضر رہے تو ایک عراقی نے عبداللہ بن عمرؓ کے سامنے ... یہ بات ... پوچھا، کیا عثمانؓ ... میں نہیں تھے۔ انہوں نے ... بیعت رضوان میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے بیعت کی تھی ... فرمایا میں تجھے اس کی حقیقت بتاتا ہوں اور یہ واقعہ بیان کرتے ہوئے فرمانے لگے اس بیعت میں جو لوگ حاضر تھے تو انہوں نے اپنے ہاتھوں سے بیعت کی تھی لیکن جب عثمانؓ کی بیعت کی نوبت آئی تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے خود اپنے ہاتھ کو عثمانؓ کے ہاتھ کے قائم مقام قرار دیا۔ خدا کی قسم ہم سب کی بیعت سے افضل عثمانؓ کی بیعت تھی۔ (بخاری جلد ... کتاب المناقب ...)

## صحابہ کرام پر طعن وتشنیع اور ان کی لغزشوں میں غور وبحث اس آیت کے خلاف ہے

تفسیر مظہری میں فرمایا کہ جن خیار امت کے متعلق اللہ تعالیٰ نے مغفرت اور رضا کا اعلان فرما دیا ہے اگر ان سے کوئی لغزش یا گناہ ہوا بھی ہو تو یہ آیت اس کے معاف کا اعلان ہے۔ پھر ان کے معاملات کو ... تفتیش ... غور و بحث و مباحثہ کا میدان بنا لینا ... اس آیت کی مخالفت ہے۔ یہ آیت روافض کے قول کی واضح تردید ہے جو ابوبکر و عمرؓ اور دوسرے صحابہ پر کفر و نفاق کے الزام لگاتے ہیں۔

**شجرۂ رضوان:** شجرہ جس کا ذکر اس آیت میں آیا ہے ایک ببول کا درخت تھا اور مشہور یہ ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد کچھ لوگ ... اس درخت کے نیچے نمازیں پڑھتے تھے۔ حضرت فاروق اعظمؓ کو خطرہ ہوا کہ کہیں آئندہ آنے والے جاہل اسی درخت کی پرستش نہ شروع کر دیں جیسے پچھلی امتوں میں اس طرح کے واقعات ہوئے ہیں اس لئے اس درخت کو کٹوا دیا۔ مگر صحیحین میں ہے کہ حضرت طارق بن عبدالرحمن فرماتے ہیں کہ میں ایک مرتبہ حج کے لئے گیا تو راستہ میں میرا گذر ایسے لوگوں پر ہوا جو ایک مقام پر جمع تھے اور نماز پڑھ رہے تھے میں نے ان سے پوچھا کہ یہ کونسی مسجد ہے کہنے لگے یہ وہی درخت ہے جس کے نیچے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیعت رضوان لی تھی۔ میں اس کے بعد حضرت سعید بن مسیبؒ کے پاس حاضر ہوا اور ان کو اس واقعہ کی خبر دی، انہوں نے فرمایا کہ میرے والد ان لوگوں میں سے تھے جو اس بیعت رضوان میں شریک ہوئے تھے، انہوں نے مجھ سے فرمایا کہ ہم جب اگلے سال مکہ مکرمہ حاضر ہوئے تو ہم نے وہ درخت تلاش کیا مگر ہمیں معلوم نہیں ہوا۔ پھر سعید بن مسیبؒ نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ جو خود اس بیعت میں شریک تھے ان کو تو پتہ نہیں لگا تم لوگوں کو اس کا علم ہو گیا، عجیب بات ہے کیا تم ان سے زیادہ واقف ہو۔ (روح المعانی) اس سے معلوم ہوا کہ بعد میں لوگوں نے محض اپنے تخمینہ اور اندازہ سے کسی درخت کو متعین کر لیا اور اس کے نیچے حاضر ہو کر نمازیں پڑھنا شروع کر دیں۔ فاروق اعظمؓ کو بھی معلوم تھا کہ یہ وہ درخت نہیں پھر خطرہ ... شرک کا لاحق ہو گیا ... اس لئے اس کو قطع کرا دیا کیا بعید ہے۔ (معارف القرآن مفتی اعظم)

| |
|---|
| فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ |
| تو معلوم کیا جو ان کے دلوں میں تھا |

صحابہ کی دلی کیفیت جو اللہ تعالیٰ جانتا تھا یعنی دل کا خلوص، حسن نیت، صدق و اخلاص اور ... تفسیر بیان القرآن میں ہے ... فعلم ما فی قلوبہم سے یہی مراد لیا ہے ... صلح کی شرائط سے ان کے دلوں میں جو رنج و غم اور اضطراب پیدا ہوا تھا ... فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ ... (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ |
| پھر اتارا ان پر اطمینان |
| وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا |
| اور انعام دی ان کو ایک فتح نزدیک |
| وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا |
| اور بہت غنیمتیں جن کو وہ لیں گے |

یہ فتح خیبر کی ہے جو حدیبیہ سے واپس آنے کے بعد ہوئی اور مال غنیمت بہت ... سے صحابہؓ سرفراز ہوئے۔ (تفسیر عثمانی)

فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ ... اللہ تعالیٰ نے ان کے دلوں میں اطمینان پیدا کر دیا کہ حضور قلب

سے، تو وہ تمام عمر ساکن مشغول رہے اور جنگ حنین یا حدیبیہ کی تجویز کرنے کے بعد ہی بہاں گم ہو گئے۔

**فتح خیبر کتنے عرصہ بعد ہوئی:** ابن عائذ نے حضرت ابن عباس کی روایت سے بیان کیا کہ حدیبیہ سے واپس آکر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے مدینہ میں قیام فرمایا جمعہ کی شب ہوا۔ تو مروتاپ باپ تقب ہوئیں کا قول نقل کیا ہے کہ بیس روز قیام فرمایا۔ ابن اسحاق نے بحوالہ مسور و مروان بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ذی الحجہ میں مدینہ میں تشریف فرما ہوئے اور محرم تک قیام پذیر رہے محرم میں خیبر کی طرف روانہ ہوئے اور فتح خیبر صفر کے مہینہ میں ہوئی۔ کذا فی التحاوی نلو البدی حافظ نے یہاں روایت ثابت ہے۔ حاکم نے بھی واقدی سے یہی نقل کیا ہے۔

**خیبر کی غنیمتیں:** بخاری نے لکھا ہے کہ حضرت عائشہ نے فرمایا خیبر فتح ہو گیا تو ہم نے کہا اب ہم پیٹ بھر کر چھوارے کھایا کریں گے۔ حضرت ابن عمر نے فرمایا جب تک خیبر کی فتح نہ ہوئی ہم نے پیٹ بھر کر چھوارے نہیں کھائے۔

حافظ محمد بن یوسف صالحی نے کہا خیبر میں ایک قطعہ تھا جس میں قلعے تھے کمرے اور بکثرت نخلستان تھے مدینہ سے آٹھ منزل کی مسافت پر شمال کی طرف تھیں، یہ سب مسلمانوں کے ہاتھ آ گئے۔

**مغانم کثیرۃ کی وضاحت کی وجہ:** صلح حدیبیہ کے بعد مسلمانوں کو جب بظاہر آگے اللہ (یعنی) کوئی فتح حاصل نہیں ہوئی (اس سے جو دل شکستگی پیدا ہوئی اس کا اللہ تعالیٰ نے ازالہ فرمایا اور) تسلی دینے کے لئے مغانم کثیرہ حاصل ہونے کی صراحت فرما دی۔ (تفسیر مظہری)

وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

اور ہے اللہ زبردست حکمت والا۔

جو کچھ اپنے زور اور حکمت سے حدیبیہ کی صلح میں بظاہر دب کر اس طرح کا فتح مند رہیں کیا زبردست مسلمان ہے۔

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً

وعدہ کیا ہے تم سے اللہ نے بہت غنیمتوں کا

تَأْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ

کہ تم ان کو لو گے سو جلدی پہنچا دی تم کو یہ غنیمت

**مستقبل کے نقشے:** ہیں تاکہ مکمل اور بے شمار غنیمتیں ملنے والی ہیں ان میں کا یہ ایک حصہ تم کو خیبر میں مل رہا ہے۔ (تفسیر حقانی)

وحی الٰہی صرف قرآن میں منحصر نہیں: قرآن کے علاوہ بھی بذریعہ وحی احکام آتے ہیں اور احادیث رسول بھی کلام اللہ کے حکم میں ہیں جیسا کہ فرمایا: آیت مذکورہ میں اہل حدیبیہ کا وعدہ جو اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے وہ قرآن میں کہیں مذکور نہیں بلکہ یہ تخصیص اہل حدیبیہ جو اللہ تعالیٰ نے وحی غیر متلو کے ذریعہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سفر حدیبیہ میں فرمایا تھا اسی کو اس جگہ کلام اللہ اور قال اللہ کے الفاظ سے تعبیر فرمایا جس سے معلوم ہوا کہ علاوہ قرآن کے جو احکام احادیث صحیحہ میں مذکور ہیں وہ بھی اس آیت کی تصریح سے کلام اللہ اور قول اللہ میں داخل ہیں۔

جو لوگ ان احادیث رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو حجت دین نہیں مانتے وہ اس آیت کے الفاظ کو گول کرنے کے لئے کہنے لگے کہ یہ معاملہ تو اس صورت میں ہو سکتا ہے کہ سفر حدیبیہ کے قریب ہی نزول وحی ہے چنانچہ قرآن میں موجود ہیں وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا اور باتفاق مفسرین یہاں فتح قریب سے فتح خیبر مراد ہے تو اس طرح قرآن میں فتح خیبر کا اور اس کے مال غنیمت اہل حدیبیہ کے لئے مخصوص ہونے کا ذکر آ گیا اس لئے اس کو کلام اللہ اور قال اللہ سے مراد ہو سکتی ہے تو حقیقت یہ ہے کہ اس آیت میں غنیمت کا وعدہ تو ہے مگر یہ کہیں ذکر نہیں کہ یہ غنیمت اہل حدیبیہ کے ساتھ مخصوص ہوگی دوسرے اس میں شریک نہ ہو سکیں گے یہ تخصیص تو صرف حدیث رسول ہی سے معلوم ہوئی جس کو کلام اللہ اور قول اللہ کا مصداق قرار دیا ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ

اور روک دیا لوگوں کے ہاتھوں کو تم سے ☆

**یعنی** مدد دینے والی قوم تو خاموش رہے اور حدیبیہ یا خیبر میں کفار کے ہاتھوں سے تم کو کچھ ضرر نہ پہنچ پایا اور تمہاری غیبت میں تمہارے اہل و عیال وغیرہ پر کوئی دست درازی نہ کر سکا۔ (تفسیر عثمانی)

ابن اسحاق نے لکھا ہے کہ بنی غطفان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے خلاف یہودیوں کی مدد کو چلے تھے جب انہوں نے سنا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خیبر کے قریب فروکش ہیں تو یہودیوں کی مدد کرنے کے لئے نکل کھڑے ہوئے اور روانہ ہو گئے لیکن ابھی راستہ ہی میں انہوں نے (اپنی بستی کے اندر) اپنے اہل و عیال میں کچھ آہٹ سی محسوس کی تو خیال کیا کہ مسلمان وہاں جا پہنچے فوراً پیچھے قدم لوٹ پڑے اور بال بچوں کی حفاظت میں لگے رہے اور

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے خیبر تک پہنچنے کا راستہ خالی کر دیا۔

ابن اسحاق اور واقدی نے بروایت سعید بن مسیّب بیان کیا کہ عیینہ کے باپ عیینہ بن حصن کے لشکر میں جو غطفان کے سواروں سے بھرا ہوا تھا جب آواز آئی کہ تمہارے پیچھے گھر والوں کی عورتوں پر حملہ کر دیا گیا ہے یہ آواز سنتے ہی لوگ لوٹ پڑے، کسی کو کسی طرف سے حملہ نہیں ہوا نہ کسی کو دیکھا۔ ہمارا خیال ہے کہ وہ آواز آسمان سے آئی تھی۔

بعض اہل تفسیر نے کَفَّ اَیْدِیَ النَّاسِ کا یہ مطلب بیان کیا کہ یہود کی دست درازی کو روک دیا۔ (تفسیر مظہری)

## وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ

اور تاکہ یہ نمونہ ہو قدرت کا مسلمانوں کے واسطے

## مسلمانوں کے لئے قدرت الٰہی کی نشانی

یعنی مسلمان سمجھیں کہ اللہ کی قدرت کیسی ہے اور ان کا حامی کس طرح ان کا ساتھ دیتا ہے اور اپنے وعدے پورے کرتا ہے۔

## وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا

اور چلائے تم کو سیدھی راہ

یعنی اللہ کے وعدہ پر توکل اور اس کی امداد پر بھروسہ رکھنے کی راہ پر چلائے اور کسی حالت میں بھی مایوس نہ ہوں۔ (تفسیر مظہری)

## غزوۂ خیبر کے واقعہ کی تفصیلات

امام احمد، ابن خزیمہ اور حاکم نے حضرت ابوہریرہؓ کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے مدینہ میں سباع بن عرفطہ کو اپنا جانشین مقرر فرمایا۔

**یہودِ مدینہ کی پریشانی:** جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اور مسلمانوں نے (خیبر کو روانہ ہونے کی) تیاری کر لی تو مدینہ کے یہودیوں کو پریشانی ہوئی تاکہ مدینہ کے جس یہودی کا کسی مسلمان پر کچھ حق (قرض) تھا وہ یہودی اس مسلمان سے چمٹ گیا (کہ میرا قرض ادا کر دو)۔

امام احمد و طبرانی نے ابن عمرؓ سے جو حدیث بیان کی ہے اس میں آیا ہے کہ ابوعبسؓ نے فرمایا کہ ہمارے پاس کچھ نہیں تھا نہ کھانے کو سامان تھا، میں نے عرض کیا یا رسول اللہ میرے پاس خرچ نہیں ہے، حضور نے اپنے بدن سے ایک چادر عطا فرمائی۔ میں نے سنا ہے کہ خیبر کی وادی میں ایسی ہی ہوگی جیسی تم دیکھ رہے ہو۔ پہاڑوں کی طرف سے پہنچے تو آپ نے فرمایا (ان کے علاوہ) اللہ تعالیٰ نے تم کو خیبر میں بھی

جو لوگ بیمار رہتے تھے وہ بھی غنیمت لوٹنے میں سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں آئے اور حالت بیان کی، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: رونا تو یہی ہے کہ تم نے دیکھا نہیں، جن لوگوں کو جنت کی ہوا لگ گئی۔

**مقام صہباء میں قیام:** جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خیبر کے قریب مقام صہباء میں پہنچے تو (سب سامان کھانے کا منگوایا) پھر عصر کی نماز پڑھ کر کھانا طلب فرمایا لیکن حضور کی خدمت میں صرف ستو پیش کئے گئے (کسی کے پاس اور کچھ نہیں تھا) آپ نے ستو کو پانی سے تر کیا اور خود بھی کھائے اور ہم نے بھی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ستو کھائے پھر آپ نے نماز پڑھی (بخاری) امام احمد نے یہ روایت بخاری کی سند سے بیان کی ہے کہ پھر حضور وہاں سے چل کر رات کو خیبر پہنچے، رات کا وقت تھا (رجیع کے ایک) قرار گاہ آپ کے اصحاب نے پڑاؤ کیا، رات کو وہیں ٹھہرے رہے، اور (رجیع) خیبر کے قریب ہی ایک جگہ ہے۔

**یہودیوں کا غلط خیال:** یہودیوں کا گمان تو یہ تھا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان سے جنگ کیسے کریں گے کیونکہ یہودیوں میں قوت بھی تھی، اسلحہ بھی تھے اور تعداد بھی (بہت) تھی، جب ان کو معلوم ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم روانہ ہو گئے ہیں تو وہ سب دس ہزار جنگجو جوان تھے۔ (خیبر سے) نکل کر قطار در قطار کھڑے ہو گئے، جب مسلمانوں کے سامنے آئے تو وہ کہتے تھے کہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم کا خیال ہے کہ وہ ہم سے لڑیں گے، ان کو آنا بہت دور کی بات ہے اور ان کا یہی معمول تھا۔

جس رات کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان کے میدان میں اترے اس رات کو یہودیوں نے کوئی حرکت ہی نہیں کی، سب غافل بے خبر پڑے سوتے رہے، مرغ نے بھی بانگ نہیں دی یہاں تک کہ صبح ہو گئی تو ان کے دل بے حد دہل گئے اور قلعوں کے دروازے کھول کر باہر آ گئے۔

**حملہ:** بخاری کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خیبر کو رات کو پہنچے اور آپ کا دستور تھا کہ اگر کسی قوم پر (حملہ کرنے کے لئے) رات کو پہنچتے تھے تو صبح سے پہلے حملہ نہیں کرتے تھے، صبح ہو جاتی اور بستی سے اذان کی آواز سنائی دیتی تو حملہ نہیں کرتے تھے اور اذان کی آواز نہ آتی تو حملہ کر دیتے تھے۔ ہم نے فجر کی نماز تڑکے سے پڑھ لی، اذان کی آواز نہیں آئی، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے ساتھی مسلمان بھی سوار ہو گئے، بستی والے اپنے ٹوکرے اور کسیاں لے کر کھیتوں پر جانے کے لئے باہر نکلے، جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو دیکھا تو پشت پھیر کر بھاگ پڑے اور چلانے لگے، اور یہ اللہ اکبر بھی، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے دونوں ہاتھ اٹھا کر فرمایا: اللہ اکبر خیبر تباہ ہو گیا، ہم جب (کسی قوم کے) میدان میں اترتے ہیں (تو ان کی

تنگی سے گزارتے ہیں۔ لیکن وہ نہیں مانتے) تو ان لوگوں کو قتل کردیا جاتا ہے جن کی سرکشی ہوتی ہے البتہ جو لوگ صلح کرتے ہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے آغاز جہاد خیبر کے باشندوں سے کیا۔ مسلمانوں کی صف بندی کی اور ان کو نصیحت کردی کہ میری اجازت سے پہلے لڑائی شروع نہ کرنا۔

**نافرمان کے لئے جنت نہیں ہے:** حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے ابو زرعہ نے نقل کیا ہے کہ اشجع کے ایک آدمی نے ایک یہودی پر حملہ کردیا اس یہودی نے حملہ کیا اور مسلمان کو قتل کردیا لوگوں نے کہا فلاں شخص شہید ہو گیا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جنگ کی میں نے ممانعت کردی تھی اس کے بعد اس نے یہودی پر حملہ کردیا مسلمانوں سے کہا گیا پس حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک منادی کو حکم دیا کہ وہ ندا کردے کسی نافرمان کے لئے جنت حلال نہیں۔

**عافیت کی دعا مانگو:** طبرانی نے حضرت جابر کی روایت سے بیان کیا ہے کہ اس روز رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا دشمن سے جنگ کی تمنا نہ کرو اور اللہ سے عافیت کی دعا کرتے رہو کیونکہ تم کو معلوم نہیں کہ (جنگ میں) تم کو کیا صورت پیش آئے گی ہاں جب مڈبھیڑ ہو ہی جائے گی تو دعا کرنا کہ اے اللہ ہمارے اور ان کے مالک ہماری اور ان کی پیشانیاں تیرے قبضہ میں ہیں تو ہی ان کو قتل کرے گا پھر زمین سے چمٹ کر بیٹھ جاؤ اور جب وہ تم پر حملہ کر دیں تو اٹھ کھڑے ہو اور اللہ اکبر کہو۔ الحدیث۔

**سب سے پہلا محاصرہ:** واقدی اور محمد بن عمر وغیرہ کا بیان ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جھنڈے تقسیم کردیئے (ہر دستہ کا ایک جھنڈا مقرر کردیا) اور لوگوں کو لڑنے کی اجازت دے دی اور جمے رہنے کی ترغیب دی۔ سب سے اول جس قلعہ کا محاصرہ کیا وہ ناعم نطاۃ کا قلعہ تھا جہاں سخت جنگ ہوئی اہل نطاۃ نے شدید ترین جنگ کی شام کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم رجیع کو لوٹ آئے اسی طرح صبح کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جھنڈے لے کر نکلتے تھے اور شام کو واپس آ جاتے تھے) آخر اللہ نے وہ قلعہ فتح کرادیا۔

**بخار اور اس کا علاج:** بیہقی، ابو نعیم اور محمد بن عمر کی روایت ہے کہ جب مسلمان خیبر تک پہنچے تو ان ایام میں کھجوریں پکی تھیں مسلمانوں کو ان کے کھانے سے بخار آ گیا لوگوں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے اس کی شکایت کی تو فرمایا پانی مشکیزوں میں بھر کر ٹھنڈا کرو اور فجر کی دونوں اذانوں کے درمیان بسم اللہ کہہ کر پانی (اپنے اوپر) بہاؤ۔ مسلمانوں نے حکم کی تعمیل کی فوراً (ایسے) چست ہو گئے جیسے کسی بندش میں تھے اور وہ کھل گئی (گویا اونٹ کا زانو بند کھل گیا اور وہ چستی کے ساتھ کھڑا ہوگیا)۔

**دوسرا محاصرہ:** ناعم کی فتح کے بعد مسلمانوں نے صعب بن معاذ کے قلعہ کا محاصرہ کیا۔ محمد بن عمر نے ابو یسر کعب بن عمرو کی روایت سے بیان کیا ہے کہ یہ قلعہ (صعب) مضبوط قلعہ تھا مسلمانوں نے تین روز تک اس کا محاصرہ کیا۔

## غذائی سامان کی قلت اور دعا کی قبولیت

ابن اسحاق نے قبیلہ اسلم کے ایک آدمی کے حوالہ سے اور محمد بن عمر نے معتب اسلمی کے بیان سے نقل کیا ہے معتب نے کہا ہمارے قبیلہ اسلم والوں کو شدت بھوک نے ستا رکھا تھا یہاں تک کہ ہم خیبر میں پہنچے اور دس روز تک حصن نطاۃ کے محاصرہ پر جمے رہے لیکن کوئی ایسا مقام جہاں کھانے کی کوئی چیز ہوتی فتح نہیں ہوا لوگوں نے اسماء بن حارثہ کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں بھیجا اسماء نے جا کر عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قبیلہ والوں نے آپ کو سلام کہا ہے اور عرض کیا ہے کہ ہم سخت بھوک کی تکلیف میں مبتلا ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میرے قبضہ میں کوئی ایسی چیز نہیں کہ میں ان کو کھانے کے لئے دے سکوں پھر فرمایا اے اللہ سب سے بڑا قلعہ جس میں سب سے زیادہ چربی ہو فتح کرادے یہ دعا کرنے کے بعد جھنڈا حباب بن منذر کو عطا فرمایا اور لوگوں کو حباب کے جھنڈے کے نیچے جمع ہونے کی دعوت دی راوی کا بیان ہے کہ ہم (حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت سے) لوٹنے بھی نہ پائے تھے کہ اللہ نے صعب بن معاذ کے قلعہ کی فتح عنایت کردی خیبر میں اس سے بڑھ کر (غذائی رسد والا) اتنا موٹا چربی والا کوئی قلعہ نہیں تھا۔

**دو بدو مقابلہ:** حباب کا مقابلہ کرنے کے لئے یوشع یہودی باہر نکلا تھا حباب نے اس کو قتل کردیا پھر زیال نکل کر آیا اس کو عمارہ بن عقبہ غفاری نے جا لیا اس پر لوگوں نے کہا اس کا جہاد بیکار گیا حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس پر کوئی گناہ بھی نہیں ہوا (کہ اس نے حباب کے حریف کو حباب سے پہلے ہی قتل کردیا) بلکہ اس کو اجر ملے گا وہاں کا عمل قابل ستائش ہے۔

**صعب قلعہ سے غذائی اشیاء کا ملنا:** محمد بن عمر نے حضرت جابر کی روایت سے بیان کیا کہ صعب کے قلعہ کے اندر مسلمانوں کو اتنی کثرت سے کھانے کی چیزیں ملیں جن کا ان کو گمان بھی نہیں تھا جو چھوارے گھی شہد تیل وغیرہ (ہر چیز بافراط ہاتھ آئی) پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے منادی نے ندا کی کھاؤ اور چارہ دو لیکن اپنے ساتھ لاد کر مت لے جاؤ یعنی یہاں سے اٹھا کر اپنی بستیوں میں مت لے جانا۔

## تیسرا محاصرہ اور یہودی کا فتح کے لئے راستہ بتانا

بیہقی نے محمد بن عمر کی روایت سے بیان کیا ہے کہ یہودی حصن ناعم اور حصن صعب سے منتقل ہو کر قلعہ زبیر پر چلے گئے (پہاڑی کی وہ چوٹی جو حصن نطاۃ کے حصہ میں آتی تھی قلعہ زبیر اسی چوٹی پر بنا ہوا ہے) اس چوٹی پر ایک قلعہ تھا مسلمانوں نے اس قلعہ کا محاصرہ کیا اور تین روز محاصرہ قائم رکھا ایک یہودی

جس کا نام غزال تھا (پیشہ ور ...) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا ابوالقاسم میں آپ کو ایک تدبیر بتاتا ہوں جس سے اہل حصن کے جھگڑے سے آپ کو راحت مل جائے گی بشرطیکہ مجھے مع اہل و عیال کے امن دیا جائے اور ان کے ساتھ شق کو چلے جانے کی آپ اجازت دے دیں کیونکہ شق میں رہنے والے آپ کے رعب سے مرعوب ہو گئے ہیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کو مع اہل و عیال اور بچوں کے امن دے دیا۔ یہودی نے کہا اگر آپ ایک مہینہ تک یہاں پڑے رہیں گے تب بھی اہل حصن کو کچھ پرواہ نہ ہوگی کیونکہ زمین کے اندر ان کے پاس پانی جمع ہے رات کو نکل کر وہ پی جاتے ہیں اور وہیں سے پانی لے آتے ہیں اگر آپ پانی تک پہنچ کر ان کا راستہ بند کر دیں تو وہ (بے تاب ہو کر) باہر نکل پڑیں گے (حسب مشورہ) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جا کر ان کے پانی کا سلسلہ منقطع کر دیا پانی کا راستہ بند کیا تو وہ لوگ باہر نکل آئے اور سخت ترین مقابلہ کیا اس روز کی لڑائی میں چند مسلمان شہید ہو گئے اور کچھ یہودی مارے گئے اور قلعہ فتح ہو گیا نطاۃ کا یہ آخری قلعہ تھا۔

**[illegible] قلعہ پر حملہ:** نطاۃ سے فارغ ہونے کے بعد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم شق کی طرف متوجہ ہوئے شق میں متعدد قلعے تھے سب سے پہلے جس قلعہ کو [illegible] کہا جاتا تھا اس سے پہلے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اسی کا رخ کیا یہودیوں نے سخت ترین مقابلہ کیا۔ ایک یہودی جس کو غزال کہا جاتا تھا مقابلہ کے لئے نکلا حباب بن منذر نے اس کو قتل کر دیا پھر دوسرا یہودی نکل کر آیا اس کو ابودجانہ نے قتل کر دیا اور اس کی زرہ اور تلوار لے کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] دے دی۔ اس کے بعد یہودی میدان میں نکل کر مقابلہ کرنے سے رک گئے۔ مسلمانوں نے نعرۂ تکبیر بلند کیا اور گڑھی پر حملہ کر دیا اور اندر گھس گئے۔ حضرت ابودجانہ آگے آگے تھے۔ وہاں مسلمانوں کو بڑا مال اسباب بکریاں ملیں اور قلعہ والے جو جنگجو لوگ تھے سب بھاگ کر نزار (قلعہ کا نام) میں چلے گئے۔ نطاۃ میں جو لوگ باقی رہ گئے تھے وہ بھی نزار میں آ گئے اور وہاں یہودیوں کے ساتھ قلعہ بند ہو گئے۔

**قلعہ نزار پر حملہ اور معجزۂ نبوی:** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی محاصرہ کر لیا (نزار کی طرف) [illegible] کی [illegible] جگہ کی اہل قلعہ نے مسلمانوں پر تیروں اور پتھروں کی بارش کر دی کچھ تیر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف بھی آئے [illegible] آپ نے کنکریاں مٹھی میں لے کر [illegible] قلعہ پر پھینکیں [illegible] قلعہ لرز گیا [illegible] مسلمان اندر داخل ہو گئے اور قلعہ [illegible] نطاۃ اور شق کے قلعے فتح ہو گئے تو جو لوگ باقی رہ گئے تھے وہ کتیبہ کی گڑھیوں کی طرف بھاگ گئے۔

**قموص پر حملہ:** خیبر کی گڑھیوں میں سب سے بڑی گڑھی قموص تھی جو بڑی مضبوط اور محفوظ تھی ابن ابی شیبہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کا محاصرہ [illegible] بیس راتوں تک محاصرہ رہا۔

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تکلیف

شیخین نے حضرت سہل بن سعد کی روایت سے اور بخاری و ابونعیم نے حضرت سلمہ بن الاکوع کی روایت سے اور ابونعیم نے حضرت عمر، حضرت ابن عباس، حضرت سعد بن ابی وقاص، حضرت عمران بن حصین اور حضرت جابر بن عبداللہ کی روایت سے اور مسلم و بیہقی نے حضرت ابوہریرہ کی روایت سے اور احمد و ابو یعلی و بیہقی نے حضرت علی کی روایت سے اور ابونعیم و بیہقی نے حضرت بریدہ کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو (درد) شقیقہ (آدھے سر کا درد) لاحق ہو جاتا تھا جس کی وجہ سے ایک دو روز آپ باہر تشریف نہیں لاتے تھے جب خیبر میں فروکش ہوئے تو (ایسا ہی ہوا آپ کو) شقیقہ شروع ہو گیا۔

**لڑائی:** آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت ابوبکر کو اپنا جھنڈا دے کر بھیجا حضرت ابوبکر نے جھنڈا لے کر سخت لڑائی کی [illegible] [illegible] حضرت علی کی روایت میں آیا ہے کہ [illegible] شروع [illegible] کا [illegible] پہنچا۔

**فتح کے ہاتھ میں جھنڈا:** حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو ان کی اطلاع ملی تو فرمایا کل میں یہ جھنڈا اس کو دوں گا جس کے ہاتھ پر اللہ فتح عنایت فرمائے گا وہ میدان سے بھاگنے والا نہ ہوگا اللہ اور اس کے رسول سے محبت کرنے والا ہوگا اور بزور فتح حاصل کرے گا۔ حضرت بریدہ کا بیان ہے [illegible] قربانیوں کے بعد دل کو یقین ہو گیا کہ کل فتح حاصل ہو جائے گی [illegible] رات بھر سوچتے رہے کہ کل جھنڈا کس کو دیا جائے گا صبح ہوئی تو لوگ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں [illegible] ہر ایک کو خواہش تھی کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اس کو جھنڈا عطا فرمائیں۔ حضرت بریدہ کی روایت ہے کہ حضرت عمر نے فرمایا اس روز کے علاوہ مجھے کبھی امارت کی خواہش نہیں ہوئی کہ مجھے امیر بنایا جائے۔ صبح کو فجر کی نماز کے بعد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جھنڈا طلب فرمایا اور کھڑے ہو کر [illegible] نصیحت فرمائی پھر فرمایا علی کہاں ہیں لوگوں نے کہا ان کی آنکھیں آ گئی ہیں [illegible] لانے کے لئے بھیجا گیا حضرت سلمہ کا بیان ہے کہ میں حضرت علی کا ہاتھ پکڑ کر لے آیا۔

**معجزہ:** حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم کو کیا ہوا حضرت علی نے عرض [illegible]

دی پھر آنکھیں ٹھیک ہو گئیں اتنی کہ گویا کبھی کوئی تکلیف ہی نہیں ہوئی تھی۔ ایک روایت میں حضرت علیؓ کا بیان آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے میرا سر اپنی گود میں لیا پھر اپنا لعاب دہن دست مبارک میں لے کر میری آنکھوں میں مل دیا اسی وقت میری آنکھیں ایسی ہو گئیں گویا کبھی دکھی ہی نہ تھیں پس اس کے بعد وفات تک حضرت علیؓ کی آنکھیں کبھی نہیں دکھیں۔

**حضرت علیؓ کو نصیحت:** اس واقعہ کے بعد حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے جھنڈا ان کو عطا فرمایا۔ حضرت علیؓ نے عرض کیا یا رسول اللہ میں ان سے یہاں تک لڑوں گا کہ وہ ہماری طرح (مسلمان) ہو جائیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آہستہ چال سے چل کر جاؤ جب ان کے علاقہ میں پہنچ جاؤ تو ان کو اسلام کی دعوت دو اور ان کو بتاؤ کہ ان پر اللہ کے کیا حقوق ہیں۔ خدا کی قسم اگر تمہارے ذریعہ سے اللہ ایک آدمی کو بھی ہدایت کر دے تو یہ سرخ اونٹوں سے بھی تمہارے لئے زیادہ بہتر (مفید) ہوگا۔ حضرت علیؓ جھنڈا لے کر چلے اور قلعہ کے نیچے پہنچ کر جھنڈا زمین میں گاڑ دیا۔ ایک یہودی نے قلعہ کے اوپر سے سر باہر نکال کر دیکھا اور پوچھا آپ کون ہیں؟ حضرت علیؓ نے فرمایا میں علی بن ابو طالب ہوں۔ یہودی نے کہا قسم ہے اس کی جس نے موسیٰ پر توریت نازل کی تم غالب آ گئے۔ حضرت علیؓ فتح کر کے ہی لوٹے۔

**دو بدو مقابلہ، حضرت علیؓ کی شجاعت:** محمد بن عمرو نے حضرت جابرؓ کی روایت سے بیان کیا کہ خیبر کے قلعہ سے جو سب سے پہلے باہر نکل کر آیا حضرت علیؓ سے مقابلہ کرنے والا وہ مرحب کا بھائی حارث تھا حضرت علیؓ نے اس کو قتل کر دیا اس کے ساتھی قلعہ کے اندر واپس لوٹ گئے پھر عامر قلعہ سے برآمد ہوا یہ دراز قامت جسیم آدمی تھا حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا عامر پانچ ہاتھ کا ہے تم دیکھتے ہو یہ پانچ ہاتھ کا آدمی ہے اور دعوت مقابلہ دے رہا ہے حضرت علیؓ اس کے مقابلہ پر گئے اور اس کو قتل کر دیا اس کے بعد یاسر نکلا۔ حضرت علیؓ اس کے مقابلہ کے لئے بھی جانے لگے تو حضرت زبیرؓ نے کہا میں آپ کو قسم دے کر کہتا ہوں کہ مجھے اس سے تنہا نمٹنے دیجئے۔ حضرت علیؓ نے حضرت زبیرؓ کو جانے دیا۔ جب حضرت زبیرؓ مقابلہ کے لئے برآمد ہوئے تو حضرت صفیہؓ نے کہا یا رسول اللہ میرا بیٹا مارا جائے گا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا نہیں بلکہ تمہارا بیٹا ان شاء اللہ اس کو قتل کر دے گا چنانچہ حضرت زبیرؓ نے یاسر کو قتل کر دیا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے (حضرت زبیرؓ سے فرمایا) قربان ہوں تم پر میرے چچا اور خالہ۔ ہر نبی کا حواری (خاص قلبی دوست) ہوتا ہے میرا حواری زبیر ہے۔ حضرت سلمہ بن اکوع کی روایت میں ہے کہ مرحب رجز (رزمیہ اشعار) پڑھتا ہوا باہر آیا حضرت علیؓ نے اس کو بھی قتل کر دیا۔ امام احمد نے حضرت علیؓ کا قول نقل کیا ہے کہ جب میں نے مرحب کو قتل کر دیا تو اس کا سر لے کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا۔ بیہقی اور محمد بن عمرو نے حضرت جابر بن عبداللہ کے حوالے سے بیان کیا کہ حضرت محمد بن مسلمہ نے مرحب کو قتل کیا تھا لیکن صحیح روایت مسلم کی ہے کہ حضرت علیؓ نے مرحب کو قتل کیا تھا۔ ابن اسحاق کی روایت ہے کہ حضرت ابو رافعؓ نے بیان کیا جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے (جھنڈا دے کر) حضرت علیؓ کو بھیجا تو میں بھی حضرت علیؓ کے ساتھ تھا آپ قلعہ کے قریب پہنچے تو اہل قلعہ باہر نکل آئے حضرت علیؓ ان سے لڑنے لگے ایک یہودی نے حضرت علیؓ کی تلوار پر ضرب لگائی جس سے ڈھال آپ کے ہاتھ سے گر گئی ایک کواڑ قلعہ کے پاس پڑا ہوا تھا آپ نے فوراً اس کو اٹھا لیا اس کو ڈھال بنا لیا اور برابر لڑتے رہے تا آنکہ اللہ نے فتح عطا فرما دی لڑائی سے فارغ ہو کر وہ کواڑ اپنے ہاتھ سے پھینک دیا۔ ابو رافع کہتے ہیں میں نے دیکھا کہ سات آدمی اور تھے میں آٹھواں تھا ہم سب نے کوشش کی کہ اس کواڑ کو الٹ دیں لیکن پلٹ نہ سکے۔

بیہقی نے دو طریقوں سے حضرت محمد بن علی (محمد حنفیہ) کی روایت سے بیان کیا کہ حضرت جابر بن عبداللہ نے بیان کیا کہ حضرت علیؓ نے خیبر کے دن دروازہ اٹھا لیا (تو ایسے اکھاڑا) کہ مسلمان اس پر چڑھ کر قلعہ پر پہنچ گئے اور قلعہ کو فتح کر لیا۔ بعد کو لوگوں نے اس دروازہ کو اٹھانا چاہا تو چالیس آدمی اس کو اٹھا نہ سکے۔ اس روایت کے سب راوی ثقہ ہیں صرف لیث بن ابی سلیم غیر معتبر ہے۔

حضرت جابرؓ کی ایک روایت میں آیا ہے کہ ستر آدمیوں نے جمع ہو کر کوشش کی کہ اس دروازے کو اس کی جگہ پر لا دیں۔ ... حاکم نے بھی یہ روایت بیان کی ہے۔

### قیدی عورتیں اور حضرت صفیہؓ

قموص میں ابو الحقیق کے قلعہ کے اندر سے کچھ عورتیں گرفتار ہوئیں انہیں میں حیی بن اخطب کی بیٹی حضرت صفیہؓ بھی تھیں۔ حضرت بلالؓ ان کو اور ان کے ساتھ ایک اور عورت کو اس راستہ سے لے کر آئے جہاں یہودیوں کی لاشیں پڑی ہوئی تھیں۔ حضرت صفیہؓ کے ساتھ والی عورت ان کو دیکھ کر چیخ پڑی اور منہ پیٹ لیا اور اپنے سر پر خاک ڈالنے لگی۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کو دیکھ کر فرمایا اس شیطانیہ کو الگ لے جاؤ پھر حضرت صفیہؓ کو اپنے پیچھے آنے کا حکم دیا اور اپنی چادر ان پر ڈال دی چادر ڈالتے ہی مسلمان سمجھ گئے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت صفیہؓ کو اپنے لئے منتخب فرما لیا۔ حضرت صفیہؓ کے ساتھ والی یہودن کی بے قراری دیکھ کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت بلالؓ سے فرمایا کیا تمہارے دل کے اندر سے رحم بالکل نکال لیا گیا (یعنی کیا تمہارے دل میں رحم بالکل نہیں رہا) کہ تم ان دونوں عورتوں کو ایسے راستہ سے لائے جہاں ان کے مردوں کی لاشیں پڑی ہوئی تھیں۔

**حضرت صفیہ کا خواب** [illegible]

[illegible] آپ نے اپنے شوہر سے بیان کیا [illegible]

[illegible]

**شادی** [illegible] (خیبر) [illegible] خدمت [illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر [illegible]

[illegible] حضرت صفیہ [illegible]

[illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

**[illegible] کی فضیلت** [illegible]

[illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible] حضرت صفیہ [illegible]

[illegible]

[illegible]

خیبر کی زمینیں [illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

## یہودیوں کی غداری اور خیبر سے جلاوطنی

[illegible]

[illegible]

[illegible] حضرت بشر نے [illegible] آپ کی خدمت میں [illegible] اپنے منہ میں جو بات محسوس کی [illegible] کھانا نہیں [illegible] جب آپ نے اپنے [illegible] کی بات [illegible] جانا [illegible] زہر [illegible] حضرت بشر [illegible] ہو گئی۔

## رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی شہادت

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی [illegible] وفات [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible] کا اثر [illegible] محسوس کرتا ہوں (اس سے [illegible]) [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم شہید ہوئے۔

**حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا درگزر** حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس یہودن کو طلب فرمایا [illegible] (کہ تو نے [illegible]) [illegible] اگر آپ نبی ہیں [illegible] ہو جائے گی [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے درگزر فرمایا۔

ابو داؤد [illegible] زہری کا قول نقل کیا ہے کہ وہ عورت مسلمان ہو گئی [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کو چھوڑ دیا [illegible] روایت [illegible] قتل کئے [illegible] اس عورت نے کہا [illegible] لوگوں کو [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] کیا۔

**مختلف روایات میں تطبیق:** [illegible] کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] حضرت جابر کی روایت ہے [illegible] حضرت بشر بن براء کا انتقال ہو گیا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے حکم سے [illegible] قتل کر دیا گیا [illegible] اس روایت [illegible] بشر کے [illegible] کیا گیا۔

مسلمان [illegible] قتل کریں [illegible] آپ اپنی [illegible] جب حضرت بشر کا انتقال ہو گیا تو قصاص [illegible] لیا گیا۔

## حضرت جعفر بن ابی طالب کی حبشہ سے واپسی

حضرت ابو موسیٰ اشعری نے فرمایا ہم یمن میں تھے [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مکہ سے (مدینہ کو) [illegible] ہجرت کر کے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں پہنچنے [illegible] حضرت جعفر بن ابی طالب سے ہماری ملاقات ہو گئی حضرت جعفر نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہم کو یہاں بھیجا [illegible] ہم بھی حضرت جعفر کے ساتھ [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] خیبر [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں [illegible] پہنچے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] ہمارا بھی حصہ لگایا [illegible] (یعنی حضرت جعفر [illegible]) [illegible] جعفر بن ابی طالب کے پہنچنے پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible] حضرت جعفر نے جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت جعفر کے [illegible] فرمایا تمہارے لئے [illegible] حبشہ [illegible] حبشہ سے مدینہ [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت جعفر کی دونوں آنکھوں کے درمیان چوما یعنی پیشانی چومی (رواہ البیہقی)۔

## حضرت ابو ہریرہ اور قبیلہ دوس والوں کی آمد

حضرت ابو ہریرہ [illegible] اور قبیلہ دوس کے [illegible] آئے [illegible] جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] خیبر [illegible] ہم سب [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] مسلمانوں کے ساتھ مال غنیمت میں [illegible] ہم کو بھی [illegible] دیا۔ رواہ احمد والبخاری فی التاریخ [illegible] والبیہقی وابن خزیمۃ والحاکم۔

## فدک کا قصہ

خیبر میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جو (خیبر والوں کے ساتھ) معاملہ کیا تھا فدک والوں کو جب اس کی اطلاع ملی تو انہوں نے دوبارہ صلح کے لئے ایک وفد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں بھیجا اور کہا کہ ہم اپنی زمینوں کی حفاظت کی ذمہ داری آپ سے لیں اور آدھا چاہتے ہیں تم ساری زمین بھی آپ کے لئے چھوڑ جاتے ہیں کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ درخواست قبول فرمالی لیکن شرط یہ لگائی کہ اب (تم یہیں رہو اور کام کرو) ؟ جب ہم چاہیں گے تم کو نکال دیں گے اہل فدک اس پر راضی ہو گئے۔ (چونکہ خیبر پر قبضہ جنگ کے بعد ہوا تھا اس لئے) خیبر (کے مال) میں سب مسلمان مجاہد شریک ہوئے اور فدک (پر قبضہ بغیر جنگ کے ہوا تھا اس لئے) خالص رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ملکیت رہا مسلمانوں کو فدک پر کچھ ... اس وقت دونوں ... (دوبارہ لشکر کشی کرنے) کی ضرورت نہیں پڑی۔ حضرت عمرؓ نے اہل خیبر کی طرح ان کو بھی جلا وطن کر دیا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ |
| اور ایک فتح اور جو تمہارے بس میں نہ آئی وہ |
| اللَّهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ |
| اللہ کے قابو میں ہے اور اللہ ہر |
| شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢١﴾ |
| چیز کر سکتا ہے |

فتح مکہ کی بشارت ہے یعنی اس بیعت کے انعام میں فتح خیبر دی۔ اور مکہ کی فتح ... ابھی تمہارے قابو میں نہیں آئی ... مگر اللہ نے اس کا وعدہ کر لیا اور اس کی تمہید صلح حدیبیہ کا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

یا احاط سے مراد ہے علمی احاطہ یعنی اللہ کا علم ان کو گھیرے ہوئے ہے ان کو تمہارے لئے فتح کرانا ہو چکا ہے۔

وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا۔ یعنی اگرچہ تم ان پر قدرت نہیں رکھتے مگر اللہ ہر چیز پر قادر ہو سکتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا |
| اور اگر لڑتے تم سے کافر تو پھیرتے |
| الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَ |
| پیٹھ پھر نہ پاتے کوئی حمایتی اور |
| لَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾ |
| نہ مددگار |

اس وقت صلح ہی قرین حکمت تھی اگر جنگ ہوتی تو تم ہی غالب رہتے اور کفار پیٹھ پھیر کر بھاگتے کوئی مدد گار نہ پاتے ... لیکن ... ہونے کی وجہ سے ... اور اللہ ... مسلمان ... (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ |
| رسم پڑی ہوئی اللہ کی جو چلی آتی ہے |
| قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ |
| پہلے سے اور تو ہرگز نہ دیکھے گا اللہ کی رسم کو بدلتے |

سنت اللہ یہ ہی ہے جب اہل حق اور اہل باطل کا کسی فیصلہ کن موقع پر مقابلہ ہو جائے تو آخر کار اہل حق غالب اور اہل باطل مغلوب و مقہور کئے جاتے ہیں۔ یہی عادت اللہ کی ہمیشہ سے چلی آتی ہے جس میں کوئی تبدیلی نہیں ... بشرطیکہ اہل حق بحیثیت مجموعی پوری طرح حق پر قائم رہیں ... بعض نے وَلَا تَهِنُوا ... ... (تفسیر عثمانی)

یعنی اللہ نے یہ طریقہ ہمیشہ سے جاری کر رکھا ہے کہ خدا کے اولیاء و انبیاء خدا کے دشمنوں پر غالب رہتے ہیں۔ پہلی آیت میں آیا ہے لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي میں اور میرے رسول ضرور غالب آ کر رہیں گے۔ دوسری آیت میں آیا ہے أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ اللہ کا گروہ ہی فلاح یاب ہوگا۔ تیسری جگہ ہے فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ اللہ کا گروہ ہی غالب رہے گا۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ |
| اور وہی ہے جس نے روک رکھا ان کے ہاتھوں کو تم سے |
| وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ |
| اور تمہارے ہاتھوں کو ان سے بیچ شہر مکہ کے |

**مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ**

بعد اس کے کہ تمہیں ان پر [illegible]

**مشرکین کی فتنہ انگیزی** [illegible]

**شانِ نزول** [illegible]

[illegible]

**وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ**

اور ہے اللہ جو کچھ تم کرتے ہو

**بَصِيرًا ﴿٢٤﴾**

دیکھتا

[illegible]

**هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ**

یہ وہی لوگ ہیں جو منکر ہوئے اور روکا تم کو

**عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ**

مسجد حرام سے اور نیاز کی قربانی

**مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ**

رکی ہوئی اس بات سے کہ پہنچے اپنی جگہ تک

**مشرکین کی** [illegible]

**وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ**

اور اگر نہ ہوتے کچھ مرد ایمان والے اور کچھ عورتیں

**مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَئُوهُمْ**

ایمان والیاں جن کو تم نہیں جانتے [illegible]

**فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ**

پھر تم پر ان کی وجہ سے خرابی پڑ جاتی بے خبری سے

**لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ**

تاکہ اللہ داخل کرے اپنی رحمت میں جس کو چاہے

### مکہ میں موجود مومنین کے تحفظ کی حکمت الٰہی

[illegible]

شانِ نزول [illegible]

نے بیان کیا [illegible] (ضعف) [illegible] جب کسی کا فرق کی [illegible]

[illegible]

[illegible] تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ان کا مقصود ان ہو سکے اور ان

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا |
| [illegible] |
| مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا |
| [illegible] |

[illegible] مسلمان سے الگ ہو جاتے اور مسلمان ان میں نہ ملے ہوتے۔

[illegible]

| |
|---|
| إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ |
| جب رکھی منکروں نے اپنے دلوں میں |
| الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ |
| [illegible] |
| سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ |
| [illegible] |

جاہلیت کا تعصب [illegible]

[illegible]

[illegible]

میں بسم اللہ الرحمن الرحیم نہ لکھو اور بجائے محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

مطمئن ہو گئے۔ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا |
| اور قائم رکھا ان کو ادب کی بات پر اور وہی تھے |
| أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ |
| [illegible] |
| شَيْءٍ عَلِيمًا |
| [illegible] |

[illegible] لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ [illegible]

[illegible]

## رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ

اپنے سروں کو اور کتریں گے ... بے کھٹکے ☆

**حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا خواب:** [illegible] ہو چکا ہے کہ ... حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے خواب دیکھا تھا کہ مکہ معظمہ میں ... اور ... عمرہ ... ادا کر رہے ہیں ... پھر ... اس سال ... ہوا تو ... بعض لوگوں کو ... صلح ... عمرہ کی ... حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ... فرمایا تھا کہ ... داخل ہوں گے ... آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ... فرمایا ... بعض ... [illegible] ... فرمایا اور ... اللہ ... طرح کا ... چنانچہ ... فرمایا ... لقد صدق اللہ رسولہ الرؤیا ... اس ... [illegible] ... کی مصلحت سے ... [illegible]:

| |
|---|
| فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ |
| پھر جانا جو تم نہیں جانتے پھر مقرر کر دی |
| دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا |
| اس سے ورے ایک فتح نزدیک ☆ |

**تعبیر خواب میں تاخیر کی مصالح:** یعنی جو اللہ نے اپنے علم ... کے ... وقت ... کیا ... تعبیر ایک سال بعد ... مصالح ... ایک ... فتح ... عطا ... صلح حدیبیہ ... فتح مبین ... [illegible] (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ |
| وہی ہے جس نے بھیجا اپنا رسول سیدھی راہ پر |

... "کلمۃ التقویٰ" کی تفسیر لا الٰہ الا اللہ ... کی ہے کیونکہ ... تقویٰ کی ... ادا کرنے کے لئے اللہ تعالیٰ نے صحابہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو ... شرک ... اس کے ... تھے۔ (تفسیر ...)

**کلمۃ التقویٰ:** حضرت ابن عباس ... کلمۃ التقویٰ سے مراد ہے لا الٰہ الا اللہ واللہ اکبر ... لا الٰہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ لہ الملک ولہ الحمد وھو علی کل شیء قدیر ... لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ مراد ہے ... کلمۃ التقویٰ بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ہے ... [illegible]

... تقویٰ کی ... کلمۃ التقویٰ سے مراد ... [illegible]

الزم ... [illegible]

... [illegible]

**روافض کی تردید:** ... اللہ نے علم ... تقویٰ ... اللہ ... صحابہ ... روافض ... رضی اللہ عنہم ... لقد رضی اللہ عن المؤمنین اذ یبایعونک تحت الشجرۃ فعلم ما فی قلوبھم ... روافض ... [illegible]

... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ... [illegible] (تفسیر ...)

| |
|---|
| لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا |
| اللہ نے سچ دکھلایا اپنے رسول کو خواب |
| بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ |
| تحقیق کہ تم داخل ہو رہو گے مسجد حرام میں |
| إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ |
| اگر اللہ نے چاہا آرام سے بال مونڈتے ہوئے |

## وَدِيْنِ الْحَقِّ

[illegible]

اسلام ہر لحاظ سے سچا ہے [illegible] صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

## يُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ

[illegible]

**غلبہ کامیابی اسلام ہی کا مقدر ہے** [illegible]

حضور صلی اللہ علیہ وسلم جب [illegible] آپ نے [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] آپ نے فرمایا [illegible]

[illegible] الَّذِي [illegible]

[illegible] الْكُفَّارِ [illegible]

[illegible]

[illegible] الرَّحْمٰنِ فِي تَنْزِيْلِهِ

[illegible]

[illegible]

[illegible] رسول حضرت محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] آپ نے فرمایا [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] بیت اللہ [illegible] حضرت عثمان رضی اللہ عنہ کا فرمان ہے [illegible]

میں ہوتا ہے اس کا اثر چہرے پر ہوتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ جب بندہ دل کو درست کر لیتا ہے اپنا باطن سنوار لیتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کے ظاہر کو بھی لوگوں کی نگاہوں میں سنوار دیتا ہے۔ اسی لیے حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں جو شخص اپنے باطن کی اصلاح کر لیتا ہے اللہ تعالیٰ اس کے ظاہر کو بھی آراستہ و پیراستہ کر دیتا ہے جیسا کہ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں جو شخص کوئی بات پوشیدہ رکھتا ہے اللہ تعالیٰ اسے اس کی چادر اڑھا دیتا ہے اگر وہ پوشیدگی بھلی ہے تو بھلائی کی اور اگر بری ہے تو برائی کی۔ لیکن اس کا ایک راوی عرزمی متروک ہے۔ مسند احمد میں آپ کا فرمان ہے کہ اگر تم میں سے کوئی شخص کسی ٹھوس چٹان میں گھس کر جس کا نہ کوئی دروازہ ہو نہ اس میں کوئی سوراخ ہو کوئی عمل کرے گا اللہ اسے بھی لوگوں کے سامنے رکھ دے گا۔ برائی ہو تو اور بھلائی ہو تو۔ مسند کی اور حدیث میں ہے نیک طریقہ، خوش خلقی اور میانہ روی نبوت کے پچیسویں حصہ میں سے ایک حصہ ہے۔

حضرت امام مالک رحمۃ اللہ علیہ نے اس آیت سے رافضیوں کے کفر پر استدلال کیا ہے کیونکہ وہ صحابہ سے چڑتے ہیں اور ان سے بغض رکھنے والا کافر ہے۔ علماء کی ایک جماعت بھی اس مسئلہ میں امام صاحب کے ساتھ ہے۔ صحابہ کرام کے فضائل میں اور ان کی لغزشوں سے چشم پوشی کرنے میں بہت سی احادیث آئی ہیں۔ خود خدائے تعالیٰ نے ان کی تعریفیں بیان فرمائی ہیں اور ان سے اپنی رضامندی کا اظہار کیا ہے۔ کیا ان کی بزرگی میں یہ کافی نہیں؟ صحیح مسلم شریف میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں میرے صحابہ کو برا نہ کہو ان کی بے ادبی اور گستاخی نہ کرو اس کی قسم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے کہ اگر تم میں سے کوئی احد پہاڑ کے برابر سونا خرچ کرے تو ان میں سے کسی کے آدھ مد بلکہ پاؤ مد اناج کے ثواب کو بھی نہیں پہنچ سکتا۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝ |
| اور کافی ہے اللہ حق ثابت کرنے والا ۝ |

یعنی اللہ اس دین کی حقانیت کا گواہ ہے اور وہی اپنے فضل سے اس کو حق ثابت کرنے والا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ |
| محمد رسول ہے اللہ کا اور جو لوگ اس کے ساتھ ہیں |
| اَشِدَّاۗءُ عَلَي الْكُفَّارِ |
| زور آور ہیں کافروں پر ۝ |

## معاندین اسلام کے لیے صحابہ کی سختی

یعنی کافروں کے مقابلہ میں سخت مضبوط اور قوی جس سے کافروں پر رعب پڑتا ہے اور کفر سے نفرت ان کا شعار ہے۔ قال تعالیٰ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً (توبہ، رکوع ۱۶) وقال تعالیٰ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ (توبہ، رکوع ۱۰) وقال تعالیٰ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (مائدہ، رکوع ۸) حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں جو تندی اور نرمی اپنی خو ہو وہ سب جگہ برابر چلے اور جو ایمان سے سنور کر آوے وہ تندی اپنی جگہ اور نرمی اپنی جگہ۔ بعض علماء نے لکھا ہے کہ کسی کافر کے ساتھ احسان اور حسن سلوک سے پیش آنا اگر مصلحت شرعی ہو تو وہ شدت کے خلاف نہیں مگر دین کے معاملہ میں وہ تم پر ڈھیلے نہ ہوں۔ (تفسیر عثمانی)

**شیعوں کی تردید:** اسی مضمون کی ایک اور آیت میں فرمایا ہے [illegible] شیعہ کہتے ہیں کہ صحابہ کرام باہم عداوت رکھتے تھے۔ یہ آیت ان کی تردید کرتی ہے۔ [illegible]

**چار جگہ نام مبارک کا ذکر:** پورے قرآن میں محمد صلی اللہ علیہ وسلم کا نام مبارک لے کر صرف چار جگہ آپ کا ذکر ہوا ہے۔ باقی آپ کا لقب اور آپ کے اوصاف ذکر کیے گئے ہیں۔ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ، يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ، يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ وغیرہ بخلاف دوسرے انبیاء کے کہ ان کے نام لے کر ان کو مخاطب کیا گیا ہے۔ پورے قرآن میں صرف یہ چار جگہ آپ کا نام آیا ہے۔ اور یہاں خصوصیت یہ بھی ہے کہ صلح حدیبیہ کے معاہدے میں جب حضرت علی نے محمد رسول اللہ لکھا تو کفار قریش نے اس کو مٹا کر محمد بن عبداللہ لکھنے پر اصرار کیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بحکم ربانی اس کو منظور کر لیا مگر حق تعالیٰ نے اس مقام پر خصوصیت سے آپ کے نام کے ساتھ محمد رسول اللہ قرآن مجید کا جزو بنا کر ہمیشہ ہمیشہ کے لیے ثبت کر دیا ہے۔

**کافروں پر سخت ہونے کا مطلب:** ترمذی وغیرہ کی حدیث میں ہے کہ من احب للہ وابغض للہ فقد استکمل ایمانہ یعنی جو شخص اللہ ہی کے لیے محبت اور بغض رکھے اس نے اپنا ایمان مکمل کر لیا۔ اس سے یہ بھی ثابت ہو گیا کہ صحابہ کرام کے کفار کے مقابلہ پر سخت ہونے کا یہ مطلب نہیں کہ وہ کبھی کسی کافر پر رحم نہیں کرتے بلکہ مطلب یہ ہے کہ جس موقع پر اللہ و رسول کا حکم کفار پر سختی کرنے کا ہوتا ہے وہاں ان کو اپنے رشتے ناتے دوستی و تعلق کے علاقے اس کام میں مانع نہیں ہوتے اور جہاں تک ان کے ساتھ رحم و کرم کے معاملہ کا تعلق ہے وہ تو خود قرآن نے اس کا فیصلہ دے دیا ہے کہ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ (الآیۃ) [illegible] یعنی جو کفار

مسلمانوں سے مدد لینے پر مجبور ہوں، تو مقابلہ پر بھی ان کے ساتھ احسان کا سلوک کرنے سے اسلام منع نہیں کرتا چنانچہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اور صحابہ کرام کے بیشمار واقعات ہیں جن میں ضعیف و مجبور یا ضرورتمند کفار کے ساتھ احسان و کرم کے معاملات کئے گئے ہیں ان کے معاملہ میں عدل و انصاف پر قائم رہنا تو اسلام کا عام حکم ہے۔ عین میدان جہاد میں بھی عدل و انصاف کے خلاف کوئی کام روا نہیں رکھا گیا۔ (معارف مفتی اعظم)

## رُحَمَآءُ بَیْنَھُمْ

مہربان ہیں آپس میں باہم

**آپس میں نرمی و محبت:** یعنی اپنے بھائیوں کے ساتھ [illegible] ان سے ملتے نرمی سے پیش آتے اور تواضع و انکسار سے جھکے [illegible] ملتے "مدینہ" میں جو [illegible] ان کی آنکھیں جھک رہی تھیں "تَرٰىهُمْ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَھُمْ"۔ (تفسیر [illegible])

**آپس میں محبت کی وجہ:** رُحَمَآءُ بَیْنَھُمْ۔ یعنی اہل ایمان اللہ کے رسول کی محبت سے سرشار ہو کر آپس میں نرمی اور مہربانی کا سلوک کرتے ہیں کیونکہ محبوب کا دوست بھی محبوب ہوتا ہے۔

حدیث قدسی میں آیا ہے میری عظمت کے زیر سایہ آپس میں محبت کرنے والے کہاں ہیں آج میں ان کو اپنے سایہ میں جگہ دوں گا جس دن کوئی سایہ میرے سایہ کے سوا نہیں ہے۔ (رواہ مسلم عن ابی ہریرۃ مرفوعاً)

آئے ایک حدیث آئے گی جس میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو اس سے محبت کرے گا وہ میری محبت کے سبب ذکر کرے گا۔ (تفسیر مظہری)

## تَرٰىھُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ

تو دیکھے ان کو رکوع میں اور سجدہ میں ڈھونڈتے ہیں

## فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا

اللہ کا فضل اور اس کی خوشی

خدا پرستی: یعنی نمازیں کثرت سے پڑھتے ہیں۔ جب دیکھو رکوع سجود میں پڑے ہیں اور اللہ کے فضل اور خوشنودی کی جستجو میں لگے رہتے ہیں۔ ریا نمود کا شائبہ نہیں۔ بس اللہ کے فضل اور اس کی خوشنودی کی طلب ہے۔ (عثمانی)

تَرٰىھُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا۔ یعنی کثرت سے نماز میں مشغول رہتے ہیں۔ ان کو کبھی رکوع میں اور کبھی سجدہ میں دیکھو گے۔ یہ ان کی ایمانی علامت ہے۔ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ۔ یعنی اللہ کی طرف سے ثواب اور اجر چاہتے ہیں۔ (تفسیر مظہری)

## سِیْمَاھُمْ فِیْ وُجُوْھِھِمْ مِّنْ

نشانی ان کی ان کے منہ پر ہے

## اَثَرِ السُّجُوْدِ

سجدہ کے اثر سے

چہروں کا نور: یعنی نمازوں کی پابندی خصوصاً تہجد کی نماز سے ان کے چہروں پر خاص قسم کا نور اور رونق ہے۔ گویا خشیت و خشوع اور حسن نیت اور اخلاص کی شعاعیں باطن سے پھوٹ پھوٹ کر ظاہر کو روشن کر رہی ہیں۔ حضرت کے صحابہ اپنے چہروں کے نور اور سیرت کے لحاظ سے لاکھوں میں الگ پہچانے جاتے تھے۔ (عثمانی)

**سجدوں کی نشانی:** حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما نے کہا پیشانیوں پر مٹی کے نشانات مراد ہیں۔ ابو العالیہ نے کہا اس کی وجہ یہ تھی کہ وہ فروتنی کے طور پر مٹی پر سجدہ کرتے تھے کپڑے پر نہیں کرتے تھے۔ (تفسیر مظہری)

یعنی نماز میں کا ایسا اطیف نور ان میں ہو گیا ہے کہ نماز اور سجدہ سے مخصوص آثار ان کے چہروں سے نمایاں ہوتے ہیں۔ مراد ان آثار سے وہ انوار ہیں جو عبادت اور خشوع و خضوع سے ہر متقی عبادت گزار کے چہرہ پر مشاہدہ کئے جاتے ہیں۔ پیشانی میں روشن محراب پڑ جانا مراد نہیں۔ خصوصاً نماز تہجد کا یہ خاص اثر ہے جیسا کہ ابن ماجہ میں بروایت جابر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے۔ من کثر صلوتہ باللیل حسن وجہہ بالنھار یعنی جو شخص رات میں نماز کی کثرت کرتا ہے دن میں اس کا چہرہ حسین نظر آتا ہے اور حضرت حسن بصری نے فرمایا کہ اس سے مراد نمازیوں کے چہروں کا وہ نور ہے جو قیامت میں نمایاں ہوگا۔ (معارف مفتی اعظم)

مجاہد نے کہا کہ سیما سے مراد ہے صحابہ کا خشوع اور تواضع بیان کیا ہے۔ اور بعض عارفین کا یہ قول نقل کیا ہے۔ ان للحسنۃ نورًا فی القلب وضیاء فی الوجہ وسعۃ فی الرزق کہ نیکی کا نور قلب میں ہوتا ہے اور اس کی رونق چہرہ پر ہوتی ہے اور رزق میں فراخی کا باعث ہوتی ہے۔

امام مالک نے یہ آیت پڑھ کر فرمایا حضرت صحابہ کی فضیلت بیان ہوا اور ان سے کافر جلتے ہیں تو ثابت ہوا کہ جو بھی انہیں دیکھ کر جلتا ہے وہ کافر ہے۔ بعض نے کہا کہ جس وقت یہ صحابہ شام کو گئے وہاں کے نصاریٰ نے ان صحابہ کو دیکھ کر ملک شام کے راہب ان کے لئے حوالے دیتے تھے اور کہتے تھے کہ خدا کی قسم یہ لوگ تو عیسیٰ کے حواریوں سے بھی اچھے ہیں۔ (تفسیر ابن کثیر۔ معارف کاندھلوی)

## ذٰلِكَ مَثَلُھُمْ فِی التَّوْرٰىةِ ۛ وَمَثَلُھُمْ

یہ شان ہے ان کی توریت میں اور مثال ان کی

| |
|---|
| **فِی الْاِنْجِیْلِ** |
| انجیل میں ہے |

یہ بھی کہا گیا ہے کہ یہاں پر بات ختم ہو گئی ہے اور جو اس کے بعد ہے وہ انجیل کی شان ہے۔ چنانچہ بہت سے مفسرین کا یہ قول ہے کہ تورات اور انجیل دونوں میں ان کا بیان ہے۔ [illegible]

## تورات و انجیل میں صحابہ کی مثال:

امام بغوی نے فرمایا صحابہ کرام کی یہ مثال انجیل میں ہے کہ شروع میں قلیل ہوں گے پھر بڑھیں گے اور قوی ہو جائیں گے جیسے کہ حضرت قتادہ نے فرمایا صحابہ کرام کی یہ مثال انجیل میں لکھی ہوئی ہے کہ "ایک قوم ایسی نکلے گی جو کھیتی کی طرح بڑھے گی [illegible]" [illegible] تورات و انجیل میں بھی بہت تحریفات کے باوجود آج بھی [illegible] کے حسب ذیل الفاظ موجود ہیں۔

تورات باب استثناء ۳۳ آیت ۲ تا ۳ کے یہ الفاظ ہیں۔

"خداوند سینا سے آیا اور شعیر سے ان پر طلوع ہوا فاران ہی کے پہاڑ سے جلوہ گر ہوا اس کے ساتھ دس ہزار قدسی [illegible] اس کے داہنے ہاتھ میں ایک آتشی شریعت [illegible] وہ قوم سے بڑی محبت رکھتا ہے اس کے سارے مقدس تیرے ہاتھ میں ہیں اور وہ تیرے قدموں کے پاس بیٹھے ہیں تیری باتوں کو مانیں گے۔"

[illegible] تفصیل اس وعدے کی اظہار الحق جلد سوم باب ششم میں ۱۵۹ تک ہے یہ کتاب عیسائیت کی حقیقت کو واضح کرنے کے لئے [illegible] حضرت مولانا رحمت اللہ کیرانوی نے پادری فنڈر کے مقابلہ پر تحریر فرمائی تھی اس کتاب میں انجیل کی تمثیل کا ذکر ہے۔ انجیل متی باب ۱۳ آیت ۳۱ میں یہ الفاظ ہیں۔ اس نے ایک اور تمثیل ان کے سامنے پیش کر کے کہا آسمان کی بادشاہی اس رائی کے دانہ کی مانند ہے جسے کسی آدمی نے لے کر اپنے کھیت میں بو دیا وہ سب بیجوں سے چھوٹا تو ہے مگر جب بڑھتا ہے تو سب ترکاریوں سے بڑا [illegible] ہو جاتا ہے اور ایسا درخت ہو جاتا ہے کہ ہوا کے پرندے آ کر اس کی ڈالیوں پر بسیرا کرتے ہیں۔ اور انجیل مرقس ۴۲ کے یہ الفاظ ہیں [illegible] [illegible] ایسی ہے جیسے کوئی آدمی زمین میں بیج ڈالے اور رات کو سوئے اور دن کو جاگے اور وہ بیج اس طرح اگے اور بڑھے کہ وہ نہ جانے زمین آپ سے آپ پھل لاتی ہے پہلے پتی پھر بالیں پھر بالوں میں تیار دانے پھر جب اناج پک چکا تو وہ فی الفور درانتی لگاتا ہے کیونکہ کاٹنے کا وقت آ پہنچا (اظہار الحق جلد ۳ باب ششم ص ۳۰۰) ان کی تمثیل میں صراحت کی ہے کہ آنحضرتﷺ کا دور انجیل کے

(حوالہ مقامات سے طلباء [illegible] ۔ راقم الحروف [illegible])

| |
|---|
| **كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْاَهٗ فَاٰزَرَهٗ** |
| جیسے کھیتی نے نکالا اپنا پٹھا پھر اس کی کمر |
| **فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ** |
| مضبوط کی پھر موٹا ہوا پھر کھڑا ہو گیا اپنی نال پر |

## چند افراد سے لاکھوں تک

حضرت شاہ صاحب کھیتی کی مثال کی تقریر کرتے ہوئے لکھتے ہیں "کھیتی اول ایک سوئی نکلتی ہے۔ پھر اس کے پاس اور پتے نکلتے ہیں۔ پھر موٹا ہوتا ہے۔ حضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے وقت میں یہ پتا اور کے عہد میں کچھ ہوئے ہیں "اخرج شطأه" میں حضرت صدیق "فآزره" میں حضرت فاروق "فاستغلظ" میں حضرت عثمان اور "فاستوى على سوقه" میں حضرت مرتضیٰ کی طرف اشارہ ہے جیسے کہ بعض دوسرے بزرگوں نے "وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ" میں خلفائے اربعہ کی ترتیب خلافت کی طرف اشارہ ہے کیونکہ یہ آیت تمام جماعت کو ہر شخص صحابہ کی فضیلت بیان کرتی ہے خصوصاً اصحاب بیعت الرضوان جن کا ذکر اوپر سے برابر چلا آ رہا ہے۔ (فوائد عثمانی)

ایک روایت میں ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ صرف تین مسلمان تھے مردوں میں صدیق اکبر، عورتوں میں حضرت خدیجہ، بچوں میں حضرت علی۔ پھر رفتہ رفتہ ان کی قوت بڑھتی رہی یہاں تک کہ حجۃ الوداع کے موقع پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ایک لاکھ تیس ہزار سے زیادہ صحابی تھے [illegible] (فوائد)

| |
|---|
| **يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ** |
| خوش آتا ہے کھیتی والوں کو |

جو کھیتی کرنے والے چونکہ اس کام کے ماہر ہوتے ہیں اس لئے ان کا ذکر خصوصیت سے کیا۔ جب ایک چیز کا ماہر اس چیز کو پسند کرے تو دوسرے کیوں نہ کریں گے۔ (معارف)

يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ۔ کھیتی کا موٹا اور قوی اور خوبصورت ہو جانے کی وجہ سے کاشتکاروں کو بھی معلوم ہوتی ہے۔

اللہ نے دونوں بیانوں میں صحابہ کرام کی صفات بیان کی ہیں پہلی تمثیل میں صفات اور اعمال و عبادات کی تعریف ہے اور دوسری تمثیل میں صرف

صحابہ کرام سے تھا صرف غصے ہی کے ساتھ مختص ہے۔

## مرحلہ بہ مرحلہ ترقی

اللہ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو تنہا مبعوث فرمایا جیسے دانہ تنہا زمین میں بویا جاتا ہے۔ اس کے بعد حضرت ابوبکرؓ، حضرت علیؓ، حضرت بلالؓ ایمان لائے۔ ان حضرات کے بعد حضرت عثمانؓ، حضرت طلحہؓ، حضرت زبیرؓ، حضرت سعدؓ، حضرت سعیدؓ، حضرت حمزہؓ، حضرت جعفر رضی اللہ عنہم اور دوسرے حضرات مسلمان ہوئے یہاں تک کہ حضرت عمرؓ چالیسویں نمبر پر ایمان لائے۔ قریش میں ... اسلام کو مٹانے کے لئے ہر طرف سے مخالفت کا طوفان اٹھ کھڑا ہوا۔ اگر اللہ کی مدد نہ ہوتی تو اسلام کی روشنی بجھ گئی ہوتی۔ لیکن مہاجرین اور انصار کی کوششوں سے اللہ نے اس پودے کو قوی کر دیا۔ صحابہؓ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی زندگی میں اپنے خون سے سینچا اور یہ سلسلہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد بھی جاری رہا خصوصاً حضرت ابوبکرؓ اور حضرت عمرؓ کے دورِ خلافت میں ترقی برابر مسلسل جاری رہی، یہاں تک کہ اسلام پورا مستحکم اور اپنے تنے پر سیدھا کھڑا ہو گیا اور تمام مذاہب پر غالب آ گیا اور کسی کی جرأت نہ رہی کہ اس کی تکذیب کرے۔ آخر اللہ نے آیت الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا نازل فرمائی۔

حضرت رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا "میری امت (سب کی سب) گمراہی پر اتفاق نہیں کر سکتی"۔

## صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کی فضیلت

حضرت ... روایت ہے ... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا ... اگر تم میں سے کوئی شخص (راہِ خدا میں) احد پہاڑ کے برابر سونا خدا کی راہ میں صرف کرے گا تو صحابی کے ایک سیر بلکہ آدھا سیر غلہ خدا کی راہ میں صرف کرنے کے برابر نہ ہوگا۔ (صحیح بخاری و مسلم) ابو داؤد ... نے بھی یہ حدیث اسی طرح حضرت انسؓ کی روایت سے بیان کی ہے۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد گرامی ہے میرا جو صحابی بھی کسی زمین میں مرے گا قیامت کے دن اسی زمین کے لوگوں کا (جو جنت کی طرف لے جائے جائیں گے) قائد اور نور بنا کر اٹھایا جائے گا۔ ترمذی ... حضرت بریدہؓ کی روایت ... آپ کے ... اقوال ...

کا ذریعہ تھا۔ جو لوگ سب سے پہلے ایمان لائے جیسے حضرت ابوبکرؓ وغیرہ ان کے ضعف کے زمانہ میں اسلام کو قوی کرنے اور مستحکم بنانے کا زیادہ ذریعہ بنا جیسے حضرت عمرؓ دوسرے صحابیوں سے افضل قرار پائے۔

ہم نے اپنی کتاب السیف المسلول میں مہاجرین اور انصار میں سے خاص حضرات کے فضائل کامل طور پر بیان کر دیے ہیں۔ تمام روایات اور شہادات تفصیل کے ساتھ جمع کر دیا ہے۔

## انجیل میں صحابہ کی مثال

بغوی نے لکھا ہے کہ اللہ نے انجیل میں صحابہؓ کی ایک مثال بیان کی ہے کہ شروع میں وہ تھوڑے (اور کمزور) ہوں گے پھر بڑھتے ہی جائیں گے۔

قتادہ نے کہا اصحاب محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی تمثیل انجیل میں اس طرح بیان کی گئی ہے۔ ان لوگوں کی ابتدا کھیتی (کے پودے) کی طرح ہوگی اور بھلائی کا حکم دیں گے اور بری باتوں سے باز رکھا کریں گے۔

بعض لوگوں نے کہا زرع (کھیتی کے پودے) سے مراد ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات ہے کہ ... شطأ ... سے صحابہ مراد ہیں۔

## تمثیل کی تطبیق

مبارک بن فضالہ راوی ہیں کہ حسن نے فرمایا محمد اللہ کے رسول ہیں اور وَالَّذِينَ مَعَهُ ابوبکرؓ ہیں اور أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ عمر بن خطاب ہیں اور رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ عثمان بن عفان ہیں تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا علی بن ابی طالب ہیں اور يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا باقی عشرہ مبشرہ (یعنی سعیدؓ، ابوعبیدہؓ، طلحہؓ، زبیرؓ، عبدالرحمٰنؓ بن عوف) کا ذکر آیت کے ... کیا گیا ہے ان سب حاملین کے نام عشرہ مبشرہ ہیں۔

محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک بیج کی کاشت کی ابوبکرؓ نے اس کی ... نکالی عمر بن خطابؓ نے اس کو تقویت پہنچائی عثمانؓ کے سہارے ... اور علی بن ابی طالب کی وجہ سے وہ ... اپنے تنے پر کھڑا ہو گیا حضرت علیؓ کی تلوار سے اسلام میں استقامت آ گئی۔

مدارک میں عکرمہ کا قول منقول ہے کہ ابوبکرؓ کی وجہ سے (اسلام کے بیج) سے کونپل ہوئی نکلی۔

بغوی نے لکھا ہے کہ حضرت عمرؓ نے مسلمان ہونے کے بعد فرمایا آج کے بعد (کافروں کے ڈر سے) اللہ کی عبادت چھپ کر نہیں کی جائے گی۔ (تفسیر مظہری)

| لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ |
| --- |
| تاکہ ان سے کافروں کو جلائے |

## کافروں کا بغض

بعض اسلامی مجلس کی یہ تازگی اور رونق و بہار دیکھ کر کافروں کے دل غیظ و غضب سے جلتے ہیں۔ اس آیت سے بعض علماء نے یہ نکالا کہ صحابہ سے جلنے والا کافر ہے۔ (تفسیر عثمانی)

## صحابہ کرامؓ سے بغض کافروں کا کام ہے

لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۔ بہم کی ضمیر فَازِرَهُ کی طرف راجع ہے یا معنوی طور پر صحابہ کی طرف راجع ہے کیونکہ کھیتی سے مراد یہی جماعت ہے۔ دوسری ہے ان سے مراد وہ لوگ ہیں جو (آج تک) مسلمان نہیں ہوئے تھے بعد میں مسلمان ہو گئے۔ یعنی کافروں کو جلانے کے لئے بڑھتے ہیں، یہ لوگ کافروں کے لئے سخت اور آپس میں مہربان اور نرم دل ہیں۔

حضرت امام مالکؒ نے فرمایا صحابہؓ کے خلاف جس کے دل میں کوئی جلن اور عداوت ہو وہ اس آیت کا مصداق ہے۔

حضرت عبداللہ بن مغفل مزنیؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میرے صحابہ کے بارے میں اللہ سے ڈرو، اللہ سے ڈرو، خدا کا خوف کرو، خدا کا خوف کرو۔ میرے بعد ان کو ہدف (ملامت کا نشانہ) نہ بنانا۔ جو ان سے محبت کرے گا وہ مجھ سے محبت رکھنے کی وجہ سے ان سے محبت کرے گا اور جو ان سے بغض رکھے گا وہ حقیقت میں مجھ سے بغض رکھنے کی وجہ سے ان سے بغض رکھے گا۔ جس نے ان کو دکھ پہنچایا اس نے حقیقت میں مجھے دکھ پہنچایا اور جس نے مجھے دکھ پہنچایا اس نے اللہ کو اذیت دی۔ اور جس نے اللہ کو اذیت دی تو قریب ہے کہ اللہ اس کو پکڑ لے گا۔ ترمذی نے اس حدیث کو غریب کہا ہے۔

حضرت ابو عروہ زبیریؒ فرماتے ہیں کہ ہم حضرت امام مالکؒ کی مجلس میں حاضر تھے، ایک شخص نے بعض صحابہ کرامؓ کی تنقیص کے کچھ کلمات کہے تو امام مالکؒ نے یہ آیت پوری تلاوت کی۔ جب لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ پر پہنچے تو فرمایا کہ جس شخص کے دل میں صحابہ کرامؓ میں سے کسی کے ساتھ غیظ ہو تو اس آیت کی وعید اس کو لگے گی (قرطبی)۔ حضرت امام مالکؒ نے یہ نہیں فرمایا کہ وہ کافر ہو جاوے گا مگر یہ فرمایا کہ یہ وعید اس کو بھی پہنچے گی۔ مطلب یہ ہے کہ وہ کافروں جیسا کام کرنے والا ہو جائے گا۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا |
| وعدہ کیا ہے اللہ نے اُن سے جو یقین لائے ہیں اور کئے ہیں |
| الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا |
| بھلے کام معافی کا اور [illegible] |

| |
|---|
| عَظِيْمًا ۝ |
| ثواب کا بڑا |

## صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے لئے وعدہ

حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ "یہ وعدہ دیا ان کو جو ایمان والے ہیں اور بھلے کام کرتے ہیں۔ حضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے سب اصحاب ایسے ہی تھے۔ مگر خاتمہ کا اندیشہ بڑا تھا حق تعالیٰ نے ان کو صاف خوشخبری بھیج دی کہ خاطر جمع ہو جائے۔ اس مالک سے اگلی شاباشی بھی غنیمت ہے۔" تم سورۃ الفتح بفضل اللہ ورحمتہ ولله الحمد والمنة۔ (تفسیر عثمانی)

## روافض کا کفر

مواہب لدنیہ میں ہے کہ امام مالکؒ نے اس آیت سے روافض کی تکفیر پر استدلال کیا ہے۔ کیونکہ وہ صحابہ سے بغض رکھتے ہیں اور ان سے بغض رکھنا نص قرآنی سے کفر ہے۔ امام مالکؒ کے اس قول اور فتویٰ کی تائید بہت سے ائمہ فقہاء کرام سے منقول ہے۔ امام مالکؒ کے سامنے ایک شخص کا ذکر کیا گیا کہ وہ صحابہ کی شان میں تنقیص کرتا ہے تو آپ نے یہ آیت تلاوت کی اور فرمایا جو شخص بھی صبح کو اس حالت میں اٹھے کہ اس کے دل میں صحابہ سے بغض ہو تو یقیناً یہ آیت اس پر منطبق ہے۔

حضرت عبداللہ بن مسعودؓ سے منقول ہے فرمایا کرتے تھے کہ محمد رسول اللہ کے اصحاب اس امت کے سب سے زیادہ نیک دل اور عمیق علم رکھنے والے تھے، جن کا علم نہایت عمیق تھا اور ان میں تکلف کا نام و نشان نہ تھا۔ اللہ نے ان کو اپنے نبی کی رفاقت کے لئے اور اپنے دین کو قائم کرنے کے واسطے چنا تو ان کی فضیلت و عظمت کو پہچانو اور ان کے نقش قدم پر چلو جہاں تک بھی تم سے ہو سکے۔ روح المعانی، سنن نسائی، جامع ترمذی وغیرہ (حاشیہ مولوی)

## تمام صحابہ عدول ہیں

اہل السنت کا اجماع ہے کہ تمام صحابی عدول تھے، کوئی فاسق اور غیر صالح نہ تھا۔ سب متقی تھے، بعضوں سے اتفاقاً لغزش ہو گئی۔ (تفسیر مظہری)

ابن عبدالبر نے مقدمہ استیعاب میں اس آیت کو نقل کر کے لکھا ہے کہ ومن رضی اللہ عنہ لم یسخط علیہ ابدا۔ یعنی اللہ جس سے راضی ہو جائے پھر اس پر کبھی ناراض نہیں ہوتا۔ اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس آیت کی بنا پر ارشاد فرمایا کہ بیعت رضوان میں شریک ہونے والوں میں سے کوئی آگ میں نہ جائے گا۔ تو یہ وعدہ جو اصحاب نبی کے لئے کیا گیا ہے ان میں سے بعض کا مستثنیٰ ہونا ثابت نہیں ہے اس لئے امت کا اس پر اجماع ہے کہ صحابہ کرام سب کے سب عادل و ثقہ ہیں۔

[illegible] اہل جنت ہیں ان کی

[illegible] تقصیر [illegible]

[illegible]

# سورة الحجرات

[illegible] آیتیں [illegible]

| |
|---|
| [illegible] |
| [illegible] |
| بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ |
| [illegible] |
| يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ |
| [illegible] |
| يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ |
| [illegible] |

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے آداب وحقوق

[illegible]

[illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

الحمد للہ سورۃ الفتح ختم ہوئی

[illegible] آپ کی مجلس [illegible] تو آپ سے پہلے [illegible] حضرت ابوبکر [illegible]

[illegible]

## علماء دین اور دینی مقتداؤں کے ساتھ بھی یہی ادب ملحوظ رکھنا چاہئے

بعض علماء نے فرمایا ہے کہ علماء و مشائخ دین کا بھی یہی حکم ہے کیونکہ وہ وارث انبیاء ہیں [illegible] ایک دن حضرت ابو الدرداء کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے دیکھا کہ حضرت ابوبکر کے آگے چل رہے تھے تو آپ نے تنبیہ فرمائی اور فرمایا کیا تم ایسے شخص کے آگے چلتے ہو جو دنیا و آخرت میں تم سے بہتر ہے [illegible] (کشف الاسرار) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] لا تقدموا [illegible] الامام [illegible]

## آنحضرت کی تعظیم اللہ تعالیٰ کی تعظیم ہے

بعض اہل علم [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] تعظیم [illegible]

## عید نماز سے پہلے قربانی نہ کرو

حضرت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ [illegible]

[illegible] فرمایا [illegible] جس نے نماز سے پہلے قربانی کی تو وہ قربانی نہیں [illegible] (متفق علیہ) [illegible] حضرت [illegible] قربانی [illegible] فرمایا جس نے نماز پڑھنے سے پہلے قربانی کی [illegible] (بخاری)

[illegible] امام ابوحنیفہ امام مالک [illegible] قربانی جائز نہیں۔

**مسئلہ** امام ابوحنیفہ [illegible] قربانی [illegible]

## امام ابوحنیفہ کے قول کی دلیل

[illegible] قربانی [illegible]

**شان نزول:** [illegible] حضرت عائشہ [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] لا تقدموا بین یدی اللہ [illegible]

## رمضان سے پہلے روزے رکھنا

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا [illegible] ایک دو روز پہلے [illegible]

**وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ**

اور اللہ سے ڈرو [illegible] اللہ [illegible]

## نبی کی فرمانبرداری کی شرط

[illegible]

جب خدا کا خوف نہ رہتا ہو۔ اگر ان میں ذرا بھی تقویٰ ہو تو بے پروائی اسلام کو لگتا ہے کے لئے حدود میں کام کریں یا زمانہ پر لائے گا اور ظاہر ان کے احکام کو آگے رکھے گا لیکن فی الحقیقت ان کو اپنی اغراض، خواہشات و اغراض کی تکمیل کے لئے ایک حیلہ اور آلہ بنا لے گا۔ معیار یہ ہے کہ جو بات پر ہے اللہ سے ختم اور جو دل میں ہے سب جانتا ہے اللہ کے سامنے بے خوف کیسے چلے کا یا پتہ کہ کوئی اس سے عذر کرکا کرے۔ (تفسیر عثمانی)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ
اے ایمان والو بلند نہ کرو اپنی آوازیں
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ
نبی کی آواز سے اوپر اور اس سے نہ بولو تڑخ کر
بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ
جیسے تڑختے ہو ایک دوسرے پر کہیں اکارت نہ ہو جائیں
أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٢﴾
تمہارے کام اور تم کو خبر بھی نہ ہو ۲

## مجلس نبوی کے آداب

یعنی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی مجلس میں شور و غل نہ کرو اور جیسے آپس میں ایک دوسرے سے بے تکلف چہک کر زور سے بات کرتے ہو، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ یہ طریقہ اختیار کرنا خلاف ادب ہے۔ آپ سے خطاب کرو تو نرم آواز سے، تعظیم و احترام کے لہجہ میں ادب و شائستگی کے ساتھ۔ دیکھو ایک مہذب بیٹا اپنے باپ سے، لائق شاگرد استاد سے، مخلص مرید پیر و مرشد سے، اور ایک سپاہی اپنے افسر سے کس طرح بات کرتا ہے۔ پیغمبر کا مرتبہ تو ان سب سے کہیں بڑھ کر ہے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم سے گفتگو کرتے وقت پوری احتیاط رکھنی چاہئے مبادا بے ادبی ہو جائے اور آپ کو تکدر پیش آئے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی ناخوشی کے بعد مسلمان کا ٹھکانا کہاں ہے۔ ایسی صورت میں تمام اعمال ضائع ہونے اور ساری محنت اکارت ہو جانے کا اندیشہ ہے۔

## احادیث کی مجلس اور روضۂ نبوی کے آداب

(تنبیہ) حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث سننے اور پڑھنے کے وقت بھی یہی ادب چاہئے اور جو قبر شریف کے پاس حاضر ہو وہاں بھی ان آداب کو ملحوظ رکھے نیز آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے خلفاء، علمائے ربانیین اور اولو الامر کے ساتھ درجہ بدرجہ یہی ادب ملحوظ رکھنا چاہئے تاکہ جماعتی نظام قائم رہے۔ یہ فرق مراتب نہ کرنے سے بہت مفاسد اور فتنوں کا دروازہ کھلتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا احترام جس طرح حیات مبارکہ میں تھا اب بھی ضروری ہے

روایت میں ہے کہ ایک مرتبہ عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مسجد میں دو شخصوں کی آواز سنی تو ان کو تنبیہ فرمائی اور پوچھا کہ تم لوگ کہاں کے ہو؟ معلوم ہوا کہ وہ طائف کے ہیں تو فرمایا اگر تم مدینے کے باشندے ہوتے تو میں تم کو سزا دیتا (شخصوں کی بات یہ کہ) تم اپنی آوازیں بلند کرتے ہو مسجد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میں۔ اس حدیث سے علماء نے یہ حکم اخذ فرمایا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا احترام آپ کی حیات مبارکہ میں تھا اسی طرح کا احترام وفات کے بعد بھی لازم ہے کیونکہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم اپنی قبر مبارک میں بھی (زندہ) ہیں اور جس طرح کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی دوران حیات مبارکہ میں لَا تَرْفَعُوْا ... بِالْقَوْلِ کی حرمت و ممانعت تھی اسی طرح اب بھی ہے۔ اب آپ کے قبر مبارک کے پاس بلند آواز سے بات کرنا اور سخت لب و لہجہ استعمال کرنا بے ادبی ہے اور تعظیم و تکریم کے خلاف ہے۔ (تفسیر ابن کثیر، معارف کاندھلوی)

**مجلس نبوی کا ادب۔** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے آپ کی آواز سے زیادہ اونچی آواز یا بلند آواز سے اس طرح گفتگو کرنا جیسے آپس میں ایک دوسرے سے بے تکلف کیا کرتے ہیں ایک قسم کی بے ادبی گستاخی ہے چنانچہ اس آیت کے نزول کے بعد صحابہ کرام کا یہ حال ہو گیا کہ حضرت ابوبکر نے عرض کیا کہ یا رسول اللہ قسم ہے کہ اب مرتے دم تک آپ سے اس طرح بولوں گا جیسے کوئی کسی سے سرگوشی کرتا ہو (در منثور بحوالہ بیہقی) اور حضرت عمر اس قدر آہستہ بولنے لگے کہ بعض اوقات دوبارہ پوچھنا پڑتا تھا (کذا فی الصحاح) اور حضرت ثابت بن قیس طبعی طور پر بہت بلند آواز تھے یہ آیت سن کر بہت ڈرے اور روئے اور اپنی آواز کو گھٹایا (بیان القرآن از در منثور)

## روضۂ اقدس کے سامنے بھی بہت بلند آواز سے سلام و کلام کرنا ممنوع ہے

قاضی ابوبکر ابن عربی نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی تعظیم اور ادب آپ کی وفات کے بعد بھی ایسا ہی واجب ہے جیسا حیات میں تھا اسی لئے بعض علماء نے فرمایا کہ آپ کی قبر شریف کے سامنے بھی زیادہ بلند آواز سے سلام و کلام کرنا ادب کے خلاف ہے۔ اسی طرح جس مجلس میں رسول اللہ

[illegible]

إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ
عِندَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ

[illegible]

[illegible]

لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿۳﴾

[illegible]

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ

[illegible]

الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿۴﴾

[illegible]

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ

[illegible]

إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ

[illegible]

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۵﴾

[illegible]

[illegible]

### حضرت ثابت رضی اللہ عنہ کی شہادت

[illegible]

ہے۔ چاہئے کہ اپنی تعظیم پر دوام کرائے اور ادب اختیار کرے۔ حضور صلی
اللہ علیہ وسلم کی تعظیم بعد وفات بھی واجب ہے جیسا کہ آپ کی حیات میں تھی اور
اس کا تعلق ہر بات سے ہے جو آپ سے منسوب ہو ... بلند
آواز کا نکالنا مکروہ ہے۔ (روح المعانی)

نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی ازواج مطہرات مدینہ طیبہ میں جو مکانات تھے ان
میں سے ہر ایک کے لئے ایک حجرہ الگ تھا جس میں آپ باری باری
تشریف لے جاتے تھے۔

**حجرات امہات المومنین**: ابن سعد نے بروایت عطا خراسانی نقل کیا ہے
کہ یہ حجرات کھجور کی شاخوں سے بنے ہوئے تھے اور ان کے دروازوں پر موٹے
بالوں کے پردے پڑے ہوتے تھے۔ ادب المفرد میں بخاری
نے داؤد بن قیس سے روایت کیا ہے وہ کہتے ہیں کہ میں نے ان حجرات کی
زیارت کی ہے میرا گمان یہ ہے کہ حجرہ کے دروازہ سے چھت تک چھ سات
ہاتھ ... ہوگی۔
حجرات امہات المومنین ولید بن عبدالملک کی حکومت میں ان کے حکم سے مسجد
نبوی میں شامل کر دیئے گئے۔ مدینہ میں اس روز لوگوں پر گریہ طاری تھا۔

تنبیہ: بعض حضرات نے اپنے علماء و مشائخ کے ساتھ بھی اسی ادب کا
استعمال کیا ہے۔ صحیح بخاری وغیرہ میں حضرت ابن عباسؓ سے منقول ہے کہ جب
میں کسی عالم صحابی سے کوئی حدیث حاصل کرنا چاہتا تھا تو ان کے مکان پر پہنچ کر
... آواز دے کر ... بلکہ ... انتظار ...
... وقت وہ ... باہر ...
... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے چچا زاد بھائی آپ
... فرمایا ...
... ہے ...
ہے کہ ان کے باہر آنے کا انتظار کیا جائے ...
... انتظار کیا کرتے ...
جب وہ تشریف لاویں گے اس وقت ملاقات کی ... (معارف القرآن)

مسئلہ: آیت مذکورہ میں حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ کی قید سے معلوم ہوا
کہ ... انتظار اس وقت تک کرنا ہے جب تک کہ آپ خود
... تشریف ... معلوم ہوا کہ آپ کسی
... ضرورت سے ... وقت تک آپ
صلی اللہ علیہ وسلم ... مخاطب ... مناسب نہیں ...
... آپ صلی اللہ علیہ وسلم ان کی طرف متوجہ ہوں اسی وقت بات
... ایک حجرہ کے
باہر ... (معارف القرآن)

اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ، اکثر بے عقل ہیں۔

**سبب نزول**: بغوی نے حضرت جابرؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ بنو العنبر
کے بارے ... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے عیینہ بن حصین اور اقرع بن حابس
نے ... دونوں ... قیدی ساتھ لے کر دوپہر کے وقت مدینہ
پہنچے تھے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کسی بی بی کے حجرہ میں سو رہے تھے۔
انہیں دونوں نے پکار کر کہا تھا۔ محمد! باہر آؤ۔ ابن جریر نے حضرت جابر کی
روایت سے بیان کیا ہے کہ اقرع بن حابس نے کہا تھا محمد ہمارے پاس باہر
آؤ۔ اس پر آیت مذکورہ نازل ہوئی۔

عبدالرزاق نے بروایت معمر قتادہ کا بیان نقل کیا ہے کہ ایک شخص رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا اور کہنے لگا۔ محمد میری
تعریف کرو ... میری تعریف جہاں آ جائے زینت ہو جاتی ہے اور کسی
کی ... موجب عیب ہو جاتا ہے۔ حضور
صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ایسا تو صرف اللہ ہے۔ اس پر یہ آیت نازل
ہوئی۔ یہ روایت اگرچہ مرسل ہے (کسی صحابی کا نام اس روایت میں
نہیں ہے) ... حضرت
براء بن عازب کی روایت سے مرفوعاً آئی ہے۔ ابن جریر نے حسن کی روایت
سے بھی ایسی ہی حدیث نقل کی ہے۔

بغوی نے زید بن ارقم کی روایت ان الفاظ کے ساتھ بیان کی ہے کہ یہ آیت
(یعنی یہ آیت اعراب کے بعض افراد، بنی تمیم کے کچھ لوگوں کے
متعلق نازل ہوئی۔ جنہوں نے حجرہ کے پاس (نبی کریم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم)
آواز دی تھی۔ حضرت جابر کی روایت میں ہے کہ ... کر انہوں نے
کہا ... محمد باہر نکل کر آؤ۔ ہماری طرف سے (کسی کی) تعریف (اس کے
لئے) باعث زینت ہے اور ہماری طرف سے (کسی کی) مذمت موجب عیب
ہے ... حضور ... یہ شان اللہ کی ہے۔ جس
کی طرف سے کسی کی ستائش موجب زینت اور مذمت موجب عیب ہے۔
وہ ... اپنے ساتھ اپنے شاعر اور خطیب کو ساتھ لے کر آئے تھے۔

**خطیب اور شاعر آمنے سامنے**: حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ثابت
بن قیس سے فرمایا۔ تم ان کو جواب دو۔ حضرت ثابت رسول اللہ صلی اللہ
علیہ وسلم کے خطیب تھے۔ حسب الحکم آپ نے بنی تمیم کے خطیب کو جواب
دیا۔ پھر ان کا شاعر کھڑا ہوا اور اس نے کچھ اشعار پڑھے۔ حضور صلی اللہ علیہ
وسلم نے حضرت حسان بن ثابت کو حکم دیا ... کو جواب دو۔ حضرت
حسان نے اٹھ کر جواب دیا ... اقرع بن حابس نے
کہا محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس تو ہر چیز ہے ... خطیب ... (قرآن)

[illegible]

اشہد ان لا الہ الا اللہ واشہد انک رسول اللہ [illegible]

[illegible]

**عقلمندی کا تقاضا** [illegible]

[illegible]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ

[illegible]

بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ

[illegible]

فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ۞

[illegible]

**نزاعات کا فیصلہ** [illegible]

[illegible]

## آیت سے متعلقہ احکام و مسائل

[illegible]

مسئلہ: [illegible]

صحابہ کے متعلق اہل سنت کا عقیدہ [illegible]

[illegible]

سبب نزول: [illegible]

[illegible]

سلم سے کہہ دیا کہ ان لوگوں نے زکوٰۃ دینے سے انکار کر دیا اور مجھے قتل کرنے کے درپے ہو گئے۔ یہ بات سن کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو غصہ آیا اور ان سے لڑنے کا ارادہ کر لیا۔ بنی مصطلق کو جب ولید کے لوٹ جانے کی اطلاع ملی تو وہ خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو گئے اور عرض کیا۔ یا رسول اللہ جب ہم نے آپ کے قاصد (کے روانہ ہونے) کی خبر سنی تو ہم اس کے استقبال و احترام کے لئے اور صدقہ کا جو حق ہم سے قبول کیا تھا اس کو ادا کرنے کے واسطے نکل آئے۔ لیکن وہ الٹے لوٹ پڑا تو ہم کو یہ سبب معلوم ہوا۔ اس سے ہم کو اندیشہ ہوا کہ شاید راستہ سے لوٹ پڑنے کی یہ وجہ ہو کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی ناراضگی کا کوئی خط راستہ میں ان کو پہنچ گیا۔ جس میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہم سے ناراضگی کا اظہار کیا ہو۔ ہم اللہ کے اور اس کے رسول کے غضب سے اللہ کی پناہ کے خواستگار ہیں۔ بغوی نے لکھا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو بنی المصطلق کی صداقت کا یقین نہیں آیا اور آپ نے خالد بن ولید کو مجاہدین کی معیت میں پوشیدہ طور پر تحقیق کے لئے بھیج دیا اور یہ حکم دے دیا کہ تم جا کر دیکھنا اگر تم کو ان کے مسلمان ہونے کی کوئی علامت معلوم ہو تو ان کے مال کی زکوٰۃ لے لینا۔ ورنہ ان کے ساتھ وہی معاملہ کرنا جو کافروں کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ حضرت خالد نے حکم کی تعمیل کی۔ جب وہاں پہنچے تو مغرب و عشاء کی اذان کی آواز سنی اور (حسب الحکم) ان سے زکوٰۃ وصول کر لی اور سوائے اطاعت اور بھلائی کے ان کی طرف سے کوئی بات بھی نہیں دیکھی۔ واپس آ کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو اصل خبر سنا دی اس وقت آیت یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌ نازل ہوئی۔

فتبینوا۔ یعنی تحقیق کر لیا کرو۔ فاسق کی خبر کی تحقیق کرنے کا حکم دینے سے معلوم ہو جاتا ہے کہ اگر کوئی عادل (صالح) شخص کوئی خبر دے تو اس کی اطلاع کو قبول کر لیا جائے کیونکہ قبول خبر سے کوئی مانع نہیں ہے۔

لغت میں فسق کے معنی ہیں نکلنا۔ عرب کہتے ہیں۔ فسقت الرطبة عن قشرها کھجور اپنے چھلکے سے نکل آئی۔ اصطلاح شریعت میں کسی کافر پر اطلاق ہوتا ہے کیونکہ وہ ایمان سے خارج ہوتا ہے۔ قرآنی استعمال میں فاسق اس شخص کو کہتے ہیں جو کبیرہ گناہوں پر جما رہے اور توبہ نہ کی ہو۔ آیت میں باجماع اہل تفسیر یہی معنی مراد ہے۔

**حضرت ولید بن عقبہ کا معاملہ:** میں کہتا ہوں۔ ولید بن عقبہ صحابی تھے اور اس واقعہ سے پہلے ان کا فسق ظاہر بھی نہیں ہوا تھا۔ اس غلط بیانی کا سبب یہ ہو کہ ان کی بدگمانی اور ان لوگوں کے متعلق غلط فہمی ہو گئی تھی جو اسلام سے پہلے ان کے دشمن تھے۔ اس لئے آیت میں فاسق سے مراد شاید ایسا شخص ہو جس کی سچائی اور عدالت ظاہر نہ ہوئی ہو۔ اس تفسیر پر وہ شخص جس کی حالت ظاہر نہ ہو مستور الحال ہو۔ اس میں داخل ہو جائے گا۔ یا فاسق سے مراد ایسا شخص ہے جس سے کوئی ایسی غلطی ہو گئی ہو جس کے غلط ہونے پر قرینہ دلالت کر رہا ہو۔ خواہ قصداً ہو یا بغیر ارادے کے ہو۔ بنی مصطلق بڑی خوشی سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر ایمان لے آئے اور اسلام کے احکام قبول کئے تھے۔ ان کا مرتد ہونا بہت ہی بعید از عقل تھا۔ ولید کا قصداً دروغ گوئی کا ارتکاب کرنا بھی بعید از قیاس نہیں تھا۔ (تفسیر مظہری)

ابو داؤد و ترمذی نے حضرت سعید بن زید سے نقل کیا ہے کہ واللہ لمشہد رجل منہم مع النبی صلی اللہ علیہ وسلم یغبر فیہ وجہہ خیر من عمل احدکم ولو عمر عمر نوح یعنی خدا کی قسم ان میں سے کسی شخص کا نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ کسی جہاد میں شریک ہونا جس میں ان کے چہرہ پر غبار پڑ گیا ہو تمہاری عمر بھر کی عبادت سے افضل ہے اگرچہ تم کو عمر نوح علیہ السلام جیسی دی گئی ہو۔ اسی لئے ان سے صادر ہونے والے وقتی گناہ وغیرہ کی بنا پر وہی معاملہ نہیں کیا جائے گا جو ... دوسروں کے لئے جائز نہیں کہ ان میں سے کسی کو فاسق قرار دے دیں۔ اگر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے عہد میں کسی صحابی سے کوئی گناہ موجب فسق سرزد بھی ہوا اور اس وقت ان کو فاسق بھی کہا گیا تو اس سے یہ جائز نہیں ہو جاتا کہ ان کو ہمیشہ کے لئے فاسق سمجھ کر معاذ اللہ فاسق کہا جائے۔ (کذا فی الروح)

صحابہ کے بعد سے آج تک خلفاء و امراء وغیرہ میں کسی کو ولید بن عقبہ کا فاسق کہا گیا ہو یہ وجہ خود ان کی اسی غلطی سے ہو سکتا ہے کہ وہ لفظ استعمال کیا گیا ضروری نہیں۔

**خبر کی تحقیق:** آیت کی رفتار بتا رہی ہے کہ کچھ مسلمانوں نے ولید کو سچا جان کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو بنی مصطلق پر حملہ کرنے کا مشورہ دیا تھا لیکن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کا مشورہ نہیں مانا اور خالد بن ولید کو تحقیق واقعہ کے لئے بھیجا۔ حق سبحانہ و تعالیٰ نے انہیں لوگوں کو خطاب کر کے تحمل حال کرنے کا حکم دیا ہے۔ اس طرح رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کیا اگر ان کے کہنے پر عمل کرتے تو ندامت اٹھانی پڑتی۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِیْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ |
| اور جان رکھو کہ تم میں رسول ہے اللہ کا |
| لَوْ یُطِیْعُكُمْ فِیْ كَثِیْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ |
| اگر وہ تمہاری بات مان لیا کرے بہت کاموں میں |
| لَعَنِتُّمْ<br>تو تم پر مشکل پڑے |

## حق کو اپنی رائے کے تابع نہ بناؤ

[illegible]

## اللہ کے رسول ہی کی اطاعت ضروری ہے

[illegible]

تنبیہ : [illegible]

[illegible] (معارف)

| |
|---|
| وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ |
| لیکن اللہ نے محبت ڈال دی تمہارے دل میں ایمان کی |
| وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ |
| اور کھبا دیا اس کو تمہارے دلوں میں اور نفرت ڈال دی |

| |
|---|
| الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ |
| تمہارے دل میں کفر اور گناہ اور نافرمانی کی |
| اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ فَضْلًا |
| وہ لوگ وہی ہیں نیک راہ پر اللہ کے فضل سے |
| مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً |
| اور احسان سے |

**ایمان کی محبت** [illegible] (تفسیر)

## کفر فسوق اور عصیان کا معنی اور آیت کا مطلب

[illegible]

| |
|---|
| وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ |
| اور اللہ سب کچھ جانتا ہے حکمتوں والا ہے |

[illegible] (تفسیر)

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
اور اگر دو فریق مسلمانوں کے
اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ
آپس میں لڑ پڑیں تو ان میں ملاپ کرا دو پھر اگر
بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى
چڑھ چلا جائے ایک ان میں سے دوسرے پر
فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى
تو تم سب لڑو اس چڑھائی والے سے یہاں تک کہ پھر آوے
اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا
اللہ کے حکم پر پھر اگر پھر آیا تو ملاپ کرا دو
بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ
ان میں برابری سے اور انصاف کرو بیشک
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝
اللہ کو خوش آتے ہیں انصاف والے

## باہمی اختلاف ختم کرنے کا لائحہ عمل

جبکہ ان تمام حفاظتی تدبیروں کے باوجود کسی اتفاق سے مسلمانوں کی دو جماعتیں آپس میں لڑ پڑیں تو پوری کوشش کرو کہ اختلاف ختم ہو جائے اس میں اگر کامیابی نہ ہو اور دونوں فریق میں سے ایک دوسرے پر چڑھ چلا جائے اور ظلم و زیادتی کیا کرے تو مسلمانوں کو ... مجبور ہو کر جس کی زیادتی ہو سب مسلمان مل کر اس سے لڑائی کریں۔ یہاں تک کہ وہ فریق مجبور ہو کر ظلم و زیادتی سے باز آئے اور اللہ کے حکم کی طرف رجوع ہو کر صلح کے لئے اپنے کو پیش کرے اس وقت چاہئے کہ مسلمان دونوں فریق کے درمیان مساوات و انصاف کے ساتھ صلح و میل ملاپ کرا دیں کسی ایک کی طرفداری میں حق سے ادھر ادھر جھکیں۔ (تفسیر) آیت کا نزول صحیحین کی روایت کے مطابق مسلمانوں کے دو گروہ اوس و خزرج کے ایک وقتی ہنگامے سے متعلق ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کے درمیان آکر صلح کرا دی۔

جو لوگ خلیفہ کے مقابلہ میں بغاوت کریں وہ بھی عموم آیت میں داخل ہیں چنانچہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ جمل و صفین کے مسئلہ میں اسی سے استدلال کرتے تھے۔ ... یہ ہے کہ شان نزول سے ظاہر ہوتا ہے کہ یہ حکم مسلمانوں کے تمام جماعتی مخاصمات و منازعات کو شامل ہے۔ باقی باغیوں کے متعلق احکام شرعیہ کی تفصیل فقہ میں دیکھنا چاہئے۔ (فوائد عثمانی)

**عام مسلمان کیا کریں؟** جہاں کوئی امام و امیر یہ ارشاد ربانی نہیں وہاں حکم یہ ہے کہ جہاں تک ممکن ہو دونوں کو فہمائش کر کے جنگ و قتال سے روکا جائے اور دونوں نہ مانیں تو دونوں لڑنے والے فریقوں سے علیحدہ رہے کسی کے خلاف کرے نہ موافقت۔ (بیان القرآن)

**مسائل متعلقہ:** مسلمانوں کے دو گروہوں کی باہمی لڑائی کی چند صورتیں ہوتی ہیں ایک یہ کہ دونوں جماعتیں امام المسلمین کے تحت ولایت نہ ہوں یا دونوں یا ان میں سے ایک تحت ولایت ہو۔ پہلی صورت میں عام مسلمانوں پر لازم ہے کہ فہمائش کر کے ان کو باہمی جنگ سے روکیں۔ اگر فہمائش سے باز نہ آئیں تو امام المسلمین پر اصلاح کرنا واجب ہے اگر حکومت اسلامیہ کی مداخلت سے دونوں فریق جنگ سے باز آ گئے تو قصاص و دیت کے احکام جاری ہوں گے۔ اور اگر باز نہ آئے تو دونوں فریق کے ساتھ باغیوں کا سا معاملہ کیا جائے اور اگر ایک باز آ گیا دوسرا ظلم و تعدی پر مصر رہا تو دوسرا فریق باغی ہے اس کے ساتھ باغیوں کا سا معاملہ ہوگا تفصیل کتب فقہ میں دیکھی جا سکتی ہے اور مختصر جامع حکم یہ ہے کہ قتال کے وقت ان کے ہتھیار چھین لئے جائیں گے اور ان کو گرفتار کر کے توبہ کرنے کے وقت تک قید میں رکھا جائے گا اور حالت قتال میں یا اس کے بعد ان کی ذریت کو غلام باندی نہیں بنایا جائے گا اور ان کا مال غنیمت نہیں ہوگا بلکہ توبہ کرنے کے بعد ان کو واپس کر دیا جائے گا۔ آیات مذکورہ میں جو یہ ارشاد ہے فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا یعنی بغاوت کرنے والا فریق جب بغاوت سے باز آ جائے تو صرف جنگ بند کر دینے پر اکتفا نہ کرو بلکہ اسباب جنگ اور باہمی شکایات کے ازالہ کی فکر کرو تاکہ دلوں سے بغض و عداوت نکل جاوے اور ہمیشہ کے لئے بھائی چارہ قائم ہو جائے۔ اور چونکہ یہ لوگ امام المسلمین کے خلاف بھی جنگ کر چکے ہیں اس لئے یہ ممکن تھا کہ ان کے ساتھ انصاف نہ برتا جائے اس واسطے قرآن نے تاکید فرمائی کہ دونوں فریق کے حقوق میں عدل و انصاف کی پابندی کی جائے (یہ سب تفصیل بیان القرآن سے لی گئی ہے جو مکمل ہدایہ کے حوالہ سے ہے)۔

**مسئلہ:** اگر مسلمانوں کی کوئی بڑی طاقتور جماعت امام المسلمین کی اطاعت سے نکل جائے تو امام المسلمین پر لازم ہے کہ اول ان کی شکایات سنے، دکو

کوئی شبہ یا خلش کی گنجائش باقی نہیں رہتی ہے۔

## مشاجرات صحابہؓ کے بارے میں ہمارا رویہ

چنانچہ اہلِ سنت کا مسلک یہ ہے کہ کسی بھی صحابی کی طرف فسق اور فجور کی نسبت نہ کی جائے کیونکہ ان سب حضرات نے اپنے طرزِ عمل میں اجتہاد سے کام لیا تھا اور سب کا مقصد اللہ کی خوشنودی تھی، یہ سب حضرات ہمارے پیشوا ہیں اور ہمیں حکم ہے کہ ہم ان کے باہمی اختلافات سے کفِ لسان کریں اور ہمیشہ ان کا ذکر بہترین طریقے پر کریں کیونکہ صحابیت بہت بڑی فضیلت ہے اور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کو برا کہنے سے منع فرمایا ہے اور یہ خبر دی ہے کہ اللہ نے انہیں معاف کر رکھا ہے اور ان سے راضی ہے۔ اس کے علاوہ متعدد طرق سے یہ حدیث ثابت ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت طلحہؓ کے بارے میں فرمایا:

ان طلحة شهيد يمشى على وجه الارض "یعنی طلحہ روئے زمین پر چلنے والے شہید ہیں"

اب اگر حضرت علیؓ کے خلاف حضرت طلحہؓ کا جنگ کے لئے نکلنا کھلا گناہ اور عصیان ہوتا تو اس جنگ میں مقتول ہو کر وہ ہرگز شہادت کا رتبہ حاصل نہ کرتے۔ اسی طرح حضرت طلحہؓ کے عمل کو تاویل کی غلطی اور ادائے واجب میں کوتاہی قرار دیا جا سکتا تو بھی آپ کو شہادت کا مقام حاصل نہ ہوتا کیونکہ شہادت تو صرف اس وقت حاصل ہوتی ہے جب کوئی شخص اطاعتِ ربانی میں قتل ہوا ہو، لہٰذا ان حضرات کے معاملہ میں وہی عقیدہ رکھنا ضروری ہے جس کا اوپر ذکر کیا گیا ہے۔

اس بات کی دوسری دلیل وہ صحیح اور مشہور و معروف احادیث ہیں جو خود حضرت علیؓ سے مروی ہیں اور جن میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ زبیرؓ کا قاتل جہنم میں ہے۔

نیز حضرت علیؓ فرماتے ہیں کہ میں نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ فرماتے ہوئے سنا ہے کہ صفیہ کے بیٹے کے قاتل کو جہنم کی خبر دیدو۔ جب یہ بات ثابت ہو گیا کہ حضرت طلحہؓ اور حضرت زبیرؓ اس لڑائی کی وجہ سے عاصی اور گنہگار نہیں ہوئے اگر ایسا ہوتا تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم حضرت طلحہؓ کو شہید نہ فرماتے اور حضرت زبیرؓ کے قاتل کے بارے میں جہنم کی پیشین گوئی نہ فرماتے۔ نیز ان کا شمار عشرہ مبشرہ میں ہے جن کے جنتی ہونے کی شہادت تقریباً متواتر ہے۔

اسی طرح جو حضرات صحابہ ان جنگوں میں کنارہ کش رہے انہیں بھی تاویل میں خطا کار نہیں کہا جا سکتا بلکہ ان کا طرزِ عمل بھی اس لحاظ سے درست تھا کہ اللہ نے ان کو اجتہاد میں اسی رائے پر قائم رکھا۔ جب یہ بات ہے تو اس وجہ سے ان حضرات پر لعن طعن کرنا، ان سے برأت کا اظہار کرنا اور انہیں فاسق قرار دینا، ان کے فضائل و کمالات اور ان کی عظیم دینی خدمات کو کالعدم کر دینا کسی طرح درست نہیں۔ بعض علماء سے پوچھا گیا کہ ان خونریزیوں کے بارے میں آپ کی کیا رائے ہے جو صحابہ کرامؓ کے مابین مشاجرات میں ہوئیں؟ تو انہوں نے جواب میں یہ آیت پڑھ دی کہ: تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ "وہ ایک امت تھی جو گزر چکی، ان کے اعمال ان کے لئے ہیں اور تمہارے اعمال تمہارے لئے، اور تم سے ان کے اعمال کے بارے میں سوال نہیں کیا جائے گا"

کسی اور بزرگ سے یہی سوال کیا گیا تو انہوں نے فرمایا: "یہ ایسے خون ہیں کہ اللہ نے میرے ہاتھوں کو ان میں رنگنے سے بچایا، اب میں اپنی زبان کو ان سے آلودہ نہیں کروں گا"۔ مطلب یہ تھا کہ میں کسی ایک فریق کو کسی ایک معاملے میں یقینی طور پر خطا کار ٹھہرانے کی غلطی میں مبتلا نہیں ہونا چاہتا۔

علامہ ابن فورک فرماتے ہیں: "ہمارے بعض اصحاب نے کہا ہے کہ صحابہ کرامؓ کے درمیان جو مشاجرات ہوئے ان کی مثال ایسی ہے جیسے حضرت یوسف علیہ السلام اور ان کے بھائیوں کے درمیان پیش آنے والے واقعات کی، وہ حضرات آپس میں اختلاف کے باوجود ولایت اور نبوت کی حدود سے خارج نہیں ہوئے، بالکل یہی معاملہ صحابہ کے درمیان پیش آنے والے واقعات کا بھی ہے۔"

اور حضرت محاسبیؒ فرماتے ہیں کہ: "جہاں تک اس خونریزی کا معاملہ ہے تو اس کے بارے میں ہم کچھ نہیں کہہ سکتے کیونکہ اس وقت صحابہ موجود تھے اور سارے حالات کو جانتے تھے اور ہم نہیں جانتے، جس معاملہ پر تمام صحابہ کا اتفاق ہے ہم اس میں ان کی پیروی کرتے ہیں اور جس معاملہ میں ان کے درمیان اختلاف ہے اس میں ہم سکوت اختیار کرتے ہیں۔"

حضرت محاسبیؒ فرماتے ہیں کہ ہم بھی وہی بات کہتے ہیں جو حسن بصریؒ نے فرمائی ہے کہ صحابہ ان لڑائیوں میں حاضر تھے اور ہم غائب، وہ تمام حالات کو جانتے تھے اور ہم نہیں جانتے، جس معاملہ پر سب صحابہ متفق ہیں ہم اس کی پیروی کرتے ہیں اور جس میں اختلاف ہے اس میں توقف اختیار کرتے ہیں اور اپنی طرف سے کوئی نئی رائے پیدا نہیں کرتے، ہمیں یقین ہے کہ ان سب نے اجتہاد سے کام لیا تھا اور اللہ تعالیٰ کی خوشنودی چاہی تھی، اس لئے کہ دین کے معاملہ میں وہ سب حضرات شک و شبہ سے بالاتر ہیں۔ (قرطبی)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا

مسلمان جو ہیں سو بھائی ہیں سو ملاپ کرا دو

بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ

اپنے دو بھائیوں میں اور ڈرتے رہو اللہ سے تاکہ تم پر

تُرْحَمُونَ

رحم ہو ☆

اصلاح کی پوری کوشش کرو۔ یعنی صلح اور جنگ کی ہر ایک حالت میں ملحوظ رہے کہ دو بھائیوں کی لڑائی یا دو بھائیوں کی مصالحت ہے دشمنوں اور کافروں کی طرح برتاؤ نہ کیا جائے جب دو بھائی آپس میں جھگڑا جائیں تو یوں ہی ان کے حال پر نہ چھوڑ دو بلکہ اصلاح ذات البین کی پوری کوشش کرو اور ایسی کوشش کرتے وقت خدا سے ڈرتے رہو کہ کسی کی بے جا طرفداری یا ناحق ایذا رسانی کی نوبت نہ آنے پائے۔ (تفسیر حقانی)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ۔ یعنی تمام مومنوں کی اصل ایک ہے یعنی سب کو (مشترک) اصل ایمان ہے اور ابدی حیات ہوتی کا موجب ہے۔ اس لئے تمام اہل ایمان بھائی بھائی ہیں۔ اور چونکہ اس اصل کی پیدائش کا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات گرامی ہے۔ اس لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم تمام مومنوں کے باپ اور آپ کی بیویاں تمام مسلمانوں کی مائیں قرار پائیں۔

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ۔ یعنی اس امید پر تقویٰ پر قائم رہو کہ تم پر رحم کیا جائے کیونکہ باہم اتحاد، الفت، محبت اور آپس میں رحم کرنے کا جب تقویٰ سے اور آپس کی محبت، تو اہم اللہ کی رحمت کا موجب ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا، اللہ اپنے رحم کرنے والے بندوں پر ہی رحم کرتا ہے (رواہ الطبرانی) صحیحین میں آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو لوگوں پر رحم نہیں کرتا اللہ اس پر رحم نہیں کرتا۔ یہ روایت حضرت جریر رضی اللہ عنہ کی ہے۔

سبب نزول: بغوی نے لکھا ہے۔ جب یہ آیت نازل ہوئی اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے پڑھ کر سنائی تو سب مسلمانوں نے باہم صلح کرلی اور ہر شخص دوسرے کے ساتھ لڑنے سے رک گیا۔

سعید بن منصور اور ابن جریر نے حضرت ابو مالک کی روایت سے بیان کیا ہے کہ دو مسلمانوں میں باہم کچھ گفتگو ہوگئی۔ جس کی وجہ سے ہر ایک کا قبیلہ دوسرے پر بگڑ گیا اور ہاتھوں اور جوتوں سے مار پیٹ شروع ہوگئی۔ اس پر یہ آیت نازل ہوئی شاید یہ قصہ بھی اسی واقعہ کا ہو جس کا بیان پہلے کیا جا چکا ہے۔

ابن جریر اور ابن ابی حاتم نیز بغوی نے سدی کا بیان نقل کیا ہے۔ ایک انصاری تھے جن کو عمران کہا جاتا تھا ان کی بیوی ام زید نے اپنے میکے جانے کا ارادہ کیا۔ شوہر نے روک دیا اور ایک بالا خانہ پر عورت کو مقید کر دیا۔ عورت نے اپنے میکے کو خبر کر دی وہاں سے اس کا قبیلہ والے آگئے اور عورت کو بالا خانہ سے نیچے اتار کر لیجانے لگے۔ شوہر باہر گیا ہوا تھا اس نے اپنے کنبے والوں سے مطلب کی۔ اس کے چچا کے بیٹے آگئے اور عورت کو لے جانے میں مزاحمت کی تو دونوں فریقوں میں دھکم دھکا ہونے لگی اور جوتوں سے لڑائی شروع ہوگئی۔ انہیں کے متعلق یہ آیت نازل ہوئی۔ اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کسی کو بھیج کر ان میں صلح کرادی اور سب اللہ کے حکم کی طرف لوٹ آئے۔

بغوی وغیرہ نے بوساطت سالم بیان کیا کہ سالم کے والد یعنی حضرت عبداللہ نے بیان کیا کہ فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے مسلمان مسلمان کا بھائی ہے۔ اس کی حق تلفی نہ کرے نہ اس کو ہلاک ہونے دے۔ جو شخص اپنے بھائی کی حاجت (پوری کرنے) میں لگا رہتا ہے اللہ اس کی حاجت پوری کرنے میں لگا رہتا ہے اور جو شخص کسی مسلمان کی سختی دور کرتا ہے اللہ روز قیامت کی سختیوں میں سے کوئی سختی دور کر دے گا۔ جو شخص مسلمان کی پردہ پوشی کرے گا۔ اللہ قیامت کے دن اس کی پردہ پوشی کرے گا۔

مسلم نے حضرت ابوہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مسلمان مسلمان کا بھائی ہے۔ اس پر ظلم نہ کرے اس کو بے مدد نہ چھوڑے اور اس کی تحقیر نہ کرے سینہ کی طرف اشارہ کرتے ہوئے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے تین مرتبہ فرمایا۔ تقویٰ یہاں ہوتا ہے۔ آدمی کا یہ شر کافی ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائی کی تحقیر کرے۔ مسلمان کی ہر چیز مسلمان پر حرام ہے۔ اس کا خون بھی اس کا مال بھی اور اس کی آبرو بھی۔

## باغی گروہ ایمان سے خارج نہیں ہوتا

دونوں آیتیں دلالت کر رہی ہیں کہ باغی گروہ (دائرہ ایمان سے خارج نہیں ہوتا اس پر مومن کا اطلاق کیا جا سکتا ہے۔

بغوی نے لکھا ہے اس پر دلالت کرتا ہے۔ وہ اثر جو حارث اعور نے بیان کیا ہے کہ حضرت علیؓ سے دریافت کیا گیا کہ جنگ جمل اور صفین میں جو لوگ آپ کے مقابل تھے کیا وہ مشرک تھے؟ فرمایا نہیں۔ شرک سے تو وہ بھاگ کر اسلام میں داخل ہوئے تھے۔ سوال کیا گیا۔ تو کیا وہ منافق تھے؟ فرمایا نہیں۔ منافق تو اللہ کی یاد نہیں کرتے۔ عرض کیا گیا تو پھر وہ کون تھے؟ فرمایا وہ ہمارے بھائی تھے۔ جنہوں نے ہمارے خلاف بغاوت کی تھی۔

## باغی گروہ کے قتل قمع کے مسائل

مسئلہ: اگر مسلمانوں کا کوئی گروہ امام (خلیفہ) کے خلاف جمع ہو جائے اور اس کے پاس اتنی اکثریت اور لڑنے والی طاقت بھی ہو خلیفہ کو چاہئے کہ اول اس کو اطاعت کی دعوت دے اور اس کے اعتراضات کو دور کرے پھر اگر وہ کوئی ایسی وجہ ظاہر کریں۔ جس کی وجہ سے انہوں نے امام کے خلاف سرتابی کی ہے۔ مثلاً امام نے ان پر یا ان کے علاوہ دوسروں پر کوئی ظلم کیا ہو تو ایسے لوگوں سے جنگ کرنی امام کے لئے جائز نہیں۔ بلکہ مسلمانوں پر لازم ہے کہ ان مظلوموں کی حمایت کی مدد کریں۔ تاکہ امام ان کے ساتھ انصاف کرے اور ظلم سے باز آجائے (کذا قال ابن الہمام) لیکن بغاوت کو جائز قرار دینے والا کوئی معقول وجہ ظاہر نہ کریں اور لڑنے کے لئے جتھہ بند ہو جائیں تو امام کے لئے ان کو قتل کرنا اور ان سے لڑنا جائز ہے۔ (ماخوذ از فتح القدیر)

امام شافعی کہتے ہیں کہ جب تک وہ خود جنگ شروع نہ کریں۔ ان کو قتل

کر دیا جاتا تھا، مسلمانوں کو قتل کرنا صرف دفعِ شر کی صورت میں ہو سکتا ہے اور مسلمان ہی [illegible] اللہ نے فرمایا ہے فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا [illegible] امام مالک اور [illegible] کا یہی مسلک ہے۔

ہم کہتے ہیں کہ آیت میں باغی کے قتل کے طلب کرنے [illegible] ہے حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ۔ یعنی وہ ہے جس کے سبب [illegible] بھی ہے مراد اس میں ان کی طلب ہے [illegible] انصاف [illegible] جیسے کہ [illegible] کا قبول کرنے سے انکار [illegible] آیات میں [illegible] ہے۔ [illegible] فَإِنَّهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ [illegible] اطاعت [illegible] کی طرح [illegible] علم [illegible]۔

[illegible] باغیوں سے قتال کرنے کے لئے [illegible] ضروری [illegible] کیا جائے [illegible] باغیوں کی طرف سے ہو [illegible] کہ باغیوں کے پاس [illegible] جنگ [illegible] کے پاس لشکری طاقت [illegible] جنگ کرنی [illegible] سے ہم ان کو قید کر سکتے ہیں اور ان کو مار سکتے ہیں۔ اگر ہم [illegible] کے لئے [illegible] کہ وہ جنگ [illegible] کی طرف سے ہو تو [illegible] ان کا دفاع بھی نہ کر سکیں۔

مسئلہ: اگر باغیوں کا ایک گروہ [illegible] پر حملہ کیا جائے اور [illegible] بھاگ [illegible] کیا جائے [illegible] جماعت سے جا کر مل جائے [illegible] بھاگنے والوں کا تعاقب کیا جائے۔ لیکن جب ان [illegible] سے [illegible] تو اب ان کو قتل [illegible] نہیں [illegible] کے لئے [illegible] شیبہ نے [illegible] روایت [illegible] کہ حضرت علی نے جنگِ جمل کے دن فرمایا۔ پشت پھیر کر بھاگنے [illegible] ہتھیار [illegible] کسی کا قتل نہ کیا جائے [illegible]۔

ہم کہتے ہیں [illegible] باقی اور پشت پھیر کر بھاگنے والے) جب [illegible] جا کر مل جائیں [illegible] باقی [illegible] جمل کے متعلق حضرت علی کا [illegible] (مرکزی) گروہ [illegible] نہیں تھا۔

حاکم نے مستدرک میں [illegible] نے مسند میں [illegible] تقسیم [illegible] بیان [illegible] کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا [illegible] اس جماعت میں [illegible] کو اس کی [illegible] نے [illegible] ہے فرمایا [illegible] کا قتل [illegible] اس کے مال کو تقسیم [illegible]

تقسیم کیا جائے۔ [illegible] اس روایت کو [illegible] قرار دیا ہے [illegible] حاکم [illegible] روایت کی [illegible] ہے۔

مسئلہ: [illegible] جنگ کے وقت [illegible] کا ہتھیار [illegible] یا [illegible] اس کی [illegible] سے [illegible] باغیوں کی [illegible] جب حضرت علی نے حضرت طلحہ اور ان کے ساتھیوں کا [illegible] والے [illegible] اس نے [illegible] کی [illegible] پشت پھیرنے والے [illegible] کا قتل [illegible] یا جائے [illegible] کی [illegible] ہو [illegible] حضرت علی [illegible] مقتول (باغی) کا مال نہیں لیتے تھے [illegible] (مقتول [illegible]) کو اس کا مال [illegible] سے۔

[illegible] حضرت علی [illegible] جمل کے دن [illegible] نے [illegible] قتل [illegible] ہتھیار [illegible] سے [illegible] کیا جائے۔

مسئلہ: [illegible] باغیوں سے [illegible] ہتھیار [illegible] باغیوں سے جنگ کی [illegible] ہے۔ امام شافعی [illegible] ان کے خلاف [illegible] باغیوں کے ہتھیاروں اور سواریوں کا استعمال [illegible] قول کی [illegible] روایت [illegible] باغی [illegible] ہتھیار [illegible] کی [illegible] حضرت علی نے (باغیوں کی شکست کے بعد) [illegible] تقسیم کر دیا۔ صاحب ہدایہ نے لکھا ہے یہ تقسیم [illegible] کے لئے تھی [illegible] باغیوں سے [illegible] کر کے [illegible]۔

مسئلہ: باغیوں نے [illegible] نقصان [illegible] باغیوں کے [illegible] جان [illegible] امام مالک اور امام ابو حنیفہ [illegible] قول [illegible] کا ایک قول یہ ہے کہ اس کا کوئی معاوضہ نہیں ہوگا۔ شافعی [illegible] اس کے خلاف ہے۔

[illegible] نے لکھا ہے [illegible]

میں پائے جانے پر قتل اور مقاتل کی شرافت بھی ہو گئی اور کثرت مال بھی ضائع ہوا نہیں جب فرق نہ ہو تو [illegible] اور باغیوں پر ضمان کا الزام [illegible] گیا تو ہم کہیں جان و مال کا [illegible] لیا گیا ہو یا کسی سے تلف شدہ مال واپس وصول کیا گیا ہو۔

مسئلہ: اگر کسی باغی نے امام کے کسی وفادار کو قتل کر دیا اور وہ غالب آ گئے پھر جس نے قتل کیا [illegible] ہے تو قاتل مقتول کا وارث ہوگا اور اگر [illegible] کا اقرار کرے [illegible] اور اگر امام کا کوئی وفادار کسی باغی کو قتل کر دے تو بہرحال قاتل مقتول کا وارث ہو سکتا ہے۔

مسئلہ: اطاعت امام سے خارج ہونے والوں کے پاس (ان کے خیال میں) کوئی تاویل نہ ہو [illegible] کرے اور مال لوٹنے لگیں [illegible] ہوں ان کے پاس [illegible] طاقت [illegible] پایا جائے گا۔ ان کا حکم سورۂ مائدہ میں ذکر کیا جا چکا ہے کہ ان کو قتل کیا جائے اور صلیب پر لٹکایا جائے یا ہاتھ پاؤں کاٹ دیئے جائیں اور زمین سے نکال دیا جائے۔

مسئلہ: اطاعت امام سے سرکشی کرنے والے کے پاس اگر [illegible] اور قتال کی طاقت نہ ہو تو حسب [illegible] قید کر دیا جائے [illegible] اس طرح کی دوسری سزا دی جائے مگر قتل کرنا جائز نہیں ہے۔

لطیفہ: [illegible] حضرت علیؓ سے خارجیوں نے مسجد کے گوشہ میں کہا لا حکم الا للہ (اللہ کے سوا کسی کا حکم جائز نہیں) فرمایا بات تو سچی ہے لیکن اس کا مطلب غلط لیا گیا ہے۔

تمہارے ہم پر تین حق ہیں۔ مسجدوں میں اللہ کا ذکر کرنے (یعنی نماز پڑھنے) سے ہم تم کو نہیں روکیں گے جب تک تم ہمارے ساتھ رہو گے [illegible] جب تک تمہارے ہاتھ ہمارے ہاتھوں کے ساتھ [illegible] مال غنیمت میں سے تم کو محروم نہیں کریں گے اور ہم تم سے قتال نہیں کریں گے جب تک تم خود قتال کی ابتدا نہیں کرو گے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ |
| اے ایمان والو نہ ہنسی کریں ایک لوگ |
| مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا |
| دوسروں سے شاید وہ بہتر ہوں |
| مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى |
| ان سے اور نہ عورتیں دوسری عورتوں سے شاید |

| |
|---|
| اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا |
| وہ بہتر ہوں ان سے اور عیب نہ لگاؤ |
| اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ |
| ایک دوسرے کو اور نام نہ ڈالو چڑانے کو ایک دوسرے کے ☆ |

**آداب معاشرت** ☆ اول مسلمانوں کی باہمی لڑائی اور اختلاف کو روکنے کی تدابیر بتلائی گئی تھیں [illegible] اختلاف رفع ہو جائے تو بہتر اور موثر طریقے سے اس کو مٹایا جائے لیکن جب تک مرض کا مادہ [illegible] کوشش ہونی چاہئے کہ [illegible] جذبات مخالفت زیادہ [illegible] مشتعل ہونے پائیں۔ عموماً دیکھا جاتا ہے کہ جہاں دو شخصوں یا دو جماعتوں میں اختلاف رونما ہوا ایک دوسرے کا [illegible] فوراً [illegible] کرنے لگتے ہیں ذرا سی بات ہاتھ لگ گئی اور ہنسی مذاق اڑانا شروع کر دیا حالانکہ اسے معلوم نہیں کہ شاید جس کا مذاق اڑا رہا ہے وہ اللہ کے نزدیک اس سے بہتر ہو بلکہ بسا اوقات یہ خود بھی اختلاف سے پہلے اس کو بہتر سمجھتا ہو مگر ضد و نفسانیت میں دوسرے کی آنکھ کا تنکا نظر آتا ہے اپنی آنکھ کا شہتیر نظر نہیں آتا۔ اس طریقہ سے نفرت و عداوت کی خلیج اور وسیع ہوتی رہتی ہے اور قلوب میں اس قدر بعد ہو جاتا ہے کہ صلح و مصالحت کی کوئی امید باقی نہیں رہتی۔ آیت ہذا میں خداوند قدوس نے اسی قسم کی باتوں سے منع فرمایا ہے یعنی ایک جماعت دوسری جماعت کے ساتھ تمسخر نہ کرے نہ ایک دوسرے پر آوازے کسے جائیں نہ [illegible] برے نام رکھے جائیں اور برے لقب سے فریق مقابل کو یاد کیا جائے کیونکہ اس سے دشمنی اور نفرت میں ترقی ہوتی اور فتنہ فساد کی آگ زیادہ تیزی سے پھیلتی ہے۔ سبحان اللہ کیسی بیش بہا ہدایات ہیں آج اگر مسلمان سمجھیں تو ان کے سب سے بڑے [illegible] کا مکمل علاج اس ایک سورۂ حجرات میں موجود ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**سبب نزول:** مسند احمد میں ہے کہ یہ حکم بنو سلمہ کے بارے میں نازل ہوا ہے جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ میں آئے تو یہاں ہر شخص کے دو دو تین تین نام تھے حضور صلی اللہ علیہ وسلم ان میں سے کسی کو کسی نام سے پکارتے تو لوگ کہتے یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یہ اس سے چڑتا ہے اس پر یہ آیت اتری (ابوداؤد) [illegible] برے القاب سے آپس میں بھی ایک دوسرے کو [illegible] کرنا نہایت بری بات ہے۔ اب تمہیں اس سے توبہ کر لینی چاہئے ورنہ ظالم گنے جاؤ گے۔

**مومن کی عزت:** ابن ماجہ میں ہے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے طواف کعبہ کرتے ہوئے فرمایا تو کتنا پاک گھر ہے۔ تو کیسی پاکیزہ خوشبو والا ہے۔

کسی کی بے عزتی کرنا بہت برا ہے اور کسی کی بڑی حرمت وعزت ہے۔ اسی کی قسم جس کے ہاتھ میں محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی جان ہے کہ مومن کی حرمت اس کے مال اور اس کی جان کی حرمت اور اس کے ساتھ نیک گمان کرنے کی اللہ تعالیٰ کے نزدیک کعبہ کی حرمت سے بہت بڑی ہے۔

## بول چال اور میل جول نہ چھوڑو:

مسلم وغیرہ میں ہے ایک دوسرے سے حسد نہ کرو، بغض نہ رکھو اور ایک دوسرے سے میل جول ترک نہ کرو بلکہ ایک دوسرے سے قطع تعلق نہ کرو بلکہ سب مل کر خدا کے بندے بن کر ایک دوسرے کے بھائی بن کر زندگی گزارو۔ کسی مسلمان کو حلال نہیں کہ اپنے دوسرے مسلمان بھائی سے تین دن سے زیادہ بول چال اور میل جول چھوڑ دے۔

## شگون، حسد اور بدگمانی کا علاج:

طبرانی میں ہے کہ تین خصلتیں میری امت میں رہ جائیں گی فال لینا، حسد کرنا اور بدگمانی کرنا۔ ایک شخص نے پوچھا حضور پھر ان کا تدارک کیا ہے؟ فرمایا جب حسد کرو تو استغفار کر لے۔ جب گمان پیدا ہو تو اسے چھوڑ دے اور یقین نہ کرے اور جب فال لے تو اسے نہ دیکھ بلکہ اپنا کام کرے۔ ابو داؤد میں ہے کہ ایک شخص کو حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ کے پاس لایا گیا اور کہا گیا کہ اس کی داڑھی سے شراب کے قطرے گر رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا ہمیں بھید ٹٹولنے سے منع فرمایا گیا ہے، اگر ہمارے سامنے کوئی چیز ظاہر ہوگی تو ہم اس پر پکڑ سکتے ہیں۔

## مسلمان کی پردہ داری کا ثواب:

مسند احمد میں ہے کہ حضرت عقبہ کے کاتب ابو الہیثم حضرت عقبہ کے پاس گئے اور ان سے کہا کہ میرے پڑوس میں کچھ لوگ شرابی ہیں میرا ارادہ ہے کہ میں داروغہ کو بلا کر انہیں گرفتار کرا دوں۔ آپ نے فرمایا ایسا نہ کرنا بلکہ انہیں سمجھاؤ بجھاؤ ڈانٹ ڈپٹ کرو۔ پھر کچھ دنوں بعد آئے اور کہا وہ باز نہیں آتے اب تو میں داروغہ کو بلاؤں گا۔ آپ نے فرمایا افسوس تم ہرگز ہرگز ایسا نہ کرو۔ سنو میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا ہے کہ آپ نے فرمایا جو شخص کسی مسلمان کی پردہ داری کرے اسے اتنا ثواب ملے گا جیسے کسی نے زندہ درگور کی ہوئی لڑکی کو بچا لیا۔

## پوشیدہ گناہوں کی ٹٹول:

ابو داؤد میں ہے حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے اگر تو لوگوں کی پوشیدہ باتوں کے پیچھے پڑے گا تو انہیں بگاڑ دے گا یا فرمایا ممکن ہے تو انہیں خراب کر دے۔

حضرت ابو درداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں اس حدیث سے اللہ تعالیٰ نے حضرت معاویہ کو بہت فائدہ پہنچایا۔ ابو داؤد کی ایک اور حدیث میں ہے کہ امیر اور بادشاہ جب اپنے ماتحتوں اور رعایا کی برائیاں ٹٹولنے لگ جاتا ہے اور گمان اور شبہات پر چلتا ہے تو انہیں بگاڑ دیتا ہے۔

حدیث شریف میں ہے اے وہ لوگو جن کی زبانیں تو ایمان لا چکی ہیں لیکن دل ایمان نہیں لائے تم مسلمانوں کی غیبتیں کرنا چھوڑ دو اور ان کے عیبوں کی ٹوہ نہ کیا کرو، یاد رکھو اگر تم ان کے عیب ٹٹولو گے تو اللہ تعالیٰ تمہاری پوشیدہ برائیاں کھول دے گا یہاں تک کہ تم اپنے گھر والوں میں بھی بدنام اور رسوا ہو جاؤ گے۔

## تجسس، تحسس اور تدابر:

حدیث شریف میں ہے نہ تجسس کرو نہ تحسس کرو نہ حسد و بغض کرو نہ تدابر کرو، بلکہ سب مل کر خدا کے بندے بھائی بھائی بن جاؤ۔ امام اوزاعی فرماتے ہیں تجسس کہتے ہیں کسی چیز میں کرید کرنے کو اور تحسس کہتے ہیں ان لوگوں کی سرگوشی پر کان لگانے کو جو کسی کو اپنی باتیں سنانا نہ چاہتے ہوں اور تدابر کہتے ہیں ایک دوسرے سے منہ موڑ کر روٹھ کر قطع تعلقات کرنے کو۔ (ابن کثیر)

**سورۃ حجرات کے مضامین:** سورۂ حجرات کے شروع میں نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے حقوق و آداب کا بیان آیا۔ پھر عام مسلمانوں کے باہمی حقوق و آداب معاشرت کا بیان شروع ہوا، ساتھ ہی ان میں سے جو آیات اجتماعی اصلاح کے احکام بیان ہوئے۔ مذکور الصدر آیتوں میں انفرادی طرز کے باہمی حقوق و آداب معاشرت کا ذکر ہے۔ ان میں تین چیزوں کی حرمت فرمائی گئی ہے۔ اول کسی مسلمان کے ساتھ تمسخر یا استہزاء، دوسرے کسی پر طعنہ زنی کرنا، تیسرے کسی کو ایسے لقب سے ذکر کرنا جس سے اس کی توہین ہوتی ہو یا وہ اس سے ناراض ہوتا ہو۔

**تمسخر:** کسی چیز کو ہنسی یا مذاق بنانا ہے۔ قرطبی نے فرمایا کہ کسی شخص کی تحقیر و توہین کے لئے اس کے کسی عیب کو اس طرح ذکر کرنا جس سے لوگ ہنسنے لگیں اس کو سخریہ، تمسخر، استہزاء کہا جاتا ہے اور یہ جیسے زبان سے ہوتا ہے ایسے ہی ہاتھ پاؤں وغیرہ سے اس کی نقل اتارنے یا اشارہ کرنے سے بھی ہوتا ہے اور اس طرح بھی کہ اس کا کلام سن کر بطور تحقیر کے ہنسی اڑائی جاوے اور بعض حضرات نے فرمایا کہ تمسخر کسی شخص کے سامنے اس کا اس طرح ذکر کرنا ہے کہ اس سے لوگ ہنسنے لگیں اور یہ سب چیزیں بنص قرآن حرام ہیں۔

تمسخر کی ممانعت کا قرآن کریم نے اتنا اہتمام فرمایا کہ اس میں مردوں کو الگ مخاطب فرمایا عورتوں کو الگ۔ مردوں کو لفظ قوم سے تعبیر فرمایا کیونکہ اصل میں یہ لفظ مردوں ہی کے لئے وضع کیا گیا ہے اگرچہ مجازاً وتوسعاً عورتوں کو اکثر شامل ہو جاتا ہے اور قرآن کریم نے لفظ قوم عموماً مردوں اور عورتوں دونوں ہی کے لئے استعمال کیا ہے۔

**کتے کے ساتھ بھی استہزاء نہ کرو:** اگر کسی شخص کے بدن یا صورت یا قد و قامت وغیرہ میں کوئی عیب نظر آوے تو کسی کو اس پر ہنسنے یا استہزاء کرنے کی جرأت نہ کرنا چاہئے کیونکہ اسے معلوم نہیں کہ شاید وہ اپنے صدق و اخلاص وغیرہ کے سبب اللہ کے نزدیک اس سے بہتر اور افضل ہو۔ اس آیت کو سن کر سلف صالحین کا حال یہ ہو گیا تھا کہ عمرو بن شرحبیل نے فرمایا کہ میں اگر کسی شخص کو بکری کے تھنوں سے منہ لگا کر دودھ پیتے دیکھوں اور اس پر مجھے ہنسی آوے تو میں ڈرتا ہوں کہ کہیں میں بھی ایسا ہی نہ ہو جاؤں۔ حضرت عبداللہ بن مسعودؓ نے فرمایا کہ میں اگر کسی کتے کے ساتھ بھی استہزاء کروں تو مجھے ڈر رہتا ہے کہ میں خود کتا نہ بنا دیا جاؤں۔ (قرطبی)

**ظاہر پر حکم نہ لگاؤ:** صحیح مسلم میں حضرت ابوہریرہؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ مسلمانوں کی صورتوں اور ان کے مال و دولت پر نظر نہیں فرماتے بلکہ ان کے قلوب اور اعمال کو دیکھتے ہیں۔ قرطبی نے فرمایا کہ اس حدیث سے ایک ضابطہ اور اصل یہ معلوم ہوئی کہ کسی شخص کے معاملہ میں اس کے ظاہری حال کو دیکھ کر کوئی قطعی حکم لگا دینا درست نہیں کیونکہ ہو سکتا ہے کہ جس شخص کے ظاہری اعمال و احوال کو ہم بہت اچھا سمجھ رہے ہیں اللہ تعالیٰ جو اس کے باطنی حالات اور قلبی کیفیات کو جانتا ہے اس کے نزدیک وہ مذموم ہو اور جس شخص کے ظاہری حال اور اعمال برے ہیں ہو سکتا ہے کہ اس کے باطنی حالات اور قلبی کیفیات اس کے اعمال بد کا کفارہ بن جائیں اس لئے اس شخص کو کوئی ہم برے اعمال میں مبتلا دیکھیں تو اس کی اس حالت کو تو برا سمجھو مگر اس شخص کو حقیر و ذلیل سمجھنے کی اجازت نہیں۔

**لمز:** لمز کے معنی ہیں کسی کے عیب نکالنا، عیب ظاہر کرنے یا عیب پر طعنہ زنی کرنے کے ہیں۔ آیت میں ارشاد فرمایا وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ یعنی تم اپنے عیب نہ نکالو۔ یہ ارشاد ایسا ہی ہے جیسے قرآن کریم میں ہے لَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ جس کے معنی یہ ہیں کہ تم اپنے آپ کو قتل نہ کرو، ظاہر ہے کہ یہاں اپنے آپ کو قتل کرنے اور اپنے عیب نکالنے سے مراد یہ ہے کہ تم آپس میں ایک دوسرے کو قتل نہ کرو، ایک دوسرے کا طعنہ نہ دو، اور اس عنوان سے تعبیر کرنے میں حکمت یہ بتلانا ہے کہ کسی دوسرے کو قتل کرنا ایک حیثیت سے اپنے آپ ہی کو قتل کرنا ہے کیونکہ اکثر تو ایسا اتفاق ہوتی جاتا ہے کہ ایک نے دوسرے کو قتل کیا، دوسرے کے حمایتیوں نے اس کو قتل کر دیا اور اگر یہ بھی نہ ہو تو اصل بات یہ ہے کہ مسلمان سب بھائی بھائی ہیں، اپنے بھائی کو قتل کرنا گویا خود اپنے آپ کو قتل کرنا اور بے دست و پا ہونا ہے اسی طرح یہاں وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ میں بھی کہ تم جو دوسروں کے عیب نکالو اور طعنہ دو تو یاد رکھو کہ عیب سے تو کوئی انسان عادۃً خالی نہیں ہوتا تم اس کے عیب نکالو گے تو وہ تمہارے عیب نکالے گا جیسا کہ بعض علماء نے فرمایا کہ وفیک عیوب و للناس اعین۔ یعنی تم میں بھی کچھ عیب ہیں اور لوگوں کی آنکھیں ہیں جن سے وہ دیکھتی ہیں تم کسی کے عیب نکالو گے اور طعنہ زنی کرو گے تو وہ تم پر بھی یہی عمل کریں گے اور بالفرض اگر اس نے صبر بھی کیا تو بات وہی ہے کہ ایک بھائی کی جانب سے اس عمل پر غور کریں تو اپنی ہی تحقیر و تذلیل ہے۔

**انسان کی خوش نصیبی:** علماء نے فرمایا ہے کہ انسان کی سعادت اور خوش نصیبی اس میں ہے کہ اپنے عیوب پر نظر رکھے ان کی اصلاح کی فکر میں لگا رہے اور جو ایسا کرے گا اس کو دوسروں کے عیب نکالنے اور بیان کرنے کی فرصت ہی نہ ملے گی۔ ہندوستان کے آخری مسلمان بادشاہ ظفر نے خوب فرمایا ہے۔

نہ تھی حال کی جب ہمیں اپنی خبر
رہے دیکھتے لوگوں کے عیب و ہنر
پڑی اپنی برائیوں پر جو نظر
تو جہان میں کوئی برا نہ رہا

**برے لقب سے پکارنا:** کسی کو تحقیر اور عار دلانے کے لئے کسی برے لقب سے یاد کرنا، اسی طرح جو نام کسی شخص کی تحقیر کے لئے استعمال کیا جاتا ہو اس نام سے اس کو پکارنا۔ حضرت ابو جبیرہ انصاریؓ نے فرمایا کہ یہ آیت ہمارے بارے میں نازل ہوئی ہے کیونکہ جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ میں تشریف لائے تو ہم میں اکثر آدمی ایسے تھے جن کے دو دو تین تین نام مشہور تھے اور ان میں سے بعض نام ایسے تھے جو لوگوں نے اس کو عار دلانے اور تحقیر و توہین کے لئے مشہور کر دیئے تھے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ معلوم نہ تھا بعض اوقات وہی نام لے کر آپ صلی اللہ علیہ وسلم اس کو خطاب کرتے تو صحابہ عرض کرتے کہ یا رسول اللہ وہ اس نام سے ناخوش ہوتا ہے اس پر یہ آیت نازل ہوئی۔

اور حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا کہ آیت میں تنابز بالالقاب سے مراد یہ ہے کہ کسی شخص نے کوئی گناہ یا برا عمل کیا ہو اور پھر اس سے تائب ہو گیا ہو اس کے بعد اس کو اس برے عمل کے نام سے پکارنا مثلاً چور یا زانی یا شرابی وغیرہ۔ جس نے چوری زنا شراب سے توبہ کر لی ہو اس کو اس پچھلے عمل سے عار دلانا اور تحقیر کرنا حرام ہے۔ حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ جو شخص کسی مسلمان کو ایسے گناہ پر عار دلائے جس سے اس نے توبہ کر لی ہے تو اللہ نے اپنے اوپر یہ لے لیا ہے کہ اس کو اسی گناہ میں مبتلا کر کے دنیا و آخرت میں رسوا کرے گا۔ (قرطبی)

**بعض القاب کا استثناء:** بعض لوگوں کے ایسے نام مشہور ہو جاتے ہیں جو فی نفسہ برے ہیں مگر وہ بغیر اس لفظ کے پہچانا ہی نہیں جاتا تو اس کو اس نام سے ذکر کرنے کی اجازت پر علماء کا اتفاق ہے بشرطیکہ ذکر کرنے والے کا قصد اس سے تحقیر و تذلیل کا نہ ہو جیسے بعض محدثین کے نام کے ساتھ اعرج یا

صاحب مشہور ہے اور خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک صحابی ذوالیدین کے ہاتھ نسبتاً زیادہ طویل تھے، ذوالیدین کے نام سے تعبیر فرمایا ہے۔ حضرت عبداللہ بن مبارکؒ سے دریافت کیا گیا کہ اسانید حدیث میں بعض راویوں کے ساتھ کچھ ایسے القاب آتے ہیں مثلاً حمید الطویل، سلیمان الاعمش، مروان الاصفر وغیرہ تو کیا ان القاب کے ساتھ ذکر کرنا جائز ہے۔ آپ نے فرمایا کہ جب تمہارا قصد اس کا عیب بیان کرنے کا نہ ہو بلکہ اس کی پہچان پوری کرنے کا ہو تو جائز ہے۔ (قرطبی، معارف مفتی اعظم)

## سنت یہ ہے کہ لوگوں کو اچھے القاب سے یاد کیا جائے

حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مومن کا حق دوسرے مومن پر یہ ہے کہ اس کا ایسے نام و لقب سے ذکر کرے جو اس کو زیادہ پسند ہو، اسی لئے عرب میں کنیت کا رواج عام تھا اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی اس کو پسند فرمایا۔ خود آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے خاص خاص صحابہ کو کچھ لقب دیئے ہیں۔ صدیق اکبر کو عتیق اور حضرت عمر کو فاروق اور حضرت حمزہ کو اسد اللہ اور خالد بن ولید کو سیف اللہ فرمایا ہے۔

**سبب نزول کا دوسرا واقعہ** حضرت ابن جریج راوی ہیں کہ حضرت ثابت بن قیس کے کانوں میں کچھ گرانی تھی (یعنی کم سنتے تھے اور بہرے تھے) جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی مجلس میں حاضر ہوتے اور پہلے سے لوگ وہاں بیٹھے ہوئے ہوتے اور جگہ تنگ ہوتی تو لوگ آپ کو (آگے) جگہ دے دیتے تھے تاکہ آپ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشادات سن سکیں۔ ایک روز آپ فجر کی نماز میں اس وقت آئے جب ایک رکعت ہو چکی تھی۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے نماز ختم کی تو صحابہ کرام اپنی اپنی جگہ سے اچھے بچھے شانہ بشانہ جم کر بیٹھے رہے۔ مجلس اتنی تنگ تھی کہ کوئی (خود سمٹ کر) دوسرے کے لئے گنجائش نہیں نکال سکتا تھا۔ آنے والے کو جب بیٹھنے کی جگہ نہیں ملتی تو وہ کھڑا رہتا تھا۔ حضرت ثابت جب نماز سے فارغ ہوئے تو لوگوں کی گردنیں پھلانگتے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف کو چلے اور لوگوں سے فرمایا جگہ دو جگہ دو۔ لوگ آپ کو جگہ دیتے رہے یہاں تک کہ اسی طرح آپ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے قریب پہنچ گئے۔ آپ کے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے درمیان صرف ایک آدمی رہ گیا۔ حضرت ثابت نے اس سے بھی فرمایا مجھے جگہ دو۔ اس شخص نے کہا آپ کو جگہ تو مل گئی۔ بیٹھئے بیٹھ جائیے۔ حضرت ثابت اس آدمی کے پیچھے غصہ کے ساتھ بیٹھ گئے۔ رات آپ کو خوب پھیل گئی جب اچھی طرح روشنی ہو گئی تو ثابت نے اس شخص کو ٹھوکا دیا اور پوچھا کون شخص ہے۔ اس نے کہا میں فلاں شخص ہوں۔ حضرت ثابت نے کہا فلانی عورت کا بیٹا۔ حضرت ثابت نے اس شخص کی ماں کا ایک عیب بیان کر کے جو جاہلیت کے زمانے میں اس کو عار دلانے کے لئے کہا جاتا تھا، اس شخص نے شرمندہ ہو

کر سر جھکا لیا۔ اس پر یہ آیت نازل ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

| بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ |
|---|
| برا نام ہے گنہگاری پیچھے ایمان کے ☆ |

**کسی کو برا نام دینا گناہ ہے** یعنی کسی کا برا نام ڈالنے سے آدمی خود گنہگار ہو جاتا ہے تو دوسرے میں عیب لگانے والا خود ہی بدنام ہو گیا۔ ایمان لانے کے بعد مومن کو فاسق کہنا بدترین نام ہے۔ ایک مطلب یہ ہے کہ جب ایک شخص مسلمان ہو گیا اس کو اس کے مسلمان ہونے سے پہلے کی باتوں پر طعنہ دینا یا اس وقت کے برے القاب سے یاد کرنا (کہ یہودی یا نصرانی وغیرہ کہہ کر پکارنا) بہت مذموم حرکت ہے۔ اسی طرح جو شخص کسی عیب میں مبتلا ہو (مثلاً کسی گناہ کا) پھر اس نے توبہ کر لی ہو تو اس کو چڑانے کے لئے اس کا ذکر کرنا بھی جائز نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| وَمَنْ لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ |
|---|
| اور جو کوئی توبہ نہ کرے تو وہی ہیں |
| الظّٰلِمُوْنَ ۝ |
| بے انصاف ☆ |

**پچھلے گناہ پر توبہ کر لو** یعنی جو پہلے ہو چکا اب توبہ کر لو آئندہ ایسی حرکات سے باز آ جاؤ ورنہ جو ایسی حرکت سے باز نہ آئے گا تو اللہ کے نزدیک وہی ظالم ہوں گے۔ (تفسیر عثمانی)

## دوسرے کو کفر اور فسق سے منسوب کرنا

حضرت ابوذر کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کوئی کسی شخص پر فسق یا کفر کی طرف منسوب کرے گا (یعنی فاسق یا کافر کہے گا) اگر وہ ویسا نہ ہو تو وہ قول کہنے والے پر لوٹ پڑے گا (یعنی کہنے والا فاسق یا کافر ہو جائے گا) رواہ البخاری۔ حضرت ابن عمر راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس نے اپنے بھائی کو کافر کہا تو دونوں میں سے ایک پر پڑ کر رہے گا۔ (یعنی یا کہنے والا کافر ہو جائے گا یا جس کو کافر کہا جس کو واقعی کافر ہوگا۔ متفق علیہ)۔

حضرت ابوذرؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ جس نے کسی کو کفر کی طرف منسوب کیا یا دشمن خدا کہا اور واقع میں وہ ایسا نہ ہوا تو وہ قول کہنے والے پر لوٹ جائے گا۔ متفق علیہ۔

حضرت ابن مسعود راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مسلمان کو گالی دینا فسق (گناہ کبیرہ) ہے اور مسلمان کو قتل کرنا کفر ہے۔ متفق علیہ۔

تہمت لگانے کی سزا کسی شخص (پاک دامن آزاد مسلمان مرد یا عورت) پر زنا کی تہمت لگانے [illegible] حدِ قذف [illegible] اور اگر غیر مسلم [illegible] کو متہم کیا جائے تو حد [illegible] جاری نہ ہوگی۔ تعزیر کی جائے گی [illegible] بات [illegible] ہے۔

[illegible]

کسی کو برا بھلا کہنے کی سزا کسی نے مسلمان (مرد یا عورت) کو [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] تعزیر جاری کی گئی ہوگی۔

[illegible]

بعض اہلِ علم کی رائے ہے کہ [illegible] تعزیر [illegible] اگر [illegible] تو تعزیر ہوگی [illegible]

تعزیر کیا ہے؟ تعزیر [illegible] امام ابو حنیفہ اور امام شافعی نے [illegible] شراب [illegible] آزاد مسلمان [illegible] امام شافعی [illegible] تعزیر [illegible]

[illegible]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا

اے ایمان والو بچتے رہو بہت تہمتیں

مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

کرنے سے بے شک بعض تہمت گناہ ہے

وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ

اور بھید نہ ٹٹولو کسی کا اور برا نہ کہو پیٹھ پیچھے ایک

بَعۡضَ

[illegible]

بدگمانی اور اس کے نتائج [illegible] اختلاف [illegible] ایک [illegible] دوسرے فریق [illegible]

[illegible]

ظنِ محمود اور ظنِ مذموم اور ظنِ مشروع: [illegible] اِیّاکم والظنّ فانّ الظنّ اکذب الحدیث [illegible] مسلمان [illegible] بدگمانی [illegible]

[illegible]

واجب ہو تو اس متنازع شدہ چیز کی قیمت میں ظنِ غالب ہی پر عمل کرنا واجب ہے۔ اسی طرح جہاں سمت قبلہ معلوم نہ ہو اور کوئی ایسا آدمی بھی نہ ہو جس سے معلوم کی جا سکے وہاں اپنے ظنِ غالب پر عمل ضروری ہے اسی طرح کسی شخص پر کسی چیز کا تاوان دینا واجب ہو تو اس ضائع شدہ چیز کی قیمت میں ظنِ غالب ہی پر عمل کرنا واجب ہے اور ظنِ مباح ایسا ہے جیسے نماز کی رکعتوں میں شک ہو جائے کہ تین پڑھی ہیں یا چار تو اپنے ظنِ غالب پر عمل کرنا جائز ہے اور اگر وہ ظنِ غالب کو چھوڑ کر امر یقینی پر عمل کرے یعنی تین رکعت قرار دے کر چوتھی پڑھ لے تو یہ بھی جائز ہے اور ظنِ مستحب (مستحب) یہ ہے کہ ہر مسلمان کے ساتھ نیک گمان رکھے کہ اس پر ثواب ملتا ہے۔ (جصاص ملخصاً)

قرطبی نے فرمایا کہ قرآن کریم کا ارشاد ہے لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا اس میں حسن ظن بالمؤمنین کی تاکید آئی ہے۔

**ایک مشہور مقولہ کا مطلب:** اور یہ جو مشہور ہے کہ اِنَّ مِنَ الْحَزْمِ سُوْءَ الظَّنِّ یعنی احتیاط کی بات یہ ہے کہ ہر شخص سے بدگمانی رکھے اس کا مطلب یہ ہے کہ معاملہ ایسا کرے جیسے بدگمانی کی صورت میں کیا جاتا ہے کہ بدون قوی اعتماد کے اپنی چیز کسی کے حوالہ نہ کرے یہ نہیں کہ اس کو چور سمجھے اور اس کی تحقیر کرے۔ خلاصہ یہ ہے کہ کسی شخص کو چور و غدار سمجھے بغیر اپنے معاملے میں احتیاط برتے۔ شیخ سعدی علیہ الرحمۃ کے اس مقولہ کا بھی یہی مطلب ہے۔

[illegible]
[illegible]

**تجسس اور تحسس:** تجسس یعنی کسی کے عیب کی تلاش اور سراغ لگانا ہے اس میں دو قراءتیں ہیں ایک لَا تَجَسَّسُوْا جیم سے دوسرے لَا تَحَسَّسُوْا حاء سے اور حدیث صحیحین میں جو حضرت ابوہریرہؓ سے منقول ہے دونوں لفظ آئے ہیں ارشاد ہے لَا تَجَسَّسُوْا وَلَا تَحَسَّسُوْا اور ان دونوں لفظوں کے معنی متقارب ہیں۔ اخفش نے دونوں میں یہ فرق بیان کیا ہے کہ تجسس بالجیم کسی ایسے امر کی جستجو اور تلاش کو کہا جاتا ہے جس کو لوگوں نے آپ سے چھپایا ہو اور تحسس بالحاء مطلق طلب اور جستجو کے معنی میں آتا ہے۔ سورۂ یوسف میں فَتَحَسَّسُوْا مِن يُّوْسُفَ وَأَخِيْهِ اسی معنی کے لئے آیا ہے اور معنی آیت کے یہ ہیں کہ جو چیز تمہارے سامنے آجائے اس کو پکڑ سکتے ہو اور کسی مسلمان کا جو عیب ظاہر نہ ہو اس کی جستجو اور تلاش کرنا جائز نہیں۔ ایک حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے۔ لَا تَغْتَابُوا الْمُسْلِمِيْنَ وَلَا تَتَّبِعُوْا عَوْرَاتِهِمْ فَإِنَّ مَنْ تَتَبَّعَ عَوْرَاتِهِمْ يَتَتَبَّعُ اللّٰهُ عَوْرَتَهُ وَمَنْ يَّتَتَبَّعِ اللّٰهُ عَوْرَتَهُ يَفْضَحْهُ فِيْ بَيْتِهِ (قرطبی) (مسلمانوں کی غیبت نہ کرو اور ان کے عیوب کی جستجو نہ کرو کیونکہ جو شخص مسلمانوں کے عیوب کی تلاش کرتا ہے اللہ جس کے عیب کی تلاش اللہ تعالیٰ کرتا ہے اس کو اس کے گھر کے اندر بھی رسوا کر دیتا ہے۔)

بیان القرآن میں ہے کہ چھپ کر کسی کی باتیں سننا یا اپنے کو سوتا ہوا بنا کر باتیں سننا بھی تجسس میں داخل ہے البتہ اگر کسی سے مضرت پہنچنے کا احتمال ہو اور اپنی یا دوسرے کسی مسلمان کی حفاظت کی غرض سے مضرت پہنچانے والے کی خفیہ تدبیروں اور ارادوں کا تجسس کرے تو جائز ہے۔ تیسری چیز جس سے اس آیت میں منع فرمایا غیبت ہے وہ کسی کی غیبت کرنا ہے یعنی اس کی غیر موجودگی میں اس کے متعلق کوئی ایسی بات کرنا جس کو وہ سنتا تو اس کو ناگوار ہوتی اگرچہ وہ سچی بات ہی ہو کیونکہ جو خلاف الزام ہو وہ تہمت ہے جس کی حرمت الگ قرآن کریم سے ثابت ہے اور غیبت کی تعریف میں اس شخص کی غیر موجودگی کی قید سے یہ سمجھا جائے کہ موجودگی کی حالت میں ایسی دلآزاری بات کہنا جائز ہے کیونکہ غیبت تو نہیں مگر لمز میں داخل ہے جس کی حرمت اس سے پہلی آیت میں آ چکی ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

**غیبت کیا ہے؟** حضرت ابوہریرہؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ کیا تم جانتے ہو کہ غیبت کیا (ہوتی) ہے حضرت ابوہریرہؓ نے جواب دیا۔ اللہ اور اس کا رسول ہی خوب واقف ہیں۔ فرمایا۔ (اگر) تم اپنے بھائی کا (غائبانہ) اس طرح ذکر کرو جو اس کو ناگوار ہو (تو غیبت ہے) عرض کیا گیا (حضور صلی اللہ علیہ وسلم) دیکھئے اگر میرے بھائی میں وہ (عیب یا) چیز ہی ہو جو میں کہہ رہا ہوں تو کیا یہ بھی غیبت ہوگی۔ فرمایا۔ اگر اس کے اندر وہ (بری) باتیں ہیں جو تم کہہ رہے ہو تو غیبت ہوئی اور اگر جو باتیں تم کہہ رہے ہو وہ اس میں نہیں ہیں تو تم نے اس پر تہمت لگائی (یہ بہتان ہے) (متفق علیہ)۔

حضرت عمرو بن شعیب کے دادا کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے لوگوں نے ایک شخص کا ذکر کیا اور کہا جب تک اس کو کھلایا نہ جائے وہ کھاتا نہیں اور جب تک اس کو سوار نہ کیا جائے وہ سوار نہیں ہوتا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم نے اس کی غیبت کی۔ صحابہ نے عرض کیا ہم نے اسی بات کی جو اس میں ہے۔ فرمایا غیبت ہونے کے لئے یہی بات کافی ہے کہ تم ان باتوں کا ذکر کرو جو اس کے اندر ہیں وہ برا مانے گا۔ (تفسیر مظہری)

أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ
بھلا خوش لگتا ہے تم میں کسی کو کہ کھائے گوشت
أَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ
اپنے بھائی کا جو مردہ ہو سو گھن آتی ہے تم کو اس سے؟

**غیبت کی گندگی:** یعنی مسلمان بھائی کی غیبت کرنا ایسا گندہ اور گھناؤنا کام ہے جیسے کوئی اپنے مرے ہوئے بھائی کا گوشت نوچ نوچ کر کھانے۔ کیا اس کو کوئی

[illegible] کو غیبت اس کی زندگی میں [illegible] ہے۔ (مظہری)

**غیبت کی تمثیل:** اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۔ غیبت کی قباحت [illegible] غیبت کرنے والا [illegible] (تفسیر مظہری)

**غیبت کی سزا:** حدیث میں حضرت انس بن مالک کی روایت ہے کہ شب معراج کی حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مجھے [illegible] تو میرا گزر ایک ایسی قوم پر ہوا جن کے ناخن تانبے کے تھے اور وہ اپنے چہروں اور سینوں کا گوشت نوچ رہے تھے میں نے جبرئیل سے پوچھا کون لوگ ہیں؟ آپ نے فرمایا کہ یہ وہ لوگ ہیں جو لوگوں کی غیبت کرتے اور ان کی آبروریزی کرتے تھے۔ (مظہری) اور حضرت ابوسعید اور جابر سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا الغیبۃ اشد من الزنا یعنی غیبت زنا سے بھی زیادہ سخت ہے۔ صحابہ کرام نے عرض کیا کہ یہ کیسے؟ تو آپ نے فرمایا کہ ایک شخص زنا کرتا ہے پھر توبہ کر لیتا ہے تو اس کا گناہ معاف ہو جاتا ہے مگر غیبت کرنے والے کا گناہ اس وقت تک معاف نہیں ہوتا جب تک وہ شخص معاف نہ کرے جس کی غیبت کی گئی ہے۔ (رواہ ترمذی وابوداؤد، مظہری)

**حضرت میمون کا واقعہ:** میمون کہتے ہیں (ایک روز) میں نے خواب میں دیکھا کہ ایک حبشی کی مردار لاش ہے اور کوئی کہنے والا مجھ سے کہہ رہا ہے کہ اس کو کھاؤ میں نے کہا اے بندۂ خدا میں اس کو کیوں کھاؤں؟ تو اس نے کہا اس لئے کہ تم نے فلاں شخص کے حبشی غلام کی غیبت کی ہے۔ میں نے کہا خدا کی قسم میں نے تو اس کے متعلق کوئی اچھی یا بری بات کی ہی نہیں۔ تو اس نے کہا ہاں لیکن تم نے اس کی غیبت سنی تھی اور اس پر راضی ہوئے تھے۔ (اس کے بعد) میمون کسی کی غیبت نہ خود کرتے تھے نہ کسی کو اپنے سامنے کرنے دیتے تھے۔ (مظہری)

**غیبت کی تلافی:** اس حدیث سے ثابت ہوا کہ غیبت ایک ایسا گناہ ہے جس میں حق اللہ کی بھی خلاف ورزی ہے اور حق العبد کی بھی، اس لئے جس کی غیبت کی ہے اس سے معافی لینا ضروری ہے۔ بعض علماء نے فرمایا کہ غیبت کی خبر جب تک اس شخص کو نہ پہنچی ہو اس وقت تک وہ حق العبد نہیں بنتا اس لئے اس سے معافی ضروری نہیں (نقلہ فی الروح عن الحسن والحناطی وابن الصباغ والنووی وابن الصلاح والزرکشی وابن عبدالبر عن ابن المبارک) مگر بیان القرآن میں منقول ہے کہ اس صورت میں بھی اس شخص سے معافی ضروری نہیں مگر جس شخص کے سامنے یہ غیبت کی تھی اس کے سامنے اپنی تکذیب کرنا یا اپنے گناہ کا اقرار کرنا ضروری ہے اور اگر وہ شخص مر گیا یا لاپتہ ہے تو اس کا کفارہ حضرت انس کی حدیث میں یہ ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ان من کفارۃ الغیبۃ ان تستغفر لمن اغتبتہ تقول اللھم اغفر لنا ولہ (رواہ البیہقی) یعنی غیبت کا کفارہ یہ ہے کہ جس کی غیبت کی ہے اس کے لئے اللہ تعالیٰ سے دعاء مغفرت کرے اور یوں کہے کہ یا اللہ ہمارے اور اس کے گناہوں کو معاف فرما۔

**مسئلہ:** بچے اور مجنون اور کافر ذمی کی غیبت بھی حرام ہے کیونکہ ان کی ایذاء بھی حرام ہے اور حربی کافر اگرچہ ان کی ایذا حرام نہیں مگر اپنا وقت ضائع کرنے کے سبب سے ان کی غیبت بھی مکروہ ہے۔

**مسئلہ:** غیبت جیسے قول اور کلام سے ہوتی ہے ایسے ہی فعل یا اشارہ سے بھی ہوتی ہے جیسے کسی لنگڑے کی چال بنا کر چلنا جس سے اس کی تحقیر ہو۔ (روح المعانی)

**بعض مخصوص صورتیں:** بعض روایات سے ثابت ہے کہ آیت میں جو غیبت کی ممانعت مذکور ہے اس سے بعض مخصوص صورتیں مستثنیٰ ہیں بعض صورتوں میں اگر کسی کی برائی ذکر کرنے کی ضرورت پیش آ جائے تو وہ غیبت میں داخل نہیں بشرطیکہ وہ ضرورت واقعی معتبر ہو جیسے کسی ظالم کی شکایت کسی ایسے شخص کے سامنے کرنا جو ظلم کو دفع کر سکے یا کسی کی اولاد اور بیوی کی شکایت اس کے باپ اور شوہر سے کرنا جو ان کی اصلاح کر سکے یا کسی واقعہ کے متعلق فتویٰ حاصل کرنے کے لئے صورت واقعہ کا اظہار یا مسلمانوں کو کسی شخص کے دنیوی یا دینی شر سے بچانے کے لئے اس کا حال بتانا یا کسی معاملے کے متعلق مشورہ لینے کے لئے اس کا حال ذکر کرنا یا جو شخص سب کے سامنے علانیہ گناہ کرتا ہے اور اپنے فسق کو خود ظاہر کرتا ہے اس کے اعمال بد کا ذکر بھی غیبت میں داخل نہیں مگر بلا ضرورت اپنے اوقات ضائع کرنے کی بنا پر مکروہ ہے (یہ سب صورتیں بیان القرآن میں بیان کی گئی ہیں) ان سب میں قدر مشترک یہ ہے کہ کسی کی ذلت اور عیب ذکر کرنے سے مقصود اس کی تحقیر نہ ہو بلکہ کسی ضرورت مجبوری سے ذکر کیا ہو۔ (معارف مفتی اعظم)

**وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾**

اور ڈرتے رہو اللہ سے بیشک اللہ معاف کرنے والا ہے مہربان ۔

**تقویٰ فرمانبرداری کی بنیاد ہے:** ان تمام باتوں پر عمل جب ہی ہو سکتا ہے جب کسی کے دل میں خدا کا ڈر ہو [illegible] چاہئے کہ انسان [illegible] تقویٰ رکھے اور خداوند قہار کے غضب سے ڈرتا رہے [illegible] اور اگر پہلے کچھ غلطیاں سرزد ہو چکی ہیں تو اللہ کے سامنے صدق دل سے توبہ کریں [illegible] مہربانی سے معاف فرما دے گا۔ (تفسیر عثمانی)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ

[illegible]

ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ

[illegible]

قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ۚ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ

[illegible]

عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ

[illegible]

**بہتری اور برتری کا معیار:** [illegible]

[illegible]

**شان نزول:** [illegible]

[illegible]

**نسب پر اترانے والوں کا انجام**

[illegible]

**آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا خطاب:** [illegible]

آرزو مت کرو پیچھے ماندہ لوگ کہاں پہنچ سکتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

## اسلام چھوت چھات سے بیزار ہے:

مسلمان جانتے ہیں کہ اسلام چھوت چھات سے بیزار ہے وہ تمام انسانوں کو ایک ماں باپ کی اولاد قرار دیتا ہے۔ فرق ہے تو صرف اسلام اور کفر کا۔ پھر جس طرح مسلمانوں میں ذات پات کی تاہم اونچ نیچ نہیں ہے تو اسی طرح سب سے زیادہ باعزت وہ ہے جو تقویٰ میں سب سے اعلیٰ ہو جیسا کہ ہے۔ ان اکرمکم عند اللہ اتقاکم

اسی طرح غیر مسلموں میں بھی شودر اور برہمن وغیرہ کا کوئی فرق نہیں ہے اگر ایک برہمن ہمارے پاس بیٹھ سکتا ہے۔ ہمارے برتنوں سے پانی لے کر پی سکتا ہے ہمارے کنویں سے پانی بھر سکتا ہے تو انسانیت کے یہ سب حقوق ایک اچھوت کو بھی حاصل ہیں۔ مگر افسوس صد ہا سال معاشرت میں برہمنوں اور اونچی ذات کے ہندوؤں کے ساتھ رہ کر ان سے ہمیں ترکہ میں طور پر چھوت چھات کا مادہ ملا ہے۔ (از اداریہ حسنات)

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿۱۳﴾

اللہ سب کچھ جانتا ہے خبردار ہے

اللہ دلوں کے حال سے باخبر ہے ☆ یعنی تقویٰ اور ادب اصل میں دل سے ہے اللہ ہی کو خبر ہے کہ جو شخص ظاہر میں متقی اور مؤدب نظر آتا ہے وہ حقیقت میں کیسا ہے اور آخر کیسا رہے گا "انما العبرة لخواتیم" (تفسیر عثمانی)

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا ۖ قُل لَّمْ

کہتے ہیں گنوار کہ ہم ایمان لائے تو کہہ تم

تُؤْمِنُوا وَلَٰكِن قُولُوا أَسْلَمْنَا

ایمان نہیں لائے پر تم کہو ہم مسلمان ہوئے

وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ

اور ابھی نہیں گھسا ایمان تمہارے دلوں میں

## ایمان کی کمزوری کی علامت

یہاں یہ بتلاتے ہیں کہ ایمان و یقین جب پوری طرح دل میں راسخ ہو جائے اور جڑ پکڑ لے اس وقت خیر اور عیب جوئی وغیرہ کی خصلتیں آدمی سے دور ہو جاتی ہیں جو شخص دوسروں کے عیب ڈھونڈتے اور آزار پہنچانے میں مبتلا ہو سمجھو ابھی تک ایمان ان کے دل میں پوری طرح پیوست نہیں ہوا۔

ایک حدیث میں ہے "یا معشر من آمن بلسانه ولم یدخل الایمان الی قلبه لا تغتابوا المسلمین ولا تتبعوا عوراتهم" الخ (ابن کثیر ص ۲۲۸/۴) حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "ایک کہتا ہے کہ ہم مسلمان ہیں یعنی دین مسلمانی ہم نے قبول کیا اس کا مضائقہ نہیں اور ایک کہتا ہے کہ ہم کو پورا یقین ہے یہ یقین پورا ہے تو کہے گا وہ کہاں ہے جس کو وہ لگی ہو اپنے حاصل ہو وہ پیچھے ملنا ہے ان کے منہ سے ادعا ہے" (تفسیر) اس آیت سے ایمان اور اسلام کا فرق ظاہر ہوتا ہے جیسا کہ یہی بات حدیث جبریل وغیرہ سے ثابت ہوئی۔ ہم نے شرح صحیح مسلم میں اس موضوع پر کامل بحث کی ہے یہاں تفصیل کا موقع نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

بغوی نے لکھا ہے کہ بنی اسد کے چند آدمی قحط کے زمانہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور بظاہر مسلمان ہو گئے لیکن دل میں وہ مومن نہیں تھے۔ ان لوگوں نے مدینہ کے راستے (قطار کے قطار) لید گوبر سے بھر دیئے اور مدینہ میں چیزوں کے نرخ گراں کر دیئے صبح شام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آتے اور کہتے تھے۔ دوسرے عرب آپ کے پاس اونٹوں پر سوار ہو کر تنہا آئے ہیں اور ہم سارا سامان اور اہل و عیال کو لے کر آئے ہیں۔ فلاں فلاں قبیلہ نے آپ سے جنگ کی (پھر مسلمان ہوئے) لیکن ہم آپ سے کبھی نہیں لڑے اس کلام سے وہ رسول اللہ پر (اپنے اسلام کا) احسان رکھنا چاہتے تھے اور مال صدقات کے طلبگار تھے۔ (تفسیر مظہری)

## ایمان کیا ہے؟

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا ایمان یہ ہے کہ تم اللہ اور اس کے فرشتوں اس کی کتابوں اور اس کے پیغمبروں اور روز قیامت کو مانو اور اچھی بری تقدیر کی تصدیق کرو (یعنی اس بات کی دل سے تصدیق کرو کہ دنیا میں ہر خیر و شر اللہ کے مقررہ اندازے کے مطابق ہوتی ہے بری اچھی ہر ایک چیز کا اللہ نے پہلے ہی اندازہ مقرر کر دیا ہے) سوال جبرئیل کے جواب میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے یہی فرمایا تھا۔ کذا فی الصحیحین حدیث عمر بن الخطاب مروی ہے۔ (تفسیر مظہری)

وَإِن تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا

اور اگر تم حکم پر چلو گے اللہ کے اور اس کے رسول کے

يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ

کاٹ نہ لے گا تمہارے کاموں میں سے کچھ

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

اللہ بخشنے والا ہے مہربان ہے ☆

**مہلت عمل** ☆ یعنی اب بھی اگر فرمانبرداری کا راستہ اختیار کرو گے تو پچھلی گزری ہوئی باتوں کی وجہ سے تمہارے کسی عمل کے ثواب میں کمی نہ کرے گا۔ (تفسیر عثمانی)

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

ایمان والے وہ لوگ ہیں جو ایمان لائے اللہ پر

وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجَاهَدُوْا

اور اس کے رسول پر پھر شبہ نہ لائے اور لڑے

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ

اللہ کی راہ میں اپنے مال اور اپنی جان سے

اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ

وہ لوگ جو ہیں وہی ہیں سچے ☆

**سچے مومن کی شان** ☆ یعنی سچے مومن کی شان یہ ہوتی ہے کہ اللہ و رسول پر پختہ اعتقاد رکھتا ہو اور ان کی راہ میں ہر طرح جان و مال سے حاضر رہے۔ (تفسیر حقانی)

**مومن کی تین قسمیں:** مسند احمد میں ہے نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں دنیا میں مومن کی تین قسمیں ہیں (۱) وہ جو اللہ پر اور اس کے رسول پر ایمان لایا شک و شبہ نہ کیا اور اپنی جان اور اپنے مال سے راہ خدا میں جہاد کیا (۲) وہ جن سے لوگوں نے امن پا لیا نہ یہ کسی کا مال ماریں نہ کسی کی جان لیں (۳) وہ جو طمع کی طرف جب جھانکتے ہیں اللہ عزوجل کی یاد کرتے ہیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الخ یعنی خلوص قلب سے ایمان لائے اور احکام کی تعمیل کی۔

ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے لائے ہوئے دین میں ان کو کسی قسم کا شک نہیں ہوا۔ لفظ ثُمَّ دلالت کر رہا ہے کہ شروع ایمان کے وقت جس طرح شک نہ کرنا لازم ہے اسی طرح آئندہ پوری زندگی مرتے دم تک کسی شک میں نہ پڑنا ضروری ہے آیت لَمْ يَرْتَابُوْا سے یہی مراد ہے۔

**ترکیب نحوی:** فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ یعنی اللہ کی اطاعت میں۔ جَاهَدُوْا کا مفعول محذوف ہے۔ یعنی کافر دشمن سے یا شیطان سے یا اپنا نفس امارہ خواہشات نفس یعنی خواہشات سے جہاد کیا۔

**مجاہد کی شان:** جو شخص صداقت اسلام کے لئے اور حق کی حمایت کرنے کے لئے اور اللہ کا بول بالا کرنے اور دین کو پھیلانے کے لئے اپنی جان و مال کی قربانی دیتا ہے وہ سب سے اول اپنے نفس کی قربانی کرے گا اور تمام احکام شریعت کا پابند ہوگا۔ (تفسیر مظہری)

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

تو کہہ کیا تم جتلاتے ہو اللہ کو اپنی دینداری اور اللہ

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

کو تو خبر ہے جو کچھ ہے آسمانوں میں اور زمین میں

وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

اور اللہ ہر چیز کو جانتا ہے ☆

**اللہ کو دھوکہ نہیں دیا جا سکتا**

یعنی کیا اللہ کو اپنا دین اور ایمان جتلاتے ہو وہ تو کہے سے کیا ہوتا ہے جس کا جو حال ہے سب اللہ کو معلوم ہے آپ خبردار ہے۔ (تفسیر عثمانی)

طبرانی نے اوسط میں حضرت عبداللہ بن ابی اوفیٰ کی روایت سے اور بزار نے بطریق سعید بن جبیر حضرت ابن عباسؓ کی روایت سے اور ابن ابی حاتم نے حسن کے حوالہ سے بیان کیا ہے کہ کچھ بدویوں نے خدمت گرامی میں حاضر ہو کر عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہم (خود) مسلمان ہو گئے اور آپ سے (کبھی) نہیں لڑے لیکن فلاں قبیلہ والوں نے آپ سے جنگ کی (اور پھر مسلمان ہوئے) بقول حسن یہ بات فتح مکہ ہونے کے بعد کی ہے۔ (تفسیر مظہری)

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ

تجھ پر احسان رکھتے ہیں کہ مسلمان ہوئے ☆

**بعض نادانوں کی نافرمانی**

یعنی گنوار آ کر جتلاتے تھے کہ دیکھئے ہم بدون لڑے بھڑے مسلمان ہو گئے گویا احسان جتلاتے تھے اس کا جواب آگے دیتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**اسلام اور ایمان ایک ہیں یا کچھ فرق ہے؟**

ایمان اصطلاح شرع میں تصدیق قلبی کا نام ہے یعنی اپنے دل سے اللہ

توحید کی تصدیق اور رسول کی رسالت کو سچا ماننا اور اطاعت ... سب سے اول ظاہر میں اسلام اور اللہ اور رسول کی اطاعت کرنے کا نام شریعت میں تصدیق قلبی اس وقت تک قابل اعتبار نہیں جب تک اس کا اثر جوارح کے اعمال ظاہرہ تک نہ پہنچے ... سے اسلام کا اقرار کرے۔ اسی طرح اسلام کے ظاہری اعمال ... شریعت میں اس وقت تک معتبر نہیں جب تک ... تصدیق ... اسلام ایمان ... کا ایمان باطن اور قلب سے شروع ہو کر ظاہر اعمال تک پہنچتا ہے اور اسلام افعال ظاہرہ سے شروع ہو کر باطن کی تصدیق تک پہنچتا ہے ... کے اعتبار سے ان دونوں میں ... ہے کہ ایمان اسلام کے بغیر معتبر نہیں اور اسلام ایمان کے بغیر شرعاً معتبر نہیں ... مسلم نہ ہو ... ایمان اسلام نہیں ہے۔ لغوی معنی کے اعتبار سے ہو سکتا ہے کہ ایک شخص مسلم ہو مومن نہ ہو جیسے تمام منافقین کا یہی حال تھا کہ ظاہری اطاعت اسلام کی بنا پر مسلم کہلاتے تھے مگر دل میں ایمان نہ ہونے کے سبب مومن نہ تھے (معارف القرآن ...)

| |
|---|
| قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ |
| تو کہہ مجھ پر احسان نہ رکھو اپنے اسلام لانے کا |
| بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ |
| بلکہ اللہ تم پر احسان رکھتا ہے کہ اس نے تم کو |
| لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ |
| راہ دی ایمان کی اگر تم سچے ہو |

### نادانوں کو جواب

یعنی اگر واقعی تم دعوائے اسلام و ایمان میں سچے ہو تو یہ تمہارا احسان نہیں اللہ کا احسان ہے کہ اس نے ایمان کی طرف آنے کا راستہ دیا اور دولت اسلام سے سرفراز کیا۔ اگر سچی بات کہو تو واقعہ اس طرح ہے حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ ... اپنے ہاتھ سے ... تعریف ... جس نے ... توفیق ... ہدایت اور ... تو احسان نہ جتلاؤ بلکہ اللہ کے احسان و انعام کا شکر ادا کرو جس نے اس کی توفیق ارزانی فرمائی۔ (تفسیر عثمانی)

منت منہ کہ خدمت سلطان ہمی کنی — منت شناس ازو کہ بخدمت بداشتت

(معارف کاندھلوی)

| |
|---|
| اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ |
| اللہ جانتا ہے چھپے بھید آسمانوں کے |
| وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا |
| اور زمین کے اور اللہ دیکھتا ہے جو تم |
| تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ |
| کرتے ہو |

### خدا کے سامنے باتیں نہ بناؤ

یعنی دلوں کے بھید اور ظاہر و باطن سب خدا پر روشن ہے اس کے سامنے باتیں نہ بناؤ۔ (تفسیر عثمانی)

## سبب نزول

ابن سعد نے بروایت محمد بن کعب قرظی اور سعید بن منصور نے بروایت سعید بن جبیر بیان کیا ہے کہ ... کچھ آدمی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے ... حضور صلی اللہ علیہ وسلم اس وقت صحابہ کے ساتھ تشریف فرما تھے ان لوگوں نے آ کر سلام کیا پھر ان میں سے ایک شخص نے کہا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہم شہادت دیتے ہیں کہ اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں وہ وحدہ لا شریک لہ ہے اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم اس کے بندے اور رسول ہیں یا رسول اللہ ہم خود حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے ہیں آپ نے اپنا کوئی نمائندہ ہمارے پاس نہیں بھیجا تھا ہم اپنے ان لوگوں کے لئے ... اس پر اللہ نے آیت مذکورہ نازل فرمائی۔ (تفسیر مظہری)

الحمد للہ سورۃ الحجرات کی تفسیر ختم ہوئی

جو شخص خوب سمجھ سوچ کر تلاوت کرے اس کی تعبیر یہ ہے کہ اس کا
علم اچھا ہوگا اور دین کے سمجھنے والے اس کے محتاج رہیں گے اور اس
کی عمر کا آخری حصہ اول سے زیادہ بہتر اور بابرکت ہوگا۔

## سورۃ قٓ کی خصوصیات:

سورۃ قٓ میں بیشتر مضامین آخرت، قیامت، مردوں کے زندہ ہونے اور حساب و کتاب سے متعلق ہیں اور یہی مناسبت ہے اس کو اس سے پہلی سورۃ آیات سے کہ اس کے آخر میں بھی مضامین آخرت تھے۔

سورۃ قٓ کی خاص اہمیت اس حدیث سے معلوم ہوتی ہے کہ ام ہشام بنت حارثہ بن نعمان کہتی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بہت قریب ہمارا مکان تھا۔ ہم سب کا تنور ایک تھا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا تنور (جس میں روٹی پکتی تھی) ایک ہی تھا مجھے سورۃ قٓ پوری اسی طرح یاد ہوئی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یہ سورت ہر جمعہ کو خطبہ میں تلاوت فرماتے تھے (رواہ مسلم و قرطبی)۔

اور حضرت عمر بن خطاب نے ابو واقد لیثی سے دریافت کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عیدین کی نمازوں میں کونسی سورت پڑھا کرتے تھے؟ تو انہوں نے فرمایا قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ اور اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ اور حضرت جابر سے منقول ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم صبح کی نماز میں بکثرت سورۃ قٓ تلاوت فرماتے تھے (یہ سورت خاصی بڑی ہے مگر اس کے باوجود نماز ہلکی رہتی تھی) (قرطبی)۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اپنی تلاوت کا خاص اثر تھا کہ بڑی سے بڑی سورت اور طویل سے طویل نماز بھی پڑھتے تو سب پر ہلکی ہی محسوس ہوتی تھی۔ (مظہری)

حضرت اوس فرماتے ہیں میں نے صحابہ سے پوچھا کہ تم قرآن کے حصے کس طرح کرتے تھے؟ تو انہوں نے کہا پہلی تین سورتوں کی ایک منزل اور پھر پانچ سورتوں کی ایک منزل پھر سات سورتوں کی ایک منزل پھر نو سورتوں کی ایک منزل اور مفصل کی سورتوں کی ایک منزل۔ یہ حدیث ابن ماجہ میں بھی ہے۔ پس پہلی چھ منزلیں کل اڑتالیس سورتیں ہوئیں۔ پھر اس کے بعد مفصل کی تمام سورتیں ساتویں منزل تو ماننا ہوگا یہ سورت یعنی سورۃ قاف پہلی ہے۔ جو مفصل کی ہے۔ پہلی منزل کی تین سورتیں سورۃ بقرہ، سورۃ آل عمران، سورۃ نساء ہوئیں، دوسری منزل کی پانچ سورتیں مائدہ، انعام، اعراف، انفال اور براءۃ ہوئیں۔ تیسری منزل کی سات سورتیں یونس، ہود، یوسف، رعد، ابراہیم، حجر اور نحل ہوئیں۔ چوتھی منزل کی نو سورتیں بنی اسرائیل، کہف، مریم، طٰہٰ، انبیاء، حج، مومنون، نور، فرقان ہوئیں۔ پانچویں منزل کی گیارہ سورتیں شعراء، نمل، قصص، عنکبوت، روم، لقمان، الم سجدہ، احزاب، سبا، فاطر اور یٰسین

بعد کی — پچھلی منزل کی تیرہ سورتیں صافات، ص، زمر، غافر، حم سجدہ، شوریٰ، زخرف، دخان، جاثیہ، احقاف، قتال، فتح، حجرات کے بعد کی سورت
سے شروع ہوتی ہے اور مفصل شروع ہونے کی یہ دلیل ہے۔ فالحمد للہ۔

مسلم شریف میں ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضرت ابو واقد لیثی رضی اللہ عنہ سے پوچھا کہ عید کی نماز میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کیا پڑھتے تھے؟ آپ نے فرمایا سورۃ قٓ اور سورۃ اِقْتَرَبَتْ ۔ مسلم میں ہے حضرت ام ہشام بنت حارثہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہیں کہ ہمارا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا دو سال تک یا ایک سال کچھ ماہ تک ایک ہی تنور رہا ہے میں نے سورۃ قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ رسول اللہ ہی کی زبانی سن سن کر یاد کر لی تھی کہ ہر جمعہ کے دن جب آپ لوگوں کو خطبہ سنانے کے لیے کھڑے ہوتے تو اس سورت کی تلاوت کرتے۔ الغرض بڑے بڑے مجمعوں میں جیسے عید ہے، جمعہ ہے، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اس سورت کی تلاوت کرتے کیونکہ اس میں ابتداء خلق کا مرنے کے بعد جینے کا خدا کے سامنے کھڑے ہونے کا حساب و کتاب کا، جنت و دوزخ کا، ثواب و عذاب کا اور رغبت و ڈراوے کا ذکر ہے۔ واللہ اعلم۔ (تفسیر ابن کثیر)

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ وَفِيْهَا ثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

سورۃ قٓ مکہ میں نازل ہوئی اور اس میں پینتالیس آیتیں اور تین رکوع ہیں

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ بَلْ عَجِبُوْٓا

قسم ہے اس قرآن بڑی شان والے کی بلکہ ان کو تعجب ہوا

اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ

کہ آیا ان کے پاس ڈر سنانے والا انہی میں کا تو کہنے

الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۚ

لگے منکر یہ تعجب کی چیز ہے

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌ

کیا جب ہم مر گئے اور ہو گئے مٹی یہ پھر آنا

بَعِيْدٌ ۝

بہت دور ہے ۝

**قرآن کی عظمت واعجاز:** یعنی قرآن کی بزرگی اور عظمت شان کی کیا حد ہے، سب کتابوں کو منسوخ کر دیا اور اپنی اعجازی قوت اور لا محدود اسرار ومعارف سے بتا دیا کہ حضرت محمد رسول اللہ ﷺ کی صداقت پر قرآن بذات خود شاہد ہے کہ اس کے ہوتے ہوئے کسی اور دلیل کی ضرورت نہیں رہتی، لیکن منکرین پھر بھی اسکو قبول نہیں کرتے اسلئے نہیں کہ ان کے پاس اسکے صدق کی کوئی حجت وبرہان ہے بلکہ محض اپنے جہل وحماقت سے، بلکہ اس پر تعجب کرتے ہیں کہ انہی کے خاندان اور جنس کا ایک آدمی ان کی طرف رسول ہو کر آیا اور ڈرانے لگا کہ سب کو جینا ہے، مرنے کے بعد پھر زندگی کی طرف واپس لائے جائیں گے، یہ ایسی بات بھی ان کی عقل سے بعید ہے جسے وہ امکان وقوع سے بالکل بعید سمجھتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**ق کیا ہے:** بعض نے کہا ق سے اشارہ ہے بعض صفات اللہ کی طرف، بعض نے کہا قاف پہاڑ کی طرف۔ حق بات یہ ہے کہ (دوسرے حروف مقطعات کی طرح) اس کی اصلی مراد سوا اللہ اور اس کے رسول کے دوسرا کوئی نہیں جانتا۔ بعض کا قول ہے کہ یہ ایک پہاڑ ہے جو زمین کو گھیرے ہوئے ہے اور آسمان بھی اسی پر ہے۔ قسم ہے ق کی اور قرآن کی جو بڑی عظمت والا ہے۔ کیا ان لوگوں کو اس بات پر تعجب ہوا کہ انہیں میں سے ایک ڈرانے والا ان کے پاس آیا، یہ تعجب کی بات نہیں بلکہ تعجب تو یہ ہونا چاہیے کہ انہیں میں کا ایک شخص جس کو وہ سچا جانتے تھے اور اس کی سچائی کا اقرار کرتے تھے ان کی خیر خواہی کرتا ہے اس کا انکار کیا جائے۔ ایسے ہی خواہ قوم کے شخص کی بات کو تو ہمیں یہ اصل امر سے قوم کو ڈرانا ہی چاہئے۔ (تفسیر قرطبی)

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ

ہم کو معلوم ہے جتنا گھٹاتی ہے زمین

مِنْهُمْ

اُن میں سے

**موت فنا نہیں**

یعنی مر کر مٹی نہیں ہو جاتی بلکہ روح تو باقی رہتی ہے اور بدن کے اجزاء تحلیل ہو کر جہاں کہیں منتشر ہو گئے ہیں وہ سب اللہ کے علم میں ہیں اس کو قدرت ہے کہ ہر جگہ سے اجزائے منتشرہ جمع کر کے ڈھانچہ کھڑا کر دے۔ اور دوبارہ اس میں جان ڈال دے۔ (تفسیر عثمانی)

وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ۝

اور ہمارے پاس کتاب ہے جس میں سب کچھ محفوظ ہے

**اللہ کا قدیم علم:** یعنی یہی نہیں کہ آج ہی معلوم ہے بلکہ ہمارا علم قدیم ہے حتی کہ ان میں کل ذرات کی سب اشیاء کے سب حالات ایک کتاب میں (لوح محفوظ) کہلاتی ہے لکھ دیے تھے اور اب تک ہمارے پاس وہ کتاب موجود چلی آتی ہے پس اگر علم قدیم کسی کی سمجھ میں نہ آئے تو یہی سمجھ لے کہ وہ دفتر جس میں سب کچھ ہمارے حق تعالیٰ کے سامنے حاضر ہے اس کو پہلے جس کی تاکید مجھ کو کہ نہ بدلیں کسی کے علم میں ہوا اور قلم بند بھی کر لی جائے وہ لوگوں کے نزدیک بہت زیادہ ہو کر کھل جاتی ہے اسی طرح یہ مخاطبین کے محسوسات کے اعتبار سے متنبہ کر دیا کہ ہر چیز خدا کے علم میں ہے اور اس کے ہاں نہیں ہوتی ہے جس میں ذرا کمی بیشی نہیں ہو سکتی۔ (تفسیر عثمانی)

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ

کوئی نہیں پر جھٹلاتے ہیں سچے دین کو جب اُن تک پہنچا

فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ۝

سو وہ پڑ رہے ہیں الجھی ہوئی بات میں

**یعنی تکذیب:** یعنی صرف تعجب نہیں بلکہ کھلی ہوئی تکذیب ہے، حضرت کی نبوت قرآن اور بعث بعد الموت ہر چیز کو جھٹلاتے ہیں اور عجب الجھی ہوئی باتیں کرتے ہیں، بے شک جو شخص سچی باتوں کو جھٹلاتا ہے اسی طرح شک و اضطراب اور تردد وتحیر کی الجھنوں میں پڑ جایا کرتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**مریج:** امر مختلط، مضطرب، بے ٹھکانے۔ ان کے قول میں اضطراب صرف یہ تکذیب نبوت کی وجہ سے ہی تھی۔ قتادہ اور حسن نے کہا جو حق کو چھوڑ دیتا ہے اس کا اپنے معاملہ میں اور دین میں اضطراب پیدا ہو جاتا ہے زجاج نے کہا ایک قول یہ ہے کہ قرآن یعنی رسول اللہ ﷺ کو کبھی شاعر کہتے ہیں کبھی جادوگر کبھی دوسروں کا سکھایا پڑھایا ہوا کبھی دیوانہ کبھی دروغ تراشی کرنے والا اور یہ سارے اقوال باہم مختلف اور متضاد ہیں۔ (تفسیر مظہری)

**کافروں کا بعث بعد الموت کو محال سمجھنے کی وجہ**

پروردگار عالم ان کے اس محال سمجھنے کی اصل وجہ بیان فرما رہا ہے کہ اصل میں یہ حق کو جھٹلانے والے لوگ ہیں اور جو لوگ اپنے پاس حق کے آ جانے کے بعد اس کا انکار کر دیں ان سے اچھی سمجھ بوجھ چھن جاتی ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ

کیا انہوں نے نہ دیکھا آسمان کو اپنے اوپر

كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا

[illegible]

مِن فُرُوجٍ

[illegible]

[illegible]

## کیا آسمان نظر آتا ہے؟

[illegible]

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا

[illegible]

رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ

[illegible]

زَوْجٍ بَهِيجٍ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ

[illegible]

لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا

[illegible]

فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ

[illegible]

[illegible]

وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ

[illegible]

[illegible]

## باسقات کا معنی

[illegible]

## کھجور کی فضیلت

[illegible]

تھا اس سے اس (درخت) کو بویا گیا، جس درخت کے نیچے مرکب بیعت رضوان کی تھی سے (تشبیہ دی) پیدائش ہوئی جس سے زیادہ خوبصورت اللہ کے نزدیک اور کوئی درخت نہیں ہے۔ پھر اس کی شاخیں نکلیں اور وہ پھیل گیا۔ اس کو ابن ابی حاتم اور بیہقی نے ابن عباس رضی اللہ عنہما سے نقل کیا ہے (تفسیر مظہری)

رِّزۡقًا لِّلۡعِبَادِ ۙ وَ اَحۡيَيۡنَا بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا ؕ

روزی دینے کو بندوں کے اور زندہ کیا ہم نے اس سے ایک مردہ دیس کو

كَذٰلِكَ الۡخُرُوۡجُ ﴿۱۱﴾

اسی طرح ہو گا نکل کھڑے ہونا

## سبزہ کی طرح انسانی جسم اگے گا

یعنی بارش برسا کر مردہ زمین کو زندہ کرنے کی طرح قیامت کے دن مردے زندہ کر دیئے جائیں گے۔ (تفسیر حقانی)

صحیحین میں حضرت ابوہریرہ کی روایت سے آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: دونوں صور پھونکنے کے درمیان فاصلہ چالیس کا ہو گا۔ حاضرین نے پوچھا: ابوہریرہ! کیا چالیس دن (کا فاصلہ ہو گا)؟ حضرت ابوہریرہ نے فرمایا: مجھے اس کا علم نہیں۔ لوگوں نے کہا: کیا چالیس مہینوں کی (مدت ہو گی)؟ حضرت ابوہریرہ نے فرمایا: میں یہ بھی نہیں کہہ سکتا۔ لوگوں نے کہا: تو کیا چالیس سال کی (مدت ہو گی)؟ حضرت ابوہریرہ نے فرمایا: مجھے یہ بھی نہیں معلوم۔ لوگوں نے کہا: تو کیا چالیس سال کی مدت آپ نہیں جانتے ہیں؟ فرمایا: مجھے کہنے سے بھی انکار ہے۔ (رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا) پھر آسمان سے پانی نازل ہو گا جس سے لوگ ایسے اگیں گے جیسے سبزہ اگتا ہے۔ آدمی (کے بدن) کا ہر حصہ سوائے ایک ہڈی کے گل سڑ جائے گا، وہ ریڑھ کی ہڈی کا سرا ہے، قیامت کے دن اسی دم کے سرے (عجب الذنب) کی ہڈی سے جوڑ کر انسانی جسم بنایا جائے گا۔ ابن ابی داؤد سے بھی اسی طرح کی حدیث بروایت حضرت ابوہریرہ آئی ہے۔ اس روایت میں یہ بھی ہے کہ دونوں مرتبہ صور پھونکنے کے درمیان چالیس سال کا فاصلہ ہو گا۔

ابن ابی حاتم نے حضرت ابن مسعود کی روایت سے بیان کیا ہے کہ عرش کے نیچے سے پانی کا ایک دریا دونوں مرتبہ صور پھونکنے کی درمیانی مدت میں بہتا رہے گا اور یہ درمیانی مدت چالیس سال کی ہو گی۔ اس پانی سے وہ تمام انسان جو پہلے اور بعد کے ہیں، جو مٹ گئے ہیں، اگیں گے (زمین سے سبزہ کی طرح) اگر تم نے کسی کو پہلے (دنیا میں) دیکھا ہو گا جب

وہ پانی برسے گا تو ان کی طرف سے نکل آئیں گے تو جس طرح پیدائش کے وقت ان کے جسم بن جائیں گے اسی طرح ان کا ہر جوڑ اور جسم زندہ ہو جائے گا۔ یہی مطلب ہے کَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ کا۔ (تفسیر مظہری)

**اسرافیل کی ندا:** اور حدیث میں ہے کہ جب قیامت قائم کرنے کے لئے اسرافیل علیہ السلام صور پھونکیں گے تو حکم الٰہی سے وہ یہ ندا کریں گے: ایتھا العظام البالیۃ والاوصال المتقطعۃ والشعور المتفرقۃ ان اللہ یأمرکن ان تجتمعن یعنی اے بوسیدہ ہڈیو اور ٹکڑے ٹکڑے ہوئے جوڑو اور منتشر بالوں تم سب کو اللہ کا حکم ہے کہ تم پھر جمع ہو جاؤ۔ تمام اعضاء جسم انسانی کے اور جس جس جگہ بھی وہ موت میں رہ گئے ہوں گے ایک جا جمع ہو جائیں گے اور اس طرح دوبارہ زندہ ہو کر میدان حشر میں جمع ہوں گے۔

**ایک آدمی کا واقعہ:** صحیح حدیث میں ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ ایک شخص نے پہلی امتوں میں سے جب مرنے لگا تو اس نے اپنے بیٹوں کو وصیت کی جب میں مر جاؤں تو میری لاش کو جلا کر راکھ کر دینا اور جب میں جل کر راکھ ہو جاؤں تو اس میں سے نصف راکھ سمندر میں بہا دینا اور نصف ہوا میں اڑا دینا۔ ایک روایت میں یہ لفظ ہے کہ جس روز تیز ہوا چل رہی ہو اس روز راکھ ہوا میں اڑا دینا اور ایک روایت میں ہے کہ خدا کی قسم اگر اللہ تعالیٰ کو مجھ پر دوبارہ اٹھانے کی قدرت ہوئی تو وہ مجھ کو ایسا عذاب دے گا کہ جہان والوں میں سے کسی کو ایسا عذاب نہ دیا ہو گا (گویا اس کے نزدیک یہ بہت مشکل امر تھا کہ جس کی راکھ بکھر جائے اس کو پھر اس حالت کے بعد پہلی صورت پر زندہ کیا جائے) اس کا مقصد خدا تعالیٰ پر جھوٹ یا کفر نہ تھا بلکہ اس کے احاطۂ فکر میں قدرت الٰہی کی یہ وسعت نہ آئی کہ کوئی مردہ اپنے جسم کے ساتھ زمین میں موجود نہ بھی ہو تو وہ کیسے اٹھایا جائے گا) حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ اس شخص کے مرنے کے بعد ایسا ہی کیا گیا۔ حق تعالیٰ نے سمندر کو حکم دیا اس میں جو اجزاء تھے وہ اس نے جمع کر لئے۔ ہوا کو حکم ہوا تو ہوا نے جو ذرے اس میں منتشر تھے ان کو جمع کر دیا اور حق تعالیٰ نے اس کو زندہ کر کے سوال فرمایا: اے میرے بندے یہ بات تو نے کس وجہ سے کی؟ عرض کرنے لگا: اے پروردگار تیرے ڈر سے۔ تو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ بارگاہ خداوندی سے اس کے اس تقویٰ اور خشیت پر مغفرت فرما دی گئی۔

**عبرت و نصیحت:** بارش برسنے سے زمین بنجر کے شاداب ہونے اور زمین کی تہہ سے ہرے بھرے پھل اور پھولوں کی پیدائش کے منظر دیکھ کر اقرار کرنا چاہئے کَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ کہ اللہ تعالیٰ مردوں کو بھی اسی طرح زمین سے باہر نکالے گا جس طرح قیامت کے روز میدان حشر میں اٹھنے کا اور جمع کرے گا۔ (معارف القرآن)

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَّاَصْحٰبُ

جھٹلا چکے ہیں ان سے پہلے نوح کی قوم اور کنویں

الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ

والے اور ثمود اور عاد اور فرعون

وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ

اور لوط کے بھائی اور بن کے رہنے والے اور

وَقَوْمُ تُبَّعٍ

تبع کی قوم

۞ان قوموں کے قصے سورۂ فجر، فرقان، مومن وغیرہ میں گزر چکے ہیں۔ (مسعودی)

## اصحاب الرس کون لوگ ہیں؟

اصحاب الرس الفاظ میں عربی زبان میں مختلف معنی کے لئے آتا ہے۔ مشہور معنی یہ ہیں کہ کچے کنویں کو رس کہا جاتا ہے۔ جو اینٹ پتھر وغیرہ سے پختہ نہ کیا گیا ہو اصحاب الرس سے مراد قوم ثمود کے باقی ماندہ لوگ ہیں جو عذاب کے بعد باقی رہے تھے۔ ضحاک وغیرہ مفسرین نے ان کا قصہ یہ لکھا ہے کہ جب حضرت صالح علیہ السلام کی قوم (ثمود) پر عذاب آیا تو ان میں سے چار ہزار آدمی جو حضرت صالح علیہ السلام پر ایمان لا چکے تھے وہ عذاب سے محفوظ رہے یہ لوگ اپنے مقام سے منتقل ہو کر حضرموت میں جا کر مقیم ہوگئے حضرت صالح علیہ السلام بھی ان کے ساتھ تھے ایک کنویں پر جا کر یہ لوگ ٹھہر گئے اور حضرت صالح علیہ السلام کی وفات ہوگئی اس لئے اس جگہ کا نام حضرموت (یعنی موت حاضر ہوگئی) ہے۔ یہ لوگ یہیں رہ پڑے پھر ان کی نسل میں بت پرستی شروع ہوگئی ان کی اصلاح کے لئے حق تعالیٰ نے ایک نبی کو بھیجا جس کو انہوں نے قتل کر ڈالا ان پر خدا تعالیٰ کا عذاب آیا، ان کا کنواں جس پر ان کی زندگی کا انحصار تھا وہ بیکار ہوگیا۔ اور ان کا محل جو بنایا تھا ویران ہوگیا، اسی کا ذکر اس آیت میں فرمایا ہے وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ یعنی بہت سے عبرت والوں کے لئے ان کا بیکار پڑا ہوا کنواں اور مضبوط بنے ہوئے محلات ویران پڑے ہوئے عبرت کے لئے کافی ہیں۔

اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ۔ یہ گھنے جنگل اور درختوں کے جھنڈ والے ایک ہی مقام پر آباد تھے حضرت شعیب علیہ السلام ان کی طرف نبی بنا کر بھیجے گئے انہوں نے نافرمانی کی پھر عذاب الٰہی سے تباہ و برباد ہوئے۔ (معارف القرآن)

حب اللہ کی اور صدق سے ہی ہوگی بنا کیونکہ پہلے نازل کیا جس کی عجیب تمازت (لوگوں نے جھٹلایا) تفسیر کے بعد فقال فرمایا کہ درحقیقت شمار کیے۔

بعض علماء نے کہا اصحاب الرس وہ اصحاب الاخدود ہیں جس کا بیان سورۂ بروج میں گزر چکا ہے کہ انہوں نے ان لوگوں کو خندقوں میں ڈالا جو ایمان لائے تھے۔

قوم ثمود: یہ قوم اپنے پیغمبروں کی تکذیب کی ان کے بھائی صالح (پیغمبر) نے ان سے کہا تم اللہ سے کیوں نہیں ڈرتے۔ میں تمہاری ہدایت کے لئے اللہ کی طرف سے بھیجا گیا ہوں۔ پھر کہا اللہ سے ڈرو ورنہ تمہیں عذاب گھیر لے گا اور تم کو تباہ کر دیا جائے گا تم جیسا آدمی ہے (پیغمبر نہیں ہے) اگر تو سچا ہے تو کوئی نشانی پیش کر حضرت صالح کی دعا سے ایک دن، وہ پہاڑ کی ایک چٹان سے ایک اونٹنی پیدا ہوئی اور اس کا بچہ بھی ساتھ پیدا ہوگیا۔

یہ اونٹنی ایک دن سارا پانی پی جاتی تھی اور دوسرے دن قوم کے جانوروں کے لئے چھوڑ دیتی تھی (اس طرح ایک دن کا پانی اونٹنی کا اور ایک دن باقی قوم کے جانوروں کا مقرر کر دیا گیا تھا) حضرت صالح نے کہا یہ اللہ کی اونٹنی ہے (یعنی ایک دن کا پانی اس اونٹنی کا ہے اور ایک دن تم لوگوں کا) اس کو تکلیف نہ دینا ورنہ تم کو عذاب پکڑ لے گا۔ مگر ان لوگوں نے اس کی کونچیں کاٹ دیں پھر پچھتائے (کہ عذاب آئے گا) حضرت صالح نے کہا تم تین دن اپنے گھروں میں مزے اڑا لو (اس کے بعد عذاب نازل ہو جائے گا) یہ سچی وعید ہے۔ آخر عذاب آ گیا صالح اور ان کے ساتھ وہ لوگ جو ایمان لائے تھے عذاب سے محفوظ رہے اور ظالموں کو ایک چیخ نے پکڑ لیا اور سب کے سب اپنے گھروں میں منہ کے بل پڑے مرے رہ گئے۔

قوم عاد: یہ قوم عاد نے پیغمبروں کو جھٹلایا ان کے بھائی ہود (پیغمبر) نے کہا کیا تم اللہ کے عذاب سے نہیں ڈرتے میں رسول ہوں تمہاری ہدایت کے لئے آیا ہوں اللہ سے ڈرو اور میرا کہا مانو۔ اللہ نے ایک تیز طوفان بھیج کر ان کو ہلاک کر دیا طوفان ان پر سات رات اور آٹھ دن مسلط رہا جس نے ان کو بیخ و بن سے اکھاڑ کر پھینک دیا گویا کہ وہ کھجور کے کھوکھلے تنے ہیں جو گرے پڑے ہوں۔

فرعون اور اس کی قوم: فرعون اور اس کی قوم نے بھی (تکذیب کی) اللہ نے حضرت موسیٰ اور ہارون کو ان کے پاس بھیجا اور فرمایا فرعون کے پاس جاؤ وہ سرکش ہو گیا ہے اس سے کہو کیا تو پاک ہونے کا خواہشمند ہے اور میں تجھے تیرے رب کی طرف رہنمائی کروں تو تجھ کو خوف پیدا ہو جائے۔ حضرت موسیٰ نے اس کو بڑا معجزہ دکھایا عصا اپنی لاٹھی کو پھینک دیا وہ فوراً سانپ بن کر دوڑنے لگی اور ایک اور نشانی ہاتھ بھی دکھایا اپنے گریبان میں اپنا ہاتھ ڈال کر باہر نکالا تو بغیر کسی بیماری کے روشن آفتاب کی

[illegible] فرعون سے موسیٰ [illegible] بنی اسرائیل [illegible] اللہ نے موسیٰ [illegible] دریا [illegible] موسیٰ [illegible] بنی اسرائیل کو فرعون کے پیچھے سے نجات دے دی۔

فرعون اور اس کے لشکر نے بنی اسرائیل کا پیچھا کیا [illegible] ایک عظیم الشان [illegible] [illegible]

**اخوان لوط** [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] قوم تبع [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] بہت سے بکرے [illegible]

[illegible]

[illegible]

کو غلاف پہنایا۔ اسعد ہی پہلا شخص تھا جس نے کعبہ کو غلاف پوش کیا۔ شعب میں چھ دن ٹھہرا، قربانی کی، جماعت کے ساتھ کعبہ کا طواف کیا اور سر منڈوایا، پھر واپس چلا گیا۔ جب یمن کے قریب پہنچا اور حدود یمن میں داخل ہونا چاہا تو قبیلہ حمیر والوں نے یمن میں داخلے سے روکا اور کہا تم نے ہمارا مذہب چھوڑ دیا اس لئے یمن کے اندر تم داخل نہیں ہو سکتے۔ اسعد نے حمیر والوں کو مذہب یہودیت کی دعوت دی اور کہا یہ دین تمہارے دین سے بہتر ہے۔ حمیر والوں نے کہا چلو آگ کے پاس یہ معاملہ لے چلو آگ سے فیصلہ کرواتے ہیں۔

یمن کے اندر ایک پہاڑ کے نشیب میں ایک آگ تھی لوگ نزاعی معاملات اس کے پاس لے جاتے تھے۔ آگ (غار کے اندر سے) نکل کر ظالم کو کھا جاتی تھی اور مظلوم کو کچھ بھی ضرر نہیں پہنچاتی تھی۔ بعض نے کہا آگ سے باہمی انصاف کی تھی۔ چنانچہ حمیر والے اپنے بتوں کو اور ان کے زینت کی جو چیزیں تھیں ان سب کو لے کر نکلے اور دونوں یہودی عالم بھی مذہبی کتابیں گلے میں ڈال کر ... یہ سب لوگ اس جگہ جا کر بیٹھ گئے جہاں سے آگ نکلتی تھی، تھوڑی دیر کے بعد آگ نکلی اور سب کو ڈھانک لیا۔ بتوں کو اور زینت کے سامان کو تو کھا لیا اور یہودی عالم جن کی گردنوں میں مذہبی صحیفے آویزاں تھے برابر ان کو بچائے رہے۔ پیشانی سے پسینہ بہہ گیا اور کوئی ضرر نہیں پہنچا آگ جہاں سے نکلی تھی وہیں واپس چلی گئی اس کے بعد حمیر والوں نے بھی دین یہودیت اختیار کر لیا۔

امام حاکم نے رقاشی کا قول نقل کیا ہے کہ ابو کرب اسعد حمیری جاہلیت میں ... رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت سے سات سو برس پہلے ہی آپ پر ایمان لے آیا تھا۔

اسی سے بیان کیا گیا ہے کہ کعب نے کہا اللہ نے تبع کی قوم کی تو مذمت کی تبع کی مذمت نہیں کی۔

حضرت عائشہؓ ... تبع ... وہ صالح آدمی تھا۔ حضرت ابو ہریرہؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مجھے معلوم نہیں کہ تبع نبی تھے یا نہ تھے۔

کُلٌّ یعنی ہر ایک شخص نے یا ہر امت نے یا سب نے پیغمبروں کی تکذیب کی (تمام) پیغمبروں کی تکذیب بایں وجہ کہ کَذَّبَ الرُّسُلَ (بصیغۂ جمع) فرمایا یوں کہا جائے کہ ان میں سے کوئی بھی اللہ کی توحید پر ایمان نہیں رکھتا تھا سب کے سب توحید ہی کے منکر تھے اس لئے پیغمبروں کے آنے کے منکر ہو جاتے تھے۔ (تفسیر مظہری)

كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ﴿١٤﴾

ان سب نے جھٹلایا رسولوں کو پھر ٹھیک پڑا میرا ڈرانا ☆

**تکذیب انبیاء کا انجام** ☆ یعنی تکذیب انبیاء پر جس انجام سے ڈرایا گیا تھا وہی سامنے آ کر رہا۔ (تفسیر عثمانی)

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ

اب کیا ہم تھک گئے پہلی بار بنا کر کوئی نہیں

فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٥﴾

ان کو دھوکا ہے ایک نئے بنانے میں ☆

**خلق اول** یعنی ان کو نئے سرے سے پیدا کرنے میں شبہ ہو رہا ہے جس نے پہلی بار پیدا کیا وہ دوبارہ پیدا کر دے کیا مشکل ہے؟ کیا یہ گمان کرتے ہو کہ (معاذ اللہ) وہ پہلی دفعہ پیدا کر کے تھک گیا ہوگا؟ اس قادر مطلق کی نسبت ایسے توہمات قائم کرنا سخت جہالت و گستاخی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**ترکیب نحوی:** اَفَعَيِينَا میں ہمزہ انکاری ہے اور ف عاطفہ ہے یہ آیت اَفَلَمْ يَنْظُرُوْا پر عطف ہے اور كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ سے آخر تک معترضہ جملے ہیں۔

**خلاصۂ آیت:** ہم نے آسمان کو بغیر کسی تھکاوٹ اور دقت کے بنایا، زمین کو پھیلایا، پہاڑوں کو جمایا، آسمان سے پانی برسایا، پانی سے کھیتوں کو اگایا۔ تمہارا مشاہدہ اور اعتراف ہے کہ ہم ہی نے پہلی مرتبہ ان سب چیزوں کو پیدا کیا ... سے عاجز نہیں ہم نے کر دیا اور تخلیق سے کسی طرح عاجز نہ تھے تب تخلیق اول بھی ہم سے آسان نہیں تھی پھر کیا وجہ کہ تخلیق اول کا اعتراف کرنے والے تخلیق ثانی کے منکر ہیں۔

فِيْ لَبْسٍ لبس کا معنی ہے گڈمڈ ہو جانا، مشتبہ ہو جانا، اس جگہ مراد ہے شک۔ لبس کا لغوی ترجمہ ہے چھپانا۔ شک کی حالت میں بھی باطل حق کے ساتھ گڈمڈ ہو جاتا ہے یعنی حق کو چھپا لیتا ہے۔

**ابن آدم کی نالائقی:** رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اللہ کا ارشاد ہے آدم کے بیٹے نے میری تکذیب کی، اور یہ تکذیب اس کو زیبا نہ تھی۔ اس نے مجھے گالی دی اور یہ اس کے لئے جائز نہیں تھا۔ تکذیب تو یہ کی کہ اس نے کہا خدا نے پہلی مرتبہ جو مجھے پیدا کر دیا اب دوبارہ مجھے پیدا نہیں کرے گا حالانکہ تخلیق اول میرے لئے تخلیق ثانی سے آسان نہیں تھی اور مجھے گالی اس نے اس طرح دی (کہ اس نے میرے لئے اولاد قرار دی) اور اس نے کہا کہ خدا نے اپنے لئے بیٹا بنا لیا حالانکہ میں اکیلا ہوں بے نیاز ہوں نہ کسی کا والد ہوں نہ مولود نہ کوئی میرا ہمسر ہے۔ رواہ البخاری عن ابی ہریرۃ و ابن عباس۔ (تفسیر مظہری)

**وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ**

اور البتہ ہم نے بنایا انسان کو اور ہم جانتے ہیں

**مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ**

جو باتیں آتی رہتی ہیں اس کے جی میں ☆

**وسوسہ کا معنی و مراد:** انسان کے جو قول و فعل ہے ہم تو جانتے ہی ہیں مگر جو وسوسے و خطرات اس کے دل میں گزرتے ہیں ان کا بھی ہم کو علم ہے "أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ" (الملک)

مَا تُوَسْوِسُ - وسوسہ کا لغوی معنی ہے پوشیدہ و ہلکی آواز۔ اس جگہ مراد ہے دل میں پیدا ہونے والے خیالات۔ یعنی ہم سب انسان کے ہر چھپے خیال کو جانتے ہیں جو دل میں اپنے ارادہ و اختیار سے پیدا کیا اور عمل یا ارادہ اس وقت ہوتی ہے جب اس سے پہلے ان کا علم ہو (علم کے بغیر وسوسہ کا تعلق نہیں ہو سکتا) (تفسیر مظہری)

**وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ**

اور ہم اس سے نزدیک ہیں دھڑکتی

**الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾**

رگ سے زیادہ ☆

**قرب علمی:** مذکورہ کی رگ مراد ہے جسے شہرگ کہتے ہیں اور جس سے کٹنے سے انسان مر جاتا ہے شاید یہ دل وجان اور روح ہے۔ مطلب یہ ہوا کہ ہم اس کی رگ جان سے بھی نزدیک تر ہیں یعنی جیسے علم انسان کا اپنے اندر کی باتوں کا علم ہو اس سے بھی زیادہ ہے تو قرب علمی اور مشاہدہ و معلول حق تعالیٰ کے ساتھ قرب حاصل ہوتا ہے جو معلول و مخلوق کو خود اپنے نفس سے بھی نہیں ہوتا اس کا تشبیہ مثال "نَحْنُ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ" سے واضح ہو جاتی ہے۔ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ ایک علاقہ ہے آدمی کی جان سے اعلم بطور۔

اے جان نہاں در جسم و اے اہل جان

اے جہاں اندر جہاں اے جان جان

(تفسیر عثمانی)

**عام و خاص قرب:** آیت میں انسان سے خدا کا قرب جو مستفاد ہو رہا ہے اس میں کوئی خصوصیت نہیں ہے کہ قرآن و مومن کی زندگی اور مخلوق کی ساری کائنات سے اللہ قریب تر ہے جہاں تک کہ اس کی اصل سے بھی۔ اس قرب عام سے علاوہ ایک قرب خاص بھی ہے جس کا تذکرہ قرب عمومی اور یہ قرب خصوصی بھی صرف مومنوں کا ہے (دونوں کو قرب ہی کہا جاتا ہے) لیکن حقیقت دونوں کی جدا جدا ہے۔ اس قرب کا ادراک بھی نور فراست اور محبت سے ہوتا ہے اللہ نے فرمایا ہے۔ "لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا" دوسری جگہ فرمایا "مَعَكُمَا" تیسری جگہ فرمایا "إِنَّ مَعِيَ رَبِّي" ایک اور جگہ فرمایا ہے "فَإِنِّي قَرِيبٌ" اور یہ آیا ہے "عِنْدَ مَلِيكٍ مُقْتَدِرٍ" ایک دوسرے مقام پر فرمایا "فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى"۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ قول نقل فرمایا ہے کہ نوافل کے ذریعے سے بندہ مجھ سے قریب ہوتا جاتا ہے ان مقامات قرب کو اہل بصیرت ہی جانتے ہیں ان کے حاشیہ مراتب ہیں جو لوگ اس کے جاننے والے (اہل) ہیں جو کاملوں کے لئے مخصوص ہے۔ اللہ نے فرمایا ہے "وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ" - "لَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ" ... الا ہمہ یحفظہ حزبہ۔

**ترکیب نحوی:** حبل الورید میں اضافت بیانیہ ہے جیسے شجر اراک یعنی وہ رگ جس میں خون بہتا ہے۔

ورید گلے کے دونوں جانب کی وہ رگیں ہیں جن کا تعلق ان تمام بدن کی رگوں سے ہے جو دل سے نکل کر سارے جسم میں پھیلی ہوئی ہیں یہ رگیں دونوں سرے گردن کی طرف آتی ہیں۔ بعض نے کہا روح اسی رگ کی طرف آتی ہے (معنی یہیں روح سے تعلق مراد ہے جس کا قیام اسی پر ہوتا ہے)۔

**قرب سے کیا مراد ہے:** قریب ہونے سے کیا مراد ہے۔ بعض علماء کے نزدیک قرب علمی مراد ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ ہر مکان سے بالا اور منزہ ہے۔ وہ نہ جسم ہے نہ جسمانی نہ قرب بلحاظ مکانی سے پاک ہے۔

بیضاوی نے اس قرب کو بیان کیا ہے مطلب یہ ہے کہ علم الٰہی ہر قریب ترین شخص سے بھی زیادہ قریب ہے۔ ہم انسان کے نفس سے بھی زیادہ واقف ہیں جو انسان کی شاہ رگ سے بھی زیادہ قریب ہے۔ قرب ذات سے مراد ہے قرب علمی ہے کیونکہ قرب تخلیق سے قرب علمی حاصل ہوتا ہے (صاحب تفسیر نے مراد لیا) یہ ایک قسم ہے استعارہ کی قرب ذاتی ظاہر کرنے کے لئے۔ ہم مثال بیان کیا جاتا ہے۔ عرب کہتے ہیں یہ مجھ سے بھی زیادہ قریب ہے۔

بغوی نے یہ مطلب بیان کیا ہے کہ ہم انسان کو اتنا زیادہ جانتے ہیں کہ وہ اپنے آپ کو بھی اتنا نہیں جانتا کیونکہ انسان سے بعض چیزیں اور اسرار اجزاء کے علم کے لئے صاحب ادراک ہوتے ہیں لیکن اللہ کے علم سے کوئی چیز پوشیدہ نہیں۔ اس مطلب پر یہ نتیجہ ہوگا کہ طبیب بیمار سے بھی زیادہ مریض سے قریب ہوتا ہے کیونکہ طبیب مریض کی صحت و بیماری کو

حاصل ہوتا ہے اور مریض خود اپنی نبض جانتا ہے [illegible] طبیب [illegible] استدلال [illegible]
[illegible] اور مریض کا علم وجدانی [illegible] خصوصاً جزوی [illegible] معلم و متعلم
[illegible] وہ اپنے متعلق بھی کچھ نہیں جانتا اور [illegible] اس کے کچھ حالات جانتا
ہے مثلاً [illegible] علیم [illegible] سے آپ کو کچھ نہیں جانتا اور کبھی
[illegible] اتنا قریب ہوں کہ تم خود اپنے آپ سے اتنا قریب
نہیں ہو۔ لیکن اگر اللہ کے قریب ہونے کے معنی یہ ہیں کہ مخلوق [illegible] کو
اتنا نہیں جانتی جتنا اس کو اللہ جانتا ہے [illegible] خدا کے علم پر محدود نہیں ہے (بلکہ ہر
معلوم العلم کے حوالے سے ہوتا ہے جتنا وہ خود نہیں جانتا اس لئے کہنا پڑے گا
کہ ہر علم رکھنے والا معلوم العلم سے اتنا قریب ہے کہ وہ اپنے آپ سے اتنا
قریب نہیں ہے) اللہ کی اقربیت ایسے معنی کے اعتبار سے کوئی نئی نہیں ہے۔

**صوفیاء کا قول:** صوفیہ کہتے ہیں مخلوق سے اللہ کی اقربیت ذاتی ہے نہ
[illegible] ہے نہ مکانی [illegible] اللہ کی اس اقربیت کا ادراک نور
فراست سے حاصل ہوتا ہے [illegible] عقلی استدلال سے حاصل نہیں ہوتا۔

[illegible] اقربیت خداوندی کو عقلی فہم ہونے کے لئے یوں کہا جا
سکتا ہے [illegible] وجود [illegible] کے لئے [illegible] کا
[illegible] محتاج ہوتا ہے۔

[illegible] اس میں صراحت کر دی ہے کہ [illegible] وجود [illegible]
[illegible] کی قربت ہے۔

صوفیہ [illegible] کی نسبت [illegible] کی جانب اور [illegible] کی نسبت
صفات کی جانب اور صفت کی نسبت [illegible] کی جانب کرتے ہیں۔ [illegible]
کے [illegible] اللہ کے رسول [illegible] نے ارشاد فرمایا [illegible]
[illegible] نور و ظلمت کے [illegible] اگر وہ [illegible]
[illegible] کے چہرے کے [illegible] حد نظر تک [illegible]
[illegible] اسی طرح صفات کے [illegible] نے خود فرمایا ہے۔
[illegible] اس سب [illegible] ہو گئی اور [illegible]
[illegible] اور صفات
[illegible] فرمایا ہے [illegible] ختم ہونے والا ہے اور اللہ
کے پاس جو کچھ ہے وہ باقی رہنے والا [illegible]۔

حضرت مجدد قدس سرہٗ نے فرمایا اللہ [illegible]
[illegible] ہے مگر [illegible] قرب ہے [illegible] ہے۔
[illegible] صفات [illegible] کا اپنی ذات سے بھی
اتنا قرب نہیں ہے [illegible] صفات خداوندی کا [illegible] زیادہ ہے کہ [illegible]
کا اپنی ذات سے بھی اتنا قرب نہیں ہے اور صفات خداوندی کا [illegible] سے
قرب اتنا [illegible] ہے کہ اتنا قرب [illegible] کا اپنی ذات سے ہے نہ [illegible] کا
ذات سے اور [illegible] کا قرب [illegible] زیادہ ہے کہ اتنا قرب [illegible] کا اپنی
ذات سے ہے نہ [illegible] صفات کا [illegible] (تفسیر مظہری)

یہ قرب و تقرب جو عبادات کے ذریعہ حاصل کیا جاتا ہے [illegible] کے
اپنے سب [illegible] کا نتیجہ ہوتا ہے یہ صرف مومن کے لئے مخصوص ہے اور ایسے
[illegible] اولیاء اللہ کہلاتے ہیں [illegible] تعالیٰ کے ساتھ [illegible] حاصل ہے
اتصال و قرب اس قرب کے علاوہ ہے جو حق تعالیٰ کو ہر انسان [illegible]
جان کے ساتھ یکساں ہے [illegible] روایات اس پر شاہد ہیں کہ
انسان کو اپنے خالق و مالک کے ساتھ ایک [illegible] قسم کا اتصال حاصل ہے [illegible]
اس کی حقیقت اور کیفیت کا [illegible] نے [illegible] فرمایا ہے۔

[illegible] اتصالے [illegible] مثال [illegible] قیاس
[illegible] جان [illegible]

یہ قرب و اتصال [illegible] آیت [illegible] سے معلوم
کیا جا سکتا ہے۔ تفسیر مظہری میں اسی قرب و اتصال کو اس آیت کا مطلب قرار
دیا ہے۔ (معارف القرآن)

**إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ**

جب لے جاتے ہیں دو لینے والے داہنے بیٹھا

**وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾**

اور بائیں بیٹھا ☆

کراماً کاتبین ☆ یعنی دو فرشتے خدا کے حکم سے ہر وقت انسان کے ساتھ
[illegible] جو بھی وہ ظاہر [illegible] سب لکھ لیتے ہیں [illegible]
[illegible] (تفسیر عثمانی)

**اعمال نامہ لکھنے والے فرشتے:** حضرت حسن بصری نے آیت عَنِ
الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ تلاوت فرمائی اور کہا۔

"اے ابن آدم! تیرے لئے صحیفۂ اعمال بچھا دیا گیا ہے اور تجھ پر دو معزز
فرشتے مقرر کر دیئے گئے ہیں ایک تیری داہنی جانب دوسرا بائیں جانب داہنی
جانب والا تیری نیکیاں لکھتا ہے اور بائیں جانب والا تیری برائیاں [illegible]
[illegible] حقیقت [illegible] تیرا [illegible] کم کر یا زیادہ یہاں تک
کہ جب تو مرے گا تو یہ صحیفہ لپیٹ کر تیری گردن میں
ڈال دیا جائے گا جو تیرے ساتھ قبر میں جائے گا اور رہے گا یہاں تک کہ جب تو

قیامت کے روز قبر سے نکلے گا تو اس وقت حق تعالیٰ فرمائے گا وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنْشُورًا اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا۔ یعنی ہم نے ہر انسان کا اعمال نامہ اس کی گردن میں لگا دیا ہے اور قیامت کے روز اس کو کھلا ہوا ہے گا کہ اپنا اعمال نامہ خود پڑھ لے تو خود ہی اپنا حساب لگانے کے لئے کافی ہے۔

روایت میں ہے کہ پہلے تو ہر عمل لکھا جاتا ہے خواہ گناہ و ثواب اس میں ہو یا نہ ہو مگر ہفتہ میں جمعرات کے روز اس پر فرشتے نظر ثانی کر کے صرف وہ رہ لیتے ہیں جن میں ثواب یا عقاب ہو یعنی خیر یا شر ہو باقی کو نظر انداز کر دیتے ہیں۔ (معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ |
| نہیں بولتا کوئی بات جو نہیں ہوتا اس کے پاس |
| رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۞ |
| ایک راہ دیکھنے والا تیار |

اب یہ بھی لکھنے کو تیار ہے (رقیب) دونوں فرشتے کہاں رہتے ہیں؟ اور علاوہ اقوال کے کیا کیا وہ لکھتے ہیں؟ انکی تفصیل احادیث وآثار سے سنئیے۔ (احسن البیان)

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ۔ انسان منہ سے کوئی لفظ نکال بھی نہیں پاتا کہ۔ رَقِيبٌ عَتِيدٌ۔ رقیب سے مراد نگہبان فرشتہ جو انسان کے قول کی چوکسائی کرتا رہتا ہے۔ عَتِيدٌ۔ حاضر (موجود) حسن نے کہا فرشتے دو حالتوں میں انسان سے الگ ہو جاتے ہیں رفع حاجت کے وقت اور جماع کے وقت۔

امام احمد بن حنبلؒ کا فرمان: بلال بن حارث مزنیؓ سے روایت کیا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا بندہ کبھی ایک کلمہ اللہ کی خوشنودی کا بول دیتا ہے۔ جس کو کچھ بھی نہیں ہوتا کہ یہ کلمہ اس درجہ تک پہنچ جائے گا تو اسی ایک کلمہ کی بدولت اس کے واسطے قیامت تک کے لئے اللہ کی رضامندی کا پروانہ لکھ دیا جاتا ہے اور بسا اوقات ایک کلمہ اللہ کی ناراضگی کا بول دیتا ہے حالانکہ اس کا اندازہ بھی نہیں ہوتا کہ یہ اس درجہ تک پہنچ جائے گا تو اسی ایک کلمہ کی وجہ سے اللہ کی ناراضگی قیامت تک کے واسطے لکھ دی جاتی ہے۔

علقمہ اس روایت کو نقل کر کے کہا کرتے تھے کہ بہت سی باتیں ایسی تھیں جو میں کہنے سے باز رہتا تھا کیونکہ اس فرمان کا تصور تھا کہ ایک ایک لفظ زبان سے ادا کرنے کی بابت جواب دہی ہوگی۔ یہ حدیث مختلف کتابوں میں آتی ہے۔

## دونوں فرشتے ایک دوسرے کے نگران ہیں

احنف بن قیس کہا کرتے تھے دائیں ہاتھ والا فرشتہ جو خیر لکھتا ہے دوسرے فرشتے پر نگران رہتا ہے کہ اگر بندہ کوئی خطا کر لے تو دائیں ہاتھ والا فرشتہ بائیں جانب والے کو کہتا ہے کہ ذرا ٹھہر جا شاید اس کی برائی نہ لکھ کہ اس مہلت میں بندہ استغفار کر لے لیکن بندہ نے اگر استغفار نہ کیا تو پھر لکھ لیتا ہے۔

حسن بصریؒ یہ آیت عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ پڑھ کر فرمایا کرتے تھے اے ابن آدم تیرا نامۂ اعمال میں نے کھول رکھا ہے اور تجھ پر دو معزز فرشتے مقرر کر دیئے ہیں ایک تیری دائیں جانب ہے اور دوسرا تیری بائیں جانب۔ دائیں جانب والا تیری نیکیاں لکھتا ہے اور بائیں جانب والا تیری برائیاں لکھتا ہے اب تیری مرضی جو عمل چاہے کر۔ کم کر یا زیادہ کر۔ یہاں تک کہ جب تو مر جائے گا تو تیرے صحیفے لپیٹ کر تیری گردن میں ڈال دیئے جائیں گے یہاں تک کہ جب قیامت کے روز تو اپنی قبر سے اٹھے گا تو اس وقت کہا جائے گا اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا۔ اس کے بعد فرمایا کرتے خدا کی قسم تیرے بارے میں اس ذات نے عدل و انصاف کیا جس نے خود تیرے نفس کو تیرا محاسب بنایا۔ اسی کو حق تعالیٰ شانہٗ نے فرمایا ہے۔ وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنْشُورًا۔ (معارف کاندھلوی)

| |
|---|
| وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ |
| اور وہ آئی بے ہوشی موت کی تحقیق ۞ |

## اجمالی مربوط کلام

یعنی لو! اب وہ مسلسل بیان ہوں گی جو موت کی گھڑی آ پہنچی اور مرنے والوں کی بے ہوشیاں اور جان کنی کی غشیوں میں آنکھیں کھل جائیں گی اس وقت وہ سب کچھ بے نقاب اور ظاہر ہو گئیں جن کی خبر اللہ تعالیٰ کے رسول نے دی تھی اور میت کی سعادت و شقاوت سے پردہ اٹھنے لگا اور ایسی چیزیں آنے لگیں اور عقلی تاکید کے سبب مطلق کی بہت سی آیتیں اس سے متعلق ہیں۔ (احسن البیان)

ربط: گذشتہ آیتوں کے دو دلائل میں اصناف تخلیق و نقل معلومہ سے اللہ نے ان کے اس خیال کا ازالہ اس طور پر کر دیا کہ اپنی قدرت اور علم کی ہمہ گیری کو اول بیان یا تخلیق عالم اور انسان کی ہستی و صفات کی تحقیق کا ذکر کیا ان کے بعد آئندہ آیت میں تنبیہ و تخویف کے لئے موت کے قریب ہونے اور قیامت برپا ہونے کا بیان کیا اور فرمایا۔ (تفسیر مظہری)

اسرار اور رموز: ان آیات میں جاء ت اور نفخ اور کشفنا تمام صیغے ماضی کے ذکر کئے گئے حالانکہ یہ واقعات مستقبل میں پیش آئیں گے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ یہ واقعات یقینی اور ضروری پیش آئیں گے اور ایسے موقع پر ماضی کا صیغہ استعمال کرنے سے اس طرف اشارہ ہوتا ہے کہ یہ واقعات اتنے یقینی الوقوع ہیں کہ گویا ان کا وقوع ہو گیا۔

## رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی کیفیت

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو جب یہ حالت پیش آئی تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم پانی میں ہاتھ ڈال کر چہرۂ مبارک پر ملتے اور فرماتے تھے لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ یعنی کلمہ طیبہ پڑھتے ہوئے فرمایا کہ موت کی بڑی شدتیں ہوتی ہیں۔ (معارف مفتی اعظم)

سکرۃ الموت موت کی بے ہوشی کا نام ہے جو جسمانی طور پر نزع ہونے کے وقت پیش آتی ہے۔ یہ سکرۃ موت ہر ایک کے لئے ہیں۔ جیسا حدیث میں ہے۔ یہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر جب موت کی کیفیت طاری ہونے لگی تو آپ کی پیشانی پسینہ آلود ہوگئی آپ صلی اللہ علیہ وسلم پیشانی کا پسینہ پونچھتے جاتے اور فرماتے سبحان اللہ ان للموت سکرات۔

## موت ہر انسان کی قیامت ہے

اس آیت میں ہر انسان کی موت کا ذکر ہے اور ہر انسان کی موت اس کے حق میں قیامت ہے جیسا کہ ارشاد نبوی صلی اللہ علیہ وسلم ہے اِذَا مَاتَ اَحَدُکُمْ فَقَدْ قَامَتْ قِیَامَتُہٗ کہ جو شخص مر گیا اس کی تو قیامت شروع ہوگئی۔ (معارف مفتی اعظم)

## امام احمد کا حال:

حضرت امام احمد رحمۃ اللہ علیہ کی بابت مروی ہے کہ آپ اپنے مرض الموت میں کراہ رہے تھے تو آپ کو معلوم ہوا کہ حضرت طاؤس فرماتے ہیں کہ فرشتے اسے بھی لکھتے ہیں چنانچہ آپ نے کراہنا بھی چھوڑ دیا اف تک آپ نے اپنی موت کے وقت تک نہیں کی۔

## حضرت ابوبکرؓ کی حالت

حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہیں میں اپنے والد رضی اللہ عنہ کے آخری وقت میں آپ کے سرہانے بیٹھی تھی۔ آپ پر غشی طاری ہوئی تو میں نے یہ بیت پڑھا۔

مَنْ لَا يَزَالُ دَمْعُهُ مُقَنَّعًا  فَإِنَّهُ لَا بُدَّ مَرَّةً مَدْفُوقٌ

مطلب یہ ہے کہ جس کے آنسو ٹھہرے ہوئے ہیں وہ بھی ایک مرتبہ بہہ جائیں گے۔ تو آپ نے اپنا سر اٹھا کر فرمایا بیٹی یوں نہیں بلکہ جس طرح خدا نے فرمایا وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ الخ۔ اور روایت میں ہے کہ آپ صدیق اکبرؓ کا یہ قول مروی ہے۔ یوں نہیں بلکہ یہ آیت پڑھو۔ اس اثر کے اور بھی بہت سے طریق ہیں جنہیں میں نے سیرۃ الصدیق میں آپ کی وفات کے بیان میں جمع کر دیا ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

> ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝
>
> یہ وہ ہے جس سے تو ٹلتا رہتا تھا ☆

## موت ٹلنے والی نہیں

یعنی آدمی نے موت کو بہت بھگانا چاہا اور اس ناخوشگوار وقت سے بہت بچ کر بھاگتا اور کتراتا رہا، پر کبھی ٹلنے والی کہاں تھی؟ خود سر پر آ کھڑی ہوئی کوئی تدبیر اور حیلہ دفع الوقتی کا نہ چل سکا۔ (تفسیر عثمانی)

## موت سے بھاگنے والے کی مثال

معجم کبیر طبرانی میں ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں اس شخص کی مثال جو موت سے بھاگتا ہے اس لومڑی جیسی ہے جس سے زمین اپنا قرض طلب کرنے لگی اور یہ اس سے بھاگنے لگی یونہی بھاگتے بھاگتے جب تھک گئی اور بالکل چکنا چور ہو گئی تو اپنے بھٹ میں جا گھسی زمین چونکہ وہاں بھی موجود تھی اس نے لومڑی سے کہا میرا قرض دو یہ پھر وہاں سے بھاگی سانس پھولا ہوا تھا حال برا ہو رہا تھا آخر یونہی بھاگتے بھاگتے بے دم ہو کر مر گئی الغرض جس طرح اس لومڑی کو زمین سے بھاگنے کی راہیں بند تھیں اسی طرح انسان کو موت سے بچنے کے راستے بند ہیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

> وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ۝
>
> اور پھونکا گیا صور یہ ہے دن ڈرانے کا ☆

بڑی قیامت ☆ چھوٹی قیامت تو موت کے وقت ہی آ چکی تھی اس کے بعد بڑی قیامت کا منظر ہے یعنی صور پھونکا گیا اور وہ ہولناک دن آ موجود ہوا جس سے ڈرایا گیا اور جس سے لوگ گھبراتے چلے آتے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

فرشتہ تیار کھڑا ہے: حدیث میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں میں کس طرح راحت و آرام حاصل کر سکتا ہوں حالانکہ صور پھونکنے والے فرشتے نے صور منہ میں لے لیا ہے اور گردن جھکائے حکم خداوندی کا انتظار کر رہا ہے کہ کب حکم ہو اور کب وہ پھونک دے۔ صحابہؓ نے کہا پھر یا رسول اللہ ہم کیا کہیں۔ آپ نے فرمایا کہو حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ۔

## جب صور پھونکا جائے گا تو سب کھڑے ہو جائیں گے

ابو نعیم نے حلیہ میں لکھا ہے کہ عکرمہ نے کہا جو لوگ سمندر میں ڈوب جاتے ہیں، ان لاشوں کا گوشت مچھلیاں بانٹ لیتی ہیں۔ صرف ہڈیاں رہ جاتی ہیں سمندر کی لہریں ہڈیوں کو خشکی پر لا ڈالتی ہیں۔ پھر ہڈیاں خشک ہو کر کھوکھلی ہو جاتی ہیں کہ ان کو اونٹ چبا جاتے ہیں اور اونٹ کے پیٹ کے اندر آ کر مینگنیاں بن جاتی ہیں اونٹ مینگنیاں کر دیتے ہیں مینگنیوں کے مقام پر کوئی مسافر آ کر اترتا ہے وہ ان مینگنیوں سے آگ جلا کر ایندھن کا استعمال کرتا ہے۔ مینگنیاں راکھ بن جاتی ہیں پھر آگ بجھ جاتی ہے اور مینگنیاں راکھ بن جاتی

جب ... اور محشر کی ... [illegible]

[illegible] (تفسیر مظہری)

## وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ

اور آئے گا ایک ایک شخص اس کے ساتھ ہے ایک ہانکنے والا

## وَّشَهِيدٌ

اور ایک احوال بتانے والا ☆

**محشر کی پیشی:** [illegible] جائیں گے کہ ایک ... [illegible] (تفسیر حقانی)

ہانکنے والا اور گواہ: [illegible]

[illegible]

## لَقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا

تو بے خبر رہا اس دن سے

## فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ

اب کھول دیا ہم نے تجھ پر سے تیرا پردہ سو تیری نگاہ

## الْيَوْمَ حَدِيدٌ

آج تیز ہے ☆

**محشر کی ذہانت:** [illegible] (تفسیر حقانی)

**غطاء کا معنی:** [illegible]

[illegible] (تفسیر عثمانی)

## وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ

اور بولا فرشتہ ساتھ رہنے والا یہ ہے جو میرے پاس تھا حاضر ☆

[illegible] (تفسیر حقانی)

## أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ

ڈال دو تم دونوں دوزخ میں ہر ناشکرے مخالف کو

## مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ

نیکی سے روکنے والا حد سے بڑھنے والا شبہ ڈالنے والا ☆

**جہنم میں ڈالنے کا حکم:** [illegible]

[illegible] (تفسیر حقانی)

پھینکا۔ تم دونوں ڈال دو۔ دونوں سے مراد ہیں سائق اور شہید یا دوزخ کے دو فرشتوں میں سے دو فرشتے یا واحد ہے حقیقت میں کوئی ایک ہے لیکن صیغہ تثنیہ ذکر کرنے سے تثنیہ فعل مراد ہے۔ عنید۔ حق سے عناد رکھنے والا۔ مناع للخیر۔ خیر سے مراد ہے فرض زکوٰۃ اور ہر وہ مالی حق جس کا ادا کرنا واجب ہے۔ یہ منع کرنے والا ہے۔ معتد۔ ظالم، حد اللہ کی توحید کا اقرار نہیں کرتا۔ مریب۔ اللہ کی ذات صفات اور احوال کے دین میں شک کرنے والا۔ (تفسیر مظہری)

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا

جس نے ٹھہرا لیا اللہ کے ساتھ اور کو پوجنا

آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ

سو ڈالو اس کو سخت عذاب میں ☆

## سخت ترین عذاب کے مستحق

یعنی ایسے لوگ جہنم میں سخت ترین عذاب کے مستحق ہیں۔ (تفسیر جلالین)

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ

بولا شیطان اس کا ساتھی اے رب ہمارے میں نے

وَلٰكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ

نہ شرارت میں ڈالا پر یہ تھا راہ بھولا دور پڑا ہوا ☆

## اعمال لکھنے والے فرشتے اور شیطان

☆ یعنی میری کچھ زبردستی اس پر نہ چلتی تھی اور نہ ایسی تھی کہ کچھ خود گمراہ ہو کر نجات و فلاح کے راستے سے دور جا پڑا۔ شیطان یہ کہہ کر اپنا جرم ہلکا کرنا چاہتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

حضرت ابن عباس، مقاتل اور سعید بن جبیر کے نزدیک اس جگہ قرین سے مراد ہے وہ فرشتہ جو اعمال پر مقرر ہے۔ سعید بن جبیر نے کہا فرشتہ یہ بات اس وقت کہے گا۔ جب کافر کہے گا فرشتے نے لکھنے میں مجھ پر زیادتی کی ہے (اپنی طرف سے) میں نے اس کی طرف کفر اور طغیان کی نسبت نہیں کی (یعنی اپنی طرف سے غلط طور پر اس کو کافر اور سرکش نہیں لکھا) اور نہ لکھنے میں اس پر کوئی زیادتی کی ہے۔ بعض اہل تفسیر کا قول ہے کہ قرین سے اس جگہ شیطان مراد ہے جو اس کافر پر مسلط کیا گیا تھا یعنی کافر کہے گا میرے شیطان نے مجھے گمراہ کیا تھا شیطان کہے گا میں نے اس کو گمراہ نہیں کیا بلکہ یہ خود پرلے درجہ کی گمراہی میں پڑا ہوا تھا تو میں نے اس کی مدد کر دی (یعنی کفر کی شدت میں کر اور بڑھا دیا)۔

حقیقت یہ بھی ہے کہ شیطانی اغوا اسی وقت آدمی پر اثر انداز ہوتا ہے جب آدمی کا عقیدہ خود ہی غلط ہو اور گناہ کی طرف اس کا طبعی میلان ہو۔ یہی وجہ ہے کہ شیطان کہے گا کہ میری تم پر کوئی زبردستی نہیں تھی۔ میں نے تو (گناہ کی طرف) صرف تم کو بلایا تھا تم نے میری دعوت کو قبول کر لیا اس لئے مجھے ملامت نہ کرو اپنی جانوں کو ملامت کرو۔

## صوفیاء کی مستعدی

یہی وجہ ہے کہ اسی وجہ سے صوفیاء اپنے نفسوں سے جہاد کرنے کے لئے کمربستہ رہتے ہیں اور اپنی پوری طاقت نفس کا مقابلہ کرنے کے لئے صرف کرتے ہیں تا کہ شیطان کا راستہ بند ہو جائے (شیطان نفس کے راستے سے آتا ہے)

بعض متاخرین کے نزدیک دونوں جگہ قرین سے مراد شیطان ہے جو کافر پر مسلط ہوتا ہے شیطان کافر کا ساتھی ہوتا ہے اس صورت میں مطلب یہ ہوگا کہ شیطان کہے گا یہ شخص جو میرے پاس ہے اور میرے سپرد تھا دوزخ کے لئے حاضر ہے۔ میں نے اغوا کر کے دوزخ کے لئے تیار کیا ہے لیکن میں نے اس کو زبردستی طاغی نہیں بنایا۔ خود ہی پرلے درجے کی گمراہی میں تھا اپنے اختیار سے میری پیروی کی اور میری دعوت کو قبول کیا اور فرشتے کی دعوت کو قبول نہیں کیا (تفسیر مظہری)

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ

فرمایا جھگڑا نہ کرو میرے پاس اور میں پہلے ہی

قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ

ڈال چکا تھا تم کو عذاب سے ☆

## گمراہ کرنے اور گمراہ ہونے کی سزا ملے گی

☆ یعنی کہہ دیا گیا تھا کہ بہت مت کرو دنیا میں سب کو تنبیہ دے دی گئی تھی اب ہر ایک کو اس کے جرم کے موافق سزا ملے گی جو گمراہ ہوا اور جس نے گمراہ کیا سب اپنی اپنی کرتوت کی سزا بھگتیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا

بدلتی نہیں بات میرے پاس اور میں

بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ

ظلم نہیں کرتا بندوں پر ☆

اللہ کے ہاں ظلم نہیں ہے (یعنی ہمارے یہاں ظلم نہیں جو کچھ فیصلہ ہوگا یہ تحقیق اور انصاف سے ہوگا اور بات نہیں بدلی جائے گی ناز کا حق نہیں جا سکتا نیکیاں کم کرنا نہ گناہ بڑھانا) (تفسیر مدنی)

مشتمل تعلق ۔ یعنی میرے قول کے خلاف نہیں ہو سکتا میں کہہ چکا ہوں لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ اس لئے اب میری طرف سے حضرت کی امید نہ رکھو۔

کلبی نے کہا اور فراء نے اس کو پسند کیا کہ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ کا یہ مطلب ہے کہ میرے سامنے جھوٹ نہیں بولا جا سکتا علام الغیوب ہوں مجھ سے کوئی بات پوشیدہ نہیں ۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ |
| جس دن ہم کہیں دوزخ کو تو بھر بھی چکی |
| وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝ |
| وہ بولے کچھ اور بھی ہے ؟ ۝ |

جہنم کی طلب یعنی دوزخ کا پیٹ اس قدر لوگوں سے نہ بھرے گا اور شدت غیظ سے زیادہ کا ارادہ اور خواہش ظاہر کرے گی ۔ (تفسیر جلالی)

صحیح بات یہ ہے کہ یہ مقتضیٰ جو ہاں کی طلب ظاہر کرتا ہے کیونکہ شیخین نے حضرت انس رضی اللہ عنہ سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جہنم کے اندر برابر سب کچھ ڈالا جائے گا اور وہ کہتی رہے گی هَلْ مِن مَّزِيدٍ آخر رب العزت اپنا قدم اس میں رکھ دے گا سب سمٹ کے قدم رکھنے کی وجہ سے سمٹ جائے گی اس کے اجزاء باہم سکڑ جائیں گے اور وہ کہے گی بس بس تیری عزت اور کرم کی قسم (بس بھر گئی) اور جنت کے اندر ایک حصہ ایسا خالی رہے گا (اس کے لئے کوئی رہنے والا نہیں ہوگا) آخر اللہ ایک اور مخلوق پیدا کرے گا جس کو اس خالی حصہ میں آباد کرے گا۔

بغوی نے حضرت ابن عباس کی روایت سے بیان کیا ہے اللہ کا فیصلہ پہلے ہو چکا ہے کہ میں دوزخ کو جنات اور انسانوں سے سب سے بھر دوں گا۔ جب قیامت کے دن اللہ کے دشمنوں کو دوزخ کی طرف ہنکا کر لے جایا جائے گا اور گروہ در گروہ ان کو دوزخ میں ڈالا جائے گا تو سب اندر چلے جائیں گے اور دوزخ کسی چیز سے نہ بھرے گی۔ دوزخ عرض کرے گی یا مجھے بھر دینے کی قسم نہیں کھائی تھی؟ اللہ اپنا قدم دوزخ پر رکھ دے گا اور فرمائے گا کیا تو بھر گئی دوزخ کہے گی بس بس اب مزید کی گنجائش نہیں۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ |
| اور قریب لائی جائے جنت پرہیزگاروں کے لئے دور نہیں ۝ |

جنت کا نظارہ یعنی جنت ان سے دور نہ ہوگی بہت قریب سے اس کی تروتازگی اور بہار کا نظارہ دیکھیں گے ۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ |
| یہ ہے جس کا وعدہ تھا تم سے ہر ایک رجوع |
| حَفِيظٍ ۝ مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ |
| رہنے والے یاد رکھنے والے کے واسطے جو ڈرا رحمن |
| بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۝ |
| سے بن دیکھے اور لایا دل رجوع ہونے والا ۝ |
| ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ |
| چلے جاؤ اس میں سلامتی سے ۝ |

جنت کے مستحقین یعنی جنتوں نے دنیا میں خدا کو یاد رکھا اور گناہوں سے توبہ کر کے اس کی طرف رجوع ہوتے رہے اور بے دیکھے اس کے قہر و جلال سے ڈرتے رہے اور ایک پاک و صاف رجوع ہونے والا دل لے کر حاضر ہوئے یہ اس جنت کا وعدہ ایسے لوگوں سے کیا گیا تھا۔ وقت آ گیا ہے کہ سلامتی و عافیت کے ساتھ اس میں داخل ہوں فرشتے ان کو سلام کریں اور ان کے پروردگار کا سلام پہنچائیں ۔ (تفسیر حقانی)

بن دیکھے کا مطلب یعنی اللہ کے عذاب سے ڈرتا تھا جب کہ وہ غائب تھا یعنی دنیا میں خدا اس کو نہیں دکھائی دیتا تھا یا آخرت کا عذاب سے غائب تھا اللہ کو اس نے نہیں دیکھا تھا پھر بھی وہ نصیحت کی فکر کے سامنے نہیں تھا۔

ضحاک سدی اور حسن نے کہا یعنی وہ تنہائی میں اللہ سے ڈرتا تھا جب کوئی بھی اس کو نہیں دیکھتا تھا ۔ (اظہار یا الْمُتَكَبِّر کی جگہ) الرحمٰن کا لفظ ذکر کرنے سے اس طرف اشارہ ہے کہ جہاں وہ اللہ سے ڈرتے ہیں اس کی رحمت کے امیدوار بھی ہیں یا اس طرف اشارہ ہے کہ جہاں وہ اللہ سے ڈرتے ہیں اس کی رحمت کے امیدوار بھی ہیں یا اس طرف اشارہ ہے کہ وہ اللہ کی رحمت کو وسیع دیکھتے ہوئے بھی عذاب سے ڈرتے رہتے ہیں ۔ اللہ

کی رحمت کو یہ مغرور بعید تصور کرتے ہیں اور گناہوں پر جرأت کرتے ہیں (کیونکہ خوف و خشیت نہیں رکھتے)۔

مُّنِيْبٍ : یعنی عذاب الٰہی اور زوال رحمت سے ... مطلب ہے کہ اللہ اور دوستی کی طرف سے ان کو پیام سلامتی دے گا۔ (تفسیر مظہری)

**اواب حفیظ اور منیب:** حضرت عبید بن عمیرؓ ... نے فرمایا کہ اواب وہ شخص ہے جو خلوت میں اپنے گناہوں کو یاد کر کے ان سے استغفار کرے اور حضرت عبید بن عمیر نے فرمایا کہ اواب وہ شخص ہے جو ہر مجلس اور بیٹھک میں اللہ سے اپنے گناہوں کی مغفرت مانگے اور فرمایا کہ ہم کو یہ بتلایا گیا ہے کہ اواب اور حفیظ وہ شخص ہے جو اپنی ہر مجلس سے اٹھنے کے وقت یہ دعا پڑھے سبحان اللہ وبحمدہ اللھم انی استغفرک مما اصبت فی مجلسی ھذا (پاک ہے اللہ اور اسی کی حمد ہے یا اللہ میں مغفرت مانگتا ہوں ان گناہوں سے جو مجھ سے اس مجلس میں ہوئے)

اور حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے جو شخص اپنی مجلس سے اٹھنے کے وقت یہ دعا پڑھے تو اللہ تعالیٰ اس کے وہ سب گناہ معاف فرما دیں گے جو اس مجلس میں سرزد ہوئے وہ دعا یہ ہے سبحانک اللھم وبحمدک لا الٰہ الا انت استغفرک واتوب الیک (پاک ہے تو یا اللہ اور تیری حمد و ثناء ہے تیرے سوا کوئی معبود نہیں میں تجھ سے مغفرت (گناہوں) اور توبہ کرتا ہوں)

اور حفیظ سے کی حضرت ابن عباسؓ نے یہ فرمایا کہ جو شخص اپنے گناہوں کو یاد رکھتا کہ ان سے رجوع کر کے تلافی کرے اور ان سے ایک روایت میں حفیظ کے معنی ھو الحافظ لامر اللہ کے بھی منقول ہیں یعنی جو شخص اللہ تعالیٰ کے احکام کو یاد رکھے۔ اور حضرت ابوہریرہؓ کی ایک حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص شروع دن میں چار رکعتیں (اشراق کی) پڑھ لے وہ اواب حفیظ ہے (قرطبی)

وَجَاۗءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ ۔ ابوبکر وراق فرماتے ہیں کہ منیب کی علامت یہ ہے کہ حق تعالیٰ کی عظمت و ادب کو ہر وقت مستحضر رکھتا ہو، اس کے سامنے متواضع اور عاجزی سے رہے اور اپنی نفسانی خواہشات کو چھوڑ دے۔ (معارف مفتی اعظم)

ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝

یہ دن ہے ہمیشہ رہنے کا ☆

☆ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "اس دن جس کو جو ملا سو ہمیشہ کے لئے ہے اس سے پہلے ایک بات پر ٹھہراؤ نہ تھا"۔ (تفسیر عثمانی)

**خلود کا اعلان:** شیخین نے حضرت ابن عمرؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اہل جنت جنت میں اور اہل دوزخ دوزخ میں چلے جائیں گے اور دوزخی ... تو جنت اور دوزخ کے درمیان ایک اعلان کرنے والا اعلان کرے گا اے دوزخ والو (تم کو) موت نہیں آئے گی اے جنت (والو تم کو) موت نہیں۔ ہر شخص اس میں ہمیشہ رہے گا جس میں وہ ہے۔

بخاری نے حضرت ابوہریرہؓ کی مرفوع روایت سے بیان کیا ہے کہ کہا جائے گا اے اہل جنت ہمیشہ ہمیشہ رہنا ہے موت نہیں (آئے گی) اور اے دوزخ والو (یہیں) ہمیشہ رہنا ہے موت (کبھی) نہیں (آئے گی)۔ (تفسیر مظہری)

لَهُمْ مَّا يَشَاۗءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝

ملے گا ان کو جو چاہیں وہاں اور ہمارے پاس ہے کچھ زیادہ بھی ☆

**بے گمان و بے قیاس انعامات:** یعنی جو چاہیں گے وہ ملے گا اور ہمارے ہاں وہ چیزیں بھی ہیں جو ان کے خیال میں بھی نہیں آتیں اور ان کی لذت بے قیاس اور حسن ... "ولدینا مزید" سے یہ غرض ہو کہ ہمارے پاس بہت ہی کچھ ... کتنی ہی نعمتیں ... (تفسیر عثمانی)

**"مزید" کا مطلب:** یعنی جنت میں جن کا تصور کسی کے دل میں بھی نہ آیا ہو ... حضرت جابرؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جنت کے اندر تم میں سے کسی کو یہ مرتبہ ہوگا کہ (اللہ کی طرف سے) حکم ہوگا کہ (اپنی) تمنا کر، وہ بھی تمنا (اپنے دل میں) کرے گا ارشاد ہوگا کیا تم نے اپنی تمنا کر لی وہ کہے گا جی ہاں اللہ فرمائے گا تمہاری سب ... (دیا جاتا) ہے ... حضرت ابوہریرہ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک طویل حدیث بیان فرمائی جس میں یہ بھی تھا کہ اللہ فرمائے گا میں نے اپنے بندوں سے یہ وعدہ کر لیا ہے کہ جس آدمی کو میں جنت میں داخل کروں گا اس کے لئے وہ تمام چیزیں مہیا کر دوں گا جن کو اس کا دل چاہے گا اور آنکھیں لذت اندوز ہوں گی۔

حضرت ابوبکرؓ اور حضرت حذیفہؓ نے فرمایا مزید سے مراد ہے اللہ کا دیدار۔ مسلم اور ابن ماجہ نے حضرت صہیبؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب جنت والے جنت میں چلے جائیں گے تو اللہ فرمائے گا کیا تم چاہتے ہو کہ میں تم کو کچھ مزید دوں اہل جنت عرض کریں گے (اے ہمارے رب) کیا تو نے ہمارے چہروں کو روشن نہیں کر دیا کیا تو نے ہم کو جنت میں داخل نہیں کر دیا کیا تو نے دوزخ سے ہم کو نہیں بچا لیا (اس کے بعد ...)

نعمت ہو سکتی ہے۔ اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس کا جواب نفی سے ہوگا اور چہرہ جنہوں کے ہونٹوں کی طرح جنت کے طلب سے نہ جائے گا تو یہ سب سے بڑی نعمت اہل جنت کو جب نہیں ہوگی اس کے بعد حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے آیت ذیل تلاوت فرمائی لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ۔

ابن مردویہ نے حضرت ابو موسیٰ اشعری اور حضرت کعب بن عجرہ اور حضرت ابی بن کعب کی روایت سے ہوا ہی مرفوعاً اور بیہقی نے حضرت انس کی روایت سے مرفوعاً۔ نے حضرت ابو ہریرہ کی روایت سے بیان کیا اور یہ حدیث حضرت ابوبکر صدیق حضرت ابن عباس حضرت حذیفہ اور حضرت ابن مسعود وغیرہ سے بھی مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت کے دن اللہ ایک منادی کو حکم دے گا کہ اس کی ندا سے آخر تک سب لوگ سن لیں گے۔ اے اہل جنت اللہ نے تم سے کچھ بھی چیز اور بڑھائی کا وعدہ کیا تھا وہ بھی جنت ہے اور تم کو بھی دیدار حق نصیب ہوا (تفسیر مظہری)

ابن کثیر فرماتے ہیں کہ یہ حدیث بھی ہے کہ اہل جنت کے پاس سے ایک بادل گزرے گا جس میں سے ندا آئے گی کہ تم کیا چاہتے ہو؟ جو چیز جو تمہاری خواہش ہو گی اس سے برسے گی۔ حضرت کثیر فرماتے ہیں کہ میں اس مرتبہ میں ہوں گا اور کہوں گا کہ خوبصورت خوش لباس نوجوان کنواریاں برسائی جائیں۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں تمہارا جس پرندے کو جی چاہے گا وہ اسی وقت بھنا ہوا سامنے آ جائے گا۔ مسند احمد میں ایک مرفوع حدیث میں ہے کہ اگر جنتی اولاد چاہے گا تو ایک ہی ساعت میں حمل، بچہ اور بچے کی جوانی ہو جائے گی۔ امام ترمذی اسے غریب حسن کہتے ہیں اور ترمذی میں یہ بھی ہے کہ جس طرح یہ چاہے گا ہو جائے گا۔ اور آیت میں ہے لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ۔ صہیب بن سنان رومی فرماتے ہیں اس زیادتی سے مراد اللہ کریم کے چہرے کی زیارت ہے۔ حضرت انس بن مالک فرماتے ہیں ہر جمعہ کے دن انہیں دیدار باری تعالیٰ ہوگا یہی مطلب مزید کا ہے۔ مسند شافعی میں ہے حضرت جبرائیل علیہ السلام ایک سفید آئینہ لے کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آئے جس کے بیچ میں ایک نکتہ تھا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے پوچھا یہ کیا ہے؟ فرمایا یہ جمعہ کا دن ہے جو خاص آپ کو اور آپ کی امت کو بطور فضیلت کے عطا فرمایا گیا ہے۔ سب لوگ اس میں تمہارے پیچھے ہیں یہود بھی اور نصاریٰ بھی۔ تمہارے لئے اس میں بہت کچھ خیر و برکت ہے۔ اس میں ایک ایسی ساعت ہے کہ اس وقت اللہ تعالیٰ سے جو مانگا جائے مل جاتا ہے۔ ہمارے ہاں اس کا نام یوم المزید ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے پوچھا یہ کیا ہے؟ فرمایا تیرے رب نے جنت الفردوس میں ایک کشادہ مکان بنایا ہے جس میں مشک کے ٹیلے ہیں جمعہ کے دن اللہ تعالیٰ جن جن فرشتوں کو چاہے اتارتا ہے اس کے ارد گرد نورانی منبر ہوتے ہیں جن پر انبیاء علیہم السلام رونق افروز ہوتے ہیں۔ شہداء اور صدیق لوگ ان کے

پیچھے ان مشکی ٹیلوں پر ہوں گے۔ اللہ عزوجل فرمائے گا کہ میں نے اپنا وعدہ سچا کر دیا ہے اب مجھ سے جو چاہو مانگو۔ یہ سب کہیں گے ہمیں تیری خوشی اور رضامندی مطلوب ہے۔ اللہ فرمائے گا یہ تو تمہیں دے چکا۔ میں تم سے راضی ہو گیا اس کے سوا بھی تم جو چاہو گے پاؤ گے اور میرے پاس اور زیادہ ہے۔ پس یہ لوگ جمعہ کے مشتاق رہیں گے کیونکہ انہیں بہت سی نعمتیں اسی دن ملتی ہیں یہی وہ دن ہے جس دن تمہارا رب عرش پر مستوی ہوا اسی دن حضرت آدم علیہ السلام پیدا کئے گئے اور اسی دن قیامت آئے گی۔ اسی طرح اسے حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ نے کتاب الام میں بھی وارد کیا ہے۔ امام ابن جریر نے اس آیت کی تفسیر کے موقع پر ایک بہت بڑا اثر وارد کیا ہے جس میں بہت سی باتیں غریب ہیں۔ مسند احمد میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں جنتی ستر سال تک ایک ہی طرف متوجہ بیٹھا رہے گا پھر ایک حور آئے گی جو اس کے کندھے پر ہاتھ رکھ کر اسے اپنی طرف متوجہ کرے گی وہ اتنی خوبصورت ہو گی کہ اس کے رخسار میں اسے اپنی شکل اس طرح نظر آئے گی جیسے آئینہ میں وہ جو زیورات پہنے ہوئے ہوگی ان میں کا ایک ایک ادنیٰ موتی ایسا ہوگا کہ اس کی چمک سے سارا دنیا منور ہو جائے۔ وہ سلام کرے گی یہ جواب دے کر پوچھے گا تم کون ہو؟ وہ کہے گی میں ہوں جسے قرآن میں مزید کہا گیا تھا۔ اس پر ستر حلے ہوں گے لیکن تاہم اس کی خوبصورتی اور چمک دمک اور صفائی کی وجہ سے باہر سے ہی پنڈلی کا گودا نظر آئے گا اس کے سر پر جڑاؤ تاج ہوگا جس کا ادنیٰ موتی مشرق و مغرب کو روشن کر دینے کے لئے کافی ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ

اور کتنی تباہ کر چکے ہم ان سے پہلے جماعتیں

هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا

کہ ان کی قوت و سطوت بھی ان سے بڑھ کر تھی پھر لگے کریدنے

فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾

شہروں میں کہیں ہے بھاگ جانے کو ٹھکانا

کفار اقوام کی بربادی: پہلے کفار کی تکذیب اخروی کا بیان تھا درمیان میں ان کے مقابلہ پر اہل جنت کے انعام کا ذکر کیا۔ اب پھر کفار کی بربادی کا ذکر کرتے ہیں کہ یہ قوت سے پہلے دنیا میں بہت سی شریر اور سرکش قوموں کو تباہ کر چکے ہیں جو ان سے بھی زیادہ قوت والی تھیں اور بہت سی اقوام کفار سے جو تعداد میں اور جنہوں نے بڑے بڑے شہر آباد کئے تھے پھر جب عذاب الٰہی آیا تو بھاگ جانے اور بچنے کو زمین پر کہیں ٹھکانا نہ ملا۔ مطلب یہ ہے کہ

عذاب کے احتساب میں ان سے پہلے کتنی ہی قومیں ہلاک ہوئیں جو سخت تھیں تو کیا انہوں نے کوئی بھاگنے کی جگہ پائی "وهذا هو المعروض الترجمة والاول ما اختاره جمهور المفسرين" (بالاختصار از مظہری)

**إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن**
بیشک اس میں سوچنے کی جگہ ہے اس کو

**كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ**
جس کے اندر دل ہے یا لگائے کان

**وَهُوَ شَهِيدٌ ۝**
دل لگا کر

نصیحت پانے والے دو قسم کے لوگ ہیں: یہاں جو بات فرمائی گئی ہے وہ بالکل حق ہے، اس میں غور و فکر کرنے والے وہی لوگ نصیحت حاصل کرتے ہیں جن کے دل ہیں یا جو حاضر دماغ ہو کر بات کو سنتے ہیں اور کان لگا کر سنتے ہیں کیونکہ یہاں دو قسم کے لوگ مراد ہیں، ایک وہ جو خود سمجھدار ہوں اور دوسرے وہ جو دوسروں کی بات پر توجہ کے ساتھ کان لگا کر غور کریں اور حاضر دماغ ہو کر سنیں۔ (تفسیر مظہری)

**یہاں کون سا دل مراد ہے:** یعنی اس شخص کے لئے جس کا دل تمام شاغلوں سے پاک صاف ہو، تجلیات ربانی کو قبول کرنے کی صلاحیت رکھتا ہو، اللہ کی یاد میں زندہ رہتا ہو اور غیر اللہ کی طرف متوجہ نہ ہو، اسی کی طرف اشارہ ہے حدیث قدسی میں (اللہ نے فرمایا) نہ میری زمین مجھے سما سکتی ہے نہ میرا آسمان مجھے سما سکتا ہے لیکن مومن بندے کے دل میں میری سمائی ہو سکتی ہے۔

صوفیائے کرام کی اصطلاح میں یہاں قلب کے یہی معنی مراد ہیں۔

حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا قلب سے مراد عقل ہے۔ بعض اہل علم کے نزدیک قلب سے مراد (عبرت پذیر) دل ہے جو حقائق پر غور کرتا ہے (یعنی دل جو نظر سے نہیں دیکھتا)

**شہید کا معنی:** یعنی یہ سورۃ اس شخص کے لئے عبرت اور موعظت ہے جس کے قلب سلیم ہو یا قرآن کو بغور سنے اور حاضر قلب ہو (یعنی صورت حضور قلب والے کی طرح سنے) غافل نہ ہو۔

وہ شہید بمعنی شاہد ہے، یعنی قرآن کو دل سے سنے اور اس کی تصدیق کرے۔ ظاہر قرآن سے نصیحت لینا اور باطن سے عبرت حاصل کرنا۔

**قاضی ثناء اللہ پانی پتی کا ارشاد:** ... (اور سمجھدار دل والوں کے لئے) یعنی ان لوگوں کے لئے نصیحت ہے جن کا دل زندہ ہو اور عبرت حاصل کرنے والا ہو۔ اس آیت کا حاصل وہی ہے جو حدیث کا مضمون ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا احسان یہ ہے کہ تم اپنے رب کی اس طرح عبادت کرو گویا تم اسے دیکھ رہے ہو اگر تم اس کو نہیں دیکھ رہے ہو (تو کم از کم اتنا خیال رکھو کہ) وہ تم کو دیکھ رہا ہے۔ جس طرح نماز کے سامنے حاضر ہونے کا تصور رکھا جاتا ہے وہی مراد ہے۔

بعض مفسرین نے فرمایا کہ یہاں قلب سے مراد دل ہے۔ اس کا حاصل یہ ہے کہ یہ بات کہ دل عقل کا محل ہے اس آیت کے پیش نظر ہے کیونکہ قرآن میں جو کچھ بیان کیا گیا ہے اس سے نصیحت و عبرت حاصل کرنا اسی شخص کا کام ہے جس میں عقل ہو یا عقل ہو مگر سننے کی صلاحیت رکھتا ہو۔

**وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ**
اور ہم نے بنائے آسمان اور زمین

**وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ**
اور جو کچھ ان کے بیچ میں ہے چھ دن میں

اور اس کا بیان پہلے بھی گزر چکا ہے۔ (تفسیر مظہری)

**وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝**
اور ہم کو نہ ہوئی کچھ تکان

دوبارہ پیدا کرنا تو سب سے آسان ہے کیونکہ پہلی مرتبہ پیدا کرنے سے تھکاوٹ نہیں ہوئی تو دوبارہ پیدا کرنے سے کیا تکان ہو سکتی ہے۔ (تفسیر مظہری)

**سبب نزول:** حاکم نے حضرت ابن عباسؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ یہودی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور آسمانوں اور زمین کی تخلیق کے متعلق سوال کیا۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اللہ نے زمین کو اتوار اور پیر کے دن اور پہاڑوں کو اور جو کچھ ان میں ہے منگل کے دن، اور درختوں کو اور پانی کو اور شہروں کو اور آبادی اور ویرانی کو بدھ کے دن، اور جمعرات کے دن آسمان کو اور جمعہ کے دن ستاروں کو اور سورج کو اور چاند کو اور فرشتوں کو پیدا کیا جمعہ کے دن کی تین ساعتیں باقی تھیں۔ (پھر) پہلی ساعت میں اوقات موت کو پیدا کیا کہ کون کس وقت مرے گا، دوسری ساعت میں ہر اس چیز پر آفت ڈالی جس سے لوگ فائدہ اٹھاتے ہیں اور تیسری ساعت میں آدم کو پیدا کیا اور جنت میں بسایا اور ابلیس کو حکم دیا کہ آدم کو سجدہ کرے اور تیسری ساعت کے آخر میں آدم و ابلیس کو جنت سے نکال دیا۔

یہودیوں نے دریافت کیا کہ محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) پھر کیا ہوا؟ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا پھر اللہ عرش پر مستوی ہو گیا۔ یہودیوں نے کہا (آپ نے پورا بیان نہیں کیا) بیان میں نقص ہے اگر آپ بیان مکمل کر دیتے تو صحیح ہو جاتا۔ اس کے بعد اللہ نے آرام لیا۔ یہ سن کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو شدید غصہ آگیا اور آیت نازل ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

**فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ**

سو آپ صبر کرتے رہیں جو وہ کہتے ہیں اور پاکی بولتے رہو

**بِحَمْدِ رَبِّكَ**

خوبیاں اپنے رب کی

آپ صبر کرتے رہیں یعنی ان کی سوزی باتوں کو سن لے تو اپنا۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم غمگین نہ ہوں بلکہ ان کی بے ہودہ باتوں پر صبر کرتے رہیں اور اپنے پروردگار کی یاد میں دل لگائے رکھیں جو قادر مطلق ہے آسمان کو پیدا کرنے والا اور ہر چیز کے بنانے اور بگاڑنے پر قدرت رکھتا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

علیٰ مَا يَقُوْلُوْنَ۔ یعنی یہودیوں کے اس قول پر کہ اللہ تھک گیا تھا اس نے آرام لیا، صبر کیجئے۔ یا مشرک جو انکار قیامت کرتے ہیں اس پر صبر کیجئے۔ کیونکہ جو خدا بغیر تھکے عالم کو پیدا کر سکتا ہے وہ ان کو دوبارہ زندہ کرنے اور ان سے انتقام لینے پر بھی قدرت رکھتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

**قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ**

پہلے سورج کے نکلنے سے اور پہلے

**الْغُرُوْبِ ۚ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ**

ڈوبنے سے اور کچھ رات میں بول اس کی پاکی ☆☆

عبادت و قبولیت کے اوقات: یوں تو ہر وقت اللہ کی یاد کے قابل ہیں، ان میں دعا اور عبادت بہت قبولیت والی ہے اور بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ ابتداء میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم پر تین ہی نمازیں یعنی فجر اور عصر اور تہجد بیرون واجب تھی ان تینوں وقتوں کو خصوصی فضل و شرف حاصل ہے۔ نماز یا تسبیح وغیرہ سے ان اوقات کو معمور رکھنا چاہئے۔ حدیث میں ہے "علیکم بالغدوۃ والروحۃ وشیء من الدلجۃ" بعض نے کہا "قبل الطلوع" سے نماز فجر "قبل الغروب" سے ظہر و عصر اور "من اللیل" سے مغرب و عشاء مراد ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

نماز فجر اور عصر کی تاکید: مسند احمد میں ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں بیٹھے ہوئے تھے آپ نے چودھویں رات کے چاند کو دیکھا اور فرمایا تم اپنے رب کے سامنے پیش کئے جاؤ گے اور اسے اس طرح دیکھو گے جیسے اس چاند کو دیکھ رہے ہو جس کے دیکھنے میں کوئی دھکا پیل نہیں۔ پس اگر تم سے ہو سکے تو سورج نکلنے سے پہلے کی اور سورج ڈوبنے سے پہلے کی نماز میں مغلوب نہ ہو جایا کرو۔ پھر آیت وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ پڑھی۔ یہ حدیث بخاری و مسلم میں بھی ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

نماز تہجد: اور کچھ رات (کے حصے) میں بھی آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر ابتداء میں واجب کی گئی تھی ایک سال تک۔ پھر جس کے بعد فرض منسوخ ہو گیا اور جب امت کے حق میں منسوخ کر دیا گیا اور جب معراج کی شب پانچ نمازیں فرض ہو گئیں تو اکثر مفسرین کی رائے کے مطابق ہر ایک سے اس کا وجوب منسوخ کر دیا گیا۔ مگر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اس کی پابندی ہمیشہ کرتے تھے۔ پس کا مرواجب کی طرح تھی کہ کسی رات آپ سفر یا بیماری کے باعث قیام نہ کر سکتے تو اس کی قضا کے طور پر ظہر سے قبل بارہ رکعت ادا فرما لیتے۔ (مواہب الرحمن)

**وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ**

اور پیچھے سجدہ کے ☆

☆ یعنی نماز کے بعد بھی تسبیح و تہلیل کرنا چاہئے یا نوافل مراد ہوں جو فرائض کے بعد پڑھے جاتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ۔ حضرت عمرؓ نے اس کی تفسیر میں فرمایا کہ سجود سے مراد فرض نمازیں ہیں اور "اَدْبَارَ السُّجُوْدِ" سے مراد وہ تسبیحات پڑھنا ہے جس کی فضیلت ہر نماز کے بعد حدیث مرفوع میں آئی ہے۔

## فرض نماز کے بعد تسبیحات کی فضیلت

حضرت ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص ہر فرض نماز کے بعد ۳۳ مرتبہ سبحان اللہ، ۳۳ مرتبہ الحمد للہ، ۳۳ مرتبہ اللہ اکبر اور ایک مرتبہ **لا الٰہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ لہ الملک ولہ الحمد وھو علیٰ کل شیء قدیر** پڑھا کرے تو اس کی خطائیں معاف کر دی جائیں گی اگرچہ وہ دریا کی موجوں کے برابر ہوں (رواہ البخاری و مسلم) اور ادبار السجود سے مراد وہ سنتیں بھی ہو سکتی ہیں جو فرض نمازوں کے بعد احادیث صحیحہ میں آئی ہیں۔ (مظہری، احکام القرآن)

**وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ**

اور کان رکھ جس دن پکارے پکارنے والا نزدیک کی

قَرِيبٍ (۴۱)

نزدیک سے ٭

نداء قریب: یعنی جس صور پھونکا جائے گا بیت المقدس کے پتھر پر سے گے نزدیک کی جگہ سے مطلب ہے کہ اس کی آواز ہر جگہ نزدیک سے گی اور سب کو یکساں سنائی دے گی باقی صور پھونکنے کے سوا اور بھی ندائیں حق تعالیٰ کی طرف سے اس روز ہوں گی جیسا کہ بہت سے مواقع پر ظاہر ہے صور ہے واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

پکارنے والے کی پکار: ابن عساکر نے بروایت زید بن جابر شافعی اس آیت کی تفسیر میں بیان کیا ہے کہ (قیامت کے دن) اسرافیل صخرۂ بیت المقدس پر کھڑے ہو کر کہیں گے اے بوسیدہ ہڈیو! اے پارہ پارہ ہو جانے والے گوشت! اللہ تم کو حکم دیتا ہے کہ فیصلہ حساب کے لئے جمع ہو جاؤ۔

کلبی نے کہا زمین کے دوسرے حصے آسمان سے بیت المقدس اٹھارہ میل آسمان کے قریب ہے۔

یوم تشققون: یعنی اس روز بحکم خدا مردے قبروں سے نکل کر ... تمام اشیاء (پتھر وغیرہ) بحکم خدا حق کے سامنے مثل زندوں کی طرح ہیں۔ تمام موجودات کو (خواہ بے حس، بے شعور اور غیر ذی جسم یا ذی جسم یا شعور) کسی نہ کسی طرح کی زندگی ضرور حاصل ہے۔

## عذاب قبر روح اور جسم دونوں کو ہوتا ہے

فائدہ (اہل حق) کا یہ مسئلہ بالکل صحیح ہے کہ عذاب قبر روح و جسم دونوں پر ہوتا ہے بیہقی نے حضرت انس کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے منقول ہے کہ بدر کے دن کھڑے ہو کر قریش کو فرمایا (نیکی اور عذاب) قبر تمہارے سبب سے کیا تھا کیا تم نے پا لیا جو تم سے تمہارے رب نے وعدہ (یعنی عذاب کا وعدہ) کیا تھا میں نے تو اس کو سچ پایا۔

حضرت عمر نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم آپ بے جان جسموں کو کس طرح خطاب کر رہے ہیں؟ فرمایا: میں جو کچھ کہہ رہا ہوں تم ان کو ان سے زیادہ نہیں سنتے لیکن وہ مجھے جواب نہیں دے سکتے۔

قرطبی نے کہا صور کی آواز جس سے مردے زندہ ہو جائیں گے پہلی اور بھی جائے گی اللہ کی آواز زندہ کرنے کے لئے ہوگی اور اس کے بعد کی آواز قبروں سے باہر نکالنے کے لئے زندہ کرنے والی آواز تو وہ (مردے) نہیں سنیں گے لیکن قبروں سے نکالنے کی آواز کو سنیں گے۔ حلیمی نے کہا احتمال ہے کہ جو حکم ہم اسرافیل میں اول دو شروع ہے یہی ہیں۔

میں کہتا ہوں اوپر ذکر کیا جا چکا ہے کہ اسرافیل ہڈیوں اور کھالوں کو خطاب کریں گے مردوں کو خطاب نہیں کریں گے۔ اور وہ کہتے ہیں کہ کوئی فائدہ نہیں۔ (تفسیر مظہری)

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ

جس دن سنیں گے چنگھاڑ تحقیق وہ ہے

يَوْمُ الْخُرُوجِ (۴۲)

دن نکل پڑنے کا ٭

صیحۃ: یعنی جس دن وہ سب صور پھونکنے کی آواز سنیں گے یہ سب دن ہے جس دن قبروں سے نکل پڑیں گے۔ (تفسیر حقانی)

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ (۴۳)

ہم ہیں جلاتے اور مارتے اور ہماری طرف ہے سب کو پہنچنا ٭

## موت و حیات اللہ کے ہاتھ میں ہے

یعنی بہرحال موت و حیات سب خدا کے ہاتھ میں ہے اور ہر چیز کو آخرکار اسی کی طرف لوٹ کر جانا ہے۔ کوئی اس سے نکل نہیں سکتا (تفسیر عثمانی)

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ

جس دن زمین پھٹ کر نکل پڑیں وہ سب دوڑتے ہوئے

ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ (۴۴)

یہ اکٹھا کرنا ہم کو آسان ہے ٭

یوم حشر: یعنی زمین پھٹے گی اور مردے اس سے نکل کر میدان حشر کی طرف دوڑیں گے خدا تعالیٰ سب اگلوں پچھلوں کو ایک میدان میں اکٹھا کر دے گا اور ایسا کرنا اس کو کچھ مشکل نہیں۔

یوم تشقق: یعنی مردوں کو زندہ کر کے اس روز اٹھایا جائے گا سب حساب کے لئے ان کو پیش کیا جائے گا اور زمین پھٹ کر وہ تیزی سے باہر نکل آئیں گے۔

ذلک: یہ کام سب کا نکالنا ہمارے لئے آسان ہے۔ یعنی ان کو جمع کرنا اور حساب کے لئے لانا اللہ ہی کے لئے آسان ہو سکتا ہے جو ہر چیز کا عالم اور قادر ہے۔ اس کو کسی کام میں مشغولیت دوسرے کاموں سے اس کو غافل نہیں کر سکتی۔ اور کسی ذات صرف اللہ کی

ہے اس لئے جنت اور دوزخ اس کے لئے دشوار نہیں۔ اللہ سب نیک اور رحمت میں فرمایا ہے رسالتمآب ﷺ نے ... (تفسیر مظہری)

**منادی کس طرف ہوگا:** حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ بیت المقدس ملک شام کی طرف ہوگا جہاں حضرت بیت المقدس پر اسرافیل علیہ السلام منادی کریں گے۔

جامع ترمذی میں حضرت معاویہ بن حیدہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے دست مبارک سے ملک شام کی طرف اشارہ کرتے ہوئے فرمایا یہاں سے اس طرف (یعنی شام کی طرف) تم سب اٹھائے جاؤ گے کچھ لوگ سوار ہوں گے، بعض کو چہروں کے بل گھسیٹ کر قیامت کے روز جمع کیا جائے گا۔ (قرطبی)

**حضرت قتادہ کی دعا:** حضرت قتادہ اس آیت کو پڑھ کر یہ دعا کرتے تھے اللّٰھم اجعلنا ممن یخاف وعیدک ویرجو موعودک یا بار یا رحیم یعنی یا اللہ ہمیں ان لوگوں میں داخل فرما جو آپ کی وعید سے ڈرتے ہیں اور آپ کے وعدے کے امیدوار رہتے ہیں اے وعدہ پورا کرنے والے اے رحمت والے۔ (معارف القرآن)

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ

ہم خوب جانتے ہیں جو کچھ وہ کہتے ہیں اور نہیں

عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ

ہے تو ان پر زور کرنے والا سو تو سمجھا قرآن سے

مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ

جس کو ڈر ہو میرے ڈرانے سے ۞

**آپ قرآن سناتے رہیں:** یعنی جو لوگ منکر ہیں انکار کرتے اور ایسی باتیں کہتے ہیں ... ہم کو سب معلوم ہے جو کچھ وہ کہتے ہیں آپ کا منصب نہیں کہ زبردستی سے ہر ایک کو منوا کر چھوڑیں ہاں قرآن سنا کر ان کو نصیحت اور فہمائش کرتے رہیے جو اللہ کے ڈرانے سے ڈرتے ہیں ان کو ... پہنچا دینا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**سبب نزول:** عمرو بن قیس ملائی کی وساطت سے ابن جریر نے حضرت ابن عباس کا بیان نقل کیا ہے کہ لوگوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے درخواست کی کہ اگر آپ ہم کو (عذاب سے) ڈراتے رہیں تو بہتر ہوگا۔ اس پر آیت نازل ہوئی۔ حضرت قتادہ سے مرسل روایت بھی اسی طرح آئی ہے۔

تم سورۃ ق والحمد للہ۔ (تفسیر مظہری)

جو شخص اس کو خواب میں پڑھے تو اس کی تعبیر یہ ہے کہ اس کا پڑھنے والا زمین کی نباتات میں سے جس قدر چاہے حاصل کرے گا اور جو سب کی مراد حاصل کر دے گا۔ (ابن سیرین)

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

سورۃ ذاریات مکہ میں نازل ہوئی اور اس کی ساٹھ آیتیں اور تین رکوع ہیں

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے)

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝

قسم ہے ہواؤں کی جو بکھیر دیتی ہیں اڑا کر پھر اٹھانے والیاں بوجھ

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝

پھر چلنے والیاں نرمی سے پھر بانٹنے والیاں حکم سے ۞

**قیام قیامت کی شہادتیں:** یعنی ان ہواؤں کی جو خاک وغیرہ اڑاتی ہیں اور جو بھاری بادل بنتی ہیں پھر ان میں پانی ہوتا ہے اس بوجھ کو اٹھائے پھرتی ہیں پھر بارش کے قریب نرم ہوا چلتی ہے پھر اللہ کے حکم کے موافق بارش کی جس جگہ جتنا حصہ ہوتا ہے وہ تقسیم کرتی ہیں ان ہواؤں کی قسم کھاتا ہے۔ بعض علماء نے "ذاریات" سے ہوائیں "حاملات" سے بادل "جاریات" سے کشتیاں اور "مقسمات" سے فرشتے مراد لئے ہیں گویا یہ قسم کی ترتیب نیچے سے اوپر کو ہوئی اور حضرت علی رضی اللہ عنہ وغیرہ سے منقول ہے کہ "ذاریات" ہوائیں "حاملات" بادل "جاریات" کشتیاں اور "مقسمات" فرشتے ہیں جو اللہ کے حکم سے رزق وغیرہ تقسیم کرتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**صبیغ کا قصہ:** بزار میں ہے صبیغ تمیمی امیر المومنین حضرت عمر کے پاس آیا اور کہا بتاؤ ذاریات سے کیا مراد ہے؟ فرمایا ہوا اور اگر میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے نہ سنا ہوتا تو میں کبھی نہ کہتا۔ پوچھا مقسمات؟ فرمایا فرشتے اور اسے بھی میں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے سن رکھا ہے پوچھا جاریات سے کیا مطلب ہے؟ فرمایا کشتیاں یہ بھی اگر میں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے نہ سنا ہوتا تو تجھ سے نہ کہتا پھر حکم دیا کہ اسے سو کوڑے لگائے جائیں۔ چنانچہ اسے کوڑے مارے گئے اور ایک مکان میں رکھا گیا جب زخم اچھے ہو گئے تو بلوا کر پھر کوڑے پٹوائے اور سوار کرا کر حضرت ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ کو لکھ بھیجا کہ یہ کسی مجلس میں نہ بیٹھے

جائے۔ چنانچہ اس کے بعد حضرت ابو موسیٰؓ کے پاس آ کر اس نے پوری قسمیں کھا کر انہیں یقین دلایا کہ اب میرے خیالات کی پوری اصلاح ہو چکی ہے۔ جو مرض اس میں وہ بدعقیدگی کی بیماری تھی جو چھٹ گئی۔ چنانچہ حضرت ابو موسیٰؓ نے جناب امیر المومنینؓ کی خدمت میں اس کی اطلاع دی اور ساتھ ہی یہ بھی لکھا کہ میرا خیال ہے کہ اب واقعی ٹھیک ہو گیا ہے۔ اس کے جواب میں دربار خلافت سے فرمان پہنچا کہ پھر انہیں مجلس میں بیٹھنے کی اجازت دے دی جائے۔ امام ابوبکر بزارؒ فرماتے ہیں اس کے دو راویوں میں کلام ہے پس یہ حدیث ضعیف ہے۔ ٹھیک بات یہ معلوم ہوتی ہے کہ یہ حدیث بھی موقوف ہے یعنی حضرت عمرؓ کا اپنا فرمان ہے مرفوع حدیث نہیں امیر المومنینؓ نے اسے پٹوایا تھا اس کی وجہ یہ تھی کہ اس کی بدعقیدگی آپ پر ظاہر ہو چکی تھی اور اس کے یہ سوالات ازروئے انکار اور مخالفت کے تھے واللہ اعلم۔ صبیغ کے باپ کا نام عسل تھا اور اس کا یہ قصہ مشہور ہے جسے پورا پورا حافظ ابن عساکرؒ لائے ہیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝ |
| بیشک جو وعدہ کیا جاتا ہے تم سے سچ ہے |
| وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۝ |
| اور بیشک انصاف ہونا ضرور ہے☆ |

**انجام کار آخرت ہے:** یعنی یہ ہواؤں اور بارش وغیرہ کا نظام شاہد ہے کہ آخرت کا وعدہ سچا اور انصاف ہونا ضروری ہے۔ جب اس دنیا کا یہ ہوا کہ بے نتیجہ نہیں ہوتی تو کیا اتنا بڑا کارخانہ یونہی بے نتیجہ چلا جائے؟ یقیناً اس کا کوئی عظیم الشان انجام ہوگا اسی کو آخرت کہتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝ |
| قسم ہے آسمان جالی دار کی☆ |

**آسمان کا نظم و نسق:** یعنی صاف، شفاف، خوبصورت، مضبوط اور چمکدار آسمان کی قسم جس پر ستاروں کا جال بچھا معلوم ہوتا ہے اور جس پر ستاروں کی اور فرشتوں کی راہیں پڑی ہوئی ہیں (تفسیر عثمانی)

**حبک کا معنی:** صاحب قاموس نے لکھا ہے حبک مضبوط بناوٹ والے اشہب کپڑے کی ساخت میں خوبصورت آثار، حبک الرمل ریت کی دھاریاں، حبک کا واحد حباک ہے جیسے کتب کا واحد کتاب۔ حبک الماء پانی کی لہریں حبک الشعر گھونگریالے بال ... (تفسیر مظہری)

ابن جریرؒ کی ایک حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں تمہارے پیچھے کذاب مکار ہے اس کے سر کے بال پیچھے کی طرف سے حبک حبک ہیں یعنی گھونگر والے ہیں۔ ابو صالح فرماتے ہیں حبک سے مراد شدت ... خصیف کہتے ہیں مراد خوش منظر ہے۔ حسن بصریؒ فرماتے ہیں اس کی خوبصورتی اس کے ستارے ہیں۔ حضرت عبداللہ بن عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں اس سے مراد ساتواں آسمان ہے۔ ممکن ہے آپ کا مطلب یہ ہو کہ قائم رہنے والے ستارے اسی آسمان میں ہیں۔ اکثر علمائے ہیئت کا بیان ہے ... واللہ اعلم۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝ |
| تم پڑ رہے ہو ایک جھگڑے کی بات میں |
| يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ۝ |
| اس سے باز رہے وہی جو پھیرا گیا ☆ |

**قیامت میں جھگڑا حماقت ہے:** یعنی قیامت اور آخرت کی بات میں خواہ مخواہ جھگڑے ڈالتے ہیں۔ کوئی اس کو تسلیم کرتا ہے ... اس سچی بات سے وہی شخص باز رہتا ہے جس کی قسمت ہی پھری ہوئی ہو اور جس کو سعادت کے راستہ سے پھیر دیا گیا ہے وہ اس چیز کے تسلیم اور قبول کرنے سے بچتا باز رہتا ہے ورنہ اگر صرف آسمان کے نظم و نسق میں غور کرے تو یقین ہو جائے کہ اس مسئلہ میں جھگڑنا محض حماقت ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ ۝ |
| مارے پڑے اٹکل دوڑانے والے☆ |

**اٹکل دوڑانے والے:** یعنی دین کی باتوں میں محض اٹکل دوڑاتے ہیں اور محض اپنے ظن و تخمین سے قطعیات کا انکار کرتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۝ |
| وہ جو غفلت میں ہیں بھول رہے☆ |

**غفلت کے اسباب:** یعنی دنیا کے مزوں نے آخرت سے بالکل غافل کر رکھا ہے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۝ |
| پوچھتے ہیں کب ہے دن انصاف کا ☆ |

کافروں کی ہنسی ☆ یعنی ان کا مذاق اور ہنسی کے طور پر پوچھتے ہیں کہ بدلہ کا دن کب آئے گا؟ قیامت کب ہوگی؟ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ |
| جس دن وہ آگ پر الٹے سیدھے پڑیں گے |
| ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَٰذَا الَّذِي |
| چکھو مزہ اپنی شرارت کا یہ ہے جس کی |
| كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ |
| تم جلدی کرتے تھے |

کافروں کو تنبیہ ☆ یعنی حق تعالیٰ کی طرف سے ان کو جواب دیا گیا کہ تم جو اس قدر بے صبری سے پوچھتے ہو، جب تم آگ میں الٹے سیدھے کئے جاؤ گے اور خوب جلا تپا کر کہا جائے گا کہ اب اپنی شرارت اور شرارت کا مزہ چکھو جس دن کی جلدی مچا رہے تھے وہ آ گیا۔ (تفسیر عثمانی)

حکیم الامت: یہ قول بطور تمثیل کے اس وقت ہے جب آخرت کی خوشی کی تمثیل بطور عتاب کے اس میں ظاہر ہو۔ ان کا قول اقتباس کرتے ہوئے فرمایا یَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ۔ حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی تھانوی قدس اللہ سرہ العزیز فرماتے ہیں یہ اسی طرز کا ہے جیسے کسی مجرم کے سامنے پھانسی کا حکم سنایا جائے ... (بقیہ عبارت ناقابلِ خواندگی) ... مناسب ہوا کہ فرمایا جائے يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ۔ (مسائل السلوک)

| |
|---|
| إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ |
| بے شک ڈر والے باغوں میں ہیں اور چشموں میں |
| آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ |
| اپنے رب کی دین لیتے ہوئے |

متقیوں کو خوشخبری ☆ یعنی بڑی خوشی اور رغبت سے قبول کرتے ہیں جو ان کے پروردگار نے ارزانی فرمائی ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ |
| وہ تھے اس سے پہلے نیکی والے |

محسنین ☆ یعنی دنیا میں نیکیاں سمیٹ کر لائے تھے۔ آج ان کا نیک پھل مل رہا ہے۔ آگے ان کی نیکیوں کی قدرے تفصیل ہے۔ (تفسیر عثمانی)

تنبیہ: حضور خاطر اور قلوب کے حضور سے عبادت کیا کرتے تھے اور اکثر ذکر و شغل میں مشغول رہا کرتے تھے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا |
| وہ تھے رات کو تھوڑا |
| يَهْجَعُونَ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ |
| سوتے اور صبح کے وقتوں میں |
| يَسْتَغْفِرُونَ |
| معافی مانگتے تھے |

متقیوں کی نیکیاں ☆ یعنی رات کا اکثر حصہ عبادت الٰہی میں گزارتے۔ پھر سحر کے وقت جب رات ختم ہونے کو آتی اللہ سے اپنی تقصیرات کی معافی مانگتے کہ الٰہی حق کچھ بھی ادا نہ ہو سکا، اپنی رحمت سے معاف فرما دیجئے۔ کثرت عبادت ان کو مغرور نہ کرتی تھی بلکہ جس قدر بندگی میں ترقی کرتے ہوئے خشیت و خوف بڑھتا جاتا تھا۔ (تفسیر عثمانی)

يَهْجَعُونَ۔ مضارع کا صیغہ ہے۔ ہجوع کا معنی ہے رات کا سونا۔

قَلِيلًا۔ منصوب ہے مفعول مطلق یعنی رات کو تھوڑے وقت وہ سوتے تھے، رات کے کچھ حصہ میں وہ تھوڑی سی نیند لے لیتے تھے باقی رات کا زیادہ حصہ نماز پڑھتے رہتے تھے۔

پوری رات عبادت کرنے والے: بیہقی نے بحوالہ سعید بن جبیر حضرت ابن عباس کا قول نقل کیا ہے کہ آیت کی تشریح یہ ہے کہ کوئی رات نہیں گزرتی تھی کہ وہ اس کے کسی حصہ میں نماز نہ پڑھتے ہوں شروع رات میں یا درمیان شب میں پڑھتے تھے۔ قرأت میں ... پوری رات کم ہی سوتے تھے۔ مراد یہ ہے کہ پوری رات نہیں سوتے۔

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ۔ اور آخر شب میں استغفار کیا کرتے تھے۔

اللہ تعالیٰ کی عنایتیں: حضرت ابوہریرہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی

اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ہر رات کو جب رات کا ایک تہائی حصہ باقی رہ جاتا ہے اللہ تعالیٰ آسمان دنیا کی طرف نزول اجلال فرماتا ہے اور ارشاد فرماتا ہے میں بادشاہ ہوں کون ہے جو مجھ سے دعا کرے اور میں اس کی دعا قبول کروں کون ہے جو مجھ سے مانگے اور میں اس کو عطا کروں کون ہے جو مجھ سے گناہوں کی معافی کا طالب ہو اور میں اس کو معاف کر دوں۔ (متفق علیہ)

مسلم کی روایت میں ہے پھر اللہ اپنے دونوں ہاتھ پھیلاتا ہے اور فرماتا ہے کون ہے جو ایسی ذات کو قرض دے جو نہ ظالم ہے نہ محتاج یہاں تک کہ فجر طلوع ہو جاتی ہے۔

## حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی نماز تہجد اور استغفار

حضرت ابن عباسؓ کی صحیح روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم رات سے اٹھ کر تہجد پڑھتے استغفار کرتے اور کہتے تھے اے اللہ! تیرے ہی لئے ستائش (زیبا) ہے آسمانوں کا اور زمین کا اور ان کی کائنات کا تو ہی قائم رکھنے والا ہے تیرے ہی لئے حمد ہے آسمانوں کا زمین کا اور ان کی موجودات کا تو ہی مالک ہے تیرے ہی لئے تعریف (زیبا) ہے تو ہی حق ہے تیرا وعدہ حق ہے تیرا (ملنا) یعنی تیری ملاقات حق ہے تیرا کلام حق ہے اور جنت حق ہے اور دوزخ حق ہے انبیاء حق ہیں محمد حق ہیں قیامت حق ہے اے اللہ میں تیرا ہی فرمانبردار ہوں تجھی پر ایمان رکھتا ہوں تجھی پر میرا بھروسہ ہے تیری ہی طرف میں رجوع کرتا ہوں تیری ہی مدد سے میں دشمنوں کا مقابلہ کرتا ہوں تیری ہی جناب میں (فیصلہ کے لئے) لے جاتا ہوں تو میرے سب گناہ جو میری طرف منتقل ہوتے ہیں میرے اگلے پچھلے اور پوشیدہ وظاہر گناہ اور جنہیں تو مجھ سے زیادہ جانتا ہے معاف فرما دے تو ہی آگے بڑھانے والا اور پیچھے ہٹانے والا ہے بلاشبہ سب سے پہلا اور سب کے بعد تو ہی ہے، تیرے سوا کوئی معبود نہیں اور تیرے سوا کوئی قابل پرستش نہیں۔ (متفق علیہ)

**قبولیت دعا کا عمل:** حضرت عبادہ بن صامتؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص رات سے اٹھے اور کہے۔ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ اس کے بعد کہے رب اغفرلی یا فرمایا پھر دعا کرے تو اس کی دعا قبول ہوتی ہے اس کے بعد وضو کر کے نماز پڑھے تو نماز قبول کی جائے گی (رواہ البخاری) ترجمہ: اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں وہ تنہا ہے اس کا کوئی شریک نہیں اسی کی حکومت ہے اسی کے لئے ہر تعریف (زیبا) ہے اور وہ ہر شے پر قدرت رکھتا ہے۔ اللہ پاک ہے اللہ کے لئے ہر تعریف زیبا ہے اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں۔ اللہ سب سے بڑا ہے سوا اللہ کی مدد کے نہ کوئی طاقت ہے اور نہ قوت وہ بلند ہے بڑا ہے۔ اے میرے رب مجھے معاف کر دے یا فرمایا پھر دعا کرے تو۔

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی دعا جو شبانہ

حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جب رات سے بیدار ہوتے تو کہتے۔ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِي وَأَسْأَلُكَ رَحْمَتَكَ اللّٰهُمَّ زِدْنِي عِلْمًا وَلَا تُزِغْ قَلْبِي بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنِي وَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ۔ (رواہ ابوداؤد) (تفسیر مظہری)

حضرت ابن عباسؓ، قتادہ، مجاہد وغیرہ ائمہ تفسیر نے اس جملے کا مطلب حرف ما کو نافیہ قرار دے کر یہ بتایا ہے کہ رات کا تھوڑا سا حصہ بھی ایسا نہیں ہوتا جس میں وہ سوتے ہوں بلکہ عبادت نماز وغیرہ میں مشغول رہتے ہیں اس مفہوم کے اعتبار سے وہ سب لوگ اس کا مصداق ہو جاتے ہیں جو رات کے کسی بھی حصے میں عبادت کر لیں خواہ شروع میں یا آخر میں یا درمیان میں۔

## اس آیت کا مصداق

حضرت انسؓ اور ابو العالیہ نے اس کا مصداق ان لوگوں کو قرار دیا جو مغرب و عشاء کے درمیان نماز پڑھتے ہیں اور امام ابو جعفر باقرؒ نے فرمایا کہ جو لوگ عشاء کی نماز سے پہلے نہ سوئیں وہ بھی اس میں داخل ہیں (مظہری)

## اپنے عمل کا اہل جنت وجہنم کے اعمال سے موازنہ

حضرت حسن بصریؒ نے بنو تمیم کے ایک شخص سے نقل کیا ہے کہ وہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے اپنے عمل کا اہل جنت کے اعمال سے موازنہ کیا تو یہ دیکھا کہ وہ ایسا کچھ تو ہم سے بہت بلند و بالا اور ممتاز ہے۔ وہ ایک ایسی قوم ہے کہ ہمارے اعمال ان کے پاس بھی نہیں پہنچتے کیونکہ وہ رات میں بہت کم سوتے ہیں عبادت کرتے ہیں پھر میں نے اپنے اعمال کا اہل جہنم کے اعمال سے موازنہ کیا تو دیکھا کہ وہ اللہ و رسول کی تکذیب کرنے والے قیامت کا انکار کرنے والے ہیں (جن چیزوں سے مومن نے بچنے کو کہا ہے) اس لئے ہمارے اعمال ان دونوں کے بیچ میں ہیں اہل جنت سے بہت پیچھے ہیں اور (بحمد اللہ) اہل جہنم کے مرتبے سے بلند ہیں۔ تو معلوم ہوا کہ ہمارا اپنے عمل کے اعتبار سے وہ درجہ ہے جن کا قرآن کریم نے ان الفاظ سے ذکر فرمایا ہے۔ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا یعنی وہ لوگ جنہوں نے اچھے برے اعمال خلط ملط کر رکھے ہیں تو ہم میں بہتر آدمی وہ ہے جو کم از کم اسی طبقے کی صف میں رہے۔

**حضرت زیدؒ کا فرمان:** عبد الرحمن بن زید بن اسلم فرماتے ہیں کہ بنو تمیم کے ایک شخص نے میرے والد سے کہا کہ اے ابو اسامہ ہم اپنے اندر وہ صفت نہیں پاتے جو اللہ تعالیٰ نے متقین کے لئے ذکر فرمائی ہے۔ یعنی (كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ) کیونکہ ہمارا حال تو یہ ہے کہ قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا نَقُومُ "یعنی رات میں بہت کم جاگتے اور عبادت کرتے ہیں" میرے

والد نے اس کے جواب میں فرمایا: "بشارت ہے اس شخص کے لئے جس کو نیند آ دے تو سو جاوے مگر جب بیدار ہو تو تقویٰ اختیار کرے۔ (معارف مفتی اعظم)

## سلامتی کے ساتھ جنت میں داخل ہونے کا عمل

حضرت عبداللہ بن سلام رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں جب شروع شروع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ شریف تشریف لائے تو لوگ آپ کی زیارت کے لئے ٹوٹ پڑے میں اس مجمع میں تھا واللہ آپ کے مبارک چہرے پر نگاہ پڑتے ہی مجھ کو تو یقین ہو گیا۔ یہ نورانی چہرہ کسی جھوٹے انسان کا نہیں ہو سکتا۔ سب سے پہلی بات جو حضور کریم صلی اللہ علیہ وسلم کا میرے کان میں پڑی تھی کہ آپ نے فرمایا: اے لوگو کھانا کھلاتے رہو اور صلہ رحمی کرتے رہو اور سلام کیا کرو اور راتوں کو جب لوگ سوئے ہوئے ہوں نماز ادا کرو تو تم سلامتی کے ساتھ جنت میں داخل ہو جاؤ گے۔

## جنت کے محلات کس کے لئے ہیں:

مسند احمد میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ جنت میں ایسے بالاخانے ہیں جن کے اندر کا حصہ باہر سے اور باہر کا حصہ اندر سے نظر آتا ہے یہ سن کر حضرت ابوموسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا یا رسول اللہ یہ کن کے لئے ہیں؟ فرمایا ان کے لئے جو نرم کلام کریں اور مسکینوں کو کھلاتے پلاتے رہیں اور جب لوگ سوتے ہوئے ہوں یہ نماز میں رات گزارتے رہیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

وَفِيٓ أَمْوَٰلِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَٱلْمَحْرُومِ

اور ان کے مال میں حصہ تھا مانگنے والوں کا اور ہارے ہوئے کا

## متقیوں کی انسان دوستی

"یا ہوا" سے زکوٰۃ ہے اور مانگنے والا محروم مطلب یہ ہے کہ انہوں نے زکوٰۃ کے علاوہ اپنے مال میں اپنی خوشی سے مانگنے والوں اور محتاجوں کا حصہ مقرر کر رکھا تھا جس کا التزام اس طرح ہے گویا ایک حق لازم سمجھا گیا۔ (تفسیر عثمانی)

**سبب نزول:** ابن جریر اور ابن ابی حاتم کا بیان ہے کہ حسن بن محمد بن حنفیہ نے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک دستہ روانہ کیا ان لوگوں کے ہاتھ (کافروں کی) بکریاں لگ گئیں جب یہ لوگ بکریوں کے حصے بخرے کرنے سے فارغ ہو گئے تو کچھ (غریب) لوگ آ پہنچے ان مجاہدوں نے ان کو بھی کچھ حصہ دے دیا اس پر آیۃ مذکورہ نازل ہوئی۔

**محروم کون ہے؟** ابوداؤد وغیرہ میں ہے رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں سائل کا حق ہے گو وہ گھوڑے پر سوار ہو محروم وہ ہے جس کا کوئی حصہ بیت المال میں نہ ہو خود اس کے پاس کوئی کام کاج نہ ہو صنعت و حرفت یاد نہ ہو جس سے روزی کما سکے۔ ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں اس سے مراد وہ لوگ ہیں کہ کچھ سلسلہ کمانے کا کر رکھا ہے لیکن اتنا نہیں پاتے کہ انہیں کافی ہو جائے۔ حضرت ضحاک فرماتے ہیں وہ شخص جو مالدار تھا لیکن مال اس کا تباہ ہو گیا۔ چنانچہ یمامہ میں جب پانی کی طغیانی آئی اور ایک شخص کا تمام مال و اسباب بہا لے گئی تو ایک صحابی نے فرمایا یہ محروم ہے اور بزرگ مفسرین فرماتے ہیں محروم سے مراد وہ شخص ہے جو باوجود حاجت کے کسی سے سوال نہیں کرتا۔ ایک حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں مسکین وہ نہیں جو پھرا کرتے رہتے ہیں اور جنہیں ایک دو لقمے، ایک دو کھجوریں تم دے دیا کرتے ہو بلکہ حقیقتاً وہ لوگ مسکین ہیں جو اتنا نہیں پاتے کہ انکی حاجت پوری ہو جائے اپنا حال ایسا بنائے رکھتے ہیں کہ کسی پر ان کی حاجت والی کیفیت ظاہر ہو اور کوئی انکی صدقہ دے۔ (بخاری و مسلم) حضرت عمر بن عبدالعزیز رحمۃ اللہ علیہ مکہ شریف جا رہے تھے کہ راستے میں ایک کتا پاس آ کر کھڑا ہو گیا آپ نے ذبح کردہ بکری کا ایک شانہ کاٹ کر اس کی طرف ڈال دیا اور فرمایا لوگ کہتے ہیں یہ بھی محروم میں سے ہے۔ حضرت شعبی فرماتے ہیں میں تو عاجز آ گیا لیکن محروم کے معنی معلوم نہ کر سکا۔ امام ابن جریر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں محروم وہ ہے جس کے پاس مال نہ ہو خواہ وجہ کچھ بھی ہو۔ یعنی وہ شخص نہ کر سکا ہو کہ کھانے کا سلیقہ ہی نہ ہو یا کام ہی نہ چلتا ہو یا کسی آفت کے باعث جمع شدہ مال ضائع ہو گیا ہو۔ (تفسیر ابن کثیر)

وَفِي ٱلْأَرْضِ ءَايَٰتٌ لِّلْمُوقِنِينَ

اور زمین میں نشانیاں ہیں یقین کرنے والوں کے واسطے

وَفِيٓ أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ

اور خود تمہارے اندر سو کیا تم کو سوجھتا نہیں ☆

**غور و فکر** ☆ یعنی یہ شب بیداری، استغفار اور محتاجوں پر خرچ کرنا اس یقین کی وجہ سے ہونا چاہئے کہ خدا موجود ہے جزا دے گا اس کی کی نیکی ضائع نہیں کی جاتی اور یہ یقین وہ ہے جو آفاقی و انفسی آیات میں غور کرنے سے بسہولت حاصل ہو سکتا ہے انسان اگر خود اپنے اندر اور زمین کے حالات میں غور و فکر کرے تو بہت جلد اس نتیجہ پر پہنچ سکتا ہے کہ بیشک وہاں بڑا کسی ذی رنگ ہستی ضرور وسیلہ کر رہی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

**آیات آفاقی:** مطلب یہ ہے کہ زمین میں اہل یقین کے لئے (اللہ کی قدرت تامہ علم محیط اور ربوبیت و الوہیت کی) نشانیاں ہیں وہ ان نشانیوں کے قدرت کو اندھوں بہروں کی طرح دیکھ کر گزر نہیں جاتے بلکہ وہ آنکھوں سے دیکھ کر غور کرتے اور سوچتے ہیں کہ زمین کیسے پیدا ہوئی کیسے بچھائی گئی آدمیوں کے رہنے کے لئے اس کا کچھ خشک حصہ کیسے ابھار دیا گیا ہے زمین کے مختلف

اجزاء کی مختلف کیفیات حالات اور متضاد خاصیات کیسے اور کہاں ہیں جنہیں بھرت گزاشتہ یہ بیان کر دو کس طرح اور کس حکمت سے زیر اثر رہتے ہیں۔ زمین کے اندر جتنی جواہر کی کانیں ہیں جیسی پانی ہیں، زمین کے اوپر غیر محدود ان گنت جمادات اور حیوانات کا پھیلاؤ کتنا قابل فہم ہے یہ سب انواع، اجناس، کیفیات خاصیات اشکال اور الوان کا تعدد دلالت کر رہا ہے کہ ان کا کوئی بنانے والا ضرور ہے جو زبردست فاعل کل اور بے حد علم و قدرت کا مالک ہے۔ اسی نے اپنی رحمت اور حکمت سے ان چیزوں کو بنایا ہے۔ وہ سمجھتے ہیں کہ زمین پر اور زمین کی موجودات پر اللہ کی رحمت کی کیسی بارش ہو رہی ہے دیکھا جائے تو روزی اللہ کی طرف سے کس قدر برکتیں نازل ہو رہی ہیں اور موجودات ارضی کی ہر چیز اپنی ساری ضرورتوں اور حاجتوں کے لئے اللہ کی رحمت کے سامنے دست سوال پھیلا رہی ہے۔ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ۔

**آیات انفسی:** انسان عالم صغیر (چھوٹی دنیا) ہے اللہ کی قدرت حکمت صنعت اور ربوبیت کی جو نشانیاں عالم کبیر میں ہیں ابتداء تخلیق سے لے کر آخری ایام تک وہ ساری آیات انسان کے اندر ہیں۔ آغاز میں تخلیق انسانی بصورت نطفہ تھی۔ پھر نطفہ بستہ خون بنا پھر ایک گوشت کا ٹکڑا ہوا۔ پھر ہڈیوں بنائی گئیں۔ پھر ہڈیوں کے ڈھانچے کو گوشت کا لباس پہنایا گیا۔ پھر اس میں روح ڈالی گئی پھر بحالت باہر آنے کا راستہ بنایا گیا۔ باہر آنے کے بعد فراہمی غذا کا انتظام کیا گیا۔ پستان اور سے دودھ بہا نکالا گیا اور رفتہ رفتہ دوسری غذا اس کی طرف آنے اور کھانے کی رہنمائی کی گئی بول و براز اور دوسرے فضلے کو اس کے راستوں سے باہر پھینکا گیا۔

یہ تمام تدبیریں بقاء جسمانی کے لئے کی گئیں۔ اس سے آگے بقاء نسل بھی ضروری تھی تو قوت تولید و پیدا کیا گیا اور ایک جوڑے کے اتصال سے سابق کی طرح تیسرے انسان کو پیدا اور پیدا کیا گیا۔ پھر پیغمبروں کو بھیج کر اور آسمان سے کتابیں اتار کر سعادت کی طرف جانے کا صحیح راستہ دکھایا گیا۔

انسانوں کی ذہنیتوں یا صورتوں کا رنگوں کا عقلوں اور مزاجوں کا اختلاف و رائش کا۔ قبول حق کی صلاحیتوں کا راہ حق پر چلنے کی استعداد کا۔ پھر درجات قرب اور مراتب معرفت پر فائز ہونے کا عظیم الشان تفاوت اور تعدد یہ ساری صنعت اور بدیع قوتیں ہیں جو اہل بصیرت اور معرفت کو خوب غور کرنے اور بے ساختہ پکار اٹھتے ہیں تبارک اللہ احسن الخالقین۔

**آیات میں غور کرنے کا نتیجہ:** پھر ان اہل عرفان کے سامنے سے تجلیات ذاتیہ صفاتیہ اور انوار افعالیہ کے چہروں سے اسرار کے پردے ہٹ جاتے ہیں اسی کی تعبیر حدیث قدسی میں اس طرح فرمائی ہے بندہ نوافل کے ذریعے میرا قرب حاصل کرتا ہے آخر میں اس سے محبت کرنے لگتا ہوں جب میں اس سے محبت کرتا ہوں تو میں اس کے کان بن جاتا ہوں جن سے وہ

سنتا ہے اور اس کی آنکھیں بن جاتا ہوں جن سے وہ دیکھتا ہے۔ الحدیث

اس مرتبہ پر پہنچ کر عارف کہتا ہے شکر ہے اللہ کا جس نے ہم کو اس کی راہ بتائی اگر اللہ ہماری رہنمائی نہ کرتا تو ہم ہدایت یاب نہ ہوتے۔ ہمارے رب کے رسول حق لے کر آئے تھے۔ (تفسیر مظہری)

**وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿۲۲﴾**

اور آسمان میں ہے روزی تمہاری اور جو تم سے وعدہ کیا گیا

رزق اور جنت آسمان میں: دولتمند مانگنے والوں اور محتاجوں پر خرچ کرنے سے اس لئے نہیں ڈرنا چاہئے کہ خرچ کر کے ہم کہاں سے کھائیں گے اور نہ خرچ کر کے ان مساکین پر احسان جتلاؤ کیونکہ تمہاری سب کی روزی اور اجر و ثواب کے جو وعدے کئے گئے ہیں آسمان والے کے ہاتھ میں ہیں ہر ایک کی روزی پہنچ کر رہے گی کسی کے روکے سے نہیں رک سکتی۔ اور خرچ کرنے والوں کو ثواب بھی مل کر رہے گا حضرت شاہ صاحبؒ لکھتے ہیں کہ "آنے والی چیز بات ہے اس کا حکم آسمان ہی سے اترتا ہے"۔ (تفسیر عثمانی)

**آیت کا دوسرا معنی:** حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا اور مقاتل کا بھی یہی قول ہے کہ رزق سے مراد ہے رزق کے پیدا ہونے کا سبب یعنی بارش۔ اس تفسیر کی بناء اس مسئلہ پر ہے جو (ظاہر) شریعت میں آیا ہے کہ بارش آسمان سے نازل ہوتی ہے۔

**تیسرا معنی:** رزق کا اگر یہ معنی لیا جائے تو آیت وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ میں باہر اللہ کی قدرت کی آفاقی اور انفسی نشانیاں مراد ہوں گی جیسے چاند سورج ستارے اور ان کی رفتار طلوع و غروب اور جہان سے چھپ جانے والے منیر دمدار ستارے اور موسموں کے انقلابات وغیرہ ان ارضی و سماوی آیات میں غور کرنا اور ان سے اللہ کی قدرت پر استدلال کرنا درحقیقت اہل ایمان ہی کا حصہ ہے۔

پھر اس استدلال اور فہم و فکر پر جس رحمت اور برکت کا اللہ کی طرف سے فیضان ہوتا ہے اور اہل عرفان پر جو تجلیات کی بارش ہوتی ہے وہ بھی انہیں کشتیوں اور قسمتوں کا نصیب ہے اور جن کے دلوں پر اور گوش ہوش پر اللہ نے مہر کر دی ہے اور جن کی آنکھوں پر غفلت و جہالت کے پردے پڑے ہیں وہ اس نصیب اور اس فیضان و عرفان سے محروم ہیں۔ عارف رومیؒ نے کہا ہے۔

گر تو بد ہے بلت جان تو زیست
فی السماء رزقکم روزی کجاست

### قاضی ثناء اللہ صاحب پانی پتیؒ کا ارشاد

ان علماء کے یہ تینوں اقوال اس امر پر مبنی ہیں کہ خطاب کا رخ مومنوں

کی طرف بھی ہو اور کافروں کی طرف بھی اور دونوں گروہوں کو خطاب کیا جائے تو اس صورت میں آیت کا مطلب اس طرح ہوگا کہ تمہارا رزق اور وعدہ ثواب و عذاب (اعمال کی جزاء) کا وعدہ اور ذریعہ آسمان میں ہی مقرر ہے یہ مطلب نہیں کہ ثمرہ اخروی ثواب و عذاب اور جنت و دوزخ آسمان میں ہیں کیونکہ جنت تو آسمان پر ہے مگر دوزخ زمین کے نیچے ہے اس کی صراحت حدیث میں آ چکی ہے لیکن اگر خطاب صرف مؤمنین کو قرار دیا جائے تو اس تاویل کی ضرورت نہیں ہوگی کیونکہ مؤمنوں سے جنت اور ثواب کا وعدہ کیا گیا ہے اور جنت تو آسمان میں ہی ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ |
| سو قسم ہے رب آسمان اور زمین کی کہ یہ بات تحقیق ہے |
| مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ |
| جیسے کہ تم بولتے ہو ۞ |

یعنی جیسی یقینی ہے یہ بات کہ تم بولتے ہو (کوئی شبہ نہیں) اسی طرح یہ بھی یقینی ہے کہ رزق پہنچ کر رہے گا، قیامت قائم ہوگی، آخرت کے ثواب اور عذاب کے وعدے سب پورے ہو کر رہیں گے۔ "هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ" کی مناسبت سے حضرت ابراہیم علیہ السلام کی مہمان نوازی کا قصہ سناتے ہیں جو تمہید ہے حضرت لوط علیہ السلام کے قصہ کی۔ دونوں قصوں سے یہ بھی ظاہر ہوگا کہ اللہ تعالیٰ کا معاملہ دنیا میں مؤمنین کے ساتھ کیا ہے اور مکذبین کے ساتھ کیا ہے کھول کر دکھلا دیا گیا۔ (تفسیر عثمانی)

**دیہاتی کا قصہ:** اصمعی کا بیان ہے کہ میں بصرہ کی جامع مسجد سے آ رہا تھا سامنے سے ایک اعرابی آیا اور مجھ سے پوچھا تم کس قبیلے سے ہو؟ میں نے کہا اصمعی سے۔ بولا کہاں سے آ رہے ہو؟ میں نے کہا وہاں سے جہاں اللہ کا کلام پڑھا جاتا ہے۔ کہنے لگا مجھے بھی کچھ سناؤ۔ میں نے سورۃ والذاریات تلاوت کی جب آیت وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ پر پہنچا تو اعرابی نے کہا بس کرو، پھر وہ اٹھ کر اپنی اونٹنی کے پاس گیا اس کو نحر کیا اور گوشت آنے جانے والوں کو بانٹ دیا اور پھر اپنی کمان اور تلوار توڑ دی اور منہ موڑ کر چلا گیا۔

اس کے بعد جب میں ہارون رشید کے ساتھ حج کو گیا اور (مکہ میں) طواف کر رہا تھا تو اچانک ایک باریک آواز سے کسی نے مجھے پکارا، میں نے منہ موڑ کر دیکھا تو وہی اعرابی تھا۔ میں قریب گیا تو اس نے سلام کیا اور وہی سورت (الذاریات) سنانے کی فرمائش کی جب میں نے پڑھ کر سنائی اور اسی آیت پر پہنچا تو اس نے ایک چیخ ماری اور بولا ہم سے رب نے جو وعدہ کیا تھا ہم نے اس کو حق پایا، پھر کہنے لگا کیا اور کچھ آپ پڑھیں گے؟

میں نے اس سے کہا یہ حصہ بھی ہے فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ۔ اعرابی نے یہ سنتے ہی ایک چیخ ماری اور کہا سبحان اللہ رب جلیل کو کس نے غضبناک کر دیا کہ اس نے قسم کھائی، لوگوں نے اس کی بات کو سچا نہ مانا اس لئے قسم کھانے پر مجبور کیا۔ یہ لفظ تین بار کہے اور اسی کے ساتھ اس کی جان نکل گئی۔ (مدارک)

**نکتہ:** بلاغت کا تقاضا ہے کہ مخاطب کا ذہن جس قدر انکار کا ہو اسی قدر زور کے ساتھ کلام بھی اسی قدر تاکید سے پیش کیا جائے۔ اللہ نے اس جگہ کلام کی تاکید کے ساتھ بیان پر قسم کھائی، اِنَّ (تحقیقیہ) کا استعمال کیا۔ مزید یہ بھی ذکر کیا اور یہ بھی فرما لیا کہ یہ بات حق ہے عادۃً ظہور کلام کو نطق انسانی سے تشبیہ دی جو کہ یقینی محسوس حقیقت ہے۔ گویا اللہ کی طرف سے رزق کا جو وعدہ کیا گیا ہے انسان اس کا شدید منکر ہے اور رزق کے ملنے کے لئے انتہائی متفکر رہتا ہے حالانکہ اللہ نے فرما دیا ہے۔ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا۔ اللہ نے انسان کو جس چیز کا مکلف کیا ہے اور ایک ثواب و عذاب کہ جس سے وابستہ کیا ہے اس کی طرف سے غافل ہے۔ (تفسیر مظہری)

مِثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ۔ یعنی جس طرح تمہیں اپنے اپنے کلام کرنے میں کوئی شبہ نہیں ہے اسی طرح قیامت کا آنا بھی ایسا ہی یقینی ہے اور ظاہر ہے کہ اس میں کسی شک و شبہ کی گنجائش نہیں۔ انسان کے محسوسات جو دیکھنے سننے چکھنے چھونے اور سونگھنے سے متعلق ہیں ان سب میں سے اس جگہ نطق یعنی بولنے کو خاص طور سے (مخاطب بنانے) اس لئے کیا کہ دوسرے سب محسوسات میں بھی کبھی کسی مرض وغیرہ کے سبب سے التباس ہو جاتا ہے دیکھنے سننے میں غلطی ہو جاتی ہے، چکھنے والے ذائقہ محسوس نہیں ہوتا اور بعض اوقات خراب ہو کر بیٹھ جاتا ہے مگر نطق و گویائی ایسی چیز ہے جس میں کبھی کسی دھوکہ اور غلطی کا شائبہ نہیں ہوتا۔ (قرطبی، معارف مفتی اعظم)

| |
|---|
| هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ |
| کیا پہنچی ہے تجھ کو بات ابراہیم کے مہمانوں کی |
| الْمُكْرَمِيْنَ |
| جو عزت والے تھے ۲۴ |

حضرت ابراہیم کے مہمان یعنی فرشتے تھے جن کو ابراہیم علیہ السلام نے انسان سمجھا تھا اور عزت کی بات اللہ کے ہاں تو فرشتے معزز و مکرم ہیں ہی۔ کما قال "بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ"۔ (تفسیر حقانی)

مہمانوں کی تعداد ذکر نہیں ہے، مہمانوں کی تعداد میں اختلاف ہے

[illegible]

## مہمان کا اکرام

[illegible]

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا

[illegible]

قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ

[illegible]

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ

[illegible]

سَمِينٍ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا

[illegible]

تَأْكُلُونَ

[illegible]

**آداب مہمانی** [illegible]

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا

[illegible]

لَا تَخَفْ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ

[illegible]

[illegible]

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ

[illegible]

وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ

[illegible]

حضرت سارہ کا تعجب [illegible]

[illegible]

قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ إِنَّهُ

[illegible]

هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ

[illegible]

فرشتوں کا جواب [illegible]

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ

[illegible]

[illegible]

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ

[illegible]

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ

[illegible]

فرشتوں کا مقصد [illegible]

[illegible]

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ

[illegible]

عذاب [illegible]

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ

الْمُؤْمِنِينَ ۔ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا

غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ

نجات والا گھر [illegible]

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ

الْعَذَابَ الْأَلِيمَ

[illegible]

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ

بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ

فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ

[illegible]

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ

فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ

[illegible]

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ

[illegible]

| |
|---|
| الْعَقِيمَ ۝ مَا تَذَرُ مِن شَيْءٍ أَتَتْ |
| [illegible] |
| عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ۝ |
| [illegible] |

## عذاب کی آندھی

[illegible]

| |
|---|
| وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا |
| اور نشانی ہے ثمود میں جب کہا ان کو برت لو |
| حَتَّىٰ حِينٍ ۝ |
| [illegible] |

## حضرت صالح کی تنبیہ

[illegible]

| |
|---|
| فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ |
| [illegible] |
| الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنظُرُونَ ۝ فَمَا |
| [illegible] |

| |
|---|
| اسْتَطَاعُوا مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا |
| [illegible] |
| مُنتَصِرِينَ ۝ |
| [illegible] |

**قوم ثمود کی تباہی** [illegible]

| |
|---|
| وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ |
| اور ہلاک کیا نوح کی قوم کو اس سے پہلے تحقیق |
| كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ |
| [illegible] |

[illegible]

| |
|---|
| وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا |
| اور بنایا ہم نے آسمان ہاتھ کے بل سے اور ہم کو |
| لَمُوسِعُونَ ۝ |
| [illegible] |

**دلیل قدرت** [illegible]

[illegible]

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ

اور زمین کو ہم نے بچھایا سو کیا خوب بچھانے والے ہیں ہم

[illegible]

وَمِن كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ

اور ہر چیز کے بنائے ہم نے جوڑے

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

تاکہ تم دھیان کرو

[illegible]

فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ

سو دوڑو اللہ کی طرف میں تم کو اس کی طرف سے ڈر سنانے والا ہوں کھول کر

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُم

اور مت ٹھہراؤ اللہ کے ساتھ اور کسی کو معبود میں تم کو

مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ

اس کی طرف سے ڈر سنانے والا ہوں کھول کر

اللہ کی طرف دوڑو [illegible]

[illegible]

اللہ کی طرف دوڑنے کا مطلب [illegible]

[illegible]

كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم

اسی طرح ان سے پہلے لوگوں کے پاس

مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ

جو رسول آیا اس کو یہی کہا کہ جادوگر ہے یا

مَجْنُونٌ

دیوانہ

[illegible]

اَتَوَاصَوْا بِهٖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ

[illegible]

[illegible]

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ وَّذَكِّرْ

[illegible]

فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ

[illegible]

[illegible]

## حضرت علی رضی اللہ عنہ کا قول:

[illegible]

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

[illegible]

## تخلیق جن و انس کا مقصد

[illegible]

## حضرت علی رضی اللہ عنہ کا ترجمہ

[illegible]

## حضرت مجاہد رحمہ اللہ کا قول

[illegible]

## بعض حضرات کی رائے

[illegible]

گیا ہے۔ مقصد اور قرآنی موجود ہے مجبور نہیں ہیں، مقصود صرف یہی ہے کہ میری عبادت کے لیے پیدا کیا ہے کوئی اس استعداد کو بے معاصی اور شہوات میں ضائع کر دے۔ یہاں اس مضمون کی مثال وہ حدیث ہے جس میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ كُلُّ مَوْلُودٍ يُوْلَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ فَاَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهٖ وَيُنَصِّرَانِهٖ (یعنی ہر بچہ اسی فطرت پر پیدا ہوتا ہے پھر اس کے ماں باپ اس کو (اس فطرت سے ہٹا کر) یہودی یا نصرانی بنا دیتے ہیں کوئی بچہ فطرت پر پیدا ہونے سے مراد اکثر علماء کے نزدیک دین اسلام پر پیدا ہونا ہے) تو جس طرح اس حدیث میں بتلایا گیا ہے کہ ہر انسان کی فطرت اور اصل طور پر اسلام و ایمان کی استعداد و صلاحیت رکھی جاتی ہے لیکن اس کے ماں باپ اس صلاحیت کو ضائع کر کے کفر کے طریقوں پر ڈال دیتے ہیں اسی طرح اس آیت میں (الا لیعبدون) کا یہ مفہوم ہو سکتا ہے کہ جن و انس کی پیدائش میں اللہ تعالیٰ نے استعداد اور صلاحیت عبادت کی رکھی ہے۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم (معارف القرآن مفتی محمد شفیع)

| |
|---|
| مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ |
| میں نہیں چاہتا ان سے روزی اور نہیں چاہتا |
| اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ |
| کہ مجھ کو کھلائیں اللہ جو ہے وہی ہے روزی دینے والا |
| ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ۝ |
| زور آور مضبوط ☆ |

### اللہ روزی رساں ہے

یعنی ان کی بندگی سے میرا مقصد نہیں کہ مجھے کوئی نفع ہے میں وہ رب نہیں جو غلاموں سے کہے میرے لیے کما کر لاؤ یا میرے سامنے کھانا لا کر رکھو میری ذات ان چیزوں سے پاک ہے اور وہ بندوں میں سے اپنے لیے روزی کا طلب گار نہیں بلکہ وہ سب کو روزی پہنچاتا ہے بھلا مجھ جیسے روزی رساں ذات کو تمہاری خدمات کی کیا حاجت ہو سکتی ہے بندگی کا حکم صرف اس لیے دیا گیا ہے کہ تم میری شہنشاہی اور عظمت و کبریائی کا قولاً و فعلاً اعتراف کرتے رہو تاکہ خصوصی الطاف و اکرام کے مورد و مستحق ہو۔

[illegible]

(تفسیر عثمانی)

### اللہ تعالیٰ کی برتر شان

خدا کا اپنے بندوں سے تعلق ایسا نہیں ہے جیسا دنیا کے آقاؤں کا اپنے غلاموں کے ساتھ ہوتا ہے۔ آقا چاہتے ہیں کہ ان کے غلام ان کو کما کر کھلائیں۔ ان کے مالک ہونے کی یہی غرض ہوتی ہے کہ ان سے فائدہ حاصل کریں۔ مگر خدا کی شان اس سے بہت بلند ہے۔

### اللہ تعالیٰ کو کھلانا پلانا:

ایک حدیث مبارک میں آیا ہے۔ اللہ فرمائے گا اے آدم کے بیٹے میں نے تجھ سے کھانا مانگا تو نے مجھے کھانا نہیں دیا۔ بندہ کہے گا اے رب میں تجھے کھانا کیسے دیتا تو تو رب العالمین ہے۔ اللہ فرمائے گا کیا تجھے معلوم نہیں کہ میرے فلاں بندے نے تجھ سے کھانا مانگا تھا تو نے اس کو نہیں کھلایا اگر تو اس کو کھلا دیتا تو مجھے اس کے پاس پاتا (مسلم) یا اسی مضمون کی حدیث بیان ہوئی۔

اس حدیث کی دوسری روایت میں اتنا اور بھی ہے جیسا کہ یہ آئے میری عبادت کر کے میں نے تجھ سے پانی مانگا تو نے مجھے پانی نہیں پلایا۔

### عبادت میں سستی نہ کرو:

مسند احمد میں حدیث قدسی ہے کہ اے ابن آدم میری عبادت کے لیے فارغ ہو جا میں تیرا سینہ تونگری سے بھر دوں گا اور تیری فقیری روک دوں گا اور اگر تو نے ایسا نہ کیا تو میں تیرے سینے کو اشتغال سے بھر دوں گا اور تیری فقیری کو ہرگز بند نہ کروں گا۔ ترمذی اور ابن ماجہ میں بھی یہ حدیث ہے اور امام ترمذی اسے حسن غریب کہتے ہیں۔

بعض آسمانی کتابوں میں ہے اے ابن آدم میں نے تجھے اپنی عبادت کے لیے پیدا کیا ہے پس تو اس سے غفلت نہ کر تیرے رزق کا میں ضامن ہوں تو اس کے پیچھے تکلیف نہ کر مجھے ڈھونڈ تو مجھے پا لے گا۔ جب تو نے مجھے پا لیا تو یقین مان کہ تو نے سب کچھ پا لیا اور اگر میں تجھے نہ ملا تو سمجھ لے کہ تمام بھلائیاں تو کھو چکا۔ تمام چیزوں سے زیادہ محبت تیرے دل میں میری ہونی چاہیے۔

### رزق کے لیے کوشش:

خالد کے دونوں بیٹے حضرت حبہ اور حضرت سواء فرماتے ہیں ہم آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ اس وقت آپ صلی اللہ علیہ وسلم کسی کام میں مشغول تھے کوئی دیوار بنا رہے تھے یا کسی چیز کو درست کر رہے تھے ہم بھی اس کام میں لگ گئے۔ جب کام ختم ہوا تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں دعا دی اور فرمایا سر ہلنے تک روزی سے مایوس نہ ہونا دیکھو انسان

[illegible]

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ

[illegible]

ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾

[illegible]

## ان کو بھی سزا ملے گی

[illegible]

[illegible]

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ

[illegible]

الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

[illegible]

## سزا کا دن

[illegible]

[illegible]

# تفسیر سورۂ طور مکیہ

**سورۂ طور کی فضیلت:** حضرت جبیر بن مطعمؓ فرماتے ہیں [illegible] سورۂ والطور [illegible]

[illegible]

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ

[illegible]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

[illegible]

وَالطُّورِ ﴿١﴾

قسم ہے طور کی ﴿١﴾

[illegible]

وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ﴿٢﴾ فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ﴿٣﴾

[illegible]

**لکھی ہوئی کتاب** [illegible]

[illegible]

## وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ

[illegible]

## وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ

[illegible]

## وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ

[illegible]

رات حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ لوگوں کی دیکھ بھال کے لئے نکلے تو ایک مکان سے کسی مسلمان کی قرآن خوانی کی آواز کان میں پڑی وہ سورۃ والطور پڑھ رہے تھے۔ آپ نے سواری روک لی اور کھڑے ہوکر قرآن سننے لگے۔ جب وہ اس آیت پر پہنچے تو زبان سے نکل گیا کہ رب کعبہ کی قسم سچی ہے پھر اپنے گدھے سے تو نیچے اتر پڑے اور دیوار سے ٹیک لگا کر بیٹھ گئے چلنے پھرنے کی طاقت نہ رہی دیر تک بیٹھے رہے جب ہوش و حواس ٹھکانے آئے تو اپنے گھر پہنچے لیکن خدا کے کلام کی اس آیت کا اثر اتنا تھا کہ آپ کی کمزوری کی یہ حالت تھی کہ مہینہ بھر تک بیمار پڑے رہے اور لوگ بیمار پرسی کو آتے تھے کسی کو معلوم نہ تھا کہ بیماری کیا ہے؟ رضی اللہ تعالیٰ عنہ (ابن کثیر)

| إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ |
|---|
| بے شک عذاب تیرے رب کا ہو کر رہے گا |
| مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ |
| اس کو کوئی نہیں ہٹانے والا |

**قدرت و عظمت الٰہی:** یعنی جن پر تمام چیزیں جن کی قسم کھائی شہادت دیتی ہیں کہ وہ خدا بہت بڑی قدرت و عظمت والا ہے پھر اس کی نافرمانی کرنے والوں پر عذاب کیوں نہیں آئے گا۔ کس کی طاقت ہے جو اس کے بھیجے ہوئے عذاب کو واپس کر دے۔ (تفسیر عثمانی)

## جبیر بن مطعم پر اس آیت کا اثر

حضرت جبیر بن مطعم فرماتے ہیں کہ میں مسلمان ہونے سے پہلے ایک مرتبہ مدینہ میں آیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بدر کے قیدیوں کے متعلق گفتگو کروں یہاں پہنچا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مغرب کی نماز میں سورۃ طور پڑھ رہے تھے آواز مسجد سے باہر تک آرہی تھی جب یہ آیت پڑھی إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ تو ایک دم میری یہ حالت ہوئی کہ گویا میرا دل خوف سے پھٹ جائے گا میں نے فوراً اسلام قبول کیا مجھے اس وقت یہ محسوس ہو رہا تھا کہ میں اس جگہ سے ہٹ نہیں سکوں گا کہ مجھ پر عذاب آجائے گا (قرطبی ملخصاً معارف مفتی اعظم)

**عذاب کی تاکید:** [illegible] کا مطلب یہ ہے [illegible] ہونے والا ہے وہ قیامت قریب [illegible] حساب اور جزا و سزا کا مرحلہ انسان سے [illegible] کے پیش نظر [illegible] کے لئے [illegible] ذہن میں [illegible]

کرتے ہوئے [illegible] کی جائے [illegible] (معارف القرآن)

| يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ |
|---|
| جس دن لرزے آسمان کپکپا کر |

## قیامت کی دہشت ناکیاں

یعنی آسمان لرز کر کپکپا کر پھٹ جائے گا۔ (تفسیر عثمانی)

| وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾ |
|---|
| اور پھریں پہاڑ چل کر |

یعنی پہاڑ اپنی جگہ چھوڑ دیں گے اور روئی کے گالوں کی طرح اڑتے پھریں گے۔ (تفسیر عثمانی)

| فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾ الَّذِينَ |
|---|
| سو خرابی ہے اس دن جھٹلانے والوں کو جو |
| هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ﴿١٢﴾ |
| باتیں بنانے میں کھیلتے ہیں |

## غافلوں کی ہلاکت

یعنی جو آج کھیل کود میں مشغول ہیں اور طرح طرح کی باتیں بناتے اور خرافات بکتے ہیں [illegible] (تفسیر عثمانی)

| يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ |
|---|
| جس دن کہ دھکیلے جائیں دوزخ کی طرف دھکیل کر |
| هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٤﴾ |
| یہ ہے وہ آگ جس کو تم جھوٹ بتلاتے تھے ☆ |

## ذلت کے ساتھ جہنم میں داخلہ

یعنی فرشتے ان کو ذلت سے دھکے دے کر دوزخ کی طرف لے جائیں گے اور پہنچا کر کہیں گے یہ وہ آگ ہے جس کو تم جھوٹ جانتے تھے۔ (تفسیر عثمانی)

| أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿١٥﴾ |
|---|
| اب بھلا یہ جادو ہے یا تم کو نہیں سوجھتا ☆ |

[illegible]

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ

پڑو اس کے اندر پھر تم صبر کرو یا نہ صبر کرو

سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا

[illegible]

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

[illegible]

اب کی صورت چھٹکارا نہیں [illegible]

[illegible]

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ

جو ڈرنے والے ہیں وہ باغوں میں ہیں اور نعمت میں

فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَ

[illegible]

وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ

بچایا ان کو ان کے رب نے دوزخ کے عذاب سے ☆

[illegible]

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْۗــــًٔا بِمَا كُنْتُمْ

کھاؤ اور پیو مزے سے بدلہ ان کاموں کا

تَعْمَلُوْنَ مُتَّكِـــِٕيْنَ عَلٰي سُرُرٍ

[illegible]

مَّصْفُوْفَةٍ ۚ

[illegible]

[illegible]

وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۙ وَالَّذِيْنَ

[illegible]

اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّــتُهُمْ بِاِيْمَانٍ

[illegible]

اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ

[illegible]

مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ

[illegible]

[illegible]

درجہ والوں سے کچھ کمی نہ فرما دی جائے۔ تمام ان بزرگوں نے اگر یہ ہو جزاء جزاء النوع نے ہے مال کا یقین کرنا متقیوں کے جوار میں رکھا جائیگا اور ممکن ہے بعض اہل علم ان کے مقام اور مرتبہ پر پہنچا دیا جائے جیسے کہ روایات سے ظاہر ہوتا ہے اور اس صورت میں یہ کہا جاتا ہے کہ ان کاملین کی کامل نیکیوں کا ثواب کاٹ کر نہیں دیا جائیگا۔ بس یہ محض اللہ کا فضل و احسان ہوگا کہ کمتر درجہ کو اونچا کر دیا اور کاملین کے مقام تک پہنچا دیا جائے۔ (مظہری) الخ سے "وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم" کا مطلب بیان کیا ہے جو قومی کی وجہ سے اس کے مناسب معلوم ہوتی ہے۔ "قالت الانصار: يا رسول الله، إن لكل قوم تبعا وإنا قد تبعناك فادع الله أن يجعل أتباعنا منا، قال النبي صلى الله عليه وسلم: اللهم اجعل أتباعهم منهم"۔ (تفسیر ابن)

**بچوں کا کیا ہوگا** ابن ابی شیبہ نے حضرت انسؓ کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا۔ میں نے اپنے رب سے نسل انسان کے لاہین (بچوں) کے متعلق مانگی کی کہ کھیلنے والے ہیں اللہ نے مجھے وہ عطا فرما دیئے (یعنی ان کو بخش دیا) ابن عبدالبر نے کہا کھیلنے والوں سے مراد بچے ہیں کیونکہ ان کے کام سے عقل نے کھیل کی طرح ہوتے ہیں۔ تم بھی کرم نے ان کو بیان کیا ہے۔ ابن جریر نے لکھا ہے کہ حضرت علیؓ نے فرمایا ہم نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے مشرکوں کے بچوں کے متعلق دریافت کیا فرمایا وہ جنت والوں کے خادم ہوں گے۔ ابن جریر نے ایک ہی حدیث حضرت ابن مسعودؓ سے مرفوعاً بھی بیان کی ہے طبرانی نے حضرت انسؓ کی روایت سے بھی یہی معنی حدیث نقل کی ہے بعض علماء کا مذہب ہے کہ مشرکوں کے بچوں کی بخشش کی جائے گی کیونکہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا اللہ ہی خوب جانتا ہے کہ وہ (جوان ہوکر) کیا کرنے والے ہوتے۔ تمام تحقیق میری اس حدیث کے آئی ہوئی۔

**مَا أَلَتْنَاهُم** یعنی ان کے باپوں کے اعمال کے ثواب میں ہم کوئی کمی نہیں کریں گے۔ مطلب یہ کہ مومن اولاد کو ان کے باپوں کے ساتھ شامل کر دینے اور درجہ میں ان کے ساتھ ملا دینے سے ان کے آباء کے اعمال کے ثواب میں کوئی کمی نہیں ہوگی (تفسیر طبری)

بزرگوں کے ساتھ نسبی تعلق آخرت میں بھی نفع دے گا بشرطیکہ ایمان۔ حضرت ابن عباسؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ مومنین صالحین کی ذریت و اولاد کو بھی ان کے درجہ میں پہنچا دیں گے۔ اگرچہ وہ عمل کے اعتبار سے اس درجہ کے مستحق نہ ہوں تاکہ ان بزرگوں کی آنکھیں ٹھنڈی ہوں۔ (رواہ الحاکم والبیہقی فی سننہ والبزار وابونعیم فی الحلیہ وابن مردویہ وابن جریر وابن ابی حاتم)۔ (تفسیر مظہری)

اور طبرانی نے حضرت سعید بن جبیرؓ سے روایت کیا ہے وہ کہتے ہیں کہ ابن عباسؓ نے فرمایا اور میرا گمان ہے کہ انھوں نے اس کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ

وسلم سے روایت کیا ہے کہ جب کوئی شخص جنت میں داخل ہوگا تو اپنے ماں باپ اور بیوی اور اولاد کے متعلق پوچھے گا وہ کہاں ہیں؟ اس سے کہا جائیگا کہ وہ تمہارے درجہ کو نہیں پہنچے (اس لئے ان کا جنت میں الگ مقام ہے) یہ شخص عرض کرے گا کہ اے میرے پروردگار میں نے جو کچھ عمل کیا اپنے لئے اور ان سب کے لئے کیا تھا تو حق تعالیٰ شانہ کی طرف سے حکم ہوگا کہ ان کو بھی اسی درجہ جنت میں ان کے ساتھ رکھا جائے گا۔ (ابن کثیر کا مفصل حصہ ختم)

**اولاد کے استغفار و دعا کا اثر:** مسند احمد میں حضرت ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ اپنے بعض نیک بندوں کا درجہ جنت میں اس کے عمل کی مناسبت سے بہت اونچا کر دیں گے تو یہ دریافت کرے گا کہ میرے پروردگار مجھے یہ مقام اور منصب کہاں سے مل گیا (میرا عمل تو اس قابل نہ تھا) تو جواب دیا جائے گا کہ تمہاری اولاد نے تمہارے لئے استغفار و دعا کی اس کا یہ اثر ہے۔ قال ابن کثیر اسنادہ صحیح ولم یخرجوہ من ہذا الوجہ ولکن لہ شاہد فی صحیح مسلم عن ابی ہریرۃ۔ (معارف مفتی اعظم)

## تین عمل جو مرنے کے بعد بھی ثواب پہنچاتے ہیں

صحیح مسلم میں ابو ہریرہؓ سے مروی ہے کہ ابن آدم کے مرتے ہی اس کے اعمال موقوف ہو جاتے ہیں لیکن تین عمل کہ وہ مرنے کے بعد بھی ثواب پہنچاتے رہتے ہیں۔ صدقہ جاریہ، علم دین جس سے نفع پہنچتا رہے نیک اولاد جو مرنے والے کے لئے دعاء خیر کرتی رہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ (۲۱) |
| ہر آدمی اپنی کمائی میں پھنسا ہے۔ ☆ |

### عدل کا ضابطہ

اوپر فضل کا بیان تھا یہاں عدل کا ضابطہ بتلا دیا۔ یعنی عدل کا مقتضا یہ ہے کہ جس آدمی نے جو کچھ بھلا برا عمل کیا اسی کے ساتھ ملا پائے۔ آگے یہ فضل ہے کہ وہ کسی کی کمیوں کو معاف فرما دے یا کسی کا درجہ بلند کر دے۔ (تفسیر عثمانی)

كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۔ یعنی ہر انسان اپنے عمل میں گرو ہوگا یہ نہیں ہوگا کہ کسی دوسرے کا گناہ اس کے سر ڈال دیا جائے یعنی جس طرح آیت سابقہ میں اولاد صالحین و صالحین کی خاطر سے درجہ بلند کیا گیا عمل صالح میں ترقی ہوگا۔ سیرت میں ایک کے گناہ کا عمل اثر دوسرے پر نہ پڑیگا۔ (ابن کثیر بلا روایت)

| |
|---|
| وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ |
| اور بڑھا دیا ہم نے ان پر میووں کا اور گوشت کا |

مِمَّا يَشْتَهُونَ

جس چیز کو ان کا جی چاہے

[illegible]

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا

چھینا جھپٹی کریں گے وہاں پیالے کی جس شراب میں

وَلَا تَأْثِيمٌ

اور نہ گناہ گاری

شرابِ طہور [illegible]

[illegible]

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ

اور ان کے ارد گرد ان کے غلام [illegible]

كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ

گویا وہ موتی ہیں جو ڈھکے رکھے تھے

غلمان [illegible]

**کم تر درجہ کا جنتی** [illegible]

[illegible]

**خادم و مخدوم کا حسن** [illegible]

[illegible]

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ

اور جنتی ایک دوسرے کی طرف

يَتَسَاءَلُونَ ‎۝ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي

آپس میں پوچھتے ہوئے ... کہیں گے ہم اس سے پہلے

أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ‎۝ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا

اپنے گھروں میں ڈرتے رہتے تھے، پس اللہ نے ہم پر احسان کیا

وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ‎۝ إِنَّا كُنَّا مِن

اور ہمیں بچا لیا گرم ہوا کے عذاب سے، ہم پہلے سے

قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ

اس کی عبادت کیا کرتے تھے، بیشک وہ محسن اور مہربان ہے

جنتیوں کی [illegible]

[illegible]

### حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کی دعاء

[illegible] فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ [illegible]

فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ

[illegible]

وَلَا مَجْنُونٍ

[illegible]

[illegible]

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَتَرَبَّصُ

[illegible]

بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ

[illegible]

[illegible]

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ

تو کہہ تم منتظر رہو کہ میں بھی تمہارے ساتھ

الْمُتَرَبِّصِينَ

[illegible]

[illegible]

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَٰذَا أَمْ هُمْ

[illegible]

قَوْمٌ طَاغُونَ

[illegible]

[illegible]

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ

[illegible]

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِثْلِهِ إِنْ كَانُوا

[illegible]

| |
|---|
| صٰدِقِيْنَ ۝ |
| سچے ہیں☆ |

## نہ ماننے کے ہزار بہانے

یعنی کیا یہ خیال ہے کہ پیغمبر کو جو کچھ شاعر یا کاہن یا مجنون کہتے ہیں، بلکہ اپنے دل سے گھڑ لیا ہے اور جھوٹ موٹ خدا کی طرف منسوب کر دیا۔ صرف نہ ماننے کے ہزار بہانے ہیں جو کسی ایک بات پر یقین نہیں۔ طرح طرح کے بے ہودہ احتمالات نکالا کرتے ہیں۔ منصف آدمی اتنا سمجھ لے اتنی بات کافی ہے کہ اگر ساری دنیا کی تمام طاقتوں کو جمع کر کے بھی اس قرآن کا مثل نہیں لا سکتے اور جیسے خدا کی ذات بے مثل ہے اسی طرح اس کے کلام جیسا کلام بنانا بھی کسی سے ممکن نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ |
| کیا وہ بن گئے ہیں آپ ہی آپ یا وہی ہیں |
| الْخَالِقُونَ ۝ أَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ |
| بنانے والے یا انہوں نے بنائے آسمانوں کو |
| وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ۝ |
| اور زمین کو؟ کوئی نہیں پر وہ یقین نہیں کرتے☆ |

## پیغمبر خدا کی بات کیوں نہیں مانتے

یعنی پیغمبر خدا کی بات کیوں نہیں مانتے، کیا ان کے وجود کا کوئی خدا نہیں جس کی بات ماننا ان کے ذمہ لازم ہو، یا بغیر کسی پیدا کرنے والے کے خود بخود پیدا ہو گئے ہیں؟ یا خود اپنے آپ کو خدا سمجھتے ہیں؟ کیا یہ خیال ہے کہ آسمان اور زمین ان کے بنائے ہوئے ہیں لہٰذا اس حکومت میں جو چاہیں کریں، کوئی ان کو روکنے ٹوکنے کا اختیار نہیں رکھتا۔ یہ سب خیالات باطل اور مہمل ہیں۔ وہ بھی دلوں میں جانتے ہیں کہ ضرور خدا موجود ہے جس نے ان کو اور تمام زمین و آسمان کو نیست سے ہست کیا۔ مگر اس علم کے باوجود جو ایمان و یقین مطلوب ہے اس سے محروم اور بے بہرہ ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ |
| کیا اُن کے پاس ہیں خزانے تیرے رب کے یا وہی |
| الْمُصَيْطِرُونَ ۝ |
| داروغہ ہیں☆ |

## کیا یہی منکر خزانوں کے مالک ہیں

یعنی کیا یہ خیال ہے کہ زمین و آسمان کو خدا کے بنا دینے کے بعد اس نے اپنے خزانوں کا مالک ان کو بنا دیا ہے؟ یا اس کے ملک اور خزانوں پر انہوں نے زور سے تسلط اور قبضہ حاصل کر لیا ہے؟ ایسے صاحب تصرف حاکم اور سرکار کسی کے مطیع و منقاد کیوں بنیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ |
| کیا اُن کے پاس کوئی سیڑھی ہے جس پر سن آتے ہیں |
| فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ |
| تو چاہیے کہ لے آئے جو سن آتا ہے اُن میں ایک |
| مُّبِينٍ ۝ |
| سند کھلی ہوئی☆ |

## کیا یہ منکر کوئی سند رکھتے ہیں

یعنی کیا یہ دعویٰ ہے کہ وہ سیڑھی لگا کر آسمان پر چڑھ جاتے اور وہاں سے ملاء اعلیٰ کی باتیں سن آتے ہیں؟ پھر جب ان کی رسائی براہ راست اس درجہ تک ہو تو کسی پیغمبر کا اتباع کرنے کی کیا ضرورت رہی۔ جس کا یہ دعویٰ ہو تو اسے اپنی سند اور ثبوت پیش کرے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۝ |
| کیا اُس کے یہاں بیٹیاں ہیں اور تمہارے یہاں بیٹے☆ |

☆ یعنی کیا (معاذ اللہ) خدا کو اپنے سے گیا گزرا سمجھتے ہیں کہ اپنے لیے بیٹے اور اس کے لیے بیٹیاں؟ اسی تقسیم سے ظاہر ہوتا ہے اور اس لیے اس کے احکام و ہدایات کے سامنے سر تسلیم خم کرنا اپنی کسر شان سمجھتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ |
| کیا تو مانگتا ہے اُن سے کچھ بدلہ سو اُن پر تاوان کا |
| مُّثْقَلُونَ ۝ |
| بوجھ ہے☆ |

## کیا آپ ان سے کوئی معاوضہ مانگتے ہیں

یعنی کیا یہ لوگ آپ کی بات اس لیے نہیں مانتے کہ خدا کے لیے آپ ان سے

[illegible]

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ

[illegible]

کیا ان پر وحی آتی ہے [illegible]

[illegible]

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ

[illegible]

كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ

[illegible]

**ان کے داؤ پیچ ان ہی پر پڑیں گے**

[illegible]

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ

[illegible]

اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ

[illegible]

کیا کوئی اور حاکم و معبود ہے؟ [illegible]

[illegible]

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ

[illegible]

سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ

[illegible]

یہ صرف ضد کی اور عناد کی [illegible]

[illegible]

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ

[illegible]

يُصْعَقُونَ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ

[illegible]

شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

[illegible]

ان معاندوں پر قہر برسے گا [illegible]

[illegible]

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ

[illegible]

ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

[illegible]

## ان بے خبروں کو پتہ چل جائے گا

[illegible]

**وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا**

[illegible]

آپ [illegible]

[illegible]

**وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ**

[illegible]

آپ تسبیح و تحمید [illegible]

[illegible]

## آیت کا مطلب اور کفارۂ مجلس

[illegible] سبحانک اللھم وبحمدک [illegible] استغفرک واتوب الیک [illegible]

[illegible] سبحانک اللھم وبحمدک لا الہ الا انت استغفرک واتوب الیک عملت سوءًا و ظلمت نفسی فاغفرلی انہ لا یغفر الذنوب الا انت [illegible]

[illegible] سبحانک اللھم وبحمدک لا الہ الا انت استغفرک واتوب الیک [illegible]

گناہوں کی بخشش [illegible]

[illegible] سبحانک اللھم وبحمدک [illegible]

[illegible]

تھے تو دس مرتبہ اللہ اکبر کہتے، دس بار الحمد للہ، دس بار استغفر اللہ کہتے تھے اور کہتے تھے اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَاھْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ۔ اور قیامت کے دن جائے قیام کی تنگی سے (اللہ کی) پناہ چاہتے تھے۔ ابوداؤد نے شریق ہوزنی کی وساطت سے حضرت عائشہ کا بیان نقل کیا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم رات سے اٹھتے تو دس بار تکبیر کہتے اور دس بار اللہ کی حمد کرتے اور دس بار سبحان اللہ وبحمدہ کہتے اور دس بار سبحان الملک القدوس کہتے۔ اور دس بار استغفار کرتے اور دس بار تہلیل کرتے (یعنی لا الٰہ الا اللہ کہتے) پھر دس بار کہتے۔ اللّٰھم انی اعوذبک من ضیق الدنیا وضیق یوم القیامۃ (اے اللہ! میں تیری پناہ چاہتا ہوں دنیا کی تنگی سے اور روز قیامت کی تنگی سے)۔

وَمِنَ الَّیْلِ فَسَبِّحْہُ۔ یعنی رات کے حصہ میں بھی۔ بعض نے کہا مغرب اور عشاء کی نماز مراد ہے۔ بعض نے کہا اس سے بظاہر تہجد مراد ہے۔ میں کہتا ہوں بظاہر تہجد مراد ہونا زیادہ صحیح ہے۔ تہجد میں نماز شب کا خصوصی ذکر اس لئے کیا کہ رات کی عبادت نفس پر زیادہ شاق ہوتی ہے اور دکھاوٹ کا شبہ کم ہوتا۔ (تفسیر مظہری)

وَمِنَ الَّیْلِ فَسَبِّحْہُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۝

اور رات میں بھی اس کی پاکی بولو اور پیٹھ پھیرتے وقت ستاروں کے۔

یعنی "رات کے حصہ" سے مراد شاید تہجد کا وقت ہو اور "ستاروں کے پیٹھ پھیرنے" کا وقت صبح کا وقت ہے جب کہ صبح کا اجالا ہو تو ستارے غائب ہونے شروع ہو جاتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

### فجر کی دو سنتیں

آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ صلوٰۃ فجر سے پہلے کی دو رکعتیں (یعنی دو سنتیں) دنیا و مافیہا سے بہتر ہیں۔ رواہ مسلم

یہ بھی حضرت عائشہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جتنی پابندی فجر کی دو رکعتوں کی کرتے تھے اور کسی (سنت) نماز کی نہیں کرتے تھے۔ متفق علیہ۔ (تفسیر مظہری)

تم سورۃ الطور وللہ الحمد والمنۃ

جو شخص قریب میں اس کی تلاوت کرے گا اس کی اولاد بہت ہو گی اور وہ اللہ تعالیٰ کی مرضی میں مرے گا اور وہ شخص صاحب علم و تقویٰ ہوگا۔ (تفسیر عزیزی)

## سورۂ نجم کی خصوصیات

سورۂ نجم پہلی سورت ہے جس کا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے مکہ مکرمہ میں اعلان فرمایا (رواہ عبداللہ بن مسعود قرطبی) اور مکی سب سے پہلی سورت ہے جس میں آیت سجدہ نازل ہوئی اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے سجدۂ تلاوت کیا اور اس سجدہ میں ایک عجیب صورت پیش آئی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ سورت مجمع عام میں تلاوت فرمائی جس میں مسلمان اور کفار سب شریک تھے جب آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے آیت سجدہ پر سجدہ کیا تو مسلمان تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے اتباع میں سجدہ کرتے ہی سب نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ سجدہ کیا تعجب کی چیز یہ پیش آئی کہ جتنے کفار و مشرکین موجود تھے وہ بھی سب سجدہ میں گر گئے صرف ایک متکبر شخص جس کے نام میں اختلاف ہے ایسا رہا جس نے سجدہ نہیں کیا مگر زمین سے ایک مٹھی مٹی کی اٹھا کر پیشانی سے لگالی اور کہنے لگا کہ بس یہی کافی ہے حضرت عبداللہ بن مسعود راوی حدیث فرماتے ہیں کہ میں نے اس شخص کو کفر کی حالت میں مرا ہوا دیکھا ہے (رواہ بخاری و مسلم واصحاب السنن، ابن کثیر ملخصاً) (معارف مفتی اعظم)

سُوْرَۃُ النَّجْمِ مَکِّیَّۃٌ وَّھِیَ اِثْنَتَانِ وَسِتُّوْنَ اٰیَۃً وَّفِیْھَا ثَلٰثُ رُکُوْعَاتٍ

سورۂ نجم مکہ میں نازل ہوئی اس کی باسٹھ آیتیں اور تین رکوع ہیں

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

(شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے)

وَالنَّجْمِ اِذَا ھَوٰی ۝

قسم ہے تارے کی جب گرے

اذا ھوی یعنی غروب ہو۔ (تفسیر حقانی)

**ثریا ستارہ:** طبرانی اور ابو یعلیٰ کی روایت ہے کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا جب ثریا گر جاتا (یعنی صبح کے وقت) غروب ہو کر غائب ہو جاتا۔ عرب ثریا کو النجم کہتے ہیں۔ حضرت ابو ہریرہ کی مرفوع روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب صبح کو ثریا طلوع ہوتی ہے (کچھ ...) سے اٹھا لی جاتی

خیر واقع ہوتی ہے۔ نجم ثاقب کے طلوع سے وہ واقف تھے۔ امام بغوی [illegible] آفت ہو تو وہ نجم ثاقب کے طلوع ہونے سے آفت دور ہو جاتی ہے [illegible] سے متعلق ہے۔

## نجم کے معنی میں مختلف اقوال

امام جعفر صادق نے فرمایا کہ نجم سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مراد ہیں۔ جب شب معراج آپ آسمان سے نیچے اترے۔ [illegible]

[illegible] والنجم سے مراد [illegible] اور ھوی سے مراد [illegible] نجم کے [illegible] کے لئے اس لئے [illegible] نجم کا اطلاق [illegible] فضیلت رکھتا ہے۔ جس کی تفصیل درج ذیل ہے۔

(۱) نجم سے مراد ثریا ستارہ ہے [illegible] سے مراد [illegible] محققین [illegible] قیامت کے دن [illegible] مراد ہے [illegible] لا احب الآفلین۔

(۲) نجم سے مراد قرآن ہے اور ھوی سے مراد قرآن کا نازل ہونا ہے [illegible] لوگوں کی ہدایت کے لئے ہو۔

(۳) نجم سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات مبارک [illegible] شب معراج میں آپ آسمان سے نیچے [illegible] کے لئے [illegible]

(۴) نجم سے [illegible] مراد [illegible] شیطانی [illegible] نفسانی وسوسے [illegible] (روح المعانی)

قسم کھانے کا مقصد [illegible] حق تعالیٰ [illegible] واضح ہو [illegible] مقصود کی طرف ہدایت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] ہدایت [illegible]

## مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى

تمہارا ساتھی نہ بہکا اور نہ بے راہ چلا ☆

### آپ اللہ کے راستہ پر ہیں

[illegible] آپ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] راستہ [illegible] آفتاب [illegible] انبیاء علیہم السلام [illegible] آفتاب [illegible] (تفسیر عثمانی)

## وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوحٰى

وہ نہیں بولتا اپنے نفس کی خواہش سے یہ تو حکم ہے بھیجا ہوا ☆

### آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا ایک حرف بھی اللہ کی مرضی کے خلاف نہیں

[illegible] ایک حرف بھی آپ کے دہن مبارک سے [illegible] قرآن اور غیر متلو [illegible] (تفسیر قرطبی)

وحی کی قسمیں [illegible] ایک قسم وہ ہے جس کے معنی اور الفاظ سب حق تعالیٰ کی طرف سے [illegible]

نازل ہوتے ہیں، جس کا نام قرآن ہے، دوسری وہ کہ صرف معنی اللہ تعالیٰ کی طرف سے نازل ہوتے ہیں۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ان معنی کو اپنے الفاظ میں ادا فرماتے ہیں، اس کا نام حدیث اور سنت ہے۔ پھر حدیث میں جو مضمون حق تعالیٰ کی طرف سے آتا ہے کبھی وہ کسی معاملہ کا صاف اور واضح فیصلہ اور حکم ہوتا ہے، کبھی کوئی قاعدہ کلیہ بتلایا جاتا ہے جس سے احکام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اپنے اجتہاد سے نکالتے اور بیان کرتے ہیں، اس اجتہاد میں اس کا امکان رہتا ہے کہ کوئی غلطی ہو جائے، مگر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور تمام انبیاء کی یہ خصوصیت ہے کہ جو احکام وہ اپنے اجتہاد سے بیان فرماتے ہیں ان میں اگر کوئی غلطی ہو جاتی ہے تو اللہ تعالیٰ کی طرف سے بذریعہ وحی اس کی اصلاح کر دی جاتی ہے، وہ اپنے غلط اجتہاد پر قائم نہیں رہ سکتے۔ بخلاف دوسرے علماء مجتہدین کے کہ ان سے اجتہاد میں خطا ہو جائے تو وہ اس پر قائم رہ سکتے ہیں اور ان کی یہ خطا بھی عند اللہ صرف معاف ہی نہیں بلکہ دین کے سمجھنے میں جو اپنی پوری توانائی خرچ کرتے ہیں اس پر بھی ان کو ایک ثواب ملتا ہے (کما فی الاحادیث الصحیحۃ المعروفۃ)

بعض اوقات وحی کسی قاعدہ کلیہ کی شکل میں آتی ہے جس سے احکام کا استخراج کرنے میں پیغمبر کو اپنی رائے سے اجتہاد کرنا پڑتا ہے چونکہ یہ قاعدہ کلیہ اللہ کی طرف سے آیا ہے اس لئے ان سب احکام کو بھی وحی من اللہ کہا گیا ہے۔ واللہ اعلم۔ (معارف مفتی اعظم)

**عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ**

اس کو سکھلایا ہے سخت قوتوں والے نے زور آور نے ☆

وحی لانے والا فرشتہ ☆ یعنی وحی بھیجنے والا تو اصل میں اللہ تعالیٰ ہے لیکن جس کے ذریعہ سے وحی آپ تک پہنچی ہے وہ جو یہاں آپ کو سکھلانے والا بہت سخت قوتوں والا، بڑا زور آور، حسین و جمیل فرشتہ ہے جسے "جبرئیل امین" کہتے ہیں۔ چنانچہ "سورۃ التکویر" میں جبرئیل کی نسبت فرمایا: "اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ذِيْ قُوَّةٍ" الخ (تفسیر عثمانی)

سورۂ نجم کے دو واقعات۔ قرآن کریم نے اپنے عام اسلوب کے مطابق سورۂ نجم کی ابتدائی آیتوں میں دو واقعات کا ذکر فرمایا ہے، ایک واقعہ جبرئیل علیہ السلام کو ان کی اصلی صورت میں اس وقت دیکھنے کا ہے جب کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم فترت وحی کے زمانے میں مکہ مکرمہ میں کہیں جا رہے تھے اور یہ واقعہ اسراء و معراج سے پہلے کا ہے۔

دوسرا واقعہ شب معراج کا ہے، جس میں جبرئیل امین کو ان کی اصلی صورت میں دیکھنے سے [illegible]

اور بات کہی مگر خواب و خیال تعبیرات کی صورت کا شائبہ ہو بھی سکتا ہے۔

**فَاسْتَوٰى ۙ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ؕ**

پھر سیدھا بیٹھا اور وہ تھا اونچے کنارہ پر آسمان کے ☆

حضرت جبرئیل ☆ "اونچے کنارے" سے اکثر علماء نے افق شرقی مراد لیا ہے۔ جدھر سے صبح صادق نمودار ہوتی ہے۔ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کو ابتدائے نبوت میں ایک مرتبہ حضرت جبرئیل اپنی اصلی صورت میں ایک کرسی پر بیٹھے ہوئے نظر آئے، اس وقت آسمان ایک کنارے سے دوسرے کنارے تک ان کے وجود سے بھرا ہوا معلوم ہوتا تھا۔ یہ غیر معمولی اور مہیب منظر پہلی مرتبہ آپ نے دیکھا، دیکھ کر گھبرا گئے، تب سورۃ "مدثر" اتری۔ (تفسیر عثمانی)

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے دو مرتبہ جبرئیل کو دیکھا

ایک بار حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت جبرئیل سے فرمایا، آپ مجھے اپنی اصل شکل دکھا دیجئے۔ حضرت جبرئیل نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو اپنی اصل شکل دو مرتبہ دکھائی۔ ایک بار زمین پر اور ایک بار آسمان پر۔ زمین پر تو مشرق کی طرف سے نمودار ہوئے، اس وقت حضور حراء میں تھے۔ جس وقت جبرئیل مشرقی افق سے پیدا ہوئے تو مشرق سے مغرب تک پورے افق پر چھا گئے۔ حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم یہ منظر دیکھتے ہی بے ہوش ہو کر گر پڑے۔ جبرئیل فوراً آدمی کی شکل میں اتر کر آ گئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو چمٹ لیا اور چہرۂ مبارک سے غبار صاف کرنے لگے۔ دوسری بار آسمان پر سدرۃ المنتہیٰ کے پاس شب معراج میں آپ نے جبرئیل کی اصل شکل دیکھی۔ سوا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے اور کسی نبی نے حضرت جبرئیل کو اس شکل میں نہیں دیکھا۔ (تفسیر مظہری)

**ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ فَكَانَ قَابَ**

پھر نزدیک ہوا اور لٹک آیا پھر رہ گیا فرق

**قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۚ فَاَوْحٰىٓ اِلٰى**

دو کمان کی برابر یا اس سے بھی نزدیک پھر حکم بھیجا اللہ نے

**عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ؕ**

اپنے بندہ پر جو بھیجا ☆

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا جبرئیل سے قرب

☆ یعنی جبرئیل اپنے اصل مستقر سے تعلق رکھتے ہوئے (ادھر) نیچے اترے اور

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے اتنے قریب ہو گئے کہ دونوں کے درمیان دو ہاتھ یا دو کمانوں کے برابر فاصلہ تھا۔ اس وقت اللہ تعالیٰ نے اپنے خاص بندہ (محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم) پر وحی کی۔ حضرت ابن عباس سے مراد وحی "دو ہاتھ" کی یہ بات تھی "یٰۤاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَاَنْذِرْ" یا دوسرا کلام ہو گئے۔
(تنبیہ) "فَكَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی" میں محققین کے نزدیک "او" شک کے لئے نہیں۔ بلکہ اس قسم کی ترکیب تحدید کی تاکید اور مبالغہ کے ساتھ زیادہ کی نفی کے لئے ہوتی ہے یعنی یقین آنے کے مطلقاً مقصود نہیں کہ "قوسین" کا فاصلہ تھا یا اس سے بھی کچھ کم یا زیادہ کا، بلکہ یہ ہے کہ کسی حال اور کسی طرح اس سے زائد نہ تھا۔ (نیز اقوال کا ذکر تفسیر ابن کثیر و تفسیر حقانی)

**کس کا قریب ہونا مراد ہے:** بغوی نے لکھا ہے قصہ معراج میں شریک بن عبد اللہ کی روایت سے ہم سے بیان کیا گیا کہ رب العزت قریب ہوا۔ پھر نیچے آیا یہاں تک کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے اتنا قریب ہو گیا جیسے دو کمانوں کا فاصلہ بلکہ اس سے بھی قریب۔
شیخ محمد حیات سندی نے اپنے رسالہ میں لکھا ہے۔ یہ حدیث غریب ہے۔ اسی طرح حضرت ابن عباس نے بھی بیان کیا جس کو خلال نے نقل کیا ہے۔

**صوفیہ کا قول:** صوفیہ نے کہا کہ دو کمانوں سے مراد ہے قوس امکان اور قوس وجوب۔ صوفی مرتبہ قرب میں قاب قوسین کے مقام پر پہنچ جائے اس کی نظر دونوں قوسوں (دائرہ امکان اور دائرہ وجوب) کی طرف ہوتی ہے۔ لیکن مرتبہ ادنیٰ (اقرب) پر پہنچتا ہے تو اس کی نظر سے قوس امکان پوشیدہ ہو جاتی ہے۔ اس کو اپنی ہستی کا کوئی نشان نظر نہیں آتا۔
عرب کا دستور تھا کہ جب دو شخص آپس میں دوستی کا معاہدہ کرتے تھے اور خلوص مودت کا اظہار کرنا چاہتے تھے تو ہر ایک اپنی کمان دوسرے کی کمان سے ملا کر رکھ دیتا تھا۔ اس سے اس امر کا اظہار مقصود ہوتا تھا کہ ہم آپس میں ایک دوسرے کے معاون اور ہر طرح مددگار ہیں اور اسی قدر قریب ہیں جیسے یہ دونوں کمانیں۔ یہاں قاب قوسین او ادنیٰ سے مراد باری تعالیٰ کے قرب کا مرتبہ ہے جس کا ادراک ایک عارف ہی کر سکتا ہے جس نے مرتبہ قرب کا ذائقہ چکھا ہو، وہی جانے۔ کتب تصوف میں ان دونوں مقامات کا ذکر ان کی اصطلاحات میں کیا گیا ہے۔
حضرت ابن مسعود نے فرمایا۔ قاب قوسین یعنی دو ہاتھ (شرعی ذراع) کی مقدار۔ سعید بن جبیر اور شقیق بن سلمہ کا بھی یہی قول ہے۔ قوس ایک ذراع ہوتی ہے جس سے ہر چیز ناپی جاتی ہے۔ بخاری نے اس آیت کی تشریح میں حضرت عائشہ کا یہی قول نقل کیا ہے۔
جبرئیل علیہ السلام کا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے قریب آنا اور نازل ہونا اتنا پاس آ جانا جتنا قوسین کا فاصلہ ہوتا ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے یہ باعث کمال نہیں ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا مرتبہ تو حضرت جبرئیل سے افضل تھا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا "آسمان میں میرے دو وزیر ہیں، جبرئیل اور میکائیل۔"

**یہ آیت متشابہات سے ہو سکتی ہے:** قرآن میں کچھ آیات متشابہات بھی ہیں۔ جن کی مراد سوائے اللہ کے کوئی نہیں جانتا۔ پس اس آیت کو بھی اگر متشابہات میں سے قرار دیا جائے تو کیا حرج ہے۔ اللہ کا استواء، قرب، نزول سب کے معانی تو معلوم ہیں لیکن کیفیت معلوم نہیں۔ صرف ارباب القلوب ان صفات کا اس طرح مشاہدہ کرتے ہیں جس طرح چودھویں کے چاند کو دیکھا جاتا ہے۔ اس لئے زیادہ مناسب قول اول ہی ہے۔ (تفسیر مظہری)

## مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰی ﴿۱۱﴾

جھوٹ نہیں کہا رسول کے دل نے جو دیکھا

**فرشتہ کی معرفت:** یعنی جبرئیل کو آپ نے آنکھ سے دیکھا اور اس وقت دل نے کہا کہ آنکھ نے ٹھیک جبرئیل کو دیکھا ہے۔ کوئی غلطی نہیں کی۔ رویت کے ساتھ دل کی تصدیق ہو جاتی ہے۔ آپ کا دل حق تعالیٰ اسی طرح پیغمبروں کے دلوں میں فرشتہ کی معرفت ڈال دیتے ہیں ورنہ رسول کو خود اطمینان نہ ہو تو دوسروں کا اطمینان کہاں سے حاصل ہو سکتا ہے۔ (تفسیر حقانی)

## رؤیت اللہ تعالیٰ کی ہوئی یا جبرئیل کی

حضرت انس، حسن اور عکرمہ کا قول ہے کہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے رب کو دیکھا یعنی اپنی آنکھ سے۔ بغوی نے بروایت عکرمہ حضرت ابن عباس کا قول نقل کیا ہے کہ اللہ نے ابراہیم کو خلت کے لئے چن لیا (اور خلیل اللہ قرار دیا) اور موسیٰ کو کلام کے لئے اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو (اپنی) رویت کے لئے۔ ابن جریر نے حضرت ابن عباس کی روایت سے بیان کیا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے دریافت کیا گیا۔ کیا آپ نے اپنے رب کو دیکھا۔ فرمایا میں نے اپنے دل سے اس کو دیکھا۔ ترمذی نے بروایت شعبی بیان کیا کہ کعب احبار نے حضرت ابن عباس سے عرض کیا اللہ نے اپنے کلام اور دیدار کو موسیٰ اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے درمیان تقسیم کر دیا۔ موسیٰ سے دو بار کلام کیا اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے دو بار (اس کو) دیکھا۔

## کون سا دیکھنا مراد ہے

میں کہتا ہوں جس روایت میں اختلاف علماء ہے وہ قلبی رویت نہیں، چشم سر کی رویت میں اختلاف ہے۔ کیونکہ رویت قلبی جس کو مشاہدہ بھی کہا جاتا ہے (انبیاء تو درکنار) بعض اہل امت کو بھی حاصل ہو جاتی ہے۔ بعض اولیاء

[illegible] اتفاق علماء ہے کہ رویت چشم سر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible]

[illegible]

[illegible] شاہدہ میں فرق ہوتے ہیں۔

[illegible]

[illegible]

أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ

اب کیا تم اس سے جھگڑتے ہو اس پر جو اس نے دیکھا؟

**اب تکرار کی کوئی گنجائش نہیں** [illegible]

[illegible]

[illegible] فالم دو الظلال [illegible]

[illegible]

وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ

اور اس کو اس نے دیکھا ہے اترتے ہوئے ایک بار اور بھی

عِندَ سِدْرَةِ الْمُنتَهَىٰ عِندَهَا جَنَّةُ

سدرۃ المنتہیٰ کے پاس اسی کے پاس ہے جنت

الْمَأْوَىٰ

[illegible]

**دوسری مرتبہ دیکھنا** [illegible]

[illegible]

## کیا تصدیق قلبی رویت قلبی سے کوئی الگ چیز ہے؟

[illegible]

سے پوچھتے ہیں اور جو امتحان و تجربہ وغیرہ سے حاصل ہوتے ہیں سب کا حکم وہی ہے۔ مگر عبارت سے یہی معلوم ہوتا ہے کہ اس کی جو چیزیں آسمان میں اور پہاڑ اور سمندر میں ہیں زمین میں۔ واللہ اعلم۔ (تفسیر عثمانی)

وَلَقَدْ رَاٰهُ۔ یعنی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے رب کو یا جبرئیل کو اپنی اصلی شکل میں دیکھا تھا۔

نَزْلَةً اُخْرٰی۔ یعنی ایک اور نزول کے وقت۔ نزلۃ سے اس طرف اشارہ ہے کہ اس بار رویت نزول اور قرب کی حالت میں ہوئی۔ کیونکہ نفس واجب کا اس وقت کو جاننا ہے جب دیکھنے والا عین امکان کے مرحلہ میں اور اپنی اصل میں ہو اور واجب مرتبہ تنزل سے دیکھا جائے تجلی کی طرف آ جائے اور صاحب نقصان یا اختلال کی ... سے دیکھا جا سکے۔ اس قول سے یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ واجب کی ذات میں کوئی تبدیلی واقع ہو جاتی ہے۔ اللہ تغیرات سے پاک ہے۔ بلکہ تبدل ... میں ہے ... ہو جاتی ہے ... مرتبہ ... نزول و ... ہوتا ہے۔ ... سورۂ بقرہ کی آیت ھَلْ یَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ یَّاْتِیَهُمُ اللّٰهُ فِیْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ کی تفسیر میں ہم نے کر دی ہے۔

## ضروری نہیں کہ رویت صرف دو ہی دفعہ ہوئی ہو

اُخْرٰی کے لفظ سے یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ رویت صرف دو مرتبہ ہوئی بلکہ اس سے مراد ہے کہ ایک دوسری مرتبہ ... جیسا کہ اس سے حضرت ابن عباس اور کعب الاحبار کے مکالمہ میں آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے رب کو دو مرتبہ دیکھا۔

اس حدیث میں اس رویت کا ذکر ہے جو شب معراج میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو حاصل ہوئی تھی۔ (تفسیر مظہری)

**عتبہ کی بدبختی:** ابن عساکر کی روایت ہے کہ ابو لہب اور اس کا بیٹا عتبہ شام کے سفر کی تیاریاں کرنے لگے ان کے بیٹے نے کہا سفر میں جانے سے پہلے ایک مرتبہ محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) کے خدا کو ان کے سامنے گالیاں دے آؤں۔ چنانچہ یہ جا کر کہا اے محمد جو قریب ہوا اور اترا اور دو کمانوں کے برابر بلکہ اس سے بھی زیادہ نزدیک آ گیا میں تو اس کا منکر ہوں۔ (چونکہ یہ انتہائی بدبخت بے ادب تھا اور بدزبانی کرنے میں ہی لگ گیا) حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان سے اس کے لئے بددعا نکل گئی کہ باری تعالیٰ اپنے کتوں میں سے ایک کتا اس پر مقرر کر دے۔ یہ جب لوٹ کر باپ کے پاس آیا اور ساری باتیں کہہ سنائیں تو اس نے کہا بیٹا اب مجھے تیری جان کا خطرہ ہو گیا اس کی دعا رد نہ جائے گی۔ اس کے بعد یہ قافلہ یہاں سے روانہ ہوا۔ شام کی سرزمین میں ایک راہب کے عبادت خانہ کے پاس پڑاؤ کیا۔ راہب نے ان سے کہا یہاں تو بھیڑیئے اس طرح پھرتے ہیں جیسے بکریوں کے ریوڑ تم یہاں کیوں آ گئے؟ ابو لہب یہ سن کر ٹھٹک گیا اور تمام قافلے والوں کو جمع کر کے کہا تم میرے بڑھاپے کا حال تمہیں معلوم ہے اور تم جانتے ہو کہ میرے کیسے کیسے حقوق تم پر ہیں۔ آج میں تم سے ایک عرض کرتا ہوں امید ہے کہ تم سب اسے قبول کرو گے۔ بات یہ ہے کہ مدعی نبوت نے میرے جگر گوشے کے لئے بددعا کی ہے اور مجھے اس کی جان کا خطرہ ہے تم اپنا سب اسباب اس عبادت خانے کے پاس جمع کرو اور اس پر میرے پیارے بچے کو سلاؤ اور تم سب اس کے ارد گرد پہرا دو۔ لوگوں نے اسے منظور کر لیا۔ یہ سب اپنے جتن کر کے ہو رہے کہ اچانک شیر آیا اور سب کے منہ سونگھنے لگا۔ جب سب کے منہ سونگھ چکا اور گویا جسے تلاش کر رہا تھا اسے نہ پایا تو پچھلے پیروں ہٹ کر بہت زور سے جست کی اور ایک چھلانگ میں اس مچان پر پہنچ گیا وہاں جا کر اس کا منہ بھی سونگھا اور گویا یہی اس کا مطلوب تھا۔ پھر تو اس نے اس کے پرخچے اڑا دیئے چیر پھاڑ کر ٹکڑے ٹکڑے کر ڈالا۔ اس وقت ابو لہب کہنے لگا اس کا تو مجھے پہلے ہی سے یقین تھا کہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی بددعا کے بعد یہ بچ نہیں سکتا۔ (تفسیر ابن کثیر)

## معراج کا قصہ

**شق صدر:** صحیحین میں حضرت انس کی روایت ہے کہ انہوں نے حضرت مالک بن صعصعہ سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں حطیم حجر میں لیٹا ہوا تھا کہ ایک آنے والا آیا اس نے اس جگہ سے اس جگہ تک یعنی حلق کے گڑھے سے ناف تک (میرا سینہ) شق کیا پھر ایک سونے کی طشت ایمان سے بھرا ہوا لایا گیا اور (میرے) پیٹ کو دھویا گیا۔ پھر (ایمان کو) دل میں بھر کر اس کی جگہ دوبارہ رکھ دیا گیا۔ ایک روایت میں آیا ہے۔ پھر آب زمزم سے اس کو دھویا گیا اس کے بعد ایمان اور حکمت سے اس کو بھر دیا۔

**براق:** پھر ایک جانور لایا گیا جو خچر سے چھوٹا اور گدھے سے بڑا تھا جس کو براق کہا جاتا تھا۔ حد نظر تک اس کا ایک قدم پڑتا تھا۔ پھر مجھے اس پر سوار کیا گیا۔ اس کے بعد جبرئیل مجھے لے کر روانہ ہوئے۔

### آسمان تک پہنچنا اور انبیاء سے ملاقات

یہاں تک کہ آسمان دنیا تک اور (دروازہ) کھلوانا چاہا۔ دریافت کیا گیا کون ہے؟ جبرئیل نے کہا۔ جبرئیل۔ پوچھا گیا تمہارے ساتھ کون ہے؟ جبرئیل نے کہا محمد صلی اللہ علیہ وسلم۔ دریافت کیا گیا۔ کیا ان کے پاس تم کو بھیجا گیا تھا۔ جبرئیل نے کہا ہاں۔ (دروازہ) کھول دیا گیا اور کہا گیا مرحبا خوش آمدید۔ جب میں اندر پہنچا تو وہاں آدم کو موجود پایا۔ جبرئیل نے کہا یہ تمہارے باپ آدم ہیں ان کو سلام کرو۔ میں نے سلام کیا آدم نے سلام کا جواب دیا اور کہا۔ صالح بیٹے کے لئے مرحبا۔ اس کے بعد جبرئیل مجھے

دروازہ آسمان تک پہنچا کر لے گئے اور (دروازہ) کھلوا دیا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے آسمان دنیا کے کھلوانے کی (سوال جواب) کا ذکر کیا دوسرے آسمان تک بلکہ ہر آسمان تک پہنچنے کا سلسلہ بیان فرمایا۔ چنانچہ فرمایا جب میں اوپر گیا تو وہاں یحییٰ اور عیسیٰ کو پایا جو آپس میں خالہ کے بیٹے تھے۔ جبرئیل نے کہا یہ یحییٰ ہیں اور یہ عیسیٰ ہیں۔ ان کو سلام کیجئے میں نے دونوں کو سلام کیا۔ دونوں نے سلام کا جواب دیا۔ پھر کہا صالح بھائی اور صالح نبی کو خوش آمدید۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے تیسرے آسمان پر یوسف (کے ملنے) کا اور چوتھے پر ادریس کا اور پانچویں پر ہارون کا اور چھٹے پر موسیٰ (کے موجود ہونے) کا ذکر کیا۔ ہر ایک نے صالح بھائی اور صالح نبی کہہ کر مرحبا کہا۔ جب میں آگے بڑھا تو موسیٰ رو دیے۔ موسیٰ سے پوچھا گیا آپ کیوں روئے۔ موسیٰ نے کہا میں اس لئے رویا کہ ایک لڑکا جو میرے بعد (نبی بنا کر) بھیجا گیا اس کی امت کے لوگ میری امت سے زیادہ جنت میں جائیں گے۔ پھر مجھے ساتویں آسمان تک لے جایا گیا اس جگہ بھی حضور نے دروازہ کھلوانے وغیرہ کا سب مذکورہ بالا ذکر فرمایا۔ اور وہاں ابراہیم کے موجود ہونے کا بھی بیان فرمایا۔ جبرئیل نے کہا یہ آپ کے باپ ابراہیم ہیں۔ ان کو سلام کیجئے۔ میں نے سلام کیا انہوں نے سلام کا جواب دیا اور فرمایا صالح بیٹے کے لئے مرحبا۔

اس کے بعد سدرۃ المنتہیٰ اٹھا کر میرے سامنے کر دیا گیا اس کے بیر ایسے تھے جیسے ہجر کے مٹکے۔ پتے ایسے تھے جیسے ہاتھی کے کان۔ جبرئیل نے کہا یہ سدرۃ المنتہیٰ ہے۔ وہاں سے چار دریا نکل رہے تھے دو اندرونی اور دو بیرونی میرے دریافت کرنے پر جبرائیل نے کہا۔ اندرونی دریا تو وہ جنت کے اندر ہیں اور بیرونی دریا نیل اور فرات ہیں۔

اس کے بعد بیت المعمور میرے سامنے لایا گیا پھر ایک برتن شراب کا بھرا ہوا ایک برتن دودھ سے بھرا ہوا اور ایک برتن شہد سے بھرا ہوا میرے سامنے لایا گیا میں نے دودھ لے لیا۔ جبرائیل نے کہا یہی دین فطرت ہے جس پر آپ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی امت قائم ہیں۔

**نمازوں کا فرض ہونا:** اس کے بعد مجھ پر ہر روز پچاس نمازیں فرض کی گئیں۔ میں لوٹ کر آیا اور موسیٰ کی طرف سے گزرا تو انہوں نے پوچھا آپ کو کیا حکم دیا گیا۔ میں نے کہا ہر روز پچاس نمازوں کا مجھے حکم دیا گیا ہے۔ موسیٰ نے کہا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی امت ہر روز پچاس نمازیں نہیں پڑھ سکے گی۔ میں اللہ کی قسم آپ صلی اللہ علیہ وسلم سے پہلے لوگوں کا تجربہ کر چکا ہوں بنی اسرائیل کے ساتھ بھی سخت کوشش کر چکا ہوں۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم واپس جائیے اپنی امت کے لئے اپنے رب سے درخواست کیجئے۔ میں واپس گیا (اور تخفیف کی درخواست کی) اللہ نے دس نمازیں ساقط کر دیں۔ پھر لوٹ کر موسیٰ کی طرف آیا۔ موسیٰ نے اسی پہلے کی طرح بات کی۔ میں پھر لوٹ کر گیا اور اللہ نے دس نمازیں (اور) ساقط کر دیں۔ میں موسیٰ کے پاس لوٹ کر آیا۔ موسیٰ نے وہی بات کی آخر کار مجھے دس نمازوں کا حکم دیا گیا اور میں موسیٰ کے پاس لوٹ کر آیا۔ موسیٰ نے وہی پہلی بات کی میں نے لوٹ کر گیا تو مجھے روزانہ پانچ نمازوں کا حکم دیا گیا۔ میں موسیٰ کے پاس آیا تو انہوں نے پوچھا کیا حکم ملا۔ میں نے کہا۔ مجھے ہر روز پانچ نمازوں کا حکم دیا گیا ہے۔ موسیٰ نے کہا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی امت روزانہ پانچ نمازوں کی بھی طاقت نہیں رکھتی۔ میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم سے پہلے لوگوں کا تجربہ کر چکا ہوں اور بنی اسرائیل سے میرا سخت واسطہ پڑ چکا ہے۔ آپ واپس جا کر اپنی امت کے لئے تخفیف کی اپنے رب سے درخواست کیجئے۔ میں نے کہا میں اتنی مرتبہ درخواست کر چکا کہ اب (مزید درخواست کرنے سے) مجھے شرم آتی ہے لیکن میں راضی اور رضامندی سے حکم کو تسلیم کرتا ہوں۔ جب میں (موسیٰ کے پاس سے) آگے بڑھا تو ایک ندا کرنے والے نے پکار کر کہا۔ میں نے اپنا فرض جاری کر دیا اور اپنے بندوں کے لئے تخفیف کر دی۔

**بیت المقدس پہنچنا:** مسلم نے بوساطت ثابت بنانی حضرت انس کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میرے پاس براق لایا گیا۔ ایک چوپایہ تھا۔ سفید دراز قامت گدھے سے بڑا اور خچر سے چھوٹا اس کا (ایک) قدم وہاں پڑتا تھا جہاں تک اس کی نظر پہنچتی تھی۔ میں اس پر سوار ہو گیا اور بیت المقدس تک پہنچ گیا۔ جس حلقہ سے دوسرے انبیاء (اپنے جانوروں کو) باندھتے تھے۔ اس سے میں نے براق کو باندھ دیا۔ ابن جریج کی روایت میں آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ جب ہم بیت المقدس پہنچ گئے تو جبرئیل نے انگلی سے اشارہ کر کے پتھر میں شگاف کر دیا اور اس سے براق کو باندھ دیا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا۔ پھر میں مسجد میں داخل ہوا اور اس میں دو رکعت نماز پڑھی باہر نکلا تو جبرئیل ایک برتن شراب سے بھرا ہوا اور ایک برتن دودھ سے بھرا ہوا میرے پاس لائے۔ میں نے دودھ پسند کر لیا۔ جبرئیل نے کہا آپ نے فطرت کو پسند کر لیا۔ اس کے بعد ہم کو چڑھا کر آسمان کی طرف لے گئے۔ باقی حدیث روایت سابقہ کی طرح ہے۔

## گھر کی چھت میں شگاف

صحیحین میں حضرت ابن عباس کی وساطت سے حضرت ابوذر کی روایت میں آیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میرے گھر کی چھت میں شگاف کر دیا گیا۔ اس وقت میں مکہ میں تھا پھر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے شق صدر کا حسب روایت سابقہ ذکر کیا مگر بیان کا تذکرہ نہیں کیا۔

**براق کی شوخی:** ترمذی نے بوساطت قتادہ حضرت انس کی روایت سے بیان کیا

[illegible]

## إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ

[illegible]

## مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ

[illegible]

جو دیکھا پورے یقین سے دیکھا۔ کبھی آنکھ نے نظر چوک جانے سے حسن و انتقامت دیکھا نہ نظر کی ترچھی ہو کر دائیں بائیں اِدھر اُدھر سے تجاوز کر کے آگے بڑھی۔ بس اسی چیز پر جمی رہی جس کا دکھانا مقصود تھا۔ بادشاہوں کے دربار میں جو چیز دکھلائی جائے اس کو نہ دیکھنا اور جو نہ دکھلائی جائے اس کو تاکنا دونوں عیب ہیں۔ آپ ان دونوں سے پاک تھے۔ (تفسیر عثمانی)

**وَمَا طَغٰی کا ایک صوفیانہ مفہوم:**

اور نظر محبوب سے ہٹی۔ ایک شاعر نے کیا خوب کہا ہے ؎

اُجِیرُ اللَّحْظَ وَ حَالَاتِی غَرِیقٌ فِی بُحُورِ دَمِہ
مَا بَعُدَ اللَّحْظُ اِلٰی غَیْرِ کُمَا قُدُسِہٖ فَانَّکَ وَالِیَتِہٖ

عشق اور تجلیات عشق کی کوتاہی نے میرے دل و دماغ کو ... کیا
اللہ اور کلام اللہ کی قسم میری آنکھ نے تو تمہارے سوا (کسی چیز کو) دیکھ کی بھی
... ہے۔ ... طغیٰ کا یہ مطلب بیان کیا کہ جن کا ثبات قدرت
کا دیکھنے کا حکم دیا گیا تھا ان سے نگاہ دوسری طرف نہیں ہوئی۔ (تفسیر مظہری)

ترمذی میں حضرت ابن عباسؓ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے رب کو دیکھا۔ حضرت عکرمہ فرماتے ہیں میں نے یہ سن کر کہا پھر یہ آیت کہاں ہوئے گی جس میں فرمان ہے لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ اسے کوئی نگاہ نہیں پا سکتی اور وہ سب نگاہوں کو پا لیتا ہے۔ آپ نے جواب دیا کہ یہ اس وقت ہے جب کہ وہ اپنے نور کی پوری تجلی کرے ورنہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے دو دفعہ اپنے رب کو دیکھا ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

**رویت باری کا مسئلہ:** تمام صحابہ و تابعین اور جمیع امت اس پر متفق ہیں کہ آخرت میں اہل جنت و عام مؤمنین حق تعالیٰ کی زیارت کریں گے جیسا کہ احادیث صحیحہ اس پر شاہد ہیں اس سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کی رویت و زیارت کوئی امر محال یا ناممکن نہیں البتہ عالم دنیا میں انسانی نگاہ میں اتنی قوت نہیں جو اس کو برداشت کر سکے اس لئے دنیا میں کسی کو رویت و زیارت حق تعالیٰ کی نہیں ہو سکتی آخرت کے معاملہ میں خود قرآن کریم کا ارشاد ہے۔ فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ یعنی آخرت میں انسان کی نگاہ تیز و قوی کر دی جائے گی اور پردے ہٹا دیئے جائیں گے حضرت امام مالکؒ نے فرمایا کہ دنیا میں کوئی انسان اللہ تعالیٰ کو نہیں دیکھ سکتا کیونکہ اس کی نگاہ فانی ہے اور اللہ تعالیٰ باقی پھر جب آخرت میں انسان کو نگاہ غیر فانی عطا کر دی جائے گی تو حق تعالیٰ کی رویت میں کوئی مانع نہ رہے گا۔ تقریباً یہی مضمون قاضی عیاضؒ سے بھی منقول ہے اور صحیح مسلم کی ایک حدیث میں اس کی تقریباً تصریح ہے جس کے الفاظ یہ ہیں۔ وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمْ لَنْ تَرَوْا رَبَّكُمْ حَتّٰى تَمُوْتُوْا (فتح الباری ص ۳۲۲ ج ۸) اس سے امکان تو اس کا بھی نکل آیا کہ اس عالم دنیا میں بھی کسی وقت خصوصی طور پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی نگاہ میں وہ قوت عطا کر دی جائے جس سے وہ حق تعالیٰ کی زیارت کر سکیں لیکن اس عالم سے باہر نکل کر جبکہ شب معراج میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو آسمانوں اور جنت و دوزخ اور اللہ تعالیٰ کی خاص آیات قدرت کا مشاہدہ کرانے ہی کے لئے امتیازی حیثیت سے بلایا گیا اس وقت حق تعالیٰ کی زیارت اس عالم دنیا سے بھی منتقل ہے کہ اس وقت آپ صلی اللہ علیہ وسلم اس عالم دنیا میں نہیں ہیں۔ (معارف القرآن)

**لَقَدْ رَاٰی مِنْ اٰیٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ۝**

**بیشک دیکھے اس نے اپنے رب کے بڑے نمونے ۝**

یہ "مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی" کے مضمون کی تقویت ہو گئی کہ آپ کے علاوہ اور جو نے دیکھے ہوئے وہ اللہ کی بڑی قدرت ہے۔

ایک ... لکھتے ہیں کر ... قباں ... پر ... پشیمہ ہیں ... (تفسیر حقانی)

**عجائب ملکوتی:** آیات کبریٰ سے مراد ہیں۔ عجائب ملکوتی جن کی سیر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے شب معراج میں اور ان آمد و رفت کی تھی۔ براق آسمان انبیاء و ملائکہ سِدْرَةُ الْمُنْتَهٰی سب کا شمار عجائب ملکوت میں ہے۔

**آیات کبریٰ کہنے کی وجہ:** عجائب ملکوت کو آیات کبریٰ کہنے کی خصوصیت اس وجہ سے کہ مذکورہ آیات قدرت برکت و رحمت کی ... اور انوار و تجلیات کی خصوصی روشنی ان پر ہو رہی تھی۔ وہ اپنے صانع کی روشن برہان اور واضح دلیل ہے۔

### معراج کے بارے میں اہل سنت کا عقیدہ

اہل سنت والجماعت کا اجماع ہے کہ سیر معراج بیداری میں ہوئی (البتہ بعض لوگوں کے قول کے مطابق یہ سیر خواب میں ہوئی اس میں اقوال مختلف ہیں) اہل علم نے صراحت کی ہے کہ مسجد حرام (کعبہ) سے مسجد اقصیٰ (بیت المقدس) تک جانا قطعی ہے۔ قرآنی صراحت سے ثابت ہے۔ اللہ نے سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا صراحت کے ساتھ فرمایا ہے اس لئے اس کا منکر کافر ہے۔ لیکن ساتوں آسمان تک اور اس سے اوپر جانا قرآن سے ثابت نہیں ہے۔ صحیح احادیث سے اس کا ثبوت ملتا ہے (اور احادیث آحاد قطعی نہیں ظنی ہوتی ہیں) اس لئے اس کا منکر کافر نہیں (بلکہ بدعقیدہ) ہے کافر نہیں ہے۔ صحیح بات یہ ہے کہ سِدْرَۃُ الْمُنْتَهٰی تک پہنچنا تو

[illegible]

## محدثین کا قول:

[illegible]

| أَفَرَءَيْتُمُ ٱللَّٰتَ وَٱلْعُزَّىٰ ۝ وَمَنَوٰةَ |
|---|
| بھلا تم دیکھو تو لات اور عزیٰ کو اور منات |
| ٱلثَّالِثَةَ ٱلْأُخْرَىٰ ۝ |
| تیسرے پچھلے کو |

## لات، عزیٰ اور منات کفار کے بت

[illegible]

[illegible]

## عزیٰ کا قیام

[illegible]

## حضرت خالدؓ کے ہاتھوں عزیٰ کا مارا جانا

[illegible]

[illegible] اور فرمایا یہ تین قیمتیں [illegible] کہ نہیں مانتا۔ [illegible]
[illegible] بھی [illegible] ہے۔ [illegible] کرو دیے
اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] فرمایا [illegible]
[illegible] سے پہلی [illegible] کے [illegible] ہوگی۔

**منات کا قصہ** [illegible] جب
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے [illegible] فتح کے [illegible]
[illegible] مشلل [illegible]
[illegible] آئے [illegible] منات [illegible] (کلام) آقا
ایک [illegible] کو [illegible] وہاں پہنچے
[illegible] بت [illegible]
[illegible] کی طرف [illegible] ایک عورت [illegible]
[illegible] حضرت سعد
[illegible] ساتھیوں [illegible]
[illegible] کی طرف [illegible] کر سکی۔

**لات و عزیٰ کی قسم کھانا کفر ہے** [illegible] جو شخص لات و
عزیٰ کی قسم کھا بیٹھے، تو چاہیے کہ فوراً لا الٰہ الا اللہ پڑھ لے اور اپنے ساتھی سے کہ
[illegible] کھیلیں [illegible] صدقہ کرنا چاہیے۔ مطلب یہ ہے کہ جاہلیت کے زمانہ
میں [illegible] قسم [illegible] کے بعد بھی [illegible]
[illegible] کے مطابق [illegible] حضرت
سعد بن ابی وقاص [illegible] ایک مرتبہ [illegible] لات و عزیٰ کی قسم کھا بیٹھے [illegible]
[illegible] صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس گئے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے
فرمایا لا اله الا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو
على كل شيء قدير [illegible]
[illegible]

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ

کیا تم کو ملے بیٹے اور اس کو بیٹیاں

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ

یہ بانٹ تو بہت بے ڈھنگی

**نظریۂ ولدیت کی تردید** [illegible] کفار
ان بتوں کو [illegible] بیٹیاں کہتے تھے۔ [illegible] کا تعلق ہے [illegible]
[illegible] تقسیم [illegible]

تم لوگوں نے [illegible] (تفسیر عثمانی)

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا

یہ سب نام ہیں جو رکھ لیے ہیں

أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا

تم نے اور تمہارے باپ دادوں نے اللہ نے نہیں اتاری

مِن سُلْطَانٍ

ان کی کوئی سند

**محض وہم ہیں حقیقت کچھ نہیں**

[illegible] خدائی کی کوئی سند
نہیں۔ [illegible] اپنے خیال [illegible]
[illegible] کچھ نہیں۔ (تفسیر عثمانی)

إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى

محض اٹکل پر چلتے ہیں اور جو جی میں آئے

الْأَنفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ

بیشک آ چکی ہے ان کو ان کے رب سے

الْهُدَىٰ

راہ کی سوجھ

**عقل کے اندھے** [illegible] اللہ کے پاس سے [illegible]
روشنی [illegible] مگر [illegible]
میں پھنسے ہوئے ہیں۔ [illegible] دل میں [illegible]
[illegible] بصیرت کی راہ سے [illegible] (تفسیر عثمانی)

أَمْ لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّىٰ

کہیں آدمی کو ملتا ہے جو کچھ چاہے

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ

سو اللہ کے ہاتھ ہے سب پچھلا اور پہلا

[illegible]

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ

اور بہت سے فرشتے ہیں آسمانوں میں کچھ کام نہیں آتی

شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَّأْذَنَ

ان کی سفارش کچھ مگر جب حکم دے

اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى

اللہ جس کے واسطے چاہے اور پسند کرے ۲۶

اللہ کے سامنے ان کی سفارش کام نہ دے گی

[illegible]

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

جو لوگ نہیں مانتے آخرت کو

لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى وَمَا

وہ نام رکھتے ہیں فرشتوں کے عورتوں کے سے نام اور

لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا

ان کو اس کی کچھ خبر نہیں محض اٹکل پر

الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ

چلتے ہیں اور اٹکل کچھ کام نہ آئے ٹھیک

شَيْـًٔا

بات میں ۲۸

[illegible]

## دلائل کی قسمیں اور ترتیب:

[illegible]

## ظن کے مختلف اقسام اور ان کے احکام

ظن عربی زبان میں مختلف معانی کے لئے استعمال ہوتا ہے [illegible] یقینی امور کو بھی ظن سے تعبیر کیا جاتا ہے [illegible] اور کبھی [illegible] تو جس طرح [illegible] کہ جب تک [illegible] ظن بمعنی [illegible] جیسے قرآن کریم [illegible] [illegible] اور وہ [illegible] ظن شرعاً معتبر ہے [illegible] قرآن و حدیث کی [illegible] اس آیت میں ظن کے متعلق جو فرمایا [illegible] [illegible]:

فَأَعْرِضْ عَن مَّن تَوَلَّىٰ عَن ذِكْرِنَا

سو تو دھیان نہ کر اس پر جو منہ موڑے ہماری یاد سے

وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ ذَٰلِكَ

اور کچھ نہ چاہے مگر دنیا کا جینا

مَبْلَغُهُم مِّنَ الْعِلْمِ

یہیں تک پہنچی ان کی سمجھ

مادہ پرستی: [illegible] زندگی [illegible] آخرت [illegible] آپ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

قرآن کریم [illegible]

مگر [illegible] کی [illegible] آج کل ہم مسلمانوں کا بھی حال [illegible] [illegible] معاشیات [illegible] آخرت [illegible] [illegible] [illegible] (معارف القرآن)

حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے تھے: دنیا اس کا گھر ہے جس کا (آخرت میں) گھر نہ ہو اور دنیا اس کا مال ہے جس کا (آخرت میں) کوئی مال نہ ہو [illegible] ایک [illegible] حضور صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] اللهم لا تجعل الدنيا اكبر همنا ولا مبلغ علمنا [illegible] (مظہری)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن

تحقیق تیرا رب ہی خوب جانے اس کو جو بہکا اس کی

سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ

راہ سے اور وہی خوب جانے اس کو جو راہ پر آیا

اللہ خوب جانتا ہے [illegible] اللہ تعالیٰ ان سے جانتا ہے [illegible] [illegible] [illegible] (تفسیر عثمانی)

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

اور اللہ کا ہے جو کچھ ہے آسمانوں میں اور زمین میں

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ

تاکہ وہ بدلہ دے برائی والوں کو ان کے کئے کا اور بدلہ دے

الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى

بھلائی والوں کو بھلائی سے

[illegible]

(تفسیر [illegible])

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| الَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ |
| جو کہ بچتے ہیں بڑے گناہوں سے |
| وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ |
| اور بے حیائی کے کاموں سے مگر [illegible] |

**لمم کا معنی** [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

إن تغفر اللهم تغفر جما وأي عبد لك لا ألما

اے اللہ [illegible] (ترمذی [illegible])

[illegible]

[illegible]

(۱) [illegible]

(۲) [illegible]

## کبیرہ اور صغیرہ گناہوں کی معافی کا قانون

[illegible]

وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ
فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَمْ یُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا
وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ (آل عمران)

[illegible]

[illegible]

طرح کی ناخوشی پہنچنے سے بچ کر رہتی ہیں تو خوبی باقی رہتی ہے اور یہ پرہیز کی صورت میں ہوتا ہے جو ترجمہ ہو جاتی ہے ضعیف ہو جاتی ہے۔ اس تفصیل کے بعد روایت فرمائیں احیاء العلوم کا مطالعہ کیجئے۔

**إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ**

بیشک تیرے رب کی بخشش میں بڑی سمائی ہے

اللہ کی مغفرت وسیع ہے اس لئے بڑے سے بڑے چھوٹے سے چھوٹے گناہوں سے وہ درگزر کرتا ہے اور توبہ قبول کرتا ہے گناہ کو چاہے کتنے ہی ہوں۔ وہ ان سے تجاوز کی قطاریں کرنے کی مغفرت کا مقام ہے۔

**هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ**

وہ تم کو خوب جانتا ہے جب بنا نکالا تم کو زمین سے

**وَإِذْ أَنتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ**

اور جب تم بچے تھے ماں کے پیٹ میں

**فَلَا تُزَكُّوا أَنفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ**

سو مت بیان کرو اپنی خوبیاں وہ خوب جانتا ہے اس کو

**اتَّقَىٰ**

جو بچ کر چلا

یعنی تم خود اپنی پاکیزگی کی مدح و ثنا مت کرو۔ اللہ نے تم کو پیدا کیا اور اپنے کو بہت پاکیزہ قرار دینے سے بچو۔ کیونکہ اللہ ہر ایک کی پاکیزگی اور تقویٰ کو خوب جانتا ہے۔ ابتدائی وقت سے جانتا ہے جب تم نے تکمیل نہیں کی تھی اور تمہارا علم کیا تھا آدمی کو چاہئے کہ اپنی اصل کو دیکھ لے جس کی ابتداء مٹی سے تھی پھر نطفہ اور گوشت کی بوٹی ناپاک خون سے بچہ بن کر آیا۔ اس کے بعد تمام جسمانی اور روحانی کمزوریاں سے دو چار ہوا۔ لیکن اگر اللہ نے اپنے فضل سے کسی بلند مقام پر پہنچا دیا تو کسی کو اس پر فخر و غرور اور خود ستائی کرنے کا حق نہیں۔ بعض لوگ ایسے ہیں جو نیکی کرتے ہیں اور سمجھتے ہیں کہ اب بھی ان کی نیکیاں ہیں جو بہت بہتر ہیں۔ وہ ... ہے۔

سبب نزول: بغوی اور واحدی نے لکھا ہے کہ بعض لوگ اچھے عمل کرتے تھے پھر کہتے تھے ہماری نماز اور روزہ اور حج ... اور یہ آیت نازل ہوئی۔

واحدی، طبرانی، ابن المنذر اور ابن ابی حاتم نے حضرت ثابت بن حارث انصاری کی روایت سے بیان کیا ہے کہ جب یہودیوں کا کوئی چھوٹا بچہ مر جاتا تھا تو وہ کہتے یہ صدیق ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو اطلاع ملی تو فرمایا یہودی جھوٹ کہتے ہیں۔ ماں کے پیٹ میں اللہ جس جان کو پیدا کرتا ہے اس کو اسی وقت معلوم ہے کہ وہ بدبخت ہے یا نیک بخت، اس پر اللہ نے آیت نازل فرمائی۔

هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم ... یعنی تم کو ماں کے پیٹ سے باہر آنے سے پہلے ہی اللہ جانتا تھا کہ کون نیک بخت ہے اور کون بدبخت ہوگا۔

## جنتیوں اور دوزخیوں کی پیدائش

امام مالک، ترمذی اور ابو داؤد نے حضرت عمر کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اللہ نے آدم کو پیدا کرنے کے بعد ان کی پشت پر اپنا داہنا ہاتھ پھیر کر کچھ نسل (یعنی روحیں) نکالیں اور فرمایا میں نے ان کو جنت کے لئے پیدا کیا ہے اور یہ اہل جنت کے عمل کریں گے پھر آدم کی پشت پر اپنا بایاں ہاتھ پھیر کر کچھ نسل نکالی اور فرمایا ان کو میں نے دوزخ کے لئے پیدا کیا ہے یہ دوزخیوں کے عمل کریں گے۔ ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پھر عمل کس کام کا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اللہ جس بندہ کو جنت کے لئے پیدا کرتا ہے اس سے اہل جنت والوں کے کام کراتا ہے یہاں تک کہ اہل جنت کے عمل پر خاتمہ ہوتا ہے اور اللہ اس کو جنت میں داخل کر دیتا ہے اور جس بندہ کو دوزخ کے لئے پیدا کرتا ہے اس سے دوزخیوں کے کام کراتا ہے یہاں تک کہ دوزخیوں کے عمل پر ہی مرتا ہے تو اللہ اس کو دوزخ میں داخل کر دیتا ہے۔

تقدیر: مسلم نے حضرت عبداللہ بن عمرو بن عاص کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آسمانوں اور زمین کی پیدائش سے پچاس ہزار سال پہلے اللہ نے مخلوق کی تقدیریں لکھ دی تھیں جب اس کا عرش پانی پر تھا۔

ترمذی نے حضرت عبادہ بن صامت کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا سب سے پہلے اللہ نے قلم کو پیدا کیا اور قلم کو حکم دیا کہ لکھ۔ قلم نے عرض کیا کیا لکھوں، فرمایا تقدیر لکھ۔ پس قلم نے ان تمام چیزوں کو جو ہو چکی تھیں اور جو ابد تک ہونے والی ہیں لکھ دیا۔ ترمذی نے اس حدیث کو غریب کہا ہے۔

حضرت ابن مسعود راوی ہیں کہ اللہ کے سچے رسول نے ہم سے بیان فرمایا کہ تم میں سے ہر ایک کی تخلیق اس طرح ہوتی ہے کہ نطفہ ماں کے پیٹ میں چالیس روز تک نطفہ کی حالت میں رہتا ہے پھر اتنی ہی مدت تک خون کی صورت میں رہتا ہے پھر اتنی ہی مدت تک گوشت کی بوٹی کی شکل میں رہتا ہے پھر اللہ ایک فرشتے کو بھیجتا ہے جو چار باتیں لکھتا ہے (یعنی) اس کے عمل اور اس کی مدت زندگی اور اس کی روزی اور یہ بات لکھتا ہے کہ وہ بدبخت ہے یا خوش نصیب ہے

پاؤں تک۔ پھر اس کے اندر روح پھونک دی جاتی ہے۔ یہی قسم سے اس کی جس کے سوا کوئی معبود نہیں کہ تم میں سے بعض لوگ اہل جنت کے کام (ساری عمر) کرتے رہتے ہیں یہاں تک کہ ان کے اور جنت کے درمیان ایک ہاتھ کا فاصلہ رہ جاتا ہے کہ تقدیر کا لکھا غالب آ جاتا ہے۔ اور وہ دوزخیوں کا عمل کرتے ہیں اور دوزخ میں چلے جاتے ہیں۔ اور تم میں بعض لوگ ساری عمر دوزخیوں کے کام کرتے ہیں۔ اور دوزخ کے قریب پہنچ جاتے کہ ان کے اور دوزخ کے درمیان صرف ایک ہاتھ کا فاصلہ رہ جاتا ہے اور تقدیر کا لکھا غالب آ جاتا ہے اور وہ اہل جنت کا عمل کرتے ہیں اور جنت میں چلے جاتے ہیں۔ متفق علیہ۔ (تفسیر مظہری)

## نیک ہونے کا دعویٰ نہ کرو:

حضرت زینب بنت ابی سلمہ کا نام برہ تھا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کا نام بدل کر زینب رکھ دیا اور فرمایا کہ آیت فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ میں اپنے نفس کی پاکی بیان کرنے سے منع کیا گیا ہے کیونکہ اس میں نیک ہونے کا دعویٰ ہے اور اللہ ہی جانتا ہے کہ کون نیک ہے۔

امام احمد نے عبدالرحمٰن بن ابی بکرہ سے روایت کیا ہے کہ ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے ایک دوسرے آدمی کی مدح و تعریف کی۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے منع فرمایا اور فرمایا کہ تم نے اپنے بھائی کی گردن کاٹ دی۔ اگر تم میں سے کسی کو کسی کی تعریف ہی کرنا ہو تو یوں کہے کہ میرے علم میں یہ شخص متقی ہے اور اللہ کے نزدیک بھی ایسا ہی ہو اور حقیقت کا علم اللہ ہی کو ہے۔ (معارف مفتی اعظم)

---

**أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾**

بھلا تو نے دیکھا اس کو جس نے منہ پھیر لیا ☆

---

یعنی آپ نے اس بدبخت کو دیکھا جس نے حق سے منہ پھیر لیا۔

شان نزول: روایات میں ہے کہ بعض لوگ ایمان لانے کا ارادہ کر چکے تھے مگر ایک مشرک ساتھی نے اس کو ملامت کی کہ تو نے باپ دادا کا دین کیوں چھوڑا۔ اس نے کہا کہ میں اللہ کے عذاب سے ڈرتا ہوں۔ اس نے کہا کہ مجھے اتنا مال دے دو تو میں آخرت کا عذاب اپنے سر پر لے لوں گا۔ تو عذاب سے بچ جائے گا۔ چنانچہ اس نے کچھ مال دیا پھر باقی دینے سے انکار کر دیا۔ بعض روایات میں ہے کہ یہ آیت ولید بن مغیرہ کے بارے میں نازل ہوئی جو اسلام کی طرف مائل ہو گیا تھا اس کے دوست نے اس کو ملامت کی۔ (معارف مفتی اعظم)

---

**وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾**

اور دیا تھوڑا سا اور سخت نکلا ☆

---

ولید بن مغیرہ کا حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں "تھوڑا سا ایمان لانے لگا پھر اس کا دل سخت ہو گیا۔" مجاہد کہتے ہیں کہ یہ بات ولید بن مغیرہ کے بارے میں نازل ہوئی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی باتیں سن کر اس کو اسلام کی طرف تھوڑی سی رغبت ہو چلی تھی۔ اور کفر کی سزا سے ڈر کر قریب تھا کہ مسلمان ہو جائے۔ ایک کافر نے کہا کیا باپ دادا کا دین چھوڑتا ہے۔ تیرے سب جرائم اپنے اوپر لے لیتا ہوں۔ تیری طرف سے میں سزا بھگت لوں گا۔ بشرطیکہ اس قدر مال مجھ کو دیا جائے۔ اس نے وعدہ کر لیا اور عقیدہ توحید سے پھر گیا۔ کچھ تھوڑا سا ادا کر کے باقی سے انکار کر دیا۔ اس صورت میں "وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ" کے معنی یہ ہوں گے کہ کچھ مال دیا پھر ہاتھ کھینچ لیا۔ (تفسیر عثمانی)

محمد بن کعب قرظی کا قول ہے کہ اس آیت کا نزول ابوجہل کے بارے میں ہوا ابوجہل نے کہا تھا کہ محمد صلی اللہ علیہ وسلم ہم کو مکارم اخلاق کی تعلیم دیتے ہیں لیکن اس قول کے باوجود ایمان نہیں لایا۔ تھوڑا دینے کا یہی مطلب ہے۔ ترک کی تعریف کا یہ مطلب ہے کہ اقرار سے انکار کر دیا۔ (تفسیر مظہری)

**خرچ کرنے سے مال بڑھتا ہے:** امام ابن کثیر۔ یہ قرآن کا بیان ایسا صرف مال ہی کے بارے میں نہیں بلکہ ہر اس شخص کے حق میں ہے جو نیکی کرتا ہے اور خرچ کرتا ہے اللہ تعالیٰ اس کے بدلے میں اس کو بدلہ عطا فرماتا ہے۔ جیسے ارشاد ہے وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ۔ تو مال خرچ کرنے سے کمی کا خوف نہیں ہونا چاہئے۔ جس طرح اللہ تعالیٰ انسان کے تمام اعضاء میں جو کچھ محنت سے تحلیل ہو جاتا ہے غذا کے ذریعہ اس کا بدل اندر سے پیدا کر دیتے ہیں۔ اسی طرح مال کا بھی معاملہ ہے کہ انسان خرچ کرتا ہے تو اس کا بدل آ جاتا ہے۔

حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت بلال سے فرمایا "أَنْفِقْ يَا بِلَالُ وَلَا تَخْشَ مِنْ ذِي الْعَرْشِ إِقْلَالًا" یعنی اے بلال اللہ کی راہ میں خرچ کرتے رہو اور عرش والے اللہ تعالیٰ کی طرف سے اس کا خطرہ نہ کرو کہ وہ تمہیں مفلس کر دے گا۔ (ابن کثیر) (معارف مفتی اعظم)

---

**أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾**

کیا اس کے پاس خبر ہے غیب کی سو وہ دیکھتا ہے ☆

---

کیا یہ عالم الغیب ہے؟ یعنی کیا اس کو غیب کی بات معلوم ہو گئی ہے کہ دوسرے کی گٹھری اٹھانے والا اپنے سر لے کر اس کو چھڑا سکے گا۔ (تفسیر عثمانی)

---

**أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ ﴿٣٦﴾**

کیا اس کو خبر نہیں پہنچی جو ہے ورقوں میں

## مُوۡسٰی ۙ وَ اِبۡرٰہِیۡمَ الَّذِیۡ وَفّٰۤی ۙ

موسیٰ کے اور ابراہیم کے صحیفوں میں جنہوں نے اپنا قول پورا کر دکھایا

**حضرت ابراہیم کی وفاداری** یعنی ابراہیم اپنے قول پر پورا رہے اور دین کی تبلیغ میں پورا اترے اور اللہ کے حقوق پوری طرح ادا کیے اور اس کے احکام کی تعمیل میں کوئی کمی نہیں کی۔ (تفسیر حقانی)

یعنی اللہ کے احکام کی پوری پوری تعمیل کی تھی بیٹے کو ذبح کرنے کے لئے تو کمر بستہ ہو گئے۔ رب کے پیغام کو مخلوق تک پہنچانے میں طرح طرح کی تکلیفیں لوگوں کے ہاتھوں سے اٹھائیں اور صبر کیا یہاں تک کہ نمرود کی آگ میں بھی صبر کا دامن ہاتھ سے نہیں چھوڑا۔ اللہ نے متعدد احکام دے کر آزمائش کی اور تمام احکام کو آپ نے پورا پورا ادا کیا۔ تو نیز اب تمہیں اس [illegible] کی [illegible] پورا کرنا چاہئے۔

### حضرت ابراہیم کے لئے "وفّٰی" کہنے کی وجہ

بغوی نے اپنی سند سے حضرت ابو امامہؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے آیت وَاِبْرٰہِیْمَ الَّذِیْ وَفّٰی کے سلسلے میں فرمایا کہ دن کے اول حصہ میں ابراہیم نے چار رکعتیں پڑھی تھیں۔

ابن جریر اور ابن ابی حاتم نے حضرت معاذ بن انسؓ کی روایت سے بیان کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کیا میں تم کو نہ بتاؤں کہ اللہ نے ابراہیم خلیل اللہ کے متعلق الذی وفّٰی کیوں فرمایا؟ اس کی وجہ یہ تھی کہ ابراہیم ہر صبح و شام فَسُبْحٰنَ اللّٰہِ حِیْنَ تُمْسُوْنَ وَحِیْنَ تُصْبِحُوْنَ (الخ تین آیات) پڑھا کرتے تھے۔

ترمذی نے حضرت ابو الدرداء اور حضرت ابو ذرؓ کی روایت سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا بیان نقل کیا ہے۔ اللہ فرماتا ہے اے ابن آدم دن کے ابتدائی حصہ میں تو میرے لئے چار رکعتیں پڑھ لے پچھلے دن تک تیرے لئے میں کافی ہو جاؤں گا۔ [illegible] حدیث [illegible] کی [illegible] سے [illegible] کی [illegible] ہے۔ (تفسیر مظہری)

## اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۙ

کہ کوئی اٹھانے والا کسی دوسرے کا بوجھ نہیں اٹھائے گا

**صحف ابراہیم و موسیٰ کا ایک مضمون** یعنی موسیٰ اور ابراہیم کے صحیفوں میں یہ مضمون تھا کہ خدا کے ہاں کوئی مجرم دوسرے کا بوجھ نہیں اٹھا سکتا۔ ہر ایک کو اپنی اپنی بھگتنی ہوگی۔ (تفسیر عثمانی)

**دور جہالت کے غلط رواج** بغوی نے بروایت عکرمہ حضرت ابن عباسؓ کا بیان نقل کیا ہے کہ حضرت ابراہیم سے پہلے لوگ مجرم کے جرم کی پاداش میں غیر مجرم کو پکڑ لیتے تھے اور مجرم کی جگہ باپ یا بیٹے یا بھائی یا بیوی یا غلام کو قتل کر دیتے تھے۔ اس کے عوض اس شخص کو قتل کر دیا جاتا تھا۔ حضرت ابراہیم نے لوگوں کو اس حرکت سے روکا اور اللہ کا حکم پہنچایا کہ کسی کے جرم کا بار دوسرے پر نہ ڈالا جائے۔

میں کہتا ہوں حضرت ابراہیم سے پہلے کا رواج کوئی شرعی قانون نہیں تھا بلکہ ایک جاہلی رواج تھا۔ جیسا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت سے پہلے عرب میں اس طرح کا رواج تھا۔ ایک قبیلہ جب دوسرے قبیلہ سے زیادہ با عزت اور مالدار ہوتا تھا اور اس کی کسی عورت کو غریب قبیلہ کا آدمی قتل کر دیتا تھا تو شریف قبیلہ والے کمزور قبیلے کے کسی مرد کو مقتول عورت کے عوض قتل کرتے تھے اور اگر ان کا غلام مارا جاتا تھا تو دوسرے قبیلے کے کسی آزاد مرد کو قتل کرتے تھے اور ایک کے عوض دو کو قتل کرتے تھے۔ اسی رواج کو منسوخ کرنے کے لئے آیت اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰی بِالْاُنْثٰی نازل ہوئی۔ سورۂ بقرہ میں ہم نے اس آیت کی تشریح کی ہے۔

### جس نے برائی ایجاد کی تو سب کرنے والوں کا گناہ اس کو بھی ہوگا

امام احمد اور امام مسلم نے حضرت جریر بن عبد اللہؓ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مَنْ سَنَّ سُنَّةً سَيِّئَةً فَعَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ جس نے کوئی برا طریقہ ایجاد کیا اس پر اس طریقہ پر عمل کرنے والوں کا بھی گناہ ہوگا اور قیامت تک جو لوگ اس پر عمل کریں گے ان کا گناہ بھی اسی پر ہوگا۔

آیت وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی اور حدیث مَنْ سَنَّ سُنَّةً کا مقصد یہ ہے کہ ہر گناہ کا بار [illegible] کا [illegible] ہوگا [illegible] اس کا فعل چونکہ دوسروں کے جرم کا سبب بنے گا اس لئے اس کا جرم [illegible] ہے (یہ مطلب نہیں کہ نئے طریقے والے مجرموں کا جرم بھی اسی پر ڈال دیا جائے گا اور ان کو عذاب سے آزاد کر دیا جائے گا) اسی لئے حدیث کے آخر میں فرمایا ہے مِنْ غَيْرِ اَنْ يَّنْقُصَ مِنْ اَوْزَارِهِمْ شَيْئًا (بغیر اس کے کہ خود اس طریقہ پر چلنے والوں کے بار میں کوئی تخفیف کی جائے)۔

آیت ہے وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَاصَّةً (اس عذاب سے ڈرو جو صرف ظالموں پر ہی نہیں پڑے گا بلکہ عمومی ہوگا ظالم اور غیر ظالم سب پر آئے گا)۔ اسی طرح ایک حدیث مبارک میں آیا ہے جب اللہ کسی قوم پر عذاب نازل کرتا ہے تو (قوم میں) جو لوگ بھی اس کے اندر ہوتے ہیں سب پر وہ عذاب آتا ہے۔ پھر قیامت کے دن ان کے اعمال کے موافق (اٹھائے جائیں گے) [illegible] رواہ البخاری و مسلم من حدیث [illegible]

[illegible]

## مسئلہ — کیا میت کے گھر والوں کے رونے سے میت پر عذاب ہوتا ہے؟

[illegible]

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ

[illegible]

[illegible]

**ایصالِ ثواب کا مسئلہ:** آیت مذکورہ کا مفہوم [illegible] ہے کہ ایک شخص دوسرے [illegible] ثواب [illegible] (انتہیٰ)

[illegible] امام شافعی [illegible] امام ابو حنیفہ کے نزدیک جس طرح دعا اور صدقہ کا ثواب دوسرے کو پہنچایا جاسکتا ہے اسی طرح تلاوت قرآن اور ہر قسم کی عبادت کا ثواب [illegible] قرطبی نے اپنی تفسیر میں [illegible] ایصالِ ثواب [illegible]

**صحفِ موسیٰ و ابراہیم کے دو حکم:** [illegible]

**اس آیت کا منسوخ ہونا:** حضرت ابن عباسؓ نے فرمایا [illegible] منسوخ ہے۔ [illegible] حضرت ابراہیم اور حضرت موسیٰ [illegible] امت اسلامیہ کو [illegible] نیک اعمال کا بھی ثواب [illegible]

## ایصالِ ثواب کی احادیث

(۱) [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

[illegible]

(۲) مسلم نے حضرت [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

(۳) طبرانی نے حضرت [illegible]

(۴) حضرت [illegible] کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] قبروں کے اندر [illegible]

(۵) [illegible]

(۶) حضرت عائشہؓ راوی ہیں کہ ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم [illegible] اگر میں اس کی طرف سے خیرات کروں تو کیا اس کو ثواب پہنچے گا [illegible] متفق علیہ۔

(۷) حضرت ابن عباسؓ کی روایت ہے کہ حضرت سعد [illegible] ماں کا انتقال ہو گیا [illegible] رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میری ماں [illegible]

ماں باپ کی طرف سے ... غلام آزاد کرنے کی طرف سے قبول ہوتا ہے۔ رواہ الطبرانی۔

(۸) امام احمد اور چاروں اصحاب السنن نے نقل کیا ہے کہ حضرت سعد بن عبادہؓ نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میری والدہ کا انتقال ہو گیا ہے اب اس کے لئے کونسی خیرات سب سے بہتر ہوگی فرمایا پانی چنانچہ حضرت سعدؓ نے ایک کنواں کھدوا دیا اور کہا یہ سعد کی ماں کے لئے ہے۔

(۹) حضرت ابن عمرؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اگر تم میں سے کوئی شخص کوئی نفل خیرات کرے تو اس کو اپنے ماں باپ کی طرف سے کر دے اس خیرات کا ثواب اس کے ماں باپ کو ملے گا اور خود اس کے ثواب میں بھی کوئی کمی نہیں ہوگی۔

(۱۰) حضرت انسؓ کا بیان ہے میں نے خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو فرماتے سنا کہ جس گھر میں کوئی مر جائے پھر گھر والے اس کے لئے کچھ خیرات کریں تو جبرئیل نور کے ایک طباق میں اس کو رکھ کر میت کی قبر کے کنارے کھڑے ہو کر کہتے ہیں۔ اے گہری قبر والے یہ تحفہ ہے جو تیرے گھر والوں نے تجھے بھیجا ہے اس کو لے لے اس طرح وہ تحفہ اس کی قبر میں داخل ہو جاتا ہے ... وہ اس سے خوش ہوتا ہے اور اس کے پڑوسی جن کے لئے کچھ نہیں بھیجا جاتا وہ غمگین ہوتے ہیں۔ رواہ الطبرانی فی الاوسط۔

(۱۱) حضرت ابن عباسؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص اپنے ماں باپ کی طرف سے حج کرتا ہے اللہ تعالیٰ اس کی طرف سے ان کے والدین کے۔ پھر لکھ دیتا ہے اور ان کے لئے حج کامل ہو جاتا ہے لیکن حج کرنے والے کے ثواب میں بھی کوئی کمی نہیں آتی۔

(۱۲) ابو عبداللہ ثقفی نے حضرت زید بن ارقمؓ کی روایت سے بیان کیا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں عرض کیا جس کے ماں باپ نے حج نہ کیا ہو اور وہ ماں باپ کے لئے حج کرے تو کیا حکم ہے۔ فرمایا ان کے ماں باپ ادا ہو جائیں گے۔ اور آسمان میں ان کی روحوں کو بشارت دی جائے گی اور اس کے (ماں باپ کے ساتھ) نیکی لکھا جائے گا۔

(۱۳) حضرت عقبہ بن عامرؓ راوی ہیں کہ ایک عورت نے حضور کی خدمت میں عرض کیا میری ماں مر گئی ہے کیا میں اس کی طرف سے حج کر سکتی ہوں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یہ بتاؤ اگر تیری ماں پر کچھ قرض ہوتا تو (اس کی طرف سے) ادا کرتی؟ (تو کیا ادا ہو جاتا) عورت نے عرض کیا جی ہاں حضور نے اس کو ماں کے لئے حج کرنے کا حکم دے دیا۔ (رواہ الطبرانی)

(۱۴) حضرت ابن عباسؓ کی روایت ہے ایک شخص نے خدمت گرامی میں حاضر ہو کر عرض کیا میرا باپ مر گیا اور حج اسلام (یعنی فرض حج) نہیں کیا (کیا میں اس کی طرف سے حج کر سکتا ہوں) فرمایا یہ بتا کہ اگر تیرے باپ پر قرض ہوتا (اور تو ادا کر دیتا) کیا تو اس کی طرف سے ادا کر دے گا؟ اس نے کہا جی ہاں فرمایا تو پھر اس پر خدا کا قرض تو ادا کر دے۔ رواہ البزار والطبرانی باسناد حسن۔

(۱۵) حضرت ابو ہریرہؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص کسی میت کی طرف سے حج کرے گا اس کو میت کے برابر ثواب ملے گا۔ اور جو شخص کسی کو حج کرائے گا (یا میت کی طرف سے اس کا خرچ ادا کرے گا) تو اس کو بھی ایسا ثواب ملے گا جتنا حج کرنے والے کو ملے گا۔ رواہ الطبرانی فی الاوسط۔

(۱۶) عطاء اور زید بن اسلم کی مرسل روایت ہے کہ ایک شخص نے خدمت اقدس میں حاضر ہو کر عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میرا باپ مر چکا ہے میں (اس کو ثواب پہنچانے کے لئے) اس کی طرف سے غلام آزاد کروں؟ ... حضور نے فرمایا ہاں۔ ... بیان کیا ہے۔

(۱۷) حضرت ابن عباسؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک شخص کو یہ کہتے سنا لبیک عن شبرمہ (یعنی اس نے احرام شبرمہ کے لئے یا شبرمہ کی طرف سے باندھا تھا) فرمایا شبرمہ کون ہے؟ اس شخص نے جواب دیا میرا بھائی یا میرا عزیز فرمایا کیا تو اپنا حج کر چکا ہے اس نے عرض کیا نہیں فرمایا تو پہلے اپنا حج کر پھر شبرمہ کے لئے۔ رواہ ابو داؤد وابن ماجہ وابن خزیمہ فی صحیحہ والبیہقی۔ بیہقی نے اس کی سند کو صحیح کہا ہے۔

(۱۸) ابو الشیخ کا بیان ہے کہ حضرت عمرو بن عاصؓ نے خدمت گرامی میں عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عاص نے وصیت کی تھی کہ اس کی طرف سے کوئی بردے آزاد کئے جائیں ... فرمایا اگر وہ مسلمان ہوتا اور تم اس کی طرف سے صدقہ کرتے تو اس کو اس کا ثواب پہنچتا ... (یعنی کافر کو ثواب نہیں پہنچتا)۔

(۱۹) حضرت ابن عمرو بن عاصؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم میں سے کسی کا کیا نقصان ہے اگر وہ اپنے ماں باپ کے لئے کوئی نفل صدقہ کرے تو اس کا ثواب ماں باپ کو ملے گا اور اس کے ثواب میں سے بھی کچھ کم نہ ہوگا۔ رواہ الطبرانی فی الاوسط۔

(۲۰) حضرت بریدہؓ کی حدیث ہے کہ ایک عورت نے عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میری ماں پر ایک ماہ کے روزے تھے (اور وہ مر گئی) کیا میں اس کی طرف سے روزے رکھوں؟ ... فرمایا ہاں اس عورت نے عرض کیا میری ماں نے حج بھی نہیں کیا کیا میں اس کی طرف سے حج کر سکتی ہوں۔ فرمایا ہاں۔ رواہ مسلم۔

(۲۱) حضرت عائشہؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص مر جائے اور اس پر روزے ہوں تو اس کا ولی اس کی طرف سے روزے رکھے۔ متفق علیہ۔

(۲۲) حضرت علیؓ کی مرفوع حدیث ہے کہ جو شخص قبرستان سے گزرے اور گیارہ مرتبہ قل ہو اللہ احد پڑھ کر اس کا ثواب مردوں کو بخشے تو اس کو مردوں کی تعداد کے موافق ثواب عطا کیا جائے گا۔ رواہ ابو محمد السمرقندی۔

(۲۳) حضرت ابو ہریرہؓ کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص قبرستان میں داخل ہو پھر سورۂ فاتحہ اور قل ہو اللہ احد اور

[illegible] مغفرت فرمائے۔ کتب سے جو تیرا کرم پڑھ کر اس کا ثواب اس قبرستان کے مومن مردوں اور مومن عورتوں کو بخش دے تو اللہ تعالیٰ [illegible] قبر سے [illegible] مغفرت فرمائے [illegible]

(۱۴) حضرت علی کی روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جو شخص قبرستان میں جائے پھر سورۂ یٰس پڑھے تو اللہ ان مردوں سے عذاب ہلکا کر دے گا اور ان قبرستان کے مردوں کی تعداد کے موافق پڑھنے والے کے لئے نیکیاں لکھی جائیں گی (عبد العزیز صاحب [illegible])

(۱۵) [illegible] روایت سے بیان کیا ہے کہ حضرت [illegible] کے انتقال کے بعد [illegible] ان کی قبر پر [illegible] کے بعد پہنچا۔

امت کا اجماع: حافظ شمس الدین بن عبد الواحد نے کہا کہ لوگ ہر شہر میں جمع ہو کر اپنے مردوں کے لئے قرآن پڑھتے رہے ہیں اور کسی نے اس کا انکار نہیں کیا، گویا اس پر اجماع ہو گیا۔ خلال نے شعبی کی روایت سے بیان کیا ہے کہ انصار میں جب کوئی شخص مر جاتا تو لوگ اس کی قبر پر آتے جاتے اور قرآن پڑھا کرتے تھے۔ [illegible] بن حنبل کی روایت سے آیا ہے کہ جب تم قبرستان میں داخل ہو تو سورۂ فاتحہ اور معوذتین اور قل ہو اللہ احد پڑھ کر اس کا ثواب اہل قبرستان کو بخش دیا کرو کیونکہ (تلاوت کا ثواب) ان کو پہنچ جاتا ہے۔

زندوں کی دعا سے مردوں کو فائدہ: سہیلی کا قول ہے کہ جمہور علماء نے اس بات پر اتفاق کیا ہے کہ زندوں کی دعا سے مردوں کو فائدہ ہوتا ہے۔ [illegible] قرآن کی یہ آیت ہے جس سے ثابت ہے۔

[illegible]

[illegible]

یعنی جو لوگ ان کے بعد آئے وہ کہتے ہیں اے ہمارے رب ہم کو اور ہمارے ان بھائیوں کو بخش دے [illegible] زندوں کی دعا سے مردوں کو فائدہ پہنچتا ہے اور یہ بات صرف اسی امت کے ساتھ مخصوص نہیں ہے۔ حضرت نوح علیہ السلام نے دعا کی تھی [illegible] [illegible] بِالْمُؤْمِنِینَ [illegible] حضرت ابراہیم نے [illegible] فرمایا تھا [illegible] حضرت یعقوب نے اپنے بیٹوں سے فرمایا تھا [illegible] حضرت یوسف کے بھائیوں نے اپنے باپ سے درخواست کی تھی [illegible] [illegible]

آیت کی تاویل میں بیضاوی نے لکھا ہے کہ جو شخص نیک اعمال و خیرات کے لئے نیت کرے (اور بغیر کئے مر جائے) تو وہ ثواب پانے والے کی طرح ہوتا ہے (مستفیض [illegible] کو اسی [illegible] قرآن کی آیت سے ثابت [illegible] فائدہ پہنچ سکتا ہے [illegible] کا مطلب یہ ہے کہ [illegible] اس کا کوئی عمل ثمر آور نہیں ہو گا۔ [illegible]

قبر کے وقت آیات کا پڑھنا:

[illegible] دفن کے وقت قبر پر سورۂ بقرہ کی ابتدائی اور آخری آیات پڑھنا مستحب ہے۔ حضرت ابن عمر سے بھی منقول ہے اور حضرت عبد اللہ بن عمر کی روایت میں سرہانے کی طرف سورۂ بقرہ کی ابتدائی اور آخری آیات کا پڑھنا آیا ہے۔ [illegible] کے نزدیک اس کا مطلب یہ ہے کہ [illegible] ہے کہ قبرستان میں داخل ہونے کے وقت [illegible] میں پڑھنا [illegible]

[illegible] کے علاوہ اول کتاب ہے آدمی کے مرنے کے بعد (اس کے متعلقین کی طرف سے جو) [illegible] کا ثواب [illegible] [illegible] ہے۔ (تفسیر مظہری)

علامہ زبیدی کا قول: علامہ زبیدی نے شرح احیاء میں فرماتے ہیں کہ خانوادۂ حضرات الصالحین [illegible] ہیں اور یہ بیان ہوا ہے کہ [illegible] کی طرف سے کی گئی صدقہ اور خیرات کا ثواب پہنچ جاتا ہے۔

[illegible] ایک شخص کا عمل ہے کہ [illegible] دوسرے کا نفع [illegible] اور دوسرے کو [illegible] ہے۔

[illegible] عمل کی ترغیب: انسان کو چاہئے کہ وہ اپنے [illegible] پر بھروسہ کر کے نہ بیٹھ جائے بلکہ اس کو چاہئے کہ خود بھی عمل کرے۔ [illegible] عمل کرے [illegible] ہے کا تو [illegible] اِلَیْہِ تَعَالٰی [illegible] [illegible] یعنی مطلب یہ ہے کہ کوئی شخص دوسرے کے بوجھ [illegible] [illegible] [illegible]

قرآن کریم سے مردوں کے لئے دعائے مغفرت کا ثبوت [illegible]

[illegible]

[illegible] (سورۂ حشر [illegible])

## وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ۠ ثُمَّ

[illegible]

## يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۙ

[illegible]

[illegible] (مظہری)

**آیت کا مطلب** [illegible]

[illegible]

(۲) [illegible]

انما الاعمال بالنیات وانما لکل امرء ما نوی فمن کانت هجرته الی الله ورسوله فهجرته الی الله ورسوله ومن کانت هجرته الی دنیا یصیبها او امرأة ینکحها فهجرته الی ما هاجر الیه [illegible]

[illegible]

## وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۙ

[illegible]

## نیکیوں کا پھل اللہ ہی سے ملتا ہے

[illegible]

[illegible]

**غور نہ کرنے کی وجہ:** [illegible]

## ذات الٰہی تک بے کیف رسائی ممکن ہے

[illegible] (تفسیر مظہری)

**شیطان کی حرکت:** [illegible]

[illegible] پیدا کیا [illegible] اللہ تعالیٰ [illegible] پیدا [illegible]

| |
|---|
| وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۝ وَأَنَّهُ |
| اور یہ کہ وہی ہے جو ہنساتا اور رلاتا ہے اور یہ کہ |
| هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ۝ وَأَنَّهُ خَلَقَ |
| وہی ہے جو مارتا اور جلاتا ہے اور یہ کہ اسی نے بنایا |
| الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝ |
| جوڑا نر اور مادہ ☆ |

**متضاد کیفیات کا خالق** [illegible] اسی نے پیدا کیے ہیں۔ [illegible] کیفیات [illegible] اسی کا کام ہے [illegible]

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اور صحابہ کی خوش دلی

[illegible]

| |
|---|
| مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ۝ وَأَنَّ عَلَيْهِ |
| ایک بوند سے جب ٹپکائی جائے اور یہ کہ اس کے ذمہ ہے |
| النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ۝ |
| دوبارہ اٹھانا ☆ |

دوبارہ پیدا ہونا [illegible]

| |
|---|
| وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۝ |
| اور یہ کہ اسی نے دولت دی اور خزانہ ☆ |

**غنی و فقیر** [illegible] پہلے بیان کے مناسب معلوم ہوتے ہیں۔ [illegible] مطلب لیا جائے [illegible]

| |
|---|
| وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ۝ |
| اور یہ کہ وہی ہے رب شعریٰ کا ☆ |

**شعریٰ** [illegible]

ہے۔ بنی خزاعہ شعریٰ کی پوجا کرتے تھے۔

## شعریٰ کی پوجا کا موجد

ابو کبشہ نامی ایک شخص تھا جو بنی خزاعہ کا ایک سردار تھا۔ اس نے اس رسم پوجا کی ایجاد کی اور قریش کے بت پرستی کے رواج کی مخالفت کی۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو بھی عرب کی مناسبت سے ابن ابی کبشہ کہتے تھے کیونکہ آپ نے بھی عرب کی بت پرستی کی مخالفت کی تھی۔ شعریٰ کے رب ہونے کا خصوصی ذکر اس وجہ سے کیا کہ وہ لوگ شعریٰ کو پوجتے تھے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ |
| اور یہ کہ اس نے مارا عاد پہلے کو ☆ |

☆ یعنی حضرت ہود علیہ السلام کی قوم۔ (تفسیر عثمانی)

☆☆ یعنی قوم ہود جیسے عاد اولیٰ اور ثمود سام بن نوح کی نسل سے تھے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ وَقَوْمَ نُوحٍ |
| اور ثمود کو پھر کسی کو باقی نہ چھوڑا اور نوح کی قوم کو |
| مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ |
| پہلے اس سے وہ تو تھے وہ ہی ظالم |
| وَأَطْغَىٰ |
| اور شریر ☆ |

قوم نوح حد کی شریر تھی کہ ساڑھے نو سو برس تک حضرت نوح علیہ السلام کو تنگ کرتی رہی، ایسا کیا کرتے تھے، جس کو نبی کو کہ بچہ جانتا ہے اور آنے والوں کے لئے بری راہ ڈال گئے۔ (تفسیر حقانی)

| |
|---|
| وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۙ فَغَشَّاهَا |
| اور الٹی بستی کو پٹک دیا پھر آ پڑا |
| مَا غَشَّىٰ |
| اس پر جو کچھ کہ آ پڑا ☆☆ |

☆ یعنی پتھروں کا مینہ (قوم لوط کی بستیوں پر برسایا گیا ہے) (تفسیر حقانی)

ما غشّٰی۔ یعنی اوپر سے جو عذاب ہونا تھا ہوا۔ لفظ ما کا ابہام عظمت

عذاب اور جو کچھ ہلاکت کی پر دلالت کرتا ہے۔ (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ |
| اب تو کیا کیا نعمتیں اپنے رب کی جھٹلائے گا ☆ |

**ظالموں کی تباہی** ☆ یعنی اپنے مفسد ظالموں اور باغیوں کو تباہ کرنا بھی اللہ کا بڑا بھاری احسان ہے۔ کیا ایک منکر کو کوئی بھی موقع اپنے رب کو جھٹلانے کا رہے گا۔ (تفسیر عثمانی)

**خطاب عام** حضرت ابن عباس نے فرمایا کہ یہ خطاب عام انسان کو ہے کہ سابقہ آیات و صحف موسیٰ و ابراہیم میں مذکور ہیں ان کی روشنی میں کوئی شک کرنے والا بھی غور و فکر کرے تو اس کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی وحی اور تعلیمات کے حق ہونے میں کسی شک و شبہ کی گنجائش نہیں۔ جن اقوام کو ہلاک کیا گیا ان کے عذاب کے واقعات سے منکر مخالفت سے باز آ جانے کا اچھا موقع ملتا ہے جو حق تعالیٰ کی ایک نعمت ہے مگر وہ اللہ تعالیٰ کی ان نعمتوں میں تکرار اور اختلاف کرتے رہ گئے۔ (معارف القرآن)

| |
|---|
| هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ |
| یہ ایک ڈر سنانے والا ہے پہلے ڈر سنانے والوں میں کا ☆ |

## نذیر انسانیت صلی اللہ علیہ وسلم ☆

☆ یعنی حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم بھی اسی طرح کے برے انجام سے ڈرانے والے ہیں جیسا ان سے پیشتر دوسرے انبیاء ڈرا چکے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

حدیث میں ہے تمہیں کھلم کھلا ڈرانے والا ہوں۔ یعنی جس طرح کوئی شخص کسی برائی کو دیکھ لے کہ دشمن قوم کے قریب پہنچ چکا ہے اور پھر جس حالت میں ہو اسی میں دوڑتا ہوا آ جائے اور قوم کو دفعتاً متنبہ کر دے کہ مجھ وہ بلا آ رہی ہے جلد از جلد بچاؤ کر لو۔ اسی طرح قیامت کے ہولناک عذاب بھی لوگوں کی غفلت کی حالت میں ان سے بالکل قریب ہو گئے ہیں اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ان عذابوں سے متنبہ کر رہے ہیں جیسے اس کے بعد کی سورت میں ہے اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ قیامت قریب آ گئی ہے۔ مسند احمد کی حدیث میں ہے لوگو! گناہوں کو چھوٹا اور حقیر جاننے سے بچو۔ سنو! چھوٹے چھوٹے گناہوں کی مثال ایسی ہے جیسے ایک قافلہ کسی جگہ اترا سب ادھر ادھر چلے گئے اور لکڑیاں سمیٹ کر تھوڑی تھوڑی لے آئے۔ تو ہر ایک کے پاس تھوڑی تھوڑی تھیں جب ان سب کو جمع کر دیا تو آگ جلا کر ہانڈی پکا لی۔ اسی طرح چھوٹے چھوٹے گناہ جمع ہو کر ڈھیر لگ جاتا ہے اور اچانک اس گنہگار کو پکڑ لیا جاتا ہے اور وہ ہلاک ہو جاتا ہے۔ اور حدیث میں

ہے میری اور قیامت کی مثال ایسی ہے پھر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی شہادت کی اور درمیان کی انگلی اٹھا کر ان دونوں کا فاصلہ دکھایا۔ میری اور قیامت کی مثال دو گھوڑوں کی سی ہے۔ میری اور آخرت کے دن کی مثال ٹھیک اس طرح ہے جس طرح ایک قوم نے کسی شخص کو حالات پر بھیجا اس نے دشمن کو تاک کر بالکل قریب دیکھا کہ دشمن تو چھاپہ مارنے کے لئے تیار ہے یہاں تک کہ اسے ڈر لگا کہ میرے پہنچنے سے پہلے ہی کہیں وہ نہ پہنچ جائیں تو وہ ایک ٹیلے پر چڑھ گیا اور وہیں کپڑا ہلا ہلا کر انہیں اشارے سے بتلایا کہ ہوشیار ہو جاؤ دشمن سر پر آ پہنچا ہے۔ پس میں ایسا ہی ڈرانے والا ہوں۔ اس حدیث کی شہادت میں اور بھی بہت سی صحیح حدیثیں موجود ہیں۔ (تفسیر ابن کثیر)

## آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا خطاب:

صحیحین کی روایات میں ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے صلوٰۃ الکسوف میں سورج گہن کی نماز میں بعد سلام کے موعظہ بیان کئے گئے اور آپ نے اپنے خطبہ میں ارشاد فرمایا اے لوگو! خدا کی قسم کوئی غیرت والا اس بات سے زیادہ غیرت والا نہیں کہ اس کا بندہ یا اس کی بندی زنا کرے، مراد یہ کہ بے حیائی کا ارتکاب کرنے والے شخص کو اس بات سے غافل نہ ہونا چاہئے کہ اللہ تعالیٰ کی غیرت کو پامال کر کے خدا کے قہر و غضب کو بھڑکا رہا ہے اور اس صورت میں اسے برے انجام سے بے فکر نہ ہونا چاہئے۔

اور ایک حدیث میں ہے آپ نے ارشاد فرمایا اے لوگو! اگر تم وہ بات جان لو جو مجھے معلوم ہے تو تم لوگ ہنسنا بھول جاؤ گے اور کثرت سے رویا کرو گے اور حق کی تلاش میں اپنے بستروں پر چین نہ آئے گا اور تم جنگلوں میں نکل جاؤ گے۔ (معارف کاندھلوی)

أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِن

آ پہنچی آنے والی کوئی نہیں اس کو

دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾

سوائے خدا کے کھول کر دکھانے والا ☆

قیامت قریب ہے: یعنی قیامت قریب ہی آگئی ہے جس کا ٹھیک وقت اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا۔ ہاں جب وقت معین آ جائے گا کوئی طاقت اس کو دفع نہیں کر سکتی، البتہ دعا و استغفار سے ٹل سکتی ہے مگر ادھر سے ٹالی نہیں جاتی۔ (تفسیر عثمانی)

أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾

کیا تم کو اس بات سے تعجب ہوتا ہے

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾ وَأَنتُمْ

اور ہنستے ہو اور روتے نہیں

سَامِدُونَ ﴿٦١﴾

اور تم کھلاڑیاں کرتے ہو ☆

قرب قیامت کا تقاضا: یعنی قیامت اور اس کے قرب کا ذکر سن کر چاہئے تھا خوف خدا سے روتے اور پھر آگے کی تیاری کرتے۔ مگر تم اس کے برعکس تعجب کرتے اور ہنستے ہو۔ غافل اور بے فکر ہو کر کھیل کود میں لگے رہتے ہو۔ (تفسیر عثمانی)

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۩ ﴿٦٢﴾

سو سجدہ کرو اللہ کے آگے اور بندگی ☆

عقلمند کا فرض: یعنی عاقل کو زیبا نہیں کہ انجام سے غافل ہو کر نصیحت و عبرت کی باتوں پر ہنسے اور مذاق اڑائے بلکہ لازم ہے کہ بندگی کی راہ اختیار کرے اور نہایت عاجزی و تذلل سے اپنی جبین نیاز خدا تعالیٰ کے سامنے جھکا دے۔ (تنبیہ) روایت میں ہے کہ سورۂ نجم پڑھ کر آپ نے سجدہ کیا اور تمام مسلمان اور مشرک جو حاضر تھے سجدہ میں گر پڑے۔ حضرت شاہ ولی اللہ قدس سرہ لکھتے ہیں کہ اس وقت سب کو ایک غیبی ہیبت نے گھیر لیا تھا۔ گویا ایک غیبی اور قہری تصرف سے مغلوب ہو کر سب کو سر بسجود ہونا پڑا صرف ایک بدبخت جس کے دل پر سخت مہر تھی اس نے سجدہ نہ کیا مگر زمین سے تھوڑی سی مٹی اٹھا کر پیشانی کو لگائی اور کہا کہ مجھے اتنا ہی کافی ہے۔ (ختم سورۂ نجم ترجمہ شیخ الہند) (تفسیر عثمانی)

ایک بدبخت بوڑھا: حضرت ابن مسعودؓ راوی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے والنجم پڑھی اور اس میں سجدہ کیا اور جو لوگ آپ کے ساتھ تھے انہوں نے سجدہ کیا۔ مگر قریش کے ایک بوڑھے شخص نے (سجدہ نہیں کیا بلکہ) ایک ہاتھ میں کنکریاں یا مٹی لے کر پیشانی تک لے گیا اور کہا میرے لئے یہی کافی ہے۔ حضرت عبداللہ نے فرمایا میں نے دیکھا کہ اس واقعہ کے بعد وہ کفر کی حالت میں مارا گیا۔ متفق علیہ۔ (تفسیر مظہری)

الحمد للہ سورۂ نجم ختم ہوئی

ہر شخص خواب میں اس کی تلاوت کرے اس کی تعبیر یہ ہے کہ اس کو جلا وطن کیا جاوے گا اور وہ اس سے نجات پائے گا اور اللہ تعالیٰ کے حکم سے اس کو کوئی نقصان پہنچایا نہ جائے گا۔ (ابن سیرین)

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

سورۂ قمر مکہ میں نازل ہوئی اس کی پچپن آیتیں اور تین رکوع ہیں

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(شروع اللہ کے نام سے جو بے حد مہربان نہایت رحم والا ہے)

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ (۱)

(۱) نزدیک آ لگی قیامت اور پھٹ گیا چاند (۱)

**معجزۂ شق القمر:** ہجرت سے پیشتر نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم منیٰ میں تشریف فرما تھے کفار کا مجمع تھا۔ انہوں نے آپ سے کوئی نشانی طلب کی۔ آپ نے فرمایا آسمان کی طرف دیکھو۔ ناگاہ چاند پھٹ کر دو ٹکڑے ہو گیا۔ ایک ٹکڑا ان میں سے مغرب کی اور دوسرا مشرق کی طرف چلا گیا۔ بیچ میں پہاڑ حائل تھا جب سب نے خوب اچھی طرح یہ معجزہ دیکھ لیا دونوں ٹکڑے پھر مل گئے کفار کہنے لگے کہ محمد نے چاند پر یا ہم پر جادو کر دیا۔ اسی معجزہ کو "شق القمر" کہتے ہیں۔ اور یہ ایک نمونہ اور نشانی تھی قیامت کی کہ آگے سب کچھ یوں ہی پھٹے گا۔ بخاری اور ابن کثیر وغیرہ نے اس واقعہ کے تواتر کا دعویٰ کیا ہے۔ کسی عقلی دلیل سے آج تک اس طرح کے واقعات کا محال ہونا ثابت نہیں کیا جا سکا اور محض استبعاد کی بنا پر ایک قطعی الثبوت چیز کا انکار نہیں کیا جا سکتا بلکہ استبعاد تو اعجاز کے لئے لازم ہے۔ ورنہ معمولی واقعات کو معجزہ کون کہے گا۔ (ملاحظہ ہو ہمارا مستقل مضمون جو معجزات و خوارق عادات کے متعلق "الفرقان" میں شائع ہوا ہے) باقی یہ کہنا کہ "شق القمر" اگر واقع ہوا تھا تو تاریخوں میں اس کا ذکر کیوں نہیں۔ تو یاد رہے کہ یہ قصہ رات کا ہے بعض ملکوں میں تو اختلاف مطالع کی وجہ سے اس وقت دن ہوگا اور بعض جگہ آدھی رات ہوگی لوگ سو رہے ہوں گے اور جہاں بیدار ہوں گے اور کھلے آسمان کے نیچے بیٹھے ہوں گے تو یہ ضروری نہیں کہ سب آسمان کی طرف تک رہے ہوں۔ زمین پر چاند کی چاندنی پھیلی ہوئی۔ جس میں مطلع صاف تھا ان میں دو ٹکڑے ہو جانے سے کوئی فرق نہیں پڑتا۔ پھر تھوڑی دیر کا قصہ تھا ہم دیکھتے ہیں کہ پورا چاند گہن ہوتا ہے اور خاصہ دیر رہتا ہے لیکن لاکھوں انسانوں کو خبر بھی نہیں ہوتی اور اس زمانہ میں آج کل کی طرح رصد وغیرہ کے رسمی و سیع و مکمل انتظامات اور بلند اور مکمل رصد گاہیں (آبزرویٹری) کی نہ اس قدر اشاعت بھی نہ تھی پھر وہاں تاریخوں میں مذکور نہ ہونے سے اس کی تکذیب نہیں ہو سکتی۔ تاہم ہند کی "تاریخ فرشتہ" وغیرہ میں اس کا ذکر موجود ہے۔ ہندوستان میں مہاراجہ "ملیبار" کے مسلمان ہونے کا سبب اسی واقعہ کو لکھتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی)

**سببِ نزول:** بغوی نے بوساطت شیبان قتادہ کا بیان نقل کیا ہے کہ مکہ والوں نے پھٹ جانے کا معجزہ حضور سے طلب کیا۔ ترمذی میں بھی لکھا ہے کہ مکہ میں چاند دو ٹکڑے ہو گیا اس پر آیت اقتربت الساعۃ وانشق القمر۔ نازل ہوئی۔ صحیحین اور حاکم نے بیان کیا کہ حضرت ابن مسعودؓ نے فرمایا میں نے مکہ میں دیکھا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ہجرت سے پہلے چاند پھٹ کر دو ٹکڑے ہو گیا تھا کافروں نے کہا چاند پر جادو کر دیا گیا اس پر آیت اقتربت الساعۃ وانشق القمر نازل ہوئی۔ بیہقی نے بوساطت مسروق حضرت عبداللہ کا بیان نقل کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے عہد میں چاند پھٹ گیا لوگوں نے کہا ابن ابی کبشہ نے تم پر جادو کر دیا ہے مسافروں سے دریافت کرو مسافروں سے دریافت کرنے کے بعد معلوم ہوا کہ انہوں نے بھی چاند کو پھٹا ہوا دیکھا تھا اس پر آیت اقتربت الساعۃ نازل ہوئی۔

**ابو کبشہ:** ابو کبشہ عرب کے قبیلہ خزاعہ کا ایک سردار تھا جس نے بت پرستی کو ترک کر کے ستارہ پرستی شروع کر دی تھی یعنی عام مشرکوں کا وہ مذہب چھوڑ دیا تھا اور چونکہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی بت پرستی کی مخالفت کی اور عام عرب کے مسلک سے بیزاری کا اعلان کر دیا تھا اس لئے اہل مکہ آپ کو ابن ابی کبشہ کہتے تھے۔ (تفسیر مظہری)

## معجزۂ شق القمر کے وقوع میں کسی شک کی گنجائش نہیں ہے

معجزۂ شق القمر کا وقوع قرآن کریم اور احادیث متواترہ اور اجماع امت سے ثابت ہے اور علماء نے اس پر تواتر کا قول کیا ہے اس کا منکر گمراہ ہے۔ ظاہر ہے کہ جس چیز کا ثبوت کلام صادق اور احادیث رسول صلی اللہ علیہ وسلم اور مشاہدہ سے ہو چکا ہو اس کا انکار یا اس کی تاویل خلاف عقل ہے اس پر ایمان لانا لازم ہے جس طرح قرآن کریم کی تصریحات کی وجہ سے جنت و جہنم پر ایمان لائے بغیر کوئی شخص مومن نہیں ہو سکتا اسی طرح قرآن کریم کی تصریحات پر بغیر ایمان کے ایمان کا تصور نہیں کیا جا سکتا۔ اگر قرآنی تصریحات اور قطعیات میں تاویل کا دروازہ کھول دیا جائے تو پھر تو ایمان کا خیر ہے اور جنت و جہنم کی حقیقت کا کوئی مسئلہ باقی رہ سکتا ہے تو جس قرآن عظیم نے ہم کو قیامت جیسے عظیم الشان واقعہ کی خبر دی اور

[illegible] شق القمر [illegible]
[illegible] قیامت [illegible] ایمان [illegible] شق القمر [illegible]
[illegible]

## فلاسفہ ملحدین کی بے عقلی

[illegible] شق القمر [illegible] قیامت [illegible]

## معجزہ ردِ شمس

[illegible] آفتاب [illegible] حضرت علی [illegible]

وَإِن يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ

[illegible]

مُّسْتَمِرٌّ

[illegible]

[illegible]

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ

[illegible]

أَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ

[illegible]

[illegible]

## امرِ مستقر کے بارے میں علماء کے اقوال

[illegible]

وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّنَ الْأَنبَاءِ

[illegible]

مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ

[illegible]

[illegible]

### قیامت کی آمد آمد ہے

[illegible]

[illegible]

(مسلم)

حضرت حذیفہ [illegible] خطبہ جمعہ [illegible]

[illegible]

**حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ**

[illegible]

**فَتَوَلَّ عَنْهُمْ**

[illegible]

[illegible]

**يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ**

[illegible]

حضرت اسرافیل علیہ السلام کی پکار [illegible]

**خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ**

[illegible]

**يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ**

**كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ**

**مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ**

[illegible]

**يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ**

[illegible]

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا

جھٹلا چکی ہے ان سے پہلے نوح کی قوم پھر جھٹلایا

عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝

ہمارے بندہ کو اور کہا دیوانہ ہے اور جھڑک لیا اس کو

۹۔ کہنے لگے اس کو [illegible] آسیب زدہ [illegible] اور انہوں نے "وازدجر" کے معنی [illegible] (مظہری)

## ساڑھے نو سو سال حضرت نوح علیہ السلام کی تکذیب ہوتی رہی

فکذبوا عبدنا۔ یعنی انہوں نے نوح کی متواتر تکذیب کی تکذیب کرنے [illegible] ایک نسل [illegible] جب [illegible] آتے [illegible] تکذیب کرتی تھی [illegible] کے بعد [illegible] حضرت نوح کو جھوٹا کہتی تھی [illegible]

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۝

پھر پکارا اپنے رب کو کہ میں عاجز ہو گیا ہوں تو بدلہ لے ۱۰

[illegible] پروردگار میں ان سے [illegible] [illegible] (مظہری)

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۝

پھر ہم نے کھول دیئے دہانے آسمان کے پانی ٹوٹ کر برسنے والے سے

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ

اور بہا دیئے زمین سے چشمے پھر مل گیا سب پانی

عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

ایک کام پر جو ٹھہر چکا تھا ۱۲

۱۱۔ [illegible] آسمان کے دروازے کھول دیئے [illegible] زمین کے [illegible] چشمے [illegible]

کر دو، [illegible] سب پانی [illegible] کام کے لئے اکٹھا ہو گیا جو پہلے سے اللہ کے ہاں [illegible] تھا یعنی قوم نوح کی ہلاکت اور غرقابی۔ (مظہری)

منہمر۔ [illegible] مسلسل [illegible]

وفجرنا الارض عیونا۔ یعنی ہم نے زمین کو چشمے ہی چشمے بنا دیا (یعنی [illegible] پوری زمین چشمہ ہی ہو گئی)

فالتقی الماء۔ [illegible] آسمان اور زمین کا پانی آپس میں مل گیا [illegible]

## قد قدر کے دو مطلب:

[illegible]

## اس آیت سے تقدیر پر استدلال

[illegible] (مظہری)

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ۝

اور ہم نے اس کو سوار کر دیا ایک تختوں اور کیلوں والی پر

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا

بہتی تھی ہماری آنکھوں کے سامنے ۱۴

[illegible]

جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿۱۴﴾

بدلہ لینے کو اس کی طرف سے جس کی قدر نہ جانی گئی تھی

[illegible]

## ہر نبی اپنی امت کے لئے رحمت اور نعمت ہوتا ہے

[illegible]

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۵﴾

اور ہم نے اسے رہنے دیا نشانی بنا کر پھر ہے کوئی سوچنے والا

[illegible]

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿۱۶﴾

پھر کیسا تھا میرا عذاب اور میرا ڈرانا

[illegible]

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

اور ہم نے آسان کر دیا قرآن کو سمجھنے کو

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۷﴾

پھر ہے کوئی سوچنے والا

[illegible]

## حفظ کرنے اور نصیحت حاصل کرنے کے لئے قرآن کو آسان کیا گیا ہے نہ کہ اجتہاد اور استنباط احکام کے لئے

[illegible]

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

جھٹلایا عاد نے پھر کیسا ہوا میرا عذاب

وَنُذُرِ ﴿۱۸﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

اور میرا ڈرانا ہم نے بھیجی ان پر

رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ

ہوا تیز ایک نحوست کے دن

مُّسْتَمِرٍّ ﴿۱۹﴾

[illegible]

۲؎ حضرت شاہ صاحب لکھتے ہیں: ایسی نحوست تھی جب تک تمام نہ ہوئے اور نحوست کا اثر ان ہی کے حق میں تھا ... بیٹھ گیا ... نحوست مشہور ہے ... عذاب آنے کی وجہ سے ... قرآن ... ہمیشہ ... رہے گا۔ (تفسیر ...)

خلاصہ ... بہت تند ... دشمن کیلئے نحوس۔

مستمر ... مسلسل نحوست ... مطلب ... تک ... جب تک ... ہلاک نہ کردیا ... مستمر ... (...)

تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ

اکھاڑ مارتا لوگوں کو گویا وہ جڑیں ہیں کھجور کی

مُّنْقَعِرٍ ۝

اکھڑی ہوئی ☆

... لوگ ... اور ... ہوا ... کھجوروں ... کی ... پر پھینک دیتی ... (تفسیر ...)

**طوفان کی شدت:** ... ان لوگوں کو ... اٹھا کر (پاؤں ...) مرتے ... توڑ ... بعض ... نے لکھا ہے ... پہاڑوں کی گھاٹیوں میں اور غاروں میں گھس گئے ... چھپ گئے لیکن طوفان ان کو ... سے بھی ... نکال ... کر ... پٹخ دیا ... سب مر گئے ... روایت میں آیا ہے کہ طوفان ... (تفسیر مظہری)

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝

پھر کیسا رہا میرا عذاب اور میرا کھڑکھڑانا

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن

اور ہم نے آسان کر دیا قرآن سمجھنے کو پھر ہے کوئی

مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝

سوچنے والا ☆ جھٹلایا ثمود نے ڈرانے والوں کو ☆

... حضرت ... علیہ السلام کو جھٹلانا ... ایک نبی کا جھٹلانا سب کا جھٹلانا ہے کیونکہ اصول دین میں سب ایک دوسرے کی تصدیق کرتے ہیں۔ (تفسیر ...)

فکیف کان عذابی ... عذاب کی تفصیل ... کے لئے یہ آیت ... ذکر ... عذاب ... تھا ... آخرت میں بھی ... (...)

## قرآن کی آسانی اللہ کی ایک نعمت ہے

حضرت ابن عباسؓ فرماتے ہیں اگر اللہ تعالیٰ اس کی آسانی نہ کرتا تو مخلوق ... اللہ کے کلام کو پڑھ سکے ... ان آسانیوں میں سے ایک آسانی ... پہلے حدیث میں ... کہ قرآن سات قرأتوں پر نازل کیا گیا ہے ... حدیث کے تمام طرق ... پہلے جمع کر دیئے ہیں۔ اب دوبارہ یہاں ... کرنے کی ضرورت نہیں ... قرآن کو بہت ہی آسان کر دیا ہے ... کوئی طالب علم ... آسان ہے۔ (تفسیر ...)

فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ

پھر کہنے لگے کیا ایک آدمی ہم میں کا اکیلا ہم اس کے کہے پر چلیں گے

إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝

تو تو ہم غلطی میں پڑے اور سودا میں ☆

۱؎ یعنی کوئی آسمان کا فرشتہ نہیں بلکہ ہم ہی جیسا ایک آدمی ... ساتھ کوئی ... ہم ... سب ... اگر ہم اس ... کی ... گمراہی اور حماقت ... ہوگا ... آگ میں ... سب ... (تفسیر ...)

فقالوا ابشرا منا ... آدمی ... فرشتہ ... ایک ... ہم ... ہیں۔

منا ... سے ... کوئی فرشتہ ... اتباع کر لیتے

واحدا ... ایک ... نہیں ...

انا اذا ... ہم نے اس کا ... تو اس صورت میں ہم ... غلطی

[illegible]

ءَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ

[illegible]

هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ

[illegible]

[illegible]

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ

[illegible]

الْأَشِرُ

[illegible]

[illegible]

إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ

[illegible]

[illegible]

فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ

[illegible]

[illegible]

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ

[illegible]

كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ

[illegible]

[illegible]

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ

[illegible]

[illegible]

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ

[illegible]

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً

[illegible]

فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ

[illegible]

[illegible]

صیحۃ واحدۃ ہے یعنی جو حضرت جبرئیل نے نکالی تھی۔

[illegible]

کھشیم المحتظر۔ [illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ |
| [illegible] |
| مِنْ مُدَّكِرٍ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ |
| [illegible] |
| بِالنُّذُرِ |
| [illegible] |

[illegible]

| |
|---|
| إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا |
| [illegible] |
| آلَ لُوطٍ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ نِعْمَةً |
| [illegible] |
| مِنْ عِنْدِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَنْ |
| [illegible] |
| شَكَرَ |
| [illegible] |

[illegible]

[illegible]

| |
|---|
| وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَا |
| [illegible] |
| رَوْا بِالنُّذُرِ |
| [illegible] |

[illegible]

| |
|---|
| وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا |
| [illegible] |
| أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ |
| [illegible] |

[illegible]

## حضرت لوط علیہ السلام کے مہمان
## قوم کی بدتمیزی اور عذاب الٰہی

[illegible]

[illegible]

[illegible]

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ

اور صبح سویرے ان پر آ پہنچا [illegible]

مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾

پس چکھو مزہ میرے عذاب اور میرے ڈرانے کا

[illegible]

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ

اور ہم نے آسان کر دیا قرآن سمجھنے کو

فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ

پھر ہے کوئی سوچنے والا اور پہنچے فرعون والوں کے پاس

فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾

ڈرانے والے

[illegible]

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ

جھٹلایا انہوں نے ہماری ساری نشانیوں کو سو پکڑا ہم نے ان کو

أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

پکڑنا زبردست کا قابو والے کا

[illegible]

## دو یہودیوں کا قصہ:

[illegible]

... کو شریک نہ ٹھہراؤ، چوری نہ کرو، زنا نہ کرو، جس کو قتل کرنا اللہ نے حرام کر دیا ہے اس کو ناحق قتل نہ کرو، کسی بے قصور کو حاکم کے پاس قتل کرانے کے لئے نہ لے جاؤ، جادو نہ کرو، سود نہ کھاؤ، کسی پاکدامن عورت پر زنا کی تہمت نہ لگاؤ، جہاد کے معرکہ سے بھاگنے کے لئے پشت نہ پھیرو۔ اور اے یہودیو! (ایک حکم) تمہارے لئے خاص طور پر یہ تھا کہ ہفتہ کے دن (کی حرمت) میں حد سے تجاوز نہ کرو (یعنی ہفتے کے دن کی حرمت قائم رکھو، اس روز شکار کا ارتکاب نہ کرو) یہ سنتے ہی دونوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ہاتھ پاؤں چوم لئے اور بولے ہم شہادت دیتے ہیں کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نبی ہیں۔ حضور نے فرمایا پھر میری اتباع کرنے سے تمہارے لئے کیا مانع ہے؟ کہنے لگے حضرت داؤد نے اپنے رب سے دعا کی تھی کہ اے میرے رب! میری ہی نسل میں سے ہمیشہ نبی ہوا کرے (اور حضرت داؤد کی دعا کا قبول ہونا یقینی ہے) اور ہم کو اندیشہ ہے کہ اگر ہم آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا اتباع کریں گے تو یہودی ہم کو مار ڈالیں گے۔ رواہ ابو داؤد والترمذی والنسائی۔ (تفسیر مظہری)

**أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَٰئِكُمْ أَمْ لَكُم**

اب تم میں جو منکر ہیں کیا یہ بہتر ہیں ان سب سے یا تمہارے لئے فارغ خطی

**بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ**

لکھی ہوئی ہے ورقوں میں کیا کہتے ہیں

**نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝**

ہم سب کا مجمع بدلہ لینے والا ہے ☆

☆ گزشتہ اقوام کے واقعات سنا کر موجودہ لوگوں کو خطاب ہے کہ تم میں کے کافر کیا ان پہلے کافروں سے کچھ اچھے ہیں جو کفر و طغیان کی سزا میں تباہ نہیں کئے جائیں گے؟ یا اللہ کے ہاں سے کوئی پروانہ لکھا دیا گیا ہے کہ تم جو چاہو شرارت کرتے رہو کوئی سزا نہیں ملے گی؟ یہ کہتے ہیں کہ ہماری جمعیت بہت بڑی ہے اور سب مل کر ایک دوسرے کی مدد پر تیار ہیں تو سب سے بدلہ لے کر چھوڑیں گے اور کسی کو اپنے مقابلہ میں کامیاب نہ ہونے دیں گے۔ (تفسیر عثمانی)

☆ زُبُر زبور کی جمع ہے۔ یعنی کیا آسمانی کتابوں میں تمہارے لئے عذاب سے امان لکھی ہوئی ہے کہ تم کفر اور پیغمبروں کی تکذیب بھی کرتے رہو گے اور تم کو عذاب نہیں دیا جائے گا۔

بخاری نے حضرت ابن عباسؓ کی روایت سے بیان کیا کہ بدر (کی لڑائی) کے دن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خیمہ میں تھے آپ نے دعا کی اے اللہ میں (وعدہ کی) اور (تیرے) عہد کا تجھے واسطہ دیتا ہوں (اپنا وعدہ پورا فرما) اے اللہ اگر تیری مشیت یہی ہے (کہ تیری عبادت نہ کی جائے تو) آج کے بعد تیری عبادت نہیں کی جائے گی (یعنی مسلمانوں کو شکست ہو گئی تو تیری عبادت کرنے والا باقی نہیں رہے گا) حضرت ابو بکرؓ نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا ہاتھ پکڑ لیا اور کہا اے اللہ کے رسول! آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے رب (سے مانگنے) میں بہت اصرار فرمایا بس کیجئے (اتنا ہی کافی ہے) اس کے بعد حضور زرہ پہنے نکلے ہوئے سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ پڑھتے ہوئے (خیمہ سے) برآمد ہوئے۔ مجھے اس وقت معلوم نہ ہوا کہ اس سے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی مراد کون سی جماعت تھی (مسلمانوں کی یا کافروں کی)۔ (تفسیر مظہری)

**سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝**

اب شکست کھائے گا یہ مجمع اور بھاگیں گے پیٹھ پھیر کر ☆

☆ یہ پیشین گوئی ہے ان کو اپنے مجمع کی حقیقت کھل جائے گی جب مسلمانوں کے سامنے سے شکست کھا کر پیٹھ پھیر کر بھاگیں گے۔ چنانچہ "بدر" اور "احزاب" میں یہ پیشین گوئی پوری ہوئی۔ اس وقت نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان پر یہ آیت جاری تھی "سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ"۔ (تفسیر عثمانی)

### بدر کے دن آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی دعاء

☆ بخاری شریف میں ہے کہ بدر والے دن اپنے خیمے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یہ دعا فرما رہے تھے اے اللہ میں تجھے تیرا عہد اور تیرا وعدہ یاد دلاتا ہوں، اے اللہ اگر تیری چاہت یہی ہے کہ آج کے دن کے بعد سے تیری عبادت و اطاعت نہ کی جائے تو زمین پر کوئی تیرا عابد نہ رہے۔ بس اتنا ہی کہا تھا کہ حضرت ابو بکرؓ نے آپ کا ہاتھ تھام لیا اور کہا یا رسول اللہ! بس کیجئے آپ نے بہت الحاح کر لی اب آپ صلی اللہ علیہ وسلم اپنے خیمے سے باہر آئے اور زبان پر یہ الفاظ تھے سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ جو ملی ہیں۔

**کون سی جماعت مراد ہے:** حضرت عمرؓ نے کہا اس آیت کے اترنے کے وقت میں سوچتا رہا کہ اس سے مراد کون سی جماعت ہوگی؟ جب بدر والے دن میں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو دیکھا کہ زرہ پہنے ہوئے اپنے خیمے سے باہر تشریف لائے اور یہ آیت پڑھ رہے تھے تب میری سمجھ میں اس کی تفسیر آ گئی۔ (تفسیر ابن کثیر)

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ

بلکہ قیامت ہے ان کے وعدہ کا وقت اور وہ گھڑی بڑی

أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ﴿٤٦﴾

آفت ہے اور بہت کڑوی ☆

☆☆ یعنی یہاں کیا شکست کھائیں گے ان کی شکست کا اصلی وقت تو وہ ہوگا جب قیامت برپا ہوگی۔ گھڑی بڑی آفت کی ہوگی وہ بہت سخت مصیبت کا وقت ہوگا۔ (تفسیر عثمانی)

بخاری میں ہے حضرت عائشہ فرماتی ہیں میری چھوٹی سی عمر تھی اپنی گڑیوں میں کھیل رہی تھی اس وقت یہ آیت بَلِ السَّاعَةُ اتری ہے۔ یہ روایت بخاری میں فضائل القرآن کے موقع پر مطول مروی ہے۔ مسلم میں یہ حدیث نہیں ہے۔ (تفسیر ابن کثیر)

أدهى۔ بہت سخت مصیبت جس کو کسی طرح دفع کرنا ممکن نہ ہو۔
أمر۔ یعنی عذاب دنیا سے زیادہ بدمزہ اور تلخ۔ (تفسیر مظہری)

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾

جو لوگ گنہگار ہیں غلطی میں پڑے ہیں اور سودا میں

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ

جس دن گھسیٹے جائیں گے آگ میں

وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

اوندھے منہ چکھو مزا آگ کا ☆☆

☆☆ یعنی اس وقت غفلت کے نشہ میں پاگل بن رہے ہیں۔ یہ سودا دماغ میں سے اس وقت نکلے گا جب اوندھے منہ دوزخ کی آگ میں گھسیٹے جائیں گے اور کہا جائے گا کہ لو اب ذرا اس کا مزہ چکھو۔ (تفسیر عثمانی)

فی ضلال۔ یعنی دنیا میں حق سے بھٹکے ہوئے۔
وسعر۔ یعنی آخرت میں (ہلاکت) آگ کے اندر بعض اہل تفسیر نے فی ضلال کی تشریح میں کہا آخرت میں جنت کے راستے سے بھٹکے ہوئے۔ (تفسیر مظہری)

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

ہم نے ہر چیز بنائی پہلے ٹھہرا کر ☆

☆ یعنی ہر چیز جو پیش آنے والی ہے اللہ کے علم میں پہلے سے ٹھہر چکی ہے دنیا کی عمر اور قیامت کا وقت بھی اس کے علم میں ٹھہرا ہوا ہے اس سے آگے پیچھے نہیں ہو سکتا۔ (تفسیر عثمانی)

**سبب نزول:** مسلم اور ترمذی نے حضرت ابو ہریرہ کی روایت سے بیان کیا ہے کہ کچھ قریشی مشرک تقدیر کے مسئلہ میں جھگڑا کرنے کے لئے رسول اللہ کی خدمت میں آئے تھے اس وقت آیت إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ... إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ تک نازل ہوئی۔

**تقدیر کا ماننا ضروری ہے:** حضرت عبداللہ بن عمرو بن عاص کا بیان ہے کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرما رہے تھے کہ آسمان و زمین کی تخلیق سے پچاس ہزار برس پہلے اللہ نے تمام مخلوق کے اندازے لکھ دیے تھے اس وقت اس کا عرش پانی پر تھا۔ رواہ مسلم۔

بخاری نے اپنی سند سے طاؤس بن مسلم کا بیان نقل کیا ہے۔ طاؤس بن مسلم مکی نے کہا میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بکثرت صحابی ایسے پائے جو کہتے تھے کہ ہر چیز اندازہ کے مطابق ہے یہاں تک کہ نادانی اور دانائی بھی۔ حسب تقدیر خداوندی ہے۔

**منکرین تقدیر:** حضرت ابن عمر کا بیان ہے میں نے خود سنا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرما رہے تھے میری امت کے جو لوگ تقدیر کے منکر ہوں گے ان پر خسف (زمین میں دھنسا دینا) اور مسخ (صورتیں اور شکلیں بگاڑ دینے کا عذاب) ہوگا۔ رواہ ابوداؤد والترمذی نحوہ۔

حضرت ابن عمر سے یہ بھی مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا (فرقہ) قدریہ (جو تقدیر خداوندی کا منکر ہے اور انسان کے افعال، ہے اعمال کا خالق انسان ہی کو جانتا ہے) اس امت کے مجوسی ہیں (مجوسی دو خالق مانتے ہیں ایک خیر کا خالق جس کو یزدان کہتے ہیں دوسرا شر کا خالق جس کو اہرمن کہتے ہیں) اگر وہ بیمار ہوں تو ان کی عیادت مت کرو اور مر جائیں تو ان کے جنازوں میں شرکت مت کرو۔ رواہ احمد و ابوداؤد۔

حضرت ابو خزامہ کے باپ نے بیان کیا کہ میں نے عرض کیا یا رسول اللہ ہم (بیماری وغیرہ کے لئے) جھاڑ پھونک پڑھتے ہیں اور دوائیں کھا کر بیماری سے علاج بھی کرتے ہیں اور بچاؤ کی تدبیر (یعنی پرہیز) بھی کرتے ہیں کیا یہ چیزیں تقدیر خداوندی کو پلٹ سکتی ہیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یہ بھی تقدیر (کا جزء) ہی ہیں۔ رواہ احمد والترمذی وابن ماجہ۔

اس موضوع کی احادیث بکثرت آئی ہیں سورۂ کرام اور ان کے بعد آنے والے علماء اہل سنت کا اس پر اتفاق بھی ہے۔ (تفسیر مظہری)

ایک روایت میں ہے کہ حضرت ابن عباسؓ کے سامنے ذکر آیا کہ آج ایک شخص آیا ہے جو منکر تقدیر ہے۔ فرمایا اچھا مجھے اس کے پاس لے چلو۔ لوگوں نے کہا آپ نابینا ہیں آپ اس کے پاس چل کر کیا کریں گے۔ فرمایا اللہ کی قسم جس کے قبضہ میں میری جان ہے اگر میرا بس چلا تو میں اس کی ناک توڑ دوں گا اور اگر اس کی گردن میرے ہاتھ میں آ گئی تو میں مروڑ دوں گا۔ میں نے رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے تھے گویا میں دیکھ رہا ہوں کہ بنو فہر کی عورتیں خزرج کے ارد گرد طواف کرتی پھرتی ہیں ان کے جسم حرکت کرتے ہیں وہ مشرکہ عورتیں ہیں۔ اس امت کا پہلا شرک یہی ہے۔ اس رب کی قسم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے ان کی بے عقلی یہاں تک بڑھے گی کہ اللہ تعالیٰ کو بھلائی کا مقدر کرنے والا بھی نہ مانیں گے جس طرح برائی کا مقدر کرنے والا نہ مانا (مسند احمد) حضرت عبداللہ بن عمرؓ کا ایک دوست شامی تھا جس سے آپ کی خط و کتابت تھی حضرت عبداللہ نے کہیں سن پایا کہ وہ تقدیر کے بارے میں کچھ موشگافیاں کرتا ہے۔ آپ نے جھٹ سے اسے خط لکھا کہ میں نے سنا ہے تو تقدیر کے مسئلہ میں کچھ کلام کرتا ہے اگر یہ سچ ہے تو بس مجھ سے خط و کتابت کی امید نہ رکھنا۔ آج سے بند سمجھنا۔ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا ہے کہ میری امت میں تقدیر کو جھٹلانے والے لوگ ہوں گے (ابوداؤد) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں ہر امت میں مجوس ہوتے ہیں میری امت کے مجوس وہ لوگ ہیں جو تقدیر کے منکر ہوں۔ اگر وہ بیمار پڑیں تو تم ان کی عیادت نہ کرو اور اگر وہ مر جائیں تو تم ان کے جنازے میں نہ جاؤ (مسند احمد) (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ |
| اور ہمارا کام تو یہی ایک دم کی بات ہے جیسے لپک |
| بِالْبَصَرِ ۝ |
| نگاہ کی ☆ |

☆ یعنی ہم تمام زمان میں جو چاہیں کر دیں کسی چیز کے بنانے یا بگاڑنے میں ہم کو دیر نہیں لگتی نہ کچھ مشقت ہوتی ہے۔ (تفسیر عثمانی)

وَمَآ اَمْرُنَآ۔ یعنی کسی چیز کو پیدا کرنے اور معدوم کرنے اور دوبارہ موجود کرنے کا حکم۔

اِلَّا وَاحِدَةٌ۔ یعنی بغیر دشواری کے یکدم ایک فعل ہے خواہ موجود کرنا ہو یا معدوم کرنا یہ مطلب ہے کہ ہمارا حکم بس ایک کلمہ ہے پیدا کرنے کے لئے لفظ کُنْ (ہو جا) اور معدوم کرنے کے لئے ایک سخت آواز۔

كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ۔ یعنی تیزی اور جلدی کے اعتبار سے پلک جھپکنے کی طرح ہے۔ حضرت ابن عباس نے آیت کی تفسیر اس طرح کی قیامت آ جانے کا ہمارا حکم سرعت میں ایسا ہوگا جیسے پلک جھپکنا (رواہ الطبری) اس مضمون کو دوسری آیت میں اس طرح بیان کیا ہے "وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ" (حکم قیامت اتنا تیز ہوگا جیسے پلک جھپکنا یا اس سے بھی تیز) (تفسیر مظہری)

| |
|---|
| وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ |
| اور ہم برباد کر چکے ہیں تمہارے ساتھ والوں کو پھر ہے |
| مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ |
| کوئی سوچنے والا ☆ |

☆ یعنی تمہاری قماش کے بہت سے کافروں کو پہلے تباہ کر چکے ہیں پھر تم میں کوئی اتنا سوچنے والا نہیں کہ ان کے حال سے عبرت حاصل کر سکے۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ۝ |
| اور جو چیز انہوں نے کی ہے لکھی گئی ورقوں میں ☆ |

☆ یعنی ہر ایک نیکی بدی عمل کے بعد ان کے اعمال ناموں میں لکھی گئی ہے۔ وقت پر ساری مسل سامنے کر دی جائیگی۔ (تفسیر عثمانی)

| |
|---|
| وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝ |
| اور ہر چھوٹا اور بڑا لکھا جا چکا ☆ |

☆ یعنی اس سے قبل ہر چھوٹی بڑی چیز کی تفصیل "لوح محفوظ" میں لکھی جا چکی۔ تمام دفاتر باقاعدہ مرتب ہیں کوئی چھوٹی موٹی چیز بھی ادھر ادھر نہیں ہو سکتی۔ (تفسیر عثمانی)

## چھوٹے گناہ کو بھی حقیر نہ سمجھو:

حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں صغیرہ گناہ کو بھی ہلکا نہ سمجھو خدا کی طرف سے اس کا بھی مطالبہ ہونے والا ہے (نسائی اور ابن ماجہ وغیرہ)۔ حضرت سلیمان بن مغیرہؒ فرماتے ہیں ایک مرتبہ مجھ سے ایک گناہ سرزد ہو گیا جسے میں نے حقیر سمجھا رات کو خواب میں دیکھتا ہوں کہ ایک آنے والا آیا ہے اور مجھ سے کہہ رہا ہے اے سلیمان!

لا تحقرن من الذنوب صغیرا
إن الصغیر غدا یعود کبیرا
إن الصغیر ولو تقادم عهده
عند الإله مسطر تسطیرا
فازجر هواک عن البطالة لا تکن
صعب القیاد وشمرن تشمیرا
إن المحب إذا أحب إلهه
طار الفؤاد وألهم التفکیرا
فاسأل هدایتک الإله فتتئد
فکفی بربک هادیا ونصیرا

یعنی صغیرہ گناہوں کو بھی حقیر اور ناچیز نہ سمجھ۔ یہ صغیرہ کل کبیرہ ہو جائیں گے۔ گو گناہ چھوٹے ہوں اور انہیں کئے ہوئے کتنا عرصہ گزر چکا ہو اللہ کے پاس وہ صاف صاف لکھے ہوئے موجود ہیں۔ بیکاری سے اپنے نفس کو روکے رکھ اور ایسا نہ ہو کہ مشکل سے نیکی کی طرف آئے بلکہ اپنا دامن کمر کے بھلائی کی طرف لپک۔ جب کوئی شخص سچے دل سے اللہ کی محبت کرتا ہے تو اس کا دل اڑنے لگتا ہے اور خدا کی جانب سے غور و فکر کی عادت الہام کی جاتی ہے۔ اپنے رب سے ہدایت طلب کر اور قوی امید رکھ کہ ہدایت اور نصرت کرنے والا رب تجھے کافی ہوگا۔ (تفسیر ابن کثیر)

| |
|---|
| إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝ فِي |
| جو لوگ ڈرنے والے ہیں باغوں میں ہیں اور نہروں میں |
| مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ |
| بیٹھے سچی بیٹھک میں نزدیک ایک بادشاہ کے جس کا سب پر قبضہ ہے |

مجرمین کے بعد یہ متقین کا انجام بیان فرما دیا کہ وہ اپنی صدق کی بدولت اللہ و رسول کے سچے وعدوں کے مطابق ایک پسندیدہ مقام میں ہوں گے جہاں ان شہنشاہ مطلق کا قرب حاصل ہوگا۔ "اللھم انک ملیک مقتدر. ماتشاء من امر یکون فاسعدنی فی الدارین و کن لی ولاتکن علی و آتنی فی الدنیا حسنۃ و فی الآخرۃ حسنۃ و قنی عذاب النار"۔ تم سورۃ القمر وللہ الحمد والمنۃ ۔ (تفسیر عثمانی)

بغوی نے لکھا ہے امام جعفر صادق نے فرمایا آیت میں اللہ نے مقام کی صفت صدق کے الفاظ سے کی ہے پس اس مقام پر اہل صدق ہی بیٹھیں گے۔

## قرب خداوندی بے کیف اور فہم سے ماوراء ہے

قرب خداوندی بے کیف ہے دانش و فہم کی رسائی سے باہر ہے ہاں اگر اللہ کسی کو نور بصیرت عطا فرمائے تو اس کو قرب خداوندی کا وجدان ہو جاتا ہے۔ واللہ اعلم۔ (از تفسیر مظہری)

ختم سورۃ القمر

الحمدللہ چھٹی جلد ختم ہوئی